
सीयाणामा

यरा ा ननतरंगना नु ो्ा नाणा माकलवा, नद्‌ाका वस्तुपश्रवज कर। टपालन। मार
पत्तिज्य रहो (क ते नम( ),
ाना रगनी गये कामाटीपुरानी तेरमी गलीने नाके शा लखमाजी जावाजीनी डु
कानेथी तथा विठ्ठलवाडीमां शेठ मेगाजी मोतीजीनी पढेडी उपरथी मगावी लेवा
२ गामश्री अमदावादमां पांजरापोलनी अंदर शेठ पुनमचद ताराचदनी डुकानेथी मलशे
३ गामश्री सुरतमां नानपरा मध्यें शेठ चेनाजी वांताजीनी डुकानेथी मलशे
४ श्रीआबुना पाहाडनी नीचे गामश्री खराडीमां, नार शीतारामजी जवानमल्लजीनी डुकानेथी वेचाती मलशे
५ गामश्री शिवगजमां शेठ मेगाजी मोतीजी श्री जाणावालानी डुकानेथी
६ गामश्री आहोरमा शेठ गोडीदासजी त्रीकमजीनी डुकानेथी मलशे
७ गामश्री जालोरमां मुंता धनराजजी लालचदजी माफा वालानी डुकानेथी मलशे
८ गामश्री अलीराजपुरमां शा जेठाजी जवेरचंदनी डुकानेथी मलशे
९ गामश्री पुनामध्यें वेतालपेठमां शेठ जीवाजी आणदाजीने त्यांथी मलशे
१० गामश्री सीयाणामां शा केशरीमल्ल कस्तूरजीनी डुकानेथी मलशे
११ गामश्री भिन्नमालमां शा जुहारमल्ल भिखारमलजीने त्यांथी मलशे

आ पुस्तक श्रीमारवाडदेशमां आवेला गामश्री सीयाणा तथा गामश्री वा... रेवासी आ पुस्तक श्रीमारवाडदेशमां आवेला गामश्री सीयाणा तथा गामश्री आहोरना रेवासीयें
सी श्रावक नाइतेना संघ तरफथी, श्रावक रतनाजी वाघाजी गाम श्रीआहोरना रेवासीयें
श्रीमुंबापुरी मध्यें श्रावक जीमसिंह माणकनी पासेथी यथा योग्य शुद्ध करावीने तथा केटलि
एक बाबतो वधारीने तेमनीज मारफत निर्णयसागरनामक मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्युं छे
आ पुस्तकने छापवा संबंधि सर्व प्रकारनो हक्क सरकारना कायदा प्रमाणे छपावनारे पो
ताने स्वाधीन राख्यो छे माटे छपावनारनी रजा लीधा विना कोइयें छपाववुं नहीं

संवत् १९४४, सने १८८८, शालिवाहन शक १८०९
मिति फाल्गुन शुक्ल अष्टमी चंद्रवार

आ पुस्तक खरीदवा माटे प्रथमथी नाम नोंधावनार साहेबोने विनति करीयें छैयें के आ
ग्रंथनी जेटली प्रतो छपावेली छे लगभग तेटलीज प्रतोना आगलथी ग्राहको थइ गयेला छे
माटे बाकी थोडीज प्रतो शिलकमां रहेली छे, तेथी जे साहेबोए प्रथमथी खरीद करेली छे
ते साहेबोये जेम बने तेम मुंबइमां कामाटीपुरानी तेरमी गलीने नाके शा लखमाजी ना
... जीनी दुकाने अथवा विठ्ठलवाडीमां शेठ मेगाजी मोतीजीनी पहेढीयें रोकडा नाणा
... मगावी लेवी असे घणामां घणा छ महीना पर्यंत नाम नोंधावनारनी वाट
... वाने बधाता नथी
... वानी इछा होय ते साहेबोए नीचे लखेला जुदा जुदा गा
... र्पी रोकडा रुपैया मोकली मगावी लेवा, वेसावरथी मगावना

थयेला जलतरंगना जेवु चचल छे, वळी विचित्र प्रकारनी सपत्तिउ जे छे ते पण सर्व वि पत्तिउयें करी युक्त छे, तथा रूप रसादिक जे इंद्रीयोना विषयो छे ते सर्व सध्याना वादळाना रंगनी पेरे त्वरत विनाशने पामी जाय तेवा छे, वळी आ मित्र, स्त्री, स्वजनादिकोना समागमथी थयेलुं जे सुख ते पण सर्व स्वप्नोपम अथवा इंद्रजाळसमान छे, वळी जे अत्यंत आनंदने उत्पन्न करनारा एवा सुदर पदार्थो हमणा जोवामा आव्या होय, तेज पदार्थो कालपरिपाक थइ रह्याथी फरी अल्पकाल पछी शोभाहीन थयेला दीठामां आवे छे, एवी रीते प्रत्यक्षपणे आ संसारनी व्यवस्थाने सर्व कोइ जाणे छे, देखे छे, तथापि प्राणीना मननी टेव एवी कोइ विलक्षण छे के, हुं अजर अने अमर छुं, कोइ काळें म्हारो नाश थवानो नथी तेमज आ, म्हारां घर छे, आ, म्हारी लक्ष्मी छे, आ, म्हारां क्षेत्र, वाडी, बाग, बगीचा प्रमुख सपत्तिउ छे; आ, अमुक म्होटा म्होटा म्हारा स्वजन छे, आ, म्हारा मित्र छे, आ, म्हारी स्त्री छे, आ, म्हारो पुत्र छे, आ, म्हारु ऐश्वर्य छे, आ, म्हारी सत्ता छे; इत्यादि सर्व काई म्हारुंज छे; एवो जे तेना मननो सकल्प छे ते घणु करीने कोइ रीते दूर थइ शकतो नथी

कारण के आशारूपी मोहनीयें मनुष्यनुं मन एटलुं तो वश करी लीधेलु छे के मरता सुधी पण तेनी तृष्णा मद थती नथी, परंतु दिवसेदिवसे वधती जाय छे अहममतादिमानपणाने लीधे तेनो कदाग्रह, दंभ, लोभ, आदिक जे छे ते पूर्वकृत कर्मोदयनी प्रबलताने योगें एक लवमात्र पण कमी थता नथी, ए म्होटी खेदनी वात छे

कुटुंबादिकना संयोग संबंधि जे क्षणिक सुख छे ते यद्यपि पूर्वें अनंतिवार जीव पामी
आव्यो छे, तथापि जेवारे फरी पामे छे तेवारें आ, सुख मने हमणा नवीज जाणे मल्यां
हायनो ! एवु समजीने तेमा तल्लीन थइ जाय छे, पण आ सुख अल्पकाल रहीने नष्ट थइ
जशे, अथवा पुण्य घणु प्रबल हशे तो महारा आयुष्य पूर्ण थया सुधी रहेशे, परंतु पछी
तो अवश्य ए सुखथी महारे वियोग थवानो छे एवो शुभ विचार निरंतर जेना अंतःकरणमा
थतो होय ते क्षणिक सुखोमां लुब्ध न थाय, एवा कोइ विरलाज जीवमां आवे छे
ज्ञानदृष्टियें विचारतां जे विषयसुख छे तेपण उपचारथी मानी लीधेला छे, परंतु पारमा
र्थिक रीतें जोतां तो ते दुःखरूपज छे, संसार वधारवाना हेतु छे, नरक तिर्यंचादि गति
उंमां भ्रमण करावनारा छे, आत्मधर्मना आच्छादन करनारा छे, एवा कल्पित सुखोनी
इच्छा करनारा जीवोने संसाररूप समुद्रमां अनेक प्रकारना दुःसह दुःख सहन करतां
डुबकीउ खाता अनंता कालचक्र व्यतीत थइ गया तो पण तृप्ति पाम्या नहीं ए सर्व प्रब
ल मोहनीयनुं माहात्म्य जाणवुं ए मोहनीय कर्म जे छे ते ज्ञानावरणादिक आठे कर्मो
मां प्रधान छे माटे एनी उत्तर प्रकृति अठावीश छे, तेमाहेली अनंतानुबंधि क्रोध, मान, मा
या अने लोभ ए चार प्रकृति जे छे तेनो जेवारें क्षय होय तेवारें जीवने क्षायक सम्यक्
त्वनी प्राप्ति थाय अथवा ए चार प्रकृतिनुं जेवारें क्षयोपशम थाय तेवारें क्षायोपशमिक स
म्यक्त्वनी प्राप्ति थाय, अथवा ए चार प्रकृतिनो जेवारें उपशम थाय तेवारे जीवने उपशम
सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय एवी रीतें ए त्रण प्रकारना सम्यक्त्व माहेलुं कोइ पण सम्यक्त्व
प्राप्त थाय तेवारें ते जीव श्रीतीर्थंकर देवनो प्रकाशेलो जे शुद्धधर्म तेने पाम्यो एम

कहेवाय ते पाम्याथी तेने स्वयमेव सद्विचारो उत्पन्न थाय छे... आवीरीते

आ, म्हारो देह छे ते क्षणभंगुर छे, विनाशशील छे, एनो विनाश करवा माटे घणा रोगादिक शत्रुओ तत्पर थइ रहेला छे, माटे एने वधारे टकी रहेवानो भरोसो न राखता जे काइ माराथी आज शुभकृत्य थतु होय ते काल उपर न राखु, परतु आजज करु, चार दिवस आगल किंवा पाछल पण अवश्य मने ए मुकी जशे तो एना योगेकरी हु जेटलो परोपकार करी शकु तेटलो तो एमाथी लाभ लइ लेवु ! छेवटे ए काइ म्हारु थवानु नथी, माटे म्हारे एमांथी जे सार काढी लेवानु छे ते नहीं काढी लेता तेने शावास्ते व्यर्थ गमावु ? एवु तत्व ग्रहण करी मनरूप मंदिरने विषे विवेक रूप दीपकने प्रकाश करतो सद्वर्त्तन, उदारवृत्ति, सद्गुरुनो समागम, सत्संगति, सदयता, सद्धर्मनिष्ठा, परोपकारबुद्धि, इत्यादि उत्तम प्रकारना विचार तेना मनमा प्रवेश करे तेना योगे तप, जप, पडिक्कमण, पोसह, व्रत, नियम, पुजा, प्रभावना, तीर्थयात्रा, साधर्मी वात्सल्यादि अनेक शुभकृत्यो सेवन करी छेवट धनधान्यादिक नवविध बाह्य परिग्रह तथा क्रोधादिक चौद प्रकारनो अभ्यंतर परिग्रह छे तेनो त्याग करी पंचमहाव्रत आदरी, चारित्र ग्रहण करी कृतकृत्य थाव ए म्हारु मुख्य कर्तव्य छे एवा विचार तेना मनमा निवास करी रहेला होय छे, ते प्राणी शुभ इच्छानुरूप पोतानु वर्तन राखी, अंतकाल पर्यंत यथाशक्ति सत्कर्मो करी, सर्व मुखे मंगल बोलावी, आ, सृष्टिमा पोतानी कीर्त्तिने अमर करनारो थाय छे पछी ते धनवान हो किंवा निर्धन हो।

एवा पूर्वोक्त नियमपूर्वक आ हुंडाअवसर्पिणी रूप पंचम कालने विषे चालनारा मनुष्य रूप रत्नोनी सख्या घणीज स्वल्प जाणवी

यद्यपि पूर्वोक्त उदारवृत्ति, सदयता, परोपकारबुद्धि इत्यादि शुभकृत्यो तो अन्यदर्शनीओमां पण अनेक जीवो करे छे खरा, परंतु सम्यक् ज्ञान न होवाथी ते मात्र तेमने सांसारिक सुखनुं कारण रूप थाय छे, पण आत्मधर्मनी ओलखाण विना परंपरायें मोक्ष प्राप्तिना हेतु रूप थता नथी, केम के? तेमना धर्म प्ररूपकपण सर्व राग द्वेषनी वृत्तिवाला छे, तेथी ते सत्य कहेवाय नहीं, सत्यधर्म तो जेने राग द्वेषनो अभाव थइ गयेलो छे, एवा श्रीतीर्थंकरदेवनो प्ररूपेलो छे तेज जाणवो ए वात अनुभवसिद्ध छे, ते विषे आशंकाओ तथा समाधान करवाने आ न्हानी सरखी प्रस्तावनामां स्थल आपवु व्याजबी कहेवाय नही

त सत्यधर्म पामवानी अभिलाषा करनारा विवेकी जनोयें प्रथम तो गुरुआदिकना मुख थकी अनेक प्रकारना शास्त्र श्रवण करवामा हरहमेश तत्पर रहेवुं जोइये शास्त्रो सांभलवा, तथा जे शास्त्र पोताने वांचवा भणवां योग्य होय ते पोते पण वांचवां तथा भणवां कदापि सांसारिक धंधा रोजगारना प्रपंचथी जो वधारे अवकाश न मली शकतो होय तो नित्य बे घडी, चार घडी पर्यंत जेटलो अवकाश मली शके, तेटलो वखत शास्त्र श्रवण करवुं, त्यारपछी ते श्रवण करेला श्रुतनु मनन करवु, त्यारपछी तेनुं निदिध्यासन करवु ए शास्त्र श्रवण, मनन, निदिध्यासन जे छे तेज पूर्वोक्त सम्यक् दर्शननी प्राप्ति कराववानां शुभ हेतु छे, माटे ते सपादन करवा सारु ज्ञानप्रद अने जीवितने सफल करनारां शास्त्रो सांभलवानो उद्यम करवो

तेमां कोइ अल्पपुण्यवानने कदापि आजीविकादिकना भयथी सांसारिक प्रपंचना योगें अवकाश न मली शकवाथी जो प्रतिदिवस शास्त्र भणवुं वांचवुं, अने श्रवण करवु न बने तो अष्टमी

प्रकारना विचित्रोपदेश आपनारा अनेक स्तुतिपात्र ग्रंथोनुं श्रवण न थइ शके तेवारें पोताना पूर्वकृत अशुभकर्मोना उदयने धि'कारी पश्चात्ताप करीने पण परमेश्वरे बतावेला श्रीपर्युषण पर्वना दिवसोमां आ कल्पसूत्रतो अवश्य सांभलवु एम सांभलवाथी तथा पूर्वोक्त पश्चात्ताप करवाथी पण अनेक प्रकारना पूर्व संचित ज्ञानावरणीय कर्मनो बंध छूटे छे, ते जेम जेम बंध छूटतो जाय तेम तेम क्रमे क्रमे क्षयोपशमनी तारतम्यता थती जाय, तेना योगे शास्त्र श्रवणादि साधन पण सुलभ थता जाय, तेथी कालांतरे ज्ञानी थवानो अवश्य संभव थाय, ए अनुक्रम अनुमानथी निर्विवाद सिद्ध छे आ कालमां प्रथमतो धर्म शास्त्रना संभलावनारा सत्यप्ररूपक निर्ग्रंथी साधुउनी जोगवाइ पण कोइ स्थले कोइ कोइ अवसरेज मले छे, तेम छता जो संभलावनार मली आवे तो सांभलनारा मलवा मुश्केल छे !!

वली हालना समयमां घणे स्थले तो यतीउनो निवास दीठामां आवे छे, ते यतिउ पण जेटला श्रावकोने रहेवाना स्थानको छे ते सर्व स्थानकोमां मली आवे तेम नथी, परंतु तेटला गामो मांहेला पण जे म्होटां म्होटां शहेरो ज्यां घणा श्रावकोनी वस्ति होय तेवा गामोमा म?ी आवे छे एटले लगभग जेटला श्रावकोने रहेवाना गामो अने शेहेरो आदिक छे ते मांहेला आशरे शोमां भागना गामोमां यतियोनो निवास दीठामां आवे छे, हवे ते यतीयो जे छे तेमा पण व्याकरणन्यायादि शास्त्रोमा निपुण थयेला एवातो भाग्येज सेकडे मात्र बे यतियो निकलेवा कठण थइ पडे; बाकीना अनाणुं रहे ते मांहेला अर्द्धा भागना यतियोतो श्रावकने प्रति क्रमण करवानी क्रिया सुधां पण समजी शके तेवा न होय, अने

यद्यपि पूर्वोक्त उदारवृत्ति, सदयता, परोपकारबुद्धि इत्यादि शुभकृत्यो तो अन्यदर्शनीओमां पण अनेक जीवो करे छे खरा, परंतु सम्यक् ज्ञान न होवाथी ते मात्र तेमने सांसारिक सुखनुं कारण रूप थाय छे, पण आत्मधर्मनी ओळखाण विना परंपरायें मोक्ष प्राप्तिना हेतु रूप थता नथी, केम के? तेमना धर्म प्ररूपकपण सर्व राग द्वेषनी वृत्तिवाळा छे, तेथी ते सत्य कहेवाय नहीं, सत्यधर्म तो जेने राग द्वेषनो अभाव थइ गयेलो छे, एवा श्रीतीर्थंकरदेवनो प्ररूपेलो छे तेज जाणवो ए वात अनुभवसिद्ध छे, ते विषे आशंकाओ तथा समाधान करवाने आ न्हानी सरखी प्रस्तावनामां स्थळ आपवुं व्याजबी कहेवाय नहीं

ते सत्यधर्म पामवानी अभिलाषा करनारा विवेकी जनोयें प्रथम तो गुरुआदिकना मुख थकी अनेक प्रकारनां शास्त्र श्रवण करवामां हरहमेश तत्पर रहेवुं जोइये शास्त्रो सांभळवा, तथा जे शास्त्र पोताने वांचवा भणवां योग्य होय ते पोते पण वांचवां तथा भणवां कदापि सांसारिक धंधा रोजगारनां प्रपंचथी जो वधारे अवकाश न मळी शकतो होय तो नित्य बे घडी, चार घडी पर्यंत जेटलो अवकाश मळी शके, तेटलो वखत शास्त्र श्रवण करवु, त्यारपछी ते श्रवण करेला श्रुतनुं मनन करवु, त्यारपछी तेनुं निदिध्यासन करवु ए शास्त्र श्रवण, मनन, निदिध्यासन जे छे तेज पूर्वोक्त सम्यक् दर्शननी प्राप्ति कराववानां मुख्य हेतु छे, माटे ते संपादन करवा सारु ज्ञानप्रद अने जीवितने सफळ करनारां शास्त्रो सांभळवानो उद्यम करवो

तेमां कोइ अल्पपुण्यवानने कदापि आजीविकादिकना भयथी सांसारिक प्रपंचना योगें अवकाश न मळी शकवाथी जो प्रतिदिवस शास्त्र भणवुं वांचवुं, अने श्रवण करवुं न बनी शके)

प्रकारना विविधोपदेश आपनारा अनेक स्तुतिपात्र ग्रंथोनुं श्रवण न थइ शके तेवारें पोताना पूर्वकृत अशुभकर्मोना उदयने धिःकारी पश्चात्ताप करीने पण परमेश्वरे बतावेला श्रीपर्युषण पर्वना दिवसोमां आ कल्पसूत्रतो अवश्य सांभलवु. एम सांभलवाथी तथा पूर्वोक्त पश्चाताप करवाथी पण अनेक प्रकारना पूर्व संचित ज्ञानावरणीय कर्मनो बंध छूटे छे, ते जेम जेम बंध छूटतो जाय तेम तेम क्रमे क्रमे क्षयोपशमनी तारतम्यता थती जाय, तेना योगे शास्त्र श्रवणादि साधन पण सुलभ थतां जाय, तेथी कालांतरे ज्ञानी थवानो अवश्य संभव थाय, ए अनुक्रम अनुमानथी निर्विवाद सिद्ध छे आ कालमां प्रथमतो धर्म शास्त्रना संभलावनारा सत्यप्ररूपक निर्ग्रंथी साधुउंनी जोगवाइ पण कोइ स्थले कोइ कोइ अवसरेज मले छे, तेम छता जो संभलावनार मली आवे तो सांभलनारा मलवा मुश्केल छे !!

वली हालना समयमां घणे स्थले तो यतीउंनो निवास दीठामां आवे छे, ते यतिउं पण जेटला श्रावकोने रहेवाना स्थानको छे ते सर्व स्थानकोमा मली आवे तेम नथी, परंतु तेटला गामो मांहेला पण जे महोटां महोटां शहेरो ज्यां घणा श्रावकोनी वस्ति होय तेवा गामोमा मली आवे छे एटले लगभग जेटला श्रावकोने रहेवाना गामो अने शेहेरो आदिक छे ते मांहेलां आशरे शोमां भागना गामोमा यतियोनो निवास दीठामां आवे छे, हवे ते यतीयो जे छे तेमा पण व्याकरणन्यायादि शास्त्रोमा निपुण थयेला एवातो भाग्येज सेकडे मात्र बे यतियो निकला कठण थइ पडे, बाकीना अजाण्युं रहे ते मांहेला अर्द्धी भागना यतियोतो श्रावकने पडिकमणु करवानी क्रिया सुधां पण समजी शके

अहीं पडिक्कमणादि क्रिया करावबानी तथा टवा प्रमुखना ग्रंथो व्याख्यानमां वांचवा प्रभु
स्वनी कलामां निपुण निकले तेटला यतियो श्रावकादिकोने धर्मोपदेश करे ते पण थोडाज
गामोमां समजवुं परंतु जे गामोमा यतिउनी पण योगवाइ न मले तेवा गामडांमां नित्य
व्याख्यान सांजलवुं तो दूर रयुं परंतु मात्र आखा वर्षमां महामांगल्यकारी महोटुं पर्युषण पर्व
आवे ठे, तेमां पांच दिवस पर्यंत श्रीकल्पसूत्र अवश्य सांजलवुं जोइये त्यां संविग्न गीतार्थ
महामुनिराजो के जेने सूत्र वाचवानो अधिकार ठे, तेवा पुरुषोना मुखथी कल्पसूत्र श्रवण
करवुं, ते तो रयुं, परंतु साधारण यतियोना मुखथी सांजलवानुं पण बनी शके नहीं एवीरीते
श्रीमालवादि देशोना गामोमा घणे स्थले अमारा वांचवामां तथा सांजलवामां पण आव्युं ठे

जे जे गामोमां वांचनारा यतियो अथवा गीतार्थ ज्ञानियोनो संयोग मले ठे, ते ते गामोमा सांजलनारा श्रावको पण बधा सरखा न होय केटलाएकने सिद्धांत श्रवण करवानी अजिलाषा होय ठे ते तो अवश्य सांजलवा जाय, वली केटलाएक महोटा दिवसो ठे माटे हमणा अवश्य सांजलवुं एम विचारी जाय, केटलाएक आपणा गाममां आपणे घार जण महोटा ठेये ते सांजलवा नहीं जइशुं तो बीजा पण कोइ सांजलवा जशे नहीं एवा हेतुथी जाय, तथा केटला एक दाक्षिण्यता देखाडवा महान् प्रतिष्ठित बनवासारु जाय, केटलाएक देखादेखीथी जाय, केटलाएक समजण नहीं, परंतु मात्र धर्मना दिवस ठे, एवा हेतुथी पण सांजलवा जाय इत्यादिक सांजलवा जवाना अनेक हेतु ठतां पण सांजलनारानी संख्या मात्र दसमो हिस्सो निकली शके, अने बाकीना नवमा हिसा जेटला प्राणीतो एवा अज्ञ होय के सांजलवामां कांइ समजेज नहीं तेमने तो बधा दिवसो अपम करवामां अमे सां

सारिक सुखनी मोज मजाहमाज आनद मानी घरमां बेशी रहेवानु गमे एवा घणा निकली आवे छे वर्त्तमान कालनु माहात्म्यज एवुं छे के, धर्म श्रवण प्राणीमात्रने दोहिलु थाय !

तथापि जे गामोमा सविज्ञ गीतार्थनी योगवाइ तो मलेज क्यांथी ? परंतु श्रीपर्वना दिवसोमा कल्पसूत्र वाची शके एवो कोइ यति पण मले नहीं, अने ते गाममा थोडा घणा पण पंजोसणना दिवसोमां कल्पसूत्र श्रवण करनारा तो जरुर निकली आवे, कदापि कोइ गाममा तेवी सख्या न निकली आवे तोपण धर्माध्यक्ष धर्माधिकारी पुरुषोनु साधारण धर्म छे के, तेवा गामोमा पण ते प्रकारनी प्रेरणा करीने अवश्यधर्मनी प्रवृत्ति कराववी जोइयेज हवे तेवा प्रवृत्ति करावनारा धर्माभिरुची जीवो पण आजना समयमा विरला दीठामां आवे छे, तेथी घणा स्थलोमां तो पर्युषण जेवा महोटा दिवसोमा पण कल्पसूत्र बिलकुल वचातुज नथी, अने जे जे गामोमा तेवा साभलनार ज्ञानरुची जीवो होय छे, तो तेमने ज्यारे कोइ सभलावनारो मलतो नथी, त्यारे ते श्रवण रुचिकर पुरुषो कोइ यतिने तेडीने कल्पसूत्र श्रवण करवानो ठराव करे छे, परंतु यतियो पण एवा होय छे के, जे गाममा पर्युषणना दिवसोमां रहे ते गाम माथी पांच पचाश रूपैया पेदा करवानी इछा राखे एवा होय छे, तेथी ते श्रवण करनारा जे निकली आवे ते वली बीजा पोताना मित्र, हेतु किंवा सगा सबधि अथवा साधर्मि भाइ उने तेमज तेवा कोइ अन्यजनोथी मिलाप करीने पांच दश जणने एकठा करी महाजनना शेठीआने समजावी तेमनी मारफत श्रावकोनी पासेथी टीप करावी यतिने आपवा सारु पेसा एकठा करे छे, ते एकठा थया पछी यतीने बहार गामथी बोलाववामा आवे छे, जे आवी पर्युषणना आठ दिवस ते गाममां रहे छे, अने तेमां कल्पसूत्र वाचवाना दिवसोमा

होय तो ते पोताने घेरज वेठा थकां पण कल्पसूत्र वांची शके तेवाने माटे, अथवा कोइ काने बहेरो होय तेथी बीजानो करेलो उपदेश श्रवण न करी शके परंतु पोतें वांची जाणतो होय तो तेने पण अंतराय न पडे तेमाटे, तथा घणा न्हाना न्हाना गामोमां मात्र पांच दश घेर श्रावकोना होय ठे तो तिहां कोइ यतिपण वांची सनलावनारो नाग्येज मले ! तेवा गामोना रहेवासीयोने पण कल्पसूत्र सांन्नलवानो अतराय न पडे तेवाउने माटे, तथा घणा स्थले श्राविकाउ परिचि एटले पडदा आडा राखीने बेसे ठे ते बाहिर सांन्नलवाने अर्थें जो उपासराविकमां जाय तो ते आडो पडदो बांधीने अन्यस्थानके क्यां जइ बेशी शके ? माटे पोथी होय तो तेपण घरमां वांची शके तेवी श्रावीकाउने अर्थें तथा तरतनी दीक्षित केटलिएक साधवीउ पण एवी होय ठे, के तेमने जो सुगम बालावबोध करेलो होय तोज वांचवाने अनुकूल थाय नहीं तो ते वांची शकवाने अशक्य थाय ठे तेमने माटे इत्यादि बीजा पण श्रोताउने विघ्न करनारा अनेक कारणो ठे ते सर्व अडचण मटाडवाने माटें घणा मुनिराजोने, तथा संविग्न पक्षीउने, तथा श्रीपूज्य नट्टारक आचार्यादिकोने, तेमज घणा यतीयोने, घणा देसोना श्रावको आज केटला एक वर्ष थया हरहमेस कहेतां आवे ठे के, सहेला इथी वचाय एवी रीते जो कल्पसूत्रनो बालावबोध करीने ठपावी प्रसिद्ध कस्यो होय तो तेथी श्रोता जनोनी उपर महोटो उपकार थाय, अने पूर्वोक्त हरकतो मटी जाय तेम ठतां कोइ पण आचार्यादिकें तेम कर्युं नहीं ठेवट संवत् १९३५ नी शालमां श्रीविजयराजेंद्रसूरि मालवादेश मांहेला श्री जांबुवा नगरने विषे मास कल्प रह्या हता, ज्यां मालवा, मारवाड तथा गुंजरात अने पारकर मली चार देशना श्रावको तरफथी चार माणसोए

कल्पसूत्र पण पोतानी पासे जेवी प्रत होय तेवी प्रत उपरथी सर्व सजाने यथामति वांची सजावे त्यारें सांजजनारा सांजली शके

तिहां कोइ कोइ पोथीमां तो संक्षेपथीज वात जखेली होय बे, अने कोइमां अतिसंक्षेपथी कोइमां मध्यमथी, कोइमां तेथी विशेष तेमज कोइमां उत्कृष्ट रीतें सविस्तर वात पण जखेली होय बे, हवे तेज गाममां एक वर्षे एक यती आवे, अने बीजा वर्षे बीजो यती आवे, तो ते बीजी पोथी लइ आवी वांचे, तेमां वली कोइ कथाजाग उंगो अधिको जखेलो होय, ते सां जलीने अथवा तेज यती होयने बीजे वर्षे बीजी पोथी लइ आवीने वांचे तो पण सांजजनारा बधाए प्रवीणतो होय नही,के जेथी ते समजी जाय जे कल्पसूत्रनो मूलपाठतो १२१६ श्लो कनो बे, तेनो अर्थतो मात्र अर्थ करनाराउनी वाक्यरचनामां फेर पडे ते जले, बाकी जा वाथी बधो सरखो होय बे परंतु पाबलथी केटलाएक आचार्योंये जे कथाजाग वधार्यो बे, ते कोइये थोडो तो कोइ आचार्ये घणो जाग वधार्यो बे; एवी वातना समजनारा थोडा होय, परंतु गया वर्षे तो आ असुक कथा सांजली हती तेमां आटली वात न हती, अने आ वर्षे आटली वात केम वधारे आवी? किंवा उंगी आवी,अथवा गया वर्षे आ असुक कथा वांचवामा आवी हती, अने आ वर्षे ते कथाज केम न वचाणी? एवी आशकाउ करनारा घणा होय माटे तेमना मनमा तेवी अशकाउ मुजवण करी नाखे बे तेथी तेमने महोटुं विचार थइ पडे बे माटे तेवा गामडीयामां जो एकज प्रकारनुं जखेलुं पुस्तक वर्षोवर्ष वचातु होय तो तेमने कोई संशय उत्पन्न न थाय तेमने माटे तथा कोइ वृद्ध श्रावक जरावस्थाने लीधे अथवा कोइ रोगादिना प्रसंगथी चालीने उपासरा सुधी पण कल्पसूत्र सांजलवा माटे जइ शकतो न

होय तो ते पोताने घेरज बेठा थकां पण कल्पसूत्र वांची शके तेवाने माटे, अथवा कोइ काने बहेरो होय तेथी बीजानो करेलो उपदेश श्रवण न करी शके परंतु पोतें वांची जाणतो होय तो तेने पण अंतराय न पडे तेमाटे, तथा घणा न्हाना न्हाना गामोमां मात्र पांच दश घेर श्रावकोना होय छे तो तिहां कोइ यतिपण वाची संभलावनारो जाग्येज मले ! तेवा गामोना रहेवासीयोने पण कल्पसूत्र सांभलवानो अंतराय न पडे तेवाउने माटे, तथा घणा स्थले श्राविकाउ परिदि एटले पडदा आडा राखीने बेसे छे ते बाहिर सांभलवाने अर्थे जो उपासरा विकमां जाय तो ते आडो पडदो बांधीने अन्यस्थानके क्यां जइ बेशी शके ? माटे पोथी होय तो तेपण घरमां वांची शके तेवी श्रावीकाउने अर्थे तथा तरतनी दीक्षित केटलिएक साधवीउ पण एवी होय छे, के तेमने जो सुगम बालावबोध करेलो होय तोज वांचवाने अनुकूल थाय नहीं तो ते वांची शकवाने अशक्य थाय छे तेमने माटे इत्यादि बीजा पण श्रोताउने विघ्न करनारा अनेक कारणो छे ते सर्व अडचण मटाडवाने माटे घणा मुनिराजोने, तथा संविज्ञ पक्षीउने, तथा श्रीपूज्य भट्टारक आचार्यादिकोने, तेमज घणा यतीयोने, घणा देसोना श्रावको आज केटला एक वर्ष थया हरहमेस कहेतां आवे छे के, सहेला इथी वचाय एवी रीते जो कल्पसूत्रनो बालावबोध करीने छपावी प्रसिद्ध कर्यो होय तो तेथी श्रोता जनोनी उपर महोटो उपकार थाय, अने पूर्वोक्त हरकतो मटी जाय तेम छतां कोइ पण आचार्यादिकें तेम कर्युं नहीं छेवट संवत् १९३५ नी सालमां श्रीविजयराजेंद्रसूरि मालवादेश मांहेला श्री जांबुवा नगरने विषे मास कल्प रह्या हता, त्यां मालवा, मारवाड तथा गुंजरात अने पारकर मली चार देशना श्रावको तरफथी चार माणसोए

आवीने महाराज साहेबने कल्पसूत्रनो सुगम बालावबोध बनाववानी विनति करी ते सांजली महाराजें कयुं के आगल ए कल्पसूत्रनी आठ ढालो पंमित श्रीज्ञानविमलसूरियें नापा रूपे रचेली ठे, एवुं सांजलीये ठेयें माटे हवे विशेष सुगम करवानी जरूर नथी, तोपण श्रीसघनी तरफथी विनति करवा आवनारा माणसोयें कयुं, के ते ग्रंथमां थविरावली तथा साधुसमाचारी नथी माटे एक व्याख्यान ओछु ठे, अने वली वात पण संक्षेपथी कहेली ठे तेथी ते ग्रंथ अधूरो कहेवाय कयुं ठे के, "अधुरुं ध्यानसो ध्यान नहीं, अधूरो नाणोसो नाणो नहीं, ॥ अधूरी रसोइसो रसोइमां नहीं, अधूरो वृक्ष सो फले नहीं ॥ अधूरो फल पाको सो बराबर स्वाद नहीं, तिणसु संपूर्ण चाहीजे" ते आप महान्पुरुष ठो, परमो पकारी ठो माटे श्रीसघनी उपर कृपादृष्टि पूर्वक अमोये करेली अरजी कबुल राखो

एवुं सांजली महाराजे श्रावकोनी हस्तक चार पांच नंमारार्थमांथी घणी जीर्ण पुरातन लखेली चूर्णि, निर्युक्ति, टीकादिक पंचांगीनी, बे चार शुद्ध प्रतो एकठी करावीने कल्पसूत्र नो बालावबोध करवा मांड्यो, ते तयार थया पठी केटलाएक श्रावकोयें तो ते प्रत उपर थी उतारा करवा मांमघा ते सुमारे पांच पचास उतारा पण थया वली पण उतारा करी प्रतो लखाववानी इछा घणा जनोना मनमां हती पण लहिया तरत वखत उपर मली शके नहीं तेमज प्रत लखी तयार करवाने पण वरसोना वर्ष निकली जाय, एक प्रत पचाश शाठ रुपैया खरच करवाथी बनी शके, ते काम बधाने अनुकूल पडे नहीं मात्र तवगर शेठ साहु कारोथी बनी शके, परंतु गरिब वांचनाराथी एटला पैशा खरचाय नहीं तथा वली ते प्रत लखा वीने पठी शोधन करी आपनार पण कोइ मली शके नहीं इत्यादिक अनेक प्रकारना विघ्नो

जलावनाराउने माथे पडवाथी सर्व सज्जनोना मनोरथ पूर्ण थइ शक्या नहीं

त्यार पछी संवत् १९४१ नी सालमां महामुनि श्रीकीर्त्तिचन्द्रजी महाराज तथा महामुनि केशरविजयजी ए बे मुनिराजो ते साक्षात् जाणे चोथा आरामांहेला साधुउना नमुनानी मूर्त्तिउज होयनी ? एवा शुद्ध चारित्रिया, पंचमहाव्रतना यथार्थ पालनारा साधुउयें श्रीसीयाणानगरमां आवी चोमासुं कर्युं अकस्मात् बनाव एवो बन्यो के गामश्री वागराना रहेवासी श्रावकोंने ते गामना सिरदार साथें कोइ प्रकारनो वांधो पड्यो तेने लीधे तेमनें पण पोताना घर मूकीने गामश्री सीयाणा नगरमा आवी रहेवु पडयु एम ते गाममां बे गामोना श्रावकोनो जमाव थयो, अने साधु मुनिराजोनी जोगवाइ पण मली आव्याथी त्यां घणा श्रावक श्राविकाउयें सम्यक्त्वादि अनेक प्रकारना व्रतपच्चरकाण कर्या तेमां वली ते वखतमां विशेष आश्चर्य उत्पन्न करनारी आ वात बनी के, ते गामना रेहवासी क्षत्री, चोधरी, घांची, कुंभारादि अनेक प्रकारना अन्यवर्णीउ तेमां वली यवन लोको अने ते गामना ठाकोर सहित पण साथे मली सम्यक्त्वादि व्रत धारण करवा मंडी गया एवी रीतें अनेक जीवो त्यां समकेत पाम्या छेवट जेनाथी कांइ विशेष व्रत लेवुं न बनी शक्युं, तो तेणे मात्र महारे आ जन्मपर्यंत सूड न बालवानो, कोइयें पंजोसणना आठ दिवस पर्यंत धान न कापवानो, केटला एकें रात्रिभोजन त्याग करवानो, कोइयें आठम चौदशे जीवहिंसा न करवानो, तथा गामना ठाकोरना भाइयें तो जावजीव हिंसा नहीं करवानो एवा घणाजनोये नियम लीधा तथा ठाकोरे पोते पोताना घरमां जे बकरा तथा पाडा प्रमुख अनेक जातिना जीवो हिंसा करवा माटे राखेला हता, तेमने पण अभयदान आपी छूटा

करी श्रावकोना पंच खातानो जीवरक्षित पांजरापोल छे तेमां मोकली आप्या इत्यादि रीते ते चोमासामां घणाज जीवो समकेत प्रमुख अनेक प्रकारना व्रतधारीज थया, तेथी महोटो उपकार थयो, अने जैनधर्म अत्यंत देदीप्यमान सूर्य सरखो दीसवा लाग्यो

तेमज बीजा पण सीयाणा गामना परगणाने आसपास चारे बाजुये फरता वीश वीश पच्चीश पच्चीश कोशमां आवेला गामोना रहेवासी श्रावको मांहेला घणा श्रावको पण स्थावर तीर्थ करतां जंगम तीर्थ वांदवामां असंख्यात गुणु लाभ वधारे छे,एवुं समजीने त्यांहां बिराजेला बे साधु मुनिराजोनी साथे सांवत्सरी खमाववाने माटे वंदन करवा निमित्ते आव्या

एवी रीते घणा गामोना श्रावको एकठा थया, तेवा अवसरे प्रसंगानुसारे मुनिराजोए पण धर्मोपदेशमां ज्ञानदान आपवानी तुलना करनार अन्य कोइ दान नथी एवुं व्याख्यान कर्युं तेवारें सभा मांहेला श्रावको बोल्याके, ए ज्ञानदानतो मुनिमहाराजथी थइ सके छे, परंतु श्रावकोथी कांइ बनी शकतु नथी ते सांभली मुनिमहाराज बोल्या के, पुस्तको लखावीने जे जे ज्ञान भणवानी तथा वांचवानी रुचीवाला होय तेमने आपवाथी तथा ज्ञानना उपकरण आपवाथी, तेमज ज्ञान भणनाराउने अन्नवस्त्रादिकनुं साहाय्य आपवाथी, बीजाने भणाववा आदिकथी श्रावको पण परिपूर्ण ज्ञानदान करी शके छे

ए वात मुनिउना मुखथी सांभलवा पछी तेज दिवसें रात्रिना वखते श्रावको सर्व एकठा थया तेमणे एवो ठेराव कर्योके पंजोसण पर्वमां कल्पसूत्र सांभलवाने तथा बीजा पर्वोमां जे जे पर्व ज्यारे आवे छे तेवारे ते ते पर्वनी कथाउ सांभलवाने घणा श्रावकोने अंतराय पडे छे, माटे आपणने प्रथम भागमां तो पूज्य भट्टारक श्रीविजयराजेंद्रसूरिये बनावेला कल्पसूत्र

नो बालावबोध छे ते छपाववो अने बीजा नागमां दीवालिआदिक सर्व पर्वनी कथाउनो बा
लावबोध छपाववो, तथा त्रीजा नागमां वली कोइ सर्व संघने उपयोगी ग्रंथ हशे ते विचार क
रीने छपावीए एवीरीतें गामश्री सीयाणा तथा गामश्री वागराना श्रावक पंचो मलीने कबुलात
आपीके जे पूर्वोक्त ग्रंथो छपवानो खरच लागशे ते अमो आपीशुं तेनो व्याज लइशुं न
हीं अने छपायला प्रत्येक पुस्तकनी_शो शो नकलो तो निर्ग्रंथ साधुउ तथा असमर्थ श्रावको
जे वाचवानी रुचीवाला होशे तेमने मफत आपछु एवो ठेराव करीने छपाववा सबधी का
मकाजनी तथा शो शो नकल कोने मफत आपवी तेनी तपास करवा माटे शा रतनाजी
वाघाजी गामश्री आहोरना रेवासी श्रावक छे ते घणुज प्रामाणिक, नीतिमान्, विवेकी, माह्यो,
दयालु, नरोसादार, विश्वासु अने शास्त्रज्ञ छे माटे तेने अधिकारी ठेरवीने प्रथम श्रीकल्पसूत्रनो
बालावबोध छपवाना कामने मदत आपवा माटे टीप नरवा मोंडी तेमां मदतकरनारा श्रा
वकोनी संख्या घणीज महोटी थवाथी श्रावक केसरीमल्ल कस्तुरजी गामश्री सीयाणा वाला
यें कह्युं के जो बीजा ग्राहक ए पुस्तकोने लेनारा थशे, तो तमोयें मगावेला पुस्तकोनी संख्या
मां फाला प्रमाणे प्रत्येक पुस्तक राखनार धणीने पुस्तको कमती आपीशुं ते वात सर्व टीपमां
नाम दाखल करनाराउयें मञ्जुर राखीने सजा विसर्ज्जन थइ ते दिवसें श्रीसंघे करेला ठेराव
ने अनुसरीने में आ पुस्तक श्रीमुबईमां श्रावक नीमसिंह माणकनी मारफत छपाव्यु छे

हवे आ ग्रंथ श्रीपर्युषणाना दिवसोमा वांचवानो छे माटे हालमा महारा दीठामा आवेली
प्रवृत्ति मुजब केटलाएक श्रावक अने साधुउनी जे ऊलटी आचरणा पंजोसणना दिवसो
मां पण सुधरती नथी ते हवे सुधारी लेशे एवी आशा राखीने प्रथम तेमनी आचारणा

फद्दी वेखाडुं हु जे दिवसोमां प्रत्येक सम्यक्दृष्टी जीवोने अरस्परसमा उत्पन्न थयेलो वै रविरोध ते,सर्व मन,वचन कायायेंकरी टाली नाखवो जोइये,जे दिवसोमा प्रतिक्रण धर्मध्यान मां प्रवृत्ति करवी जोइयें, जे दिवसोमा दर हमेश संवरजावमां रहेवु जोइयें, जे दिवसोमां उत्तम प्रकारना वेराग्य दशाने स्फुरण करनारा, एवा महान्पुरुषोना रचेला शास्त्र श्रवण करवा जोइयें, जे दिवसोमां राग द्वेष टाली शत्रु मित्रने समजावे गणवा जोइयें, जे दिवसोमां षद् काय जीवोनी जयणा राखवी जोइयें कारणके स्वाजाविक पण श्रावकनो आचार ए छे जे कोइ पण कार्य करवुं ते जयणायुक्त उपशमजावसहित करवुं, तेवारे पंजोसण जेवा सर्वोत्तम पर्वमां तो वली उपशम जाव अत्यंत विशेष राखवानी आवश्यकता छे तेम छतां पंजोसण जेवा महोटा दिवसोमां पण आपस आपसमा एक कहे के महारो गछ महोटो तो बीजो कहेशे अमारो गछ महोटो एम गछने माटे ज लढाइ करी विरुद्ध वचन बोली क्लेश उत्पन्न करी नाखे, वली एक कहेशे के तमे चोथनी सवत्सरी करो छो माटे जैनमतथी विरुद्ध चालो छो, वली बीजो कहेशे के तमे पांचमनी सवत्सरी करो छो ते जैनमतथी विरुद्ध करो छो, एक कहेशे तमे उगमती तिथी ल्योछो, तो बीजो कहेशे तमे आथमती तिथी ल्योछो, तेमज एक कहेशे के देरासरनो आ अमुक पूजारो राखवो तो बीजो कहेशे अमुकने राखवो, वली सामिवात्सल्य जीव दयाना उत्तम प्रकारना कार्योने माटे तेमज गोरजीनी पछेडीने माटे, वासक्षेप नाखवाने माटे पण टीपणीउ फरती करे ते वखत पण एक बीजानी पासेथी कमती जास्ती रकम जरावत्रानें माटे में एटलु आप्युं तो तमे एटलु आपो नहीं तो हुं अमुक रकम नही आपीश, हु पण अमुकज रकम आपीश एवीरीतें एक बीजानी साथे क्लेशकारी वचन बोले

छे घणुं शुं कहीयें, परंतु आखा वरसना जे वरवांधा होय ते पंजोसण जेवा महोटा पर्वना दिवसोमा आवी छना करीने कजीयो उत्पन्न करवानु कारण नीपजावे वास्तविक रीतें जोतां श्रावकोने तो गच्छ छेज नही जो गच्छ छे तोपण साधु आश्रयी सिद्धांतोमा गच्छ कह्या छे परंतु श्रावक आश्रयी कोइ स्थानके सिद्धांतोमा गच्छ कह्या नथी माटे गच्छोने वास्ते लडाइ करीने पंजोसणना दिवसोमा शुभक्रिया करवी पडी मूकी तेने बदले कलहकरण रूप क्रिया तो अवश्य नज करवी जोइयें तेमज वली जेनी मरजीमा जे आवे ते धणी पोतानी श्रद्धापूर्वक तेटला नाणा टीपणी प्रमुखमां भरी आपे किंवा न पण भरी आपे तो तेथी शु गेरफायदो थयो? पोते पोतानी उदारतासहित जेम बने तेम शुभक्रियामां वधारे द्रव्य खरचवुं ते पण पोतानी लघुता दर्शावता छतां खरचवुं, कारण के बनता सुधी जो गुप्त रीते परोपकारमां खरचातु होय तो वली घणुज रूडुं समजवुं समजु श्रावकें तो पोतानु नाम राखवानी पण अभिलाषा न राखवी, परंतु छेवट कोइ रीतें छूटी शकातुं न होय, तेवारें पोतानुं नाम आपवु पडे तो जुदे; नहिं तो मात्र नामनाने माटे द्रव्य खरचीने अल्प फल प्राप्त करी लेवुं नही

वली आ कल्पसूत्रने सभासमक्ष वाचनारें केवी रीतें वाचवु ते सबधि केटलो एक खोलासो यद्यपि प्रथम आ ग्रंथना प्रारंभमा लखायलो छे खरो, तथापि वली कांइक वाचनारने विशेष भलामण करवानी रजा लइये छैये के, प्रथम तो वांचनार जे होय ते श्रीवीतरागना वचन उपर पूर्ण श्रद्धालु होय, बीजु देशकालने अनुमाने यथाशक्तियें कोइपण प्रकारनु व्रत करेलु होय, त्रीजु सभासमक्ष जे दिवसथी वांचे ते दिवसथी मामीने ज्यांसुधी पूर्ण करे त्यांसुधी सचित्त वस्तुनो त्यागी होय, चोथु वांचे तेटला दिवस ब्रह्मचर्यनो पालनारो होय, एवो

पुरुष पोसह अथवा सामायिक लइने, आगल शुद्ध वाजोट राखी तेनी उपर कवली स्थापी ते उपरे वड्डु यत्ना सहित, विनयपूर्वक पुस्तक राखीने पछी सांजलनाराउंनी सजा एकठी थाय तेवारें वीजो एक वाजोट मूकेलो होय तेनी आगल पांच पच्चीश वाइयो गीत गाती थकी आवी ने प्रथम कंकुनुं स्वस्तिक गुंहली करी तेनी उपर घोखा शालिनुं स्वस्तिक गुंहली करे ते गुंहली करीने वाइयो तथा माणस सर्व ज्यारे पोतपोताना योग्य स्थानके वेसी जाय त्यार पछी वांचनार जे होय ते त्रण वार पुस्तकने नमस्कार करे, पछी सजासहित पोते उजो थइने एक नवकारनो पाठ कहीने " पुरिमचरिमाणकप्पो० " ए मंगलाचरणनी गाथा संपूर्ण कहीने पछी नीचे वेसी मुख आगल मुखवस्त्रिका राखीने सजासमक्ष वांचना करे, परंतु उघाडे मुखे वांचे नही ते पण काल वेलाये वांचे ते आवी रीतें के सवारना सात वागाथी ते अगीआर वागा पर्यंत वांचे, अने फरी मध्यान्हे वार उपर एक वाग्याथी मांमीने सांजना चार वागा पर्यंत वांचे एवा प्रकारनो विधि जेटला दिवस वचाय तेटला दिवस हररोज करवो एम करी बरावर मुद्दतसर आठ वांचना तो अवश्य पूर्ण करवी अने थविरावली पट्टावली जो तेटला दिवसमा संपूर्ण न वचाइ शकाय तो ते पंजोसणना वीजा दिवसें वचाय तो पण कांइ हरकत नथी एवी रीतें वांचतां कदापि एक वांचनारनो वांचतां वांचतां घांटो वेसी जाय, अथवा बीजु कोइ निमित्त बनी आवे, तो ते स्थाने वीजो जे श्रद्धालु वांचनार आवी वेशे ते पण पूर्वोक्त विधिसहित वांचे आ सजा समक्ष वांचनारनो विधि कह्यो

हवे जे पोतानी मेले मनमां वांचीने धारी राखतो होय, अथवा पोतें वांचीने पोताने ज सांजलवु होय, तो तेणें पण मुखवस्त्रिका आडी आपी पवित्र थइने अकाल वेला टाली

कवली उपर पोथी राखी वांचवुं ए घुजफलनी देनारी उत्तम प्रकारनी वांचवानी रीत छे
आ ग्रंथमां जे जे स्थानके जे जे विषयो उपर कथाउ आवेली छे, त्यां त्यां ते ते कथाउना संबंध
मा जे जे धनाव वनेला छे तेना चित्रो पण स्थानके स्थानके दाखल करेला छे एवा सर्व म
ली चोरासी चित्रोनो समावेश करेलो छे, तेमां अमारा तरफथी केटला एक चित्रोमा नूलो थये
लीछ छे एक तो श्रीमहावीर नगवानने देवानदा ब्राह्मणीनी कुक्षीमांथी हरणी गमेषी
देवतायें जे वखत संहृथा छे, ते वखत जन्मेला बालकना जेवुं तथा हारादिक आनूपणोये
करी युक्त नगवाननुं रूप दर्शावेलु छे ते ठेकाणे एवी आकृति करवी जोश्ती न हती, परंतु
व्यासी दिवस गर्नमां रहेला वालकनो जेवो आकार थाय छे तेवी आकृति आनूपणोरहित
करवानी हती, तथा वली एज गर्न त्रिशला राणीनी कूखमा संक्रमाववाने वखते पण तेवी
ज आकृति करवी जोश्ती हती, वीजु जे वखत नगवान् श्रीवीरस्वामीने इंद्र महाराज मेरुप
र्वतनी उपर पांडुकवनमा जन्मसंबंधि महोत्सव करवाने लइ गयेला छे ते वखत इंद्रना खो
लामा नेसाडीने नगवानना पगनो अंगुठो मेरुपर्वतनी उपर राखी जाणे ते अंगुठो मेरुपर्वत
ने दावतो होय ? एवा आकारमां स्नान कराववानुं चित्र करवुं जोश्तु हतुं, तेने बदले इंद्रना खो
लामां आडो सुवारी मूकवा जेवी आकृति वनीगयेली छे ए पण चित्रमां नूल थयेली छे
तथा वली केटलेक ठेकाणे जे वखत जेवा अंत करणना विचारमां जीव होय ते वखत तेनी
मुखमुद्रा तथा शरीरना अवयवो पण तेवाज करवा जोश्यें तेने बदले तेवी मुखाकृति अने
शरीरना बीजा नागोना अवयवो न बनेला जेवा चित्र पण थइ गयेला दीठामां आवे छे ते
सर्वथि अमाराथी अजाणपणे जे जे नूलो विवेकी सज्जनोने चित्रोमां दीठामां आवे ते

सर्व जूलोनी क्षमापना चित्र अवलोकन करनारा चतुर जनोनी पासेथी हुं मागुं छुं.

आ कल्पसूत्र मूल पाठे १२१५ श्लोकनी संख्यानुं श्रीजद्रबाहु सूरिये मागधी जाषामां गद्यरूपें रचेलुं छे ते प्रथमतो मात्र जाद्रपद शुक्ल पंचमीना दिवसें साधुजनोज वांचता हता ते संबधि वात प्रथमा आवी गयेली छे, परंतु जेवारें आनंदपुरनगर के जे हमणा वडनगरने नामे उलखाय छे ते नगरना ध्रुवसेनराजा तथा बीजा पण घणा श्रावक श्राविकादि चतुर्विध श्रीसंघनी समक्ष आ सूत्र वांचवानी चाल प्रवृत्त थई ते वखतथी श्रीपर्वना दिवसोमां प्रत्येक गामोगामे ज्यां ज्यां श्रावकोनी वस्ति घणी होय त्यां त्यां साधुजनोए एनी वाचना करवा मांमी, परंतु ते वखतमां बधाय साधुउ संस्कृतादि जाषामां निपुण हता तेथी ए उक्त सूत्रनी टीका, चूर्णि आदिक संस्कृत जाषामां करेलीउ हती ते वांचता हता, तथा पछी पण घणा कालपर्यंत वांचनाराउ तेज जाषामां वांचता हता परंतु ते वखते घणु करीने टबा तथा बालावबोध करवानी जरूर पडती न हती एवीरीतें एक आ कल्पसूत्र नहीं परंतु अगणित ग्रथो जे जैन संप्रदायमां प्रवर्त्तता हता ते बधाय ग्रंथोनी रचना मागधी अथवा संस्कृत जाषामांज थती हती ज्यारें क्रमे क्रमे संस्कृत जाषाना अभ्यासी साधुउनी न्यूनता थवा मांमी तेवारें घणाएक मागधी जाषामां अने संस्कृत जाषामां बनावेला ग्रंथोनी उपर पंमित जनोयें टबा जरवा मांम्या तथा केटलाएक ग्रंथोना बालावबोध करवा मांम्या एवी चाल घणु करीने विक्रम संवत् चौदशोंना शतकथी वधारे पहेली दीठामां आवे छे तेमां पण घणा ग्रथोनी उपर घणु करीने गुर्जर जाषामां मात्र अक्षरार्थ रूपे टबा करेला तथा केटलाएक ग्रंथोना कांइक अक्षरार्थथी विस्तार करीने टबा करेला अने केटलाएक ग्रंथोना संस्कृत टीका

उपरथी जाणे गुर्जर जाषामां टीकाज बनावेली होय, एवी रीतना घणा विस्तारपूर्वक बाला
वबोध करेला दीठामां आवे छे तेमज संस्कृत जाषामां थयेली टीकाउथी कोइ कोइ स्थले अ
थवा सर्व स्थलें न्यूनाधिक बालावबोध थयेला पण दीठामां आवे छे एवी रूढी जेम गुर्जर
जाषामां वधारे पहेली देखाय छे तेमज हिंदुस्थानी जाषामां अने मारवाड मेवाड वगेरे अन्य
देशोनी जाषामां तथा एक, बे, त्रण, देशोनी मिश्र थयेली जाषामां पण केटलाएक ग्रंथोना टबा
अने बालावबोध बनेला देखाय छे तेने लीधे संस्कृत जाषाथी अज्ञात रहेला जनोने ग्रंथो
वांचवाने अनुकूलता थती गइ, तथापि अद्यापि सुधि जे कोइ पूर्वाचार्योंए संस्कृत अने मा
गधी जाषाउमां अगणित ग्रंथो रचेला छे तेमाना दशहजारमा जाग जेटला ग्रंथोना टबा
तथा बालावबोध थयेला नथी हजी एएएएए मा जाग जेटला ग्रंथो लगजग टबा तथा बा
लावबोध कर्या विनाना शेष रहि गयेला छे तेनो बालावबोधादिक करवानु काम आगल पंडि
त जनोना विचार उपर अने मेहेनत उपर आधार राखे छे एवीरीतें ए कल्पसूत्रना पण
जुदा जुदा अनेक साधुउ टबा तथा बालावबोधादिक रचता गया तेमां मूलपाठ उपर तो
टबा जरेला होय अने बीजी प्रसंगे आवेली वातो तथा कथाउ ते बालबोध रूपे लखेली
होय पण जे प्रतमां मूलपाठ लखेलो होय ते प्रतनो विगयादि त्यागी योगवहन करनारा सा
धुउ सिवाय अन्य कोइथी वांची शकाय नहीं माटे पूर्वोक्त सर्व कोइने वांचवाना काममां
आवे एवा हेतुथी आ ग्रंथमां मूलपाठ काहाडी नाखीने मात्र ते मूलपाठना संक्षेपथी अर्थ
लइने तथा टीकाकारना आधारथी केटलो एक कथाजाग प्रमुख लइने श्रीविजयराजेंद्र सूरियें
वधो मलीने ५५०० श्लोकनो आसरे बालावबोध रूपे ग्रंथ रच्यो पण तेमां वली घणी कथाउ तो

घणकरुं हतीज नही तेमज बीजी पण उपाश्रो लखेली प्रतो साथे मेलवतां केटलीक वातो न्यूनाधिक दीगामां आवी माटे बीजी बे पण कल्पसूत्रोनी उपाश्रानी प्रतोनो आधार लइने तेमां छापनार श्रावक भीमसिंह माणेके वधारो कर्यो तेथी आ ग्रंथ लगभग अगीआर हजार श्लोक संख्या जेटलो थइ गयो हजी पण पयिरावली वगेरेमां घणी वात वधारे लखवानी हती पण थोडा दिवसना व्याख्यानमां पूर्ण थइ शके नही तेना लगथी पडती मूकी देवी पडी छे, तथा वली श्रीपार्श्वनाथस्वामीना चरित्रमां तेमज बीजे केटलीक स्थानके अन्य प्रतोमां लखेली वातोथी तदन जुदीज रीतें अने अति संक्षेपमां महाराज साहेबे वातो लखी काहाडी हती ते मांहेली घणा स्थले तो फेरवी नाखेली छे, परंतु केटलाएक स्थानके रोगग्रस्त होवाथी तथा महाराजने कागल लखी जुवाब मगाववाथी घणा दिवस छापवानुं काम बंध रहेवुं पडे तेम न बनी शकवाथी एमज रेहेवा दीधी छे तेमज छापवाने घणी उतावल माटे वधारे शोधन पण थयुं नथी, तथापि जेटलुं बनी शक्युं तेटलुं यत्किंचित शोधन पण कर्युं छे वली मारवाड, गुर्जर तथा हिंदुस्थानी मली त्रण भाषायें मिश्रित आ ग्रंथ महाराज साहेबे बनावेलो हतो, परंतु तेमां घणा वांचनार साहेबोने वांचतां कंटालो उपजे कदाचित् तेने यथार्थ अर्थ न बेसे, तेथी ते भाषा सुधारीने श्रावक शा भीमसिंह माणेके घणुं करी ने गुर्जर भाषामां लखीने छाप्युं छे तोपण हजी कोइ कोइ स्थानके मारवाडादि देशोनी भाषायें मिश्रित वचनी भाषा रहेली हशे तथा कोइ कोइ वातो पण अपूर्ण रहेली हशे ते ज पुनरुक्ति पण घणा स्थानकें दीगामां आवशे ते सर्व वांचनार सज्जनोयें सुधारी वांचवुं आ ग्रंथमां शोधनार श्रावक भीमसिंहमाणेकनी नजर चूकथी तथा बुद्धिनी मंदताथी तथा

लखावी मोकलेली प्रतमां लेखकना दोषथी जे जे नूलो वीगमां आवी ते सर्वनुं शुद्धिपत्र पण गाम श्रीपरादथी पारेख अंबा मोतीचदें करी मोकलेलु ठे, ते प्रमाणे अहीं ठापी मुक्युं ठे, तथापि ते शुद्धिपत्र फरी पाछु प्रत साथे मेलववाने फुरसद न मलवाथी तपासवामां आव्यु नथी, तेथी तेमां पण वधी पूरेपूरी चुको दाखल थइ गयेली होय एम जणातु नथी, माटे एवी नूलो सबधि जे कोइ खामीयो रहेली आ ग्रथने विषे वांचक जनोने दृष्टिगोचर थाय तो ते साहेबोये अमारा उपर कृपादृष्टी राखीने सुधारी वाचवी अमे आ ग्रथमां रही गयेली नूलोसबंधि थयेलो अमारो अपराध तथा बीजोपण जेकांइ श्रीजिनवचनविरुद्ध आ ग्रथमां लखाण कयु होय ते सर्वनुं मिछामिदुक्कड सर्व श्रीसघनी साथे करीये ठैये

तथा ए ग्रथमां जे वक्रजडादि उपर दृष्टांतोनी कथाउ आवेली ठे, तेमज बीजा पण घणा स्थले कथाउ आवेली ठे, तेमां जुदी जुदी प्रतोनी लखावट उपरथी फेरफार दीगमां आवशे माटे प्रथम कल्पसूत्र सांनलनारा साहेबोये कोइ जगायें कथा विस्तारपूर्वक सांनलेली होय अने ए ग्रथमा सक्षेपथी लखेली होय, अथवा प्रथम कोइ जगायें सक्षेपथी कथा सांनलेली होय अने आ जगायें विस्तारपूर्वक लखेली होय अथवा ते कथाना संबधमां पण कोइ वार्त्ता कोइक प्रतमां एक रीतें लखेली होय अने तेज वार्त्ता वली बीजी प्रतमां बीजी रीतें लखेली होय तो, ते सर्व जुदी जुदी प्रतो जुदा जुदा साधुउना हाथथी बनावेली होवाथी तेमज जुदा जुदा माणसोना हाथे लखायाथी परंपराये एवा प्रकारनो फेरफार चाल्योज आवे ठे, माटे तेवा तेवा फेरफार जोइने कोइ वाचनारे अथवा सांनलनारे एमां नूल थयेली ठे एम समजीने मनमां सशय आणवो नही नि सदेह थइने एकाग्रचित्तें सांनलवु

वळी अमो सर्व श्रावक भाइओने महोटा उत्साहपूर्वक प्रार्थना करीयें छैयें के, आ कल्प सूत्रनी जो वधारे प्रतो न राखी शकाय तोपण प्रत्येक श्रावके एकेकी प्रत तो पोतानी पासें अवश्य राखवी केमके? आ पुस्तकमां महा मांगलिकना करनारा एवा चौद सुपन जे श्रीतीर्थकर भगवाननी माताने जे वखते भगवान् कूखमां आवी उपजे छे, ते वखते दीठामा आवे छे, ते चौदे सुपनानां चित्रो घणांज सुशोभित बनावी दाखल करेला छे, तेमज वळी प्रत्येक वर्षमां पजोसणपर्वना आठ दिवस लगभग प्रत्येक श्रावक धधो रोजगार सर्व मूकी दैइने धर्मसबंधि जे जे शुभक्रियाउ भगवाने कहेली छे ते करवामां तत्पर रहे छे, तो तेमने तेवा महोटा दिवसोमा यद्यपि गुरु पासेथी सांभळवानी जोगवाइ मळती होय तो पण फरी पोताने घेर आवी अवगाही लेवाने माटे प्रत राखवानी अवश्यकता छे, तेमज जेमने गुर्वादिक पासे सांभळवानी जोगवाइ न मळे ते साहेबोने तो जरूर वाचवा माटे राखवीज जोइयें अमो तो जैन बंधुउने एवी भलामण करीयें छैये, के प्रत्येक श्रावके बधाय पुस्तको लखावी तेनो सग्रह करी राखवो जोइयें जो कदापि तेटलुं द्रव्य खरचवाने सामर्थ्य नही होय तो मात्र आजना समयमां छापखानानी कळाथी लखेला पुस्तकोना किमतना पचाशमा हिस्सा जेटली किमते सारा शोधेला अने लखेली प्रतो करता हजार दरजे चडतां एवा पुस्तको मळी आवे छे तेटला तो जरूर पोताना घरमां राखवाज जोइयें, पण आपणने वांचता तो आवडतु नथी माटे फोकट पुस्तक राखीने शुं करीयें? नकामा पडी रहशे, आपणथी सचवाय पण नही, उलटी ज्ञाननी आशातना थाय, वळी कागळो उपर नकामा पैशा कोण खरचे? कागळोतो काळे शडी जाशे एवा एवा अनत ससारने वधारनारा कुविकल्प क

रीने पोते पण ज्ञाननो सम्मह् न करवो, अने बीजा वली पांच पचाशने उपर लख्या मुजब जुठा उपदेश आपीने तेमने पण ज्ञाननो संग्रह् करवा न देवो एवी रीतना उपदेशकर्त्ता श्रावक मंडलमा आज वर्त्तमान कालनेविषे हजारो माणसो दीठामां आवे छे, एवा असम जस नाश्कथी हास्य विनोदमा पुस्तकोनो सम्मह् न करवा माटे लोकोने उपदेश करवाथी धर्मरूप प्रासादनो पायो त्रोडी नखाय छे, तेथी तेमने अनतकाल पर्यंत नरक निगोदादिना दुःख स हन करवा पडशे, ते जोइ मने तेमनी उपर करुणा आवे छे, जे आ बिचारा मोहरूपी मदि रानु पान करी मदोन्मत्त थइ मायाजालमा फसी पडेला मदिरानी छाकमां आवीने पोताने नावे तेम बक्यां करे छे, पण ते धर्मरूप धन साचवी राखवाने माटे मजूपासमान जे धर्मपु स्तको छे तेनो नाश करवानो मजबुत उपाय बतावे छे, तेथी आगल एना कटुक विपाक न्नो गववा पडशे माटे तेम न थाय तो सारु ए माटे तेमने सावधान करवा सारु कहुं छुं के एवा असत्य अने परजवे महाकलहकारी दुःखोने उत्पन्न करनारा उपदेशो करवामां हवे तमारे सावचेत रहेवुं जोइयें एवो उपदेश तमारे मात्र वचनथी करवानोज बंध राखवु एटलुंज नही परंतु तमे तमारा मनमां एवो उपदेश करवानी इच्छा पण कदापि काले राख शो नही एथी धर्मरूप वृक्षनुं उन्मूलन थइ जाय छे कारण के पुस्तको नणवा वांचवाथीज धर्मनु अथवा अधर्मनु जाणपणु थाय छे, तेनी तमे निर्भर्त्सना करो छो तो पछी बीजो एवो कयो पदार्थ छे के जेना आधारे तमाराथी धर्मनु स्वरूप जाणवुं जशे?

तेमा वली आटलो विशेष छे जे केटला एक साधारण गरिब अवस्थाने प्राप्त थयेला स्व ल्पद्रव्यवान् जे होय छे ते तो पोतानी यथाशक्तिये ज्ञान पुस्तको उपर प्रतिवर्षे पांच रुपेया

खरच करता वीगमां श्रावे ठे, परंतु जे इव्यवान् ठे तेमने तो जाणे घोर निद्रा श्रावी गये ली होय एवी स्थितिमां रह्या थकां ज्ञान ते वली शुं? श्रने पुस्तक ते शुं? एटलुं पण जा णता नथी तो पठी पुस्तको खरीद करी पोते लइ वांचवा, बीजा जे निर्धन जनो होय तेम ने वांचवाने माटे मफत श्रापवा, ज्ञान नंमाराठ करी राखवा, एवी वात तो जाणेज क्यांथी!

माटे जे प्रमाणे नवा नवा श्री जिनमंदिरो करावतामां इव्य खरचवुं तेमा महोटो लाज ठे, ते वातो पण सर्व शास्त्रना श्राधारथी जाणी जाय ठे तो तेवा शास्त्रोनो संग्रह करी तेना महोटा महोटा नंमारा करावता तेमा तो वली देरासरो करावता करता पण श्रनतगुणो लान ठे, तेम ठतां ते वातमा श्राशातनाविक दूषण काढाडी देखाडवा श्रने कोइनु मन फगावतु एना सरखुं महोटामा महोटु पाप वली बीजु कोइ नथी जो ज्ञाननो संग्रह करवामां श्राशातना लागशे एवो बोलतां तमारी जीन्न श्रटकती नथी तो वली देरासर कराव वामां पण कोइ श्रन्यदर्शनी श्रावी थुंक प्रमुख नाखशे तो तेनी पण श्राशातना थाशे माटे ते पण न करवा जोइयें एम कहेवामा पण कोइ वखत तमे मर राखशो नही? ते विचारी जो जो माटे कोइना श्रागल कुतर्क करी कल्पित वातो बनावीने कहेवाना कामथी दूर रहेजो प रमेश्वरेंतो श्रीजिनचैत्य नवीन करावता, पोषध शालाठ नवीन करावती, श्रने पुस्तकोना नवा नवा नमारो करावता ए त्रण पुण्यक्षेत्र थया, तथा साधु, साध्वी, श्रावक श्रने श्राविका ए चतुर्विध श्रीसंघनु वेयावच्च करवुं, ए प्रमाणे ए सातेक्षेत्र पुण्यना ठे, ते पुन्यक्षेत्रोमां श्राव के पोताजुं न्यायोपार्जित इव्य खरचवु एवी रीतें श्रागमोमा कहेलुं ठे, तो ए सात क्षेत्रमांहेज ज्ञानना नमारा करावता, ज्ञान पुस्तकोनो संग्रह पोते करवो, बीजाने करावतानो उपदेश देवो,

जे करतो होय तेने अनुमोदन आपवुं, जे ज्ञानपुस्तकोनी वृद्धि करतो होय, जे ज्ञान जणवा मां वाचवामा, जणाववामां पोतानो काल निर्गमन करतो होय, तथा अन्यजनोने पण एज उपदेश करतो होय ते पुरुष सर्वमांहे शिरोमणी समजवो, तथा ज्ञानने पोते जणवुं, बीजा जे जणता होय तेमने पोतायी बनतु यथाशक्तियें आश्रय आपवु, जणनार वाचनारने पुस्तको ल इ आपवा तेने अन्न वस्त्रादिक आपवानुं सहाय देवुं, इत्यादिक ज्ञानवृद्धि थवामां जे श्रावकें इव्य खरचवुं ते पूर्वे कहेला सात पुण्यक्षेत्रो मांहेलुं मुख्य क्षेत्र छे, तो तेवा पुनस्थानकमां कोइ अजाणना कहेवाथी अथवा देश कालने अनुमाने घणा पुरुषोमां मान नही मले,एवा हेतुथी अथवा लोभदशाथी पोताने इव्य खरचवानो संकल्प न थाय ते तो चूको, परंतु पोते सारासार विचारमां निपुण न होय तो पण डाह्यो बनी पूछवा आवनारने, अथवा स्वभावे चार गपा मारनार वेग होय तेमनी पासे वातो करतां जो पुस्तकसंग्रह करवानी वात निकलेतो कहेके जाइ आ काममां आशातना बहु लागे छे, आ तो महापापनु काम छे, एमांतो प्राणी डुबी जाय, एथीतो सातमे नरके जवुं पडे, अथवा ए पुस्तकोना संग्रह करनारा, छपावी प्रसिद्ध करनारा, एने अनुमोदन देनारा, एनी प्रशंसा करनारा ए सर्व नरकना अधिकारी थाय छे, ए महोटी आशातनाउ करे छे, ए अनंत संसार जटकशे, एनो क्यारे पण छूटको थवानो नथी, एवी एवी जे चार वातो पोताने बोलतां आवडती होय, ते बोलीने बीजा प्राणीउंने पण पुण्यक्षेत्रमां इव्य खरचवाने नाकारो करे, तेथी तेमनु पण मन उतरी जाय, वली ते पण बीजा वगजणनी पासे जइ एवी वातो करे, तेथी पुस्तकनी वृद्धि करवा उपर कोइनुं पण चित्त लागे नही तो एवा असत्योपदेश करवाथी शुं तेने फायदो थाय

छे? एथी तो उलटुं धर्मना नास्तिपणानो संभव थइ जाय कारण के कोइपण धर्मनी
प्रवृत्ति करवी अने ते धर्मने महोटा पाया उपर लाववो, तथा ते धर्मनुं महत्त्व
वधारवु तथा ते धर्मने सर्वदर्शनमां दीपो करीने प्रकाशित करी राखवु तथा सर्व दर्शन
मां मुख्य अने श्रेयस्कारी शिरोमणी करवो, तथा घणा जनो आपणा धर्मने मान्य करे, घणा
जनो आपणा धर्ममां आवी जसे, घणा जनो आपणा धर्मने अंगीकार करे, घणा जनो आप
णा धर्मनी प्रशंसा करे, इत्यादि धर्मनी वृद्धि करवानुं मुख्य कारणतो ते धर्मसंबंधि धर्मपु
स्तकोज छे, अने बीजुं ते धर्ममां महोटा विद्वानोनी संख्या महोटी होवी जोइयें ते विद्वानो थवानो
मुख्यआधार पण धर्मपुस्तकोज छे,तो तेवा धर्मपुस्तकोनी अवगणना करी,तेने पडतो मूकी,ते
नीजे वृद्धि करतो होय ते पुरुषने सर्व पुरुषोमां शिरोमणी गणवो जोइयें ते तो दूर रह्यु प
ण उलटु तेने पतित करवा माटें तेना उपर आशातना लागवाना दूषणोनो आरोप करी
तेनी निंदा करवी ए शुं थोडी सरमनी वात छे? एथी जो पोताना धर्मनुं निर्मूलपणु न थाय
तो वली धर्म गमाववाना बीजा एथी वधारे साधनो कोण छे वारु?

वास्तविक जोतां तो उक्त पुरुषो जे छे तेज पोतें पोताना धर्मने दूषित करी पोताना धर्म
रूप प्रासादना थंभभूत एवा जे धर्मपुस्तको तेनो जडा मूलथी नाश करवानो जाणे
धंधोज लइ बेठेला छे एवा प्राणीउंनी गणनामां तेमने गणवा माटें काइ पण हरकत देखा
ती नथी, ते पुरुषो, खरेखरा स्वधर्मनिंदक, स्वधर्मभ्रष्ट, स्वधर्मनाश करनारा, अविवेकी, अन
तो कालपर्यंत अपारावार संसारमां परिभ्रमण करनारा, स्वधर्मद्वेषी, ज्ञानद्वेषी, ज्ञाननी
हेलना करनारा, धर्मध्वंसक, क्रूरपरिणामवाला, श्रद्धारहित, विनयरहित, एवां जाणवां

केमके जेणे ज्ञाननो विनय न कर्यो ते वेंव गुरुनो विनय पण क्यांथी करे ?

प्रस्तुत ज्ञान ज्ञानीनां निंदक जनोने आटलो पण विवेक नथी के जमणवार करी न्यातो जमाडी, सातमो पापस्थानकजे अर्हंकार छे तेने धारण करी, जाणे कोइ नाचतो कूदतो होय तेवा गांडा जेवा आकारमा थनी जइ छकाय जीवोनो आरंभ करीने वली तेने पुष्ट करवा सारु अनुमोदन करे जे जूओ आ अमुक माणसे नातवरो कर्यो तेनां करतां मारुं जमण केवु थनी आव्युं के तेवुं आज दिवस पर्यंत कोईयें करेलु नथी एम घरोघर बाईयोना टोळे टोळा मळीने वातो करता हता माटे आपणने- तो सद्धुर्ये वखाण्या, आपणे हवे खरचे वधी गया, आपणे मह्रोटा थइ गया, एवीरीते विकारवत थइने जाणें हुं धर्मिष्ठ मह्रोटो ज्ञानी थइ गयो, अने हवे आवी कीर्त्ति थइ, तेथी माठी गतिये जावानी बीक मटी गइ परंतु ते एम समजतो नथी, के बुढायोना मरणादि पाछळ जे नातवराकरी जमण करवां, अने खाणा खवराववाथी राजी थवु, नाराजी थवुं, ए सर्व चाल भिखारी ब्राह्मणोना घरथी चालेली छे, पण श्रावकोना घरथी चालेली नथी एथी मात्र छकायनो आरंभ थाय ने अभिमान वधे ए ने कर्म शिवाय जो दान बुद्धिथी अनुकंपा लावीने गरीब दुःखी भूखे मरतांने जमाडे तो तेथी शाता वेदनीय कर्म बांधी पुण्य उपार्जन करे नहीं कां आ भवे मान मळ्युं एटलुज फळ समजवु, अने पुस्तकोनु दान देवाथी तो लाखो माणसोना मननां परिणाम सुधरे, जेथी तेमनामांथी दुर्गुणो दूर थइ जाय, सद्गुणनी प्राप्ति थाय, धर्म पामीने धर्म मार्गमा प्रवृत्ति करे, तेथी देवादिकनी शुभगतियोनां सुख भोगवी परंपरायें मोक्ष पामे वळी दान आपनारने पण वधारे अहंकार न आवे अने सरलस्वभावी थको ते पण तरतज धर्म पामी

परंपराये मोक्ष पामे ए ज्ञानदानसमान बीजुं कोई पण उत्तम दान नथी सर्वदानोमा श्रेष्ठ दान ते ज्ञाननुंज छे, पारमार्थिकपणे मोक्षनुं साधन छे माटे जावथी अजयदान जे छे ते ज्ञाननुंज दान छे एम समजवु तो दूर रह्युं परंतु आ ससारमा रह्या थका मात्र साधारण नीति शास्त्रनुं ज्ञानसपादन करवाथी पण केटला अगणित फायेदाउ थाय छे, ते सर्व कोइ प्रत्यक्ष देखे छे, धर्म, विवेक, नीति, मर्यादा, मह्वापण, चतुराइ, सन्यता, इत्यादि लक्षावधि सद्गुणोनुं साधन ते ज्ञानज छे, आ जव, परजव बेहु जवे सुखदाइ छे, तो तेनुं आराधन करवामां शुं खोटु छे, आटलुं पण ते समजता नथी!!!

वली केटला एक श्रावक जाइउ तो कोइने विवाहादि कार्योमां जमणवार आदिक करवा पडे छे, तेमने वासणोनो खप पडे माटे पोतानी मह्वोटाइने वास्ते कोइ मागवा आवे तो तेने आपवा जोइयें एवा हेतुथी केटलीएक जातना त्रावा पितल वगेरे धातुना वासणोनो संग्रह करी राखे छे के जे बीजाने मागवा आपवाथी ते वासणो लइ जइ तेना उपर रसोइ करे तेमां छकायनो आरंन थाय छे, ते सर्व कोइ जाणे छे, वली ते लाडवा प्रमुख जमनारा मनुष्योने पण पारकी रसोइ खावाथी कोइ प्रकारनो गुण प्राप्त थतो नथी, मात्र खाइ पी मदोन्मत्त थइने विषय सेवनमां तत्पर थवा शिवाय बीजो कोइ विशेष फायदो थतो देखातो नथी अने पुस्तको लइ पोताने तथा बीजाउने वांचवा जणवाने माटे संग्रहरूपे राखेला होय तेनाथी वाचनार अथवा राखनार बेहुने कोइ प्रकारनो आरंन थतो देखातो नथी तथा विषयसेवनमां मदोन्मत्त थवाने बदले उलटो तेनाथी निवृत्त थवानो उपदेश मले, तेथी ते अकार्य करवाने बीहीतो रहे, एवा एवा अनेक प्रकारना फायदा थाय छे

एमज केटलाएक विवाहादिकमां वरराजाने पहेरवा माटे कोइ मागवा आवशे तो जरूर आपवा पडशे एवो संकल्प करीने नवनवा प्रकारना सोना रूपा हीरा मोती आदिकना आचूपणो घडावी राखे छे, तथा वस्त्रोना वागा सिवरावी राखे छे, तेम कोइने जणवा वाचवाने माटे ज्ञानना भंडारा करी राखवामां शुं हरकत आवी नडे छे? पण एवी बुद्धि तो नाग्येज आवे

वली केटलाएक घरटी, कोशी, कोदाल, पावडा प्रमुख छकाय जीवोनी हिंसाना अधिकरणनो संग्रह करी राखे छे के कोइ मागवा आवशे तेने आपवा पडशे तो तेने बदले कोइ वाचवा सारु मागवा आवशे तेने आपवुं पडशे ए हेतु माटे ज्ञाननो संग्रह करी राखवामां कांइ हरकत जणाती नथी, हरकत मात्र एटलीज छे के ज्ञानना संग्रहथी सद्गति प्राप्त थवानी परंपरा चालु थाय छे, अने घरंटी आदिकना संग्रहथी छकायनो आरंभ थवाने लीधे दुर्गतिनी परंपरा चालुज रहे ए विना बीजी कशी हरकत जोवामां आवती नथी

प्रस्तावनामां यद्यपि नियमतो एवोज छे के, जे ग्रंथनी प्रस्तावना होय ते ग्रंथनो सारांश देखाडवो जोइये, तेने पडतो मूकीने बीजी अन्य वातो लखेली छे, तथा प्रस्तावना पण एक न्हाना सरखा ग्रंथ जेटली लखाइ गयेली छे, तेमज उतावलथी लखवाने लीधे पुनरुक्ति पण घणा स्थले थयेली छे तेनुं कारण ए के आवातो जाहेर करवा माटे महारा अंत करणमां हर हमेस इच्छा रहेती हती, परंतु कोइ योग्य प्रसंग न मलवाथी एमाज लखी मूकीने माहारी इच्छा पूरण करी छे माटे जेमने सामान्य पणे विषय जोवानी अभिलाषा होय तेमने आ ग्रंथनी अनुक्रमणिका वाचवाथी जाणवामां आवी जाशे, अने विशेष खप करनाराये आ ग्रंथने आद्यथी अंत पर्यंत वाची जावु ए महारी प्रार्थना छे अस्तु ॥

॥ अथ कल्पसूत्रवालावबोधस्य शुद्धीपत्र प्रारभ्यते ॥

पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्त्य०	अशुद्ध	शुद्ध	पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्त्य०	अशुद्ध	शुद्ध
२३	२	१	मह्ाकष्ठ	महाशुक	११९	१	१६	वाठी	वींठी
२७	१	५	मीधो	धींगो	१३२	२	५	एघाए	एंघाए
२७	२	१७	घमी	धडी	१३३	२	१६	जोखमना	जोदखमना
३३	२	२	स्वामी	स्वामी	१३४	१	७	जोखंम	जोदखम
४३	१	९	मंथिल	मथिल	१४२	२	६	कीधि	कीधो
५१	१	६	शृगार	शृगार	१५२	१	१०	मेघज्ञीने	मेघमाज्ञीने
५८	१	१	ठांथ्याश्यादिक	ठाटवादिक	१६०	१	१	नारख्यो	नारख्या
५८	१	९	जासूसना	जासूलना	१७०	२	१४	जमि	जूमि
६२	२	१८	कूपापडो	पापडोकू	१७१	१	६	कुमी	उठी
६३	२	१२	वांधु	वाधा	१७३	१	१४	अगयफुज्ञना	अगयनकुज्ञ०
७४	१	२	कूर्म	कूर्म	१८६	२	१५	घणोफेरवो	घडोफेरवो
७४	१	२	रीवसी	रीदशी	२१८	२	१२	गेवरीनी	घेवरनी
८२	१	३	केवलीएक	केटलीएक		२	१०	गेवरीया	घेवरीया
८६	१	१२	वरफरी	फरफरी	२४८	२	१	तेनेयं	तेरियं
९१	१	६	फुकरा	फुकारा	२४८	२	२	योगोघद्न	योगोदद्न
१०४	२	१८	कोलो	कोली	२४८	२	२	युंक्ता	मुंक्ता

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका

अनुक्रमांक	विषयोनां नाम	पृष्ठांक
१	ग्रंथनी रचना करवानो हेतु	
२	श्रीपर्युषणपर्वने विषे ग्रंथ वांचवानो विधि	१
३	श्रीपर्युषणपर्व तथा कल्पसूत्र अने श्रमणसंघनुं महत्त्व	१
४	दश प्रकारे साधुनो आचार छे, तेनुं वर्णन	१
५	दश प्रकारना आचार मांहेला कया कया तीर्थंकरनी वारें कया कया आचार होय तेमनु आशंका तथा समाधानपूर्वक वर्णन	२
६	ऋजुजड, वक्रजड अने ऋजुप्राज्ञ एवा त्रण प्रकारना साधुउं आश्रयी जुदा जुदा दृष्टांतो कह्या छे	६
७	दश प्रकारनो साधुने आचार रूप धर्म उपर वैद्यना दृष्टांत	७
८	चोमासुं पुरुं थया पछी पण तेज गाममा साधुने रहेवु पडे तेना कारणो तथा चोमासुं पुरुं थयानी अगाउ साधुने त्याथी विहार करी जवुपडे तेनां कारणो	१०
९	जे गामे साधु चोमासुं रहे तिहां उत्कृष्ट तेर गुण अने जघन्य चारगुण जोवा जोइयें तेना नाम	११
१०	पंजोसणपर्वनी उत्कृष्टता देखाडवामाटे एकतालीश पदार्थनी उपमा आपीते नाम	११
११	अन्यदर्शनमा पण ऋषिपंचमी माननीय छे तेनी कथा	१२
१२	अठम तप करी कल्पसूत्र सांभलवु ते उपर नागकेतुनी कथा	१२
		१३

अनुक्रमांक	विषयोना नाम	पृष्ठांक

अनुक्रमांक	विषयोनां नाम	पृष्ठांक
	शलानी कुखे संक्रमाववानो आवेश हरणीगमेषी देवने आप्यो तेमां त्रिशला देवी अने देवानंदाना पूर्वभव कह्या छे एमां अन्यदर्शनीओमां भागवतना दश मस्कंधमध्ये बलदेवना हरण थवानी कथा पण प्रसगे आवी छे	४६
२७	हरणीगमेषी गर्भ पालटन करवा गया तिहां चमादि चारगतिनु प्रमाण	४८
२८	अपहरती वखत भगवान शुं जाणे ने शुं न जाणे ते आश्रयी	४९
२९	त्रिशलाराणीयें जे घरमां सुपन दीठा ते घरनुं वर्णन	४९
३०	त्रिशला राणीयें चौद सुपन दीठा तेनो विस्तार सहित नाम तेमनी अंतरगत चार सुपनना वर्णन सुधी बीजु व्याख्यान पूर्ण थयुं छे	५०
३१	सिद्धार्थ राजायें त्रिसला राणीने स्वप्नानु फल सामान्यथी कह्युं	५५
३२	प्रभातें राजायें कचेरी शणगारी पोतें मल्लयुद्ध करी, तैलमर्दन कराव्यु, स्नान कर्यु, आभूषण पहेर्या, मांडवीया प्रमुख अढार प्रकारना पदवी धरावनाराओनो परिकर छे जेमने माटे तेनां नाम कह्या ते अढारमांथी सीमसेढाना वाघाने पतावनार जे सिंधी पालक थाय छे, तेनुं स्वरूप बतावना माटे कहेली कथा	५८
३३	आठ प्रकारना सुपन पाठकोनुं वर्णन	६१
३४	सुपनपाठकोयें सर्वजणे अग्रेसरन थवामाटे कहेली पाचसो सुभटोनी कथा	६२
३५	सुपनपाठको सिद्धार्थ राजा पासें आव्या इहां त्रीजु व्याख्यान पुरु थयुं	६३
३६	सुपन पाठकोयें कहेला नव प्रकारना स्वप्ननुं वर्णन तथा फल	६४

अनुक्रमांक	विषयोनां नाम	पृष्ठांक

अनुक्रमांक	विषय ना नाम	पृष्ठांक

॥ॐश्रीशांतिनाथाय नमः॥अथ कल्प सूत्रस्य बालावबोध प्रारंभः॥प्रथम ग्रंथकर्त्ता आ ग्रंथनी रचना करवानो हेतु कहे छे श्रीजिनशासननें विषे सर्व पर्वमांहे शिरोमणि श्रीपर्यूषण पर्व छे ते पर्वना दिवसोमां नगर नगरने विषे कल्पसूत्र वचायछे पण योग वहन करनारा साधु मुनि राजनेज सूत्र वांचवानो अधिकार श्रीतीर्थंकर भगवाने दीधो छे बीजा कोइथी सूत्रनी व्याख्या थाय नही माटे तेवा मुनिराजोनुं आगमन सर्वस्थलें होतुं नथी तेथी जे गाममां साधुमहाराज बिराजमान न होय ते गाम निवासी श्रावकोनें कल्पसूत्र श्रवण करवानो अंत राय पडे छे ते अंतराय दूर करवानें वास्ते जेम पूर्वाचार्योयें लोकोपकारनें अर्थे पूर्वे अनेक प्रकरणोनी रचना करेली छे तथा वर्त्तमान कालमां पण करे छे ते प्रकरण पण सूत्रोना अर्थ रूपज छे अने तेनुं पठन पाठन चतुर्विध श्रीसंघ करे छे तेम हु पण श्रीकल्पसूत्रना बालाव बोधने प्रकरण रूपें बनावुं छु के जे ग्रंथ साधु, साधवी श्रावक अने श्राविका मली चारे प्रका रना श्रीसंघने वांचवाना उपयोगमां आवे केमके ए ग्रंथ पण सूत्रनो अर्थ रूप होवाथी प्रक रण सदृश समजवो ॥ १ ॥ ॥ हवे श्रीपर्यूषण पर्वने विषे ए ग्रंथ वांचवानो विधि कहेछे जेम जे शहेरमां श्रीमुनिमहाराज चोमासु रह्या होय अने ते गामना श्रावको एकठा थइ साधुजी पासेंथी सूत्रनी पोथी मागी लइ आवीनें एक श्रावकना घरमा राखे तिहां रात्रि जागरण करे पछी बीजे दिवसें श्रावक श्राविका एकठा थइने एक कुंआरा छोकरानें अवोट वस्त्र पहेरावी हाथी ऊपर बेसाडीने अथवा अश्वप्रमुख कोइ उत्तम वाहन ऊपर बेसाडी ते पोथी एक थालमां राखी ते थाल ते पहेला छोकराना हाथमां आपी सर्वने बदाम, साकर पतासा आदिकनी प्रभावना करी वाजते गाजते महोटा महोत्सव पूर्वक उपाशरे आ

वीनें ते पुस्तक गुरुना हाथमां आपे गुरु वांचना करे ते सर्व श्रीसंघ सांभळे अने गुरु आ गल फलादिक राखे छे ॥ तेम आ पुस्तक पण जे श्रावकादिकनी पासें होय तेनी पासेंथी मागी लावीने पंचे ठेरावेला बीजा कोइ श्रावकने घेर लइ जइ तिहां रात्रि जागरण करी पछी बीजे दिवसें सर्व संघ मली पूर्वोक्त रीतें महोटा महोत्सव पूर्वक पौषधशालामां किंवा उपाश्रयमां अथवा कोइ श्रावकने घेर जिहां सामायिकादिक करवानी कोइ स्वच्छ निर्मल जगा होय ते स्थानके अथवा बीजी कोइ जीवादि उपद्रव रहित जगा होय के जिहां सर्वसंघें मली वांच वानो विचार कस्रो होय तेवी जगाने यथाशक्तियें शोभावी राखी होय तिहां आवीनें ज्ञान भक्ति पूर्वक घणाज यत्नथी सर्व प्रकारनी अशातना टाली पोथी कोइ विवेकी शुद्ध श्रावकना हाथमां आपीने वचाववी अने बीजा सर्वजनोयें प्रमाद, निद्रा, विकथादिकनो त्याग करी विनय पूर्वक त्यां बेसीनें एकाग्रचित्तें सांभलवी ॥ २ ॥ ॥ हवे श्रीपर्यूषण पर्व तथा कल्प सूत्र अने श्रमणसंघ एमनुं महत्व कहे छे ॥ श्लोक॥नैतत्पर्वसमं पर्व,नचकल्पसमं श्रुतं॥ नधा र्मिकसमःसंघ, स्त्रिरत्नानि जगत्रये॥१॥ अर्थ ॥आ जगतने विषे दीपालिकादिक अनेक प्रकारना लौकिक पर्व छे तथा चोमासी, श्रीतीर्थंकरदेवना पांच कल्याणिक, अष्टमी, पक्खिका अने तीर्थ यात्रादिक अनेक पुण्य पर्व छे ते सर्व लोकोत्तर उत्तम पर्व छे ए सहु पर्वने विषे शिरोमणि चिंतामणि रत्न सदृश ज्येष्ठ एवुं सांवत्सरिक पर्व छे ए जेम सांवत्सरिक पर्व समान बीजुं कोइ पर्व नथी तेम कल्प सूत्र समान बीजुं कोइ सूत्र पण नथी तथा चतुर्विध श्रीसंघ मांहे श्रीसाधुमुनिराजना संघ समुदायसमान बीजो संघ पण कोइ नथी एटले सर्व पर्वमाहे सर्वोत्तम पजोसण पर्व छे तेने विषे कल्पसूत्र वचाय ते पण एकादशांगादि सर्व सूत्रमां उत्तम छे तेम कल्पसूत्रना वांचना

र साधुमुनिराज तेपण चारे प्रकारना संयमांहे उत्तम छे एम ए त्रणे साक्षात् रत्न समान जाणवा ॥१॥ हवे व्याख्यान करनार पोतानी लघुता पूर्वक श्रीगुरुमहाराज अने श्रीसंघनी महत्वता देखा डे छे व्याख्यान करनार कहे छे के हुं मंदमति, मूर्ख, अज्ञानी,महाजड छतां पण श्रीसंघनी समक्ष दक्ष थइने आ कल्पसूत्रनी व्याख्या करवानुं साहस करुं छुं व्याख्यान करवाने उज माल थयो छुं ते सर्व श्रीसद्गुरुनो प्रसाद अने चतुर्विध श्रीसंघनुं सानिध्यपणुं जाणवुं जेम अन्य शासनमां कहेलुं छे के श्रीरामचंद्रनी सेनाना वांदरायें महोटा महोटा पाषाण लइने समुद्रमां राख्या ते पथरा पोतें पण तर्या अने लोकोने पण तार्या ते कांइ पाषाणनो तथा स मुद्रनो अने वांदराउनो प्रताप जाणवो नही परंतु ते प्रताप श्रीरामचंद्रजीनो जाणवो केमके पथरनो तो एवो स्वभाव छे जे पोतें पण बूडे अने आश्रय लेनारनें पण बूडाडे तेम हुं पण पथर सदृश छतो श्रीकल्पसूत्रनी व्याख्या करुं छुं तेमां माहारो काइ पण गुण जाणवो नही तेमज पोषधशाला अथवा पुस्तकना पानांनो पण कांइ गुण जाणवो नही ए गुण मात्र श्री सद्गुरु अने श्रीसंघनोज जाणवो तथा जेम कोइ नरदभावनी जाणवा वाली गीतकला अने नृत्यकलामां विशारद छपन्नकोडी ताल भरद शास्त्रनी पारग एवी नर्त्तकी होय ते गीतगान क रते मृदंगध्वनि वाजते नृत्य करे अनेक चक्रगोला फेरवे अने हाव भावथी लोकोना मन रंजन करे तेमज कोइ गामडीयानी गामडियात एक घेली स्त्री होय तेपण तालोटाना छद प डते थके नृत्य करे तथा जेम कोइ महागंभीर समुद्र होय ते पण लहेरो आपे अने कोइक गामडुं न्हानुं तलाव होय ते पण वर्षाऋतुमा पाणीथी पूरण भराणुं थकुं लहेरो आपे तेने पण कोइ निवारे नही तथा जेम शुद्ध दूधमांहे अखंड चोखा नाखीनें खीर राधीयें ते

पण ऊनरायठे अने कूशकानी रावडी रांधीयें तेपण ऊनरायठे तेमां पण काइ आश्चर्य नथी तेम जे एहज स्थानकें एहज क्षेत्रें अनेक गणधर, सपूर्ण श्रुतधर, महाशास्त्रना वेत्ता, नवरसावतार, महा व्याख्यानना करनारा व्याख्यान करे अने हुं पण व्याख्यान करुं तेमां अरसपरस एटलो फेर जाणवो एटले नरहनेदने जाणनारी नर्त्तकी तथा समुद्र अनेक्षुरसीरने सहश ते गणधरादिक जाणवा अने गामहियात तथा गामनुं तलाव अने कुशकानी रावडी समान मने जाणवो ते हुं श्रीसद्गुरु अने श्रीसंघना प्रसादथी माननीय थयो छुं जेम कोइ पाषाण जडहतां तथा ज्ञान विवर्जित ठतां पण तेनी ज्यारें प्रतिमाजी नीपजावीयें त्यारे ते सर्व जनोनें माननीय पूजनीय थाय तेनी पेरें श्रीगुरु तथा श्रीसंघना प्रसादथी हुं पण माननीय थयोछुं ॥ ४ ॥ ॥ हवे बालावबोध करनार प्रारंजमां श्रीदेवगुरुने नमस्कार लक्षण मंगलाचरणने अर्थे श्लोक कहेठे, ॥ श्लोक ॥ नत्वा श्रीमन्महावीरं, गोतमादिगणाधिपान् ॥ कुर्वेहं कल्पसूत्रस्य, व्याख्यां बालोपकारिणीम् ॥ १ ॥ ५ ॥ ॥ हवे प्रथम श्रीगुरु महाराजनो आदेश लइनें जे क्षेत्रमां साधु चोमासुं रहे तिहां चोमासामां जाद्रव मासने विषे पर्यूषण पर्व आवे थकें मांगलिक निमित्तें पांच दिवस पर्यंत श्रीकल्पसूत्र वांचे ते कल्प एवुं नाम आचारनुं ठे ते साधुनो आचार दश प्रकारनो ठे,यडुक्त ॥ आचेलुक्कुदेशिय, सज्जायर रायपिंम किइकम्मे ॥ वय जिठ पडिकमणे, मासं पज्जोसवण कप्पे ॥ १ ॥ ॥ अस्यार्थ ॥प्रथम अचेलक,बीजो उद्देशिक,त्रीजो सज्यातर,चोथो रायपिंम,पांचमो कृतिकर्म,ठठो व्रत,सातमो ज्येष्ठ, आठमो प्रतिक्रमण,नवमो मासकल्प अने दशमो पंजोसण कल्प ए दश प्रकारना कल्प एटले आचार तेना सामान्यथी नाम कह्या हवे विस्तारार्थ कहेठे ॥ प्रथम जे वस्त्र नही राखवा तेने अचेलक कल्प कहीयें तिहां श्रीऋषजदेव

नगवान तथा श्रीमहावीर स्वामीना साधु तो श्वेतमानोपेत जीर्णप्राय वस्त्रने धारण करे तेमां कुटीथी चार श्रागुल नीचो श्रने गुडाथी चार श्रागुल उंचो एवो साडा त्रण हाथनो चलोटो राखे तथा साडाचार हाथनो कपडो राखे तथा पोताना श्रागुल प्रमाण एक वेंतनें चार श्रागुलनी मुहपत्ति राखे एम श्रर्द्ध शरीर उघाडुं श्रने श्रर्द्ध शरीर ढाक्यु राखे एवीरीतें पहेरेला वस्त्र ते श्रण पहेर्या जेवा समजवा माटे तेने श्रचेलक कहीयें ते उपर दृष्टांत कहे छे जेम कोइ एक पुरुष धोतीया वणनारनें कह्युं जे महारा धोतीया ताकीवथी श्राप केमके हुं नागो फरुं छुं एवु वचन व्यवहारथी कह्यु हवे ते पुरुषें जूना वस्त्रनुं पोतीयुं पहेर्युं छे तोपण नागो फरुं छुं एम कह्युं वली बीजुं दृष्टांत कहे छे जेम कोइएक पुरुष पोतीयुं पहेरीने नदी उतर्यो तेनें कोइ एकें पुछ्युं के नाइ तुं नदी शीरीतें उतर्यो तेवारे तेणे जवाब श्राप्यो के हुं नागो थइने नदी उतर्यो वली त्रीजुं दृष्टांत कहे छे जेम कोइएक मोसी जूना वस्त्र पहेरी वणकरनी पासें जइ कहेरा नागी के श्ररे नाइ महारां वस्त्र तैयार थया होयतो मने श्राप हुं नागी फरुं छुं एवी रीतें साधुने पण जीर्णप्राय जूना श्वेतमानोपेत वस्त्र धारण करते छते पण वस्त्र रहित श्रचेलक कहीयें तेम श्रा चोवीसीमा श्रीऋषभ देव श्रने श्रीमहावीरनें जाजेरा एक वर्ष पछी इंद्रदत्त वस्त्रने श्रपगमें जावजीव पर्यंत श्रचेलक पणुं हतुं श्रने चोवीसें तीर्थंकर श्राश्रयितो दीक्षा लेती वखतें इंद्र महाराज तेमना खन्धा उपर देवदूष्य वस्त्र मूके ते जिहां सुधी खन्धाउपर रहे तिहां सुधी सचेलक कहीयें श्रने पडीगया पछी श्रचेलक कहीयें तथा श्रा चोवीसीमा बीजा श्रीश्रजितनाथ नगवानथी मांडीने श्रीपार्श्वनाथ नगवान पर्यंतना बावीश तीर्थंकर मध्यना कहेवाय तेने देवदूष्य वस्त्र शेष ने घडी श्रायुष्य थाकतो रहे तिहां सुधी रहे छे माटे ते वस्त्रसहि

तने सचेलक कहीयें तथा ए बावीश तीर्थंकरना साधु पण ऋजु एटले छुंजमन वाला सरल अने वक्र एटले पंमित घणा माह्या चतुर होय माटे महोटा मूलना पांच रंग वाला मानोपेत रहित एवां वस्त्र राखे तेथी एनें सचेलक कहीयें केमके एनें ए अचेलक कल्पनी काइ मर्यादा नथी माटे एमने ए कल्प अनियत छे अने पहेला तथा छेल्ला तीर्थंकरना साधुने ए कल्प नियत छे एटले निश्चय छे ए प्रथम अचेलक कल्प कह्यो ॥ १ ॥ ॥ हवे बीजो उद्देशिक कल्प देने जे साधु अथवा साधवीने उद्देशि कर्यो एवो जे अहाराविक तेनें उद्देशिक आहाराविक कहीयें तिहां मध्यना बावीश तीर्थंकरना वखतमा जे साधु अथवा साधवीने निमित्तें कोइ र्यें जात, पाणी, ओषध भैषज्य, वस्त्र, पात्र निपजाव्यां होय ते तेहज साधुनें लेवा न क पण शेष बीजा साधुनें ते आहाराविक लेवा कल्पे केमके तेने आधाकर्माविक दोष न ला अने पहेला तथा छेला तीर्थंकरना शासनने विषे तो एक साधु अथवा एक साध्वीनें अ जे आधाकिर्मिक आहाराविक निपजाव्या होय ते सर्वथा प्रकारें कोइ पण साधुनें अथवा सा रीनें आ कल्पे नही ए बीजो उद्देशिक कल्प कह्यो ॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजो सय्यातरि पिंम रे कल्प कहेने जे उपाश्रयनो धणी होय तेने सय्यातरि कहीयें अथवा जे साधुने रहेवानी तरानी जगा आपे एटले जेनी आज्ञा लेइने साधु जगामां रह्या होय ते घरना स्वामीनें सय्यातरि कहीयें तेना घरनो पिंम जे आहाराविक बार वस्तु ते सर्व तीर्थंकरना साधुउने चोही रवी कल्पे नही ते बार वस्तुना नाम कहेने १ आहार, २ पाणी, ३ खादिम, ४ स्वादिम, ५ कपडा, ६ पात्रा, ७ कंबल, ८ उंचो, ९ सूई, १० पिप्पलक, ११ नखकतारवानीनेरणी, १२ कानमाथी मेल काढवानी चाढुइ, ए बार चीज तथा बीजा पण छरी कातरणी अने सरपला प्रमुख ते कोइ

पण साधुनें लेवा कल्पे नही ए सय्यातर पिंम लेवामा अनेषणीय अशुद्ध दोषनो संभव था य प्रसंगादि महोटा दोष उपजे केमके साधुना रागें करी पारणाने उत्तरवारणानें अर्थे वारं वार जातां आवतां अशुद्धमान आहारादिकें करीनें ते गृहस्थ दहिं दूध प्रमुख स्निग्ध वस्तु पण आपे तेथी रसगृद्धि थाय अनें मिष्टान्नना लोभें तेनुं घर न मूके कदापि वेगलो बीजे गामें गयो होय तो पण त्यांथी मिष्टान्ननें लोभें फरी आवे वली वस्त्रादिक मा ग्यां थकां तेगृहस्थ तरतज आपे तेणे करी उपधिनी वृद्धि थाय वली ते सय्यातरनो पिंम लेता थका गाममां फरवाथी छूटे तेथी ते साधुनुं शरीर जाडुं थाय वली ते सय्यातरिनो पिंम लेवाथी कदाच गृहस्थनें एवो पण भय उपजे के जे उपाश्रय करावे तेने आहारादिक पण आपवा पडे तेने लीधे कोइ उपाश्रय पण न करावे अने रहेवाने कोई जगा पण आपे नही तेथी आहार शिष्यादिकनो मलवो दुर्लभ थइ पडे इत्यादिक दोषना प्रसंगथी सय्यातरिना घर नो आहार लेवो सर्व तीर्थंकरें निषेध्यो छे कदाचित् कोइ कारणे सय्यातरिना पिंम लेवो पडे तो रात्रिना चार पहोर क्रिया सद्याय करतो जागरण करे पण निद्रा न करे अने प्रभातनुं पडि क्कमणुं बीजे स्थानकें जइ करे तो उपाश्रयना धणीनो सय्यातर न थाय अने जो रात्रें निद्रा करे अने प्रभातनो पडिक्कमणुं बीजे स्थानकें करे तो बेहु सय्यातर थाय एटले बेहु स्थानकें आहारादि लेवा न कल्पे तथा १ तृण, २ माटीनो ढेफुं, ३ भस्म, राख, ४ मात्रानुं ठामडुं, तेने मात्रा कहीयें, ५ बाजोट, ६ पाटी पाटला, ७ सय्या, ८ सथारो, ए लेप प्रमुख वस्तु, १० उपधि सहित चेलो एटले वस्त्रादिक सहित चेलो ए दश वस्तु सय्यातरना घरनी लेवी कल्पे ए त्रीजो सय्यातरपिंम कल्प कह्यो ए कल्प सर्व तीर्थंकरोना साधुने निश्चय होय माटे

एने नियत कल्प कहीयें ॥ ३ ॥ ॥ हवे चोथो राजपिंड कल्प कहे छे जे मद्दोटो छत्रपति चक्रवर्त्यादिक राजा होय अने जेने सेनापति, पुरोहित, श्रेष्ठि, प्रधान अने सार्थवाह ए पांच वानां होय ए पांचनी साथे राज्य करे तेने राजा कहीयें तेना घरनो आहारादिक पिंड पहेला तीर्थंकरना साधु साध्वीने अने बेहेला श्रीवीरजगवानना साधु साध्वीने लेवो कल्पे नहीं केमके राजद्वारमां घणा लोक मळे तिहां घणो वखत लागे तथा कोइक अपमांगलिक कहे तथा तिहां हाथी, घोडा, रथ अने स्त्री प्रमुखने जोतां थकां राग उपजे वळी कोइक चोर कहे कोइक ठक कहे पण कहे इत्यादिक अनेक दोष उपजे वळी लोक निंदा करे जे आ यति थइने राजपिंड लीये छे अन्यदर्शनीयोना शास्त्रमां पण राजपिंड निवार्यो छे माटे पहेला अने बेहेला तीर्थंकरना यतियें राजपिंड न लेवो अने बावीश तीर्थंकरना साधुतो ऋजु अने पंमित छे माटे राजाना घरनो निर्दोष आहार जाणे तेवारे आहार लीये अने सदोष जाणे तो न लीये माटे तेमने ए कल्पनी मर्यादा नथी ए चोथो राजपिंड कल्प कह्यो ॥ ४ ॥ ॥ हवे पांचमो कृतिकर्म कल्प कहेछे जे वांदवुं तेने कृतिकर्म कहीयें ते बे प्रकारे छे एकतो अभ्युत्थानरूप बीजो द्वादशावर्त्तवांदणा वांदवुं तिहां श्रीजिनशासनने विषे सर्व तीर्थंकरोना साधुओनी एवी मर्यादा छे के जेणे पहेली दीक्षा लीधी होय ते साधुने पाछलथी दीक्षा लेनारो साधु वांदे पण वाप दीकरो अथवा राजा अने प्रधान इत्यादिक व्हानो मद्दोटो छतां नहीं परंतु दीक्षा जो दीकरे प्रथम लीधी होय अने पितायें पाछलथी लीधी होय तो पिता पुत्रने पण वंदन करे एम राजा पोताना प्रधानने पण वंदन करे तथा सर्व साध्वीयो तो पुरुषोत्तम धर्म जाणीने सर्वे साधुने वांदे पछी व्हानो मद्दोटो छतां नहीं जो सो वर्षनी दीक्षित साध्वी होय अने एक दिव

सनो दीक्षित साधु होय तोपण ते साध्वी साधुने सामी जइनें हे पूज्य ! पधारो एवीरीतें विनयपूर्वक खमासमणा देइने वांदे, केमके धर्ममांहे मुख्य प्रधान पणु ते पुरुषनेंज कयुं छे, माटे पुरुष अधिक छे तेथी पुरुषें स्त्रीनें वांदवु नही, जो साधु थईनें साध्वीनें वांदे तो घणा दोष प्राप्त थाय केमके स्त्रीजाति तुछ छे माटे अहंकार करे तो तेथी नीच गोत्रने बांधे, वली लोक निंदा करे माटे पुरुषें स्त्रीनें वांदवु नही ए कल्प सर्व चोवीशे तीर्थंकरोना साधु आश्रयी नियत जाणवो ए पांचमो कृतिकर्म कल्प कह्यो ॥ ५ ॥ ॥ हवे छठो व्रतकल्प कहेछे तिहां प्राणातिपातादिक पांच महाव्रत छे एटले प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन अने परिग्रह ए पांचथी विरमवु ते पांच महाव्रत कहीयें तिहां श्री ऋषभदेव अने श्रीमहावीरना साधु तथा साधवीने तो तादृश जाणपणाना अनावथी पांचे महाव्रत व्यवहारथी छे अने मध्य बावीश जिनना वाराना साधु तो परिग्रह व्रतमांहे परिग्रहित स्त्री जोगनुं पच्चरकाण जाणे छे तथा त्रीजा अदत्तादान व्रतमांहे अपरिग्रहित स्त्रीजोगनु पच्चरकाण जाणे छे एटले स्त्रीनें परिग्रह रूप गणीने पांचमा परिग्रह व्रत सार्थेज लीये छे, केमके जिहां स्त्री तिहां परिग्रह अने जिहां परिग्रह तिहां स्त्री होय छे माटे बावीश तीर्थंकरना साधुनें चोथुं मैथुन विरमण व्रत वर्जीने शेष चार महाव्रत जाणवा अथवा श्रीऋषभदेव अने महावीरना तीर्थें रात्रि जोजन व्रत मूल गुणमांहे गणे छे तेथी रात्रिजोजन विरमण व्रत साथे गणीयें तो साधुने छ व्रत थाय अने बावीशजिनना तीर्थें तो रात्रिजोजन व्रत उत्तर गुणमा गणे छे माटे चारज व्रत जाणवां ए छठो व्रत कल्प कह्यो॥६॥ ॥ हवे सातमो ज्येष्ट कल्प कहे छे ज्येष्ठ एवुं महोटानुं नाम छे तिहा श्रीऋषभदेव अने महावीरना साधुउनें तो महोटी दीक्षा

वीधा पछी लघु वडाइ गणाय छे माटे जेणे महोटी वीक्षा पहेली लीधी होय ते महोटो गणाय अने जेणे नहानी वीक्षा तो पहेली लीधी होय पण महोटी दीक्षा पछी लीये तो ते आगलानी अपेक्षायें लघु गणाय जेम पिता अने पुत्र तथा राजा अने प्रधान तथा शेठ अने चाकर तथा माता अने दीकरी एम अनुक्रमें दीक्षा लीये पछी छठामणा आवे महोटी दीक्षा लीये तेवारें मुख्य प्रकारें तो पिता, राजा, शेठ अने माता ए चार महोटा छे ते जणवामां जो अधिक थाय तो तेहज महोटा कहेवाय नहींका पुत्र, प्रधान, चाकर अने दीकरी ए चारे न्हाना छे परंतु ते जणवामां अधिक थइ जाय तो गुरु तेमने महोटी दीक्षा आपी महोटा करे अने बावीश तीर्थंकरना साधुने तो ए मर्याद नथी, केमके ते तो सघाये प्रवीण माह्या होय छे तेथी तरत ज जणी लीये छे माटे ते दीक्षाना दिवसथीज वृद्ध अने लघु गणाय छे तेथी तेमनामां प्रथम जे दीक्षा लीये तेहज महोटो गणाय, जो पिता अने पुत्र तथा राजा अने प्रधान तथा शेठ अने वाणोतर तथा माता अने दीकरी ए सहु सार्थे दीक्षा लीये तो पिता, राजा, शेठ अने माता ए चार लोक रीतीयें महोटा गणाय तथा पुत्र, प्रधान, वाणोतर अने दीकरी ए चारे लघु गणाय तथा महोटी दीक्षानें योग्य प्रधान अने पुत्र होय तो राजानें तथा पिताने पूछीनें महोटी दीक्षा आपे तेथी अप्रीति न ऊपजें एरीतें ए अनियत कल्प छे ए सातमो ज्येष्ठ कल्प कह्यो ॥ ७ ॥ ॥ हवे आठमो प्रतिक्रमण कल्प कहे छे प्रतिक्रमण ते जे आवश्यकनुं करवुं ते जाणवुं तिहां प्रथम अने चरम जिनना वारामां तो साधुने अतिचार दोष लागे किंवा न लागे तोपण निश्चयथी देवसिकादिक पांचे प्रकारनां पडिक्कमणांकरे अने बावीश तीर्थंकरना साधुतो जो पाप लाग्युं छे एवुं जाणे तोज देवसिक अथवा राइ पडिक

मणु सांजे अथवा सवारे करे अने पाप जाण्युं न जाणे तो ते पण न करे घाकी पाक्षिक,चोमासी अने सांवत्सरिक ए त्रण पडिक्कमणां तो बावीश जिननां वारामां नहीज करे एम ए पण अनियत कल्प छे ए आठमो प्रतिक्रमण कल्प कह्यो ॥ ८ ॥ ॥ हवे नवमो मासकल्प कहे छे पहेला अने छेला तीर्थकरना साधु एक गाममा एक मास पर्यंत रहे उपरांत रहे नही मात्र चोमासाना चार महीना पर्यंत एक गाममा रहे परंतु अन्य दिवसोमां एक महीनाथी उपरांत रहे तो घणा दोषोनो संभव थाय एकतो गृहस्थ साथें प्रतिबंध थाय,हलवा पणु पामे, लोकनो उपकार करी शके नही, देश विदेशनुं ज्ञान न थाय, ज्ञाननुं आराधन न थाय माटे एक मास उपरात रहेवानी साधुने आज्ञा नथी कदाचित् दुर्निक्षादिक कारणे रहेवु पडे अथवा विहार करवाने असमर्थ होय तो पण वस्ति पालटण करे, पाडो पलटावे, घर पलटावे अने छेवट सथारानी नूमि पालटण करीनें नावथी पण मास कल्प करे जे माटे लोकमां पण केरत छे के॥स्त्री पीयर नर सासरे, सजमियां थिरवास॥ एतां होये अलखामणां, जो मामे थिरवास ॥ १ ॥इति॥अने मध्य बावीश तीर्थकरना साधुउ तो विहार करवानें जो सामर्थ्यवान होय तोपण तेऋजु अने पंमित छे माटे तेमने मासकल्पनो कांइनियम नथी जो दोष नही लागतो होय अने लान्न जाणे तो देसूणा पूर्वकोडी वर्ष पर्यंत पण एकज क्षेत्रमां एकज स्थानकें रही जाय माटे ए अनियत कल्प छे ए नवमो मास कल्प कह्यो ॥ ए ॥ ॥ हवे दशमो पर्यूषणा कल्प कहे छे जे एक जगाये रहेवु तेने पर्यूषणा कहे छे ते पंजोसण बे प्रकारना छे एक तो गृहस्थ जाणे अने बीजो गृहस्थ न जाणे ज्यारां पर्यूषण पर्वने पडिक्कमतां थकां साधुलोक पूछे तेवारें रहेवानें विषे वर्त्तमान योग्य कहे पण पर्यूषणा पर्व पडिक्कम्या पछी तो

कार्त्तिकी पुनम पर्यंत रहेवानुं निश्चयथीज कहे तिहां गृहस्थनी आज्ञा थकी पांच दिवस
यावत् रहेवुं एम पांच पांच दिवस रहेतां पचास दिवसें पंजोसण पर्व करे तिहां कल्पसूत्र
गृहस्थ आगल वांचे पछी सीत्तेर दिवस निश्चयथी रहे एटले जे गृहस्थ जाणे ते तो भादरवा
शुदि पांचमथी मांडीनें कार्त्तिक शुदि पूर्णिमा सुधी रहे अने बीजो जे गृहस्थ न जाणे ते
तो आषाढ शुदि पूर्णिमाथी मांडीने भादरवा शुदि पंचमी सुधी जाणवुं, केमके कदापि कोइ
गृहस्थ साधुनें पूछे के आप चोमासुं रह्या तेवारे साधु कहेके जेवी क्षेत्र फरसना अथवा
पांचदिन छेयें एवो जवाब आपे तेथी आगलना दिवस गृहस्थ न जाणे अने पर्युषण कर्या
पछी तो अवश्य तिहांज रहे माटे ते गृहस्थ जाणी शके ते जघन्यथी सीत्तेर दिवस पंजो
सण अने उत्कृष्ट छ महीनानां पंजोसण जाणवां ए कल्प श्रीऋषभदेव अनें श्रीमहावीरना
साधुउने निश्चयथी जाणवो अने बावीश तीर्थंकरना साधुउने निश्चय नही ए दशमो
पंजोसण कल्प कह्यो ॥ १० ॥ ॥ एरीतें ए दश कल्प कह्या ते दशे कल्प श्रीऋषभदेव तथा
श्रीमहावीर स्वामीना साधुउने निश्चयथी जाणवा अने मध्य बावीश तीर्थंकरना साधुउने तो
ए दशमांथी एक सय्यातर, बीजो चार महाव्रत, त्रीजो ज्येष्ठ अने चोथो कृतिकर्म एटले
वांदणा ए चार कल्प निश्चयथी होय छे अने एक अचेलक, बीजो उद्देशिक, त्रीजो प्रतिक्र
मण, चोथो राज्यपिंड, पांचमो मासकल्प अने छट्ठो पंजोसण कल्प ए छ कल्पनो
निश्चय नही ए जेवी मर्यादा बावीश तीर्थंकरोना साधुउनी कही तेवीज मर्यादा श्रीमहावि
देह क्षेत्रना तीर्थंकरोना साधुउनी पण जाणवी ॥ ९ ॥ ॥ इहां कोइ कहेके साधुतो सर्वे
सरखाज छे तो तेना आचारमां भेद केम पड्यो तेने उत्तर कहीयें छेयें जे श्रीऋषभदेवजीनी

वारें माणस रुजु अने जड होय छे,तेमने धर्म समजाववो घणो कठण थाय छे तथा श्रीमहावीर नगवाननी वारें माणस वक्र अने जड होय छे,तेमने धर्म पालवो घणो डुर्लन थइ पडे छे अने मध्यना बावीश तीर्थंकरनी वारें माणस वधा रुजु अने प्राज्ञ होय छे माटे तेमनें धर्म समजाववो पण सुलन होय छे अने पालवुं पण सोहेलुं होय छे एवीरीतें मनुष्योना परिणाममां नेद होवाथी कल्पमां पण नेद थया छे एम जाणवुं, परंतु परमार्थथी नेद कांइ पण नथी मात्र पुरुषोना परिणामना नेद छे ॥ ३ ॥ ॥ हवे प्रथम तीर्थंकरना साधु जे रुजु अने जड होय ते दृष्टातें करी समजावीयें छेयें श्रीरुषननदेवना तीर्थमां कोइएक आचार्यनो शिष्य वंमेज नूमिकायें गयो ते घणो वखत लगाडीनें पाछो आव्यो तेने गुरुयें पुछ्युं अरे शिष्य तने आटलो वखत केम लागो त्यारे ते रुजु पणाथी बोल्यो के स्वामी नाटकीया लोक रमत करता हता ते जोवाने नन्नो रह्यो हतो तेथी वधारे वखत लागो ते सान्नली गुरु बोल्या हे वत्स ! आपणे साधु थइने नाटक जोवा नन्ना रहेवुं नही एथी पाप लागे छे माटे आपणने ए अकल्पनीय छे तेवारे शिष्यें तहत्ति कही एटले जेम तमे कहो छो ते प्रमाण छे आज पछी जोइश नही फरी कोइक दिवसें तेहज शिष्य बाहिर नूमि गयो हतो ते घणो वखत लगाडीनें पाछो आव्यो जेथी गुरुयें पुछ्युं जे आटलो वखत केम लागो तेवारें ते शिष्य बोल्यो के हे स्वामी रस्तामां नाटकणी नाचती हती ते जोवानें नन्नो रह्यो हतो तेने लीधे असुर थइ तेवारे गुरु बोल्या जे तमने पूर्वे मनाइ करी हती तेम छतां केम जोवाने नन्ना रह्या तेवारें ते शिष्य जडपणाथी एटले मूर्खपणाथी बोल्यो के महाराज तमेतो नाटकीया जोवानें मनाइ करी हती पण नाटकणी जोवानें तो मनाइ करी हती नही तेवारे गुरु बोल्या हे महानाग्य ! नाटकणी

तो वळी नाटकीया करतां पण अधिक रागनुं कारण छे माटे तेतो सर्वथा नहीज जोवी ते सांभळी शिष्य बोल्यो हे स्वामी ! मने प्रथम एवी समज पडी हती नही हवे हुं ज्यारें पण जोइश नही इहां ऋजु पणाथी सत्य बोल्यो अने जडपणाथी जो नाटकीआ वर्ज्यां तो नाटकणी अवश्य वर्जवी जोइयें एटलुं समज्यो नही इति प्रथम दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे वळी बीजु कोकण देशीय दृष्टांत कहे छे जेम कोइएक कोकणदेशना वाणीयायें वृद्ध प णामां कुटुंब परिवार छोडी धर्म पामी वैराग्य वान थइनें स्थविर पासें दीक्षा लीधी तेनें कोकण साधु कहीनें सर्व बोलावे एक दिवस ते थंडिल थकी आवी इरियापथिका किरिया पडिक्कम्यो तेने काउस्सग्ग पारतां घणो वखत लागो तेवारें गुरुयें पुछ्यु जो कोकणिक साधु ! तमोने एटलो वखत काउस्सगमां केम लागो ते सांभळी साधु ऋजु पणे बोल्यो के हे स्वामीजी ! में आज जीवदया चिंतवी, गुरुयें पुछ्युं तमे केवा प्रकारनी जीवदया चिंतवी तेवारें साधु बोल्यो जेवारें हुं घेर गृहस्थ अवस्थामां रहेतो हतो तेवारें वर्षाकाळें खेत्रमां वृक्षोनें कापी नाखी सूड करीनें जमीननें अग्नियें बाळी शुद्ध करी तेमां धान्य वावतो हतो तेणेकरी महारा घरमां घणुज धान्य नीपजतुं हतुं तेथी महारु सर्व कुटुंब सुखी रहेतु हतुं अने हवे में तो दीक्षा लीधी छे अने महा रा छोकरा आळसु छे ते खेतीमां कांइ समजता नथी माटे जो निरुद्यमी थका निश्चिंत पणे घरमां बेठा हशे अने सूड नही करशे तो धान्य उपजशे नही तेथी ते बापडा भूखें मरशे एवा प्रकारनी में जीवदया चितवी एम ऋजुपणाथी साधु बोल्यो ते सांभळी गुरु बोल्या हे भद्र ! तमे माठुं ध्यान कर्युं छे केमके ए खेतीनो धधो पाप विना थाय नही ते माटे सावद्यनी अनुमोदना साधुनें करवी युक्त नथी माटे मिच्छामि दुक्कड देइनें शुद्ध थाओ ते सांभळी साधुयें मिच्छामि दुक्कड

कीधो, ए बीजुं दृष्टांत कह्युं ॥ २ ॥ ॥ हवे वली त्रीजुं दृष्टांत कहे छे सोरठ देशनें विषे एक ब्राह्मण रहेतो हतो तेनो पुत्र सासरे जवा लाग्यो तेवारें पितायें शिखामण आपी के हे बेटा! एकवार हा कहेवी अने एकवार ना कहेवी एवी पितानी शिखामण धारण करीनें सासरे पोहोतो त्यां सासु ससरायें पुछ्युं जे हे जट्टजी! तमे आव्या तेवारें ब्राह्मण बोल्यो हाजी,फरी सासु ससरें पुछ्यु के घेर कुशल खेम छे? तेवारें ब्राह्मण बोल्यो नाजी, फरी पुछ्यु के तमारा पिता देवलोक पहोता? तेवारें कह्युं हाजी, फरी पुछ्युं तेमनी पछवाडे कांइ खरच खराजात करी तेवारें कह्यु नाजी, ते सांजली सासु ससरे कह्यु के तमेतो महोटा मूर्ख छो, तेवारें तेणे कह्युं हाजी, एटली वात थया पछी ते सर्व ब्राह्मण मलीनें मोकाणे गया त्यां जइनें जुए छे तो जमाइनो पिता जीवतो बेठो छे तेने राम राम जुहार जुहारकरीनें सर्व मल्या,पछी जमाइना पितायें पुछ्यु के तमो सर्वेनु शा कामें अहींआ आववु थयुं छे? ते सांजली सर्वे बोल्याके तमारे छोकरे तमे परलोक सधाव्या एवी वात अमारी पासें कही तेथी अहींआं आव्या छैयें, तेवारे ते छोकराना पितायें कह्युंके ए छोकरो मूर्ख छे एवा जीवनें पण ऋजु एटले जोला अने जड एटले मूर्ख कहीयें ए त्रीजुं दृष्टांत कह्युं ॥ ३ ॥ ॥ एवा साधु प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेवना तीर्थे समजवा ए प्रथम तीर्थंकरना साधुउ आश्रयी त्रण दृष्टांत कह्यां॥ ॥ हवे चरम एटले छेला तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामीना साधु वक्र अने जड होय तेना उपर दृष्टांत कहे छे जेम कोइएक महावीर स्वामीना तीर्थनो साधु स्थंडिलें गयो ते घणो मोडो आव्यो तेने गुरुयें वखत घणो लागवानु कारण पुछ्यु तेवारें वक्रपणाथी कहेवा लागोके बाहिर जाय तेनें वख ततो लागेज एमां तमें मने शुं पूछो छो!! पछी जेवारें गुरुयें घणु पूछ्यु तेवारें कह्युं जे नाट

कीधा नाटक करता हता ते जोवा ऊनो रह्यो हतो तेने गुरुयें कह्युं जे यतियें नाटक जोवुं नही ते तमे जोयुं तेथी पाप लाग्युं माटे मिछामिछुक्कड लीयो एम कही मिछामिछुक्कड दीधुं, फरी कालांतरें एक दिवस नटडीनुं नाटक देखवा ऊनो रह्यो तेथी घणो वखत लागो माटे गुरुयें तेनुं कारण पूछवाथी वक्रपणाना योगथी वांका वांका उत्तर आपवा मांड्या पण साचुं कहे नही तोपण गुरुयें ज्यारे घणुं पूछ्युं त्यारे बोल्यो जे नाटकणी नाच करती हती ते जोवा ऊनो रह्यो हतो,ते सांभली गुरु बोल्या में ना कही हती तो पण तुं नाटक जोवा केम ऊनो रह्यो? तेवारें शिष्य वक्रपणाथी बोल्यो जे तमेतो नाटकीआनुं नाटक जोवाने वार्यो हतो परंतु ते वखत नटडीनुं नाटक जोवाने शा वास्ते वार्यो नही ? तो एमां माहारो शो वांक छे एतो तमारोज वांक छे एम वक्रपणाथी ऊलटो गुरुनें ऊंलनो दीधो ए वक्रपणा आश्रयि प्रथम दृष्टांत कह्युं ॥१॥ ॥ हवे वली बीजुं लोकोक्त दृष्टांत वक्र जडनुं कहे छे कोइएक शेठनो छोकरो घणो डुर्विनीत हतो ते पोताना मा बाप सार्थे वढवाड कर्या करे तेने मा बाप घणां सम जावे तो पण कोइनुं कह्युं माने नही पछी कुटुंबना माणसोयें तेने शीखामण आपी कह्युं के मा बापनी सामुं तारे बोलवुं नही तेवारें तेणे कह्युं हवे हुं बोलीश नही एम करता कोइएक दिवसें मा बाप प्रमुख सर्व कुटुंब मली पुत्रने घर सोंपी कांइक कामसर बाहेर गयां तेवारे ते छोकरो पितानी शीखामण याद करतो घरनां कमाड जडीनें खाटला ऊपर जइ सूतो,थोडीक वार पछी तें पितादिक आव्या तेणे छोकरानें घणा साद कर्या तो पण ते छोकरो खाट ऊपर बेठो बेठो सांभले परंतु बोले नही अने कमाड पण ऊघाडे नही एम घणो वखत थयो त्यारे तेनो बाप भींत ऊपरथी चढी घरमां आव्यो अने जुए छे तो पुत्र खाटला ऊपर बेठो बेठो हसे छे

तेने बापें मार आपीने पुछ्युं कें तनें आटला साद कर्या तोपण केम जवाब आप्यो नही वली क
माड शावास्ते उधाड्यां नही तेवारें पुत्रें कह्यु जे तमेज मने शीखाव्यो हतो के महोटानें सामुं
न बोलवुं तो महारो एमा शो वाक छे ? तेवारें पितायें कह्यु के अरे मूर्खा काम होय त्यारे तो
बोलवु जोइयें ते सांभली छोकरो बोल्यो के हवे हु काम हशे तेवारें बोलीश, फरी एक दिवसें
शेठ घणालोकोमां बेठा हता एटलामां घेर शेठाणीयें राबडी बनावीनें छोकरानें कह्युके तारा
बापनें बोलावी लाव तो राबडी शीरावीनें पछी सुखेथी काम ऊपर जाय, त्यारें ते छोकरो
ज्यांहां तनो बाप घणा माणसोनी वचमा बेठो छे तिहां जइ महोटे सादें हेला पाडीनें कहेवा
लागोके हे पिताजी ! आज आपणे घेर राबडी थइ छे ते महारी मातायें कह्यु छे के एकवार
शीरावी जाउ पछी सुखेंथी काम काज करो ते सांभली शेठ लज्जा पामीनें त्यांथी उठयो आ
गल जइ पुत्रनें एकातमा कह्युके हे कुपुत्र ! आ घणा लोकोमां लाज जाय तेवीरीतें तु शा वा
स्ते बोल्यो तेवारें पुत्र वोल्यो तमेज मने शीखाव्यो हतो तो हु शु करु ? तेवारें पिता बोल्यो
के आज पछी जो एवु काम होय तो धीरे धीरे बोलवु, छोकरायें कह्युंके हवे धीरे धीरे बो
लीश, एटलामा वली एक दिवस ते शेठनें घेर लाय लागी तेवारें शेठाणीयें शेठने तेडवा सारु
छोकरानें मोकल्यो ते छोकरो तिहां आवीनें जूए छे तो शेठ घणा लोकोनी वचमा बेठो छे ते
वारें पोते दूर ऊभो रहीनें धीरे धीरे बोल्यो घणीवार थया पछी शेठें तेने जोयो तेवारें शेठें
पुछ्युं के अरे तु शावास्ते अहींआ आव्यो छो तेवारें ते छोकरो शेठनी पासें जइनें हलवे हलवे
धीरजथी शेठना कानमा कहेवा लागोके आपणे घेर लाय लागी छे ते सांभली शेठ बोल्यो
के अरे मूर्खा घरतो वली गयुं हशे तु इहा आवतांज केम बोल्यो नही तेवारें छोकरो

बोल्यो के तमे सीखाव्यो हतो जे धीरे धीरें बोलजे तो एमां महारो वांक कोइ नथी ए त मारी पोतानीज चूक छे, पितायें कह्यु अरे एटलो महोटो थयो तोपण हजी अक्कल आवी नही ज्यारे धूआडा नीकळ्या त्यारे तरतज धूल नाखवी हती तो अग्नि शांत थइ जात, एवुं शेवन्नु केहेवु ते छोकरायें धारी राख्युं एम करतां शीत ऋतु आवी तेवारें प्रभात समयें एनो पिता दातण करवा बेठो छे तेना मुखमांथी धूवाडा नीकळ्या ते देखी धूलनो धोबो भरीनें छोकरायें पिताना महोडामां नाख्यो तेवारे पितायें जाण्युं जे ए छोकरो खरेखर मूर्ख छे वली एक दिवस पितायें छोकरानें कह्यु के आ घोडो तरस्यो छे तेने पाणी पीवरावजे अने नवरावी आवजे, छोकरायें कह्युं बे काम तो नही करुं पितायें कह्युं नवरावी आवजे पछी ते छोकरो घोडा ऊपर चढी तलाव पासें जइ घोडानुं महोडु बांधी नवरावीने पाछो घेर लाव्यो पण घोडो तरस्यो हतो माटें आकुल व्याकुल थतो देखी शेठें पुत्रने मूर्ख जाणी घरमांथी काढी मूक्यो अनें कह्युंके वाटे जातां कोइ मळेतो तेने महोटे सादें जुहार करजे पछी वाटें जतां कोइएक पाराधी पास मांही मृगला एकठा करी छन्नो छे तेने छोकरायें महोटें सादें जुहार कर्यो तेनो साद सांभलीने सर्व मृग नासी गया पाराधीये तेने मार आप्यो अने मूर्ख जाणीनें कह्युंके हे भाइ मार्गे जतां छपतो चाल्यो जाजे वली आगल जातां कोइक कोटवाल चोरनी शोध करवा नीकल्यो छे तेणे छोकरानें छपतो देखी चोर जाणी पकड्यो मार मार्यो पछी मूर्ख जाणी कह्युंके घणा माणस दीठामा आवे तेवारें एम कहेजे के तमारे एवुं कोइ वखते थाशोमां वली आगल जातां कोइएक गाममां विवाह छे ते देखी पहेला मूर्खायें कह्यु के तमारे घेर एवु कार्य कोइ वारे म था जो ए वचन सांभलीने विवाह वालायें कूट्यो मार आप्यो पछी छोकरायें कोटवालना शीखा

ववा सबंधि वात कहे ठते ते लोकोये मूर्ख जाणी शीखामण आपी कह्युंके हे जोला ! जेवारें घणा माणस मळे तेवारें एवुं कहेवु के तमारे सदा सर्वदा एमज थाजो तेवात याद राखीने ठोकरो आगल चाल्यो मार्गमां कोइ एक देशनो राजा मरण पाम्यो ठे तेनी मैययने लइ जाय ठे तेने ठोकरायें कह्युं के तमारे सदा सर्वदा एवुज होजो तिहां पण तेणे मार आप्यो मूर्ख जाणीने मूकी दीधो एम रखडतो रझलतो केटलाएक दिवसें पाठो घेर आव्यो ए श्रीवीरना साधु उपर वक्रजडनुं वीजु दृष्टांत कह्युं ॥ ॥ हवे मध्य बावीश तीर्थंकरना साधु ते सर्वे रुजु अने प्राज्ञ ठे तेना उपर दृष्टांत कहेठे जेम कोइएक अजितनाथ जगवाननो साधु ते स्थंडिलथी घणो असुरो आव्यो माटे गुरुयें तेनु कारण पुठ्युं तेवारें रुजु पणाथी कह्युंके नाटकीआनुं नाटक जोवा ऊजो रह्यो हतो, गुरु बोल्या जे साधुयें नाटक जोवु नही तेवारे तेणे मिछामिझुक्कड देइने कह्युंके हवे कोइवारें जोवा ऊजो रहीश नही वली कोइएक दिवसें बाहेर गयो तिहां रस्तामां नटवी नाचती हती ते जोइ पंमित पणाथी विचार कस्यो के गुरुयें मुजनें नाटकीआनुं नाटक जोवा वर्ज्योंठे तो नाटकणीतो वली विशेष रागनुं कारण ठे माटे ए मुजने सर्वथा जोवीज नही एवु विचारीनें पाठो आव्यो ए रुजु अने प्राज्ञनुं दृष्टांत कह्युं ॥१॥ एम ए दृष्टांत जे कह्यां ते काइ सर्वे साधुउ आश्रयी समजवां नही, परंतु कोइएक साधुनां आश्रयी जाणवां ॥ ॥ हवे आजना समयना माणस वक्र अने जड ठे ते प्रमाणे आज पाचमा आरामां चारित्रीया साधु नथी एम पण न कहेवुं कदापि अनाजोग पणे अतिचार दोष घणा लागे तेवा पण साधु आजना समयमां ठे केमके साधु विना धर्म न होय माटे व्यवहार जाष्यमां कह्युं ठे के श्रीजगवतना जांखेला शास्त्रनी जे खरेखरी प्ररूपणा करे तेने साधु

कहीयें ॥ तया ॥ जो नणई नत्थि धम्मो, नय सामाईय न चेवय वयाइं ॥ सो समणसघबुभ्रो,
कायवो समण सघेण ॥ १ ॥ माटे जो पूर्व साधुनी अपेक्षायें हीन कहो तो नले कहो पण ड
पमकालमां साधु नथीज एम न कहीयें जे माटे साधु तो आजे पण छे ॥ ॥ हवे ए दश प्रकारनो
कल्प जे साधुनो आचार रूप धर्म छे तें त्रीजा वैद्यना औषध सरखो छे एटले जेम त्रीजो
वैद्य उपकारी थयो तेम आ कल्प पण उपकारी जाणवो ते त्रीजा वैद्यनी कथा कही देखाडे
छे कोइएक राजाने एकज पुत्र अत्यंत वल्लन हतो माटे राजायें विचार कर्यो जे आ पुत्रनें
रोग आव्या पहेलांज एहुं हु औषध करावुं तो पछी कोइ वारें एनें रोगज थाय नही एम
चितवी वैद्यनें वोलावी कह्युं के आ छोकरानुं एवुं औषध करो के जेणेकरी एने कोइ वखत
रोग न थाय ते वारें वैद्य बोल्यो के हे राजन्' महारी पासें जे औषध छे ते एवु छे के जे
खाधा थकी रोग होय तो जाय अने जो रोग न होय तो वली नवो रोग प्रगट थाय ते सांन
ली राजायें कह्युं के सूता सिंहनें जगाडवा सरखुं ताहारु औषध अमारे करवुं नथी, एम
कही तेने सीख आपी, पछी बीजा वैद्यनें पुछ्युं तेवारें ते बोल्यो के हे राजन्' माहारु औषध
खवराव्याथी जो रोग होय तो जाय अने जो रोग न होय तो गुण दोष कांइ नथाय ते सांनली
राजा बोल्यो जे राखमां घृत ढोलवा जेवु ताहारुं औषध अमारा कामनुं नथी एम कही
तेने पण विदाय कर्यो, पछी त्रीजा वैद्यनें वोलावी पुछ्यु तेवारें ते बोल्यो हे राजन्' महारु
औषध एवु छे के जे खवराव्याथी रोग होय तो जतो रहे अने रोग न होय तो वली अपर
रोग आवे नही तथा बल, बुद्धि, रूप अने तेजनी वृद्धि करे ए वात सांनली राजायें प्रसन्न
थइनें ते वैद्यनुं औषध छोकरानें अपाव्युं अने वैद्यनें शिरपाव आपी विदाय कर्यो एवीरीतें

ए कल्प सिद्धांत पण त्रीजा वैद्य समान गुणकारी छे केमके एना श्रवणथकी जे पूर्वे कर्म बांध्या होय तद्रूप व्याधि दूर थइ जाय अने नवा कर्मनो बंध पडे नही सर्व आपदा निवारे, सुख संपत्ति करे, चारित्रना गुणनी पुष्टि करे अने वली मोक्षना सुख तरत आपे ए कल्प सूत्रने विषे प्रथम श्रीवीर चरित्र छे ते बीज समान छे, श्रीपार्श्वनाथ चरित्र छे ते अंकुरो छे, श्रीनेमीश्वर जगवाननुं चरित्र छे ते थड छे,श्रीआदिनाथ चरित्र छे ते शाखा छे, थविरावली ते फूल छे, कथा छे ते सुगंध छे, फल ते मोक्ष छे, जे ए सूत्रना सर्व अक्षर सांजले ते जीव आठ जवमां मोक्ष जाय॥ ॥हवे साधु जे गाममा चोमासु रहे ते गाममां ए कल्पसूत्रनी वाचना करे अने चोमासु पूरण थया पछी एटले कार्तिकशुदि पूर्णिमा थया पछी पण कदापि वर्षाद वरसवाथी मार्गमा कादव प्रमुख थया होय तो वधारे दिवस पण रहे तथा वली क दाच जे गाममां साधु चोमासु रह्या होय अने हजी चोमासु पूरुं न थयुं होय तेनी वचमा ते गाममा १ मरकी आदिक रोगोनो उपद्रव थाय, २ जिक्षा दुर्लन मलती होय, ३ राजा दुष्ट होय तेणे कोप कस्यो होय, ४ कुंथुआदिक घणा जीवोनी उत्पत्ति थइ होय, ५ सर्प अग्नि आदिकनो जय उत्पन्न थयो होय,रोग अने वर्षाद विरमता न होय,दुर्भिक्ष पडे इत्यादिक कारणे चोमासामां पण विहार करवानी आज्ञा प्रजुयें दीधी छे माटे विहार करवामां दोष नथी हवे संयम निर्वाह करवानें अर्थे साधुनें ज्यां चोमासुं रहेवुं पडे तिहां प्रथम ते क्षेत्रमा उत्कृष्टपणे तो तेर गुण जोवा जोइयें तेना नाम कहेछे १ जे गाममां चिक्कल कादव घणो न होय, २ जे गाममा बेइंद्रियादिक जीव घणा न होय, ३ स्थंडिल जवानी जूमि निरवद्य होय, ४ स्त्री पशु पंमकादिक दोष रहित उपाशरो रहेवानो होय, ५ जे क्षेत्रमा दहिं दूध घणा

मलतां होय, ६ जे गाममां जद्रक अने श्रद्धावान एवा श्रावकना घणां घर होय, ७ जे गाममां वैद्य घणा निपुण रहेता होय, ८ जिहां ओषध घणां सुलभ मलतां होय, ए जिहां श्रावकोना घरमां धन धान्य प्रमुखनो घणु संग्रह होय पण कोइ वातनी चिंता न होय, १० जे गामनो राजा अति जद्रक होय यतिर्जनी नक्ति घणी करतो होय, ११ जिहां ब्राह्मण, तापस, बुध्धा, जरडा प्रमुख पाखंमी लोक जे छे ते साधुनें अपमान करी शकता न होय, १२ जिहां निक्षा सुलभ मलती होय, १३ जिहां सझाय पठन पाठनादिक सुखें यतां होय ए तेर गुणवाला गाममां साधुयें चोमासु करवुं, कदापि एटला जोग न बनें तो पण जघन्यथी चार गुण तो अवश्य जोवा तेना नाम कहेछे १ थंमिल नूमि घणीज सारी शुद्ध फासु होय, २ जेमां सझाय ध्यान सुखें थाय एवी रहेवानें जगा होय, ३ जिहां श्रीजिनमंदिर होय, ४ जिहां गोचरी रुडी रीतें मलती होय ए चार गुण खेत्रना जोइनें चोमासुं करवु एम ए तेर गुण उत्कृष्टथी अने चार गुण जघन्यथी कह्या तथा पांचथी मांमीनें बार गुण सुधी सर्व मध्यम गुण जाणवा, एवु खेत्र जोइनें त्यां साधुयें चोमासु करवुं कारण के साधुजन पृथ्वी पीठने विषे नवकल्पि विहार करे तिहां अनेक तीर्थयात्राउ करतां, गामेगामे विचरता मिथ्यात्वें पडता अनेक नव्यजीवोना उद्धार करतां थकां विचरे ते जेवारे चोमासुं आवे तेवारे धरामंमलें सजलधारायें वर्षाद पडे तेथी पगले पगले पाणीनो प्रवाह चाले, कोमलकिसलय फूटे,थानकें थानकें अनेक प्रकारना जंतुउ उत्पन्न थाय ते माटे जीवयत्न करनारा चारित्रियायें वर्षाकालमां विहार न करवो, एकत्र स्थानकें रहेवुं, अनेक प्रकारना घोर अनिग्रह करवा, जेमाटे साधुने तो वीसवशा दया छे परंतु श्रीकृष्णमाहाराज जेवा सवावशानी दयाना पालनारा

श्रावकोयें पण चोमासामां शोल हजार राजाउने सजामां पधारवानी ना कही अने पोतें पण सजा मांहे नाव्या केमके वर्षाद मांहे घणा कीडी कुंथुआदिक जीव हणाय एवु जाणी ठाकोर पोढघाछे एवो जवाब श्रीकृष्णे कह्यो त्यांथी देव पोढणी अगीआरस लोकमां प्रसिद्ध थइ एरीतें शुद्ध श्रावक पण वर्षाकालें पाप जाणीनें देशांतरनो व्यापार न करे माटे साधुनें पण चोमासामां एक ठेकाणे रहेवुं ते चोमासाने विषे पजोसण पर्व आवे थके मांगलिकनें अर्थें कल्पसूत्र अवस्य वांचवु ॥ ॥ हवे पंजोसण पर्व सर्व पर्वो माहे उत्कृष्ट छे माटे एनो महिमा कहेछे १ जेम मंत्रमांहे पांच परमेष्ठि मंत्र, २ जेम तीर्थमांहे शत्रुंजय तीर्थ ३ जेम दानमांहे अजय दान, ४ जेम गुणमांहे विनय गुण, ५ जेम व्रतमाहे ब्रह्मचर्य व्रत, ६ जेम सतोपमांहे नियम, ७ जेम तपस्या मांहे इंद्रिय दमन, ८ जेम दर्शनमांहे जैनदर्शन, ९ जेम क्षीरमाहे गोक्षीर, १० जेम जलमध्ये गंगानीर, ११ जेम पटमांहे हीर, १२ जेम वस्त्रमांहे चीर, १३ जेम अलंकारमांहे चूडामणि, १४ जेम ज्योत्स्नामाहे निशामणि, १५ जेम तुरंगमांहे पंचवक्त्रकिशोर, १६ जेम नृत्यकलावतमांहे मोर, १७ जेम गजमांहे ऐरावत, १८ जेम दैत्यमांहे ऐरावण, १९ जेम वनमांहे नंदनवन, २० जेम काष्टमांहे चंदन, २१ जेम तेजवतमाहे आदित्य, २२ जेम साहासिक माहे विक्रमादित्य, २३ जेम न्यायवतमाहे श्रीराम, २४ जेम रूपवतमांहे काम, २५ जेम सतीमांहे सीता, २६ जेम शास्त्रमांहे गीता, २७ जेम वाजित्रमांहे जंजा, २८ जेम स्त्रीमाहे रंजा, २९ जेम सुगंधमांहे कस्तूरी, ३० जेम वस्तुमांहे तेज, ३१ जेम पुण्यश्लोकमांहे राजा नल, ३२ जेम फूलमांहे सहस्त्रदल कमल, ३३ जेम धनुर्धरमाहे अर्जून, ३४ जेम इंद्रियमांहे नयन, ३५ जेम धातुमांहे सुवर्ण, ३६ जेम दातारमांहे कर्ण, ३७ जेम गायमाहे

कामधेनु गाय, ३८ जेम स्नेहमांहे घृत, ३९ जेम जलमांहे अमृत, ४० जेम ज्ञानमांहे केवलज्ञान, ४१ जेम सुखमांहे मोक्षनुं सुख, तेम सर्व पर्वमांहे पंजोसण पर्व महोटुं जाणवुं ए जाङ्वा ऋषि पंचमी जेम श्रीजिनशासनने विषे माननीय छे तेमज परशासनने विषे पण ए ऋषीपंचमीनो दिवस माननीय छे ते ऋषीपंचमीनो संबंध कहे छे ॥ ॥ पुष्पवती नगरीने विषे नीलकंठ नामा ब्राह्मण रहेतो हतो तेनी सोमा नामे नार्या हती तथा रुद्रदेव नामे पुत्र हतो ते जन्मथीदारिद्री हतो केटलेक काले तेना माता पिता मरण पामीनें एनाज घरमां पिता बलदीयो थयो अनें माता कुतरी थइ एवामां श्राद्धपक्ष आव्यो तेवारे घरमां द्रव्य नही तेथी विचार करवा लागो जे माता पिताना श्राद्धनो दिवस महारे केवीरीतें साचववो पछी बलदीयो ते लीने घेर खेडवा आप्यो तेनुं नाडुं लइ दुध, चोखा, खांड, घृत अने गोधुम लइ आवीने खीर रांधी घणा ब्राह्मणोने नोतरु दीधुं एवामां पूर्वला नवनुं पोतानुं घर देखीनें कुतरीनें जाति स्मरण ज्ञान उपनुं छे तेणे ते दूधमांहे उपरथी सर्प्पें गरल नाखी ते दीठी तेवारें कुतरीयें विचार्युं जे अज्ञाने करी आ खीरने ब्राह्मणो जमशे तो मरण पामशे तेथी महा अनर्थ थइ प डशे ब्रह्म हत्यानुं पाप लागशे ने महारो पुत्र तथा वहु वे मरण पामशे एम विचारे छे एट लामां वहु आवी तेवारे तेने देखतां ते कुतरीयें दुधमांहे पोतानुं मोहोडुं घाली दुध बोट्युं ते जोइ वहुने रीश चडी तेथी तेने मुसलनां प्रहारे मार मारी केड नागीने ज्यां गायनी शाला छे त्यां जइ हेठी पाडी दीधी तेथी ते तडफडवा लागी अनें ब्राह्मणे बीजो दुध लावी खीर रांधी सर्व ब्राह्मणोने जमाडी श्राद्धनो दिवस साचव्यो पछी ब्राह्मण थाको थको बाहेर गोशालामां खाटली पाथरी सूतो एवामां संध्या समय थयो तेवारें आखा दिवसनुं भुख्यो,

जावीने तेना स्थानकें बांध्यो एटलामां कुत्त
तरस्यो थाकी गयेलो बलद ते पण पेला घांचीयें
देवी आवीने बलदीया तथा कुतरीना शरीरमां संक्रमी तेवारें कुतरी बलदीयाने कहेवा लागी
के आज श्राद्ध तो आपणु हतुं अने खावानुं ब्राह्मणोने मल्युं एटलुंज नही पण आ पापिष्ट
वहुयें माहारी केठ जांगी नांखी तेथी महाउख पामु छु तेवारें बलदीयो बोल्यो जे आ पापिष्ठ
आपणो ठोकरो पण कांइ समजतो नथी मने पण आजें घांचीनें घेर मोकल्यो हतो तेणे
आखो दिवस घाणीमां फेरव्यो अने चारो पाणी आप्या विना एमज भूखें मरतो
आंही आवी बांधी गयो ठे, ए सर्व वात खाटलापर बेठेला ब्राह्मणे सांजली तेथी तेना म
नमा दिलगिरी पेदा थई अने विचार्यु जे आतो महारा माता पिता देखाय ठे एवो निर
धार करी त्यांथी ठठीने कुतरीने खीरनुं जोजन कराव्युं अने बलदने सारीरीतें चारो प्रमुख
आप्युं पठी पोतें पोताना माता पितानी सद्गति करवाने अर्थें परदेश जइ अनेक तीर्थ करी
कोइ महोटा रुषीश्वरने पूठवा लागो के महाराज महारो बाप बलदीउ थयो ठें अने माता
कुतरी थइ ठे तेनी रुडी गति केवीरीतें थाय ते प्रकार कहो तेवारें रुषी बोल्यो जे ए वेहु
जीवें रुषि पंचमीना दिवसें अप्रस्तावे काम क्रीडा करेली ठे मैथुन सेवन कर्युंठे तेनुं पाप
लाग्युं तेना योगें ए अवतार पाम्यां ठे माटे हवे तुं जेवारें रुषि पंचमी एटले जादरवाशुदि
पंचमीनो दिवस आवे ते दिवसें बलदनुं खेड्यु धान्य खाइश नही चोख्खो चउविहारो उप
वास करजे कदापि खाधा विना रहेवाय नही तो वन मुनी अडवना साकला खाजे एटले एम
नी सद्गति थशे पठी ते ब्राह्मणे तेमज कीधुं ते दिवसथी लोकोने विषे रुषि पंचमीनुं नाम
प्रसिद्ध थयुं ठे ए रुषिपंचमीना पर्व आश्रयी कथा कही॥ ॥हवे श्रीपर्यूषण पर्व आवे तेवारें

करी जे पुरुष तेलानी तपस्यामां एटले अष्टम तप करी श्रीकल्पसूत्रने मद्योटो मद्दोत्सव करी जे पुरुष तेलानी तपस्यामां एटले अष्टम तप करी श्रीकल्पसूत्रने सांजले ते पुरुष नागकेतुनी पेरें केवलज्ञान पामीने मोक्ष सुखने पामे ते नागकेतुनी कथा कहे छे चंद्रकांता नगरीने विषे विजयसेन नामे राजा राज्य करतो हतो, ते नगरीमां श्रीकांत नामा शेठ रहेतो हतो तेनी श्रीसखि नामे जार्या हती तेने घणा उपाय करता देवदेवीउनी मानताउ करतां एक पुत्र आव्यो अनुक्रमे ते पुत्रनुं पालण पोषण करतां केटलोएक काल वीत्यो एटलामां पर्यूषण पर्वना दिवसो आव्या ते समयमां ते बालकनी आसपास वेठेलां माणसो मांहोमांहे वातो करवां लागां के आपणे सांवत्सरीनो तेलो करीशु एटले अष्टम तप करीशुं ए वात सांजलीने पहेला बालकने जातिस्मरण ज्ञान उपन्यु तेना योगें पोतानो पाछलो जव दीठो तेथी बाल्यावस्थामां पण तेणे पोताना मनमां अष्टमनुं तप करवुं एवो निश्चय करीने स्तनपान करवु मूकी दीधु तेथी तेनुं शरीर कुमलाइ गयुं मरणतुल्य अवस्था ही गमां आवी एवी पुत्रनी व्यवस्था जोइ तेनां माता पिता घणुज दुःख धरवा लागा तेणे अनेक प्रकारना औषधोपचार कर्या तो पण ते बालकें स्तनपान कर्युं नहीं एम करता जूखना योगें ते बालकने मूर्छा आवी गइ छोकराने मूवेला जेवो देखीनें तेना बापनु हैयु फाटी गयु तेथी मरण पाम्यो, तेमज माता पण मरण पामी अने बालकने मृतक देखी तेना जातिवा लायें धरतीमां नमाड्यो,पछी आपणा गाममा अपुत्रीयो श्रीकांतशेठ मरण पाम्यो छे एवी खबर पडतां राजायें ते शेठनुं धन लेवा सारुं माणस मोकल्या, एवा समयमां अष्टम तपना प्रजावें करी धरणेंद्रनु आसन चलायमान थयुं तेवारें अवधिज्ञाने करी सर्व वृत्तांत जाणी त्यां आवी बालकनें अमृत संचारे सज्ज कर्यो अने पोतें ब्राह्मणनु रूप धारण करी ते शेठना घरना बा

चित्र २



रणा आगल अनो रह्यैनें राजाना माणसोने धन लेतां अटकाव्यां, राजपुरुषोयें जइ राजानें कर्युं के ब्राह्मण धन लेवा देतो नथी तेवारें राजा पोतें उतावलो आवीने ब्राह्मणने कहेवा लागो के अमारा राज्यमां जे अपुत्रीयो मरण पामे तेनुं धन राजा लइ जाय एवी परंपरायें रीत छे माटे तमे शा वास्ते अटकाव करो छो त्यारे ब्राह्मण वोल्यो हे राजन्' ए शेठनो पुत्र जीवतो छे राजायें कह्युं क्यां छे, तेवारें धरणेंद्रे ते वालक जमीनमांथी जीवतो काढीनें राजानें देखाड्यो ते जोइ सर्व लोक विस्मय पाम्या राजायें ब्राह्मणनें पूछ्युं के आप कोण छो अने आ वालक कोण छे तथा ए वात तमे केम जाणी ? ब्राह्मण बोल्यो हुं धरणेंद्र नाग राजा छुं तेलाना प्रभावथी एना सहाय करवाने आव्यो छुं राजा बोल्यो ए बालकें जनम ताज अष्टम तप केम कर्युं, धरणेंद्र वोल्या हे राजन्' ए बालक पूर्व भवमां एक वाणीयैनो छोकरो हतो त्यां बाल्यावस्थामांज एनी माता मरण पामी तेवारें एनो पिता बीजी स्त्री परण्यो पछी ते ओरमान माता जो छोकरानो थोडो वांक होय तोपण अवगणना करे घणुं घणुं खीजे तथा मारवा कूटवा वगैरे घणुंज दुःख देवा लागी, एम ते छोकरो नित्य प्रत्यें दुःख पामतो थको तेनो एक श्रावक मित्र हतो तेनी पासें जइ तेणे पोताना दुःखनी वात कही तेवारें मित्र बोल्योके हे भाइ' तें पूर्व भवमां धर्म कर्यो नथी तेना योगथी दुःखी थयो छो एवो उपदेश सांभली तेणे यथाशक्ति तप करवानो प्रारंभ कर्यो पछी ते आठमे चौदशें उपवास करतो अने वीजा दिवसोमां नवकारसी पोरसी प्रमुख तप करतो अनुक्रमें पजोसण पर्व आव्युं तेवारें तेणे अष्टम तप करवानो निश्चय विचार करीनें रात्रें तृणनी झुपडीमां जइ सूतो, एटलामां तेनी नजीक लाय लागी तेवारें अवसर जोइनें ओरमान मातायें घासनी झुपडी उपर

अग्नि नाख्यो तेथी फुंपडी बली गइ अने गेकरो पण शुनध्यानें मरण पाम्यो तेणे अष्टम तप ध्यानना प्रनावथी इहां अपुत्रीया श्रीकांत शेठने घेर जन्म लीधो अने जातिस्मरण ज्ञान पामीनें एणे अष्टम तप कर्युं, तेथी नूखनें योगें मूर्छागत थयो हतो परतु जीवतो हतो तथापि लोके अजाण पणे तेनें मूवेलो जाणी जमीनमां नमाख्यो ते में आवी अमृत सचार करी मूर्छा उतारी सज्ज कर्यो हे राजन् ! ए महापुरुष छे, एहज नवमां मोक्ष जाशे एने घणाज यत्नथी राखजो, तमोनें पण मह्योटो उपकारनो करवा वालो थाशे एम कही पोताना गलानो हार बालकना गलामा नाखी धरणेंद्र पोतानें स्थानकें गयो, राजायें ते बालकनें हाथी उपर च ढावी मह्योटा आमंबर सहित घेर आण्यो पछी कुंटुबना लोकोयें शेठनु मृतकार्य करी गेकरानुं नाम नागकेतु पाड्यु ते बालपणाथीज जितेंद्रिय परम श्रावक थयो, अष्टमी, चतुर्दशीनो उप वास करे, चोमासें छठ करे अने पंजोसणनो अष्टम करे, जिनपूजा, साधु सेवा नित्य करे, एक दिवसे नगरना विजयसेन राजायें कोइ पुरुषनी उपर चोरीनु जुतुं कलंक आपी निरपराधी छतां तेने मार्यो ते मरीनें व्यंतर देवता थयो तेणे आवी आखा नगरनो विनाश करवा सारु नगर प्रमाणे एक सिला आकाशें विकूर्वी लोकोनें बीवराववा लाग्यो अने राजानें पाडुयें मारी मोहोडे लोही वमतों करी जमीन उपर नाख्यो, ते कृत्य जोइनें नागकेतुयें जाण्युं जे हुं जीवतां छतां श्रीसंघनो अने श्रीजिनचैत्यनो विनाश केम जोइ शकुं ! ! एवुं विचारी मनमां जीवदया आणी नगवानना प्रासाद उपर चढीनें शिलानें हाथ आडो आपी पडती शिला हाथें धरी राखी व्यंतरो पण नागकेतुना तपनी सक्ति न सहन करतो थको ते पोतानी वि कूर्वेली शिलानें संहरण करीनें नागकेतुनें आवी पगे लागो अने नागकेतुना कहेवा उपरथी

राजानें पण शाता करीनें व्यंतर पोतानें थानकें गयो, पछी नागकेतुनी घणी मानता थई राजायें तेने सन्मान आप्युं नागकेतु पण पूर्वनी पेठें घणा तप जप करतो थको विचरे छे एकदा नागकेतुनें जगवतनी पूजा करतां फूलमांहे रहेला तंबोली नागें मस्यो तेथी शरीरमां जेर व्यापी गयुं पण शुन्न ध्यान धरवा लागो तेना योगथी केवलज्ञानउपज्युं तिहां दीक्षा लीधी, शासन देवीयें उघो, मुहपति प्रमुख साधुनो वेश आप्यो, घणाकाल पर्यंत विहार करी घणा जव्यजीवोनें प्रतिबोध आपी मोक्ष पोहोतो, एवो नागकेतुनो अधिकार सांजलीनें जे जव्य प्राणी छठ अठम तप करीनें एटले बेला तेलानी तपस्या करीनें श्रीपर्यूषण पर्वमा कल्पसूत्र सांजलशे ते जीव शाश्वत सुखने पामशे इतिश्री नागकेतु कथा समाप्त ॥ ॥ आ कल्पसूत्र पापनु निवारक छे, मनोवांछित पूरनार छे, निकाचित जे चार घातिकर्म छें तेनुं जीपनार छे माटे जव्यजीवें प्रमाद, निद्रा, विकथा छांमी बेला अथवा तेलानु तप करीनें कल्पसूत्र सांजलवुं तथा श्रीजीवाजिगम मध्ये कह्युं छे के पंजोसण पर्व आवे त्यारे देवताना ६४ पण जेला थइनें श्रीनंदीश्वर द्वीपने विषे जइ अठाइ महोत्सव करे छे तेम इहां रूडा श्रावक, श्राविकायें पण कल्पसूत्रनो अठाइ महोत्सव करवो एवा विधियें करी जो कल्पसूत्र सांजले तो बहु लाजकारी थाय ॥ ॥ ए कल्पसूत्र श्रीमहावीर स्वामीनें छठे पाटें चौद पूर्वधारी श्रीजद्रबाहु स्वामी युगप्रधान थया तेमने चौद पूर्व मांहेला नवमा प्रत्याख्यान प्रवाद नामा पूर्वनी मांहेथी दशाश्रुतस्कंध सूत्र तेनु आठमु अध्ययन रूप रच्युं छे ते जेम दधिनो सार घृत छे तेम सर्व शास्त्रनो सार जूत ए सूत्र रच्युं छे इहा चौद पूर्वनुं मान कहे छे तिहां प्रथम उत्पाद पूर्व छे ते अबाडी सहित एक हाथी जनो करीयें तेनो जेटलो ढगलो देखाय तेटली साइनो एक

ढगलो करीये एटली साह्यी लखीयें तेवारें ए पहेलो पूर्व लखाय,बीजो अग्रायणी पूर्व बे हाथी जेटली साह्यी लखाय, त्रीजो वीर्यप्रवाद पूर्व चार हाथी जेटली साह्यी लखाय, चोथो अस्तिप्रवाद पूर्व आठ हाथी जेटली साह्यें लखाय, पांचमो ज्ञानप्रवाद पूर्व सोल हाथी जेटली साह्यें लखाय,छठो सत्यप्रवाद पूर्व बत्रीश हाथी जेटली साह्यें लखाय, सातमो आत्मप्रवाद पूर्व चोसठ हाथी जेटली साह्यें लखाय, आठमो कर्मप्रवाद पूर्व एकसोनें अठावीश हाथी जेटली साह्यें लखाय, नवमो प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्व बसो छपन्न हाथी जेटली साह्यें लखाय, दशमो विद्याप्रवाद पूर्व पांचसेंने बार हाथी जेटली साह्यी लखाय, अगीआरमो कल्याणप्रवाद पूर्व एक हजारनें चोवीश हाथी जेटली साह्यें लखाय, बारमो प्राणावायप्रवाद पूर्व बे हजारनें अडतालीश हाथी जेटली साह्यी लखाय, तेरमो क्रियाविशाल पूर्व चार हजारनें छन्नुं हाथी जेटली साह्यें लखाय अने चौदमो लोकबिन्दुसार पूर्व आठ हजार एकसोनें बाणु हाथीउंना प्रमाण जेटली साह्यी लखाय एम चौदे पूर्वनें लखवा मांमीयें तो सरवाले १६३८३ हाथीउंना ढगला जेटली साह जोइयें परंतु अद्यापि पर्यंत कोइयें लख्या नथी अने हवे कोइ लखशे पण नही मात्र प्रमाण आपीने श्रीकेवली जगवाने उपमा बतावी छे ए सूत्रथी मान कर्युं ॥ हवे ए चौदपूर्वनुं अर्थ थकी मान कहे छे समस्त जेटली नदीउं छे ते सर्वे नदीउंनी वेलुना कणीया जेटला थाय तथा असंख्याता समुद्र छे ते सर्व समुद्रनां पाणीना बिन्दुउ जेटला थाय तेथी पण अनंतगुणो एकेका सूत्रना पदनो अर्थ जाणवो एरीतें चौद पूर्वना नाम कह्या ॥ ॥

ए कल्पसूत्र प्रथम तो जादरवाशुदि पंचमीना दिवसें रात्रिनुं सांवत्सरिक पडिक्कमणुं कर्या पछी अर्धरात्रि कालग्रहण करी श्रीगुरु उना थका मुखथी सूत्रनो पाठ उच्चार करता अने बीजा

साधुउ सर्व काउस्सग्ग करी सांजलता हता तेमज दिवसना साधवीउंने पण सजलावता हता ए विधि हतो ॥ ॥ तेवार पछी श्रीमहावीर जगवानना निर्वाणथी नवशेंने ऐंसीमें वर्षें पुस्तका रूढ थयो अने श्रीवीर निर्वाणथी नवशें त्र्याणुमें वर्षें आनंदपुर नगर जेने हमणा वडनगर कहे ठे तेने विषें ध्रुवसेन राजा राज्य करतो हतो तेने अत्यंत वल्लज सेनागज नामे एक पुत्र हतो ते दैवयोगें मरण पाम्यो एटलामां पर्यूषण पर्व पण आव्यां तेवारें राजा घणो शोकाक्रां त थयो हतो तेथी धर्मशालाने विषें पण आवे नही वली जेम राजा चाले तेम प्रजा चाले ए हेतुथी बीजा जे शेठ व्यवहारी प्रमुख लोक हता ते पण धर्मशालाने विषे आवे नही एवो राजाने शोकातुर थयो जाणी, धर्मनी हाणी थती देखीने गुरु ध्रुवसेन राजानी पासें वदाववा गया त्यां राजाने कहेवा लाग्या के हे राजन्! तमो शोकाक्रांत थया जाणीनें नगरना लोक पण सर्व शोकाक्रांत थया ठे तेमाटे शरीर धनादिक सर्व अनित्य ठे, आयुष्य चचल ठे, ससार असार ठे ए प्रकारना संसार स्वरूपनें तमें जाणोज ठो माटे जैनधर्म मांहे घणो शोक करवो अयुक्त कह्यो ठे तेथी तमे शोक निवारीने पंचमीना दिवसें पजोसण ठे माटे धर्मशाला मांहे पधारो तो श्रीजद्रबाहु स्वामीयें नवमा पूर्व मांहेथी उद्धरेलु श्रीकल्पनामे सूत्र महामंग लिक प्राचीन कर्मना क्षयनुं करनार ठे ते वांचीयें तेवारें राजानें पांचमने दिवसें पुत्र मरणनो शोक निवर्त्तावावो हतो अने इन्द्रमहोत्सव पण हतो तेथी राजायें कह्युं के ठठ्ठो दिवस अथवा चोथनो दिवस ठेरावो तो महाराथी आवी शकाय पण पंचमीने दिवसें महाराथी आवी श काशे नही तेवारें " अंतरावासेकप्पत्ति " एवो पाठ देखीने कारण विशेषें गुरुयें चोथनी थाप ना करी चोथनुं कल्पसूत्र वाचवा कबुल कर्युं कालिकाचार्यथी उद्दरु बलमित्र अने जानुमित्र

ए ने जाणेज सार्थे वडनगरनो ध्रुवसेनराजा सना सहित धर्मशाला मध्ये आव्यो तेवारें नव वां चनायें करी प्रनावनायें सहित महोत्सव पूर्वक सर्वलोकनी समक्ष श्रीकल्पसूत्र गुरुयें वांच्युं ते दिवसथी चोथने दिवसें पंजोसण थवानी परंपरा चाली ठे अने केटलाएक गछमां अद्या पि सुधी पांचमनां पण पंजोसण करे ठे तेमज ते दिवसथी महोत्सव पूर्वक प्रनावना सहित सर्वलोकनी समक्ष कल्पसूत्र वांचवानी प्रवृत्ति चाली ते श्रीगुरु परंपरायें आज पर्यंत चाली आवे ठे अने ते प्रमाणें सर्वस्थले कल्पसूत्र वचाय ठे एना वांचवाना अधिकारी योग वहन करनारा साधुउ ठे अने सांजलवानो अधिकार चतुर्विध श्रीसंघने ठे ॥ ॥ एक प्रतमां वली आम कहेलुं ठे के वडनगरमां गुरुजी चोमासु रह्या हता एवामां पर्यूषण नजीक आवतामां ध्रुवसेन राजानो एकज पुत्र हतो ते दाहज्वरें पीडा पामवा लाग्यो तेना योगे राजा चिंतातुर थयो थको गुरुने वांदवा आवी शक्यो नही अने पर्यूषण पर्वमां धर्मध्यानमां प्रवृत्ति करनारा घणा जनो दीठामां न आव्या तेथी गुरुयें तेनुं कारण पुछ्युं तेवारे राजाने शोकमां पड्यो जाणी गुरु पोतें राज सनामां पधाख्या त्यां राजाने धर्मोपदेश आपी समजावीने महोटा लान नु कारण जाणी मांगलिक निमित्तें कल्पसूत्रनी प्रथम वांचना करी ते सांजलतां राजाना पुत्र ने शाता थई एम करतां नव वाचनायें तो सर्व दाहज्वर उपशमी गयो तेथी राजायें घणो हर्षवंत थइने महोटो महोत्सव कस्यो, धर्मनो महिमा वृद्धि पाम्यो, राजायें गुरुने विनति करी के श्रीसंघना मांगलिक निमित्तें ए कल्पसूत्र वर्षोवर्ष श्रीसंघनें वांची संनलाववुं ते दिवसथी कल्पसूत्र चतुर्विध श्रीसंघनी आगल वांची संनलाववानी प्रवृत्ति चाली ठे ते रीते हमणा पण श्रावकोना आग्रहथी कल्पसूत्रनी वाचना साधुमुनिराज करे ठे॥ ॥ हवे ए सूत्रना

वांचवा थकी एना अक्षरना महात्म्यनें योगें साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकाना कल्याण थाय ए वात नि सन्देह छे तेनी उपर कथा कहे छे कोइएक मोशीनो पुत्र वनमांहे गायो चारवा जाय एक समये तेने सर्प्पे मस्यो तेथी मूर्छागत थयो ते वात लोकोना मुख थकी सांजलीने मोसी वनमां गइ त्या पुत्रनें मूर्छित थयो देखी, मोहना वश थकी पुत्रनु नाम वारंवार स्मरण करवा मांम्युं के रे हंस ! रे परमहंस ! एवीरीते चार पोहोरसुधी पोकार कस्यो, तेथी मोसीना ठोकरानें जेर उतस्यु, साजो थयो, प्रजातें माता अने ठोकरो बेहु जण गाममां आव्यां, नगरना लोक सर्व विस्मय थया, त्यां मोशीनें गारुडीउयें पूछ्यु जे तमोये शो उपाय कस्यो, के जे थकी तमारो पुत्र निर्विष थयो ? त्यारे मोशी बोलीजे हुं कांइ मत्र जाणती नथी औषध जाणती नथी, पण आखी रात्रि, रे हंस ! हंस ! अने रे परमहंस ! परमहंस ! ! एवुं रुदन कर्युं तेथी निर्विष थयो में पोकार कस्यो ते देवतायें सांजल्यो देवना प्रयोगथी ठोकरो निर्विष थयो ते सांजली गारुडी बोल्या के ए मत्र सत्य छे अक्षरना प्रयोगथी मत्र निपजे छे, तेम आ कल्प सिद्धांत वांचता थकां, सांजलतां थकां, जन्म जन्मनां पातक जाय छे एवुं महोटुं महात्म्य कल्पसूत्रना अक्षरनुं जाणवु ए कल्पसूत्रने सांजलवा थकी घणा गुण थाय छे, घणा मांगलिकनी वृद्धि थाय छे ॥ ॥ हवे परिसामस्त्येन उपणा सेवना ते पर्यूषणा कहीयें ते पंजोसण पर्व आव्यां थकां साधुयें एटलां धर्म कार्य करवा ते कहे छे १ चैत्य परिवाडी करवी एटले सर्व चैत्यने विषे श्रीअरिहतनी प्रतिमानां दर्शन जक्तिजावे करवां, २ लोच करवो, ३ सांवत्सरि पडिक्कमणु करवुं, ४ सर्व श्रीसघनी माहोमाहे खमणा करवां, ५ तेलो करवो एटले अट्ठमनु तप करवु तथा पांच दिवस सुधी श्रीकल्पसूत्र वांचवु

ए पांच वानां करवां,एम श्रीतीर्थंकर गणधरें कह्यु ठे वली पर्यूषण आव्यां थकां श्रावकें आठ
ना धर्म कार्य करवां ते कहे ठे १ आठ दिवस सूधी अमारि पलाववी, २ यथाशक्ति नेला
तेलानुं एटले ठठ अठ्माादिकनुं तप जपादिक करवु, ३ आठ दिवस पर्यंत सुपात्रनें अविछिन्न
दान देवु, ४ सोपारी नालीयेर प्रमुखनी प्रजावना करवी, ५ श्रीवीतराग देवनी प्रतिमानी
पूजा करवी, चैत्य परिवाडी करवी, ६ सर्व साधुउने वंदन करवु, ७ श्रीसंघनी जक्ति करवी,
८ सचित्त वस्तुनो परिहार करवो, ए ब्रह्मचर्य पालवुं, १० सर्व प्रकारना आरंज सवधि कर्मो
नो त्याग करवो, ११ पोतानी शक्ति प्रमाणे सन्मार्गे द्रव्य खरचवुं, १२ श्रुतज्ञाननी जक्ति क
रवी, १३ अजयदान देवु, १४ कर्मक्षय निमित्त काउस्सग्ग करवा, १५ प्रतिदिवस उजय
टंक पडिक्कमणा करवां, १६ मोटो महोत्सव करवो, १७ जे कल्पसूत्र वांचे तेने जक्त पाना
दिक सहाय आपवो तेनी सुख समाधिनी खबर लेवी अने १८ श्रीसंघे मांहोमांहे खमाववु,
१ए जावना जाववी, २० कल्पसूत्र सर्व अक्षरे अक्षर सांजलवु कल्प समान जे जव्य
जीव होय ते कल्पसूत्र सांजले अने ते विधिपूर्वक सांजलनारो पुरुष वारमें देवलोकें जइ
देवतानां सुख जोगवे परंपरायें आठमें जवे मोक्षना सुख पामे एटला धर्मकार्य करवां ॥ ॥
हवे ईहां व्याख्यान करती वेलायें प्रथम मंगल रूप गाथा कहेवी ते लखीयें ठैयें ॥ पुरिम च
रिमाण कप्पो, मंगलं वद्धमाण जिण तिथ्थ ॥ ईह परिकहिया जिणहरा, थेरावली चरित्तमी
॥ १ ॥ पहेला श्रीरुषजदेव तीर्थंकर अने ठेला श्रीमहावीर स्वामी तीर्थंकर थया तेमां श्रीव
र्द्धमान जिनेश्वरना तीर्थने विषे मंगलिक निमित्तें ए कल्प सूत्र ठे तेमां त्रण अधिकार कह्या
ठे त्यां प्रथमतो जिनावली एटले श्रीमहावीर जगवानथी मांमीने पश्चानुपूर्वीयें श्रीजिने

श्वरोनां चरित्र कहेवाशे, बीजो स्थविरावली एटले स्थविरोनां चरित्र कहेवाशे, त्रीजो चोमास आलावें करी अठावीश प्रकारनी साधु समाचारि कहेवाशे तेमां प्रथम श्रीजिनेश्वरोना चरित्रो मांहे हेला श्रीमहावीर स्वामी शासनना अधिकारी ठे माटे तेमनुं चरित्र पहेलुं कहेवाशे एरीतें पीठिका करी ॥ ॥ हवे ए कल्पसूत्रनो अर्थ अत्यंत गंभीर ठे एकेका अक्षरनो अनतो अर्थ ठे ते सर्व अर्थ कहेवानें हुं समर्थ नथी तथापि जेम पूर्वाचार्योयें कह्युं ठे तेम हुं पण ते महान्पुरुषोना ग्रंथोने अनुसरी गुरुकृपाथी स्वल्प अर्थ करु हुं ॥ ॥ हवे जो पण ए कल्पसूत्र पोतेंज सर्व विघ्नोपशांतिने माटे महामांगलिक रूप ठे तो पण शिष्यने मंगलबुद्धि होवाने लीधे जेम लौकिक कार्यना प्रारंभमां पण प्रथम श्रीदेव गुरुनुं स्मरण करीने पठी ते कार्यनो आरंभ करीयें ठैयें तेम आ कल्पसूत्र रचवा रूप कार्यनी आद्यमां पण सर्व मंगल मांहे महामांगल्यकारी, चौदपूर्वनो सारभूत एवो पंच परमेष्ठि मंत्रनो उच्चार कराय ठे ते भणीयें ठैयें ॥ ॥ नमो अरिहंताणं के० ॥ नमस्कार हो विहरमान श्रीअरिहंत प्रत्यें, नमोसिद्धाणं के० ॥ नमस्कारहो जे आठकर्म क्षय करी मोक्ष गया एवा सर्व सिद्ध प्रत्यें, नमो आयरियाणं के० ॥ नमस्कारहो श्रीआचार्य भगवान प्रत्यें, नमोउवज्झायाणं के० ॥ नमस्कारहो श्रीउपाध्याय प्रत्यें,नमो लोए सव्वसाहूणं के० ॥ नमस्कारहो अढीद्वीप रूप मनुष्य लोकनें विषे रह्या एवा सर्व साधु प्रत्यें, एसो पंच नमुक्कारो के०॥ ए जे अरिहंतादिक पांच नमस्कार ठे एटले ए नमस्कार पंचक जे ठे ते कहेवो ठे तोके सव्वपावप्पणासणो के० ॥ सर्व पापनो प्रकर्षे करी नाश करनार ठे, मंगलाणंच सव्वेसिं के० ॥ सर्व मंगलमांहे पढमंहवइमंगलं के०॥ प्रथम एटले मुख्य मंगल ठे, एरीतें मंगल कहीनें हवे मूलपाठनो अर्थ भणीयें ठैयें, ते

विपे एटले ते अवसरनें विपे अ
कालने विपे एटले चोथा आराना अतने विपे, ते समय ने विपे एटले ते अवसरनें विपे अ
मण जगवत श्रीमहावीर स्वामीना पाच स्थान उत्तरा फाल्गुनी नक्त्रमां होतां हवां ते कहे
छे एक उत्तराफाल्गुनी नक्त्रमां देवलोकथी चवीने देवानदाजीनी कूखें गर्नमां आवी उपन्या
वीजो उत्तराफाल्गुनी नक्त्रमां देवानदाजीनी कूखथी लईने श्रीत्रिशला देवीनी कूखमां संक्र
माव्या, त्रीजो उत्तराफाल्गुनी नक्त्रमां जनम्या, चोथो उत्तराफाल्गुनी नक्त्रमा गृहस्थ पणु
त्यागीनें साधु पणु अगीकार कर्युं, पांचमो उत्तराफाल्गुनी नक्त्रमां अनत अनुपम जेनें वी
जी कोई उपमा लागे नही तथा जेनो क्यांय पण व्याघात न थाय एवुं, आवरण रहित स
मस्त वस्तु प्रकाशक सपूर्णपूर्णिमाना चंद्र समान एवुं श्रेष्ठ केवलज्ञान तथा केवलदर्शन जग
वाननें उत्पन्न थयुं ए पांच स्थान उत्तराफाल्गुनी नक्त्रमां थयां तथा स्वाति नक्त्रमा जगवत
निर्वाण एटले मोक्ष पद पाम्या ए पाच कल्याणक सामान्य पणे जगवतना कह्या हवे
विस्तारथी वर्णन करीयें छैयें ते कालने विपे ते समयने विपे श्रमण जगवान् श्रीमहावीर
स्वामी उष्णकालनो चोथो मास आठमुं पखवाडियुं अर्थात् आपाढ शुदि छठ्ठनी रात्रे महावि
जय पुष्पोत्तर प्रधान पुंडरीक नामे दशमा देवलोकनुं विमान छे ते विमानमां वीश
सागरोपमना आउखानो क्षय करीनें, देवजव त्यागीनें, देव संवधि शरीर छांमीनें, अतर
रहित चवें, चवन करीनें एहज जंबूद्वीपना जरतक्षेत्रमांहेला दक्षिणजरतमां ए अवसर्प्पिणी
कालना इहां अवसर्प्पिणी कोने कहे छे ते देखाडे छे जे कालमां समय समय वस्तुनी हानि
थती होय ते अवसर्प्पिणी काल कहेवाय अने जे कालमां समय समय वस्तुनि वृद्धि थती
होय ते उत्सर्प्पिणी काल कहेवाय ते प्रत्येक एकेका कालना छ छ आरा होय छे तेनुं स्वरूप

संक्षेपथी लखीयें छैयें तिहां पहेलो सुखमसुखमा नामें आरो चार कोडाकोडी सागरोपमनो, तेमां मनुष्य तिर्यंचनो त्रण पल्योपमनो आउखो होय, त्रण कोशनु देहमान होय, बशेनें छप न्न पांसली होय, कल्पवृक्षना फल तथा माटीनो तूवरनी दाल जेटलो आहार त्रण दिवसें करे, उंगणपचाश दिवस सुधि जोडलो जनम्यो पाले पछी देवलोकें जाय ए अवसर्प्पिणीनो पहेलो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो छठो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ १ ॥ ॥ बीजो सुखमा नामे आरो, त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो, तिहां मनुष्य तिर्यंचनुं बे पल्योपमनु आयु, बे कोशनुं शरीर, बोर प्रमाणे बे दिवसें आहार करे, एकसो अठावीश पांसली होय अने चोशठ दिवस पर्यंत अपत्य पालना करी देवलोकमा जाय ए अवसर्प्पिणीनो बीजो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो पांचमो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ २ ॥ ॥ त्रीजो सुखम दुखमा नामे आरो, बे कोडाकोडी सागरोपमनो, तिहा युगलीया मनुष्य तिर्यंचनुं एक पल्योपमनुं आयु, एक कोशनुं शरीर, एकातरें आमला प्रमाणे आहार करे, चोशठ पांसली होय अने उंगण्याएशी दिवस सुधि सतान पालना करी मरण पामी देवलोकें जाय ए अवसर्प्पिणीनो त्रीजो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो चोथो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ३ ॥ ॥ चोथो दुखम सुखमा नामे आरो बेतालीश हजार वर्षें न्यून एक कोडाकोडी सागरोपमनो तेमां मनुष्यनुं आयुष्य एक पूर्वकोडी वर्षनुं अने पांचसें धनुष प्रमाण शरीर होय, इहां युगलीया न होय माटे जेवखत जेटलुं जोइयें तेवखत तेटलुं भोजन करे,मरण पामीनें चारेगति मांहेली गमे ते गतिमां जाय,कोइक जीव कर्मक्षय करी मोक्ष पण जाय ए अवसर्प्पिणीनो चोथो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो त्रीजो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥४॥ ॥ पाचमो दुखमा नामा आरो

एकवीश हजार वर्षनो, तिहां मनुष्यनुं सात हाथ देह मान, एकसो वीशवर्षनुं आयु होय, मरण पामीनें चारगति माहेली गमे ते गतिमा जाय परंतु ए आरामां सर्व कर्म क्षय करीनें कोइ मोक्षने विषे जाय नही, ए अवसर्प्पिणीनो पांचमो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो बीजो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ५ ॥ ॥ छठो दुखम दुखमा नामे आरो एकवीश हजार वर्षनो छे, एमां मनुष्यनुं शोलवर्षनुं आयु होय अने एक हाथनु शरीर होय, बिलमां निवास होय, सर्व मनुष्य क्रूरकर्मी, न्यायमार्ग रहित, दुर्गतिमा जावा वाला जीव जेमां होय एवो अवसर्प्पिणीनो छठो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो पहेलो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ६ ॥ एरीते ए छ अवसर्प्पिणीना अने छ उत्सर्पिणीना मली छ छ बार आरा थाय तेनो सर्व मली वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण काल थाय ॥ ॥ हवे एमा अवसर्प्पिणीनो सुषम सुषमा नामा पहेलो आरो पण संपूर्ण थयो वली सुखमा नामा बीजो आरो पण संपूर्ण थयो तथा सुषम दुषमा नामा त्रीजो आरो पण व्यतिक्रम थइ गयो अने दुसम सुसमा नामे चोथो आरो पण घणो वीती गयो एटले तेमांथी पण नेतालीश हजारने पच्चोतेर वर्ष अने साडा आठ महिना ऊपर एटला वरसें न्यून एक कोडाकोडी सागरोपम वीती गया तेमा एकवीश तीर्थंकर श्रीइक्ष्वाकु कुलमा थया जेमनुं काश्यप गोत्र हतु तथा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी अने श्रीनेमिनाथ जगवान ए बे तीर्थंकर श्रीहरिवंश कुलमां थया तेमनु गोतम गोत्र हतुं एरीतें सर्व मली त्रेवीश तीर्थंकर तो थइ चूका अने जेवारें ए अवसर्प्पिणी संबंधी चोथा आराना पंचोत्तेर वर्ष ऊपर साडा आठ महीना शेष काल रह्यो तेवारें प्रथम श्रीजरत महाराजायें श्रीआदिनाथ तीर्थंकरने पूछयुं हतु त्यारे श्रीआदिनाथ जगवानें कह्युं हतु जे चोवीशमा तीर्थंकर श्रीवर्द्धमान परमेश्वर पासे ते

प्रमाणे श्रमण भगवान् श्रीमहावीर छेल्ला तीर्थंकर ते ब्राह्मण कुंडगाम नगरमां ऋषभदत्त नामा ब्राह्मण जेनुं कोडाल गोत्र छे तेनी देवानंदानामे ब्राह्मणी भार्या छे तेनुं जालंधर गोत्र छे तेनी कूखनेविषे मध्यरात्रिना समयमा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग होते छते देव संबंधि आहार तथा देवनो भव अने देवनुं शरीर त्यागीनें देवानंदानी कूखमां अवतर्या ॥ ॥ हवे श्रीऋषभदेव भगवाने कह्युं हतुं के चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीर स्वामी थशे ते वात कया भवनी छे ते जाणवानें अर्थें श्रीमहावीर स्वामीना सत्तावीश भव लखीयें छैयें आ श्रीजंबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे प्रतिष्ठान पत्तनना राजाना गामनी चिंता करवावालो नयसार नामे चाकर कणवास्यो हतो ते एक दिवसें राजाना हुकुमथी घणां गाडां अने चाकर साथें लइने काष्ठ लेवाने अर्थें वनमां गयो तिहां पोते एक वृक्षनी नीचें जइ बेठो छे अने बीजा चाकर माणस लाकडां कापवानो उद्यम करवा लागा छे एटलामा सार्थथकी भूला पडेला केटलाएक साधु त्यां आव्या ते तेणे दीठा तेवारें हर्षवंत थको तेमनी सन्मुख जइ वांदीनें पोतानें स्थानकें तेडी लावीनें आहार वोहोराव्यो पछी साधुयें तेने धर्मोपदेश आप्यो ते सांभलीने त्यां समकेत पाम्यो तेवार पछी ते साधु मुनिराजोनें पाधरो रस्तो देखाड्यो ए नयसारनो पहेलो भव जाणवो ॥१॥ ॥ जिहांथी समकेत पाम्या तिहांथी भवनी गणती थाय समकेत पाम्याथी आगल तो संसारमां जीवें अनंत भव कर्या ते कांइ लेखामां गणाय नहीं पछी त्याथी आयुक्षय करी अंतसमये नमस्कार सहित मरण पामीने पहेले देवलोकें देव पणे उपन्यो ए बीजो भव जाणवो ॥२॥ पछी देवभवमां एक पल्योपमनु आयुष्य भोगवी तिहांथी चवीत्रीजे भवें श्रीऋषभदेव स्वामीनो पुत्र भरत चक्रवर्त्ती तेनो मरीचि नामे पुत्र थयो

तेणे एक दिवस श्रीऋषभदेव भगवाननी देशना सांभळीने दीक्षा लीधी ते वखत बीजा पण
भरत राजाना पांचसे पुत्र अने सातसें पोतरा मळी बारसें पुरुषोए दीक्षा लीधी,एक दिवस उष्ण
काळें शरीरमां ताप घणो लागो तेथी ते मरीचिनें मनमां नाहावानी ईच्छा थई तेवारें तथ
मनो निर्वाह होइस्तो तेथी दीक्षा पाळवाने असमर्थ अने घरें पण जवाय नही एवु विचारी सा
धुनो वेष गंभीनें मन कल्पनायें नवो त्रिदंडीनो वेश धारण कर्यो लोक पूछे तेवारें एवुं कहेजे
साधु त्रणदंडथी रहित छे अने हुं त्रणदंड सहित छु माटे महारे त्रणदंडनुं चिन्ह हो तथा साधु
महाराज द्रव्य अने भावथी लोच करे छे हुं लोचकरवाने असमर्थ होवाथी महारे मस्तकें शिखा
अने मुंडन एटले छुर मुंड हो तथा साधु सर्व प्राणातिपातादिकथी विरम्या छे महाराथी तेम
पळी शकतुं नथी माटे महारें स्थूल प्राणातिपातनी विरति हो तथा साधु शीलेकरी सुगंधित छे
अने हुं तेम नथी माटे माहारे बावना चंदननुं विलेपन हो तथा साधु मोह रहित छे अने हुं
मोहें करी ढांक्यो छुं माटे माहारे एक छत्र ढांकवा सारु हो तथा साधु पादुकायें करी रहि
त छे हुं तेम नथी माटे महारें पगें पावडी हो तथा साधु कषायथी रहित छे अने हुं कषायें
सहित छुं माटे महारे कषाईयां एटले गेरुना रंग्यां वस्त्र हो तथा साधु स्नानें करी रहित
छे अने हुं तेम नथी माटे महारे स्वल्प पाणीयें स्नान हो एरीतें भेख लई हाथमां जलक
मंडल धारण करी प्रभुना समोसरणनी बाहेर बेसे परंतु एवो विरूप वेश छतां पण जे को
ई पूछे तेनी आगळ खरे खरी हकीगत कहे अने एनी पासें आवनारनें शुद्ध साधुमार्गनो उ
पदेश आपी श्रीऋषभदेव भगवान पासें दीक्षा देवरावे एवो थको भगवान साथें विचरे एकदि
वस श्रीऋषभदेव स्वामी अयोध्यायें पधार्या तेवारें भरतचक्रवर्त्तियें परमेश्वरनें वंदना करी पू


चित्र ३
श्री ऋषभदेव
मरीचि
नाचते कूदते
भरत
महाराज
कपिल

ग्गु जे हे नगवन ' श्रा समोसरणमां कोई तीर्थकरनो जीव ठे ? तेवारे नगवान वोल्या के समोस रणमां तो नथी परंतु समोसरणनी याहेर ताहारो मरीचि नामें पुत्र जेणें त्रिदमीनो वेप धारण कर्यो ने ते चोवीशमो श्रीमहावीर नामा तीर्थंकर थाशे तथा एज मरीचिनो जीव ते श्रा नरत क्षेत्रमा पोतनपुर नगरें त्रिपृष्ट नामे पहेलो वासुदेव थाशे तथा श्रीमहाविदेह क्षेत्रमा मूका नग रीयें प्रियमित्र नामा चक्रवर्त्ती थाशे एवी वात सान्नलीनें नरत महाराज हर्षवत थइ श्रीनग वान पासेंथी मरीचिनें वांदवानी श्राज्ञा लेइ समोसरणमांथी उठीनें समोसरणनी वाहेर ज्यां मरीचि वेगो ने त्यां श्राव्या श्रने त्रण प्रदक्षिणा श्रापी वांदीने कहु के हे मरीचि ' हु तने तथा ताहारा त्रिदमीना वेखन तथा तु वासुदेव थाइश ते ताहारा वासुदेव पणांने तथा च क्रवर्त्ती पणानें नमतों नथी परंतु चोवीशमो श्रीमहावीर नामें तीर्थंकर थाइश माटे तेने वांदु हुं एम कही नरत महाराज स्वस्थानकें गया पठी ए वात सांनलीने मरीचि घणा श्रानदथी थोल्यो के एकतो महारो दादो तीर्थंकर तथा महारो पिता चक्रवर्त्ती श्रने हुं पोते पण पहेलो वासुदेव थाइश तथा चक्रवर्त्ती पण थाइश वली ठेल्लो चोवीशमो तीर्थंकर थाइश माटे मने वासुदेवादिक श्रधिक पदवीठ मलशे तेथी श्रहो महारु उत्तम कुल एम कहीने पोतानी भुजा यें ताली ठोकी महा हर्षवत थयो थको हाथें तालोटा देतो नाचवा लाग्यो, एवीरीतें पोता ना कुलनो मद कयो तेथी नीचगोत्र कर्म वांध्यु जेमाटे १ जातिमद, २ कुलमद, ३ लान मद, ४ श्रेश्वर्यमद, ५ वलमद, ६ रूपमद, ७ तपमद, श्रनें ८ श्रुतमद ए श्राव मदने करतो थको जीव हीन जात्यादिकने पामें हवे कोइएक दिवस मरीचिना शरीरमा रोग उपन्यो तेवारें तेनो निन्नवेप देखीने श्रसयति पणाने लीधे कोइ पण साधु तेनो वेयावच्च करे

मनमां चिंतव्युं के मने रोग मटी जाय अने सारो थाउं तो एक शि
नही ते जोइ मरीचियें मनमां चिंतव्युं के मने रोग मटी जाय अने सारो थाउं तो एक शि
प्य करुं के जे मने रोगादिक उपने वैयावञ्च करवा काम आवे एम निर्धारी रास्युं पछी केट
लाएक दिवसें तेने रोग मट्यो अने शरीरे शाता थइ, एक दिवसें कोइ कपिल नामा राजपुत्र
मरीचि पासें आवी धर्मोपदेश सांजली प्रतिबोध पाम्यो पछी मरीचिनें कहेवा लागो के मने
दीक्षा आपो ते सांजली मरीचि वोल्यो के श्रीऋषजदेव स्वामी पासेथी दीक्षा ल्यो तेवारे क
पिल राजपुत्र श्रीऋषजदेवजीना समोवसरणमां गयो तिहां प्रजुनें समोसरणमां वेग जोइ
फरी मरीचि पासें आवीनें वोल्यो के श्रीऋषजदेवजीतो राज्य लीला जोगवे छे माटे तेमनी
पासें तो धर्म कांइ पण नथी पण ताहारा पासें कांइ धर्म छे के नथी? एवुं वचन सांजली
मरीचियें तेनें यथार्थ कह्युं तो पण बहुल कर्मी पणा माटे तेणे मान्युं नही तेवारें मरीचियें
आदि कषाय, सहित मतिभ्रंशथी, मिथ्यात्वोदयना योगें, शिष्यना लोजथी, स्वधर्म थापवा
विचार्युं जे ए महारे योग्य छे एम चिंतवीनें वोल्यो के हे कपिल ! काइक जैनधर्म महारा पासें
पण छे माटे तुं सुखें दीक्षा ले, हुं तुजनें दीक्षा आपीश एवा प्रकारें पोताना अर्थ सारुं कपिलने
दीक्षा दीधी ए उत्सूत्र जापण कर्युं पछी ते कर्मनें आलोयुं पडिकम्युं नही तेना योगथी एक
कोडाकोडी सागरोपम संसारमां परिभ्रमण करवा संबधि कर्म उपार्जन कर्युं पछी ते मरीचि
अनुक्रमें पोतानुं चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य जोगवी समाधि मरण करीने ॥ ३ ॥ ॥ चोथे
जवें पांचमे ब्रह्म देवलोकें दश सागरोपमनें आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ ४ ॥ ॥ त्यांनु आ
युष्य पूरण करी चवीनें पांचमे जवें कोल्लागसन्निवेशने विषे एंशी लाख पूर्वनें आउखे कोशिक ना
मा विप्र थयो त्यां पण छेल्ली तापसी दीक्षा ग्रहण करी आयुष्य पूरुं करी मरण पामीने घ

णाकाल पर्यंत संसार परिभ्रमण करी ॥ ५ ॥ छठे जवें थूणापुरीमां पुष्पमित्र नामा ब्राह्मण थयो
तिहां त्रिदण्डी तापस थई बहोतेरलाखपूर्व आयु जोगवी ॥ ६ ॥ ॥ सातमे जवें पहेले सौ
धर्म देवलोकें मध्यम आउखे देवता पणे ऊपन्यो ॥ ७॥ ॥ त्यांथी चवीने आठमे जवें चैत्य स
न्निवेशें साठ लाख पूर्वनें आउखे अग्निद्योति नामा ब्राह्मण थयो त्यां पण त्रिदण्डी तापस थई
काल करीने ॥ ८ ॥ नवमे जवें बीजे ईशान देवलोकें मध्यम आउखे देवता थयो ॥ ९ ॥
त्यांथी चवी दशमे जवें मंदिराख्य सन्निवेशें उप्पन्न लाख पूर्वनें आउखे अग्निभूति नामा ब्रा
ह्मण थयो त्यां पण त्रिदंडी पणुं ग्रहण करी मरण पामीनें ॥ १० ॥ अगीआरमे जवें त्री
जे सनत्कुमार नामा देवलोकें मध्यम आउखे देवता पणे ऊपन्यो ॥ ११ ॥ त्यांथी चवी
बारमा जवमा श्वेतांबिका नगरीनें विषे चुम्मालीश लाख पूर्वने आउखे जारद्वाज नामा ब्राह्मण
थयो अंते त्रिदण्डी पणु ग्रहण करी त्यांथी मरण पामीनें ॥ १२ ॥ तेरमें जवें चोथा मा
हेंद्र नामा देवलोकने विषे मध्यम आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ १३ ॥ त्यांथी चवी घणुं
ससार भ्रमण करी वली चौदमां जवें राजगृही नगरीने विषे चोत्रीश लाख पूर्वनें आउखे था
वर नामा ब्राह्मण थयो त्यां त्रिदण्डी तापस पणुं अंगीकार करी मरण पामीनें ॥ १४ ॥
पन्नरमें जवें पांचमें ब्रह्म देवलोकें मध्यम आउखे देवता पणे ऊपन्यो ॥ १५॥ त्यांथी चवी
ने वली पण घणुं ससार भ्रमण करी शोलमां जवने विषे राजगृही नगरीनो विश्वनंदी नामेराजा
तेनी प्रियंगु नामा राणी तेनो पुत्र विशाखानंदी हतो अने ते राजानो बीजो न्हानोजाईविशाखा
जूति नामे युवराजा हतो तेनी धारणी नामे राणीनी कूखने विषे ते मरीचिनो जीव आवी पुत्र
पणे ऊपन्यो, तेनुं विश्वभूति नाम मावित्रे दीधुं, ते अनुक्रमें योवन वय पाम्यो त्यारे तेना पितायें

परणाव्यो पछी ते प्रतिदिन पोतानी स्त्रीने सार्थे जई वाडीमां रमवा जाय एक दिवसें चित्रनदी राजा ना कुवर विशाखानदीयें, विश्वनूतिने क्रीडा करतो देखीने मनमां विचार कस्योके छुउ तो खरा जे हुं तो राजानो पुत्र छुं अने आ तो युवराजानो पुत्र छे तो हु आ माहारा वापनी वाडीमां कोइ दिवसें पण क्रीडा करतो नयी अने आ युवराजानो पुत्र वाडी रोकीनें वेगो छे ए अयुक्त छे मार्टे हवे हुं पण माहारी स्त्रीयो सहित इहां आवीनें वाडीमां रमण करु तोज म हारो जमवारो सफल जाय नहींकां महारो जन्म व्यर्थ जाणवो एवो निश्चय करी ते कुमारें पोताना पितानें कह्युं के विश्वनूतीनें वाडीमाथी काहाडी मूको तो हु जइ ते वाडीमां क्रीडा करुं तेवारें पितायें कह्युं के हे पुत्र! हुं कोइ प्रपंच करीनें विश्वनूतीनें काहाडी तने वाडी आ पीश ए प्रमाणे पोताना पुत्रनें संतोप पमाडी पछी विश्वनूतीने वाडीमांथी काहाडवा निमित्ते राजायें कपट करी एक पडहो वजडाव्यो के सिंहनामा राजाने पकडवा सारु राजा चढे छे, आवो ढंढेरो सांजलीनें विश्वनूती आवी राजानें कहेवा लाग्यो जे हे स्वामी! तमे पोतेज ते विचारा गरीबडा सिंहराजानी उपर शुं प्रयाण करो छो? तेनें तो हुज बांधी लावीश एम कही लश्कर लइने विश्वनूति, सिंहराजा उपर चडाइ करी गयो, पाछलथी राजायें विश्वनूतीना अ त:पुरनें राजवाडीमांथी काहाडीनें विशाखानदीनें वाडी सोंपी दीधी, एम करतां केटलाएक दिवसें विश्वनूती पण सिंहराजानें पकडी लावीनें राजाने आवी सोंप्यो तेवारें तेनो लोको घणो यशवाद बोलवा लागा, हवे फरी विश्वनूती पूर्वनी पेठें पोतानी स्त्रीयोनें सार्थे जइ रम वासारुं राजवाडीयें गयो तिहां दरवाजा उपर विशाखानदीना सुनट बेठा हता ते बोल्या के इहां विशाखानदी पोतानी स्त्रीयो सार्थे रमण करे छे मार्टे [illegible]

आववानो हुकुम नथी, राजायें वाडी एने वाधा ठ त सांजली विश्वनूतियें जाएयुं जे राजायें महारी सार्थे कपट कीधुंठे माटे धिक्कार पडो आ ससारनें एम विचारी विरक्त थयो पढी मात्र पोतानु बल देखाडवा सारु ते वाडीना दरवाजा पासें एक कोंठनुं झाड हतुं तेने एक मूठी मारी तेथी ते वृक्षना वधांये कोंठ जमीन उपर पडीगयां पढी विश्वनूती बोल्यो के जेटलो वखत आ कोंठनें जमीन उपर पाडतां लागो तेटलोज वखत शत्रुउनें मारतां लागे परंतु लोको अपवाद वोले तेनी बीकथी ए काम हुं करतो नथी एवु कहीनें संनूतिविजय मुनिनी पासे दीक्षा लइ मासक्षपणादि घणुज तप कयुं, एक दिवसें ते विश्वनूति मुनि विहार करतो करतो मथुरा नगरीमां आव्यो तिहां मासखमणनु पारणु करवा सारु गोचरीनें अर्थे गलीयें फरतां थकां कोइएक नवी प्रसूता गाय हती तेणे ढींक मारी तेथी साधु नूमिकायें पडी गयो ए अवसरमां एना काकानो दीकरो विशाखानदी तेपण पोतानें सासरें एज गाममां आवेलो ठे तेणे गोखमा बेठां थकां विश्वनूतिने जमीन ऊपर पडतो जोयो तेवारें हास्य पूर्वक बोल्यो के हे विश्वनूति' जे बल पराक्रमथी तें एक मुष्टीयें करी सर्व कोंठ पाडी नाख्यां हतां ते तारुं बल सर्वे क्यां जतु रयुं? एवु वचन सांजलीनें मुनियें उची दृष्टी करी तेने जोयो त्यारें मनमां अहंकार आणीनें बोल्यो के अरे हजी पण हास्य करे ठे, तो जो हवे हमणां पण महारु बल केटलुं ठे एम कही पहेली गायने सींगडे पकडी आकाशें नमाडीनें नूमि उपर मूकी दीधीनें विशाखानदीने कहेवा लागो के अरे तुंतो जाणे ठे जे एनु बल जतुं रयु हशे पण महारु बल क्यांयें गयुं नथी वली कहेवा लागो के जो महारी तपस्यानुं फल होय तो हुं परनवमां घणो बलवत थयो थको तुजनें मारवा वालो थाउं एवो नीयाणो करी कोडी वर्ष पर्यंत चारित्रपाली

अते अनशन करी त्यांथी मरण पामीनें ॥ १६ ॥ सत्तरमे नवें मदाशुक्र नामा सातमा देवलोकने विषे सत्तर सागरोपमना पूरण आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ १७ ॥ ॥ तिहांथी चवीनें अढारमे नवें पोतनपुर नगरमां प्रजापति नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूखमां चार सुपने सुचित्त एक पुत्र थयो तेनुं नाम अचल दीधु तथा वली एज प्रजापति नामा राजानी मृगावतीनामे एक पुत्री थइ ते एक दिवसें विवाहनी चिंताने लीधें ते कुमारी नी मातायें तेने शणगारी सुशोभित वस्त्राभूषण पहेरावीनें राजा पासें मोकली अने विचार्युं जे ए महोटी कन्या यौवन वय पामेली देखीने राजा कोइ कुलवान राजकुमारनें परणावी देशे, परंतु राजा तो ते पोतानी सुरूपवाली पुत्रीने आवेली देखीनें कामेकरी पीडीत थयो अने पोतेज पोतानी दीकरीनें परणवानी इछा करतो थको लोको अपवाद न करे एटला माटे सन्नामां बेठेला लोकोनी आगल कहेवा लाग्यो के हे नाइउ ! जे लोकनें विषे सारामां सारी चीज होय ते कोनी कहेवाय ? तेवारे सनाजनो बोल्या के जे उत्तम चीज होय ते तमारी कहेवाय, राजा बोल्यो जे तमारा मुखथी जे वचन निकल्युं ते निश्चयथी सत्य छे माटे आ सर्वोत्कृष्ट जें कन्यारत्न छे ते हुं बीजानें आपीश नही एनें हु पोतेंज परणीश एम कही ते पोतानी पुत्रीनें पोतेंज परण्यो अने तेनी सार्थे ससार संबंधि सुख नोगववा लाग्यो एम करतां एक दिवस ते विश्वनूतिनो जीव देवलोकथी चवीनें मृगावतीनी कूखें आवी उपज्यो तेवारें मृगावतीयें सात स्वपनां दीठां पछी पूरण नव महीने पुत्र जन्म्यो तेवारें राजायें महोटो महोत्सव करीनें ते बालकनु नाम त्रिपृष्ट एवुं दीधु अनुक्रमें ते बालक महोटो थयो एवा अवसरमां शंखपुर नगरनी पासें तुंगी नामा पर्वत छे ते पर्वतनी गुफामां विशाखानंदीनो जीव सिंह पणे आवी उपन्यो

छे ते वखतमां अश्वग्रीव नामे प्रतिवासुदेव हतो तेनुं शालिनुं खेत्र ते पर्वतनी नजीक हतु ते शालिना खेत्रनो जे रखवालो रहेतो तेने ते सिंह मारी नाखतो हतो तेवारें ते अश्वग्रीव पोताना सेवक राजाउंनी ऊपर वर्षोवर्ष वारा प्रमाणे हुकुम लखी खेत्रनी चोकी करवा मोकलतो हतो एम करतां एक वर्षें वारा प्रमाणे ते प्रजापतिराजाने चोकी करवानो हुकुम आव्यो ते वारें ते खेत्रनी रखवाल करवा सारुं राजायें पोतें जावा मांड्यु तेने त्रिपृष्टें वारी राख्यो अने पोते पोतानो अचल नामे भाइ जे गौतमस्वामीनो जीव छे अने आ भवमां बलदेव थाशे ते सहित खेत्रनी रखवाल करवा गयो, तिहां बख्तर टोप पहेरी रथमां बेशी अचलनें सारथी करी शस्त्र लइनें जे गुफामां सिंह रहे छे त्यां गयो एटलामां तो रथनो अवाज सांभलीनें सिंह पण गुफाथी बाहेर आव्यो तेनें देखीने त्रिपृष्टें विचार्यु जे ए सिंहने बेसवा रथ नथी तो महारे पण रथमां बेसी लडवु नही वली एनी पासें शस्त्र तथा कवच नथी तो महारे पण शस्त्र तथा कवच नही राखवां पछी शस्त्र तथा कवचनें रथमां मूकी पोते रथथी हेठो उतरी सिंहने कहेवा लाग्यो कें अरे दाढीना खावा वाला उठी उभो थइने महारी सामो आवीजा एटलु कर्यु के तरत ते सिंह पण उठ्यो अने मुख फाडी सांहमो लडवा आव्यो के तरतज त्रिपृष्टें ते सिंहना होठ पकडी वे कटका करी चीरी नाख्यो, तो पण ते सिंहनो जीव जाय नही, तेवारें त्रिपृष्टनो सारथी सिंहनें कहेवा लाग्यो के हे सिंह ! जेम तुं मृगराज छो तेम आ ताहारो मारनार पण नरराज छे माटे तनें कोइ साधारण माणसें मार्यो नथी एवी वात सांभली सिंह मरण पामीनें नरकें गयो पछी ते सिंहनुं कलेवर लइ गाममां आवी लोकोनी वचमां कलेवर नाखीनें त्रिपृष्ट बोलवा

जाणो के आ उपद्रव करनार सिंहने हुं मारी आव्यो छुं माटे हवे महारा प्रतापथी अश्वग्रीव प्रतिवासुदेव सुख समाधिथी चावल खाउ ए वात लोकोना मुखथी सांजलीनें अश्वग्रीवने महा क्रोध उपन्यो तेथी पोतानी सेना लइने लडवा आव्यो ते त्रिपृष्ठ सार्थे युद्ध करता कोइ पण रीतें पोहोची शक्यो नही तेवारें चक्र फेरवीने तेना उपर नाख्युं ते चक्र पण त्रिपृष्ठना हा थमां आवी बेठुं पछी तेज चक्र त्रिपृष्टें अश्वग्रीव उपर चलाव्युं तेणे जइ अश्वग्रीवनुं मस्तक छेदी लावीनें त्रिपृष्ठ आगल हाजर कर्युं ते जोइ देवो आकाश उपर रही जय जय शब्द कही बोल्या के आ जरतखेत्रमां ए त्रिपृष्ठ पहेलो वासुदेव थयो पछी ते त्रिपृष्ठ अनुक्रमें त्रण खण्ड साधीने वासुदेवनी राजलीलाना सुख जोगवतां थकां एक दिवस नाटक थातुं हतुं तेवामां राजाने निद्रा आववा लागी तेवारें शय्यापालकनें कह्युं के मने निद्रा आवी जाय तेवारें ए नाटक करनाराओने शीख आपी वारी राखजो तो पण तें शय्यापालकें श्रोत्रेंद्रियना रसें करी तेमनें गीत गान करतां वारी राख्या नही एटलामां त्रिपृष्ठ जागृत थइनें बोल्यो के अरे आ नाटकीआनें शा वास्तें रजा आपी नही तेवारें शय्यापालकें कह्युं के हे प्रभु ! श्रोत्रेंद्रियना रसें करी हु रजा आपतां चूकी गयो ते सांजली त्रिपृष्टनें क्रोध चढ्यो पछी सीसुं गरम करी तेनो उनो उनो रस ते शय्यापालकना कानमां रेडाव्यो तेथी ते मरण पामीनें नरकें गयो एरीते ते वासुदेवना जवमां घणा महोटां पापोपार्जन करी चोराशी लाख वर्षनुं आयुष्य जोग वीनें एंशी धनुष प्रमाणना शरीरनो त्याग करी मरण पामीनें ॥ १८ ॥ ॥ उंगणीशमे जवें सातमा नरकने विषे नारकी पणे जइ उपन्यो ॥ १९ ॥ ॥ त्यांथी मरण पामीने वीशमे जवें सिंह थयो ॥२०॥ तिहांथी मरण पामीने एकवीशमे जवें चोथा नरकने विषे नारकी पणे


चित्र ४
त्रिपृष्ठ वासुदेव
दासी
शय्यापालक

जइ उपन्यो ॥ २१ ॥ त्यांथी मरण पामी घणु संसार भ्रमण करी बावीशमे जवें रथपुर नगरें प्रियमित्र नामें राजानी विमला नामे राणी तेनी कूखने विषे पुत्र पणे उपन्यो मा वित्रें विमल एवु नाम दीधुं अनुक्रमे सर्व कलानो पारगामी थयो पितायें तेने राज्य सोप्युं एक दिवस वनमां क्रीडा करवा गयो त्या पाश मांहेथी हरण छोडाव्या तिहा दयाना प्रजावे जद्रक परिणामें करी मनुष्यायु बांध्युं, छेवटे दीक्षा लइ उग्र तपश्चर्या करी, चक्रवर्त्तीनी पदवी उपार्जी अंते एक मासनुं अनशन करी त्यांथी चवीनें ॥ २२ ॥ त्रेवीशमे जवें पश्चिम महाविदेहमां मूका नगरीनो धनजय नामे राजा तेनी धारणी नामें राणीनी कूखे आवी उपन्यो मातायें चौद स्वपनां दीठां पछी पूरण मासे पुत्र जन्म्यो तेवारें मातपितायें महोटा महोत्सव पूर्वक तेनुं प्रियमित्र एवुं नाम दीधु ते अनुक्रमें छ खंम साधी चक्रवर्त्तीनी पदवी जोगवी अंते श्रीपोटिलाचार्य पासेथी दीक्षा लइ क्रोड वर्ष पर्यंत चारित्र पालि सर्व चोराशी लाख पूर्वनुं आयु पूरण करी त्यांथी मरण पामी ॥ २३ ॥ चोवीशमे जवें शुक्र नामा सा तमें देवलोकें सत्तर सागरोपमने आयुखे देवता पणे उपन्यो ॥ २४ ॥ त्यांथी चवी पच्चीशमे जवें एहज जरतक्षेत्रमां छत्रिका नामे नगरीनो जितशत्रु नामे राजा तेनी जद्रा नामे राणीनी कूखने विषे पच्चीश लाख वर्षने आयुखे नंदन नामे राजपुत्र थयो त्यां चोवीश लाख वर्ष सुधी गृहस्थावासें रहीने पछी पोटिलाचार्य पासेंथी दीक्षा लइ एक लाख वर्ष पर्यंत दीक्षा पाली जावज्जीव सुधी मास खमणे करी वीशस्थानकनुं तप आराध्युं तेथी तीर्थंकर नामकर्म निकाचित उपार्जी अंते एक मासनुं अनशन करी त्यांथी काल करीनें ॥ २५ ॥ छवीशमे जवें दशमा प्राणात देवलोकने विषे पुष्पोत्तरावतंसक नामना विमानमा वीश सागरोपमने आ

ठखे देवता पणे उपन्या ॥ २५ ॥ पठी त्यांथी चवीने मरीचिना नवमां जे कुलनो मद कर्यो हतो ते नीचगोत्रकर्मना उदयथी सत्तावीशमा नवने विषे रुषनदत्त ब्राह्मणनी देवानदा नामे स्त्रीनी कूखे आवी उपन्या ठे एरीतें प्रथम तीर्थंकर श्रीरुषनदेव नगवानें नरत चक्रवर्त्तीनी आगल कह्युं हतुं जे मरीचिनो जीव तीर्थंकर थाशे ते निश्चयथी थयो ॥ २७ ॥ ॥ हवे नगवान् श्रीमहावीर देवानदानी कूखें अवतर्या ते समयने विषे त्रण ज्ञान सहित गर्नपणे आव्या त्यां हुं देवलोकथी चवीश एवुं जाणे पण चववाना वखतनो जे वर्त्तमान एक समय सूक्ष्म काल ठे माटे ते न जाणे अने त्यांथी चव्या पठी हुं देवलोकथी चवीनें देवानदानी कूखे उपन्यो हुं एवुं जाणे हवे जे रात्रिमां श्रमणनगवान् श्रीमहावीर स्वामी देवानदा ब्राह्मणीनी कूखे उपन्या ते रात्रिमा देवानदा ब्राह्मणी सुखशय्यामां कांइक सूती कांइक जागती अर्थात् थोडीक निद्रामा रही थकी, उदार कल्याणकारी, उपद्रव रहित, धनकारी, मंगलकारि शोना सहित एवां चौद महोटां स्वपनां देखीनें जागी ॥ ते चौद स्वपनानां नाम कहे ठे पहेले स्वपने हाथी दीठो, बीजे वृषन, त्रीजे सिंह, चोथे लक्ष्मी, पांचमें फूलनी माला, ठठे चंद्र, सातमें सूर्य, आठमें ध्वजा, नवमें कुंन कलश, दशमें पद्म सरोवर, अगीआरमें क्षीर समुद्र, बारमें देवविमान, तेरमें रत्नो नो ढगलो राशि, चौदमें निर्धूम अग्नि ए चौद स्वपनां एवा रूपनां कल्याणकारी महामंगलना करनारां देखीनें जागी थकी हर्ष संतोष पामी, चित्तमां आनंद पामी, महोटा प्रेम सहित मन थयुं, परमहर्ष उपन्यो, हर्षने विषे पसरतुं ठे मन जेनुं, उत्कृष्ट सौम्य मन ठे जेनुं, जेनां मनमां हर्ष उल्लास थयो ठे, मेघनी धारायें करी हणाणुं एवुं कंदब पुष्प जेम विकस्वर थाय तेम जेनां रोमे रोम विकस्वर थयां ठे एवी थइ थकी पूर्वे दीठेला स्वपनाने याद करे


चित्र ५
दासी
देवानंदा ब्राह्मणी
ऋषभदत्त ब्राह्मण
देवानंदा
दासी

याव करीनें सूवाना पलंग उपरथी ऊठे ऊठीनें पादपीठ थकी पण ऊतरे ऊतरीनें नही ऊता वली, नही धीरी, एवी ने गतिनी वचमां ठहेरती थकी ॥५॥ राजहंसीनी गति सरखी चाल ती थकी जिहां रूषजदत्त ब्राह्मण छे त्यां आवती हवी, आवीनें रूषजदत्त ब्राह्मण प्रत्यें जय विजय शब्द करीनें वधावे वधावीनें जद्रासन एटले बाजोट उपर बेठी, त्यां मार्गमां आववानो खेद मटावाने, परसेवो उपशमावीने, बे हाथ जोडी दश नख एकठा करी मस्तकें अजली करीनें कहेवा लागी के हे स्वामि ! में आज रात्रें शय्यामां कांइक सूता हस्ति आदिक चौद सुपनां दीठां ॥ ६ ॥ तेनुं शुं फल थशे, कया प्रकारना कल्याणने करनारा थशे तेवारें रूषज दत्त ब्राह्मण देवानदाना मुखथी एवुं सांजलीनें पोताना हृदयामां घणो खुशी थयो,जेवां पाणी नी धाराथी कदंब पुष्प खुले तेवी तेनी रोमराजि प्रफुल्लित थई ते सुपनोना अर्थ विचारवा लाग्यो विचारीनें देवानदा ब्राह्मणीने कहे उदारकारी हे देवाणुप्रिया ! तमे जे सुपनां दीठां ते म गलकारी छे, तमे जे सुपनां दीठां तेनुं फल एवुं छे के हे देवाणुप्रिया ! धननो लाज थाशे, पुत्रनो लाज थाशे, सुखनो लाज थाशे, निश्चे तमारे नव महीनाने साडा सात दिवस गया के सुकुमार छे हाथ पग जेना, हीन अंग रहित, संपूर्ण पांचइंद्रिय सहित शरीर जेनुं छे, लक्षण, व्यंजन, अने गुणेकरी सहित तथा मानोन्माने करी सहित संपूर्ण जलुं शरीर जेनुं छे एवो पुत्र थाशे हवे लक्षण कोने कहीये ते कहे छे, जे पुरुषनो ज्यारे जन्म थाय त्यारें तेना अंगमा पुण्यनी रेखा प्रमुख पडे तेने लक्षण कहीयें ॥ सहजं लक्षण इति वचनात्॥ तिहां चक्रवर्त्ती तथा तीर्थंकरोने तो एक हजारने आठ लक्षण होय अने बलदेव तथा वासुदेवनें एकसोने आठ लक्षण होय तथा बीजा सामा न्य जाग्यवत पुरुषोने बत्रीश लक्षण होय तेनां नाम कहेछे १ छत्र, २ वींजणो, ३ धनुष,

४ रथ, ५ वज्र ६ काचबो, ७ अंकुश, ८ वावडी ९ स्वस्तिक १० तोरण, ११ तलाव, १२ सिंह,
१३ वृक्ष, १४ चक्र, १५ शंख, १६ हाथी, १७ समुद्र, १८ कलश, १९ प्रासाद, २० मत्स्य,
२१ यव, २२ यूप यज्ञस्तंभ, २३ थांभलो, २४ कमंडल, २५ पर्वत, २६ चामर २७ काच, २८
बलद, २९ पताका ३० लक्ष्मी, ३१ माला, ३२ मयूर ए बत्रीश लक्षण पूर्वकृत पुण्यना योगवाला
पुरुषना हाथ पगना तलीयानें विषे होय ए आदि देइनें एक हजारने आठ लक्षण पण एवाज
उत्तम प्रकारना जाणी लेवां तथा वली प्रकारांतरें बत्रीश लक्षण कहे छे जेना नख, पग, हाथ,
जीभ, होठ, तालु अने आंख्योना खूणा ए सात वानां रक्त होय सारा होय ते पुरुष भाग्यवान
जाणवो ते सर्वांग लक्ष्मी भोगवे तथा जेनी काख, छाती, कोट एटले गलानी हडवटी तथा
गलानो मण्यो, नाक, नख अने मुख ए छ वानां उचां होय तो ते पुरुष सर्व प्रकारें उन्नति
पामे तथा दांत, चामडी, केश, आंगुलीना पर्व एटले आंगलीनी रेखा अने नख ए पांच जेनां
पातलां होय सूक्ष्म होय तो ते पुरुष घणो धनवान् थाय तथा नेत्र, स्तननां अंतर, नाक, गलानो
मण्यो अने भुजाओ ए पांच जेना लांबा होय ते पुरुषनुं आयुष्य महोटुं होय घणु धन पामे अने
पराक्रमी होय तथा ललाट, पेट अने मुख ए त्रण जेनां महोटां होय तो ते पुरुष राजा थाय
तथा वली ग्रीवा, जंघा अने पुरुष चिन्ह, ए त्रण जेना लघु होय टुंका होय तो ते पुरुष राजा
थाय तथा बोलवानो स्वर, डूंटी एटले नाभी अने सत्व ए त्रण जेना गंभीर होय ते पुरुष पृथ्वीनो
धणी थाय अथवा प्रधान थाय एम जे पुरुषमां जेवां लक्षणहोय ते पुरुषमां तेवो आचार पण
होय, जेवु रूप होय तेवुं धन पण होय, जेवो स्वभाव होय तेवो गुण पण होय ए प्रकारांतरें बत्रीश
लक्षण कह्यां रेखाढ्यां तथा बीजां पण केटलांएक लक्षण कहे छे पद्म, वज्र अंकुश, छत्र, शंख

अने मत्स्य ए जेना हाथ पगमां देखाय ते पुरुष लक्ष्मीपति थाय तथा जेना चीकणा त्रांबाना वर्ण जेवा नखहोय ते पुरुष सुखी होय तथा जेना चलकता उज्ज्वल अनारवत् स्नेह निविड एवा बत्रीश दांत पूरेपूरा होय ते राजा थाय अने जेना एकत्रीश दांत होय ते जोगी थाय तथा त्रीश दांत वालो मध्यम कहेवाय अने त्रीशथी पण उंणा दांत जेना होय ते सामान्य पुरुष गणाय जे पुरुष अत्यंत ठींगणो तथा अत्यंत लांबो तथा अत्यंत जाडो होय तेमज जे अत्यंत दुर्बल, अत्यंत कालो अथवा अत्यंत गौर वर्ण वालो होय ए छ ने विषे सत्व पण होय, जेना मस्त कने जमणे भागे सवलो भमरो होय तो शुभ जाणवो अने अवलो भमरो होय तो अशुभ जाणवो ॥ ॥ तथा जेना हाथने विषे एक पण रेखा नहोय अथवा घणी रेखाउ होय ते पुरुषनु आयुष्य अल्प होय तथा जेनें देवपूजानी आंगुलीनां छेहेला वेढाथी अधिक कांइक उंची टचली आंगुली होय तेपुरुष धनवान् होय तथा तेनी मातानो पक्ष घणो होय तथा जेना मणीबंधथी बापनी रेखा तथा करतलथी वित्तनी रेखा अने आयुखानी रेखा जेनी संपूर्ण होय ते पुरुषनुं गोत्र, धन तथा आयुखुं सपूर्ण होय अथवा आयुषनी रेखा जेटली आंगुली अतिक्रमे तेटली पचवीशी आयुखाना वरसनी जाणवी तथा जेना अंगुठाने मध्यभागें यव होय ते पुरुष विद्या वंत यशस्वी होय अने अजवाला पक्षमां तेनो जन्म होय तथा जेनां नेत्र रक्त होय तेनु पासु स्त्री मूके नही तथा जेना नेत्र पीलां होय तेने धन मूके नही तथा जेनी भुजा दीर्घ होय तेने इश्वर पणु होय तथा जेनुं दृढ शरीर होय तेने सुख घणु होय तथा जेना हाथ पगने विषे कमल, छत्र, अंकुश, शंख, मत्स्य प्रमुख होय ते पुरुष महोटा लक्षणवालो, होय तथा जेना नख राता होय तेने धननुं सुख घणु होय तथा जेना नख उजला होय ते भिक्षुक होय तथा

जेनां नख लुखा होय ते अनाचारी होय ॥ ॥ वली शरीर मांहे मुख प्रधान छे ते मुखमां वली नासिका छे ते प्रधान छे वली नासिकामां नेत्र छे ते प्रधान छे माटे जेना जेवां नेत्र होय तेनो तेवो शील एटले आचार पण होय तथा जेवी नासिका तेहवुं आर्य पणु होय, जेवुं रूप होय तेवु वित्त होय, जेवु शीयल होय तेवा गुण होय अक्तंच ॥ यथानेत्रं तथा शीलं, यथानासा त थार्जव ॥ यथारूपं तथा वित्तं, यथाशीलं तथा गुणाः ॥ पाठांतरें ॥ सर्वसत्त्वे प्रतिष्ठितं ॥ १ ॥ इत्यादिक लक्षण जाणी लेवा ए लक्षण कह्यां ॥ ॥ हवे व्यंजननुं स्वरूप कहे छे जे जन्म्या पछी अंगमां प्रगट थाय तेने व्यंजन कहीयें जेमके मसो, तिल अने लसण इत्यादिक सर्व व्यंजन जाणवां ते पुरुषनें जमणी बाजुयें होय तो सारां जाणवां अने स्त्रीने डाबी बाजुयें होय तो सारां जाणवां ॥ ॥ हवे गुणनु स्वरूप कहे छे जेमां सौजाग्य पणुं, उदार पणुं अने धैर्यपणु इत्यादिक होय ते सर्व गुण जाणवा ॥ ॥ हवे मानोन्माननुं स्वरूप कहे छे पुरुष प्रमाणे पाणीथी जरेली कुंभीमां पच्चीश वर्षना पुरुषनें बेसाडवो पछी ते पुरुषना बेसवा थकी जो एक द्रोण जार पाणी कुंभीमाथी बाहेर नीकले तो ते पुरुष मानोपेत एटले प्रमाण सहित जाणवो अने जो त्राजवामां तोलतां ते पुरुषनो अर्द्ध जार प्रमाण तोल थाय तो ते उन्मानोपेत पुरुष जाणवो ॥ ॥ इहां तोलनी वार्त्तांना प्रसंगमां जारनुं प्रमाण कही देखाडे छे प्रथम छ सरसवे करी एक यव थाय, त्रण यवे एक चिणोठी थाय, त्रण चिणोठीये एक वाल थाय तेवा शोल वाले एक गदीयाणु थाय तेवा दश गदीयाणे एक पल थाय तेवा शोडसो पलनो एक मण थाय तेवा दशमणनी एक घडी थाय तेवी दश घडीयें एक जार प्रमाण थाय एवा अर्द्धजारे तोलाय ते पुरुष उन्मानोपेत मान रहित जाणवो एरीते पोणा चार मण उन्मानना थाय छे

॥ वळी जे पुरुषनुं पोताने आंगळे नरतां पोतानुं शरीर एकसोनें आठ आंगळनुं होय ते उ
त्तम पुरुष जाणवो तेमां बार आंगळनुं मुख होय तेने नवे गुणीये तेवारे १०८ थाय ते मानो
पेत पुरुष जाणवो तथा जेनुं छन्नु अंगुलनुं शरीर होय ते मध्यम सम पुरुष जाणवो, जेनुं चो
राशी आंगुलनुं शरीर होय ते हीन पुरुष जाणवो अने श्रीतीर्थंकरनु तो एकसो वीश आंगुल
नु शरीर होय केमके तीर्थंकरने माथे बार आंगुलनी उष्णीष राखडीने ठामे होय तेमाटे एवो
सर्व अंगे सुंदर, चंद्रमा समान सौम्य आकार वालो, जेनुं मनोहर प्रीतिकारी दर्शन छे एवा
सुरूपवत देवकुमारसमान पुत्रने तु जणीश ॥९॥ ॥ ते पण बालक बाल्यावस्था रहित थाशे
तेवारे ते पोताना विज्ञान नावथीज थाशे ते केवो थाशे ते कहे छे एटले ते पुत्र युवान अव
स्था पामे थके ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ए चार वेद तथा पांचमो इतिहास पुराण
शास्त्र, छठो नाम कोश निघंटनाम माला ए सर्व छ ए शास्त्र ने अग उपांग सहित तेना तात्प
र्यनो जाणवा वालो थाशे, चार वेदनो जणाववा वालो थशे, जे नूलशे तेने बतावना वालो
नूल देखाडवा वालो थशे, जूठु बोलशे तेने वर्जावा वालो थशे, शुद्धनो धारण करनारो थशे
पारगामी थशे, छ अंगनो जाण थाशे, साठ अर्थ छे जिहां एवा साठ तंत्र शास्त्र तथा कपि
लशास्त्रनो जाणनार थशे, गणित शास्त्रनो जाणनार थशे, अक्षर शिक्षामां निपुण थशे,
क्रिया शास्त्रमां निपुण, व्याकरणनो जाणनार, छंद जोडवामां दक्ष, टीकानो जाण
नार, ज्योतिष शास्त्रमां प्रवीण एम बीजा पण ब्राह्मणोनां शास्त्रोमां परिव्राजकोनां शास्त्रोमां
अत्यंत निपुण डाह्यो एवो ताहारो पुत्र थाशे ॥१०॥ तेमाटे तमे रूडा स्वपना दीठां, जावत्
आरोग्य कारी स्वपनां तमनें आव्यां एवुं वारंवार केहेतो हवो अने पोते पण अनुमोदना

करतो हवो ॥ ११ ॥ हवे देवानदा ब्राह्मणी ऋषभदत्त ब्राह्मणना मुखथी एवा अर्थ सांभ
लीनें, तेने मनमा धारी राखीनें, हर्ष संतोषयुक्त हृदय वाली थइ थकी हाथ जोडी, दश नख
भेला करी मस्तकें चडावी कहेती हवी ॥ १२ ॥ जे ए वात जेम तमे कही तेमज छे, हे
देवाणुप्रिय ! ए सत्यज छे खोटी नथी,हे देवाणुप्रिय ! जे तमे कहो छो ते सर्व संदेह रहित छे एवुं
कहीने ते स्वपनां रुडा प्रकारें अंगीकार करीनें ऋषभदत्त ब्राह्मणनी साथे मनोहर मनुष्य सं
बंधि सुख भोगवती थकी विचरे छे ॥ १३ ॥ ते कालनें विषे शक्रेंद्र देवताउंनो राजा जेना
हाथमां दैत्योने विदारण करनारुं वज्र छे जेणे पूर्वना भवमां श्रावकनी पांचमी प्रतिमा सो वार
वहन करी तेणे करी शतक्रतु एवु बीजु नाम ते पूर्वना कार्त्तिकशेठना भवनी अपेक्षाथी छे ते
कार्त्तिक शेठनी कथा कहीयें छेयें पृथ्वीभूषण नामे नगरने विषे प्रजापाल नामे राजा हतो ते नग
रमां राजानो घणो मानितो अने घणो धनाढ्य जैनधर्मी,परम श्रावक एवो कार्त्तिक नामा शेठ
रहेतो हतो तेणे श्रावकनी अगीआर प्रतिमा माहेली पांचमी प्रतिमा सोवार वही तेथी तेथी शत
क्रतु एवुं नाम लोकोमां प्रसिद्ध थयुं एम करतां एक समये गैरिक नामा तापस महिने महिने
पारणु करे छे ते परिव्राजकें नगरनी बाहेर आवी उतारो कर्यो तेने राजा आदिक सर्व लोक वांदवा
गया पण एक कार्त्तिकशेठ शुद्ध समकेति छे माटे वांदवा गयो नही तेथी तेना उपर तापस क्रोध
करवा लागो एवामा ते तापसने राजायें पोतानें घेर जमवानें नोतरुं दीधुं तेवारें तापसें मनमां
विचार्युं जे बीजातो सर्व लोक मने वादवा आव्या पण एक कार्त्तिक शेठ जैनधर्मी छे ते मने
पगे लाग्यो नथी माटे हवें तेने नमावुं एम चितवी राजाने कहेवा लाग्यो जे हे राजन् ! कार्त्तिक
शेठ पोतानी पीठ उपर खीरनी थाली राखीनें भोजन करावे तो हुं तमारे घेर जमवा आवु


चित्र ६
राजा
गैरिक तापस
राजसभा
कार्तिक सेठ

ए वात राजायें कबुल करी तापसने पारणुं करवाडु कहीने पछी राजा कार्त्तिकशेठ पासें आ वीनें कहेवा लाग्यो जे महारो गुरु गैरिकनामे तापस महारे घेर जमवा आवशे तेंनें तमे पीरसवा आवजो ते सांभली शेठ बोल्यो के हुं सम्यक्त्व धारी छुं माटे महारे ए वात योग्य नथी पण तमारी वस्तिमां रहुंछु माटे शास्त्रमां "रायाभिओगेणं" ए आगार छे ते आगारें करी तामारी आज्ञाथी जमाडीश परंतु महारा भक्तिभावें करी जमाडीश नही पछी तापस जमवा आव्यो तेवारें शेठें खीर पीरसी, पण तापस जम्यो नही अने कहेवा लाग्यो जे शेठ वांसो मांडे तो पात्र मूकी भोजन करुं पछी राजाना कहेवाथी शेठें आडो थइ वांसो मांड्यो शेठना हाथनी अंगुलीमां वींटी पेहेरी हती तेमां जिनप्रतिमा हति तेने नमस्कार कर्यो हवे तापस शेठनी पीठ उपर उनो उनो खीरनु पात्र मूकी भोजन करतो जाय छे अने आंगुलीयें करी शेठनु नाक पण घसतो जाय छे ने शेठनें चेष्टामां कहेतो जाय छे के जो मुजनें पगें लागवा न आव्यो तो हुं आ ताहारुं नाक कापु छुं अने हमणा वारंवार तुजने महारा आगल नमावु छु एम चेष्टा करतो तापस पारणु करीने पोताने स्थानकें गयो अने पाछलथी गरम थाल शेठनी चामडीमां मली गयो ते घणे कष्टें राजायें छोडाव्यो ए रुत्त जोइ शेठें विचार्यु के जो में पहेलांज दीक्षा लीधी हत तो आज एवी हेलना थात नही एवुं चितवी वैराग्य पामीनें शेठ एक हजारनें आठ वणिक पुत्रोनी साथें श्रीमुनिसुव्रत स्वामीनी पासेथी दीक्षा लइ द्वादशांगी भणी, बार वर्ष चारित्र पाली सौधर्मेंद्र थया अने गैरिक तापस पण अज्ञान तप करी मरण पामीने इन्द्रनुं वाहन ऐरावत नामा हाथी थयो पछी ते देव हाथीनुं रूप करी इन्द्रनी पासे आव्यो जेवारें इन्द्र तेना उपर चढवा लाग्यो तेवारें ऐरावते देखीने अवधिज्ञाने करी जाण्यु

के अरे एतो कार्तिक शेठ छे एवु जाणी नासवा मांड्यो पण इन्द्र तेने पकडीने उपर चड्यो तेवारें शक्रेन्द्रने चीवराववा सारु हाथीयें बे रूप कर्या ते देखी इंद्रे पण बे रूप कर्या वली हाथीयें चार रूप कर्यां त्यारें इंद्रें पण चार रूप कर्यां पछी इंद्रें अवधिज्ञानें पूर्वनो नव जोइ हाथीने तर्जना करी चलाव्या अने कह्युं के अरे गैरिक हवे तु क्यां छूटी जाइश तु पूर्वनो नव जाणतो नथी? जे महारी पीठ उपर थाल राखी जम्यो हतो? तो हमणा तु महारु वाहन थयो छो माटे जे बांध्या कर्म ते जोगव्या विना छूटको नथी एवुं सांजली, अपराध खमावी मूलगु रूप धारण करीने हाथी शांत थयो ए इन्द्रमहाराजना पूर्वला नव संबंधि कार्तिक शेठनी कथा कही॥ ॥ वली ते शक्रेन्द्रनी सहस्रावें तो बे आंख्यो छे परंतु पांचशे देव ते इन्द्रना काम करवा वाला छे ते पांचसो देवोनी हजार आंख्यो एना काममां आवे माटे सहस्राक्ष एवुं नाम छे तथा महामेघ जेने वशमां छे माटे मघवा एवु नाम छे तथा पाक नामा दैत्यने शिक्षा दीधी माटे पाकशासन एवुं नाम छे एवो शक्रेन्द्र दक्षिणार्द्ध लोकनो ठाकुर, स्वामी, ऐरावत जेनुं वाहन छे, सुरनो इन्द्र, बत्रीश लाख विमाननो मालेक, रजरहित स्वच्छ निर्मल एवा वस्त्रनो धारण करनारो, लंबायमान माला मुकुटमां नवा सुवर्णना कुंडल तेणें करी घसीजता एवा गाल छे जेना, वली महोटी रुद्धि, महोटी कांति, महोटुं बल, महोटो जश, महोटुं माहात्म्य, महोटुं सुख, लांबी पुष्पोनी माला धारण कर्याथी देदीप्यमान छे शरीर जेनुं एवो इन्द्र ते सौधर्म देवलोकमां, सौधर्मावतंसक विमानमां, सौधर्म नामें सभाने विषे, शक्र नामा सिंहासन उपर बेठो थको, बत्रीश लाख विमानोमां वसनारा देवो, चोराशी लाख सामानिक देवो, तेत्रीश त्रायत्रिंसक गुरु स्थानीया देवो तथा सोम, यम, वरुण अने कुबेर ए चार लोकपाल देवो, आठ अग्रमहीषी ते शोलहजार


चित्र ७
इन्द्र महाराज
सिंहासन उपरथी
उतरीने नमस्कार करे छे
इन्द्र महाराजनी
सभाना देवो

देवीना परिवार सहित, त्रण परषदा, सात कटक, सात कटकना स्वामी, प्रत्येके एकेकी दिशा मां चोराशी चोराशी हजार करता चार दिशामा मली त्रणलाखनें छत्रीश हजार आत्म रक्षा कारी देवो तथा बीजा पण घणा सौधर्म देवलोकना वसवा वाला एवा देव तथा देवीउ तेमनी उपर रक्षाकारी पणु, अग्रेसर पणु, नायक पणु, पोषक पणु, सर्वमां महोटाइपणु, सर्वने पोतानी आज्ञा मनावतो थको, सेनापति पणु करतो थको, पोतें पालतो थको तथा महोटा स्वरसहित नाटक, गीत, वाजित्र वीणा, करताल अने बीजा पण घणा वाजित्र जेवा के मृदंग पडह प्रमुख वाजाउंना शब्द तेणे करी सहित दिव्य देव संबंधि जोग जोगवतो थको विचरे छे ॥ १४ ॥ ॥ एवा समयने विषे आ प्रत्यक्ष जंबूद्वीप नामा द्वीपने विस्तीर्ण एवो महोटो अवधिज्ञान तेणे करी देखतो थको विचरे छे ते कालनें विषे ते समयने विषे श्रमण जगवत श्रीमहावीर स्वामीने रुषजदत्तनामा ब्राह्मण कोमालगोत्रनो धणी तेनी देवानंदानामें जार्या जालधर गोत्रनी तेनी कूखनें विषे गर्ज पणे उपन्या देखीनें मनमा घणो आनंद पाम्यो,हृदयमा घणो हर्ष पसस्यो, मेघ धारायें हणाणु एवुं कदंब वृक्षनुं फूल तेनी पेरे रोमांच विकस्वर थयां, प्रधान कमलनी पेरे नयन अने वदन प्रफुल्लित थयां, जगवतनुं अवतरवुं देखीनें तेना दर्शनथी उत्पन्न थयो जे हर्ष तेना वश थकी प्रकर्षे करी चलायमान थया छे प्रधान कडां, कंकण, बेरखा बाजुबंध, मुकुट, कुंमल, हार अने महोटां घरेणां जुमखां प्रमुख जेनां एवो इंद्र ते तत्काल सिंहासनथी उठी उजो थइनें चलकतो मणिरत्ननो बाजोट ते उपरथी उतरीने जला वैडुर्यरत्न मरकतरत्न, अरिष्टरत्न, अंजनरत्न, तेणेकरीनें निपुण कारीगरे घडेली देदीप्यमान मणिरत्ने जडेली एवी पावडी (चांखडी) पगथकी उतारी पछी अखंड वस्त्रनो एगसाडी उत्तरासंग क

रीनें बे हाथ जोडीने तीर्थंकर श्री महावीर देवने साहामो सात आठ पगलां जइ पोताना विमानमांहे बेठो थको मावो डींचण ऊंचो राखी अने जमणो डींचण नूमिकाने विषे थापे थापीनें लगारेक नमीनें त्रण वार मस्तक धरतीयें लगाडे लगाडीने वली चोथीवार लगारेक नमीने थोडो ऊंचो थइने कडा, कंकण, बेरखा, बाजुबंध, पुम्मणां तेणे करी सहित थजाय ली एवी नुजाउने सहरीने वालीने दशनख नेला करी, बे हाथ जोडी मस्तकें अंजली करीनें शक्रस्तवनो पाठ कहेतो हवो ॥ १५ ॥ ॥ तेनो अर्थ आ प्रमाणे ठे — नमस्कारहोजो श्री अरिहंत नगवंत प्रत्यें, आदिनां करवा वाला, चतुर्विध श्रीसंघ रूप तीर्थना करवा वाला, श्री सघने तारवा वाला, बीजाना उपदेश विना पोतानी मेले बोध पाम्या, पुरुषोमांहे उत्तम, पु रुषोमां सिंह समान, पुरुषोमां प्रधान पुंमरीक कमल समान, पुरुषोमां गंधहस्ति समान जेम गंधहस्तिनें देखी बीजा हस्ति नाशि जाय तेम श्रीतीर्थंकर नगवानने देखी परवादी रूप हाथी उ नाशि जाय एवा नगवान, लोक मांहे उत्तम, लोकना नाथ, लोकना हितकरनार, लोकमां दीपक समान, लोकनेविषे उद्योत करनार, अनयदानना दातार, ज्ञान चक्षुना देवा वाला,मो क्षमार्गना दातार, कर्मथी बीक पामनारा जीवोने शरणना दातार, संयम रूप जीवित व्यना दातार, बोधबीज जे सम्यक्त्व तेना दातार, सर्व मरणना मटाववा वाला, धर्मना दातार,धर्म उपदेश देवा वाला,धर्मना नायक, धर्ममां सारथी समान जेम सारथी रथने शुद्धमार्गमा लइ जाय तेम नगवान धर्ममार्गथी च्रष्ट थयेला लोकोने धर्म मार्गमा लइ जाय एना उपर मेघकुमारनुं दृ ष्टांत कहे ठे ॥ तत्रआदौ ॥ श्लोक ॥ पुत्र श्रेणिकधारिण्योः,श्रुत्वा वीरविनोर्गिर ॥ प्रबुद्धोष्टौ प्रिया स्त्यक्त्वा, मेघोदीक्षामुपाददे ॥ १ ॥ व्याख्या —राजगृही नगरीने विषे श्रेणिकराजानी धारिणी

नामे राणीनी कूखें मेघकुमार, पुत्रपणे उपन्यो, ते वखत गर्भना प्रभावें करी राणीने एवो दोहोलो उपन्यो के वर्षाकालमां आपणें राजा, तथा राणी, बेहु जण हाथी उपर बेशीने वनमा जइ क्रीडा करीयें? ते अभयकुमारें पूर्व भव संगति देवतानु आराधन करीने दोहोलो संपूर्ण कर्यो, पछी नव मासें पुत्रजन्म थयो, तेनो जन्ममहोत्सव करी, स्वजन कुटुंबने जमाडी मेघकुमार नाम पाड्यु, अनुक्रमें यौवन अवस्था पाम्यो, तेवारें पितायें आठ कन्या परणावी, तेमनी साथें विषयसुख भोगवतो विचरे छे, एहवा समयमां राजगृही नगरीयें श्रीमहावीर समोसर्या, श्रेणिकादिक सर्वलोक वांदवा गया, तेमनी साथें मेघकुमार पण गया, त्यां भगवतनी देशना सांभली प्रतिबोध पामी, आठ कन्या त्यागी, माता पितानी आज्ञा लेइ दीक्षा लीधी पछी भगवाने पण ग्रहण, आसेवना, साधुनो आचार शीखववा निमित्तें स्थविरोने भलाव्यो रात्रियें संथारवानी वेलायें अनुक्रमें सर्व साधुने छेडे मेघकुमार ऋषिनो संथारो आव्यो, तिहां साधु, मात्रुं करवाने उठे, तेवारें मेघकुमारने वारंवार पगनी ठोकर लागे, तेथी एक क्षण वार पण निद्रा न आवी, धूलथी भराइ गयो आखी रात जाग्यो अने विचार कर्यो जे किहां महारी सुखशय्या, अने किहां आ भूमिने विषे लोटवुं, अने वली एक रात्रिमां केटलो उपसर्ग थयो, तो ए कदर्थना हुं केटलाक काल सुधी सहन करुं, माटे ए दीक्षा महाराथी तो पले नही, तो हवे प्रभात समयें भगवतने पूछी हुं महारे घेर जइश ? हजी कांइ बगड्यु नथी एम विचारी प्रभातें उठ्यो, मुहपत्ती लइ, भगवत पासें आव्यो, तेवारें भगवत पण मीठा वचने बोल्या के हे मेघ ऋषि ! आज रात्रिमां तमाराथी साधुना पग न खमाया, निद्रा न आवी, तेथी मनमा माठुं ध्यान ध्यायुं जे हुं प्रभातमां

वेरजाइश एवात सत्य छे? मेघकुमार वोल्यो हा महाराज! सत्य छे प्रभु वोल्या हे मेघकुमार! ए तमने योग्य नथी जे जणी नरक तिर्यंचनां दुःखो तो जीवें अनतिवार दीठा छे तेनी आगल आ दुःख, कोण लेखामां गणे? एवो कोण मूर्ख छे जे चक्रवर्त्तीनी ऋद्धि मूकीने दासपणु वांछे? माटे मरवुं सारुं छे पण चारित्र जग करवो सारो नथी ए चारित्रनुं ज्ञान सहित कष्ट छे, ते आगल घणां फल देनारु थाशे तथा जोके तें पूर्व जवें पण धर्मनें अर्थ घणा अकाम कष्ट जोगव्यां छे, ते पण महाफलदायक थयां ते ताहारा पूर्व जव सांजल आ जवथी त्रीजो जवने विषे वैताढ्य पर्वतनी पासें छ दंतोशल सहित श्वेत वर्णें एक हजार हाथणीनो नायक एवो सुमेरुप्रजनामें तुं हस्ती हतो, तिहां एकदा दावानल लागो देखी जय पामीने त्यांथी नाठो तृषायें पीड्यो थको एक सरोवरमां कादव घणो हतो अने पाणी स्वल्प हतुं तेमा हस्तीना मार्गने अजाणतो पाणी पीवाने पेठो, त्यां कर्दममांहे खूतो, पाछो नीकली शक्यो नही एटलामां एक पूर्व जवनो वैरी बीजो हाथी त्यां आव्यो तेणे दंतोशलने प्रहारें करीने तुजने हण्यो, तेथी सात दिवस पर्यंत महा वेदना जोगवी, एकशो वीश वर्षनु आयु पूर्ण करी मरण पामी विंध्याचल पर्वतनी जूमिकायें तु चार दंतोशलवालो, रातेवर्णें, सातशें हाथणीनो नायक, मेरुप्रज नामें हस्ती थयो, तिहा पण एक समयें दावानल लागो देखी जाति स्मरण उपन्युं, तेथी पूर्वजव दीठो, पछी दावानलनो जय टालवासारुं चार गाउ लगें जूमि कानुं मांमलुं बनावी शुद्ध कीधुं; तेमां तृणवेलि मात्र राखतो हतो नही उगता पहेलाज उन्मूली नाखतो हतो, एम घणां वर्ष वीत्या पछी, एकदा वली महोटो अंगी दावानल लागो, तेवारें सर्व वनचर जीव, आवी मामलामां रह्या, तुं पण तत्काल आवी मांमलामां रह्यो, मांमलामां तिल

जेटलो पण मार्ग रह्यो नही, एवुं संकीर्ण थयुं, एटलामां तें खरज खणवाने पग ऊंचो ली
धो, ते पगने स्थानकें निराली नूमिका देखी एक ससलो ताहारा पग नीचेनी नूमियें आवी
बेठो पठी पग नीचो मूकतां नीचें शशलो दीठो एटले तुजने दया आवी तेथी पग अधर रा
ख्यो, अढी दिवसें दावानल उपशम्यो, तेवारें ससला प्रमुख सर्व जीव, पोत पोताने स्थानकें
गयां, ताहारो पग लोहीयें नराणो तेने नीचो मूकतो थको पर्वतना कूटनी पेरें तुं हेठो पड्यो
त्रण दिवस सुधी छुखतृषायें पीडातो सो वर्षनुं आयु नोगवी दया सहित मरण पामी, हे
मेघकुमार ! तु राजकुलें उपन्यो ठो अकालें मेघवृष्टिनो दोहोलो तारी माताने थयो माटे तारु
नाम मेघकुमार स्थाप्युं जे वखतें तुजने हाथियोयें मास्यो, ते वखतें तो तिर्यंचनुं करेलु डुःख
हतु, तो ते डुःख आगल आ साधुना संघट्टथी तु शुं डुःख धरे ठे ? ते साधु तो जगद्वंद्य ठे,
एमना चरणनी रज तो पुण्यवान् जीवने लागे माटे साधुना पग लागवाथी डुःख न आणवुं
एवां नगवाननां वचन सांनली जातिस्मरण उपन्युं, तेणें करी पूर्वला नव दीठा, पठी प्रनुने
पगे लागी चारित्रने विषे स्थिर थइने एवो अनिग्रह लीधो के आज पठी महारे बे नेत्रनो
जावतो राखवो माटे ते टालीने बीजा शरीरनी शुश्रूषा, गमे तेवु सकट पडे तो पण न क
रवी एवो जावज्जीव सुधीनो अनिग्रह करी निरतिचार पणे शुद्ध चारित्र पाली अंते एक मा
सनी सलेषणा करी विजयनामा अनुत्तर विमानमां देवपणे उपन्यो, तिहांथी चवी महा
विदेहमां उपजी मोक्ष पामशे, इति मेघकुमार कथा ॥ माटे नगवंतने धर्मसारथि सरखा
कहियें ॥ ए प्रथम व्याख्यान समाप्त थयुं ॥ १ ॥ ॥ अथ द्वितीय व्याख्यान प्रारंन ॥
वली नगवानने नमस्कार करे ठे धर्ममां चार अंत कस्या एवा चक्रवर्त्ति समान नगवान ठे

थाय नहीं अने श्रीमहावीर देवने केवल ज्ञान उपन्या पछी गोशालायें उपसर्ग कर्यो, ते कहे
छे एकदा जगवत श्रीमहावीर स्वामी विहार करतां सावछी नगरीयें समोसर्या, तेवारें गो
शालो पण, हु तीर्थंकर छुं एम लोकोमां कहेतो थको सावछीयें आव्यो, ते समयें गोतमस्वा
मी गोचरीयें गया, तिहां लोकोना मुखथकी एहु सांजल्युं जे आज नगरीमां एक महावीरस्वा
मी अने बीजो गोशालो, ए बे तीर्थंकर आव्या छे पछी संशयवंत थइने श्रीगौतम स्वामीयें
जगवत पासें आवीने गोशालानी उत्पत्ति पूछी, तेवारें प्रज्ञुयें कह्युं के शरवण ग्रामनो रे
वासी मंखली नरहानीजाति शनिश्चरनो दान लेनारो तेनी सुजद्रा स्त्रीनो ए पुत्र छे, ब्राह्मणनी
गायनी शालामां जन्म्यो तेथी मातापितायें गोशालो नाम पाड्युं छे ए निक्षामागतो हतो ते
आवीने महारो शिष्य थयो, छद्मस्थावस्थायें महारी सार्थे छद्मस्थ पणे छ वरस रह्यो हतो, म
हारी पासेंथी जणीने कोइएक बहुश्रुत थयो छे, तेजोलेश्या पण शीख्यो छे बीजुवली दिशाचरो
पासेंथी निमित्तविद्या शीखीनें ए मिथ्या जिननाम धरावे छे,परंतु ए तीर्थंकर नथी,एवी वात
प्रज्ञु पासेथी सांजलीने श्रीगौतमें बीजा घणा लोको पासें वात करी, जे गोशालो मखली पुत्र
छे, ते वात, गोशालाने कानें गइ, तेवारें गोशालो क्रोधायमान थयो एवा समयें जगवतनो
आनंदनामा शिष्य गोचरीयें गयो तेने गोशाले बोलावीने कह्युं के हे आनंद ! तने एक दृष्टांत
कहुं ते सांजल, कोइएक चार वाणीया व्यापार करवाने अर्थें विविध प्रकारना करियाणानां गा
डां जरी परदेशें चाल्या मार्गमा कोइएक महोटी अटवीमां पेठा, तिहां तृषालागी तेथी उजा
डमा पाणीनी गवेषणा करतां पाणीतो क्यांय दीठुं नहीं पण चार वाल्मिक एटले उवेहीना
शिखर (रांफा) दीठां अने तेना उपर नीलां वृक्ष उगेलां दीठां, तेथी जाण्युं के अहींआं अ

वस्य पाणी हशे ? एवुं जाणी एक शिखर फोडयुं तेमांथी घणुं निर्मल शीतल जल नीकल्युं, ते सर्वजनोये पीने तृषा जांजी, वली बीजा वासणोमां पण पाणी जरी लीधुं, पछी बीजुं शिखर जांगवा मांड्युं, तेवारें तेमांथी एक वृद्ध वाणीयो बोल्यो के आपणुं काम थयुं, माटे हवे बीजुं शिखर फोडशोमा, एम वार्या थका पण तेणें बीजुं शिखर फोड्युं, तेमांथी सोनुं नीकल्युं, तेवारें लोज लागो तेथी जोपण वृद्धें वर्ज्यो तो पण त्रीजुं शिखर फोड्युं तेमांथी रत्न नीकल्या वली वृद्धें घणो वार्यो तोपण चोथुं शिखर फोडयुं, तेमांहेथी महाविकराल जयंकर दृष्टिविष सर्प नीकल्यो, ते सर्पें दृष्टिविषें करी सूर्य सामुं जोइने सर्वने बाली जस्म कीधा, एक सुशिक्षाना आपनार वृद्धने दया आणी जीवतो मूक्यो, ए दृष्टांतें ताहारा धर्माचार्यने एटली संपदा प्राप्त थइ तो पण असंतुष्ट थको महारो अपवाद लोको आगल बोलीने मने रोषवंत करे छे तेथी हुं त्यां आवी महारा तेजथी सर्वने बाली जस्म करीश, माटे तुं उतावलो जइने ताहारा धर्माचार्यने कहेजे, हुं वृद्धवाणीयानी पेरें मात्र एक तनेज जीवतो मूकीश, ए वात सांजली आनंद मुनि जयभ्रांत थयो थको जगवंत पासें आवीने गोशालाना सर्व समाचार कह्या, तेवारें जगवंते कह्युंके हे आनंद तमे गौतम प्रमुख सर्व साधुउंने कहेजो जे अहींआं महारो कुशिष्य गोशालो आवशे, ते उपसर्ग करशे माटे तमें कोइ पण तेनी सार्थे जाषण करशोमां जो बोलशो तो बाली जस्म करशे तेथी अरहा परहा टली रहेजो ते सांजली सर्व साधुउ एकांते बेशीरह्या तथापि सर्वानुजूति अने सुनक्षत्र ए बे साधु, जगवंत पासेंज रह्या, एटलामां गोशालो आवीने जगवानने कहेवा लाग्यो के हे काश्यप ! तुं कहे छे जे महारो शिष्य गोशालो छे ते खरी वात छे पण ताहारो शिष्य जे गोशालो हतो ते तो मरण पाम्यो अने

जेम चक्रवर्त्ति त्रण वाजु समुद्र अने एक वाजु चुल्लहेमवत पर्वत पर्यंत राज्य करे तेम जग वान दानादि चार प्रकारनो धर्म प्ररूपे माटे धर्म चक्रवर्त्ति कहीयें, संसार समुद्रमां बूडता प्राणीउने द्वीप समान शरणागत वत्सल, क्यांय हणाय नही एवा ज्ञान अने दर्शनना धरवा वाला, जेमने छद्मस्थ पणु रह्युं नथी, पोते राग द्वेषनें जीत्या, बीजाने जीतावे, पोतें संसार समुद्रथकी तर्या, बीजाने संसार समुद्रथी तारे, पोतें तत्त्वने जाण्या छे, बीजाने तत्त्वनो बोध करे, पोतें कर्म रहित थया, बीजानें कर्मथी मूकावे, सर्वज्ञ, सर्वदर्शि, शिव एटले निरुपद्रव, अचल, रोग रहित, जेनो अंतनही अने क्षय पण नही, बाधा रहित, ज्यांथी फरी पाछुं संसा रमां आववुं नथी एवुं जे सिद्धिगति नामक स्थानक तेने पाम्या एवा जिनेश्वरनें महारो नम स्कार होजो, जीत्याछे जय जेमणे एवा जगवतनें नमस्कार हो, श्रमण जगवत श्रीमहावीर छेला तीर्थंकर, आदिना करनार पहेला तीर्थंकर श्रीऋषभदेव स्वामीयें देखाड्या यावत् मो क्षमां जावा वाला तेमने हुं वांडु छु जगवान तो त्यां गर्नेमां छे अने हुं देवलोकमां छु माटे त्यां रह्यां थका आपे मने देखवो एवु कहीनें जगवानने नमस्कार करे करीने सिंहासन उपर पूर्वदिशानी साहामु मुख करीनें बेठो तेवारें शक्रेंद्रनां मनमां एवो विचार उत्पन थयो ॥१६॥

॥ एम सर्वे तीर्थंकरोना एक चवन कल्याणक, बीजुं जन्मकल्याणक त्रीजु दीक्षा कल्या णक, चोथुं ज्ञानकल्याणक अने पाचमुं निर्वाणकल्याणक, ए पांच कल्याणकें सदा काळें शक्रस्तव कहे एटले शक्रजे इंद्र ते स्तव एटले थुणे माटे तेने शक्रस्तव कहीयें ते इंद्र महाराज शक्रस्तव कहीनें रोमांचित थाय, आनंद पामे, वली ए पांच कल्याणकें चोशठें इंद्र जेला थइने अष्टाह्न महोत्सव प्रमुख करीनें प्रत्येक कल्याणकनो महिमा करे ए मर्यादा छे ॥

ते कहे छे इंद्र महाराजें विचार्युं जे श्रीअरिहंत जगवत अथवा चक्रवर्ति अथवा वासुदेव अथवा बलदेव ए त्रेसठ उत्तम पुरुष छे,ते अंतकुल जे क्षुद्रजाति तेने विषे तथा प्रांतकुल ते अधमाचारीना कुलने विषे तथा अल्पपरिवार वाला तुच्छ कुलने विषे तथा निर्धन ते दरिद्रीना कुलने विषे तथा अदातारते कृपणना कुलने विषे तथा चारण प्रमुख जीखारीना कुलने विषे तथा ब्राह्मणना कुलने विषे आव्या,आवे अने आवशे निश्चयथी ए वात पूर्वेंथइ नथी,वर्तमान कालें थाती नथी अने आगामिक कालें थाशे पण नही एटले त्रेशठ शिलाका पुरुष तो निश्चे थकी पूर्वोक्त अंत कुलादि कने विषे आव्या पण नथी, आवता पण नथी अने आवशे पण नही ॥ १७ ॥ ॥ ए पूर्वोक्त अरिहंतादिक त्रेशठ शिलाका पुरुष तो, निश्चयथकी श्रीऋषभदेवजीयें आरक्षक पणे जेने राख्या तेने उग्रकुल कहीयें ते कुलने विषे तथा जेने गुरुस्थानीया पणे राख्या तेने जोगकुल कहीयें तेने विषे तथा जेनें मित्रस्थानें राख्या तेने राजन्य कुल कहीयें तेने विषे तथा प्रजा लोकपणे थाप्या तेने क्षत्रियकुल कहीयें तेने विषे तथा इक्ष्वाकु कुलने विषे तथा हरिवर्ष क्षेत्रना युगलीयानो जे परिवार तेने हरिवंश कुल कहीयें एवा बीजा पण तथा प्रकारनां विशुद्ध जातिनां उत्तम कुलने विषे आव्या छे, आवें छे अने आवशे, ए मर्यादा छे ॥ १८ ॥ ॥ तथापि ए श्रीमहावीर स्वामी ब्राह्मणना कुलमां आवी उपन्या ए लोकने विषे अछेरानूत वात थइ एटले अनंती उत्सर्प्पिणी अने अवसर्प्पिणी जेवारें व्यतिक्रमे तेवारें कोइक कालें एवा अछेरा थाय छे तेम आ अवसर्प्पिणीमा पण एवा दश अछेरा एटले आश्चर्यकारी वातो थयेली छे एम इंद्र महाराज विचारे छे ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ १०० ॥ ॥ हवे अवसर्प्पिणीनें विषे जे दश अछेरा थया ते वखाणे छे त्यां प्रथम कोइ तीर्थंकरने केवलज्ञान उपन्या पछी उपसर्ग

थाय नहीं अने श्रीमहावीर देवने केवल ज्ञान उपन्या पछी गोशालायें उपसर्ग कस्यो, ते कहे छे एकदा जगवत श्रीमहावीर स्वामी विहार करता सावत्थी नगरीयें समोसस्या, तेवारें गोशालो पण, हु तीर्थंकर बुं एम लोकोमां कहेतो थको सावत्थीयें आव्यो, ते समयें गौतमस्वामी गोचरीयें गया, तिहां लोकोना मुखथकी एवुं सांजल्युं जे आज नगरीमां एक महावीरस्वामी अने बीजो गोशालो, ए बे तीर्थंकर आव्या छे पछी संशयवंत थइनें श्रीगौतम स्वामीयें जगवत पासें आवीने गोशालानी उत्पत्ति पूछी, तेवारें प्रभुयें कह्युं के शरवण ग्रामनो रेवासी मखली जरडानीजाति शनिश्चरनो दान लेनारो तेनी सुजद्रा स्त्रीनो ए पुत्र छे, ब्राह्मणनी गायनी शालामा जन्म्यो तेथी मातापितायें गोशालो नाम पाड्युं छे ए जिक्षामागतो हतो ते आवीने महारो शिष्य थयो, उद्मस्थावस्थायें महारी सार्थें उद्मस्थ पणे छ वरस रह्यो हतो, महारी पासेंथी जणीने कांइएक बहुश्रुत थयो छे, तेजोलेश्या पण शीख्यो छे वीजुवली दिशाचरो पासेंथी निमित्तविद्या शीखीनें ए मिथ्या जिननाम धरावे छे,परंतु ए तीर्थंकर नथी,एवी वात प्रभु पासेथी सांजलीने श्रीगौतमें बीजा घणा लोको पासें वात करी, जे गोशालो मखली पुत्र छे, ते वात, गोशालाने कानें गइ, तेवारें गोशालो क्रोधायमान थयो एवा समयें जगवतनो आनंदनामा शिष्य गोचरीयें गयो तेने गोशाले बोलावीने कह्युं के हे आनंद ! तने एक दृष्टांत कहुं ते सांजल, कोइएक चार वाणीया व्यापार करवाने अर्थें विविध प्रकारनां करियाणानां गाडा जरी परदेशें चाल्या मार्गमां कोइएक महोटी अटवीमां पेठा, तिहां तृषालागी तेथी उजाडमा पाणीनी गवेषणा करतां पाणीतो क्यांय दीठुं नही पण चार वाल्मिक एटले उदेहीना शिखर (ढीम) दीठां अने तेना उपर नीलां वृक्ष उगेलां दीठां, तेथी जाण्युं के अहींआं अ

वश्य पाणी हशे ? एवुं जाणी एक शिखर फोडयुं तेमांथी घणु निर्मल शीतल जल नीकल्युं, ते सर्वजनोये पीने तृषा नांजी, वली बीजा वासणोमां पण पाणी नरी लीधु, पछी बीजु शिखर नांगवा मांड्युं, तेवारें तेमांथी एक वृद्ध वाणीयो बोल्यो के आपणुं काम थयुं, माटे हवे बीजु शिखर फोडशोमां, एम वार्या थका पण तेणें बीजु शिखर फोडयुं, तेमांथी सोनु नीकल्युं, तेवारें लोन लागो तेथी लोपण वृद्धेंवर्ज्यो तो पण त्रीजु शिखर फोडयुं तेमांथी रत्न नीकल्या वली वृद्धें घणो वार्यो तोपण चोथु शिखर फोडयुं, तेमांहेथी महाविकराल नयंकर दृष्टिविष सर्प नीकल्यो, ते सर्पें दृष्टिविषें करी सूर्य सामु जोइने सर्वने बाली नस्म कीधा, एक सुशिक्षाना आपनार वृद्धने दया आणी जीवतो मूक्यो, ए दृष्टांतें ताहारा धर्माचार्यने एटली संपदा प्राप्त थइ तो पण असंतुष्ट थको महारो अपवाद लोको आगल बोलीने मने रोषवंत करे छे तेथी हु त्यां आवी महारा तेजथी सर्वने बाली नस्म करीश, माटे तु थतावलो जइने ताहारा धर्मचार्यने कहेजे, हुं वृद्धवाणीयानी पेरें मात्र एक तनेज जीवतो मूकीश, ए वात सांनली आनंद,मुनि नयभ्रांत थयो थको नगवत पासें आवीने गोशालाना सर्व समाचार कह्या, तेवारें नगवते कह्युंके हे आनंद तमे गौतम प्रमुख सर्व साधुउने कहेजो जे अहींयां महारो कुशिष्य गोशालो आवशे, ते उपसर्ग करशे माटे तमें कोइ पण तेनी सार्थे नाषण करशोमां जो बोलशो तो बाली नस्म करशे तेथी अरहा परहा टली रहेजो ते सांनली सर्व साधुउ एकांते बेशीरह्या तथापि सर्वानुनूति अने सुनक्षत्र ए बे साधु, नगवत पासेंज रह्या, एटलामां गोशालो आवीने नगवानने कहेवा लाग्यो के हे काश्यप ! तु कहे छे जे महारो शिष्य गोसालो छे ते खरी वात छे पण ताहारो शिष्य जे गोशालो हतो ते तो मरण पाम्यो अने

छु तो बीजो छु मात्र ते गोशालानुं शरीर परीसह सहन करवा सरखुं हतु माटे में तेना शरीरमां प्रवेश कर्यो छे ते सांजली जगवान बोल्या के अरे गोशाला कोइ चोर चोरी करी नाठो होय तेनी पछवाडे वाहार चढी होय ते जोइने पहेलो चोर नाशी जवानें असमर्थ छतो एक तरणु लइने पोताने ढाकवा सारुं आडुं आपे अने मनमां जाणे के हवे मने कोइ देखी शकशे नही तेथी हुं ते छानो रही जाशे' तेम तु पण महारी आगल केवीरीतें छप्यो रहीश तुं तेहज महारो शिष्य गोशालो छे' एवुं सांजली गोशालो रोषआणीने जगवाननें कहेवा लागो के अरे तु जीवतो रहीश त्यांसुधी मने सुख थाशे नही एवा तेना तुछ बोल सांजलीने सुनक्षत्र मुनि बोल्या के अरे गोशाला तु पोताना गुरुने सासुं बोले छे एतो तुं संसारमां अनता जव भ्रमण करवानुं काम करे छे एटलु बोल्यो तेटलामां गोशालायें तेनां उपर तेजोलेश्या नाखी तेथी ते मुनि बली जस्म थइ गयो फरी पण जगवानने गोशालो कडवां वचन कहेवा लाग्यो तेवारें सर्वानुजूति मुनि बोल्या तो तेने पण तेजोलेश्यायें करी बाली जस्म कीधो ते बन्ने साधु मरण पामीने देवलोकमा गया हवे जगवाने गोशालाने कर्युं के तु चोरनी पेठे कां छपतो रहे छे तेवारें जगवान ऊपर पण तेजोलेश्या मूकी ते तेजोलेश्या जगवाननें त्रण प्रदक्षिणा आपीनें पाछी गोशालाना शरीरमां पेठी तेथी गोशालो दाझ्यो तेना ताप थकी सात रात्रि सुधी विविध वेदना जोगवीने गोशालो मरण पाम्यो अने तेजोलेश्याना तापथी जगवाननां शरीरें वेदना थवा लागी, छ महीना सुधी लोही खम जाडो थयो, रेवती श्राविकानां घेरथी बीजोरांपाक सिंह अणगार पासें मगावी जगवतें खाधो, तेथी शरीरें शाता थइ एवीरीतें जेनो नाम मात्र लीधाथी पण सर्व उपद्रव मटी जाय तेमने पण महा

पीडा थइ एम तीर्थकरने जिनपद लह्या पछी एटले केवलज्ञान उपन्यापछी उपसर्ग न थाय, ते थयो ए प्रथम आश्चर्य जाणवुं ॥ ॥ हवे बीजु अछेरू जे आ वर्त्तमान चोवीशीमां श्रीमल्ली नाथ ओगणीशमा तीर्थकर स्त्रीवेदपणे उपन्या, तेनो संबंध कहे छे आज जंबूद्वीपना श्रीमहाविदेह क्षेत्र ने विपे सलिलावती विजयमां वीतशोकानामें नगरीनो बलनामें राजा तेने धारिणी नामें स्त्री छे, तेनो महाबल नामें पुत्र छे, ते यौवन अवस्था पाम्यो, तेवारें राजायें तेने पांचसो स्त्री परणावी, पछी वृद्धावस्थायें पुत्रने राज्य आपी पोतें दीक्षा लइ चारित्र पाली मोक्षे पोहोतो, हवे महाबल राजा राज्य करे छे, तेने एक अचल, बीजो धरण, त्रीजो अभिचंद, चोथो पूर्ण, पांचमो वसु, छठो वैश्रमण, ए छ मित्र हता एकदा ते साते जणे गुरु पासें धर्म सांभली दीक्षा लीधी, अगीआर अंग जण्यां अने ते साते जणे मांहोमांहे एवो संकेत कर्योके आपण सर्व जणायें छठ अष्टमादिक जे तप करवु ते सरखु बराबर करवुं पण एक बीजाथी अधिकन्यून तप कोइयें करवुं नही ते प्रमाणे ते सातेजण सरखुं तप करे, तेमां एकदिवस महाबल ऋषि ना मनमां एवो विचार थयो के हुं एनांथी कांइ अधिक तप करु के जेथकी हुं ए सर्वथी अधिक थाउं एवो निश्चय करी, कपटथकी ते छ जणथी छानो जेवारें पारणु करवानो दिवस आवे तेवारें छ जणने एम कहे के महारुं तो माथु दुखे छे,हुं आज पारणु करीश नही तमें सुखे पारणु करो बीजे दिवसें वली तेमना सरखु तप करे ए प्रमाणे कपट थकी वीश थानकतप कर्युं तेथी तीर्थंकरनाम कर्म उपार्ज्युं परंतु कपटनेलीधे स्त्रीपणानुं कर्म बांध्युं शेवट सातेजणा बे मासनी संलेपणा करी चोराशी लाख पूर्वनुं आयु पाली मरण पामीने बत्रीश सागरोपमने आउखे विजयंतनामा अनुत्तर विमानें जइ उपन्या, पछी तिहांथी चवी एक अचल

नो जीव तो अयोध्यानो सुप्रतिबद्धनामें राजा थयो, बीजो धरणनो जीव, चंपानगरीयें चंद्र जसा नामें राजा थयो, त्रीजो अनिचंद्रनो जीव, काशी नगरीयें शंखनामें राजा थयो, चोथो पूरणनो जीव, सावत्थी नगरीयें रुक्मिनामें राजा थयो, पांचमो वसुनो जीव कुरुदेशें अदी नशत्रुनामें राजा थयो, छठो वेश्रमणनो जीव कपिला नगरीयें जितशत्रुनामें राजा थयो, अने सातमो महाबलनो जीव मिथिला नगरीयें कुंभ राजा तेनी प्रभावती राणीनी कूखें आवी मल्लीकुमरी पणे उपन्यो,तेवारें मातायें चौदसुपनां दीठां,आछु सुवि अगीआरशें पुत्रीपणे जन्म्या अनुक्रमें योवन अवस्था प्राप्त थइ, पछी अवधिज्ञानें करी पोताना छ मित्र, जूदे जूदे ठेकाणें उपन्या देखी तेने प्रतिबोध करवाने अर्थे अशोक वाडीमां रत्नें जडित घर कराव्युं, तेनां छ बारणां कराव्या, तेमां पोताना रूप सरखी रत्नेंजडित सोनानी एक पूतली करावी, हवे मल्लीकुमरी जे जे वारें जोजन करे, ते ते वारें ते रत्ननी पूतलीने माथे बारणु कराव्युं छे ते बारणानी उपर एकेको कवल नाखती जाय अने फरी पाछु ढांकणु आपी दीये, एम नित्य करती जाय हवे एकदा अयोध्या नगरीयें सुप्रतिबद्ध राजायें यक्षने देरे पूजा रचावी छे, तिहां फूलनी माला देखीने दूतने पूछ्युं जे तमें एवो फूलनो श्रीदामक्यांहिं पण दीठो छे? तेवारें दूत बोल्यो जे हे राजन्! मल्लीकुमरी घणी चतुर छे घणा रूपमय छे, ते जेवो फूलनो श्रीदाम बनावे छे तेहना लाखमां अंशें पण ए श्रीदाम नथी हवे पूर्वेजवना प्रेमथकी सुप्रतिबद्धराजायें मल्लीकुमरीनी याचना करवाने कुंभराजा उपर दूत मोकल्यो अने कहेवराव्युं जे तमारी बेटी मुजने परणावो ॥ इति प्रथम दूत ॥ १ ॥ तेवार पछी चंपानगरीना अरहन्नक प्रमुख व्यवहारिया प्रवहण जरी गंजीर पत्तने द्वीपांतरें चाल्या, एवा समयमा इंद्र महाराज

अरहन्नक श्रावकनी प्रशंसा पोतानी सजाने विषे करवा लाग्या जे धन्य छे अरहन्नकने, आज जरत क्षेत्रमां एना समान बीजो कोइ दृढ श्रावक नथी ! ते इन्द्रना वचनने कोइएक मिथ्यात्वी देवता अण सद्दहतो थको तिहां अरहन्नक पासें आवीने ते देवतायें समुद्रमां महोटो उत्पात कस्यो ते जोइ अरहन्नक तो सागारी अणशण करीने निर्मल मनें श्रीवीतराग देवनुं स्मरण करवा लाग्यो, तेनें देवतायें घणोए चलाव्यो अने एवुं कह्युं जे तुं श्रीवीतराग देवनुं स्मरण मूकीने हरि हरादिक देवोनुं स्मरण कर्य, तो उपसर्ग निवारण करु नहींतर ताहारां जिहाज समुद्रमध्यें बूडावी देईश, एम कही जिहाज समुद्रमां बूडाववा लाग्यो, ते जोइ सर्व लोक एकठा मली अरहन्नकने कहेवा लागा जे देवतायें कह्युं तेम करो, तो पण अरहन्नक श्रावकनुं समकित दृढ छे, तेथी चलायमान न थयो, ते जोइने देवता तुष्टमान थइ कुंमलाजरण नो जोडो आपी, अर्हन्नकने पगें लागीने कह्यु के अहो अर्हन्नक ! तमोने धन्य छे, हे कृत पुण्य ! तमारु जीवितव्य सफल छे, तमोने इन्द्र महाराजें सजा समक्ष वखाण्या ते अणमानता में तमारो अपराध कस्यो, ते महारो अपराध तमें खमजो, ते सांजली अर्हन्नक बोल्या जे इह लोक अने परलोकनुं साधन एवो श्रीजिनधर्म पामीने बीजो धर्म हुं अंगीकार न करूं, तेवारें देवतायें चार कुंमल आप्यां, अनें पोताने स्थानकें गयो, हवे ते व्यावहारीयो कुशल क्षेमें गजीरपत्तनें गयो तिहां व्यापार करी फरी मिथिला नगरीयें आव्यो तेवारें देवतायें आपेला चार कुंमलमांथी राजाने बे कुंमल आप्यां, राजायें मल्लीकुमरीने दीधा, पछी व्यापारियें पोतानी चंपानगरीयें आवी, तिहां चंपागरीना राजाने बाकी रहेला बे कुंमल आप्यां राजायें पूछ्यु जे हे व्यवहारीया ! तमें परदेशमां कोइ तमासो दीठो ? ते सांजली व्यवहारीयो

वोझो के श्रमें मल्लीकुमरीनुं रूप श्रद्भुत दीठुं, एवुं रूप बीजे क्यांहिं पण दीठु नथी, पछी चङ्जसा राजायें पण कुंजराजा पासें दूत मोकलीने कहेवराव्युं के तमारी पुत्री मल्लीकुमरी मुजने परणावजो ॥ इति द्वितीयदूतः ॥२॥ एक दिवसें मल्लीकुमरीना बे कुंमल नांग्या, तेवारें कुंजराजायें सोनीर्ज बोलावीने कह्युं के श्रा कुंमलनो जोडो सांधी श्रापो, तेवारें सोनी कुंमल जोइने बोल्या जे महाराज ! ए सधाय नहीं एतो देवतानां कुंमल ठे, ते श्रमें केवी रीतें सांधियें ? तेथी राजायें सर्व सोनीर्जने देशनिकाल कीधा, ते सोनी वाणारसी नगरीयें गया, तेवारें त्याना शख राजायें पूठ्युं के तमें देश केम ठोड्यो ? सोनी बोल्या जे महाराज ! मल्लीकुमरीना कुंमल देवता संबधी ठे, ते श्रमारा थकी संधाणां नहीं, तेणें करी देश ठोडवो पड्यो श्रने मल्लीकुमरीना रूपनुं वर्णन कर्युं, तेवारें वाणारसीना राजायें पण मल्लीकुंमरी याचवाने श्रर्थे कुंजराजाने दूत मोकल्यो ॥ इति तृतीयदूत ॥३॥ हवे रुक्मी राजायें पोतानी पुत्रीने चार महीना सुधी पीठी करावीने दूतने पूठ्युं जे हे दूत ! तें श्रावुं रूप क्यांही पण दीठुं ठे ? तेवारें दूत बोल्यो जे मल्लीकुमरीने लाखमे श्रंशें पण ए रूप नथी, ते सांजली, रुक्मी राजायें पण कुंजराजा उपर दूत मोकली,मल्लीकुमरीनी याचना करावी ॥ इति चतुर्थदूत ॥४॥ हवे कुंजराजानो पुत्र ठे,तेणें पोतानी चित्रशाला चित्रावी,तिहां चितारे मल्लीकुमरीनो श्रंगुठो दीठो, ते प्रमाणें मल्लीकुमरीना सर्व श्रगनुं स्वरूप चित्री काढ्युं, एकदा मल्लीकुमरीना जाइयें क्रीडा करता मल्लीकुमरीनुं रूप चित्रशालामां जोयुं, तेने रीश चढी तेथी चिताराना हाथनुं श्रगुठो कापीन काढाढी मूक्यो, चितारो हस्तिनापुरें श्रदीनशत्रु राजाने मल्यो, तिहां मल्लीकुमरीनुं रूप, वर्णन कर्युं, ते सांजली तेणें पण मल्लीकुमरीनी याचना करवा कुंजराजाने दूत मोक

स्यो ॥ इति पंचम दूत ॥ ५ ॥ ॥ एक दिवस धर्मचर्चा करतां एक परिव्राजिकाने मल्लीकुं
मरीयें जीती, मानभ्रष्टा करी, तेथी ते रीशाणीथकी कपिलानगरीयें जइ जितशत्रुराजाना
मुख आगल मल्लीकुमरीना रूपनुं वर्णन कह्युं, तेणें पण मल्लीकुमरी याचवाने अर्थे कुंभराजा
उपर दूत मोकल्यो ॥ इति षष्ठदूत ॥ ६ ॥ ॥ ए रीतें छ दूत कुंभराजा पासें समकालें आ
व्या, कुंभराजायें सर्व दूतोने कह्युं के हुं महारी कन्या कोने आपवानो नथी, एवी रीतें अप
मान करी काढी मूक्या, पछी ते छए राजाउ पोत पोतानुं लश्कर लइने समकालें आवी मि
थिला नगरीने वींटी लीधी, कुंभराजायें पण बाहिर आवी युद्ध करवा मांड्युं युद्ध करता हार्यो
अने पाछो नगरीमां पेठो, तेवारें मल्लीकुमरीयें छए राजाउने कहेवराव्युं के तमें महारा रमण
रमा आवजो, पछी ते छए राजा छ बारणामाथी जूदा जूदा आव्या, मल्लीकुमरीनी मूर्त्ति
देखी व्यामोह पाम्या, एटलामां मल्लीकुमरीयें आवीने ते पुतलीना माथा उपरथी ढांकणुं
उघाड्युं तेवारें ते सडीगयेला अनाजमां कीडा पड्या हता तेमांहेथी दुर्गंध नीकल्यो एटले
सर्व जणे मोढा पासें लूगडुं आपी थुथुकार कीधो अने दुःखी थवा लागा तेवारें मल्लीकु
मरी बोल्यां जे हे जनो ! आ रत्नमय पूतली छतां नित्यप्रत्यें एक कवल आहारना संयोगथी
एवी दुर्गंध वास आपे छे, तो महारा शरीरमा तो नित्यप्रत्यें शेर धान्य पडे छे तेथी मलमूत्र
नो भंडारज छे तेमां तमें शुं रागांध थया छो ? एवो प्रतिबोध करीने पछी पूर्वलो भव संभला
व्यो, तेथी ते छए राजाने पण जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं,पूर्वभव दीठ पछी ते छए कहेवालाग्या
के हवे अमने तारो, तेवारें मल्लीकुमरीयें कह्युं के हमणा तो तमें घेर जाउ, जेवारें मने के
वलज्ञान उपजे, तेवारें तमें आवजो, हुं तमोनें दीक्षा आपीश, पछी ते छए राजा पोतपोता

ने स्थानकें गया, मल्लीकुमरीयें पण संवत्सरी दानआपीनें त्रणशें राजपुत्र साथें मार्गशिरशु दिश्रगीआरशने दिनें दीक्षा लीधी, तेज दिवसें केवल ज्ञान उपन्युं, पछी ते छए मित्रें आवी श्रीमल्लीनाथ पासेंथी दीक्षा लीधी ते छए ने गणधर कह्या तेहज जवें मोक्ष गया, ए श्रीमल्ली नाथ स्त्रीवेदें ओगणीशमां तीर्थंकर थया, तेमना समोसरणमां स्त्रीनी परषदा आगल बेशती हती अने पुरुषनी परषदा पाछल बेशती हती तें स्त्रीवेदें कोइ तीर्थंकर थाय नहीं ते थयु ए बीजु अछेरूं जाणवु ॥ २ ॥ ॥ त्रीजु कोइ तीर्थंकरने गर्भपालटो थयो नथी, ते आहीं श्रीमहावीर स्वामीने व्याशी रात्रि पछी देवानंदानी कूखथी हरिणगमेषी देवतायें अपहरीनें त्रिशला क्षत्रियाणीनी कूखमांहे धर्या अने त्रिशलानी कूखें पुत्री हती, ते महाणकुर्में देवानंदानी कूखे मूकी तेवुं कोइवारें थाय नही, माटे ए त्रीजु गर्भ पालटन आश्चर्य जाणवुं ॥ ३ ॥ ॥ चोथुं श्रीवीरभगवाननें जेवारें केवलज्ञान उपन्युं, तेवारें देवतायें मली समोसरणनी रचना कीधी, त्यां घणी महोटी परषदा भेली थइ तेवारें भगवानें धर्मदेशना दीधी परंतु प्रभुनी देशना सांभलीनें कोइ समकेत पाम्यो नही, तेमज व्रत पच्चस्काण पण कोइयें लीधु नही एरीतें देशना निःष्फल गइ, एम तीर्थंकरनी देशना कोइ वखतें खाली न जाय ते आ वेलाये खाली गइ, माटे ए चोथुं आश्चर्य जाणवुं ॥ ४ ॥ ॥ पांचमु जे एक द्वीपनो वासुदेव होय तें बीजे द्वीपें जाय नही, तें श्रीकृष्णजी द्रौपदी लाववानें अर्थे धातकीखंडें गया तेमज कपिल वासुदेवनो शंख अनें श्रीकृष्ण वासुदेवनो शंख ए बे शंखेशब्द मल्या ते पण कोइवारें मले नही माटे आश्चर्य जाणवु तेनी कथा कहेछे कांपिलपुर नगरमां द्रुपदराजानी चुलणी पटराणीनी कूखे द्रौपदी नामे पुत्री थइ तेना विवाह सारु स्वयंवर मंडप मांड्यो, सर्व देशोना राजा ते

हाव्या हस्तिनागपुरथी पोताना युधिष्ठिरादिक पांच पुत्रने तेडी पांडुराजा पण आव्यो, अर्जुने राधावेध साध्यो तेवारें द्रोपदीयें अर्जुनना गलामां वरमाला नाखी ते वरमाला पूर्वभवमां द्रोपदीयें पाच नरतारनो नीयाणो कर्यो हतो तेना प्रभावथी पांचे पांडवोना गलामां जइ पडी पूर्वला भवमा द्रोपदीनो जीव नागिला नामें ब्राह्मणीनो हतो तेणे एक दिवस धर्मरुचि मुनिने कडवी तुवडीनुं शाक वोहोराव्युं ते मुनियें अनशन करी साधु तेनां योगथी मुनि मरण पाम्या पछी नागिला साधुनी घात करनारी छे एवु आचार्यें साधुउने गाममां मोकली कहेव राव्युं तेवारें ब्राह्मणे नागिलाने घरमांथी काढाढी मूकी, ते भमती भमती मरण पामीने नरकें गइ त्यांथी अनेक तिर्यंचादिकना भव करी एक शेठने घेर घणी स्वरूपवाली सुकुमालिका नामे पुत्री पणे उपनी तेनें तेज गाममां एक बीजा शेठना दीकराने परणावी ते रात्रे सुवा गयो त्यां सुकुमालिकानो स्पर्श थतांज तत्काल तेने दाहज्वर उपन्यो तेथी ते पडती मूकी चाल्यो गयो पाछलथी सुकुमालिकाने शोक करती जोइने तेना बापे एक भिक्षुकने परणावी ते पण तेमज मूकी नाशी गयो पछी सुकुमालिका दु खगर्भित वैराग्य पामीनें साधवी थइ तेने गुरुणीयें नाकारो कर्यो तो पण ते वनमां तप करवा गइ त्यां एक वेश्याने पाच पुरुष हाज रीमां रह्या छे तेने जोइने सुकुमालिकायें कह्युं के मद्दारा तपनो प्रभाव होय तो आगला भ वमां मुजनें पण पांच भरतार होजो एवुं नियाणु कर्युं, अते अनशन करी इशान देवलोकें गइ त्यांथी चवीने अहीं द्रौपदी थयेली छे ते पूर्वकृत नियाणाना योगें वरमाला पाच जणानां कं ठमा पडी, देवोयें आकाशथी एवी वाणी करी के द्रौपदी पांच भरतारी छतां पण सती छे,पांच पांडव द्रौपदीने परणी हस्तिनागपुरमां आव्या त्या सुखें रहे छे, एक दिवस जेनी मुखाकृति सौम्य

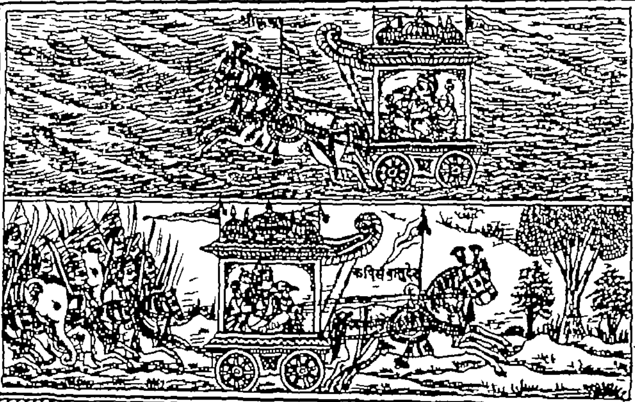
छे,परंतु मनमा कपट घणु राखे छे, वल्कल चीर पहेरें छे,जनोइ पहेरे छे, काला मृगना चाम
डानो उत्तरासग करेलो छे, जेनो जटाजूट महाकांति वालो छे, जे कलह कोलाहलनो उगा
डनार छे, एवो नारद ऋषि आकाशमार्गथी ते पांडुराजानी सजामां आव्यो, तेवारें पांमवो स
हित सर्व सनाजनोयें उना थइने आदर सन्मान आप्युं, परंतु ते नारद जेवारें द्रोपदीनें जो
वा गयो तेवारे द्रोपदीयें तेने असयती जाणी वांद्यो पूज्यो नही, तेम उठीनें उनी पण थइ
नही, अने बोलाव्यो पण नही, तेथी नारदने रीश चढी अने विचार करवा लाग्यो के आ द्रौ
पदी पांच जरतार पामीनें मस्त थइ गइ छे, तेथी गर्वित थकी बेठी छे तो हवे हुं एने संकट
मां नाखुं एम चिंतवी, धातकीखंमना पूर्व जरत क्षेत्रमां अमरकका नामे नगरी छे त्यां कपि
लवासुदेवनो सेवक पद्मनाज नामे राजा राज्य करे छे, ते राजा पोतानी सातसें राणीयो सा
थें वाडीमां रमतो हतो तेवा समयमां नारद पण त्यां गयो, तेने पद्मनाज राजायें वांदीने
पूछ्युं के हे नारदजी ! महारो जेवो अतेउर छे तेवो अतेउर बीजे क्यां तमें जोयो छे, तेवारें
नारदजिये जाण्युं के आ स्त्रियोनो लोलुपी छे एम जाणी अवसर जोइने नारदजी कहेवा
लाग्यो, के हे राजन् तुं कूवानां देमका सरखो देखाय छे, जेम कोइएक समुद्रनो देमको
कूवाना देमकानी पासें आव्यो, तेवारें तेने कूवाना देमकायें पूछ्युं जे तुं किहां रहे छे अने
क्यांथी आव्यो छो, तेणे कह्युं हुं समुद्रमां रहुं छुं अने त्यांथीज आव्यो छु तेवारें कूवाना
देमकायें पूछ्यु जे ताहारो समुद्र केटलो महोटो छे, तेणे कह्यु घणो महोटो छे, तेवारें
कूवानो देमको हाथ पग पसारीने बोल्यो के आटलो महोटो छे, समुद्रना देमकायें कह्युं
एथी तो घणोज महोटो छे, तेवारें कूवानो देमको पोताना कूवानी चारे बाजुयें कूदका

मारीनें योल्यो के श्राटलो महोटो छे, तो पण तेणे कह्युं के एनाथी तो घणोघणो महोटो छे, तेवारे कूवानो देमको रोष श्राणीनें बोल्यो के श्ररे असत्य वादी तुं इहांथी दूर जा, महारी फालथी पण वली कोइ महोटो हशे ? माटे तुं जूठुं बोले छे, तेम हे राजन् ! तें पण कूवाना देमकानी पेरें श्राटलीज स्त्रीयो दीठी छे तेथी एनाज वखाण करे छे, परंतु पांच पांमवनी स्त्री डौपदी एवी छे के तेना एक अंगुठाना नखाग्रना रूप सरखुं पण ताहारी कोइ राणीनुं रूप नथी, त्रण लोकमा ए डौपदी समान कोइ स्त्रीनुं रूप नथी एम कहीनें नारद चालतो थयो, पाछलथी पद्मोत्तर राजा कामे पीडित थको चिंतववा लाग्यो जे एवी स्त्री विना जन्म निष्फल छे पण डौपदीने पामवानो कोइ उपाय सूझ्यो नही तेवारें अष्टम तप करी पूर्वसंगति देवतानुं श्राराधन कर्युं देवता प्रत्यक्ष श्रावी ऊनो रह्यो श्रने कहेवा लाग्यो के हे राजन् ! मने केम संभार्यो माटे जे काम होय ते फरमावो, पद्मोत्तर राजायें डौपदी लेइ श्राववानी याचना करी तेवारें देवतायें कर्युं ते महा सती छे माटे शील नंग करशे नही तो तुं फोकट शा वास्ते तेने तेडावे छे तो पण पद्मोत्तरें घणो हठ कर्यो त्यारें देवतायें डौपदीनें अवस्वापिनी निद्रा श्रापी, ज्यां सुती हती त्यांथी ढोलीया सहित उपाडीनें पद्मोत्तर राजानी अशोक वाडीमां श्रावी मूकी श्रने राजाने कर्युं के तें महारा हाथें मादुं काम कराव्युं छे, माटे हवे कोइ पण दिवसें तुं मने याद करजे नही कदापि बोलावीश तो पण हवे हुं श्रावीश नही एम कही देवता स्वस्थानकें गयो, केटलिक वार पछी डौपदी निद्रामांथी जाग्रत थइनें विचारमां पडी जे हुं इहां क्यां श्रावी छुं ! तेवारें पद्मनाभ बोल्यो के में तुजनें महारी साथें जोग करवा सारुं देवतानी मारफतें इहां मगावी छे, तो हवे तुं महारी साथें विषयसुख जोगव, हुं ताहारो दास छुं, तेवारें

द्रोपदी बोली हे देवाणुप्रीय ! तु छ महीना सुधी महारुं नाम लइश नहीं, महारी वाहार करवा वाला, पांच पांमव तथा श्रीकृष्ण छे ते जो छ महीनामां अांही आवशे नहीं तो तु कहीश तेम थाशे, पद्मनाजें पण हा कही अने विचार्युं जे इहां एनी खबर लेवा कोण आवनार छे ? वली जोरावरीथी प्रीति पण नथाय एम जाणी, द्रौपदीनें पोताना महेलमां तेडी गयो द्रोपदीयें त्यां छठ छठ्ठनुं तप अने पारणे आयंबिल करवा मांमधुं, हवे प्रभातें हस्तिनाग पुरमां द्रोपदीनें महेलमां दीठी नहीं, तेवारे पांमवोयें घणो शोध कराव्यो पण क्यांये पतो लागो नहीं, तेवारे पांमवोनी माता कुंताजीयें द्वारिकामां जइने श्रीकृष्ण वासुदेवने कह्युं के हे पुत्र ! द्रोपदीने रात्रियें सुतां थकां कोइ देव, दानव, राक्षस अथवा विद्याधर अपहरी गयो छे, अमे सर्व जगा जगायें जोइ पण मली नहीं तेवारें श्रीकृष्णजी कांइक हास्य पूर्वक बोल्या के पांच पांमव एक द्रोपदीने पण राखवाने समर्थ न थया, हुंतो महारी बत्रीश हजार स्त्रीयोनी रक्षा करुं छुं, ते सांजली, कुंताजी बोल्या के हे वत्स ! आ अवसरमां हास्य करवानुं काम नथी तुरत द्रौपदीनी खबर कराव पछी श्रीकृष्णजीयें पण घणो शोध कराव्यो परंतु क्यांय खोज पाम्या नहीं तेवारें चिंतातुर थइ बेठा एटलामां नारदऋषि त्यां आव्यां तेणे आवी कृष्णजीनें चिंतामां बेसवानुं कारण पूछ्युं त्यारें कृष्णजीयें कह्युं के तमें कोइ स्थानकें द्रोपदीने दीठी ? नारदजी बोल्या ते पापणी कोइ साधुनें पण वोलावती नहती माटे दुःखमां पडी हशे, तथापि हुंतो कांइ देखतो नथी, परंतु धातकीखंममां अमरकंका नगरीयें द्रोपदी सरखी एक स्त्री दीठी छे पछी कोण जाणे तेहज होयतो होय एम कही, नारदजी चाल्या गया पछी श्रीकृष्णे विचार्युं के आ कृत अवश्य कुबुद्धि नारदनुंज करेलुं छे माटें अमरकंका मांहेज द्रोपदी हशे

एवुं जाणी पांमवोंने लइ सेना सहित श्रीकृष्णजी समुड़ तटें आव्या, समुड़ उंलघवाने अर्थे अठ्म तप करी लवणाधिप देवताने बोलाव्यो ते पण प्रगट थइ बोल्यो के कहो शुं काम छे हुं करवाने तत्पर छु, तेवारें कृष्णजीयें सर्ववृत्तांत निवेदन करी कह्यु के अमनें धातकीखंममां जावु छे, माटे अमारी सेनाने समुड़मांथी जवानो मार्ग आपो, त्यारे देवता बोल्यो के तमे शा वास्ते त्या जवानो श्रम करो छो हुं पोते जइ ड्रोपदी लावीने तमोने आपीश,वली तमारो हुकुम होय तो अमरकका नगरी सहित पद्मनाभ राजाने समुड़मां नाखी देउं, तेवारें श्रीकृष्ण बोल्या के हे देव ! तमे एवाज शक्तिवान छो एमां कांइ संशय नथी तथापि अमोने पाच पांमव सहित छ जणने जवानो मारग आपो तो अमारें त्यां जवानी इछा छे ते सांभली सुस्थित देवे ते छ जणाना छ रथ चालवानो मार्ग आप्यो पछी पामवो सहित श्रीकृष्ण समुड़ उलं घीनें अमरकका नगरीना उद्यानमां जइ वारुक नामा सारथीने दूत बनावीने श्रीकृष्णे पद्म नाभ पासें मोकल्यो तेणे जइ पगउपर पग आपी त्रिवली ललाटे चडावी,कह्यु के हे पद्मनाभ ! श्रीकृष्णवासुदेवें तमोने कहेवराव्युं छे के,पामवोनी स्त्री ड्रोपदीने तमे लइ्गया छो ते घणु अ योग्य काम कर्यु छे तथापि हजी कांइ बगड्यु नथी माटे तमे आवी ड्रोपदी अमोने आपी जाउ, तेवारें पद्मनाभ बोल्यो के हु तमोने पाछी आपवा सारुं ड्रोपदीने लइ आव्यो नथी, हुतो म हारा बलथी लाव्यो छु माटे तु ताहारा स्वामीनें जइ कहे के तमारे युद्ध करवुं होय तो सुखें क रो,हु पण क्षत्री छु एम कही दूतने निभ्रछी ने काढाडी मूक्यो,दूतें आवी श्रीकृष्ण आगल तेणे कहेली सर्व वात निवेदन करी, श्रीकृष्णे जाण्यु के असाध्य रोग कांइ औषध विना जाय नही माटे युद्ध करवा तैयार थया,पद्मनाभ पण सेना लइ लडवाने सामो आव्यो,पांमवो बोल्या के

अमे एनी सार्थे युद्ध करीशुं कदापि जो हारी जइयें तो आपे सहाय करवो त्यारें श्रीकृष्णे कह्युं के तमें महोटा योधा ढो पण तमारी आवी आणी सांजलतां थकां एवु लागे ढे के तमारे जीतवुं कठण थइ पडशे,तो पण पांमवो श्रीकृष्णनी आज्ञा लइ युद्ध करवानें गया,पद्मनाजें पण महोटु लशकर लइने पांमवो सार्थे युद्ध कर्युं, त्यां नवितव्यताना वशथी पांमवो हारी गया ते वारें नासतां थकां सिंहनाद कर्यो ते सांजली पांमवो हार्या जाणी, एकलाज श्रीकृष्ण रथ उपर बेशीनें पद्मनाजनी सेनाने मथन करवा लाग्या त्यां धनुषना टकारवथीज पद्मनाजनी सर्व सेना नाशी गइ अने पद्मनाज पोतें पण नाशिनें नगरमां घुंसी गयो नगरना दरवाजा बंधकरी मूक्या, तेवारें श्रीकृष्णे नरसिंह रूप धारण करीनें हाथल मारी अमरकंका नगरीनो सर्व कोट जांजी नाख्यो, सर्व नगर ध्रुजवा लाग्युं, घणा महेल पडीगया, पद्मनाज राजा श्रीकृष्णजीनुं एवुं पराक्रम देखीने बीहीनो थको द्रौपदीनें शरणे गयो अने कहेवा लाग्यो के हे सति ! तुं महारी रक्षा कर, द्रौपदी बोली हे कपाल ! में तुजने प्रथमथीज कहेलु हतु जे महारी पढवाडे श्रीकृष्णादिक घणा बलवंत राजाउ वाहार करनारा ढे तो पण तें मान्युं नही तेतो ठीक पण हवें जो तुं जीववानी चाहना राखतो होय तो स्त्रीनो वेश पहेरी मुखमां तृण लइ महारी पढवाडे बेसी रहे एटलु जो महारु कह्युं करीश तो हु तुजने पगेलगाडी दइश केमके श्रीकृष्ण सत्पुरुष ढे तेनी आगल जे नमी जाय तेने मारे नही माटे ताहारे जीवतो रहेवानो ए उपाय ढे ते कर, पद्मनाजें पण तेमज कर्युं, एटलामां श्रीकृष्ण पण आव्या, त्यां जुवे तो पद्मनाज स्त्रीनुं रूप करी द्रौपदीनी पढवाडे बेठो ढे, श्रीकृष्णें द्रौपदीनें पूढ्युं के आ कोण बेठो ढे, द्रौपदीयें कह्युं पद्मनाज राजा तमारा जयथी नाशिनें महारे शरणे आ


चित्र ८

च्यो ठे एम कही डोपदियें पद्मनाजने श्रीकृष्णनें पगें लगाड्यो तेवारें श्रीकृष्णे तेना उपर दया आणी जीवतो राख्यो अने पद्मनाजनें कह्युंके अरे तु जाणतो नहतो जे आ डोपदीनी पठवा डे महोटा महोटा वाहार करवा वाला ठे ? पण मूर्खोंना माथामां जेवारें पडे ठे तेवारें अक ल आवे ठे, तो हवे ताहारुं कर्यु कर्म तें जोगव्युं, डोपदीना प्रतापथी तु जीवतो रह्यो एवु कही अखंम शीलवती एवी डोपदीने लइने पांच पांमव सहित श्रीकृष्णजी पाठा वल्या जयनो शंखपूर्यो, एवा वखतमां ते खेत्रमां श्रीमुनिसुव्रत तीर्थंकर पासें त्यांनो कपिल वासुदेव वखाण सांजले ठे, तेणें शंखनाद सांजल्यो, मनमा शंका उपनी जे कोइ बीजो वासुदेव उत्पन्न थयो! तेथी जगवतने पूछ्यु के महाराज ! ए बीजो वासुदेव कोण थयो ठे केंणे महारो शंख वजाव्यो ? जगवत बोल्या के हे कपिल ! एक खेत्रमां बे तीर्थंकर अने बे वासुदेव, न थाय पण एतो जंबुद्दीप संबंधि जरत क्षेत्रनो श्रीकृष्णनामें वासुदेव ताहारा सरखी रुद्धिनो धणी ठे, ते पद्मनाज राजा डोपदी हरण करी लाव्यो हतो,तेने लेवाने आव्यो हतो,ते पद्मनाजने जीतीने पाठो जाय ठे,तेणें शंखनाद कर्यो,ते सांजली तीर्थंकरनी आज्ञा लइने कपिल वासुदेव तरत तिहांथी उठीने पोताना सरखो वासुदेव जोवा सारु समुद्रने कांठे आव्यो, पण श्रीकृष्णतो दूर नीकली गया,मात्र समुद्रमां नीली, पीली रथनी ध्वजाउदेखीने, शंखनो शब्द कर्यो, तेमां एवु जणाव्यु के हे मित्र ! आप उन्ना रहो हुं तमोने मलवा सारुं आव्यो छु माटे एकवार पाठा आहीं आवो, तमारा दर्शननी मने अन्जिलाषा ठे, एवो शंखनो शब्द सांजलीनें श्रीकृष्णे पण पाठो शंख नो शब्द कर्यो तेमां आवीरीतें कहेता हवा के हे मित्र ! अमे घणा समुद्रनु उल्लंघन करी गया ठेयें माटे पाठा अवाशे नही तमे अमारा उपर कृपादृष्टि राखजो एवु कहीने चालता थया

पाछलथी कपिल वासुदेवें जइ, पद्मनाभनें कह्युं के आ तहारी नगरीना गढ मढ कोट केम पडीगया ? पद्मनाभें कह्युं के अहींआं जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रनो वासुदेव महारी राजधानी लेवा आव्यो हतो तेनी साथें महोटुं युद्ध थयुं तेणे ए गढादिक भोडी नाख्या छे, कपिलवासुदेवें कह्युं के अरे अन्यायी महारी पासें तुं जुठुं बोले छे एम कही घणो निभ्रछीने देशमांथी काढी मूक्यो अने तेना पुत्रनें राज्यपाटे थापी कपिल पोतानें स्थानकें गयो, पछी श्रीकृष्ण पांडवो सहित समुद्र उल्लंघन करी पांडवोने कहेवा लाग्यो जे हुं लवणाधिप सुस्थित देवने मलवा जाउं छुं एटलामां तमे नावा लइ गंगानदी उतरीने पछी एक जण साथें तरत नाव मोकली देजो पछी पांडव द्रौपदी सहित नाव लइ गंगानदी उतर्या अने विचार्युं के जोइयें तो खरा जे कृष्णजी पोतें एकला गंगानदी उतरी आवे छे के नथी आवता एम निरधार करीने नाव मोकली नही, त्यां श्रीकृष्ण घणो वखत थोभ्या पण नाव आवी नही तेवारें मनमा जाण्युं जे पांडवो डुबी गया देखाय छे एवुं विचारी चार भुजाउ करीने एक हाथमां सारथी सहित रथ उपाड्यो, एक हाथमां शस्त्र राख्या, एक हाथमा घोडाने पकड्या अने एक हाथथी गंगा नदी तरवा लाग्या तिहां साडी बासठ योजन गंगानदी पोहोली छे तेनी मध्य भागमां जेवारें आव्या तेवारे श्रीकृष्ण घणा थाकी गया ते वखत गंगादेवीयें सहाय आपीने मध्यमां विकुर्वित थल कर्युं त्यां केटलोएक वखत विश्राम लइने वली पोतानी भुजाउथी गंगानदी तरीने तट उपर आव्या तिहां आगल आवीने जुवे छे तो पांडवो नाव सहित बेठा बेठा हसे छे, तेवारें श्रीकृष्ण रीस चढावीने पांडवोने पूछवा लागा के अरे दुष्टो ! तमें नाव पाछी केम न मोकली ? पांडवो बोल्या, तमारी परीक्षा जोवाने न मोकली, तेवारें श्रीकृष्ण बोल्या

के अरे में बे लाख योजन समुद्र उल्लंघन करी पद्मनाभथी तमे नाठा तेने जीती द्रौपदी आणी आपी, तेवारें मारी शक्ति न दीठी ? जे हमणा महारु बलजोवा वेग ! एम कही क्रोध चढावी ने पांचे पांडवोने मारवा सारु लोहदंड उपाड्यो, वली दया आवीने जाण्युं जे महोटो अ नर्थ थाशे ? एम विचारी पांचे पांडवना रथ भांगी चूर्ण कर्या अने कह्युं के जाउ रे पापीउ हवे महारी नजरे आवशो नही अने महारा देशमां पण रहेशो नही एम कही पाचे बाध वने देशनिकाल कर्या अने जिहां रथ भांग्या, तिहां रथमर्दन कोट थयो, श्रीकृष्ण पोतानी सेना लइ द्वारकामां गया अने पांडव पण द्रौपदीने लइ सेना सहित हस्तिनापुरें आवी कुंता जीने देशनिकालनी वात कही, तेवारें कुंताजी द्वारकामां आवी श्रीकृष्णने मीठे वचनें संतोषी पांडवोने बोलावी श्रीकृष्णने पगे लगाड्या पछी श्रीकृष्णे आज्ञा आपी के ज्यां में तमारा रथ भांग्या त्यां तमे पांडवरथमुपुर नगर वसावीनें रहो पछी पांडवो त्यां श्रीकृष्णजीनी सेवा करता थका रह्या छेवट पांडुसेन नामें पोताना पुत्रने राज्य पाटें थापी पांच पांडव अने छठी द्रौपदीयें दीक्षा लीधी, छठ, अठमादिक तप करी चौद पूर्व भणी ते पाचे पांडव श्रीश त्रुंजय तीर्थ ऊपर मोक्षें गया, अने द्रौपदी पण अगीआर अंग भणी मासनी संलेषणा करी पांचमा ब्रह्मदेवलोकें गइ तिहांथी चवी महाविदेहक्षेत्रें मोक्ष पामशे ए रीतें जंबूद्वीपनो वासु देव, धातकीखंडमां न जाय, ते गयो ए पांचमु अछेरू जाणवु वली केटलाएक आचार्य एम कहे छे के बे वासुदेवनुं शस्खेशंख पण भेगो न थाय अने इहां शस्खेशख मल्यो, माटे ए पण अछेरू जाणवु ॥ ५ ॥ ४ ॥ हवे छठु आश्चर्य कहे छे —युगलिया मरण पामीने नरकें न जाय, अने अहीं हरि तथा हरिणी, ए बे युगलिया मरण पामीने नरकें गया माटे

ए अछेरूं थयुं तेनी कथा आम छे के, जम्बुद्वीपमांना नरतक्षेत्रनेविषे कोशबी नगरीनो सुमुख नामें राजा हतो एकवा प्रस्तावें वसत ऋतुयें ते राजा हाथीऊपर आरूढ थइ नगरीनी नजीकना वनमां रमवाने अर्थें जतो हतो मार्गें जतां वीरकनामें कोलीनी वनमाला नामे नार्या अत्यंत स्वरूपवती छे ते पोताना घणीने घणी वल्लन छे तेने देखीने मांहोमांहे सराग दृष्टियें जोतां प्रीतिनाव उत्पन्न थयो तेथी राजा त्यांथकी आगल जाय नहीं तेवारें सुमतिनामा प्रधान कहेवा लाग्यो के हे स्वामि! समस्त लोजन आव्यां उतां तमें आगल केम चालता नथी? ते सांनली राजा पोताना प्रधाननी लाज आणी आगल वनमां गयो पण शून्यचित्तथको मनमांहे केवल ते स्त्रीनुं चिंतवन छे तेथी त्यांयें पण चेन पामतो नथी ते जोइने प्रधानें पूछ्युं के हे महाराज! तमें आज आवा शून्यचित्त केम देखाउ छो? एम फरी फरी घणो आग्रह करी पूछवाथकी पोताना मननी सर्व वात राजायें प्रधानने कही ते सांनली प्रधान बोल्यो के तमें कांइ चिंता करशो नहीं, हुं तमने ए स्त्री मेलवी आपीश पछी घेर आवी प्रधानें आत्रेयिकानामें परिव्राजिकाने बोलावी सर्व वात समजावी वनमालानी पासें मोकली, ते पण त्यां जइ जुए छे तो वनमाला पण विरहविव्हलथकी मुखें नि श्वास नाखती क्षणेक बेसे, क्षणेक उठे, क्षणेक पडे, ए रीतें महाविरहिणी देखी तेने ते परिव्राजिका केहेवा लागी के हे वत्से! तु आज एम दुखित केम देखाय छे? ताहारु दुख मने कहे तो हुं ते दुखथी तने पार उतारुं ते सांनली वनमालायें गुह्यनी वात कही तेवारें परिव्राजिका बोली के हुं तने राजानी साथे काले मेलवीश, तुं कांइ चिता करीश नहीं, पछी ते परिव्राजिका हर्षवतथकी त्याथी जइ सर्व वात प्रधाननें कही प्रधानें जई राजाने सर्व वृत्तांत संन

तेडी आवी राजायें दर्षवत लाग्युं तेवार पढी प्रजातें परिव्राजिका वनमालाने राजा पासें तेडी आवी राजायें दर्षवत थइ अंत पुरमां तेने राखी अने तेनी साथें ते पंचविध विषयसुख नोगववा लाग्यो दवे वीरक कोली घेर आव्यो, तेवारें तेणें स्त्रीने दीठी नहीं पढी पाडोशी प्रमुखने पूढतो थको नार्याना विरहथी घेलो थयो थको आखा गाममा हे वनमाला हे वनमाला करतो फरतो फरतो एक दिवसें चोमासामा राजाना प्रासाद नीचें आवी नजो रह्यो तेवामां राजा पण वनमालानें साथे लइ गोंखमां आवी बेठो राजायें वीरककोलीने देखीने मनमा विचार्युं जे में पापिष्टें पारकी स्त्री लइ लीधी ए अत्यंत लोक विरुद्ध अनार्य कार्य कीधुं माटे मने धिकार छे एम मनमा घणीज पोतानी निंदा करवा लाग्यो अने वनमालायें पण विचार्युं जे में पापणीयें स्नेहवंत नरतारने त्याग्यो ए महारा विरहथी ग्रंथिल थयो माटे महारी शीगति थाशे एम बन्ने जण पश्चात्ताप करे छे तेवामां अकस्मात् उपरथी विजली पडी तेथी बेउ जणां शुभ ध्यानें मरण पामी हरिवर्ष क्षेत्रे युगलिया पणे उपन्यां त्यां समस्त मनोवांछित कल्पवृक्ष पूर्ण करे छे अने सुखें रहे छे पढी वीरक कोली पण ते बेहुनुं मरण जाणी ग्रथिलनाव त्यागी, अज्ञान तपस्या करी सौधर्म देवलोकें किल्बिषिया देवमा जइ उपन्यो त्यां अवधिज्ञानें जोयुं त्यारे जाण्युं के अरे महारा पूर्वनवना वैरी तो युगलीया थया छे, ते त्यांथी मरण पामीने वली देवता थशे माटे ए देवता न थाय एवो उपाय करुं एम विचारी ते युगलने त्यांथी उपाडीने चंपानगरीमां इक्ष्वाकुवंशनो चन्द्रकीर्त्ति राजा अपुत्रीयो मरण पाम्यो छे त्यां नगरनां लोक सर्व आपणो कोण राजा थाशे एवी चिंतामां पड्या छे एटलामां ते देवतायें ते युगलीयाने लावीने नगरीना लोकोने सोंप्या अनें कह्युं के हुं तमारे माटे ए राजा लाव्यो छुं, एने जेवारे

नूख लागशे तेवारे ए कल्पवृक्षनां फल खाय छे, तेनी सार्थे मांस मेलवीनें खवरावजो तथा आहेडो करवा शीखावजो, देवतायें मनमा विचार्युं जे ए मांस नक्षण करशे अने मांसना लोलुपी थाशे तेथी मरण पामीने नरके जाशे तो महारुं वेर वलशे एम चिंतवी हरि अने हरिणी एवुं तेनुं नाम आपी देवता पोतानें स्थानकें गयो, लोकें पण देवताना कह्या प्रमाणे तेने मांस मदिरा खवराववा शीखव्युं तेथी ते मांसना लोलुपी थया,पछी ते हरिराजाना पुत्रादिक जे थया तेनो त्यांथी हरिवंश कुल कहेवाणो, ते हरिने हरिणी मरण पामी नरकें गया एरीतें युगलीया नरकमां जाय नही ते गया माटे ए छठुं आश्चर्य जाणवुं ॥ ६ ॥ हवे सातमुं अछेरुं कहे छे आ नरतक्षेत्रने विषे विनेलनामा सन्निवेषें एक पूरण नामा शेठ रहेतो हतो ते एक दिवसें पाछली रात्रें जाग्यो थको कुटुंब जागरण करता मनमां विचार उपज्यो के, महारा घरमां घणुं धन परिवार छे ते में पूर्वला नवमां कोइ सारी धर्मकरणी कीधी छे तेना योगथी हुं संपदा पाम्यो छुं माटे फरी हमणा पण कांइक धर्मकरुं तो वली आगल पामीश, एम चिंतवी, प्रनातें स्वजनादिकने पूछी, पुत्रनें कुटुंबनो नार सोंपी, पोते तापसी दीक्षा लइने एवो अनिग्रह कर्यो के जावज्जीव सुधी महारे छठ छठ एटले बे बे उपवासें पारणो करवो अने पारणानें दिवसें चारखूणानुं पात्रुं लइने निक्षा मागवी तेमां पहेला खूणामा जे निक्षा मले ते जलचर जीवोने खवरावी देवी, पण महारे खावी नही तथा बीजा खूणामा जे निक्षा पडे ते पंखीओने खवरावी देवी तथा त्रीजा खूणामां जे निक्षा पडे ते अन्यागतने खवरावी देवी तथा चोथा खूणामां जे निक्षा पडे ते जलमां धोइनें महारे पोतें खावी एरीतें बार वरस पर्यंत तपस्या करी मरण पामीनें चमरचंचा राज्यधानीमां चमरेंद्रपणे नुवनपति देवोमां जइ

उपन्यो त्यां उपजताज अवधिज्ञानें करी जोयुं तो सौधर्मेंद्रना पग पोताना मस्तक उपर दीठा तेथी महाक्रोध उपन्यो तेवारें सर्व सामानिक देवोने बोलावीने कह्युं के हे देवो ! आ कोण दुष्ट माठा पुण्यनो धणी जे महारा मस्तकें पग देइने बेठो छे, तेवारें देवो बोल्या हे स्वामी पूर्व जन्मने विषे संपादन करेला पुण्यें करी सर्वना करतां अतिशय समृद्धि अने पराक्रम छे जेनुं एवो आ सौधर्माधिप छे ए अनादिकालनी मर्याद छे माटे इहां तमारे कोप न करवो तमारा सरखा इंद्र पूर्वें थइगया तेना उपर पण एमज पग रहेता आव्या छे माटे इर्ष्या म करो इत्यादिक देवोये कह्युं तोपण चमरेंद्र क्रोधें नड्यो थको बोल्यो के जेनी उपर सौधर्मेंद्र पग राखे एवा पूर्वें थयेला चमरेंद्र ते जूदा अने हुं जूदो माटे हुं त्यां जइ सौधर्मेंद्रने पग पकडी हेठो नाखुं, एवुं कही आयुधशालामां आवी, परशु शस्त्र हाथमां लइने सौधर्मदेवलोकें जावा लाग्यो तेवारें सर्व देवोये वर्ज्यो तोपण कोइनुं मान्युं नहीं, ते वखत सुसुमारपुरने विषे श्रीमहावीर प्रतिमा स्थित रह्या हता तेनुं शरण लइने लाखयोजननुं रूप विकुर्वी ब्रह्मांड फूटीपडे एवो शब्द करतो, पगथी धरती कंपावतो, हाथें तालोटा देतो, मेघनी परें गर्जारव करतो, वीजलीनी परें झबकार करतो, ज्योतिष्यचक्रनें त्रास पमाडतो, देवताओने जयभ्रांत करतो, देवीओ बीक पामती थकी देवोने गले वलगवा लागीओ एवा प्रकारनो कोलाहल करतो, परिघायुध फेरवतो, गर्वें करी अंध थयो थको सौधर्मेंद्र सामो धायो त्यां पोतानो एक पग सौधर्मावतंसक विमाननी पद्मवर वेदिकाने विषे अने बीजो पग सौधर्मसभामां राख्यो तेवारें सर्व सौधर्मदेवलोकना देवता जयभ्रांत थइने इहां तिहां नाशीगया चमरेंद्र बोल्यो अरे देवो तमारो इंद्र क्यां छे ? काली अमावास्यानो जन्म्यो मने बतावो तो हमणां फरसुथी मारी नाखुं एवुं देवताओने क

हीने मुखमांथी अग्निज्वाला काढाडतो थको, लांबाहोठ, कूवा सरखा गाल, खाम सरखा ना कना फोरणां, अग्नि सरखां नेत्र, सूपडा सरखा कान, कुसी सरखा दांत, गलामा सर्प हाथ मां वींछीना घरेणा, क्यांकतो उंदरो बांधेला, क्यांकतो नोलीया घोढ बांधेली, काळु रूप धा रण करेलुं एवो देखी, देवदेवीयें कोलाहल कर्यो, ते कोलाहल सांभलीनें इंद्रे अवधिज्ञाने जो युं तेवारें जाण्युं जे एतो चमरीयो अडथो घडो भरेलो छलके छे माटे हवे एने हुं शिक्षा आ पु एम विचारी, हजार देवताउंथी उपडी शके नहीं एवुं अग्निज्वाला करतुं देदीप्यमान वज्र चमरीया उपर मूक्युं ते पोतानी उपर आवतुं देखीनें चमरेंद्र बीक पामतो थको माथो नीचुं अने पग उंचा करेला एवो थको, त्यांथी नाठो तेना क्यांएक घरेणा पड्या, क्यांएक पोतें पडतो थको नासवा मांड्यो पण स्वभावें चमरेंद्रनी नीचे आववामां शक्ति घणी होय अने वज्रने उंचु चढवामां शक्ति घणी होय तेथी छेटुं रही गयुं त्यारें चमरेंद्र पोताना लाख योजन वाला विकूर्वेला शरीरनो उपसंहार करी, "शरण शरण" एवुं बोली, कुंथुआ जेवो सूक्ष्म थइने श्रीमहावीरस्वामीना चरणनी वचमां प्रवेश करतो हवो एवीरीतें वज्रथी मरतो थको श्रीमहावीरस्वामीने शरणे वेगो एटलामां शक्रेंद्रें जाण्युं जे चमरीयानी एटली शक्ति न थी जे विना शरणे इहां चाल्यो आवे माटे निश्चेथी ए श्रीअरिहंतनुं अथवा अरिहंतनी प्रति मानुं अथवा भावित अणगारनुं शरण लेइनें इहां आव्यो हशे ? तो रखे आशातना थाय नहीं ? एवुं विचारी अवधिज्ञाननो उपयोग आपी जोयुं तो श्रीमहावीरस्वामीनुं शरण लेइ आव्यो हतो एवु जाणी तत्काल वज्रनी पाछल शक्रेंद्र पण चाल्यो ते श्रीमहावीरस्वामीथी चार अगुल अप्राप्त थयेला वज्रनें पाछुं खेंची लीधुं कारणके महावीरस्वामीथी चार आंगुल

ठेटें वज्र परिभ्रमण करतु हतु पण तीर्थंकरनी आशातना टालवा माटे तीर्थंकरनी पासें वज्र
जाय नही एरीतें चमरेंद्रने श्रीमहावीरने शरणे आव्यो जाणी ग्रेही लीधो अने भगवानने कह्युं
हे प्रभु ! महारो अपराध खमजो एवुं कही लगारेक दूर जइने पगथी जमीकूटीने बोल्यो अरे चमर
हवे श्रीवीरभगवाननी कृपायें तु महारो भय म राखजे एवुं कही भगवानने वांदी तेमनी आज्ञा
लेइ शक्रेंद्र पोतानें स्थानकें गयो, चमरेंद्र पण नाना प्रकारें भगवाननी स्तुति करी, वांदीनें पोता
नी चमरचंचा राजधानीयें गयो, त्यां पोताना सिंहासन उपर उदास थइ बेठो त्यारे सामा
निक देवे आवी वधाव्यो अने कह्युं के शोच कां करो छो तेवारें चमरेंद्रें पोतानी वीतक वात
सर्व कही अने कह्युंके हे देवाणुप्रियो ! ए सर्व श्रीवीरभगवाननो उपकार छे माटे वांदवानें चा
लो एम कही सर्व देव देवीयोने लइ महोटी ऋद्धि सहित आवीने श्रीमहावीरने वांदी नाट
क करी पोताने स्थानकें गयो एरीतें पातालवासी चमरेंद्र उंचो सौधर्मदेवलोकें जाय नही ते
आ अवसर्पिणी कालें गयो माटे ए सातमु चमरोत्पात नामे आश्चर्य जाणवुं ॥ ७ ॥ हवे
आठमु अछेरु कहे छे अष्टापद पर्वत उपर उत्कृष्ट पांचशे धनुष अवगाहना वाला एक श्री
ऋषभ देव पोतें अने भरत विना नवाणुं भगवंतना पुत्र, तथा आठ भरतना पुत्र मली
एकसो ने आठ पुरुष एक समयमां सिद्धि पाम्या, ते मध्य अवगाहना वाला सीझे पण उत्कृ
ष्ट अवगाहना वाला एक समयें एकसोने आठ न सीझे, मात्र बेज सीझे अने इहां एकसो आ
ठ सिद्धा माटे ए आठमु अछेरु जाणवु ॥ ८ ॥ ॥ हवे नवमुं अछेरु कहे छे श्रीमहावीर
देव कोशंबी नगरीयें समोसर्या, त्यां चंद्रमा अने सूर्य जेनां शाश्वता विमान, ज्योतिषचक्र
मां छे ते तेज विमानमां बेसीने पश्चिम पोरसियें श्रीमहावीरने वांदवा सारु आव्या, अहिं

आ कोइएक एवुं कहे छे के उत्तर वैक्रिय विमानमां बेशीने आव्या, परंतु तेम न जाणवुं ए मूलगें विमानें बेशीनेज वांदवा आव्या छे ते, मूलगें विमाने कोइवारें न आवे अने हमणां आव्या माटे ए अछेरुं जाणवु ॥ ए ॥ हवे दशमुं असंयती, आरंनी, परिग्रहवंत, अब्रह्मचारी गृहस्थना वेषें रहेला, तेनी पूजा, सत्कार ते असयतिपूजा नामें दशमु अछेरु छे, ते आवी रीतें के श्री सुविधिनाथना निर्वाण पछी केटलोक काल व्यतिक्रम्यानंतर हुमावसर्प्पिणीना दोषने लीधे साधुउनो विछेद थयो, सर्व साधुकाल करी गया कोइसाधु रह्यो नही, ते वारें लोक बोल्या हवे कोने पूजीयें तेवारें रुषन्नदेवजीनी वारें श्रावक ब्राह्मण कहेवाता तेनो वारवलो लइ जे स्थविर श्रावक हता, तेनी पासें जइ लोको धर्म पुछवा लाग्या ते पण जेवुं जाणता हता, तेवु तेउने कहेवा लाग्या लोक पण तेमने धन वस्त्रादिक देवा लाग्या, तेथी तेउ गर्वित थया थका पोतानां मनकल्पित नवीन शास्त्र बनावी कहेवा लाग्या के जे कोइ पृथ्वी शय्या, मंदिर, सुवर्ण, रूपु, लोह, कपास, गाय, कन्या, अश्व अने गज, अमने आपे, ते आ लोकें तथा परलोकें महा फल पामे अने अमेंज सुपात्र छइयें एवो उपदेश सांनली लोके तेमने गुरु करी मान्या एवी असयतीनी पूजा चाली एम केटलाएक काले तो वली साधुनो धर्मज विछेद गयो अने जैन विना पांखमी सन्यासी प्रमुख अन्य दर्शनीज पूजाववा लाग्या, प्रथम सदा सर्वदा सयतीनी पूजा थती हती तेथी विपरीतपणायें करीने श्रीशीतलनाथजिननां तिर्थ वेसतां सुधि आश्चर्य चाल्युं, इहाजे साधु नहोय अने साधुपणे पूजाय ते आश्चर्य जाणवुतेमज श्रीतीर्थंकरोनुं तीर्थविछेद नथाय ते विछेद थयो ते पण आश्चर्य जाणवु ए दशमु अछेरुं छे ए रीतें ए दश आश्चर्य आ चोवीशीमां थयां वली अनते कालें थशे ॥ १० ॥ हवे दस अछेरां

कया कया तीर्थंकरनी वारें थयां ? ते कहे छे श्री रूषभदेवना वारामां एकशो ने आठ सिद्ध थया ॥ १ ॥ श्री शीतलनाथना वारामां हरिवंश कुलनी उत्पत्ति थइ ॥ २ ॥ श्री मल्लीनाथना वखतमां स्त्री तीर्थंकर थइ ॥ ३ ॥ श्री नेमिनाथना वखतमां अमरकंका नगरीयें श्रीकृष्णनुं गमन थयुं ॥ ४ ॥ अने श्री सुविधिनाथना वारामां असयती ब्राह्मणोनी पूजा थइ ॥ ५ ॥ ए असंयतीनी पूजा तो श्री आदिनाथना वखतमां पण मरीचि कपिलादिकनी सांजलियें छैयें एम घणु करीने बीजा तीर्थंकरोना वारामां पण प्रवाहें थाय छे ॥ ॥ अने पांच अछेरां श्री महावीर स्वामीने वारें थयां ॥ १० ॥ ॥ इति अछेरा अधिकार संपूर्ण ॥ ॥ हवे इंद्र महाराज विचारे छे के जगवान श्रीमहावीर स्वामी माहणकुंम नगरें रूषजदत्त ब्राह्मणनी जार्या देवानंदानी कूखमां उपन्या ए आश्चर्य थयुं, जे माटे तीर्थंकर, चक्रवर्त्ती, बलदेव अने वासुदेव एमनो जो नीचगोत्रकर्मक्षय न थयो होय, वेद्यो न होय, निर्जर्यो नहोय, ते कर्म उदय आवे तेना उदयें करीने श्रीअरिहंत, चक्रवर्त्ती बलदेव अने वासुदेव ते पण अंतप्रांत तुछ दरिद्री प्रमुख कुलमां आव्या, आवे अनें आवशे कूखने विषे गर्जपणे उपन्या छे, ऊपजे छे अनें उपजशे पण जे योनी मारगे जन्म पणे निकलवुं ते कोइ निकल्या पण नथी निकलता पण नथी अने निकलशे पण नही एटले जन्म्या पण नथी, जन्मता पण नथी अने जन्मशे पण नही ॥ १९ ॥ ॥ एवीरीत छे पण ए जगवान श्रीमहावीरस्वामी, माहणकुंमनगरमां रूषजदत्त ब्राह्मणनी जार्या देवानंदा तेनी कूखमां आव्या ॥ २० ॥ तो हवे महारो ए आचार छे के जे वखते जे इंद्रहोय ते इंद्र ते वखतें अरिहंत, चक्रवर्त्ति, बलदेव, वासुदेव ए जो अतप्रांत तुछ दरिद्री प्रमुख यावत् ब्राह्मणना कुलोमां आवी उपन्या होय तो

तेने अंतप्रांतादिक नीच कुलोमांथी लइने, उग्र, नोग, राजन्य,क्षत्री, हरिवंश इत्यादिक उत्तम कुलोमां संहरावे, ए कुलोमां लावी मूके, नीच कुलमां जनम थवा आपे नही, ए सर्व त्रणे कालनां जे इन्द्र होय तेमनी मर्याद छे तो निश्चे हुं पण नगवान श्रीमहावीरस्वामीने देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखमांथी लइने न्यातक्षत्री, जात सिद्धार्थक्षत्री, तेमनो काश्यप गोत्र, तेनी नार्या त्रिशला क्षत्रीयाणीनी कूखमां गर्नपणे मूकुं,एवुं तेमना नाग्य प्रमाणे विचारीनें इन्द्रमहाराजें, हरणीगमेषी नामा देव जे पायदल कटकनो मालेक छे तेने बोलावीने एवीरीतें कह्युं ॥२१॥ के निश्चे हे देवाणुप्रिया' आ वात थइ नथी,थाती नथी ने थासे पण नही जे श्रीअरिहंतादिक शिलाका पुरुषो छे ते अंतप्रांतादिक नीचकुलोमां आव्या, आवे अने आवशे ॥ २२ ॥ अने जो कोइ नीचकुलमा आवेतो ते, लोकोमां अछेरो कहेवाय, अनंता उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी कालथी जो कोइ अरिहंतादिकोनो नीचगोत्रकर्मनो क्षय न थयो होय, वेद्युं नोगव्युं न होय ते उदय आवे तो श्रीअरिहंतादिक नीचकुलमां आवे खरा पण तेनो ते नीचकुलमां योनि मार्गें जन्म नथाय ॥ २३ ॥ अने ए नगवान श्रीमहावीरस्वामी, जंबूद्वीपना नरतक्षेत्रमां ब्राह्मणकुंमगामे ऋषनदत्तब्राह्मणनी नार्या देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखमां उपन्या ॥ २४ ॥ तो अतीत, अनागत अनें वर्त्तमान ए त्रणेकालें जेवारें जे इन्द्र होय तेनो ए आचार छे जे श्री अरिहंतादिक जो नीचकुलमां आवी उपजे तो तेने उग्रादिक उंच कुलोमां जइ मूकवुं॥२५॥ तेमाटे हे देवाणुप्रिया' तमे जाउ ते नगवान श्रीमहावीर स्वामीनें ब्राह्मणकुंमगाम नगरने विषे ऋषनदत्त ब्राह्मणनी नार्या देवानंदानी कूखमांथी लइने, क्षत्रीयकुंम नगरने विषे सिद्धार्थक्षत्री राजा तेनी नार्या त्रिशला क्षत्रियाणी छे तेनी कूखमां गर्न पणे जइ मूको अने

त्रिशला क्षत्रियाणीनो जे गर्भ छे ते देवानदा ब्राह्मणीनी कूखमां मूको आ मह्रारी आज्ञा तत्काल करीनें पाछी सोंपो अर्थात् ए काम करीने पाछुं मने आवी कहो के जे आपे फरमास करी ते काम हुं करी आव्यो छुं एवुं कहो ॥ २६ ॥ ॥ इहां कोइ प्रश्न करेके इन्द्रमहाराजनें एज विचार केम उपन्यो जे देवानदानी कूखमांथी अपहरीने त्रिशलाराणीनी कूखमां संक्रमण करावो केमके ते वखतमां बीजा पण श्रेणिक प्रमुख महोटा महोटा राजा हता तेमने तो संभाल्या नहीं अने ए सिद्धार्थ तो सामान्य राजा हतो तेने याद कर्यो तेनुं शुं कारण हशे? एनो उत्तर एम छे जे सहु सहुनां पोत पोतानां भाग्य प्रमाणे देवोने पण करवानी बुद्धि उपजे छे, कर्मथी उपरांत करवानी शक्ति देवोमां पण नथी इहां पण पूर्वला भवमां त्रिशलाराणीनो जीव देराणी हतो अने देवानदानो जीव जेठाणी हतो बन्ने एक घरमां रहेती हती, परंतु कषाय महा बलवान छे जो जीव रुडुं करवानी चाहना करे तो कषाय माठुं करी आपे हवे लोभना वशथी जेठाणीयें देराणीनो रत्नकरंडीयो चोरी लीधो देराणीयें संभाल्यो पण लाधो नहीं तेवारे बे जणीयोने घरनी मांहोमांहे घणाघणी बोलाचाली थइ तोपण जेठाणीयें करंडीयो आप्यो नही तेना प्रभावथी कर्म बंधाणुं ते कर्म देवानदानें उदय आव्युं, त्रिशलानी देवावार हती तेथी इन्द्रने पण एवोज विचार स्वाभाविक पणे आवीगयो जे त्रिशलाराणीनेंज पुत्र रत्न देवराबुं तेमाटे हे भव्य प्राणीयो तमे जूउ के जे जीव जेवुं शुभाशुभ करशे ते जीवने तेवुं शुभाशुभ मलशे ए उत्तर कहेवुं इहां कदापि कोइ अन्यदर्शनी पूछे के ए भगवानने गर्भमां जे आघो पाछो कर्यो ते तमे दीठो तो नथी तेवारें अमे केम मान्य करीयें? एवो प्रश्न करे तेने कहेवुं के तमारा मतमां पण भागवतना दसमस्कंधना बीजा अध्यने बलदेवनुं

परावर्त्त थयुं ठे वली पुराणने विषे पण पुरुषोने गर्भ उत्पन्न थया ठे ते वेवताय काढया ठे ए उपर मांधाता राजानी कथा कहे ठे—विशाला नगरीयें वनराजा महाधनवान ठे परंतु ते अपुत्रीयो ठे माटे पुत्र थवा सारु शोजशो स्त्री परण्यो तो पण तेने पुत्र थयो नही तेथी ते राजा घणो चिंतातुर थयो जेमाटें शास्त्रमा कह्युं ठे के “ अपुत्रस्यगतिर्नास्ति, स्वर्गोनैवचनैवच ॥ तस्मात्पुत्रमुखदृष्ट्वा, स्वर्गगछतिमानवा ॥ १ ॥ ॥ अपुत्रियाने गति न होय ते अवगतियो थाय तेवारे ते राजायें कोइकना उपदेशथी अठाशी हजार तापस ऋषियोने नोतरीनें जोजन कराव्युं तेत्रीशक्रोड वेवता आराध्या, तथापि कोइमा पुत्र आपवानी शक्ति न दीठी तेवारें अठ्यासी हजार ऋषियोने पूछ्युं जे स्वामी तमें पेटज जरी जाणो ठो पण महारुं काम करता नथी एवु राजानुं बोलवु सांजली एक तापस बोल्यो जे हे राजन्! ताहारे पुत्र थाय एवो उपाय हुं जाणु ठुं, हुं तुजने सोनाना कचोलामा पाणी मत्रीने आपु ते पाणी ताहारी स्त्रीनें पीवरावजे तेथी ताहारे पुत्र थाशे पठी राजा पाणी मत्रावीने कचोलो जरी घेर लइ आव्यो एटलामां तो सर्व राणीयोये पुत्र संबंधी वात सांजलीने प्रत्येक जुदीजुदी राणी राजाने कहेवा लागीके पाणी अमने आपो एम मांहोमांहे क्लेश थवा लाग्यो, राजायें विचार्युं जे हवे हुं कोने पाणी आपु अने कोने न आपु! एम चितवी कोइने पाणी आप्युं नही पठी ते कचोलुं लेइ वस्त्रे ढांकी पाणीयारा उपर राखीने राजा पोताने आवासें आवी सूइ रह्यो एटलामां रात्रीयें राजाने तृषा लागी त्यारे पाणी मगाववा सारुं पासे कोइ माणस हतो नही पण एक दासी तेनी शय्या पासे सूतीहती तेने कह्युं के अरे दासी तृषा लागी ठे माटे पाणी लइ आव ते दासीयें जइ मंत्रेलुं कचोलुं पाणीनुं जरेलुं हतुं ते आणी आप्युं

राजायें पण श्रजाणतां पीधुं ते पाणीना प्रनावथी राजायें गर्न धारण कस्यो दिवसें दिवसें पेट वधतुं गयुं तेथी राजा लज्जायमान थयो थको सनामां पण श्रावे नही, प्रधाने विचास्युं जे ए घणु खोटुं काम थयुं पछी राजाने कही पाछा श्रठाशी हजार रूपीउंने नोतस्या श्रने उंजनो दीधो जे तमे श्रा शुं कस्युं ? हवे करार करो पछी रूपीउंयें तेत्रीश कोटी देवतानु श्राराधनकर्युं तेवा रें इंडे श्रावी पोताना सेवकोने हाथे राजानुं उदर विदारीने मांहेथी गर्न काढयो तेवारे सर्वे बोल्या जे ए धावी शकशे नही पछी इंडे स्त्रीनुं रूप करी धवराव्यो क्रमेक्रमे वधवा लाग्यो तेनु मांधता एवुं नाम दीधु इत्यादि श्रनेक वार्ता छे माटे गर्न पण परावर्त्तन थाय छे ए वात नि संदेह छे इति मांधाताहष्टांत ॥ हवे इंडे हुकुम कस्या पछी हरणीगमेषी देवता पालाकटकनो मालेक ते खुशीथइने हायजोडीने मस्तकें श्रंजली करीने श्राज्ञाने विनय सहित प्रमाण करीने इन्द्रमहाराजनी पासेथी निकलीनें ते हरणीगमेषी उत्तरपूर्वनी वचमानी इशानखुणमा श्रावीनें वैक्रियसमुद्घात करे ते केवीरीतें तोके पोताना जीवना प्रदेश शरीरमांथी बाहेर काहाढीने समुद्घात करे संख्याता योजननो उंचो दंमकरे, जीव प्रदेश कर्मपुजलनो समूह दंमरूप करीने प्रगट करे ते दंम रत्नमय करे ते रत्न केवी जातिउंना होय ते कहे छे १ कर्केतनरत्न, २ वैरुर्यनीलरत्न, ३ वज्ररत्न, ४ लोहिताक्षरत्न, ५ मसारगल्लरत्न, ६ हंसगर्नरत्न, ७ पुलकरत्न, ८ सोगंधिकरत्न, ए ज्योतिःसाररत्न, १० श्रंजनरत्न, ११ श्रंजनपुलकरत्न, १२ जातरूपरत्न, १३ सुनगरत्न, १४ श्रंकरत्न, १५ स्फाटिकरत्न, १६ श्ररिष्टरत्न, ए शोल जातिनां रत्न तेना असार पुजलने गंमीने सार पुजल ग्रहण करे ॥ २७ ॥ करीने उत्तर वैक्रिय धारण करे, मूलरूप तिहांहिज राखे, नवु रूप करीनें, मनुष्यलोकमां श्रावे, केवीगतिथी मनुष्यलोकमां श्रावे ते कहेछे एक चपल, बी

जी चपला, त्रीजी जयणा अने चोथी वेगा ए चारगतियें करीनें चालतां तो केटलोएक काल वीतीजाय तोपण मनुष्यलोकमां आवी शके नही? ते चारगतिनुं प्रमाण कहेछे २८३५८० एटले बे लाख त्रियाशीहजार पांचसेंने एंसीयोजन अने एक योजनना सात भाग करीयें तेवा छ भाग उपर एटला क्षेत्रनुं एक मगलु नरतो चाले ते प्रथम चंडा गतिनुं प्रमाण जाणवुं तथा ४७२६३३ एटले चारलाख बहोंतेर हजार छसेंनें तेंत्रीश योजन अने त्रीश कला उपर एटला क्षेत्रनुं एक मगलु नरतो चाले ते बीजी चपलागतिनुं मान जाणवुं तथा ६६१६८६ एटले छ लाख एकसठ हजार छसो छयाशी योजन अने चोपन कला उपर एटला क्षेत्रनुं एक मगलुं नरतो चाले ते त्रीजी जयणागतिनुं मान जाणवुं तथा ८५०७४० एटले आठ लाख पचाश हजार सातसें चालीश योजन अने अढार कला उपर एटला क्षेत्रनुं एक मगलुं नरतो चाले ते चोथी वेगागतिनुं मान जाणवुं ए चार गतिना प्रमाण कह्यां हवे ए गतियोना प्रमाणथी जो देवता चाले तो छ महीना सुधीमां पण आ मनुष्य क्षेत्रमां आवी शके नही तेमाटे दिव्य देवगतियें करी असंख्याता द्वीप समुद्र उल्लघन करतो थको जिहां जंबूद्वीपनुं नरतक्षेत्र तिहां ब्राह्मणकुंम गाम नगर तेमा रूपनदत्त ब्राह्मणनो घर तेमा जिहां देवानंदा ब्राह्मणी सुती छे तिहां आव्यो, आवीने नगवानने देखी प्रणाम करीने, देवानंदा ब्राह्मणीना सर्व परिवारने अवस्वापिनी निद्रा देइनें अशुन पुजल दुर करीनें शुन पुजल (घालीने) प्रक्षेप करीनें कहेतो हवो के हे नगवन् आज्ञा आपो एवु कहीने,नगवानने पीडा रहित देवप्रनावे करीने हाथमां ग्रहण करी करसंपुटमां लइने, जिहां क्षत्रियकुंम नगर त्या सिद्धार्थ क्षत्रिय राजाना घरमां जिहां त्रिशला क्षत्रियाणी छे तिहां आवीने तेना सर्व परिवारनें

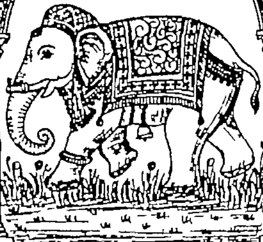

चित्र ९
देवानदा ब्राह्मणी सूतेली छे


चित्र १०
दासी
त्रिशला राणी सूता छे
हरणी गमेषी देव गर्भ सक्रम करे छे

अवस्वापिनी निज्ञा आपीने अशुन पुज्ल वादेर काढाडीनें शुनपुज्ल प्रक्षेपीने नगवाननें पीडा
रहित त्रिशलाराणीनी कूखमां मूक्या वशमाधारथी देवे प्रवेश कस्यो अने नाभिथी पाछो नि
कल्यो एवु वृद्ध वाक्य छे पछी त्रिशलाना गर्नमां पुत्री हती तेने त्यांथी लइनें देवानदानी कूखमां
गर्नपणे मूकीने जे दिशाथी देवता आव्यो हतो ते दिशायें पाछो चाल्यो गयो ॥ २८ ॥ तिहां
चंडा चपलादिक घारगतिथी अधिक दिव्य देवगतियें करीने तीर्छा असंख्याता द्वीप समुद्रमांथी
थइने लाखयोजनना प्रमाणवाला शरीर सरखा पग मूकतो थको उंचो जिहां सौधर्म देवलोकमां
सौधर्मावतंसक नामे विमान छे तथा शक्रसिंहासन छे अने जिहां शक्रेंद्रनामे देवताउंनो राजा
छे तिहां आव्यो आवीनें शक्रेंद्रने पाछी आज्ञा सोंपी अर्थात् एम कह्युंके तमे कह्यु ते सर्व काम
करी आव्यो छुं ॥ २९ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे, श्रमणनगवत श्रीमहावीरस्वामीने वर्षा
कालनो त्रीजो महीनो पांचमु पखवाडियुं आसु वदि तेरशने दिवसें व्याशीमी रात वीतीगइ
अने त्र्याशीमी रातना वर्त्तमानमां पोताना हितने लीधे अथवा नगवाननी अनुकंपाने लीधे
इंद्रे मोकलेला हरणीगमेषी देवता तेणे ब्राह्मणकुंडगाम नगरमां ऋषनदत्तब्राह्मणनी नार्या
देवानदा ब्राह्मणी छे तेनी कूखमांथी लइने जिहां क्षत्रियकुंड गामनगरे सिद्धार्थक्षत्रिय राजा
नी त्रिशला क्षत्रियाणी राणी छे तेनी कूखे मध्यरात्रिनेविषे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो
योग आव्यां थकां पीडा रहित मूक्या ॥ ३० ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे नगवान
त्रणज्ञान सहित आवी उपन्या तिहां मुजने इहांथी संहरण करशे एवुं जाणे पण
संहरणनी वेला सूक्ष्म छे माटे ते जाणे नही अने संहरण कस्या पछी जाणे जे मने संहरण
कर्यु एवुं जाणे जे रात्रिमां श्रमणनगवत श्रीमहावीर स्वामीनें देवानदानी कूखथी लइने त्रि

राजा क्षत्रियाणीनी कूखमां गर्जपणें मूक्या ते रात्रियें देवानदा ब्रह्मणी पोतानी सुकोमल शय्यामां सूति कांइक जागतीने सुपनु आव्यु के महारा जे महामगलकारी चौद स्वप्नां हता ते त्रिशलाक्षत्रियाणीयें खेंची लीधां एटले हरणकर्यां एवु सुपनु देखीने जागी ॥ ३१ ॥ ॥ जे रात्रिमां श्रमणजगवत श्रीमहावीरस्वामीने देवानदानी कूखमांथी लइने त्रिशलाक्षत्रियाणी वासिष्ट गोत्रवाली तेनी कूखमां मूक्या ते रात्रिमां त्रिशला क्षत्रियाणी शय्यामां सूती हती ते शय्यानु स्वरूप आवीरीतें कसु ठे तिहां प्रथमतो जेनुं स्वरूप कहेवामां आवे नही एवुं तो वसवानुं घर ठे ते घर कहेवुं ठे तोक ते घरनी मध्य एटले जींतनी माहेनी वाजु चित्रें चित्रित ठे अने जींतनी बाहेरनी वाजुने घसीने धोली चलकावार करी ठे एवु ते घर ठे जिहां उपरनो जाग चित्राम सहित ठे अने जमीननो जाग तो जेवो मणिरत्नोनो उद्योत होय तेवो ठे तेथी ते घरमां सर्व अधकारनो नाश थइगयो ठे, अने नित्य उद्योत रहे ठे वली जेने विषे जमीन उपर अनेक मांकणामाकधा ठे एवु आगणु ठे वली आगणे सरस सुगधि पांच वर्णना फूलनां पुज मूकेला ठे ते फूलोनी रचना सहित ठे तथा कृष्णागर जलो कुंदरु शिलारस तेनो धूप तेणे घमघमायमान ठे तेणे करी मनोहर ठे सुगध प्रधान चूर्णनो गध ठे जिहां, गंधवट्टी समान ठे तिहां पुण्यवतने योग्य जेनु वर्णन करवामां न आवे एवी शय्या ठे तेने विषे शरीर प्रमाणे बे पासें उंशीसा तकीया राख्या ठे, बे पासे गालमसूरीयां मूकेलां ठे, बे पासें उची ठे,मध्यमां उंमी ठे, जेम गगानदीनी रेतिमां पग मूकीयें ते नीचो जाय तेम जेमां पग मूकतां नीचो जाय ते समान नीखाखा अतलसना पटकूल वस्त्रें ते खाट ढाकी ठे, जली मच्छरदानीयें रचित, रजराखवाना वस्त्र लाल रमणीक सुकोमन वस्त्रे ढांकी ठे, आकडानां फल मांहेलो कपास तथा माखण ते सरखो ते श

चित्र ११





ध्यानो स्पर्श छे, नडुं सुगंधित चूर्ण तथा फूलो जेने विषे विछाव्यां छे, एवी शय्या ते शय्याने विषे मध्यरात्रिना अवसरमां त्रिशलाक्षत्रियाणी अल्पनिद्रामां सुती छे ते वेलायें गजवृषनादिक चौद स्वपनां देखीनें जागी ॥३१॥ ॥ तेवारें ते त्रिशलाक्षत्रियाणी ते चौद स्वप्नामांथी पहेले स्वपनें हाथी देखे ते हाथी कहेवो छे तो के? चार दांत वालो छे, घणो ऊंचो छे, जेवा मेघ नां गंटा धोला थाय तेवो धोलो छे, तथा जेवो मोतीनोहार, क्षीरसमुद्रनुं पाणी, चंद्रमाना किरणो, पाणीना कणीयां, अने रुपानो पर्वत एना सरखो धोलो छे, वली ते हाथीनाकुंन स्थलमांथी मद झरे छे तेथी तेना कपोल पासें जमरा गुंजारव करी रह्या छे, इंद्रना ऐरावत सरखो महोटो देखाय छे, ते हाथी मेघनी पेरें गंजीर शब्दें गाजतो थको छे, शुज उत्तम सर्व लक्षणे करी सहित, महोटा पेट वालो एवो हाथी पहेले स्वप्ने त्रिशलाक्षत्रियाणीयें दीठो ॥ १ ॥ ३३ ॥ ॥ तेवार पछी बीजे स्वप्ने त्रिशलाक्षत्रियाणी वृषज देखे ते वृषज कहेवो छे तोके? धोला कमलना समूह सरखो श्वेत छे, तथा पोताना शरीरनी कांतियें करी सर्वदिशा उमा उद्योत करतो थको छे, तथा घणी शोजाना समूहे करी शोजित एवी स्कांधनी शूंनि छे जेनी एवो छे वली तेना शरीरमां पातला केश छे ते केश जाणे तेलें चोपड्या होयनहि? एवा छे, घणो रुडो स्थिर शरीर छे, वली जिहां जेवुं अंग जोइयें त्यां तेवु अंग छे, जेनुं एटले जिहां पातलुं अंग शोजे तिहां पातलुं छे अने जिहां जाडुं अंग शोजे तिहा जाडुं अंग छे तथा दृढ गोल शोजायमान मलरहित तेलादिकें चोपड्या तीखां एवा बे शींगडा छे जेनां तथा मोती सरखा उजला बरोबर सरखा शोजता दांत छे जेना एवो वृषज ते जाणीयें अनेक मंगलनुज मुख होय नहि? तेने बीजा स्वप्नामां त्रिशलायें दीठो ॥२॥३४॥ ॥ तेवार पछी त्रीजा स्वप्नामा त्रिशला राणी

सिंहने देखे ते सिंह कहेवो छे तोके? मोतीनोहार, खीरसमुद्रनुं पाणी, चंद्रमाना किरण, पाणीना कणीया, तथा रूपानो पर्वत तेना सरखो धोलुं शरीर छे जेनुं वली ते सिंह रमणीक देखवा योग्य छे, तथा दृढ छे हाथ प्रमुखना अवयव जेना, वली उज्वल गोल अने तीक्ष्ण एवी जेना मुखमा दाढा छे तेणे करी मुख शोभतुं छे जेनुं, वली कमल सरखा सुकोमल राता एवा जेना होठ छे, राता कमलना पत्रनी परें सुकोमल तालवुं छे, जीभ बाहेर काढाडतो थको लपलपायमान करतो थको शोभे छे, वली पीला अने वीजली सरखा चलकता चपल जेनां नेत्र छें, वली विस्तीर्ण पुष्ट अने माता एवा साथल छे जेना, स्कंध जेनुं दृढ प्रतिपूर्ण निर्मल छे, वली सुकोमल छे जला विस्तीर्ण एवां जे सिंहकेसरा रूडां केसरा एटले मुखना केश जाणवा तेने आटोपे करी शोभित छे मुख जेनुं, वली जमीन उपर पछाडीने फटकारीने उंचु कर्युं छे पुछ जेणे एवा पूछडानो अंत एटले छेडो काननी वचमां छे वली सौम्याकारवालो लीला करतो थको आकाशमांथी उतरतो थको त्रिशलाना मुखमां पेसतो थको तीक्ष्ण नखवालो सिंह त्रिशलायें त्रीजा स्वप्नामां दीठो ॥ ३ ॥ ३५॥

॥ ते वार पछी चोथा स्वप्नामां त्रिशलाक्षत्रीयाणी संपूर्ण पूर्णिमाना चंद्रमा सरखुं छे मुख जेनुं एवी लक्ष्मीदेवताने देखे ते लक्ष्मी किहां रहे छे ते कहे छे उंचो हिमाचल पर्वत तेनी उपर एक पद्मद्रह छे ते द्रहमां एक कमल छे तिहां रहेवा वाली लक्ष्मी देवता तेनो पगथी लइने सर्व अंगनी शोभानुं वर्णन श्रीभद्रबाहुस्वामी करे छे केमके प्रायें देवताना रूप वर्णनमां पगोथी वर्णन करव छे माटे अहीं पण पगोथी मांडीने वर्णन करे छे, ते लक्ष्मीदेवीना पग जे प्रकारें करी [illegible]

चित्र १२





पठवाडे नम्या एवा छे तथा त्रांबा सरखा नख छे, कमल सरखा कोमल आंगला छे तथा पिंमिडे केल सरखी गोल छे नीचेनीचें पातली अने उपरउपर जाडी एवी जंघापिंमियो छे तथा गुप्त मांसथी नरेला छे माटे गुप्त छे हाड देखाय नही तथा ऐरावत हाथीना सरखो जं घानो वचलो प्रदेश सोने छे, सोनानी कटिमेखला छे केडमां जेनी, वली लक्ष्मीदेवीनी मूटी थी लइनें स्तन सुधी रोमराजी छे, प्रायें स्त्रीयोना शरीरमां रोमराजी होती नथी तेमां वली देवताने तो सर्वथा नहीज होय तोपण कवीश्वर शृंगाररस वर्णन करतो बोले छे, हवे ते रो मराजी कहेवी छे तोके कज्जलनीपेरे तथा नमरानी श्रेणीनी पेरे श्याम छे, मेघघटा सरखी काली छे, सरल मलेला थका सुकोमल, मनोहार विलास सहित सरस सूका फूल सरखा को मल छे, वली नाजिमम्ल नर्त्तु छे जेनुं, मुष्टीमां समाइ जाय एवी कटि छे, पेटमा त्रण सल पड्या तेथी शोनाये मान छे, वली सर्वांगोपागमां घरेणा आजूषण पहेरेलां छे जेने ते घ रेणा कहेवां छे तोकें अनेक प्रकारना मणियोयें करी जडेला छे, रत्नोयें करी सोनामां मढ्या छे, वली रूदयमां बे स्तन छे ते जाणे सोनाना कलश ज होय नहि ? एवां छे, वली ते स्तन हारें करी तथा कुंदमालायें करी व्याप्त छे तथा नला मोतीयोनां जालीयां तेणेकरी विराज मान सोनैयानी माला थयाएक मणिसूत्रनो दोरो छे तेणेकरी कंठ शोजायमान छे, बे कानोमा कुं मल बे शोजे छे, एवा घरेणाना समुदायथी लक्ष्मी देवतानुं मुख शोजे छे, जेम राजा कुटुंबथी शोजे छे तेम लक्ष्मीदेवीनुं मुख घरेणाथी शोजे छे वली निर्मल कमलनी पांखडी सरखा दीर्घ तीखां अने अणीयालां एवां महोटा नेत्र छे जेनां बे हाथमां कमल छे तेमांथी पाणी टपकावती थकी छे, वली लीलाने वास्ते हाथमां कमलवींजणो धरेलो छे, ते जेवारें कमल लीलाने सारु

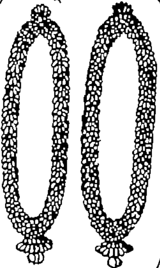
हलाने तेवार कमलमांथी सुगध नीकले वली लक्ष्मीदेवीने मस्तकें वेणीदंम घणो निर्मल नलो फालो ठे लांबो केड सुधी शोने ठे एवी ठे ए नरवथी मामीने मायानी वेणीसुध। वर्णन कस्यु एवी लक्ष्मीदेवता पद्मद्रहना कमलमा वसती हिमाचलनामा पर्वत उपर बेठी थकी दशदिशायी शोनायमान ठे वली हाथी श्रावी सूंढमा पद्मद्रहथी जल नरीनें लक्ष्मीदेवीने स्नान करावे एवी लक्ष्मीदेवताने त्रिशलाक्षत्रियाणीयें चोथा स्वनमा दीठी॥ हवे हिमाचल पर्वत उपर लक्ष्मी देवता नो निवास ने तिहां ए देवीनो परिवार केटलुं ठे तथा निवास केवा प्रकारनो ठे ते कहे ठे आ नरतखेत्रना ठ खम ठे तेना अतमां उत्तरदिशा तरफ एक चुलहिमवत पर्वत सोनानो ठे ते एकसो योजन उचो ठे, तथा एक हजार बावन योजन अने बार कला उपर, एटलो पोहोलो ठे, तेमध्यें पद्महद ठे, ते दश योजन उमो, हजार योजन लांबो, पांचशें योजन पोहोलो ठे संपूरण जलेकरी नर्यो शाश्वतो ठे, तेनु तलीयुं वज्ररत्नमय ठे, चोफेर पण वज्रमय ठे, ते हदना मध्यनागें एक कमल ठे, ते कमलनुं नाल दश योजननु दीर्घ ठे, जलथी उपर बे कोश उंचु ठे, एक योजन पोहोलु ठे, एक योजन दीर्घ ठे, काइक जाजेरा त्रण योजननी परिधी ठे, दश योजन पाणीमां नाल ठे, तेनु वज्र रत्नमय मूल ठे, रिष्ट रत्नमय मूलनो कांदो ठे, इन्द्रनील रत्नमय नाल ठे, राता सुवर्णमय बाहेरना पांदडा ठे,कांइक जांबूनद सुवर्णमय अन्यंतरनां पांदडां ठे, तेमां सुवर्णमय कर्णिका ठे, एटले वचली मोमी ठे,ते बे कोश पोहोली अने एक कोश उंची ठे, तिहां रातां सोनाना केसरां ठे ते कर्णिकामां श्री लक्ष्मी देवीनुं नवन ठे,ते एक कोश लांबु, अर्द्ध कोश पोहोलु अने चवदशें चालीश धनुष उंचु ठे,ते घरनां बारणां पूर्व,दक्षिण अने उत्तर एवी त्रण दिशायें ठे, ते बारणां पांचशें धनुष उचां अने अढीशें धनुष पोहोलां ठे, वली ते घरमां

अढीशें धनुष प्रमाण एक मणिमय पीठिका छे, ते पीठिका उपर लक्ष्मी देवीनी शय्या छे, हवे तिहां ए देवीना मुख्य कमलनी पांखडियें लक्ष्मी देवीने आजरणादिक मूकवानां वलयाकारें एकशो ने आठ कमलो छे, ते कमलोनुं सर्व उच्च नीचपणु मुख्य कमलथी अर्द्ध प्रमाणे जाणवु ए एकसोने आठ कमलें करी ते मूल कमल वींटेलुं छे, जेम गढें करी नगरी विंटायेली होय छे, तेम जाणवुं, हवे ते मूलगा कमलना बीजा वलयनी पूर्व दिशायें महर्द्धिक चार देवीउने वसवानां चार कमल छे, तथा वायव्य कोण, उत्तर दिशा, अने ईशानकोण, ए त्रणे दिशायें देवीना सामानिक देवताने वसवानां चार हजार कमल छे, तथा श्री देवीनी अभ्यंतर पर्षदाना जे आठ हजार गुरुस्थानीय देवता छे, तेने वसवानां आठ हजार कमल, अग्नि कोणें छे, तथा मध्य पर्षदाना दश हजार मित्र स्थानीय देवताने वसवानां दश हजार कमल, दक्षिण दिशायें छे, तथा श्री देवीना बाह्य पर्षदाना किंकर स्थानीय बार हजार देवताने वसवानां बार हजार कमल, नैरुत कोणें छे, अने श्रीदेवीना हाथी, घोडा, रथ, पायक, महिष, नाट्य, गंधर्व ए सात कटकना स्वामीने रहेवानां सात कमल, पश्चिम दिशायें छे हवे वली लक्ष्मी देवीना अंगरक्षक शोल हजार देवताने वसवाना शोल हजार कमल, ते त्रीजा वलयनी चार दिशामांहेली प्रत्येक दिशाने विषे चार चार हजार कमल करता शोल हजार कमल छे, तथा चोथा वलयने विषे श्री देवीना अभ्यंतर आभियोगिक बत्रीश लाख देवताने वसवाना बत्रीश लाख कमल छे, तथा पांचमां वलयने विषे श्री देवीना मध्यम चालीश लाख आभियोगिक देवतानां चालीश लाख कमल छे, तथा छठा वलयने विषे श्री देवीना अडतालीश लाख बाह्य आभियोगिक देवतानां अडतालीश लाख कमल छे, एव

मूल कमल सहित सर्व मळी ढ वलयनां एक क्रोड, वीश लाख, पच्चाश हजार, एकसो ने वीश कमल जाणवां ते कमलनां मान मुख्य कमलथी मांमी अनुक्रमें अर्द्ध अर्द्ध प्रमाण लेवा ए सर्व कमलवासी देवता श्रीदेवीनो परिवार जाणवो ए देवी नवनपति मांहेली जाणवी ॥ ए चोथुं स्वप्न कह्युं ॥ ४ ॥ ३६ ॥ इहां बीजो वखाण संपूर्ण थयो ॥ २ ॥ ॥

हवे त्रीजो वखाण कहे ढे तेवारपढी वली त्रिशलाराणी पांचमां स्वप्नमा फूलोनी माला देखे ते मालामां रस सहीत कल्पवृक्षना फूल, तेणे करी घणी मनोहर ढे, वली चंपानां फूल, अशोकनां फूल, पुन्नागनां फूल ते नागप्रियंगु सरखा ए फूलनां फाड थाय ढे, मोगरानां फूल, मालतीनां फूल, जायनां फूल, जूइना फूल, कोष्मज फूल ते कोइ वेलि विशेषना फूल, कोजनां फूल, कोरंटनां फूल, दमणाना फूल, नवमालिकाना फूल, बकुलवृक्षनां फूल, तिलवृक्षनां फूल, वासतिकानां फूल, पद्मकमलनां फूल, उत्पलते पुंडरीकनां फूल, कुंदमचकुंद वृक्षनां फूल, अगथियाना फूल, आम्रमांजर एवा प्रकारनां फूलोनी घणी सुगध ढे जेमां एवी वे फूलोनी माला तेनी मनोहर गधथी खेंचाणा थका आव्या एवां जे नमरा नमरीयो तेनो गुंजारव शब्द जेनेविषे थइ रह्यो ढे वली ए बेउ मालामा सर्व ऋतुनां फूल सुगधा पांच वर्णी ढे परंतु तेमां धोलो वर्ण विशेष ढे, ते ज्यां ज्यां जे जे फूल शोने त्यां त्यां ते ते फूल गुंथ्या ढे एवी बे माला पांचमां स्वप्ने त्रिशलादेवीयें दीठी ॥ ५ ॥ ३७ ॥ ॥ तेवार पढी ढठा स्वप्नमा त्रिशला देवी चंद्रमा देखे ते चन्द्रमा कहेवो ढे तोके? गायना दूधना फीण सरखो उजलो ढे, रूपानां कलश सरखो धोलो ढे, वली हृदय नेत्रने वल्लन, संपूर्ण पूर्णिमाना अंधकारने हरवा वालो, वली शुकलपक्षमां शोनायमान, कुमुदवननो बोध एटले उघाडवा वालो, रात्रिनी शोनाने करवा

चित्र १६



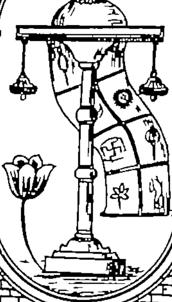


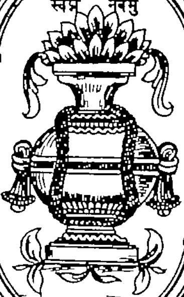


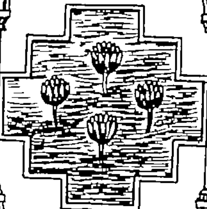
वालो, नवीरीतें उजला काचनी परें शोजायमान, आकाश रूप तलावनो हंस वेठ पक्षें करी पूर्ण, सर्व ज्योतिषियाना मुखनुं मन्डन, अंधकारनो वेरी, कदर्पबाणनो पूरवा वालो, समुद्रनां जलनो वधारवा वालो केमके जेवारें शुक्लपक्षमां चंद्रमा कगे तेवारें समुद्रनी वेल वधे, विरहिणी स्त्रीनें चंद्रना उदयथी अधिक विरह जाग्रत थाय तेमाटे विरहियोने किरणोये करी शोषण करवा वालो, आकाशनुं तिलक, रोहिणीना हृदयनें वल्लभ केमके चन्द्रमा रोहिणीनो जरतार ठे एवी लोकोमां केवत ठे परंतु रोहिणीतो नक्षत्र ठे ते वने नहीं एवो पूर्णिमानो चंद्र त्रिशलादेवीयें ठठा स्वप्नामा दीठो ॥ ६ ॥ ३७ ॥ ॥ तेवार पठी त्रिशलाराणी, सातमें स्वप्ने सूर्यदेखे ते सूर्य कहेवो ठे तोके ? अंधकारनां पडलने फोडवा वालो, वली रातो वर्ण ठे तेवर्ण कहेवो ठे तोके ? राता अशोक सरखो, केशूडानां फूल सरखो लाल ठे, जेवुं पोपटनुं मुख लाल होय, जेवी अर्द्ध चिणोठी लाल होय तेवो सूर्य लाल ठे, वली कमलनां वननो उघाडवा वालो ठे, तेमाटेज कमलनी शोजा करवा वालो ठे, ज्योतिष शास्त्रनो तथा ज्योतिषचक्रना चिन्ह सरखो उंजखाणनो करवा वालो ठे, आकाशमां दीवानी पेरे शोजे ठे, कगतो थको हेमना समूहने हाथथी गरदन पकडीने काढाडवा वालो, वली ग्रहोनो राजा ठे, रात्रिनो नाश करवा वालो ठे, वली उगतीवेलाये तथा आथमति वेलायें वे घडी पर्यंत सुखे दीठामा आवे पठी सुखें दीठामां आवे नहीं, वली रात्रिना विचरवा वाला जे चोर आदिक तेमनुं भ्रमण मटाडवा वालो, वली शीत टाढाडने मथन करवा वालो, मेरुपर्वतने पाखति निरंतर महोटा मन्डल सहित जमवा वालो, वली सूर्यना हजार किरणोये करी सर्वज्योतिषीयोनी प्रजा मटी गइ माटे इहां सूत्रकारोजे सूर्यनी हजार किरणो कहे ठे ते जघन्यआश्रित लिखे ठे अने लोकमा

पण सहस्र किरण कहेवानी रूढी छे परंतु सूर्यना किरणोमां तो महीने महिने वध घट थाय छे ते आ प्रमाणे जे चैत्रमां बारसें किरणो, वैशाखमां तेरसें किरणो, ज्येष्ठमां चौदसें किरणो आषाढमां पन्नरसें किरणो श्रावणमां चौदसें किरणो, भादरवामां चौदसें किरणो, आसोमां शोळसें किरणो, कार्तिकमां अगीआरसें किरणो, मार्गशिरमां एकहजारनें पच्चाश किरणो, पोषमां हजार किरणो, माघमां साडादशसें किरणो, फाल्गुनमां अगीआरसें किरणो, एवो सूर्य लोकोना चक्षु समान त्रिशलादेवीये सातमे स्वप्ने दीठो ॥ ७ ॥ ३९ ॥ ॥ तेवार पछी आठमें स्वप्ने, त्रिशलामाता, ध्वजा देखे ते ध्वजा कहेवी छे तोके ? सोनानो जेने दंड छे ते उपर रहेली छे, पांच वर्णना वस्त्रनी ध्वजा छे, वळी ते ध्वजानी उपर सुकोमळ अनेक रंगनां मोरपीछ घणां छे ते चोटी सरखा शोभायमान छे तथा घणो श्रीकार छे, तथा ते ध्वजामां सिंहनु रूप लख्युं छे तेणेकरी वळी बहुज शोभे छे ते सिंह कहेवो छे के जेवो शंख उजळो, कुंदवृक्षनुं फूल उजळुं, जळनो कणीयो उजळो तथा रूपानो कलश उजळो होय तेवो श्वेत वर्णे छे; जे सिंहनें देखीने लोक एवुं समजे के आ सिंह आकाश मंडळ भेदवाने उद्यम करे छे के शुं ? एवी ते सिंहनी मुखाकृति तथा शरीराकृति छे, जे ध्वजानुं वस्त्र वायरानी लहेरोथी थोडुं थोडुं च लायमान थइ रह्युं छे, वळी घणो उंचो लोकोने देखवा योग्य एवो ध्वज आठमा स्वप्नामां त्रिशला देवीयें दीठो ॥ ८ ॥ ४० ॥ ॥ तेवार पछी, नवमां स्वप्नमां, श्रीत्रिशलादेवी, पूरण कलश देखे ते कलश कहेवो छे तोके ? उत्तम देदीप्यमान छे रूप जेनु, निर्मळ जलथी भर्यो थको घणोज सुंदर छे, सूर्यमंडळ सरखी जाज्वल्यमानशोभा छे जेनी, वळी जे कळशनी पासें कमळनी वाडी छे एटले कमळोथी वींटयो थको छे वळी ते कळश सर्व मंगळोनो मळाववा वाळो छे,

चित्र १४

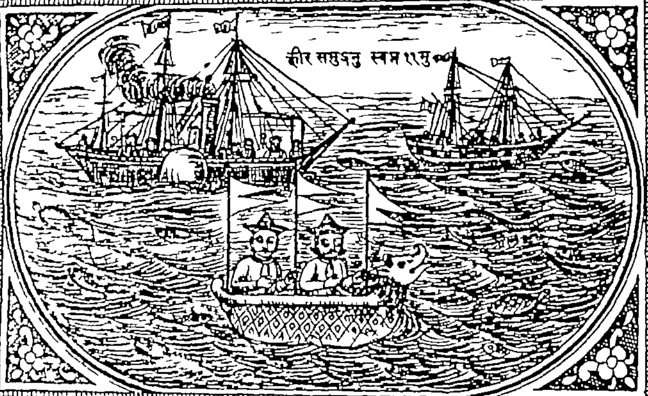






वली ते पूरण कलश, प्रधान रत्नोनुं कमल तेना उपर धरेलुं छे, नेत्रोने आनंद आपवा वालो छे, सर्व दिशाउमां उद्योत करतो थको सर्व लक्ष्मीनो घर तेनी परें सर्व पाप रहित सर्व शोभा सहित लक्ष्मीनो निवास छे, वली जे कलशने गलामां छ ऋतुना सुगंधि फूलोनी माला छे, एवो पूरणकुंभ जलो रूपामय ते नवमे स्वप्ने त्रिशलाराणीयें दीठो ॥ ए ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ तेवार पछी, दशमा स्वप्नामां त्रिशलादेवी पद्मसरोवर देखे ते पद्मसरोवर कहेवुं छे तोके ? जे सरोवरमां उगता सूर्यथी उघड्यां एवां हजार पांखडीना कमलो छे, ते विकस्वरमान कमलनी वासनायें करीने जेनुं पाणी सुगंधमय थयुं छे, वली ते कमलोनी प्रजायें करीने पाणी लाल पीला रंग जेवु देखाय छे, वली जे पद्मसरोवर जलमत्स्य कछपादिक जलचर जीवोयें सेव्युं थकु रह्युं छे, वली जे पद्मसरोवरमां कमल पत्र उपर पड्यो जलनो छांटो तेणे करी जाणे नीला आंगणामां मोती जड्यां होय नहि ? एवु देखाय छे, वली ते महोटुं सरोवर छे तेमा सूर्यविकासी कमल, चंद्रविकासी कमल, नील कमल, महापद्म श्वेत कमल, राता कमल, इत्यादिक कमलनी शोभा बनी रही छे तेथी घणुज रमणीक थयुं छे, वली ते कमलो उपर प्रसन्नथया एवा भमर भमरीयो आवीने गुंजारव करी रह्यां छे ॥ ग्रंथा ग्रंथ ॥ २०० ॥ वली तिहां कादंबक हंस, चकवा, राजहंस, बगला, सारस, एवा पंखीयोंयें करी शोभे छे, अर्थात् ए जातियोना पंखीओ तिहां रहे छे, एवो पद्मसरोवर त्रिशलादेवीयें दशमां स्वप्नामां दीठुं ॥ १० ॥ ४२ ॥ ॥ तेवार पछी अगीआरमा स्वप्नामां त्रिशलादेवी खीरसमुद्र देखे ते खीरसमुद्र कहेवो छे तोके ? चंद्रमाना किरणोनी जेवी शोभा तेवी शोभा ते समुद्रमां छे, वली चारे बाजु जे समुद्रनु जल वृद्धि पामे छे, वली

तेमांथी चपलथी पण घणा चंचल एवा घणा उंचा कल्लोल उठी रह्या ठे, ते कल्लोलेंकरीने पाणी घणुंज चपल थयुं ठे, वली मदमद वायराथी चलायमान थया जे कल्लोल ते समुद्रना तट उपर आवीने जफाका खाइ रह्या ठे, तेनो शब्द थइ रह्यो ठे जेनेविषे ते कल्लोलोथी समुद्र शोजी रह्यो ठे, वली ते कल्लोल मल्या थका दोडता ठे एटले एक कल्लोलनी पठवाडे बीजो कल्लोल दोडी रह्यो ठे, पहेलो एक न्हानो कल्लोल चाले, वली महोटो कल्लोल चाले, एवी कल्लोलोंनी शोजा ठे जेने विषे, वली जे समुद्रमां जलचर जीव कल्लोल करी रह्या ठे, ते केवा जातिनां तोके महामगरमछ, तिमिंगलमछ, लघुमछ ते सर्व परस्पर मल्या थका रमत करे तेवारे तेमनां पूठना उछालवाथी उछल्युं जे पाणी तेमांथी फीण प्रगट थइ ते फीण कल्लोलोथी तणाइने किनारापर आवी पडे ठे, तेनां ढगला थइ गया ठे ते ढगला सर्व कपुरना ढगला सरखा देखाय ठे, वली जे समुद्रमां गंगा प्रमुख नदीयोना पाणी पडे ठे तेमां चौद चौद हजार नदीयोना परिवार साथे गंगा अने सिंधु ए बे नरतक्षेत्रनी नदीयो पडे ठे एमज चौदचौद हजार नदीयोना परिवार सार्थे ऐरवतक्षेत्रनी रक्ता अने रक्तवती ए बे नदीयो पडे ठे तथा अठावीश अठावीश हजार नदीयोना परिवार साथे रोहिता अने रोहितासा ए बे नदीयो हेमवतक्षेत्रनी पडे ठे तथा अठावीश अठावीश हजार नदीयोना परिवार साथे सुवर्णकुला अने रूपकुला ए बे नदीयो ऐरण्यवतक्षेत्रनी पडे ठे तथा उपन्न उपन्न हजार नदीयोना परिवार साथे हरिकंता अने हरिसलिला ए बे हरिवर्ष क्षेत्रनी नदीयो पडे ठे तथा उपन्न उपन्न हजार नदीयोना परिवार सार्थे नरकांता अने नारिकांता ए बे नदीयो रम्यकक्षेत्रनी पडे ठे तथा पांच पांचलाखनी उपर बत्रीश बत्रीश हजार नदीयोना परिवार सार्थे सीता

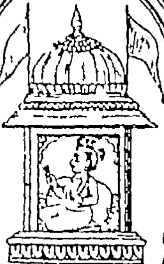


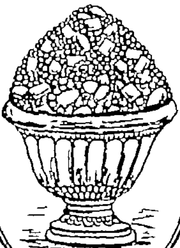
चित्र १५

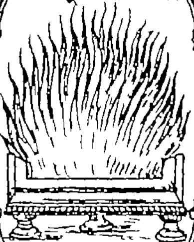
श्चने सीतोदा ए बे नदीयो महाविदेह क्षेत्रनीपडे ठे, सर्वमली चोदलाखने छपन्न हजार न दीयोनुं पाणी जे समुद्रमां पडे ठे इहां कोइ पश्न करे के सूत्रमांतो खीरसमुद्र सप्नमा दीठो एवो पाठ कह्यो ठे श्चने तमे तो नाना प्रकारनी वेलाये वधतो पाणी कल्लोलो तथा नदीयो मांहे जले ठे एवो कहो ठो तेनुं शुं कारण ठे? तेने उत्तर कहे ठे जे खीरसमुद्रनो पाठ कहेवा थकी लवण समुद्र लेवो कारणके जो लवणसमुद्र नही कहेशो तो गगा श्चने सिधु नदीयो पडे ठे ए पाठ पण सूत्रकारेंज कहेलो ठे ते पाठ मलशे नही माटे इहां एम समजवुं के लवणस मुद्रनुं पाणी मोलुं ठे ते स्थानके त्रिशला माता ए लवणसमुद्रनुं पाणी खीरसमुद्र सरखु देखे ठे एवो श्चगीश्चारमे स्वप्ने खीरसमुद्र त्रिशला देविये दीठो ॥ ११ ॥ ४२ ॥ ॥ तेवार पठी बारमे स्वप्ने, त्रिशला माताये देवविमान दीठु ते कहेवुं ठे तोके? पुण्डरीक उत्कृष्ट वि मान ठे तेमां उत्तम सुवर्णमणीनां एकहजारने श्चाठ थंनोये करी विराजमान ठे वली ते वि मान श्चाकाशमां दीपकनी पेरें दीपी रह्यु ठे, उद्योतमां सूर्यमन्दल सरखी शोना ठे जेनी, वली जे विमानमां सोनानी नींतोमां नागफणा खीला ठोक्या ठे, वली स्थानकें स्थानकें दिव्यफूल मालाउ, सुवर्ण पत्रेंकरी लबायमान एवी मोतीयोनी मालाउ लटके ठे, वली ते विमाननी नींतमा मृग हरणना रूप, नाहारना रूप, बलदना रूप, घोडाना रूप, मगरमछ, नारंमपंखी, गरुड, मयूर एमना रूप, सर्पनां रूप, किन्नरदेवोनां रूप, कस्तुरीया मृगना रूप, सर्दूलसिंहनां रूप, हाथीना रूप, वनलता, पद्मलता, एमनां रूप चित्रामणमां ठे, वली जे विमानमा नाटक थइ रह्यां ठे ते नाटकमां जे वाजिंत्रो वाजी रह्या ठे तेना शब्दें करी पूराणु एवुं ते विमान ठे, वली जे विमानमां मेघगाजे तेना सरखो देवडुंडुनीनो शब्द थइ रह्यो ठे तेथी जाणीये ठयें

के सर्व जीवलोक संसार ते शब्दथी पूरण कर्यो छे अर्थात् ते शब्द सर्वत्र फेलाइ गयो छे, वली ते विमानमा, अगर, कुंदरु, शिलारस, एमना धूपनो मघमघायमान धूप सुगंध थइ रह्यो छे, वली जे विमानमां देवोने योग सदाउद्योत थइ रहेलो छे, देवोने योग्य सर्वदा सात सुखनो निवास रूप एवुं देवविमान त्रिशला मातायें धारमां स्वप्नमां दीठुं ॥ १२ ॥ ४४ ॥ ॥ तेवार पछी त्रिशलाक्षत्रियाणीए तेरमे स्वप्ने रत्नोनो ढगलो दीठो तेमां कयां कयां रत्न छे १ पुलकरत्न २ वज्ररत्न, ३ नीलरत्न, ४ ससाकरत्न, ५ कर्केतनरत्न, ६ लोहितरत्न, ७ मरकतरत्न, ८ प्रवाल रत्न, ९ स्फाटिकरत्न, १० सौगंधिकरत्न, ११ हंसगर्भरत्न, १२ मसारगल्लरत्न, १३ अंजनरत्न, १४ चंद्रप्रभरत्न एवा बीजा पण अनेक जातिनां उत्तम रत्न ते सोनानां महोटा थालोमां भ रेला ते रत्नोनो ढगलो कहेवो छे तोके ? मेरुपर्वत जेटलो उंचो, आकाशमां देदीप्यमान एवो रत्ननोनो ढगलो त्रिशला देवीयें तेरमां स्वप्नामां दीठो ॥ १३ ॥ ४५ ॥ ॥ तेवार पछी चौदमे स्वप्ने त्रिशला क्षत्रियाणीयें निर्धूमअग्निदीठो ते अग्नि कहेवो छे तोके? घणो उजलो निर्मल पीलो अने लाल वर्ण वालो, वली मधु अने घृतथी सींच्यो थको, निर्धूम धगधगायमान जाज्वल्यमान शिखावालो, वली ते अग्निमां अनेक न्हानी शिखाउ छे वली तेथी कोइक शिखा अधिकी वली ते अधिकथी पण वली कोइक शिखा उंची केटलीएक शिखाउ वली घणीज न्हानी एवी अनेक ज्वालायें करी अग्ननी शिखा मली रही छे वली जे अग्निमां अनेक ज्वा लायो मांहोमाहे मली रही छे, एवा धूम्ररहित अग्निनी ज्वालाउ ते कोइ आकाश प्रदेशमां चाल ती होय तेनी पेरें घणी चपल अग्निनी शिखा त्रिशला देवीयें चौदमां स्वप्नामां दीठी ॥१४॥४६॥ आ स्वप्नामा बारमें स्वप्ने देवतानुं विमान कर्युं ते जे तीर्थंकरनो जीव देवलोकथी चवीने माता

चित्र १६







नी कूखमां आव्यो होय तेनी माता विमान देखे अने जे तीर्थंकरनो जीव नरकथी निकली मातानी कूखमां आव्यो होय तेनी माता घरमां स्वप्नांमां भुवन देखे एवो पाठ छे ॥ ॥ एवा चौदे स्वप्नां देखीनें त्रिशला राणी जागृत थइ ए स्वप्ना केवां छे तोके ? प्रधान छे, सौम्य जला छे, घणुं रूडुं वल्लभ छे दर्शन जेमनुं, भलुं रूप छे जेमनुं, एवा स्वप्नां देखीने त्रिशला माता जागी ते केवी छे तो के ? जेवा कमल उघडे तेवां नेत्र विकसित थयां छे जेना, हर्षना वशथकी सर्वअंग हर्ष सहित होतुं हवु, सर्व रोमराजी उल्लसित थइ ॥ ए चौद स्वप्ना सर्व तीर्थंकरोनी माताउ देखे, जेवारें तीर्थंकर गर्भमां आवे तेवारे देखे, तेम त्रिशलादेवी पण श्रीमहावीर स्वामी कूखमां आव्या तेना योगें चौद स्वप्नां देखीने शय्यामां जागती हवी ॥ ४७ ॥ तेवार पछी त्रिशला क्षत्रियाणी पूर्वे कह्या एवां चौद स्वप्नां देखीने जागती थकी घणीज पोतानां हृदय मा खुशी थइ, सतोष पामी,जेवुं मेघनी धाराये करी हणाणु कंदव वृक्ष्नु फूल तेनी पेरे उल्ला सपाम्या छे रोमकूप जेनां, अर्थात् रोमरोम हर्ष पाम्या पछी ते स्वप्नाने याद करे जे अनुक्रमें में एवां एवां स्वप्ना दीठां एवी रीते याद करीने उठे, उठीने बाजोट ऊपर पग आपीने हेठी उतरे उतरीने नही उतावली एटले मनमां उतावल नथी तथा कायाथी चपल पणु नथी, र स्तामा ठोकर रहित, विलंबरहित, नींत प्रमुखना उंबीगणाने न लेती थकी, राजहंसी सरखी गतिये करी चालती थकी जिहां सिद्धार्थ क्षत्रिय राजानी शय्या छे,जिहां सिद्धार्थक्षत्रिय राजा पोढया छे, तिहां आवी, आवीनें, सिद्धार्थक्षत्रियराजाने एवी वाणीथी जगावती हवी ते केवी वाणी तोके ? जे सिद्धार्थराजाने वल्लभ लागे, सिद्धार्थराजा एवी वाणीनी सर्वदा चाहना करे, एवी वाणी तथा द्वेषरहित एवी तथा सर्वना मनने गमती एवी तथा वल्लभपणानी चेतवणी

करवा वाली तथा स्वर अक्षरें करी स्पष्ट एवी तथा कल्याणनी करवा वाली एवी तथा वृद्धि नी करवा वाली एवी तथा निरुपद्रव अर्थात् उपद्रव रहित एवी तथा धनना लाभनी करवा वाली एवी तथा मंगलनी करवावाली, श्रीकार अलंकारादि शोभा सहित, हृदयमां कोमल लागे एवी, वली जे वाणी सांभलवाथी मनमां आनंद थाय एवी, वली कोमल, मीठी रस युक्त, जेमां वचन थोडा अने अर्थ घणो एवी वाणीथी त्रिशलादेवी पोताना जरतारने जगा वती हवी ॥ ४८ ॥ ॥ तेथी सिद्धार्थराजा जाग्यो, त्यारे त्रिशला राणी सिद्धार्थराजानी आज्ञाथी नाना प्रकारना मणिरत्नथी चितर्यो एवो सोनानो बाजोट मणिरत्नोथी जड्यो ते उपर पलोंठी वालीने बेठी, रस्तानो खेद मटाडीने सुखे बेठी, बेसीने सिद्धार्थराजा प्रत्यें जेवी रीते पूर्वें वर्णन करी आव्या एवी वाणीयें करी कहेती हवी ॥ ४९ ॥ ॥ हे स्वा मी ! निश्चें हुं आज पूर्वोक्त शय्यामां कांइक सुती कांइक जागती थकी, में गज वृषभ आदिदेइ जे पूर्वें कही आव्या ते चौद स्वप्नां दीठां, देखीने जागी, ते महोटा स्वप्नांनुं फल जाणुं जे कोइ फलवृत्ति फलनुं पामवुं कोइ थाशे ? एवुं त्रिशलायें पोताना जरतारने पूछ्युं ॥ ॥ ५० ॥ तेवारें सिद्धार्थराजा त्रिशलाना मुखथी एवो अर्थ सांभलीनें, हर्ष संतोष पामीनें, चित्तमां आनंद पाम्यो थको, प्रीतिकारी परम सौम्य हर्ष हृदयमा फेल्यो, जेम मेघनी धारायें छंटायेलुं एवुं कंदवृक्षनुं फूल तेनी पेरें उल्लसित थयो थको, सांभलीने तेनो विचार कर्यो, पोताना स्वभाव प्रमाणे पोतानी बुद्धि विज्ञाने करी ते स्वप्नोनो अर्थ ग्रहण कर्यो, अर्थ ग्र हण करीने त्रिशलाराणीने मीठे वचने करी एवुं कहेतो हवो ॥ ५१ ॥ ॥ हे देवाणुप्रिया ! तें मनोहर स्वप्ना दीठां, तें कल्याणकारी स्वप्नां दीठां, शिवकारी, धनकारी, आरोग्यकारी,


चित्र १७
सिद्धार्थ राजा
त्रिशला देवी
दासीउ
दरवान

घणा दीर्घायुना करवा वाला एवा तें स्वप्नां दीठां ॥ ग्रथाग्रंथ ॥ ३०० ॥ तेहुं फल आवी रीते छे हे देवाणुप्रिया ! तमोने अर्थनो लाभ थाशे, तमोने भोगनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे, राज्यनो लाभ थाशे, ए निश्चे नवमहीना उपर साडासात दिवस गये थके अमारा कुलमा ध्वजा समान, अमारा कुलमां दीप समान, अमारा कुलमां दीवासमान, अमारा कुलमां पर्वत समान स्थिर, अमारा कुलमां शिखर समान, अर्थात् मुकुट समान, अमारा कुलमां तिलक समान, अमारा कुलमां सूर्यसमान, कुलनो आधार, कुलनी वृद्धिनो करवा वालो, कुलनी कीर्त्तिनो करवा वालो, कुलना निर्वाहनो करवा वालो, कुलना यशनो करवा वालो, कुलमां वृक्षसमान, घणा लोकोने छत्रछायामा राखवाथी कुलनी विशेष वृद्धिनो करवा वालो एवो पुत्र थाशे वली सुकोमल छे हाथ पग जेना, संपूर्ण पांचेंद्रिय परवडां छे जेनां लक्षण, व्यंजन अने गुणे करी सहित, मानोन्मान प्रमाण सर्व शरीर सुंदर, चंद्रमानी पेरे सौम्याकार, मनोहर दर्शन करवा योग्य, एवो पुत्र तुजने थाशे ॥ ५१ ॥ ॥ ते पुत्र कहेवो थाशे तोके ? बालक अवस्था छांडीने जेवारें विज्ञान अवस्थामा आवशे तेवारे सर्व कलाउ मात्र देखवाथीज जाणी लेशे पण तेने शीखाववु पडशे नही वली युवान अवस्थामां शूरवीर, महादानेश्वरी, स्वप्रतिज्ञा निर्वाहक एटले पोते अंगीकार करेली वातना निर्वाहने करवा वालो, संग्राममां वीर एटले पाछो भागे नही, जमीन उपर राज्य करवा वालो, घणा हाथी घोडा रथ पायदल प्रमुखनो मालक एवो, राजाउनो राजा थाशे ॥ ५२ ॥ ॥ तेमाटे तमे उदारकारी यावत् स्वप्नां दीठां एवीरीतें सिद्धार्थराजा बे वार त्रणवार त्रिशला राणीने कहे, प्रशंसा करे, तेवार पछी त्रिशला क्षत्रियाणी सिद्धार्थराजाना मुखथी आ वात

सांजलीनें हर्ष संतोष पामी, यावत् हाथ जोडीने, मस्तकें अंजली करीनें, एवुं कहेती हवी ॥ ५४ ॥ ॥ हे स्वामी ए अर्थ एमज छे, तमे कस्युं ते तहत्त छे, संदेह रहित छे, जे प्रमाणेमें वांछयोहतो हे स्वामी तेज प्रमाणेमें आपना मुखथी ग्रहण कर्यो, एम हे स्वामी जे तमे कहो छो ते अर्थ सत्य छे एवीरीतें वारंवार कहेती थकी एम कहीने, स्वप्नानां अर्थने रुडीरीतथी अंगीकार करीनें, सिद्धार्थराजानी आज्ञा लइने, नानाप्रकारना मणीये जडित एवा सोनानां बाजोट उपरथी उठीने, नही उतावली, नही धीरी एवी पूर्वे कहेली रीत मुजब चालती थकी जिहां पोतानुं शयन घर छे तिहां आवीने एम कहेती हवी ॥ ५५ ॥ ॥ जे महारे उत्तम स्वप्नां वीजामां आव्यां तो हवे महारे सूवुं नही, जो सुइजाउं तो वली कदापि बीजा कोइ पाप रूप खोटा स्वप्नां आवीजाय तो ए रुडा स्वप्नांनुं फल जातु रहे तेमाटे देव गुरु सबंधि रूडी मंगलकारी, शुभकारी, धर्म कथा कहीने रात्रि पूरण करुं एवुं कहीने स्वप्न जागरण करती थकी, पोतें जागती बीजाने जगावती विचरे ॥ ५६ ॥ ॥ तेवार पछी प्रभात समये सिद्धार्थ राजा कौटुंबिक जे सेवक पुरुष तेमने बोलावीने एम कहेतो हवो ॥ ५७ ॥ उतावलथी हे देवाणुप्रिय ! आज सारीरीतें बाहिरनी उवठाणशाला जे कचेरी छे तेने गंधोदकथी सींचो,कचरो कांटो काढाडीने साफ करो, लींपो,लींपीने पछी प्रधान सुगंधि पांचवर्णना [illegible]न तेना ढगला करावो, कृष्णागर, कुंदरु, शिलारस तेना धूप उखेवो अने सुगंधना चूर्णनी [illegible]त्ती उखेवो, सुगंधे अभिराम करो, सुगंधे वासित करो, गंधनी वाटमूको, आ काम [illegible]बीजा कोइनी पासें करावो, आ महारी आज्ञा पाछी तत्काल सोंपो ॥ ५८ ॥ कौटुंबिक पुरुष एवुं सांभली घणाज खुसी थइने, हाथजोडी तहत्ति करीने, सिद्धार्थ

राजा पासेथी निकलीने ज्या बाहेरनी सजा ठे त्यां श्रावीनें गंधोदकादिक ठटघा आदिक सर्व काम राजाना हुकुम प्रमाणे करीने यावत् तिहा सिंहासन मामीने जिहां सिद्धार्थक्षत्रियराजा ठे त्या श्रावीने हाथजोडी मस्तकें श्रजली करी कहेता हवा के हे स्वामी ! जे श्रापे फरमाव्यु ते सर्व काम श्रमे करी श्राव्या एम कही श्राज्ञा पाठी सोंपी ॥ ५९ ॥ ॥ तेवार पठी कांइक रातुं धोलु पीलो प्रजात थयुं, सूर्यविकासीकमल फूल्यां, चंद्रविकासी कमल कुमलाणा, उज्वलप्रजात थयु, सूर्य उग्यो ते सूर्य कहेवो ठे तोके ? राता श्रशोक सरखो लाल ठे,केसुना फूल सरखो लाल ठे, सूडाना मुख सरखो लाल, श्रर्द्धि चिणोठी सरखो लाल, मामोलीयो जीव थाय ठे तेना जेवो रातो बपोरीयाना फूल सरखो लाल, कबूतरना पग नेत्र सरखो लाल, जासूसना फूल सरखो लाल, हिंगलुना ढगला सरखो लाल ए पूर्वे कही जे वस्तु तेवी कोइ पण लाल वस्तु होय तेथी पण श्रधिक लाल एवो उगतो सूर्य, कमलाकर नामे तलावने विषे घणा कमलोने उघाडतो थको एवो सूर्य उग्यो, हजार करणनो धिरनार, दिवसनो करवा वालो, तेजेकरी जलजलायमान,जेना किरणोथी श्रंधकार नाश पाम्यो ठे, चोरना प्रचारने टालनारो, बालिकानी जाणीयें कुंकुनी पीयाली ते सरखो, लाल, ते सूर्यनो नवो तावडो (तडको) ते तावडे करी जाणे कुंकु सरखो सर्व मनुष्यलोक लाल थयो ठे, एवु प्रजात थयु, ॥ ६०॥ तेवारें राजा शय्याथी उठीने बाजोट उपर पग मूके,बाजोटथी हेठो उतरे,उतरीनें, जिहां मल्लयुद्ध करवानी शाला ठे तिहां श्रावीनें,मल्लयुद्धशालामा प्रवेश करीने, श्रनेक प्रकारनी मल्लयुद्धनी कलाउ करीने थाका पठी, सो श्रौषधीना पाकनुं तेल, हजार श्रौषधीना पाकनु तेल, सुगध प्रधान तेल प्रमुख बीजा पण तेल जे धातुनी वृद्धि करवा वाला, जठराग्निनें

दीपाववा वाळां,कामदेवनी वृद्धि करवा वाला, मांसने पुष्ट करवा वाला, बलवृद्धि करवा वाळा, सर्व इंद्रिय शरीरने उल्लास करवा वाला, जेना अभ्यंगन थकी चामडीमा तेजनी वृद्धि थाय एवां अनेक जातिनां तेल ते तेलना मसळवा वाला कहेवा छे के घणा चतुर, जेमना हाथ पग घणा सुकोमल छे, ते तेलने मसलतां थकां हाथना तळांनो जे मल ते शरीरमां समावी आपे, एवी क्रियामा दक्ष, परिपूर्ण छे हाथ पग जेना, अवसरना जाण, उतावळथी कार्यना करनार, सर्व मर्दन करवा वालामां उत्कृष्ठ, विवेकवंत, बुद्धिवंत ज्ञाता, पंडित, मसळतां थकां हारे नही, एटले परिश्रमना जीतवा वाला इत्यादिक गुणना जाण पुरुषो ते केवी रीतें तेल मसळे तोके जे थकी हाडने सुख थाय एटले हाडने सुखकारी, मांसनें सुखकारी, चामडीने सुखकारी, रोमने सुखकारी ए चारेनें सुखकारी एम ए पूर्वोक्त तेल ते उपर कह्या प्रमाणे मसळवाथी राजाने थाक मट्या पछी सिद्धार्थराजा मल्लशालाथी निकलीने॥६१॥ जिहां स्नानकरवानुं घर छे तिहां आवीने स्नान घरमां पेठा, ते स्नान घर कहेवु छे तोके ? मोतीयोनी जाळीयोनां गोखला छे जेमां,विचित्र मणिरत्ने जडित धरती तल छे जेनुं,तिहां रमणिक स्नान करवानो मंडप छे तेमां अनेक प्रकारना मणिरत्नोये करी जड्या चित्र्या एवा अनेक बाजोट छे तेना उपर राजा सुखें बेठो हवे स्नान करवानुं जल, कहेवुं छे ते कहे छे फूलना गंधवालुं जल, चंदन कपूरादि वासित जल, उष्णजल, शुभजल, गंगा प्रमुखनुं निर्मलजल, एवा जलथी कल्याणकारी प्रधान मज्जननी विधियें स्नान करे तिहां घणा प्रकारनां जल उछालवा प्रमुख कौतुक करीने कल्याणकारी स्नानना अंतमां कमल सरखा सुंवाला गंधवस्त्रथी अंग लूह्युं पछी घणां मोघा वस्त्ररत्न पहेर्यां, जळा रस सहित गोशीर्ष चंदनथी शरीरने लेपन कर्युं, पवित्र माला पहेरी,

चित्र १८





वर्ण कुंकुमादि विलेपन कर्या पछी मणि जडित सोनाना घरेणा पहेर्या, वली अढार सरो हार, नवसरो हार, त्रीसरो हार, लांबा जूमखां प्रमुख घरेणां तथा कनदोरो पहेर्यो तेथी शोभवा लाग्यो, गलामां कंठीउ प्रमुख पहेर्या, आंगुलीउमां वींटी, वेढ प्रमुख पहेर्या, केशोमां फूल प्रमुखना घरेणां धारण कर्यां, रूडा जडाव कडा, जडाव बहेरखा पहेर्या, भुजा प्रमुखमां भुजबंधादिक पहेर्या तेणे भुजा थंभित थइ छे, तेथी घणुं श्रीकार रूप छे तथा कानोमां कुंडल पहेर्या तेणे करी शोभायमान मुख थयुं, मस्तकें देदीप्यमान मुकुट घाल्यो, हारप्रमुखे करी सुशोभित थइ छे गती जेनी, वींटीयोथी पीली थयली छे अंगुलीउ जेनी तथा लांबा वस्त्रे करी कर्यो छे उत्तरासंग जेणें, अनेक प्रकारना मणिरत्न निर्मल घणा मूल्यना डाह्या कारिगरोनां घड्यां देदीप्यमान वली रचनायें करी एकमां बीजा घरेणां मलेला तेथी मनोहर देखाय छे तथा वीरवलयने धारण कर्यो ए घरेणो जे शूरवीर होय तेने राजा बक्षीश आपे छे एटले मान आपवानुं घरेणुं छे ते कोइक तो कहे छे के ए घरेणुं हाथमां पहेराय छे वली कोइ कहे छे ए वीरव लय कानमां पहेराय छे हवे घणुं शुं वर्णन करीयें ते सिद्धार्थराजा साक्षात् कल्पवृक्ष सरखो थयो, जेम कल्पवृक्ष पत्र, पुष्प, फल सहित शोभे तेम सिद्धार्थराजा घरेणाथी शोभे छे तथा पुरुषोमां इंद्र समान, कोरंट वृक्षनां फूलोनी माला सहित एवुं छत्र मस्तकें धरावतो थको, श्वेत चामरोथी वींजातो थको, जिहां लोकोयें मंगलिकना जय जय शब्द कर्या छे, वली १ अनेक गणनो नायक एटले पोताना घरमां जे मनुष्य छे तेनो मालक, २ दंडनायक देशनी चितानो करवा वालो, ३ हाथीयोनो इश्वर ४ राजानो पुत्र, ५ कोटवाल, ६ मांडवीया, ७ कुटुंबना स्वामी, ८ न्हाना प्रधान, महोटा प्रधान, ९ मल्लिक, १० महामल्लिक, ११ ज्योतिषी, १२ दरवान, १३ जे

राजासार्थें जन्म्या ते अमात्य, १४ पीठी मर्दनना करवा वाला, १५ नगरना चोवटीया, १६ चोधरी, १७ वाणीया, १८ शेठ, १९ सेनापति, २० सार्थवाह, २१ दूत, २२ वेशनी सिंधीना रखवाला एटले सिंधिपालक तथा व्यवहारीया, २३ अगरक्षक, २४ पुरोहित, २५ वृत्तिनायक, २६ वह्विवाहक, २७ यश्आयत, २८ पडुपडिआयत, २९ टाकटमाली, ३० इन्द्रजाली, ३१ फलमाली, ३२ मंत्रवादी, ३३ धनुर्वावी, ३४ दण्डधर, ३५ धनुर्धर, ३६ खड्गधर, ३७ छत्रधर, ३८ चामरधर, ३९ पताकाधर, ४० नेजाधर, ४१ वीवीधर, ४२ पुस्तकधर, ४३ फारीधर, ४४ तांबूलधर, ४५ प्रतिद्वार, ४६ शय्यापालक, ४७ गजपालक, ४८ अश्वपालक, ४९ अंगमर्दक, ५० आरक्षक, ५१ मिष्टवचनबोलनारा, ५२ कथाकहेनारा, ५३ सत्यबोलनारा, ५४ गुणना बोलनारा, ५५ समस्याना बोलनारा, ५६ पारसीभाषा बोलनारा, ५७ वैयाकरण पाठी, ५८ तर्क पाठी, ५९ साहित्य बंधक, ६० लक्षण बंधक, ६१ छंद बधक, ६२ अलंकारना जाण, ६३ नाटक बधक, आदी त्रेसठ नाममां जे सिंधीपालक कह्युं ते राजाना सीमाडीया राजा सार्थे सीमसेढानां वांधा पडवाथी राजाने विरोध थाय तेवारें सीमकाढी निवेडो करी आपे तेने सिंधीपालक कहीयें तेना दृष्टांत उपर कथा कहे छे कौशबीनगरीमां जितशत्रुराजा राज्य करे छे तेने प्रधान, पुरोहित, शेठ, सेनापति, भंडारी, सिंधीपाल इत्यादिक घणो परिवार छे सहु सहु पोतपोताना अधिकारमां सावधान छे हवे कोइक पुरुषें राजाने कह्युंके तमारा बधा सेवको काम करे छे पण सिंधीपालतो तमारुं अनाज खाइने खोटुं करे छे माटे एनो तपास करवो, तेवारे राजायें सिंधीपालकने कह्युं के तमे मनचिंतित द्रव्य खाओ छो अने कार्यतो कांइ करता नथी तेवारे सिंधीपालक बोल्यो के महोटा काम करी आपुं, परस्पर वैरभाव होय तेनें मित्राइ करावी

आपु अने मित्रता होय तेमां विरोध पाडी आपु, अनेक बुद्धिना काम करु, एवा महारामां गुण छे, पछी राजायें परिक्षा निमित्तें पोतानो दुसमन अरिमर्दन राजा छे तेनी सार्थे मेलाप करवा माटे नेटणा सारु एक मावजो सीवी आप्यो ते राजाने आपजो अने वैर टाली आवजो एवुं कही सिंधीपालकने मोकल्यो सिंधीपालक त्यांथी चालतां केटलेक दिवसें अरिमर्दनराजा पासे जइ नेटणु मूकी पगेलागीने कहेवा लाग्यो जे हे राजन्' जितशत्रुराजायें तमोने सलाम कही छे अने नेटणुं आप्युं छे, राजाये ते नेटणु छोडघु तेमांथी मावडो निकल्यो ते उघाड्यो तेमां वली घणे सघनें बांधेली एक सोनानी मावली निकली तेना बंधन छोडयां तेवारे मांहेथी राख निकली तेवारे प्रधाने कह्युं तमारा वैरीयें राख मूकी छे, ते राख चोपडी तमे जोगी थाउ, ते सांजली राजा क्रोधातुर थयो तेवारें सिंधीपालके जाण्युं जे राजायें वैर सांध्युं एवु चितवी च त्पातनी बुद्धियें करी कहेवा लाग्यो के हे राजन्' तमे उलटो विचार म करो, ए राख बहु गुण कारी छे राजायें पुछ्युं एमां शो गुण छे? सिंधीपालक बोल्यो अमारा राजायें यज्ञ कीधो हतो तेना उपर असंख्य द्रव्य खरच्युं ते यज्ञ पूरण थयाथी तेनी जस्म तिलक करवाने अर्थें सर्वे राजाउ ने मोकली छे एमां कांइ विरोध नथी एनुं प्रजातकालें तिलक करतां जन्मांतरनां पातक टले अने सौजाग्य पामे, ते सांजली राजा प्रसन्न थयो अने जाण्युं जे में वैरजावथी अवलुं विचार्यु पण एणे तो वैर टालवा ए उपकार कर्यो छे पछी राजायें ते सिंधीपालकने घणु सन्मान आपी, एक महीनां सुधी पोतापासे रखावी घणा हाथी घोडा आजरण देइ पहेरामणी करीने शीख आपी, तथा हवे तमारा राजासार्थे अमारे परम मित्राइ छे एवो पत्र लखी आप्यो ए सर्व नेट लइ सिंधीपालक पोताना राजा पासें आव्यो राजाने पत्र दीधो सर्ववस्तु पण आपी तेवारें राजा

विस्मय पाम्यो,वली राजायें पटराणीने कह्युंके तुं ताहारें पीयरे जा, जेवारें हुं नामांकितमुद्रिका मोकलुं तेवारे तरत आवजे पण बीजा कोइना कहेवाथी आवीश नही, पछी ते राणी पीयर गइ पाछलथी राजायें सिंधीपालकने कह्युंके म्हारी राणी रीसाणी थकी पीयरे गइ छे तेने तमे तेडी लावो तो तमारी अकल खरी जाणुं, पछी सिंधीपाल तीर्थवासीनो वेश करी राणीना पीयरनां गाममां गयो राणीने खबर पडी तेवारें राणीयें तेडाव्यो अने कह्युंके तुं मुजने मलवा केम नाव्यो तेणे कह्युं हुं तीर्थवासी थयो छुं तेथी संसार संबंधि कोइ कार्यमां पडतो नथी, राणीये कह्युं धन्य ताहारा अवतारने तोपण मने राजाना समाचार कहो तेवारे सिंधीपालक माथुं धूणावीने कहेवा लाग्यो के राजायें हमणा कोइक राजानी पुत्री परणवानो आदर कर्यो छे ते कन्या घणी रूपवती छे तेने पटराणी करवा धार्युं छे एवी वात सांभली राणी उतावली पाछी पोताने घेर आवी राजायें पुछ्युं तमे तेड्या विना उतावलां केम आव्यां तेवारे राणी रीस आणीने बोली जे तमे नवी पटराणीने घेर जाउ छो तो हवे मुने आवास्ते तेडो एवो वचन्नो सांभली राजा विस्मय पाम्यो पछी राजायें सिंधीपालकने तेडावी अंतरंगी राणीने मनावी राजा हर्ष पाम्यो, सिंधीपालकने घणा वस्त्र आनूषण आपी सन्मान्यो ॥ एम सिद्धार्थराजानी सन्नामां एवा सिंधीपालक आदिदेइने शेठनापुत्र सेनापति बुद्धिवंत प्रमुख घणा बेठा छे॥ इति सिंधीपालक कथा ॥ इत्यादिक बावीशथी आदि लइने त्रेसठ पर्यंत टीकाकारें लख्या छे एमना परिकरसाथें परवस्यो थको सिद्धार्थराजास्नानघरथी निकलीने सन्ना मम्फपमां आवे छे ते कहेवो शोन्ने छे तोके धवलमेघनी घटामां जेवो सूर्य निकले तेनी पेरे शोन्ने छे वली जेवा नक्षत्र मद प्रमुखना तारामां चइमा शोन्ने तेवो लोकोमां राजा शोन्ने एवो मज्जनघरथी निकलतां शोनायमान थयो थको

नरपति, नरोमां ईड, नरोमां वृषन समान, नरोमां सिंहसमान, घणी अधिक राजतेजनी लक्ष्मीयें करी दीपतो थको,स्नानघरथी निकलीने ॥ ६१ ॥ ॥ जिहां सजानी शालाठे तिहां आवीनें सिंहासन उपर पूर्वदिशानी सन्मुख मोढोहुं करीने वेठो ॥ ६२ ॥ ॥ बेशीने पोताथी उत्तर अने पूर्वदिशानी वचमांनी इशानकूणमां आठ बाजोठ श्वेत वस्त्रथी ढांकेला श्वेत सरसव अने श्वेत शाल कुंकुप। मगल अर्थे पूजीने थापे अने एक पडदि एटले पडदो बांधे ते पडदि कहेवी ठे तोके? नाना प्रकारना मणिरत्नोथी जडेली ठे,सर्व लोकनें देखवा योग्य, घणामूल्यनी, नला पाटणमां नीपजेली,रेशमना वस्त्रनी, अनेक चित्रामवाली एटले मृग, वृषन, घोडा, मनुष्य,मत्स्य, पंखी, सर्प्प, किंनर, अष्टापद, चमरीगाय, हाथी, वनलता, पद्मलता, इत्यादिक अनेक रूप जे पडदिमां मांड्या ठे एवी पडदी बांधी, (पडदी एटले पडदो जाणवो) ते पडदीनी मांहेली बाजुयें, अनेक जातिना मणिरत्ने करी जडित रूडा छुंवाला गादलां सहित मशरुने वस्त्र विशेषें ढांक्युं तेनी उपर श्वेत वस्त्र आगलुं, सुकोमल अंगने सुखकारी स्पर्श ठे जेनो एवो रूडो एक बाजोठ त्रिशलाक्षत्रियाणीने वास्ते रचावे, रचावीने पठी सिद्धार्थराजा कौटुंबिक पुरुषने बोलावीने एम कहे ॥ ६४ ॥ ॥ के शीघ्रमेव एटले तत्काल हे देवाणुप्रिया, अष्टांग महानिमित्तना जाण, सूत्रअर्थना धरवा वाला, अनेक प्रकारनां शास्त्रमां कुशल, स्वप्न शास्त्रमां कुशल एवा स्वप्न लक्षण पाठकोने बोलावो इहां आठ अंगनां नाम कहे ठे तेमां प्रथम फरकण विचार अंग तेमां शरीर फरके तेनो विचार जेमके स्त्रीनुं माबुं अंग फरके तो सारु इत्यादिक वातो जाणवी, बीजुं स्वप्नविचार अंग तेमा उत्तम, मध्यम अने कनिष्ट एवा स्वप्नांनो विचार,त्रीजो स्वरविचार अंग तेमां काली चिडी,रूपारेल,शीयाल प्रमुख बोले ते मुजब फल कहे

वाय, चोथु नूमिकंप अग तेमा नूमिकंपवाथी जे शुनाशुनफल तेनो कहेनारा शास्त्र ते नौमविद्या नामे चोथु अग जाणवु, पांचमु मसा, तिल, लसण इत्यादिकोनो विचार जेमां ठे ते व्यंजनविद्या नामे पाचमुं अग जाणवुं, ठ्ठो हाथ पगनी रेखा जोवानो विचार जेमा ठे ते लक्षणविद्या नामे ठ्ठु अग जाणवु, सातमु उत्पातविद्या ते उल्कापात तारा त्रूटे, मम्डल मरुे इत्यादिकोनो वि चार जेमा ठे ते सातमुं अंग जाणवुं, आठमु अंतरिक्षविद्यानुं अग ते महोनो अस्त उद य वक्र तेना फल जेमां ठे ते आठमु अंग जाणवुं, एवा जाण स्वप्नपाठक पुरुषोने बोलावो एवु सिद्धार्थराजायें कह्यु त्यारे ते कौटुंबिक पुरुष सांनलीने घणो खुशी थयो पठी हाथजोडी यावत् सान्नलीने तहत्त करीने ॥ ५५ ॥ ॥ सिद्धार्थक्षत्रिय राजानी पासेथी निकलीनें खत्री कुम्ड गामनगरनी वचमांथी थइने ज्यां स्वप्न पाठकोनां घर ठे त्यां आवीने स्वप्नलक्षण पाठ कोने कहेतो हवो ॥ ५६ ॥ ॥ हे स्वप्न पाठको तमोने सिद्धार्थक्षत्रिय राजा याद करे ठे तेमाटे हु तमोने बोलाववा आव्यो छुं तेवारें स्वप्नलक्षणपाठक सिद्धार्थक्षत्रिय राजाना कौटुं बिक पुरुषनी वाणी सुणीने एटले तमोने सिद्धार्थराजा बोलावे ठे एवी वाणी सांनलीने, घ णाज हर्ष संतोष हृदयमां पामवा लाग्या पठी स्नान मज्जन करीने, पोताना घरना इष्टदेवने पूजीने, शरीर उपर कौतुकने अर्थे तिलक ठापा प्रमुख करीने, दहीं, मान्न अने सरसवने मांग लिक माटे करीने इहां उष्ठस्वप्न प्रमुखनो नाश करवो ए प्रायश्चित्त टालवुं ठे, तेमाटें ते करीने, इहां कोइ प्रश्न करेके सिद्धार्थराजाना स्नानना वर्णनमां तो देवपूजा करवी आवी नहीं अने आ निमित्तियावना संक्षेप पाठमां देवपूजा आवी तो शुं सिद्धार्थराजा देवपूजा नहीं करता ह ता ? एवुं पूठे तेने उत्तर कहे ठे के आ वखत तो सिद्धार्थराजा सणगार करीने सन्नामां आव

ता हता तेथी तिहां वही, मान्न अने सरसवनी पेरे पाठ नथी तेथी जाणवामां आवे छे के निमित्तियाओने पूछी विदाय करीने पछी पूजा करी हशे ' केमके सिद्धार्थराजा पण श्रीपार्श्व नाथ जगवानना श्रावक छे तेथी श्रीपार्श्वनाथजीनी मूर्त्ति तेमना घरमां अवश्य होवी जोइयें, वली आगल "णायाकय वलिकम्मा" ए पाठ त्रिशलाजीना अधिकारमां चाल्यो छे अथवा कर्त्ता यें पण ए पाठ सहजनो जाणी नही लख्यो होय '' एम पण संजवे छे पछी केवली गम्य हवे सनपाठक शुद्ध मांगलिक वस्त्र पहेरीने,घणा मूल्यनां घरेणां पहेरी सर्व शरीर शोनायमान करीने, वली पण सरसव अने दर्ज मंगल निमित्तें मस्तके धारण करीने, उगलीने, पोतपोताना घरथी निकलीने, क्षत्रियकुंड गामनगरनी वचमांथी थइने, जिहां सिद्धार्थराजानो मुख्य महेल छे तेने बारणे आवी सर्व एकठा थया, पछी सर्व नेला थइने माहोमांहे विचार करवा लाग्या के आपणा वर्गमां कोइने महोटो थाप्यो नथी माटे एक जणने महोटो थापो, केमके वृद्ध विना तो अप्रतिबध टोलुं वाजे माटे मांहोमाहे स्वप्ननो अर्थ विचारीनें एक महोटाना मुखथी राजा आगल कहेवरावबुं, पण जणे जणें जुदुं जुदुं बोलवुं नही जो जणे जण जुदु बोलवा जाशो तो आदर पामशो नही जेम न्यायशास्त्रमां कह्युं छे के ॥ यत्रसर्वेपिनेतारः सर्वे मत्सरवादिन ॥ सर्वे ममत्वमिछति, तेवसीदंति वृंदवत्॥ १ ॥ जिहां सर्वजण अग्रे सर थावा जाय अने सर्व अहंकार सहित बोलवा वाला होय, परस्परें ईर्ष्या करवा वाला होय, सर्व महोटाइ पणाने वाछवा वाला होय तेमनो समुदाय जेम पांचशें सुनट अनादर पामी दुःख करवा लागा तेम दुःख करे ते पांचसें सुनटनी कथा कहे छे कोई समयें इहां तिहांथी आवीने पांचसें सुनट नेला थइ गया, ते रोजगार करवा सारुं देशांतरे

गया तिहां कोइ कोइ राजाउंनी पासें बे चार दिवस रही रही चाल्या जाय एम करतां एक म हर्द्धिक महोटा राजाने जइ मल्या तेवारें ते राजायें घोडा, वस्त्र, घरेणां, शस्त्र इत्यादिक सामग्री तेमनी पासे दीठी तेमज ते सुन्नटो सर्वे सुरूपवान हता तेने देखी राजा तेमने सन्मान आपी बोल्यो के तमे कोण बो अने क्यांथी आव्या बो तेवारें ते पुरुषोयें राजाने प्रणाम करीनें कह्युं के हे राजन्! अमे नोकरी रहेवा सारुं आव्या बेयें यावत् तेमनी वातो सांनलीने राजा प्रमुख सर्व सन्ना खुशी थइ तेवारें राजायें प्रधानने बोलावीने कह्युं के आ सुन्नटो सारा देखाय बे, आ घरुवार बे, काम पडतां संग्राममां पाबा हटे तेवा नथी एवा राजानां वचन सांनली प्रधान बोल्यो के हे स्वामी! ए सुन्नट देखवामां तो सारा बे पण असंबंध बे केमके एमनामां कोइ मा ग्रेक नथी तेथी काम पडशे तेवारे नागी जाशे तो तमे उंलंनो कोने आपशो? एवुं प्रधाने क ह्युं तोपण राजा समज्यो नही तेवारें प्रधाने जाण्युं जे राजानुं मन ए सीपाइयोने नोकरी राख वानुं बे एवुं समजीने प्रधाने कह्युं हे महाराज! एनी परीक्षा करीने आपणे नोकरीमां राखवुं राजायें पण कह्युं के सुखेंथी परीक्षा करो पबी प्रधाने तेमने कोइ सारी जगा जोइने तेमां ब तारो आप्यो अने रातनी वखतें एक ढोलीयो, एक गादलुं अने एक उसीसुं ते सुन्नटोने उतारे मोकल्यों वली नोजनादिक सामग्री पण घणी मोकली ते सुन्नटोये नोजन कर्युं पबी जेवारे सुवा लागा तेवारें ढोलीयो देखीने मांहो मांहे पांचसे जण लडवा लाग्या तेमांथी एक बोल्यो के मेरादादा बडाथा, और मेंबी बडाहुं, इस्सें मेंसुउंगा तेवारें बीजो बोल्यो के एकदिन बनमें सिंह बोलाथा, उसका साद घरमें बेठेबेठे सुनके मेरा बाबाकूं सातदिन तक ताप आयाथा, इस्सें मेंही सबसें बडा हुं, वली त्रीजो बोल्यो के मेरे बडे नड्यानें सेके हूए सवाइस्स कूंपापडो


चित्र १९
राजसभा
सिद्धार्थ राजा

एक पांवकी जातसें नांजि मारेथे, इस्सें मेंद्दी मडाद्धु वली थोथो बोल्यो के मेरे मामाने एक ढंदराकों द्दराइ दीयाथा इस्सें मेंद्दी मडाद्धुं, वली पांचमो बोल्यो के मेरा मामाने सातसेरकी खीचडी खाइथी, ढठो बोल्यो के मेंतो ढ गोळीकी ढास पीताद्धु, सातमो बोल्यो के मेंतो घरमेंद्दी जंगल जांता द्धु,आठमो बोल्यो मेंतो सातदिनतक सोइ रद्दताद्धूं जागतानद्दी, नवमो बोल्यो मेंतो बिल्लीसेंजी मरताद्धूं, दसमो बोल्यो में कुत्ता नसे जद जाग जाउं,एवीरीते एक कद्दे द्धूं सुउं, बीजो कद्दे द्धू सुउं तु कांइ मालेक नथी, एम अर्द्धरात्र सुधी लड्या तेवारें तेमां पांच सात जण समजु द्दता ते बोल्या अरे तमे लडाइ मकरो, ए शय्यानी सादामां पगराखीनें बद्दाये सूइ रद्दो ए न्याय सर्वने बराबर जाणवामां आव्यो तेथी सर्वजणो दोलीया सामा पगराखीनें सूइ रह्या अने बीजी पण सर्व चीजो पाती प्रमाणे वेंची लीधी पढी प्रजात थयुं तेवारें राजाना माणसो जे निगाद्द करवा रह्या द्दतां तेणे जइ राजा आगल सर्ववात कद्दी तेवारें राजायें निग्रहीने स र्वेने शीख आपी, कांइ आदर पाम्या नद्दी एवुं स्वप्न पाठकें परस्पर विचारीनें एक जणाने मालेक थाप्यो अने जिद्दां सिद्धार्थक्षत्रियराजा ढे तिद्दां आव्या आवीने सिद्धार्थराजाने जय विजय शब्द करी वधाव्या ॥ ६७ ॥ ॥ इति तृतियव्याख्यान समाप्त ॥ ॥ अथ चतुर्थ व्याख्यान प्रारंजः ॥ ॥ द्दवे ते स्वप्नपाठक सिद्धार्थक्षत्रिय राजाने द्दाथजोडीने जयविजय शब्द करी वधावे अर्थात् द्दाथ प्रसारीनें आशिर्वाद आपे अने कद्देके दे राजा ' तमे दीर्घ आयु ष्य वाला द्दो, घणी आजीविकाना धणीद्दो, लक्ष्मीवान्द्दो, जशवान्द्दो, बुद्धिमान्द्दो, कीर्त्ति मान्द्दो, वली सिद्धार्थराजाने पार्श्वनाथ स्वामीनो सेवक जाणीने श्रीपार्श्वनाथजीनी स्तुतिक रीनें अशिर्वाद आप्यो ॥ श्लोक ॥ दशावतारोवः पायात्, कमनीयांजनद्युति ॥ किंतुदीपो नद्दि

श्रीप , किंतुवामांगजोजिनः॥१॥ ॥अर्थ दश छे अवतार जेना तेने दशावतार कहीयें एवा वली मनोहर श्यामकांतिवाला एवा कोण छे ? तेवारें बीजो कोइ कहेके दीप एवु नाम दीवानुं छे अने दशा एवुं घतीनुं नाम छे वली काजलनी श्यामकांति छे, तेवारे कहे छे के ए दीवो तो नही परतु श्रीप एटले श्रीकृष्ण तेना पण दश अवतार थया तेथी कृष्ण हशे केमके कृष्ण काला पण छे अने तेना दश अवतार पण छे, तेवारे कवि कहे छे के दीवो अने श्रीकृष्ण ए बेय नथी तेवारे ए कोण छे के? श्रीपार्श्वनाथ स्वामी वामादेवीना पुत्र छे केमके ए दशनव करीनें तीर्थंकर थया इहां अमरभूतिनां नवथी दशभव गणवा वली एमनी श्यामकांति पण छे तेथी पार्श्वनाथ स्वामी छे ते तमारी रक्षा करो एवो आशिर्वाद सांभलीने सिद्धार्थ क्षत्रियराजायें ते स्वप्नलक्षण पाठकोनें वांद्या, वस्त्रादिक वेंवाथी पूज्या, सद्गुणेकरी स्तव्या, सन्मान आप्युं, अने पूर्वे तैयार करेला जे आठ भद्रासन छे तेनी उपर जूदा जूदा बेसाड्या ॥६७॥ ॥ इहां कोइ कहेके श्रीपार्श्वनाथजीनो श्रावक सिद्धार्थराजा समकेती छे तेणे मिथ्यात्वी एवा स्वप्न पाठकोने केम वांद्या ? हवे एने उत्तर कहे छे एतो लोकोपचार विनय छे तेतो संसारिक पणानो छे पण पूज्यपणाने तथा धर्मना कामने माटे नथी जेम लौकिकमां उदार करे तेने पण वदन कहे छे तेम ए पण जाणवुं ॥ तेवारपछी सिद्धार्थराजा त्रिशलाक्षत्रियाणीने पडदामां वेसाडे ते पण पोताना हाथमां फूलफल लेइने बेशे पछी उत्कृष्ट विनयथी सिद्धार्थराजा स्वप्न लक्षण पाठकोनें कहे ॥ ६९ ॥ ॥ हे देवाणुप्रिया आज त्रिशलाक्षत्रियाणीयें पूर्वे वर्णवी आव्या एवां महोटा गजवृषभादि चौद स्वप्नां ते यावत् अल्पनिद्रामां सुती थकी देखीनें जागी ॥ ७० ॥ ॥ तेथी ए चौद स्वप्नाने हे देवाणु प्रिया कांइ कल्याणकारी फल थाशे ?

॥ ७१ ॥ ॥ तेवारें ते स्वप्नलक्षणपाठक, सिद्धार्थक्षत्रियराजाना मुखथी ए अर्थ सांजली घणाज खुशी थया, ते स्वप्नांने हृदयमां धारण कर्यां, अने अर्थ विचारवा लाग्या मांहोमांहे विचार कर्यो, ते स्वप्नांनो अर्थ ग्रहण कर्यो, मांहोमांहे एक बीजाने पूछीने निश्चय कर्यो, पछी सिद्धार्थराजानी आगल स्वप्नांनां शास्त्रोनो विचार कहेता हवा ॥७२॥ ॥ ते शास्त्रांतरथी स्वप्नांनो विचार लखे छे मनुष्योने नव प्रकारें स्वप्नां आवे छे तेमां प्रथम तो जाणेली वात स्वप्नामां आवे, बीजी सांजलेली वात स्वप्नांमा देखे, त्रीजो दिवसें दीठेली वस्तु स्वप्नामां देखे, चोथुं वात, पित्त, कफना विकारथी स्वप्न आवे, पांचमो सहज स्वनावथी स्वप्न देखे अथवा मलमूत्रादिकनी पीडाथी स्वप्न देखे, छठो चिंतामां पड्यो थको स्वप्न देखे, ए छ कारणथी जे स्वप्नां आवे ते निष्फल छे एनुं कांइ शुनाशुन फल प्राप्त थाय नहीं सातमो देवतानी सान्निध्यथी स्वप्नु देखे, आठमो धर्म कर्ममां रहेलो प्राणी घणो धर्म करे तेने धर्मना प्रनावथी उत्कृष्ट पुण्यने योगे स्वप्नु आवे, नवमो घणा उत्कृष्ट पापनां उदयथी स्वप्न आवे ए पाछला त्रण स्वप्नां जो प्राणी देखे तो तेनुं शुनाशुन फल अवश्य थाय खाली न जाय तथा धातुप्रकोपथी वायुनुं जोर होय तेवारें वृक्ष, पर्वत, टूंक उपर चडवु तथा आकाशमां उडवुं एवा स्वप्नां आवे तथा पित्त प्रकोपथी सोनुं, रत्न, सूर्य अने अग्नि प्रमुख स्वप्नांमा देखे तथा श्लेष्म अधिक होय तेना योगथी अभ्र, नक्षत्र, चंड, शुक्लपक्ष, नदी, सरोवर, समुद्र इत्यादिक उलंघणा देखे ते निष्फल जाणवां वली गाय, बलद, हाथी, महेल, पर्वत, टूंक एमनां उपर चड्यो एवु स्वप्न देखे तो महोटाइ पामे तथा विष्टाविलेपन शरीर देखे तो निरोगी थाय,स्वप्नमां रुदन करे तो हर्षनी प्राप्ति थाय, स्वप्नांमां राजा, हाथी, घोडो, सोनुं, बलद, गाय,कुटुंब देखे तो कुलनी वृद्धि होय,

तथा प्रासाद उपर चढीने जाये जमुं छु एवुं स्वप्न देखे तथा समुद्र तरु छु एवुं स्वप्न देखे तो जो नीचकुलमां तेनो जन्म थयो होय तोपण ते राजा थाय वली दीपक, मांस, फल, कन्या, पद्म, छत्र अने ध्वजा एटला वाना स्वप्नांमां देखे तो जय पामे, तथा पोताना इष्टदेवनी प्रतिमाने जो स्वप्नमां देखे तो आयुर्वृद्धि पामे तेमज कीर्त्ति, यश अने धननी पण वृद्धि पामे वली जे कपास, भस्म, हाड अने छास ए चार श्वेतवस्तु वर्जीने बीजी कोइ पण सपेत वस्तु स्वप्नांमां देखे तो भली जाणवी तथा जे हाथी, देवता, घोडो अने राजा ए चार चीज विना बीजी कोइ काली वस्तु स्वप्नमां देखे तो ते सारी जाणवी नहीं तथा स्वप्नमां गायन करे तो रुदन करवुं पडे, स्वप्नमां नाचे तो बंदीखाने पडे, स्वप्नमा हसे तो शोचमां पडे, स्वप्नमां भणे तो कलह थाय, वली जो स्वप्नमां देवता, साधु, ब्राह्मण, राजा, पितृ, वृद्ध एटला मांहेलो कोइ आवीने कोइ प्रकारनी वात कहे ते वात अवश्य सत्य थाय तथा स्वप्नमां धोलो सर्प भुजाने डसे तो हजार सोनैयानो लाभ थाय, वली कोइ फल्युं फूल्युं वृक्ष तथा रायणनुं वृक्ष तेना उपर पोते चढयो एवुं स्वप्नमां देखे तेने घणु धन मले, वली गधेडो, ऊंट, भेंस भेंसो एमना उपर एकलो हुं चढयो छुं एवु स्वप्न देखे तो ते तत्काल मरण पामे, वली जे पुरुष धोला कपडा वाली धोला चंदननुं विलेपन करेली एवी स्त्रीने हु भोगवु छु एवुं स्वप्न देखे तो तेने सर्व प्रकारनी लक्ष्मी मले, वली जे रातां वस्त्रवाली, रातो चंदन कृष्णगंध विलेपन वाली स्त्री भोगवु छुं एवुं स्वप्न देखे तो तेनुं लोही सुकाइ जाय, वली जे रत्ननां, सोनानां अने सीसानां ढगलाउ उपर हुं चढ्यो छु एवुं देखे तो ते अवश्य समकेत पामीने मोक्ष जाय तथा जे स्वप्नमां दारु प्रमुखनो घडो आपो में उपाड्यो ने एवो पोताना आत्मा

नें माने तो ते समकेत पामीने बीजा नवमां मोक्ष जाय ॥ हवे त्रिशला मातायें जे चौद स्वप्नां दीठां तेनुं फल तो आ प्रमाणे छे जे प्रथम स्वप्नमां चार दंतोसलवालो हाथी दीठो ते देखवाथी ए पुत्र महा पराक्रमी थाशे वली दान, शील, तप अने जाव रूप चार प्रकारनां धर्मनी प्ररूपणा करशे, वली चोसठ ६४ तथा गजपति जे राजाउ ते एना चरणकमलने सेवशे ॥ वली बीजे स्वप्ने वृषन दीठो तेथी तमोने धर्मधोरी पुत्र थशे एटले जरतक्षेत्रने विषे जेम कर्षणीउ वृषन थकी धान्यनुं बीज वावे तेम ए पुत्र बोधरूप धान्यनुं बीज वावशे ॥ त्रीजे स्वप्ने सिंह दीठो तेथी निर्नय अने शूरवीर त्रण जुवनमां पोतानी आज्ञा मनावशे एवो ए पुत्र थाशे एटले जेम सिंह होय ते श्वापद जीवोथी विनाश पामतुं एवुं जे वन तेनुं रक्षण करे तेम ए पण सम्यक् प्ररूपणा रूप सिंहें करी कुदृष्टि जे मिथ्यात्वरूप श्वापद जीवो तेथकी नाश पामतु एवुं जे जव्यजीवरूप वन तेनुं रक्षण करशे, एटले मिथ्यात्वरूप आपदाथी जव्यजीवोनुं रक्षण करशे अथवा आठकर्म अने आगमवरूप श्वापदोनो नाश करशे, वली त्रण जुवनने विषे पोतानी आज्ञा मनावशे ॥ चोथा स्वप्नमां लक्ष्मी देवता दीठी तेथी त्रणजगतनी तीर्थंकर लक्ष्मीनो जोक्ता थशे एटलें वरसीदान देइ दीक्षापाली केवल रूप लक्ष्मी पामीने आठ प्रातिहार्यरूप तीर्थंकरनी लक्ष्मीने जोगवशे ॥ पांचमां स्वप्नमां फूलनी बे मालाउ दीठी तेथी सत्पुरुषोने माथे पुज्य पणु जोगवशे एटले जेम फूलनो तोरो मस्तकें धराय छे तेम एनी आज्ञा पण सर्व जव्यजीवो मस्तके धरशे तथा बे माला दीठी माटें एक श्रावकनो अने बीजो साधुनो एवा बे प्रकारना धर्म कहेशे ॥ छठ्ठा स्वप्नमां चन्द्रमा दीठो तेथी ए सौम्यदर्शन वालो थशे, शीतल परिणामवालो थशे,जव्यजीवरूप कुवलयनो बोध प्रकाश करवाने चन्द्रमा सदृश

थशे ॥ सातमा स्वप्नमां सूर्य दीठो तेथी मिथ्यात्वरूप अंधकारनो हर्त्ता थशे तथा पोते प्रजामंडळें करी अलंकृत थशे ॥ आठमा स्वप्नमा ध्वजा दीठी तेथी कुलमा ध्वजा समान उत्तम थाशे तथा धर्मध्वजायें करी विराजमान थाशे, जगतने चारे दिशायें धर्मध्वजायें करी शोभावशे ॥ नवमा स्वप्नमां पूरण कलश दीठो तेथी संपूर्ण गुणी थशे तथा धर्मरूप प्रासाद उपर कलश चढावशे ॥ दशमा स्वप्नमां पद्मसरोवर दीठुं तेथी जगतना तापने हरवावालो थाशे तथा चालतां थकां एना पगतले देवताउ सुवर्ण कमल थापशे ॥ अगीआरमा स्वप्नमां खीरसमुद्र दीठो तेथी गंभीर हृदय वालो थाशे तथा केवल ज्ञानरूप रत्न पामीने चौदराजलोकना नाथ जाणशे ॥ बारमां स्वप्नमा देवविमान दीठुं तेथी देवताउनो पूजनीक थाशे एटले वैमानिक पर्यंत चार निकायनां देवताउ एनी सेवा करशे ॥ तेरमां स्वप्नमां रत्ननो राशि दीठो तेथी देवता त्रणगढ करशे तिहां बेसी भव्यजीवोने धर्मदेशना आपशे चौदमा स्वप्नमा निर्धूम अग्नि दीठो तेथी दीप्तिवंत थाशे तेजवंत थाशे तथा जेम अग्नि कंचनने शुद्ध करे छे तेम ए तमारो पुत्र आत्माना शुद्ध स्वभावनी शुद्धि करनारो थाशे, भव्यजनोनां मन शुद्ध करशे, कर्ममलने बाली नाखशे ॥ तथा ए चौद स्वप्नां दीठां तेथी चौदराज लोकनो स्वामी थाशे ॥ एवा चौद स्वप्नथी एवां फल वालो तमारो पुत्र थशे ॥ वली स्वप्न पाठको कहे छे के हे देवानुप्रिया अमारा स्वप्नशास्त्रमां बेतालीश स्वप्नां सामान्य अशुभफल दायक कह्यां छे अने त्रीश स्वप्नां उत्तम महोटा फलनां देवावालां कह्यां छे सर्वमली बहोंतेर स्वप्नां कह्यां छे तेमांथी श्री अरिहंत अने चक्रवर्त्तिनी माता, अरिहंत अने चक्रवर्त्ति गर्भमां आव्या थकां ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ४०० ॥ ॥ त्रीश महोटा स्वप्नामांथी गज वृषभादिक चौद महोटा स्वप्नां देखे ॥७४॥ अने

वासुदेव गर्जमां आवे तेवारे वासुदेवनी माता ए चौद महोटा स्वप्नां मांहेला कोइ पण सात स्वप्न देखे ॥ ७५ ॥ ॥ बलदेव गर्जमां आवे तेवारे बलदेवनी माता ए चौद महोटा स्वप्ना मांहेला गमे ते चार स्वप्नां देखे ॥ ७६ ॥ ॥ मम्मलिक राजानी माता ए चौद स्वप्नां मांहेलु एक स्वप्न देखे ॥ ७७ ॥ हवे बेतालीश मध्यम अने त्रीश उत्तम स्वप्न जे पूर्वे कह्यां तेना नाम कहे छे तिहां प्रथम बेंतालीश स्वप्ननां नाम कहे छे गधर्व, राक्षस जूत, पिशाच, बुकस, महिप, अहि, वानर, कटकडुम, नदी, खर्जूर, स्मशान, उंट, खर, मार्जार, श्वान, दोस्थ, संगीत, धीज, जस्म, अस्थि, वमन, तम, कुस्त्री, चर्म, रक्त, अश्म, वामन, कलह, विविक्तदृष्टि, जलशोप, जूकंप, महयुद्ध,निर्घात, जंग, जूमक्कन, तारापतन, सूर्यचंद्र स्फोट, महावायु, महातप, विस्फोटक, दुर्वाक्य ए बेंतालीश मागां स्वप्न अशुज फल दायक जाणवां हवे त्रीश उत्तम स्वप्ननां नाम कहे छे अर्हन, धोद्ध, हरिकृष्ण, शंजु, ब्रह्मा, स्कंद, गणेश, लक्ष्मी, गौरी, नृप, हस्ती, गौ, वृषज, चंद्र, सूर्य, विमान, गेह, अग्नि, स्वर्ग, समुद्र, सरोवर, सिंह, रत्नरेल, गिरि, ध्वज, पूर्ण घट, पुरीष, मांस, मत्स्य, कल्पडुम, ए त्रीश स्वप्न शुज फलदायक जाणवां ए वधां मली बहोंतेर स्वप्ननां नाम श्री वर्धमान सूरिकृत स्वप्नप्रदीप ग्रंथने अनुसारें लख्यां छे ॥ ॥ हवे जे पुरुष स्थिरचित्तवालो होय, जितेंद्रिय होय, पंचेंद्रिय जेणें वश करेलां होय, शांत मुद्रावालो होय, वली धर्मरुचि होय, धर्मानुरागी होय, धर्म उपर श्रद्धावंत होय, दयावंत होय, इत्यादिक उत्तम गुणनो धणी होय, तेने जे स्वप्नुं दीठामां आवे, ते सारुं अथवा मातुं तरत फले वली रात्रिने प्रथम प्रहरें स्वप्न देखे, तो एक वरपमांहे फल आपे, रात्रिने बीजे प्रहरें स्वप्न देखे तो छमास मांहे फल आपे, रात्रिने त्रीजे प्रहरें स्वप्न देखे तो त्रणमास माहे

फल आपे, रात्रिने चोथे प्रहरें स्वप्न देखे, तो एक मासमांहे फल आपे, रात्रिनां अंतनी बेघडी वे घडीरात्र रहे तेवारें स्वप्न देखे, तो तेनुं फल दश दिवसमांहे पामे, सूर्य उगती वेलायें स्वप्न देखे तो तत्काल फल पामे तथा जो माठु स्वप्न दीठामां आवे तो पाछा सुइ रहेवुं अने कोइनी आगल कहेवु पण नही तथा उत्तम स्वप्न देखी गुर्वादिक आगल कहेवुं, जो सन लाववा योग्य कोइ जन न मले तो गायना कानमां पण संभलाववु, नहुं स्वप्न देखी पछी सुवे तो निष्फल थाय, नडु स्वप्न देखी मूर्ख जन आगल तो सर्वथा न ज कहेवु केम के जेवुं फल सांभले, तेवुं फल पामे पण उत्तम पुरुष आगलज कहेवुं ते उपर मूलदेवनु दृष्टांत कहे छे को इएक राजानो पुत्र अपमानितो थको छे तेनुं नाम मूलदेव छे पण तेने दान आपवानु घणुज व्यसन छे तेथी राजायें तेने काढाडी मूक्यो ते फरतो फरतो कोइक गामे आव्यो पोते महा धर्मवत जेनमति छे परंतु खावाने नहतुं तेवारे शहेरमां याचवाने गयो तिहां फरतां एक वा णीयांयें जेंशने अर्थे अडद रांध्या हता ते मूलदेवने आप्या तेने लइ वाडीमां आव्यो अने मन मां चिंतववा लागो जे कोइ अतिथि आवेतो तेने जोजन आपीने पछी हु जोजन करुं एटलामां एक साधु पण भूल्यो थको त्यां आव्यो, तेवारे मूलदेवें ते ऋषिने देखी बाकला वोहोरावी दी धा अने पोते आनंदपणे सुइ रह्यो तिहां निराबाध पणे वडो चड्मा मे गल्यो एवुं स्वप्नु दीठुं, ते स्वप्न देखीने जाग्यो अने वली जे वाडीमां ए मूलदेव सूतो हतो तेज वाडीमां एक बावानो मठ छे ते बावानां चेलायें पण तेहज स्वप्नुं दीठुं देखीने जाग्यो प्रजातें पोताना गुरुनें कह्युं ते वारे गुरुयें कह्युं जे तु आज गाममां भिक्षा लेवा जइश तेवारे तुजने चड्मा जेटलो महोटो घृतें चोपडेलो रोटलो गोल सहित मलशे ते सांजली चेलो राजी थइने भिक्षा लेवा गयो ते

पाम्यो तेवारे राजाविना कोइने चाले नहीं तेथी पंच एकठा थइने एवा ठराव कर्यो के पाटवी घोडो, पाटवी हस्ति अने पाटवी प्रधान इत्यादिकने शणगारीने कह्युं जे जेने ए राजा करी थापे तेने राजगादीयें बेसाडीयें केमके एम कर्याथी पित्राइ गोत्राइ जे होय ते आगल कोइ वांधो करी शके नहीं हवे हाथी अने घोडो ए बे बाहेर नीकलीने जे वाडीमां मूलदेव सूतो हतो ते वाडीमां आवी हाथीयें गलगाट करी मूलदेवना मस्तके कलश ढोल्यो अने घोडे हणहणाट कर्यो पछी हाथी तेने सूंढथी उपाडी पोतानी पीठ उपर बेसाडीने शहेरमां लइ आव्यो, लोकोये तेने राजपाटें थाप्यो माटे सारु स्वप्न दीठुं होय तो उत्तम डाह्या पुरुष आगल कहेवु पण मूर्ख आगल नज कहेवु ॥ हवे उत्तम स्वप्न मूरख आगल कहेवाथी जे दुःख थाय ते उपर वणिकस्त्रीनुं बीजु दृष्टांत कहे छे, कोइएक वणिकस्त्रीयें स्वप्नमांहे समुद्र पीधो, प्रभातें

... पोताना ... मरण पाम, वली जात्रायें जाय, पूजा करें,तेने कुलवृद्धि थाय हवे, सरोवरें कमल उग्यां देखे,ते कोढ रोगें मरण पामे हाथी, घोडो, गाडलु, सिंहासन तथा घरना वस्त्र एटलां वानां गयां देखे तो राजानो भय थाय, हथीयार, आभरण, मणि, मोती, सोंनुं अने रूपु एटला वानांनो नाश थतो देखे तो तेनुं धन अने मान बे वानां जाय, जे पोतानी भार्याने कोइ लइ जाय छे एवु देखे तो तेनी संपदानो नाश थाय, पोतानी स्त्रीने कोइ पराभव करेछे एवुं देखे तो क्लेश उपजे, गोत्रमांहेली स्त्री कोइ लइ जतो देखे तो तेना भाइ प्रमुख वधीखाने पडे, पोतानो

दोलीयो अने धोळुं वस्त्र स्वप्नमां देखे तो पोताने पीडा उपजे, कोइ मनुष्यना पगनुं कु मास जक्षण करुं छु एवु स्वप्न देखे तो राजा थाय, पद्मसरोवर, समुद्र अने नदी उतरतो देखे तो घणु द्रव्य पामे वली उन्नुं पाणी, गायनुं छाण गोळमां जेळवेलुं पीछु एवुं देखे तेने अतिसार रोग थाय तेथी मरण पामे, देवमूर्त्तिनी पूजा करुं छुं, यात्रा करुंछु एवुं देखे तेने सर्वप्रकारें वृद्धिथाय, हृदय उपर कमल उग्युं देखे तो तेनु शरीर कोढरोगे विनाश पामे इत्यादि ॥ माटे हे देवाणुप्रिया ! त्रिशलाक्षत्रियाणीयें जे चौद महोटा स्वप्ना दीठां ते उदारकारी, मंगलकारी छे तेनुं फल हे देवाणुप्रिया ! अर्थनो लाभ थाशे जोगनो लाभ थाशे, पुत्रनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे तेमाटे हे देवाणुप्रिया ! निश्चे ए त्रिशला क्षत्रियाणीनें नव महीना अने साढासात दिवस व्यतिक्रम्यानतर तमारा कुलमां ध्वजा समान, दीपकसमान, मुकुटसमान, पर्वतसमान, तिलकसमान, कुलनी कीर्त्तिनो करवा वालो, कुलना निर्वाहनो करवा वालो, कुलमां सूर्यसमान तेजवत, कुलनो आधार, कुलना यशनो करवा वालो, कुलमां वृक्ष समान, कुलपरंपरानी वृद्धि करवा वालो, जेना हाथ पग घणा सुकोमल छे एवो वली कोइ इंद्रिये हीन नही, लक्षण व्यंजन गुण सहित, मानोन्मान सहित, सपूर्ण सर्व अंग जलो सौम्याकार, वल्लभकारी जेनुं दर्शन छे एवो पुत्र थाशे ॥ ७८ ॥ वली ते बालक बाल्यावस्था छोडीने जेवारे विनय विज्ञान पणो युवान अवस्था पामशे तेवारे शूरवीर, पराक्रमवत, घणा हाथी घोडा रथ प्रमुख सेनानो मालक, चार अत पृथिवी सुधी राज करवा वालो एवो चक्रवर्त्ति राजानो राजा थाशे अथवा त्रण लोकनो नाथ धर्मचक्रवर्त्ति एवो तीर्थंकर थाशे ॥ ७९ ॥ तेना वास्ते हे देवाणुप्रिया त्रिशलाक्षत्रिया

णीयें यावत् मगलकल्याणकारी, स्वप्नां दीठां ॥८०॥ तेवारें सिद्धार्थराजा ते स्वप्न लक्षण पाठकोनां मुखथी एवो अर्थ सांजली करीने हृदयमां हर्ष संतोष पाम्यो थको हाथजोडी अंजली करीने स्वप्न लक्षण पाठकोने कहेतो हवो ॥८१॥ एमज थवानुं छे, हे देवाणुप्रिया एवोज ए अर्थ छे, छुगे नथी, में वांछ्यो तेज प्रमाणे तमारा मुखथी ग्रहण कर्यो, जे तमे कहो छो ते सत्य छे एवुं कहे आ वचन उपर कोइक टीकाकारे जोजराजानी वारमां एक गांगो तेली थयो छे तेनुं दृष्टांत आपेलुं छे परंतु ते पाछलथी थयेलो छे अने आ वाततो प्रथमनी छे तेथी ए दृष्टांत मलतु नथी पण उपनयनमां मलती वात छे वली दृष्टांत होय ते एक देशीय होय माटे लोकने आनदने वास्ते जोपण अंतर्वाच्यादिकोमां नथी तोपण लखी मूकीये छैयें तद्यथा ॥ सिद्धार्थराजा कहे छे के सुसिद्धिनुं कहेवुं ते सर्व स्थानके सिद्धज थाय छे जेम गांगा तेलीने थयु ते गांगा तेलीनी कथा कहे छे कोइएक विद्यार्थि दक्षिणदेशमां प्रतिष्ठानपुर नगरने विषे कोइ एक जट्टनी पासेंथी त्रीश वर्ष पर्यंत विद्या जणीने अहंकारमां आव्यो तेवारे माथा उपर अंकुश धारण कर्यो तथा रखेने विद्याये करीने महारो पेट फाटी जाय तेना गर्वथी पोताना पेटने पाटो वांध्यो, वली जो कोइ वादी महारा साथे वाद करतां नाशिने आकाशमा जाय तो तेने निसरणी उपर चढी नीचो पटकी आपु एवा गर्वे करी एक नीसरणी पण पोतानी पासे राखी, वली वादी जो नाशिने पातालमां प्रवेश करी जाय तो तेने खोदीने बाहार काढीश एवा अभिमानथी एक कोदाल पण पोतानी पासे राखी तिहां निसरणी तथा कोदाल एक चाकरना माथा उपर आपी तथा वली जो कोइ वादी महारा साथें वादमा हारी जाय तो तेना मुखमां तृण रखावी देवु एवा विचारथी एक माणस घासनो पुलो लइने तेनी

पठवाडे पठवाडे चाले एवा आमबर सहित चालतो थको दक्षिण, गुजरात, मारवाड, मेवाड इत्यादिक देशोना पंमितोनी साथे वाद करी तेने जीतीने सरस्वतीकंठाभरण इत्यादि विरुदा वली रोलावतो थको सर्व गामोना पंमितोने जीततो थको अनुक्रमे मालवदेशमां उज्जेणी नगरीना नोजराजानी सनामां पांचशें पंमित ठे एवी वात सांनलीने ते पंमितोनी साथें वाद करवा सारु उज्जेणीयें आव्यो तेने राजायें महोटा आमंबरथी नगरमां प्रवेश कराव्यो, रुडा महेलमां उतारो आप्यो, पठी ते पंमित राजानी सनामां आवी पंमितोनी साथे वाद करीने राजानी समक्ष कालिदास माघ आदिक पांचशें पंमितोने जीत्या तेवारें राजाये विचार्युं जे आ महोटो आश्चर्य थयो जे परदेशी नट्टें आवीने महारा सर्व पंमितोने हरावी दीधा तेथी महारा पंमितोना माननी हानि थइ एवो चितातुर थइने क्रीडा करवाने अर्थे जावा लाग्यो मार्गमा जतां रस्तामां एक आख्य वालो एक गांगोतेली घाणी उपर बेठो ठे ते घाणीमांथी तेल लइने बीजो एक जुदो घडो हतो तेमां नाखे पण तेलनुं एक टीपु मात्र बाहेर पडवा दीये नही एवा काणा घांचीने देखीने राजाये विचार्यु जे आ काणानी बुद्धि जूउ केवी ठे ! तो ए काणानी अक्कलनो तो पारज नही होय एम कहेवु तेज सत्य ठे पठी राजायें तेने बोलावीने पुठ्यु के अरे तुं नट्टाचार्य साथे संवाद करीश ? तेवारें ते बोल्यो हा महाराज ! हुं वाद करीश एमां महारुं शुं जवानु ठे ? ए नट्टाचार्यनी साथे वाद करवो कांइ महोटी वात नथी जो जोरावर जबर देखीश तो पण अटपटा न्यायथी तेने जीती लइश पठी राजायें आदित्यवारने दिवसें नट्टाचार्यने बोलावीने कह्युं के हे नट्टाचार्य ! महारा जे साधारण नट्टो हता तेने तमे जीत्या पण हजी महारा सर्व पंमितोनो जे आचार्य ठे तेनी साथे जो वाद करो अने जीतो तो हुं जाणु जे तमे

खरा पंमित ठो तेवारें दक्षिण नट्टाचार्यें कह्युं हा राजन्' हुं तेनी सार्थे पण वाद करीश माटे ते ज्यांठे तेने श्राही वोलावी ल्यो तेवारे राजायें नट्टाचार्यने श्रासन श्रापी वेसाड्यो पठी कालीदास, क्रीडाचड् प्रमुख नट्टोने एकठा करीने कह्युं के जाउ पंमितजीने लइ श्रावो तेठ्ये जइ गांगातेलीने नट्टाचार्यनो वेश कराव्यो, घरेणां पहेराव्यां श्रने शरीरमां तो ते, प्रथम थीन मातेलो मदोन्मत्त हाथी सरखो ठे तेने पालखीमां बेसाडी पांचशें पंमितोयें परवर्यो थको राजसनामां लाव्या, राजायें ठठी श्रादर दीधो, सर्व सना ठठी उनी थइने महोटा सन्मानथी सिंहासन उपर वेसाड्यो तेवारे दक्षिण नट्टाचार्यें तेने जोइने विचार्युं जे श्रातो मातेलो ठे श्रने हुतो शरीरे ज्वलो बुं तेथी एनी सार्थे वाद करतां पार श्रावे नही माटे एनी सार्थे वचननो कलह करवो नही, मात्र तत्त्वज पूठवु एम चिंतवीने एक श्रांगुली उंची करी तेवारें नोजराजाना नट्टें क्रोधकरी वे श्रांगुली उंची करी ते जोइ दक्षिण नट्टाचार्यें चमत्कार पामीने पांच श्रांगुली उंची करी बतावी ते जोइ गांगातेलीयें मुठी नीडी बतावी तेवारें दक्षिण नट्टाचार्यें पोताना मस्तक उपरथी श्रकुश उतारी नाख्यो, पेटे पाटो बांध्यो हतो ते ठोडी नाख्यो श्रने निसरणी तथा कोदाली पण नाखी दीधी, तृणनो पूलो बाली नाख्यो, समस्त माननो त्याग करी सर्व सना समक्ष नोजराना नट्टने पगे लाग्यो श्रने कहेवा लागो के महोटी श्राश्चर्यनी वात ठे जे मने कोइए पण जीत्यो नही पण तुं महोटो पंमित माटे तें मुजने जीत्यो ते जोइ नोजराजा विस्मय पामीने दक्षिण नट्टाचार्यने पूठ्युं के तमे केवा प्रकारनो वाद कर्यो तेवारे नट्ट बोल्यो के तमारो नट्ट महाज्ञानवान् ठे कारणके में एनी सार्थे समस्यायें वाद कर्यो जे श्रा जगतमां एक शिव ठे एवु स्थापन

करवा सारु एक आंगुली तमारा नट्टने बतावी तेवारें तमारा नट्टे बे आंगुली देखाडी तेथी हु समजी गयो के एक मात्र शिवज नथी पण शिव अने शक्ति ए बेव छे पछी वली में कसु के इन्द्रियो पांच छे तेथी पांच आंगुली बतावी तेवारें आपना नट्टाचार्यें मुठीजीडीने बतावी तेथी हु समजी गयो के पांचइन्द्रियोतो खरी पण तेने वश राखवी जोइयें तेवारें में जाण्यु जे ए पंमित त्यागी ज्ञानी अने जितेंद्रिय छे एवीरीते वाद थयो तेमां हु हारीगयो एना समान बीजो पंमित में क्याय पण दीठो नही एवुं कहीने दक्षिणनट्टाचार्य मानभृष्ट थयो थको पोताने देशे चाल्यो गयो, पाछलथी नोजराजायें गांगातेलीने पूछ्युं के तें केवा प्रकारनो वाद कस्यो अने केवीरीते जीत्यो तेवारे तेली बोल्यो के महाराज दक्षिणनट्टाचार्य घणो खराब माणस छे मने कहेवा लाग्यो के ताहारी एक आंख छे ते हुं फोडी नाखीश एवुं मनमा लावीने एक आंगुली उंचीकरी तेवारें में बे आंगुली उची करीने समजाव्यो के तुंतो एक आंख फोडतो पण रही जाइश परंतु हु ताहारी बे आंखो फोडी नाखीश त्यारे मने पंजो देखाडी बोल्यो के हुं तने थाप मारीश तेथी ताहारुं मोहोडुं फरी जाशे तेवारे में मुठीवाली बतावीके हु तुजने एक मुठी मारीश तो तु पातालमां पेसी जइश एवी वात तेलीना मुखथी सांनलीने राजा प्रमुख सर्व सनाने हसवुं आव्युं अने बोल्या के ए महोटो नाग्यशाली बुद्धिवालो छे एवुं कही वस्त्रादिक पहेरामणी आपी सन्मान देइ गांगा तेलीने घेर पोचतो कस्यो एनी पेरे सिद्धार्थ राजा कहे छे के हे स्वप्न पाठको ! तमे बुद्धि कहो तेथी महारेतो तमारुं कहेवुं सत्य थाउ एवुं सिद्धार्थराजाए स्वप्न पाठकोने कह्युं कहीने ते स्वप्ननि रुडीरीते धारण करीने ते स्वप्नलक्षण पाठकोने घणा अशन पान खादिम स्वादिमादिक चार आहार जमाडीनि फूल फल गंध माला

घरेणादिकें करीने सत्कार सन्मान आप्युं ते सत्कार सन्मान आपीने घणी आजीविका जीवे तिहां सुधी खाया करे एवी करी दीधी अर्थात् गाम प्रमुख आपीने शीख आपे ॥७२॥ ॥ तेवारपछी सिद्धार्थ क्षत्रियराजा सिंहासन थकी उठीने जिहां त्रिशलाक्षत्रियाणी पडिछमां वेठी छे त्यां आवीने कहे छे ॥७३॥ ॥ एवो निश्चय हे देवाणुप्रिया स्वप्न शास्त्रमा बेंतालीश सामान्य स्वप्न अने त्रीस महा स्वप्नां सर्व बहोंत्तेर स्वप्नां कह्यां छे तेत्रीशमांथी चौद महोटा स्वप्न तीर्थंकर अने चक्रवर्त्तिनी माता देखे अने एज चौद स्वप्न मांहेला सात स्वप्नां वासुदेवनी माता देखे अने चार बलदेवनी माता देखे, एक मण्डलिकराजानी माता देखे, एवुं स्वप्न पाठके कह्यु ने जे तमे चौदे स्वप्नां दीठां ॥७४॥ ॥ ते तमारे चक्रवर्त्ति तथा तीर्थंकर होवावालो पुत्र थाशे ॥७५॥ ते पछी त्रिशलादेवी ए अर्थ सांभलीने हृदयमां खुशी थइ यावत् स्वप्नांनो अर्थ धारण करीने ॥७६॥ ॥ सिद्धार्थराजानी आज्ञा लइने नाना प्रकारना मणिरत्नोना बाजोठथी उठीने ताकीदरहित यावत् राजहंस सरखी गतियें चालती थकी ज्यां पोतानुं भुवन छे तिहां आवीनें पोताना मंदिरमां प्रवेश करती हवी ॥७७॥ ॥ जे दिवसथी श्रमणभगवत श्रीमहावीरस्वामी ते राजानाकुलमा हरणिगमेषी देवें संहराया ते दिवसथी वैश्रमणनामे इन्द्रमहाराजनो जे भंडारी जेनुं लोकोमां धनद एवु नाम छे ते भंडारीना हुकुमना उठाववा वाला एवाजे तिर्यक लोक निवासी वैताढ्यपर्वतनी मेखलाये रहेनारा व्यंतरनिकायनां तिर्यगजृम्भक देवता ते शक्रेंद्रना हुकुमथी घणाजघणा एवा जे जुनाधन घण्या महानिधान ते केवा धन तोके जे धनना स्वामी हीण थइगया, जे धनना संचयकरवा वाला वधाववा वाला मरण पामी गया छे, तेमनो कोइ गोत्री पण रह्यो नथी, सर्वथा ते धनना स्वामी विछेद गया, मांडवा वाला विछेद गया,

नाटवा वालानां कुलगोत्र पण विछेद पाम्या तेमनुं धन ते हवे जे स्थानके गालीने मरीगया ते स्थानकोनां नाम कहे छे गामबुधिनां गुण जिहां जता रहे तेने गाम कहीये तिहां घडावीने मरीगया ते धन तिहांज रहीगयुं, ते धन तथा जिहां कर नही लागे तेनें नगर कहीये, धूल नो कोट जिहां होय तेने खेट कहीयें, खोटुं नगर ते कर्बट कहीये, शहेरथी बे कोश उपर जे गाम होय ते मम्प कहेवाय, जेने चारे बाजुये गाम वसे ते द्रोणमुख कहेवाय, जलमा अने थलमां थइने मार्गे जाय ते पट्टण कहीये, जिहां तापसोनु वसवु होय तेनें आश्रम कहीयें, तीर्थस्थानके जे गाम होय तेने सवाह कहीयें, सार्थवाहने उतरवानु स्थानक होय तेने सन्निवेश कहीयें एवा प्रकारनां गामोनें विषे सिंघोडाने आकारें रस्ता होय तेने विषे तथा त्रिवाटाने विषे, चोवटाने विषे तथा घणा मार्ग जिहां भेला थता होय तेने चत्वर मार्ग कहीये तथा चौमुखा देवोना मंदिरमां, महोटापंथ वाला राजमार्गने विषे, देवकुलमां, सभामा, पाणीना स्थानकमां, बागमां, उद्यानमां, वनमां, वनखमडमा, एकजातिनां वृक्ष होय तेने वन कहीयें, अनेक जातिनां वृक्ष जेमां होय तेने वनखंड कहीयें, मसाणमा, सूनाघरमां, पर्वतनी गुफाउमां, होमना स्थानके, पर्वतनी शिला खोवेली होय तेमां, बेसवानी शालामां, लोकोने वसवाना स्थानकोमां एटला स्थानके घालेलां जे धन ते सर्वजगाउंना धन लइ लइने सिद्धार्थ राजानां घरमां नाखो एवो इन्द्रमहाराजनो हुकुम थयो तेवारें तिर्छालोकना वसवा वाला तिर्यग्जृंभक देवता ते सर्वधन लइ लइने सिद्धार्थराजानां घरमां नाखे ॥८८॥ ॥ जे रात्रिमां श्रमण भगवान श्रीमहावीर स्वामी ज्ञातकुल जे सिद्धार्थराजा तेना कुलमां आव्या ते रात्रिथी मांडीने सिद्धार्थराजा, सोनेकरी रूपेकरी धनेकरी धान्येकरी राज्येकरी देशेकरी वाहनेकरी कटके

करी, पालखी प्रमुखेकरी, नंमारेकरी, धान्यना कोगरेकरी, पुरेंकरी, अतेजरजे राणीयोनो परिवार तेरोकरी, देशवासी लोकोयेकरी, यशवातेकरी, घणु घणुं वध्या, वृद्धि पाम्या तथा घणो धान्य गणवामां आवे एवां चोवीश प्रकारनां धान्य तेनां नाम कहेछे जव, घव, सालि, वीहि, साठी, कोद्रवा, सामो, कांग, राल, तिल, मग, अडद, अलसी, चणा, तिउडा, वाल, सिलिंद, राजउदद, वघु, मसूर, तुअर, कुलथ, धाणा, कलायरो, इत्यादिक प्रकारनां धान्यथी तथा बीजां पण सोनुं, रूपु, रत्न, मोती, मणि, दक्षिणावर्त्तशख, राजवर्त्त, शिला, मुणिया, लाल रत्न, पद्मराग आदिके करी वध्या वृद्धि पाम्या तथा प्रीति, सत्कार, समुदाये करीने घणा घणाज वध्या, वृद्धिपाम्या, तेथी श्रमणजगवत श्रीमहावीरस्वामीनां माता पिताजनां मनमां एवो हर्ष विचार उपन्यो ॥ ८९ ॥ ॥ के जे दिवसथी अमारे आ पुत्रकूखमां आव्यो छे ते दिवसथी लइने अमे सर्वप्रकारें पूर्वें कह्यां एवां सोनां रूपां प्रमुख वस्तुयेंकरी वध्या,प्रीति सत्कारें करी घणाघणाज वध्यां, माटे जेवारे अमारे घेर आ पुत्रनो जन्म थाशे तेवारे अमे ए छोकरानुं नाम जेवा एमां गुण छे तेवुं आपीशुं, वृद्धिपणाना गुणेकरी वर्द्धमान एवु नाम स्थापन करीशुं ॥ ९० ॥ ॥ तेवारे श्रमणजगवत श्रीमहावीर स्वामी पोतानां मातानी उपर अनुकंपा एटले दया लावीने विचार्यु जे हु जेवारे गर्जमां हालुं चालुं बु तेवारे माताने फुःख उपजे छे एम चिंतवीने मातानी कूखमां निश्चल रह्या, हाल्या चाल्या नही, कप्या नहि, पोतानां अंगोपांग गोपवी राख्यां एवा थया थका रह्या, इहां कवि उत्प्रेक्षा करे छे के जाणे जगवान् मोहराजाने जीतवासारुं एकांते विचार करता रह्या छे केशुं ? अथवा कोइ परब्रह्मनुं अगोचर ध्यान करे छे केशुं ? अथवा कल्याणरस प्रत्यें पोताना आत्मगुण साधवा

रह्या ढे केशुं ? अथवा कामदेवनो निग्रह करवाने अर्थे रूपपरावर्त्तन विद्या साधता रह्या ढे केशुं ? एवीरीतें श्रीजगवान् मातानी कूखने विषे रह्या ते तमोने कल्याणरूप लक्ष्मीने अर्थे थाउ इति ॥ ए१ ॥ ॥ तेवारे त्रिशलामातानां मनमां एवुं थयुं जे मह्रारोगर्ज्ने कोइ देवता लइगयो, ए मह्रारोगर्ज्न मरण पाम्यो, मह्रारो गर्न्न चविगयो, मह्रारो गर्न्न गलिगयो, ए मह्रारो गर्न्न प्रथम ह्रालतो चालतो हतो ते ह्रमणां ह्रालतो चालतो नथी तेथी जाणुं जे गर्न्नने कुशल नथी एवुं विचारीने मनमां संकल्प थयो, चिंतारूप समुड्मां बुड्यां, अने हाथ उपर मोढोहुं धरी नीचीदृष्टि राखीनें आर्त्तध्यान ध्यावचा लागी, ते आर्त्तध्यान आ प्रमाणे ढे ते आगला आलावामां कहे ढे ॥ ए२ ॥ ॥ हवे त्रिशलादेवीनो शोक विचार लखीये ढैयें ॥ अहो एटले खेदकारक वचने शोक करे ढे के माह्रारो जे गर्न्न जतो रह्यो ते हुं निश्चें अजागणी छुं, हीणपुण्यवाली छुं, अजागीयाना घरमां चिंतामणीरत्न रहे नही अथवा दारिड्रीनां घरमां निधान केम रहे ? जेम मारवाडमां कल्पवृक्ष रहे नही तेम पुण्यहीणने तृषालागे तेवारे अमृत पान करवानी इछा थाय तो ते इछा केवीरीतें पूरणथाय ? वली कहे ढे के हे दैव, हे कर्म, तुं मह्रा निर्दय ढो, निर्लज्ज ढो, मुजने करुणा नथी, अरे पापिष्ठ दुष्ट अरे निरपराधी लोकने मारवा वाला, तुं मह्रारो विना मुहे वैरी केम थयो ? ताह्ररो में शो अपराध कस्यो के जेथकी तें मा ह्ररो मनोरथरूप कल्प वृक्ष उखेडी नाख्यो, जो में कोइ ताह्ररो अपराध कस्यो होयतो हे पापी तुं प्रगट थइने शावास्ते कहेतो नथी ? तें मुजने दुःखनी खाण प्राप्त करी दीधी, तें मुजने आंख्यो आपीने पाढी खेंची लीधी, तें मुजनें हाथमां निधान आपीनें पाढो खेंची लीधो, तें मुजनें मेरुपर्वत उपर चढावीने पाढी जमीन उपर नाखी दीधी, तें मह्रारा मुखमां आ

वेंजो कोळीयो खेंची लीधो, तें म्हारा निपजेला पाकेला धान्यना क्षेत्रने बाळी दीधुं, तें म्हारी
रसकुपिका नांखी दीधी, तें म्हारुं जहाज जर समुद्रमां बूडावी दीधुं, अथवा वळी देवने उलजो
देवाथी शुं थाय ! अरे जीव तें आगला जवमां एवाज कर्म बांध्या हशे ते कर्म तुजने हमणां
उदय आव्यां छे पूर्वजवमां में माताउनी पासेथी बाळकोने दूर कर्यां हशे तथा गाय प्रमु
खनां वाछरुने दूध पीवा दीधुं नहीं, वृक्षनी माळीयो जांगी, सरोवरनी पाळ फोडी, दव ल
गाड्या, अणगळ पाणी पीधां, उंदरोना बिल खोद्यां, धूळथी जर्यां, नोळीयां अने गोहनां
घरोमां उन्हुंपाणी तथा तेल रेड्युं, कीडी मकोडाना घरमां उष्ण पाणी रेड्यां, पोपट मेना
प्रमुखने पांजरामां घाल्यां, तेमनी माताना वियोग कर्या, चिडा प्रमुख पंखीउनां माळा पा
ड्या, इंडां फोड्यां, जूं लीख मार्यां, जोकोना गर्ज उपर द्वेष कर्यो, गर्ज पडाव्या, गर्जस्तंजन
कराव्यां, वशीकरण, उच्चाटन कराव्यां ताहारो पुत्र मरण पामजो एवा शराप दीधा, पापना
मंत्र अने औषध कर्यां, कोइने विष दीधुं, कोइना रस चोरी लीधां, कोइनुं शील जंगाव्युं,
अथवा व्रत लेइने जांग्या, कोइनां गाम बाळ्यां, महोटा वृक्ष धरतीमांथी उखेडी नाख्यां, म
होटा तळावनां शोषण कर्यां अथवा देवद्रव्य जक्षण कर्यां, जैनमंदिर पाड्यां, गुरुना अ
वर्ण वाद बोल्या, देवगुरु उपर द्वेष कर्यो, दान देतांने वर्जना करी, वृक्षनां फळ विदार्यां अ
थवा अनतकाय जक्षण कर्यां, काचांफळ तोड्यां घणुंशुं कहुं ! एवा माहारे जीवे पाप कर्या
हशे ते पाप हमणां मुजने उदय आव्यां छे के जेथकी महारो आवो गर्ज गळी गयो, माटे
हुंतो पारविनानी दुःखणी थइ, जो म्हारो ए चौद स्वप्ने सूचित गर्ज गयो तो हवे म्हारे ससा
रमां बीजुं शुं सुख छे, हुं राजपाटने शुं करुं वधारे शुं कहुं, त्रणलोके पूजित एवा पुत्र विना

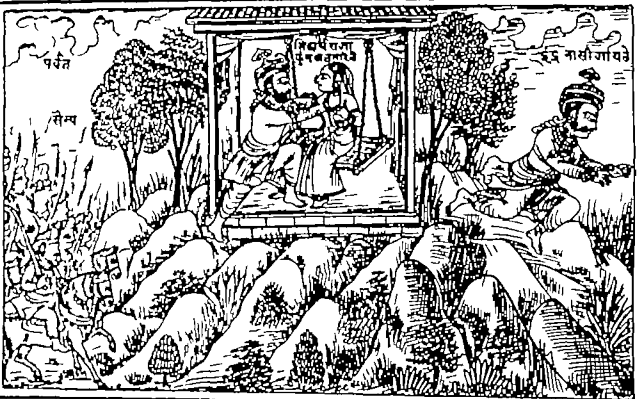
सर्व मद्दारे सुनुं ठे, द्दवे डुं किद्दां जाउ, शुं करु, कोनी आगल जइ पोकार करु, एवा विलाप करती थकी त्रिशला देवी यूथभ्रष्ट दरणी सरखी थइ, ज्हां तिहां जमे, नीसासा नाखे, एवी अव्यवस्थित थयेली त्रिशलादेवीने देखीने सखीयो पूछवा लागी के दे स्वामिनि ! आज तुं एवी केम थइ रही ठो ? अमे तने पूठीये ठैये के आ डःखनुं शुं कारण ठे तेवारे त्रिशलादेवी आंखमांथी आंसु नाखीने निशासा मूकती बोली के दे सखीयो ! डु तमोनें शुं कहुं, डु निर्भागणी ठु, मद्दारु जीवितव्य गयुं तेवारे सखीयो बोली दे सखि ! आवा अमंगलिक वचन म बोल, वीजु सर्व रहुं पण ताद्दारा गर्भने तो कुशल ठे ? तेवारे त्रिशला बोली दे सखियो ! जो मद्दारा गर्भने कुशल दोय तो बीजु मद्दारे शुं डःख ठे ? मद्दारो गर्भ जतो रह्यो एज डःख ठे एवुं कद्देतां मूर्छा खाइने जमीन उपर पडीगइ तेवारें सखीयोए चंदनजल ठंटकावीने वींजणाये वायरो करी सचेतन करीने फरी पुठ्युं जे ताद्दारा गर्भने शुं थयुं तेवारे राणी गदगदस्वरथी बोली के मद्दारो गर्भ जतो रह्यो एवुं सांभली सखीयो पण सर्व डःखी थइ थकी राजाने जइ ए दकीगत कही तेथी राजा पण डःखी थयो, नाटक वाजित्र सर्व निषेध कर्या, सर्व शोकाकुल थइ वेग के द्दवे शुं करीये एवा थया के तेने कांइ पण सूजे नद्दी, तेवारे कोइक तो निमित्तियाने पूठता दवा, कोइ ज्योतिषीया. जोगीने पूठता दवा अने वृद्ध स्त्रीयो, शांति पुष्टि करती द्दवी,कुलदेवीने मलन्ना वेती द्दवी के दे देवी-आ वखत तु किद्दां गई,एवा एवा विलाप करे ठे पण त्यां कोइ शब्दथी बोले नद्दी, स्तब्ध थया, सर्व शोकनी राजधानी सरखां थयां आसुथी मुख धोतां थकां, निशासा खाता थकां,डःखे पीडातां थकां, कोइने खावुं पीवुं पण सूजे नद्दी एवा स्वरूपे थयां तेवारे थोडी वार पठी जगवाने जाण्युं के प्रथम वाजित्र प्रमुख वाजतां

हतां ते हमणा केम नथी वाजतां ? एवुं जाणी अवधिज्ञाने जोयुं तेवारे सर्व व्यतिकर जाणीने विचार्युं के ज्जुडं यतः ॥ किंकूर्म्मे कस्यवाब्रूमः, मोहस्यगतिरीदशी ॥ स्वैर्धातुरिवास्माक, दोपनिष्पत्तयेगुणा ॥१॥ ॥ आ मोहराजानी गति कहेवी छे जे में तो गुण कर्युं तो आंही उलटुं अवगुण थयुं ते उपर कलिकालनुं दृष्टांत कहेछे जेम कोइक पंथी परदेशथी घणु द्रव्य उपार्जन करी पोताने घेर आवतो हतो तेवामां रस्ते चालतां कोइक अटवी आवी तेमां दव लागो दीठो ते दवमां कोइ सर्प दाझे छे ते सर्पे पहेला वाट मार्गुने कर्युं के मुजने आ दवमांथी बाहेर काढाब्य तेवारे तेणे बाहेर काढाव्यो त्यारे सर्पे कर्युं उलो रहे हुं तुजने भक्षण करीश ते पुरुष बोल्यो में तुजने बलतो राख्यो, उपकार कर्यो, मरणमांथी उगार्यो तो उलटो तुं मुजने भक्षण करीश ? सर्पे कर्युं आज कलिकाल वर्त्ते छे आजना समयमां गुणनो दोष थाय तेमाटे हुं तुजने करडीश तेवारे पंथी बोल्यो हुं घणा वर्षे घेर जावंछु वली माहारी पासे द्रव्य छे माटे घेर जइ महारी स्त्रीने द्रव्य आपी तेनी शीख मागी आवु छु एवो कोल आपी पोताने घेर आव्यो, स्त्रीने सर्व वात कही शीखमागीने ते पुरुष अटवीमां पाछो आव्यो, स्त्रीपण पाछलथी आवी सर्पने स्तुति करी कहेवा लागी जे अहो नागराजा महारा भरतारनु भक्षण करशोतो महारी शी वले थशे, महारे शत्रु पण घणा छे तेवारे सर्पे कर्युं ते शत्रुनिवारण उपाय तुजने बतावीश, तेनी तुं चिंता मकरजे आ औषध महारा राफडा पासे छे तेनु मूल लइ पाषाण उपरे घसीने तेना छांटा वैरी उपर नाखजे तो वलीभस्मथाशे स्त्रीयें ते औषधीनुं मूललइ, अमृत मूलीने पाषाण उपर घशीने सर्प उपर छांटा नाखवा तैयार थइ तेवारें सर्प बोल्यो में तुजने औषधी देखाडी तो वली मुनेज बाले छे उलटो गुण उपर अवगुण करे छे तेवारे स्त्री बोलीजे गुणनो आइ दोष छे एवुं तमेज तमारा मुखथी

कह्यो छो माटे हवे तमारे बोलवुं नहीं एम कही सर्पउपर छाटा नाख्या तें बली भस्म थया
॥ इति कलिकाल दृष्टात ॥ एम विचारी गर्भमांहे रह्यां भगवाने एक देशें टचली अंगुली ह
लावीने एक देशे हाल्या तेवारे त्रिशलाजीये जाण्युं अरे महारो तो गर्भ छतो छे, अने में
फोकट खोटो शोक कर्यो एवुं चितवन करीने कहेती हवी के हे सखीयो ! महारा गर्भने कुशल
छे, एवी वात हर्षथी कहेती हवी, में अज्ञानथी विलापात कर्यो, महारा भाग्य महोटां, हुं धन्य
कृतपुण्य, हुं त्रणभुवनमां मान्य, माहारुं जीववुं प्रशसनीय, मने जैनधर्म फल्यो, में पूर्वे जे धर्म
सेव्यो हतो ते प्रगट थयो, महारुं जीववुं सफल, सखीयो जयजय करवा लागी, अष्टमंगल
मांड्यां, कुंकुमछांट्यां, राजाने वधाइ दीधी, राजापण खुशी थयो, वाजित्रवाज्यां, नाटक महो
त्सव थया, तोरण बांध्यां, बंदीजन जयजय शब्द बोल्या, बंदीखानां छोड्यां, अनेक लोक मल्या,
मंगलिकनी वातोयें करी कोलाहल थइ रह्यो, महा दान आप्यां, ए प्रमाणे आनंदथी राजानी
राजधानी हर्ष रूप थइ, सूत्रकार कहे छे के ते गर्भनुं कुशल न जाणवाथी सिद्धार्थराजाना घरमां
मृदंग, ताल, वीणा, हस्तताल, नाटक इत्यादि लोकवल्लभ एवा सर्व कार्य आनंद रहित थया हता
॥९३॥ तेथी महावीर स्वामी माताने शोकातुर जाणीने एक देशथी हालता हवा तेवारे त्रिशला
हृदयमां हर्ष पामीने बोली ॥ ९४ ॥ ॥ माहारो गर्भ हरण थयो नथी, यावत् गल्यो नथी,
आ महारो गर्भ प्रथम हालतो न हतो ते हमणा हाले छे, एवुं कहीने हर्ष पामीने विचरवा
लागी हवे श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीने विचार थयो जे महारा मा बाप हमणाथीज
एवा प्रकारनो मोह करे छे तो जेवारे हुं दीक्षा लउं तेवारें तो ए घणुं दुःख पामे माटे हवे
महारे महारा माता पिता जीवे तिहां सुधी दीक्षा लेवी कल्पे नही एवुं जेवारें साढाछमहिना

गर्नेने थया तेवारे जगवाने अनिग्रह लीधो अर्थात् आंदी साडाउमदीनानो गर्न थयो, साडा उमदीना वीत्या ॥ ९५ ॥ ॥ तेवार पछी त्रिशलामातायें स्नान कर्युं, घरे देवपूजा मंगल कर्यां, सर्व घरेणा आनूषण पहेर्यां, हवे गर्नप्रतिपालन करवाने अर्थे घणो ठंमो आहार लीये नहीं, घणो उन्हो आहार लीये नहीं, घणो तीखो सुंठ मिरचादिकनो आहार लीये नहीं घणो कडवो निंबादिक, घणो कषायेलो हरडे प्रमुख, घणो खाटो ते आंबली प्रमुख, घणो मीठो ते गुडादिक, घणो चोपड्यो ते घी प्रमुख, घणो लूखो ते चणा प्रमुख, घणो सूको ते पुडला पापडी प्रमुख, घणो लीलो ते फल फूल कंदमूलादिक इत्यादिक जोजन खाय नहीं, जे जोजन करे ते पण विधि सहित करे, वस्त्रपण विधियें करी पहेरे, गधादिक विधियें लीये, माला प्रमुख विधियी पहेरे, गर्ननी रक्षाने वास्ते पोताने रोग थवा दीये नहीं, शोक करे नहीं, मोह करे नहीं, नय राखे नहीं, घणा काम करे नहीं, जेजे काम गर्नने हितकारी होय ते ते कामकरे, मानोपेत पथ्यकरती थकी गर्नने पोषे, जे देशमां जे चीज पाचन थती होय, जे कालमां जे चीज गुणकर्त्ता होय ते चीज वापरे, एवुं करे, कोमल शय्याये शयन करे, सुखासनने विषे बेसे, उंची नीची फरे नहीं, इत्यादिक गर्न यत्न करे वली वाग्नट्टादिक ग्रंथोमां कहेलुं छे ते कहे छे. गर्निणी स्त्रीजो वायडुं खाय एटले वायुचीज खाय तो गर्न कुबडो थाय, आंधलो थाय, वामन थाय, पित्तकरनारी चीज खाय तो गर्न पडीजाय तथा तेनुं अंग पीलुं थाय, कफ करनारी चीज खाय तो पांडु रोग श्वेत वर्ण वालो थाय अथवा कावरचितरो थाय तथा जो गर्नवाली स्त्री लूण घणुं खाय अने आंखमां काजल घणुं घाले तो छोकरो नेत्र रहित आंधलो थाय, घणोठंमो आहार करे तो वायु घणो थाय, घणुं उन्नुं खाय तो छोकरो निर्बल थाय, मैथुन सेवन करे तो गर्न

मरण पामे, घोडा प्रमुख उपर चडे, घणी दोडे, घणी घाजे, चालती पडे, पेट मसलावे, खाज प्रमुख वणये, ऊंची नीची सूवे, मेडी प्रमुख उपर चडे उतरे, उत्कटक बेसे, उपवास करे, वमन विरेचन जुलाब लीये एटलां वानां करे तो गर्भ पडीजाय, घणुं रुदन करे तो ठोकरो चीपडी आख वालो थाय, घणा गीत गायतो ठोकरो बहिरो थाय, घणी वातो करे तो लायर थाय, घणु हसे तो मश्करो थाय, घणी गालो बोले तो ठोकरो लंपट थाय ॥ तथा ऋतुऋतुमां शुं शुं पथ्य करवु शुं खावुं ते कहे ठे, वर्षाऋतुमां लूण गुणकारक ठे, शरद ऋतुमां जल गुणकारक ठे, शिशिर ऋतुमा खाटोरस गुणकारी ठे, वसंत ऋतुमां घृत गोल इत्यादिक गुणकारक ठे ॥ वली कोइ महोटी वृद्धावस्था वाली सश्यर बतावे तेरीते त्रिशलाराणी करे ठे ते कहे ठे के बाइ धीर जथी बोलो, धीरजथी चालो, क्रोध मकरो, पथ्य खाउ, घणो आकरो घाघरों अने कावली बांधो नही, घणु हसवुं मकरो, चांदणीमां सूवो नही, केमके अगासें सुवाथकी पुत्र बावनो रावणखमो थइ जाय इत्यादिक वली घणु नीचुं न चालवुं, घणी उंची चढीशमां, दिवसे सुवाथकी ठोकरो उंघण थाय, आंधीउ थाय, नख कापवा थकी पुत्र कुनखीयो थाय, घणुं दोडवाथी पुत्र चपल थाय, घणु हसवाथी होठ, दांत, तालु अने जीभ कालां थाय, घणा गीत गावाथी बहेरो थाय, वींजणे वायु कस्याथी उन्मत्त थाय, अति बोलवाथी बोलको थाय, अति शोक कस्याथी उचाटीयो थाय, मूर्छाथकी निर्बुद्धि थाय, अति भय राखवाथी गर्भ बीकण थाय, अति परिश्रम करवाथी मदशक्ति वालो अने आलसु थाय इत्यादिक वातो सर्व वडेरी कहे ते प्रमाणे त्रिशलाराणी पण गर्भनी प्रतिपालना करे ॥ हवे त्रिशला माताने जला मो होला उपजे ठे के पूजा करु,दान आपु, साहमी वात्सल्य करुं इत्यादिक मोहोला सर्व सिद्धार्थ


चित्र ९०
पर्वत
सैन्य

राजा सपूरण करे, हर्ष सहित सन्मान करीने पूरा करे पण एवुं न कहेके तुतो वेगी वेगी फव करे छे एवीरीतें मोहोलानुं अपमान करे नही, एम त्रिशलादेवीने उपजता मोहोलानी इच्छा सर्वथा तेना मनमां रहे नही एप्रकारें मटावी आपे छे तिहां रथवाडी प्रमुख वनक्रीडा प्रमुखनां मोहोला तो सर्व सिद्धार्थराजायें पूर्या परंतु एक दिवसें त्रिशलादेवीने एवो मोहोलो उपन्यो के इंद्राणीनां कुंडल खेंची लइने हुं पहेरुं ते मोहोलो राजाथी पूरण थयो नही तेथी मनमां दुमणी थइ (अर्थात् खिन्न थइ) तेवारे राजाना पूछवाथी मोहोलो पूरो करवानी वात राणीना मुखथी सांभलीने राजा कहेवा लाग्यो के ए मोहोलो पूरण करीश पण ए वात महारा हाथमां नथी एटलामां इंद्र महाराजनुं आसन चलायमान थयुं तेवारे इंद्रे अवधिज्ञाने जोइने भगवाननी माताने मोहोलो पूरण करवा सारुं इंद्राणी प्रमुख देवांगनाना समूहने लइने क्षत्रियकुंड नगरनी समीपे एक महाज्ञीम पर्वत छे तिहां इंद्रपुरनामे नगर वसावीने पोताना परिवार सहित आवी रह्यो, सिद्धार्थराजायें सांभल्युं जे इंद्र महाराज आपणा पर्वतमां रहे छे तेवारे सिद्धार्थराजायें इंद्र महाराजने कहेवरावी मोकल्युं के अमारी राणीने कुंडल जोइयें छेयें माटे तमारी इंद्राणीनां कुंडल आपजो ते सांभली इंद्रें कुंडल आप्यां नही तेवारे सिद्धार्थराजा सेना लइ इंद्र सार्थे युद्ध करवा गयो तिहां इंद्रमहाराजतो जीतवाने समर्थ छे तथापि जाणी बूजी हार खाइने भागी गया पाछलथी सिद्धार्थराजायें पोकार करती रुदन करती एवी इंद्राणी अप्सरानां हृदमां बेठेली हती तेना कुंडल छूटीने त्रिशलाराणीने आपीने मोहोलो पूरण कर्या वली बीजा पण सत्तरभेदी पूजा रचावुं, तीर्थयात्रा करु, देवगुरुनी भक्ति करु, सुपात्रे दान आपुं इत्यादिक अनेक मोहोला त्रिशलाने उपन्या ते राजायें पूरण कर्या ॥ ॥ एवी

रीतें त्रिशला राणी मोहोला पूरीजती, सूवे, वेशे, ऊनीरहे, सघली रूतुने विषे सेववा योग्य, गर्ननें सुखनां करनार, एवां नोजन, आछादन, वस्त्र, गंध, माला प्रमुख लीये, गर्ननां हित कारक पथ्ये करी देशकाल योग्य आहार करती थकी, गर्नपोषण करती थकी पोताना परिजन जे दासी साहेलीउ प्रमुख तेमनी साथे विचरती थकी फरती थकी पोताना आवासमां रहे छे ॥ ए५ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे श्रमणनगवत श्रीमहावीर स्वामी उनालानो पहेलो चैत्र महीनो तेनुं बीजु पखवाडियुं एटले चैत्रशुद्द, ते चैत्रशुद्दनी तेरशने दिवसें नवमहीना उपर साडासात दिवस गया थकां इहां नवमहीनाने साडासातदिवस गर्नावासनो अधिकार छे परंतु उंगो अधिको होय तोपण पाउ एवो बोले तो तेनी कांइ हरकत नथी गर्नमां रहेवानो काल तो चोवीशेयतीर्थंकरनो आ प्रमाणे छे– श्रीऋषननदेवजी नवमहीनाने चारदिवस रह्या, श्रीअजितनाथजी आठ महीनाने पच्चीश दिवस रह्या, श्रीसंनवनाथ नवमहीनाने छ दिवस रह्या, अनिनंदन आठ महीनानें अठ्ठावीश दिवस, सुमतीनाथ नवमहीनाने छ दिवस, पद्मप्रन नवमहीनाने छ दिवस,सुपार्श्वनाथ नवमहीनाने छदिवस,चंद्रप्रन नवमहिनाने आठदिवस,सुविधिनाथ आठ महीनाने छवीश दिवस, शीतलनाथ नवमहीनाने छ दिवस, श्रेयांसनाथ नवमहीनाने छ दिवस, वासुपूज्य आठमहीनाने वीशदिवस, विमलनाथ आठमहीनाने एकवीश दिवस, अनतनाथ नव महीनाने छ दिवस, धर्मनाथ आठमहीनाने छवीश दिवस, शांतिनाथ नव महीनानें छ दिवस, कुंथुनाथ नवमहीनाने पांचदिवस, अरनाथ नवमहीनाने आठदिवस, मल्लीनाथ नवमहीनाने सातदिवस, मुनिसुव्रत नवमहीनाने आठदिवस, नेमिनाथ तथा नेमनाथ नवमहीनाने आठदिवस, पार्श्वनाथ नवमहीनाने छ दिवस, श्रीमहावीरस्वामी नवम

हीनाने साढासात दिवस ए चोवीश तीर्थंकरनी गर्भस्थिति कही ॥ हवे उंचराशिना सात ग्रहमां पहेलो चंद्रयोग होते छते, निर्मल दशदिशाउ ते वादला अने धूल रजे करी रहित होते छते, जनमति वेलायें अंधकाररहित, अग्नि दावानल प्रमुख उपद्रव रहित दिशाउ होते छते, एवा वखतमां पक्षीयो सर्व जयकारी शब्द बोली रह्यां छे, प्रदक्षिणावर्तसानुकूल शीत मंदमंद सुगंध सहित एवो पवन भूमिमां चालीरह्यो छे पृथ्वीमां सर्वजातिना धान्य नीपज्यां छे तेना योगें करी हर्षवंत थया थकां सर्वदेशोना लोक क्रीडा करता थका विचरी रह्यां छे तेकालें मध्य रात्रिना समयमां उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रना त्रीजा पाया सार्थे चंद्रमानो योग होते छते रोग रहित एवी त्रिशलाराणी ते रोगरहित त्रणज्ञान सहित एवा पुत्रने प्रसवती हवी ॥९४॥ ॥ इति चतुर्थ व्याख्यान समाप्त ॥ यत्र जन्मकुंडली स्थापना ॥ स्वस्तिश्री ऋद्धि वृद्धि जयोमंग



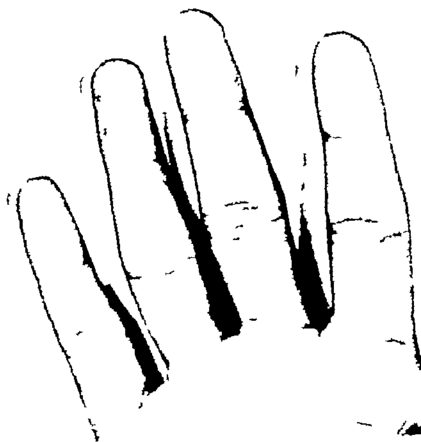
ल्याभ्युदयश्च संवत् छविशें एकाणुना वर्षे मासोत्तममासे चैत्रमासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी तिथौ भौमवासरे घटी ५५ पल ११ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र घटी ६० ध्रुवयोग घटी ४५ पल ५५ तैतलकर्णे एवं पंचांग शुद्धौ श्री इष्ट घटी ४५ पल, १५ इक्ष्वाकुवंशे श्रीक्षत्रिय कुंडल पुरनयरें सिद्धार्थराज्ञे भार्या त्रिशला क्षत्रियाणी कुक्षौपुत्ररत्नमजीजनत्, त्रण भुवन दीपक भगवत श्रीमहावीर जन्म्या तस्य जन्म कुंडली स्थापना ॥ ॥ अथ पंचम व्याख्यान प्रारंभ ॥ जे रात्रिमां श्रीमहावीर स्वामी जन्म्या ते रात्रिमा घणा देवता अने देवीयो ते स्वर्गमां जाता आवतां जाणे घणाज आकुल व्याकुल थइ रह्या होय तेनी पेरें जाणवामां नदी आवे एवो तेनो शब्द होतोहवो अर्थात् अव्यक्त कोलाहल शब्दमय होतो हवो एटले जेवारे घणाजनो बोले

तेवारे शब्दमय थाय पण मालम पडे नहीं ॥ हवे सूत्रना अर्थने अनुसारें विस्तार सहितजन्ममहोत्सव कहिये वैयें ॥ जे समयमां श्रीमहावीर स्वामीनो जन्म थयो तेवारे त्रण जगतमां उद्योत थयो, वली आकाशमां देवदुंदुजी वाग्यां, वली नरकना जीवोने पण क्षणमात्र आनंद थयो, केम के जगवतना अतिशय थकी नारकी जीवने पण मुहूर्त्त मात्र शाता रहे वली स्थावरजीवोनुं पण विशेष ढेदन नेदन नथाय तेथी तेने पण सुख उपजे, जन्मती वेलायें सर्व जमीन उच्छासमाननी पेरें थइ रही, हवे श्रीजगवतनो जन्ममहोत्सव कहेबे तेमां पण प्रथम उप्पन्न दिशाकुमारीयें करेलो जन्ममहोत्सव कहे ढे तिहां जगवानना जन्म थयाथी उप्पन्न दिक्कुमारिकानां आसन चलायमान थयां तेवारें अवधि प्रयुंजी जगवाननो जन्म थयो जाणी, रात्रें तिहां आवे, तेनां नाम कहे ढे, रुचकद्वीपनी वसनारी चार दिशानी आठ आठ, तथा थे विदिशानी चार चार अने मेरुनी ऊर्ध्व दिशानी तथा गजदंत गिरीनी अधो दिशानी आठ आठ, मली उप्पन्न दिक्कुमारिका ते रात्रें तिहां आवे, तेमां प्रथम जोगकरा, जोगवती, सुजोगा, जोगमालिनी, तोयधरा, विचित्रा, पुष्पमाला अने अनंदिता, ए आठ दिक्कुमारिकाउं अधोलोकें गजदंताकार पर्वतनी हेठें वसनारी ढे, ते आवीने जगवतने तथा जगवतनी माताने नमस्कार करीने, ईशानकोणें एक सूतिका घर बनावे, एक योजन एटले चार गाउ प्रमाण धरतीने संवृतक वायरे शुद्ध करीने कांटा, कांकरा, दूर करीने सुगंधित करे ॥ तेवार पढी मेघंकरा, सुमेघा, मेघवती, मेघमालिनी, सुवत्सा, वत्समित्रा, वारीषेणा अने बलाहिका, ए आठ दिक्कुमारिकाउं ऊर्ध्व लोकें नंदन वनना कूटोने विषे वसनारी ढे, त्यांथी आवीने प्रजुने तथा प्रजुनी माताने नमस्कार करीने ते सूतिका घरने विषे सुगंधित पाणीयें करी सहित फूलनो वरसाद वरसावीने गीत गाती रहे ॥ तेवार


चित्र २१
आकाशमां देवदुदुभि
सुतिका घर
दिग कुमारिका
दिग कुमारिका
भगवान

पछी वळी नंदोत्तरा, नंदा, आनंदा नंदीवर्द्धना, विजया, वैजयंती, जयंती अने अपराजिता, ए आठ दिक्कुमारिकाउ रुचकद्वीपनी पूर्वदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे ते त्यांथी आवीने भगवान् तथा भगवाननी माताने नमीनें मुख देखवाने प्रभुआगळ दर्पण हाथमां लइने गीत गाती ऊभी रहे॥ तथा समाहारा, सुप्रदत्ता, सुप्रबुद्धा, यशोधरा, लक्ष्मीवती, शेषवती, चित्रगुप्ता अने वसुंधरा, ए आठ दिक्कुमारिकाउ रुचकनामा तेरमा द्वीपनी दक्षिणदिशाना पर्वतने विषे वसनारीउ छे, ते त्यांथी आवी जिनने तथा जिननी माताने नमस्कार करीने सोनाना भृंगार कलश सुगंधित पाणीथी भरी हाथमां धारण करी भगवाननीमाताने स्नान करावे प्रभु आगळ गीत गान नाटारंभ करे॥ तथा इलादेवी, सुरादेवी, पृथिवी पद्मावती, एकनासा, नवमिका, भद्रा, अने सीता, ए आठ रुचक द्वीपनी पश्चिम दिशाना पर्वतने विषे रहेनारीयो छे, ते त्यांथी आवीने प्रभु तथा प्रभुनी माताने नमस्कार करी भगवाननी मातानी आगळ वायरो करवाने अर्थे वींजणा हाथमा लइ ऊभी रहे॥ तथा अलंबुसा, मितकेशी, पुंडरीका, वारुणी, हासा, सर्वप्रभा, श्री अने ह्री, ए आठ दिक्कुमारिकाउ रुचक द्वीपनी उत्तरदिशाना पर्वतने विषे वसनारीउ छे, ते आवी भगवत तथा भगवतनी माताने नमीने भगवतनी बे बाजुयें चार चार ऊभी थकी चामर हाथमां लइने प्रभुने ढोळे॥ तथा विचित्रा, चित्रकनका, तारा अने सौदामिनी ए चार दिक्कुमारिकाउ रुचकद्वीपनी विदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे, ते आवीने भगवत तथा भगवतनी माताने नमीने हाथमां दीवा ग्रहण करीने ऊभी रहे॥ तथा रूपा, रूपासिका, सुरूपा अने रूपकावती, ए चार दिक्कुमारिकाउ रुचकद्वीपनी विदिशिमां वसे छे, ते आवीने भगवत तथा भगवतनी मातानें नमीने भगवतनुं चार अंगुल प्रमाण नाळवर्जीने कापे पछी

धरतीमांहे खामो खणीने माटे, तेना उपर वैडूर्य रत्ननो चोखमो चोतरो करे, तेनी उपर दर्ने वावे तेवार पठी सूतिका गृहथकी वेगला एक पूर्वदिशें, एक दक्षिणदिशें अने एक उत्तर दिशें, ए त्रण ठेकाणें त्रण केलीनां घर करे, तेमां सिंहासन रचे पठी दक्षिण दिशिना केलीगृहमध्यें जगवत तथा जगवतनी माता, ए बेहुने लावीने सिंहासन उपर बेशाडीने तेमने सुख उपजे एवुं सुगंधी तेलोनुं मर्दन करे, पठी पूर्वदिशिना केलीगृहमा लइ जइ सिंहासन उपर बेसाडी स्नान करावे, चंदन लेपन करे, पठी उत्तर दिशिना कदलीगृहमां सिंहासन उपर बेसाडी अरणीकाष्ठथी घसीने अग्नि जगाडी चंदनना काष्ठथी शांति पुष्टि होम करी, ते होमनी रक्षा पोटली करी जगवत तथा जगवतनी माता ए बेहुना हाथमां बांधे, बांधिने हे जगवान्! पर्वतायुर्नव एवी आशीष आपीने मणिमय गोला बे उगाले पठी तेने वजावीने जगवानने रमवासारु पर्य्यंक उपर बाधीने गीत गान करी जगवत तथा जगवतनी माताने जन्मस्थानकें मूकी पाठी पोत पोताने स्थानकें जाय॥ ए एकेकी दिग्कुमारिकाने चार चार महत्तरादेवी ठे, चार हजार सामानिक देवो ठे, शोल हजार अंगरक्षक देवो ठे, सात अनीकाधिपति ठे, तथा बीजा पण घणा परिवारें परिवृतथकी एक योजनना विमानमां बेशीने प्रभुनो जन्ममहोत्सव करवाने जेम आवे, तेम महोत्सव करीने पोताने स्थानकें पाठी जाय, ए देवी जवनपतिमांहेली एक पल्योपमायु वाली जाणवी, ए देवीयोनो एज स्वजाव ठे, के तीर्थंकरनो जन्म थयाथी प्रथम एमनुं आसन चलायमान थाय, तेवारें प्रभुनो पहेलो जन्ममहोत्सव ए देवीयो करे, पठी बीजा इंद्रादिक देवो करे इति॥१॥ एम दिग्कुमारिकाउयें महोत्सव कस्या पठी चोसठ इंद्रोना आसन चलायमान थाय तेवारें श्रीमहावीर जगवाननो जन्म थयो एवुं अवधिज्ञाने जाणीने प्रथम सौधर्म




चित्र ११
सौधर्मेंद्रनी सभा
हरणीगमेषी देव
बीजा देवो
घंट वगाडावे छे

इंइ, हरणीगमेषी देवताने बोलावी बार योजन पोहोली अने छ योजन उंची तथा एक यो जन नाली, पाठांतरें चार योजननी नाली कहे छे ॥ उक्तंच ॥ बारसजोयण पहुला, सुघोसा घटाइ अइउच्चत्त ॥ चत्तारिय नालाउ, देवा सयपंच वायंति ॥ १ ॥ एवी सुघोषा नामे घंटा वजाववानो हुकम आपे, तेवारें हरणी गमेषी देवता पांचसें देवोनी साथें ते घटा वजावे ते घंटाना शब्दथी सौधर्म देवलोकनां बत्रीश लाख विमाननी घटा वाजे,तेवारें सर्व देवता साव धान थइ जाय ॥ यदुक्तं ॥ सुणिकण सरसद्द, मिलंतिजिनवणाय वितरं पढदं ॥ जोइसियं सीय नायं, घंटेण विमाणिया देवा ॥ १ ॥ एज प्रमाणें इशानेंद्र लघु पराक्रमनामा देवता पासे सुघोषा घंटा वजडावे, एम चोसठ इंद्र सहु पोतपोताना देवोनी पासें घंटा वजडावे तेवारें सर्व देवो इंद्र महाराजनुं काइ कार्य छे एवुं जाणीने इंद्रमहाराजनी पासें आवी हाजर थाय पछी सौधर्मेंद्र पण पालकनामा देवतायें बनावेल लाख योजननुं पालकनामक विमान तेना मध्यनागमां पूर्वदिशानी साहामो सिंहासन उपर बेसे तेनी आगल इंद्रनी आठ अग्रमहिषी आठ जद्रासन उपर बेसे अने इंद्रनें माबे पासे चोराशी हजार सामानिक देवो जद्रासनो उपर बेसे जमणे पासे त्रण पर्षदा बेसे तेमां बार हजार अन्यतर पर्षदाना, चौद हजार म ध्यम पर्षदाना तथा शोल हजार बाह्य पर्षदाना मली बेंतालीश हजार देवो जद्रासन उपर बेसे तथा इंद्रनी पछवाडे सात कटकना देवो जद्रासन उपर बेसे चारे दिशायें चोराशी चो राशी हजार आत्मरक्षक देवता जद्रासनो उपर बेसे एवीरीतें सर्व चोसठ इंद्रो पोतपोताना विमानमा बेग जाणी लेवा ए प्रकारें सर्व इंद्र देवदेवीउ सहित नंदीश्वर द्वीपें आवे तेमां केटलाएक देवो इंद्रनो हुकम राखवा सारु आवे, केटलाएक देवो मित्रना प्रेर्या थका आवे,

केटलाएक पोतानी देवीउंना प्रेर्या थका आवे, केटलाएक तीर्थंकरनी नक्ति नावें करी आवे, केटलाएक कौतुक जोवा सारु आवे, केटलाएक अपूर्व आश्चर्य जोवाने अर्थें आवे, ते देवो पोतपोताना जूदा जूदा वाहन उपर चड्या थकां मांहोमांहे आपसआपसमां सिंहना वाहन उपर चडेला देवता हस्तिना वाहन उपर चडनारा देवताने कहे ठे के ताहारो हाथी दूर राख, नहीं तो महारो सिंह जबरजस्त ठे ते तारा हस्तिने मारी नाखशे एमज पाडाना वाहन उपर चडेला देवता घोडाना वाहन वालाने कहे ठे तथा गरुड उपर असवारी करनार देव सर्प उपर असवारी करनाराने कहे ठे तथा चित्राना वाहन उपर बेठेला देवो ठे ते गगना वाहन उपर बेसनाराने कहे ठे एम वचन विवाद करता कोडाकोडी देवताउं सहु पोतपोताना वाहननी प्रशंसा करता चाले ठे, तिहां देवसमुदायें करी आकाश यद्यपि घणु महोटुं ने तोपण सांकडुं थई गयुं, वली मार्गमां कोइएक देवता मित्रने ठेडी आगल चाल्या जाय तेवारें तेनो मित्र कहे के अरे थोडीवार ठजा रहो हु पण आवु हु तेवारें ते देवता कहे प्रथम जगवानने वांदवानो महोटो लाज कोण मूके? एवु कहीने चाल्यो जाय एवीरीतें जे जबरजस्त होय ते आगल निकली जाय अने कोइएक नबला होय ते पडता थका बोले जे नाइ आ मार्ग घणो साकडो ठे तेवारें बीजो कोइ कहे चुप रहो ए पर्वना दिवस साकडाज होय ने कोइ कहे घणु नहीं बोल खबर पडशे तो इंद्र मारशे एवीरीतें आकाशथी हेठा उतरता थकां जेवारें ज्योतिषीना तारा पासें आव्या तेवारें ताराउंनी किरणो लागवाथी कवि उत्प्रेक्षा करे ने ने पण देवता सर्व निर्जर ठे तोपण जरा सहित थया मस्तकमां जाणे

? एवा देवताना मस्तकें ताराना विमान शोजि रह्यां ठे ते जाणीयें


चित्र ९३
सूतिका घर

रूपानो घडोज होय नहि!' वली शरीरे तारा लाग्या तेना योगें परसेवाना बिंड सरखा दिसवा लाग्या एरीतें सर्व इंद्र अने देवो नदीश्वरद्दीपमां विमान संकोचीने रहेता हवा ॥ हवे सोधर्म इंद्र जगवानना जन्म घरने विषे आवीने, जगवान तथा जगवाननी माताने नमस्कार करीने, त्रण प्रदक्षिणा आपी जगवाननी माताने कहे के हे रत्नकुक्षिधारिणी! हे रत्नगर्भे! हे रत्नदीपक हे माता! पहेला देवलोकनो हुं इंद्र छुं ते ताहारो पुत्र चोवीशमो तीर्थंकर छे तेनो जन्म महोत्सव करवा सारुं आव्यो छु माटे तमे कांइ मरशो नही एम कही "नमोस्तु रत्नकुक्षिधारिके तुभ्यं" ए पाठ जणीने जगवतनी माताने अवस्वापिनी निद्रा आपीने बीजो जगवान जेवुज स्वरूप करी मातानी पासे राखीने इंद्रे पोतानां पांच रूप वैक्रिय बनाव्यां तेमा एक रूपे करी बे हाथे करसंपुटमां राखी जगवानने उपाड्या अने एक रूपें जगवतनी पछवाडे रह्यो थको उपर छत्र धर्युं अने बे रूपें बे पासें चामर ढालवा लाग्यो, अने एक रूपें वज्र उछालतो थको जगवाननी आगल चाल्यो, एम बधां मली पांच रूप इंद्र महाराजें वैक्रिय कर्यां, तेमां आगलो पाछला रूपने वखाणे अने पाछलो आगला रूपने वखाणे, एम पांच रूपें करी इंद्रमहाराज, मेरुपर्वत उपर जिहां पांडुक वन छे, तिहां जगवतने लइ आवीने मेरुनी चुलिकाथी दक्षिण दिशियें अतिपांडुकंबला शिलाने तले शाश्वतु सिंहासन छे, तेनी उपर जगवानने उत्संगमां लइने इंद्रमहाराज पूर्व सन्मुख बेठा, तेवारें तिहां बार देवलोकना दश इंद्र, जवनपतिना वीश इंद्र, व्यंतरना बत्रीश इंद्र, अने चंद्रमा तथा सूर्य, ए बे ज्योतिषीना इंद्र, एम सर्व मली च[illegible] इंद्र सपरिवार प्रभुनेस्नात्र कराववाने अर्थें मल्या छे, ते सर्व इंद्र तथा देव मलीने पोतपोता[illegible]क देवताओने आज्ञा आपे के जाओ एक हजारने आठ

सोनाना कलश, तथा एक हजारने आठ रूपाना कलश, तथा एक हजारने आठ रत्नना कलश, तेमज चोथा सुवर्णरौप्यमय, पांचमां सुवर्णरत्नमय, छठा रत्नरौप्यमय, सातमा सुवर्णरौप्यरत्नमय, आठमा मृत्तिकामय, ए आठ जातिना प्रत्येक एक हजारने आठ आठ कलशो, करतां आठ हजारने चोसठ कलश थाय एवा सर्व मली अभिषेक कलशो एक क्रोडने साठ लाख होय तेनो विवरो लखीयें छैयें भवनपतिना वीश इंद्र, व्यंतरना बत्रीश इंद्र, वैमानिकना दश इंद्र, तथा अढी द्वीपना एकसोने बत्रीश सूर्य चंद्र, धरणेंद्र भूतानेंद्रनी चार इंद्राणी, व्यंतरनी चार इंद्राणी, चमरेंद्रनी दश इंद्राणी, ज्योतिषीनी चार इंद्राणी, सौधर्म ईशान ए बेनी सोल इंद्राणी, सामानिक देवोनो एक, त्रायत्रिंशकनो एक, लोकपाल देवोना चार, अंगरक्षक देवोनो एक, पर्षदाना देवोनो एक, प्रजाना देवोनो एक, अने सात कटकना देवोनो एक, एम सर्व मली बशें ने पचाश अभिषेक थाय, ते एकेक अभिषेकें चोसठ हजार कलश होय, तेवारें चोसठ हजारने अढीसो गुणा करतां, एक क्रोडने साठ लाख कलश थाय ए एकेका जातिना कलश, पच्चीश योजन ऊंचा बार योजन पोहोला, अने एक योजनना नालवा वाला जाणवा, एवा कलश, तेमज वली भृंगार, दर्पण, रत्नकरंडीआ, थाला, पात्रिका, पुष्प चंगेरी इत्यादिक पूजानां उपकरण प्रत्येकें एक हजारने आठ प्रमाणे जाणवा तथा मगधादिक तीर्थनां जल, गंगा प्रमुख नदीउंनां जल, पद्म द्रहना जलथी कलशाभरी लावो अने चक्षहिमवत, वृक्षधर, वैताढ्य, विजय, वक्षस्कार, देवकुरु, उत्तरकुरु, भद्रशाल अने नंदनवन प्रमुखना सर्व फल, प्रधान गंध, सर्व ओषधि, पाणी प्रमुख अभिषेक वस्तु पण देवतापासेंथी अणावें, तेवारे सेवक देवो सर्व क्षीरसमुद्र प्रमुखना जलें करी कलशभरी पोताना हृदय आगल


चित्र २४
पाडुक वनमा प्रभुजीना स्नात्रमहोत्सव देवो करेछे
चार वृषभना रूपे इन्द्र नवरावेछे

धरीने वना रहे ते सर्व विचारे ठे जे इंद्रमहाराज आज्ञा आपे तो कलश ढोलीये ते देवता एवा शोने ठे के जाणीयें संसार समुद्रने तरवाने अर्थे कुंन धर्मो होय नहीं ? एवा शोने ठे तथा नाववृक्षनें सिंचेठे किंवा पोतानां पापरूप मलने धुवे ठे, अथवा धर्मरूप प्रासाद उपर कलश चढावे ठे, के शुं ? हवे एवा अवसरने विषे, इंद्र महाराजना मनमां एवो संशय उत्पन्न थयो के आ नानो बालक थका श्रीवीर जगवान्, एटला कलशोनी जलधाराथी महारा खोलामाथी क्यांय जता रहेशे एवडा जलानिषेक केम सहन करी शकशे ? एवुं जाणी अनिषेकनो आदेश न देता हवा, तेवारें जगवंतें अवधिना बलें करी इंद्रनुं शंकित मन जाणीने अरिहंतपणानुं अतुल्य बल जणाववा निमित्तें खोलामां बेठा थकांज बालरूपें डाबा पगने अंगुठेथी सिंहासन फरस्यो, तेवारे शिला कंपायमान थइ तेना कंपवाथी मेरुचुलिका कंपायमान थइ, तेवारें लाख योजननो मेरुकंप्यो, तेना कंपवाथी सर्व पृथ्वी कंपी, सकल धरती थरहरवा लागी, पर्वतनां शिखर त्रूटवा लागां, समुद्र जलक्षोन पाम्यो चलाचल थयो, ब्रह्मांड फाटवा सरखो शब्द थयो, सर्व देवो नय पाम्या, देवांगनाउ जयने लीधे देवोना गलामां वलगी तेवारें इंद्र कोर्धे धाम्यो थको कहे ठे, के अरे आ हर्षना समयने विषे आवो उत्पात विषाद कोणें कर्यो ठे ? वली प्रजुना जन्म महोत्सवमां एवो विघ्न करवा वालो आ कोणडुष्ट ठे ? एम विचारी हाथमां वज्र लइने अवधि प्रयुंजीने जोयु तो प्रजुनी शक्ति जाणी के एतो जगवाने पोतेज सर्व कर्युं ठे में अज्ञानथी तीर्थकरनुं बल नही जाण्युं एवुं जाणीने इंद्र पगे लागी खमावीने स्तुति करवा लागो ॥ जुजंगप्रयात ठंद ॥ सुणो वीर्य बोलुं विशालो विबुधो, नरें बार योधे मली एक गोधों ॥ दशो गोधले लेखवो एक घोडो, तुरंगेण बारें मली एक पाडो ॥ दशो पंच महिषो

मदोन्मत्त नागो, गज पांचशें केशरी वीर्य त्यागो ॥ हरि वीशशें वीर्य अष्टापदेको, दश लक्ष
अष्टापदे राम एको ॥ भला रामयुग्में समो वासुदेवो, द्वितीय वासुदेवें गणी चक्रि सेवो ॥ भला
लक्ष चक्री समो नाग शूरो, वली कोडि नागाधिपें इंद्र पूरो ॥ अनंते सु इंद्रे मली वीर्य जेतु,
टची अंगुली वीरप्रभु वीर्य तेतु ॥ १ ॥ ॥ एम इंद्रे वखाण्या तथा मेरुपर्वतें विचार्यु जे
अनंता तीर्थंकरना जन्माभिषेक महारा उपर थया, परंतु मुजनें कोणे पगें फरस्यो न हतो,
ते हमणां श्रीवीरें फरस्यो, तेथी हुं पण धन्य छुं एम समजीने जाणे हर्षथी नाच्यो थको
चिंतवे छे जे हुं सर्व पर्वतनो राजा ते खरे खरो छु वली पांच मेरुमां पण हु महोटो अग्रेसर
ते पण खरेखरो छु हवे शक्रेंद्रना आदेशथी प्रथम बारमा देवलोकनो अच्युतेंद्र स्नात्र करावे ते
पछी अनुक्रमे उतरता उतरता इंद्रादिको अभिषेक करे छेल्ला चंद्र सूर्य स्नात्र करे एम सर्व अ
ढीशें अभिषेक थाय पछी इशानेंद्र, भगवानने खोलामां लेइनें बेसे अने सौधर्मेंद्र चार धवल
वृषभना रूप विकूर्वीने तेना आठ सींगडायें करी खीर समुद्रना पाणीनी धारायें अभिषेक
करे एवा विधिथी सर्व देवो पोतपोतानी भक्ति करी स्नात्र करावे पछी भगवंतनुं शरीर गंधक
षायें वस्त्रें लोहीने फूल, बावना चंदन विलेपन, अक्षत ढोकन, दीप, फल, धूप, पाणी, नैवेद्य
ए आठ प्रकारनी पूजा करीने भगवाननी आगल श्रीवत्स, मत्स्ययुग्म, दर्पण, पूरण कलश,
स्वस्तिक, नंदावर्त्त, भद्रासन, सरावसंपुट ए आठ मंगल रूपानां अक्षतें करी आलेखे, पछी
आरति करे, गीतगावे नृत्य करे, वाजित्र वजावे, पछी अपूर्व एकसो आठ काव्यनी रचना
करी स्तुतिरूप भावपूजा करे ते करीने पछी भगवानने भगवाननी माता पासे मूके, अवस्वा
पनी निद्रा दूर करे, वली भगवाननो प्रतिबिंब तिहां प्रथम थापन करेलो हतो तेपण दूर


चित्र २५
सूतिका घर

चित्र ३६



करीने रत्नजडित कुंमल युगल तथा देवडूष्य युगल, त्रिशलामाताने आपीने सुवर्णजडित दडो जगवानने रमत करवाने अर्थें मूकीने तथा वारक्रोड सोनैयानी वृष्टि करीने वली एज पाठ केठलिएक प्रतोमां आवीरीते लखेलुं ढे के उपर रत्नजडित चंडुज बांधी, रत्न जडित वे कुंमल तथा श्रीदाम ते रत्नजडित सुवर्णनो दडो ए सर्व उसीशे मूकी बत्रीश क्रोड सोनैयानी वृष्टि करी पढी सौधर्मेंद्र सर्व देवोमां एवो ढांको करीने कहे के जोजो देवो जे हुं कहुं बुं ते तमे सांजली लेजो के जे कोइ देव अथवा असुर दानव, जगवान उपर तथा जगवाननी माता उपर माठी चितवणा करशे तेनो मस्तक अर्जुनवृक्षनी मांजर नी पेरे आ वज्रथी ढेदी नाखीश ए प्रमाणे कहीने जगवानने अंगुगथी अमृत सचार करी सर्व इंद्र नंदीश्वरद्वीपमां आवी अठाइमहोत्सव करीने पढी पोतपोतानें स्थानकें जाय तिहां पण अठाइ महोत्सव करे इति देवकृत जन्ममहोत्सव समाप्त ॥ १ ॥ हवे सिद्धार्थराजायें क रेलो जन्ममहोत्सव लखे ढे पुत्र जन्म्या पढी दासीयें जइने राजाने वधामणी आपी राजा पोताने घेर पुत्रनो जन्म सांजलीनें रोमरोम हर्षवत थयो एक मुकुट विना बीजा सर्व आनू षण जे पोताना अंग उपर हतां ते दासीने आपी दीधां, माथुं धोवरावीने तेनुं दासीपणु दूर कर्युं, पेढीधरपेढी सुधी खाय एटलुं धन दासीने आप्युं जे रात्रिमां श्रमणजगवत श्रीम हावीर स्वामीनो जन्म थयो ते रात्रिमां घणा वैश्रमण देवनी आज्ञा धारक तिर्यक्जृंनक दे वताउए, सिद्धार्थराजाना महेलने विषे रूपानी वृष्टि करी, सोनानी वृष्टि करी, वज्रही रानी वृष्टी करी, वस्त्रनी वृष्टी करी, आनूषणनी वृष्टि करी, नागरवेल पत्र, फल, फूल तथा वीजजे शालि प्रमुख ते सर्वनी वृष्टि करी, माला, गध, वास, सुगधि चूर्ण तथा हिंगलु

प्रमुख रंग अने सोनामोरोनी वृष्टि करी, ते अगणित वृष्टि करी, कोइक ठेकाणे एवु जखेवु ते के पन्नर मास पर्यंत त्रणक्रोड रत्न वरसावे ॥ ९९ ॥ हवे देवतार्जयें जे घरेणानी सिद्धार्थराजाने घेर वृष्टि करी तेनां नाम कहे ठे ॥ मुकुट, कुमल, हार, अर्द्धहार, बाजु बंध, बेरखा, त्रिसरा, चोसरा, ठसरा, सातसरा, आठसरा, नवसरा, अढारसरा, एकावली, कनकावली, टकावली, रत्नावली, मुक्तावली, चन्द्रावली, हीरावली, प्रवाली नक्षत्रावली श्रोणिसूत्र, कटीसूत्र, रसना, खूप, पट्टशिखर, चूडामणि, कटक, कंकण, अंगद, मुद्रानदक, दशमुद्रक, मुद्रिका, अंगुलीय, कदंब, पुष्पक, तिलजंगक, कर्णपीठिक, घत्रक, अजर, मेखला, मुदक, पदक, पडकडि, साकलुं, साकली, विशिष्ट, मौक्तिकजग, उतरी, दोरा, हांसडी, कर्णपाल, संकपाल, गेययक, हेमजाली, मणिजाली, मौक्तिकजाली, रत्नजाली, गोपुछक, स्वस्तिका, मयंक, वर्ण, वरिका, हांस, झांझर, नेपुर, घूघरा, पागडा, वीठीआ, अंगूठली, बालाजाली, फूमणा, अकोटा, रूपालहेरिआ, राखडी, गोफणो, फूली, सियो, त्रसंटीउ, त्रोटी, बोरडा, कडी, वेढला, मुरकी, मोती, नरगठोडा, नागफणां, तुंगल, चंपकली, पानडी, झुलरा, वाली, मोतीसर, तांति, गांठिआ, वरघली, पोंची, गलसिरि, टीली, चांदला, आडी, नवग्रह, मुद्रडी, अंगुठी, वेढ, वींटि, वांकडा, ठाप, करजाखुं, मादलिआं, कदोरो, खेलमादलियां, पाटीआलो कदोरो, लटकण, मउड, नागफूली, नाग, नागलां, मोर, वेसण, नथ, कांटो, मयोदय, आंजण, उंगनियां, हिंगलो, कुंकुम, एला, जवला, चूडी, चूडली, थर, कंकण, कारेली, लालि, पंचमेखला, हाथसांकली, सोनानांलहेरिआं, तावीत, कडलां, सलिआखुं, कलाडी, अणवट्ट, लोनिआ, कुंची, पाईन, सातग्रैवेयक, नवग्रैवेयक, ठापलवींटी, मकोडाखली, जेवड छ्या

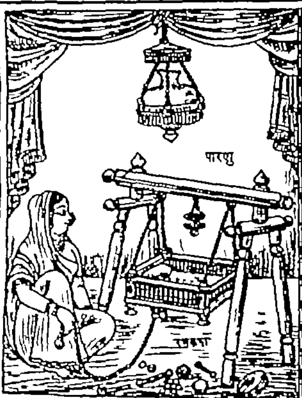
दिक अनेक जातिनां आजरणोनी वृष्टि करता हवा ॥ हवे जगवतने जन्म कल्याणके चौदरा जलोके उद्योत थाय नरकमां पण उद्योत थाय तिहां पहेली नरकें सूर्यसमान तेज थाय, बीजी यें वादलायें ढांकेला सूर्यसरखो तेज थाय, त्रीजीयें चंद्रमा सरखु तेज थाय, चोथीयें वाद लायें ढांकेला चंद्र सरखु तेज थाय, पांचमीयें ग्रह सरखु तेज थाय, छठीयें नक्षत्र सरखु तेज थाय, सातमीयें तारा समान तेज थाय एम जगवानने जन्मादिक पांच कल्याणकें नरकादि सर्व चौदराजलोक पृथ्वी आदिकमां सर्वत्र तेज थाय एवीरीतें जवनपति, व्यंतर, वाणव्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक देवतायें तीर्थंकरनो जन्ममहोत्सव कस्या पछी प्रजातसमये सिद्धार्थराजा नगरना रखवालाने बोलावीने कहेतो हवो ॥१००॥ ॥ हे देवाणु प्रिया तमे उतावला क्षत्रियकुंडनगरमां बंदिवानोने बूटा करी मूको अने तोल मापां वधारो तथा क्षत्रियकुंडनगरनी मांहेली कोरे अने बाहेर कचरो कांटो काढाडी साफ करो, लींपावो, तेनी उपर सुगंधजलनो छटकाव करावो, त्रिखूणामार्ग त्रणमार्ग, त्रवाटा, चोवटा तथा जिहां घणा मार्गजेलाहोय तेचच्चर चारमुखमार्ग, राजमार्ग ए सर्व रस्ताने पवित्र करावो, कचरा काटा काढाडीने साफकरावीने रस्ताने बरोबर करो, तथा जेनी उपर बेशीने सुखेथी सर्व लोको महोत्सव जोइ शके एवा महोटा मांचाउपरमांचा बंधावो, अनेक प्रकारना रंगनी ध्वजा पताकाउ करावी स्थानके स्थानके बंधावीने नगर शोजायमान करो, शहेरना मार्गोने लीपावो, धोवरावो, वली गोशीर्षचंदन, रक्तचंदन, पांचआंगुलीआ छापा देवरावो, घरमां चंदनना कलश थापन करावो,चंदनकलशघटित तोरणोने घरोना बारणे बंधावो, लांबी महोटी अने गोल तथा लटकति एवी पुष्पमालाउनो समूह लटकावो, पाचवर्णी फूलोना ढगला करावो, कृष्णागर, जलोकुंदरु, शिलारस, धूकतो थको घमघमायमान

मनोहरगध सुगधगंधित अगरबती उखेवो, मनोहर गध करो, वली नाटक करवा वाला जे पोतें नाटक करे ते, रशीउपर नाचे ते, मल्लयुद्धकरनारा, मुठीयोथी युद्धकरनारा, नाम जवा इया, कथाना करवावाला, रास षोलवावाला, घट अने हाथी उपरथी कूदी जाय तेने प्लवक कहे छे ते, राजानी वशावलीनां षोलनारा, पाठक कवित कहेनारा, कोटवाला, शुभाशुभ निमित्तना कहेवा वाला, वासनी उपर नाचनारा, चित्रामणना पाटीया देखवावाला जेने मख कहे छे ते, तथा चामडानी मसकने वायराथी भरीनें वजावे तेने तूणयछा कहे छे ते, तुंबिनी वीण वजावनारा, हाथताल देइने नाचनारा, अनेकतालना वजावनारा,ए सर्वेने षोलावीने ठेकाणे ठेकाणे बेसाडी आपो ए सहु पोतपोतानी कलाउ लोकोने देखाडे ए काम तमे करो तथा बीजापासें करावो वली हजारो गमे धूसरा एटले विवाहना मंडपमां घाले छे ते तथा हजारो गमे मुसल उचा करावीने महारी आज्ञा मने पाछी सोंपो ॥ १०१ ॥ ॥ तेवारें ते कौटुंबिक पुरुष घणाखुशी थइने राजाना हुकुम प्रमाणे काम करीने राजानी आज्ञा राजानें पाछी सोंपी ॥ १०२ ॥ तेवार पछी सिद्धार्थराजा मल्लयुद्धनी शालामां आवी, युद्ध करी, तेल मसलावी, स्नानकरीने सर्व वस्त्र घरेणां माला प्रमुख पहेरीनें महोटा तेजसहित, मोहोटाबलसहित, सर्व वाजा वाजतां थकां, महोटी ऋद्धि, महोटीकांति, महोटी सेना; घणां वाहन, घणो समुदाय, महोटां महोटा वाजित्र सर्व भेलां समकाले साथें वजाड्यां, तेथकी शंख, पठह ढोल, भेरी, झल्लर, खरमुखी ते काहली, रणसिंगो कोइ वाजानुं नाम छे मांदलनी जात, मृदंग, देववाद्य तेने दुंदुभि कहीयें, ए नव जातनां वाजाना शब्द, प्रतिशब्द तेणे करी सिद्धार्थराजा हर्ष करतो रहे, वली क्षत्रियकुंड गामनगरमां उत्सुक एटले दश दिवस सुधी दाण कोइनी पासेथी लेवुं नही

तया उक्कर एटले गायो ढोर प्रमुखनुं जे कर लागे ते दशदिवस पर्यंत न लेवो तया उक्किक एटले खेत्र प्रमुखथी जे कर लागे ते दशदिवस सुधी नही लेवो तया अदिय एटले दशदिवस सुधी कोइ हाटमां मूल्यलइने वस्तु वेंचे नही जेने जोइति होय ते राजानी पासेंथी मफत लइ जाय तेना पैसा राजाना नंमारमांथी देवाय तया अमिय एटले दशदिवस सुधी कोइ चीज मापवी नही तया अप्नडप्पवेसे एटले दशदिवस लगें कोइ राजानो माणस जोरकरीने जोरावरीथी कोइना घरमा प्रवेश करी कोइ चीज वस्तु लीये नही तया अदम एटले कोइयें अपराध कस्यो होय तेनी पासेंथी गुनाह प्रमाणे दम लेवो जोइयें ते दम दशदिवस सुधी लेवो नही तया कुदंम एटले कोइकें अपराध अल्प कस्यो होय अने दंम वधारे लेवो तेने कुदंम कहीयें ते कुदंम दशदिवस पर्यंत लेवो नही तया अधरिम एटले दश दिवस सुधी कोइ उधारे लइने रुण करे नही एटला वाना सिद्धार्थराजायें मूक्या बक्षीस कस्यां वली अत्यंत स्वरूपवान एवी वेश्याउंना नाटक थाते तया अनेक ताल वाजा सहित नाटक थाते पठी उत्कृष्ट मृदग वजाववा सारु सज्जकस्या ठे मृदग जिहां ग्रंथाग्रय ॥ ५०० ॥ ॥ कुंमलाणी नथी एवी विस्तार सहित फूल मालाउंनो समूह ठे जिहां, हर्षवान थया थका ते देशना सर्वलोक क्रीडा करे ठे ए प्रमाणे दशदिवस पर्यंत स्थितिपतिका एटले पोताना कुल परपरानी मर्यादा पुत्रजन्मनी ते सिद्धार्थ राजा क्षत्रियकुंम नगरमा करे ॥ १०३ ॥ ॥ तेवार पठी सिद्धार्थराजा दशदिवसनी कुल मर्यादामां जिनपूजामां सो सोनैया लागे तया हजार सोनैया लागे तया लक्ष सोनैया लागे एवुं जे पूजन तेना निमित्तें द्रव्य राखे एटले पठी पूजा करावीशुं एवो अनिप्राय करीनें पूर्वोक्त द्रव्य काहाडे वली आठम, चौदशनो दिवसें पोसह करनारा श्रावकोनी नक्ति करवा

निमित्तें द्रव्य राखे ते एवा अनिप्रायथीके जाणे पोसह करवावाळाने पारणे साहामी वात्सल्यना कामममा आवशे वळी बीजु पण देवायोग्य द्रव्य धर्मने अर्थे कल्प्युं एवु द्रव्य पोतें सिद्धार्थराजा देतो थको, बीजाउनी पासेथी देवरावतो थको विचरे ॥ वळी पूर्वोक्त रीतें सो, हजार अने लाख सोनैया प्रमाणे वधामणाने अर्थे नेट लोको लइ आवे ठे ते लेतो थको, बीजा कने लेवरावतो थको एवीरीतें दशदिवस सुधी करतो थको कुलमर्यादा करे ॥ १०४ ॥ तेवार पठी श्रमण जगवान श्रीमहावीरस्वामीना माता पिता जगवानना जन्मदिवसथी पठी आगल पहेलादिवसें तो कुलस्थिति करे अने त्रीजे दिवसें चंद्रमा तथा सूर्यना दर्शन करावे हमणा आजना कालमां तो त्रीजे दिवसे काच देखाडे ठे परंतु मूल विधि आवो ठे जे गृहस्थगुरु आवीने श्रीअरिहंतनी प्रतिमा आगल स्फाटिक अथवा रूपानी चंद्रमूर्त्ति करावे ते प्रतिष्ठावी पूजीने मांमे पठी वालक तथा बालकनी माताने स्नान करावी जला वस्त्र पहेरावी चंद्रोदयनी वेलायें पुत्रने हाथमां लइने माता सहित पुत्रने देखाडी प्रत्यक्ष चंद्रमा साहामां आणी आवीरीतें मन्त्रजणे ते लखे ठे ॥ ॐअर्हंचंद्रोसि निशाकरोसि नक्षत्रपतिरसि सुधाकरोसि ओषधिगर्भोसि अस्यकुलस्यऋद्धिवृद्धिं कुरुकुरु ॥ एवा मंत्रनो गुरु उच्चार करे, माता पुत्रने चंद्रमा देखाडी नमाडे वळी पुत्रने लइ गुरुने पगें लगाडे, गुरु आशिर्वाद आपे ते आवीरीतें —श्लोक ॥ सर्वौषधिमिश्रमरीचिराजी, सर्वापदांसंहरणे प्रवीण ॥ करोतु वृद्धिंसकलेपिवंशे, युष्माकमिंदुः सततं प्रसन्न ॥१॥ ॥ तेवार पठी चंद्रमानी स्थापेली मूर्त्तिने विसर्जन करे कदाचित् कालि चौदस, अमावास्या होय अथवा वादला होय तेथी चंद्रमा न देखाय तो तेज रात्रियें तेज चंद्रमानी मूर्त्ति आगल तो जरुर करे एवीरीतें तेज दिवसनी सांजे जे विधि होय ते अवश्य

चित्र २७





करे पछी ते दिवसें प्रनातें सूर्य उदयनी वेळायें सोनानी अथवा त्रांबानी सूर्यमूर्त्ति करीने पूर्वनीपेरे स्थापन करी ते मूर्त्तिनी आगल पुत्र सहित मातानें वेसाडी गृहस्थ गुरु आवीरीतें मंत्र बोले ॥ ॐअर्हंसूर्योसि, दिनकरोसि, तमोपहोसि, सहस्रकिरणोसि, जगच्चकुरसि, प्रसीदास्य कुळस्य तुष्टिं पुष्टिं मोद कुरु कुरु ॥ ए सूर्यमंत्रउच्चारीने माता सहित पुत्रने सूर्यनुं दर्शन करावें पछी माता पुत्रने लइ गुरुने पगें लगाडे तेवारे गुरु आशीर्वाद आपे ते लखीयें छैयें ॥ श्लोक ॥ सर्वसुरासुरवद्य , कारयिता सर्वधर्मकार्याणां ॥ नूयाधिग चकु , मंगल दस्ते सपुत्राय ॥ १ ॥ ॥ पछी थापन करेली सूर्यमूर्त्तिने विसर्जन करे वली छठे दिवसें धर्मजागरण करे, अगीआरमें दिवसें अशुचिकर्मनिवर्त्तन करे, माटीना जुना नाजन काढाढी नाखे, नवा वस्त्र पहेरे ॥ ॥ हवे बारमो दिवस आव्या थकां अशन ते अन्न विगय प्रमुख तथा पान ते मीठा पाणी प्रमुख तथा खादिम ते खारक टोपरा प्रमुख तथा स्वादिम ते लविंग पान प्रमुख ए चार प्रकारनो आहार रंधावे रंधावीने सिद्धार्थराजा पोताना मित्रोने,न्यातिने एटले पोतानी जातिवालाने, पोताना पुत्रपौत्रादिकोने, काकाने,ससरा प्रमुखने,पोताना दास दासीयोने, वली सिद्धार्थराजानाज गोत्रवालाउने, वली क्षत्रियोने तथा गामना क्षत्रियोने, एवा बीजा पण महोटा लोकोने निमंत्रण करे अर्थात् नोतरा आपे पछी नगवानने तथा त्रिशलाजीने स्नान करावे, घरे देवपूजा करावीने पछी विघ्ननिवारवाने अर्थे कौतुकथी काजलना टीलांटपकां करे, मंगलिकने अर्थे सरसव, दही, दर्न, चावलनु तिलक मस्तकें धारण करे, नवा वस्त्र पहेरे, वली जेमां नार अल्प अने मूल्य घणु एवा घणा मूलनां घरेणा पहेरें, पहेरीने नोजननी वेळायें नोजन मण्डपमां सुखे बेसे वली पूर्वे नोतरेला मित्रादिकोने

अशन, पान, खादिम, स्वादिमादिक चार प्रकारना आहार जमाडे हवे तेमां केटलाएक आहार स्वाद करवा योग्य तेना स्वादकरतां थकां अशनादिक मोदक प्रमुख सर्व चीज खवाइ जाय तथा केटलीएक सेलडीप्रमुख चीज थोडी खाय अने घणी नाखी आपे वली केटलीएक खजुरप्रमुख चीज घणी खाय अने थोडी नाखीदीये एवीरीतें चारे प्रकारनो आहार साधर्मिकादिकोने सिद्धार्थराजा जमाडता थकाविचरे ॥ १०५ ॥ ॥ हवे प्रथातरथी जोजननो विधि लखीयें ढैये ॥ केलिपत्रे ढायेला मांडवा नीचें मध्यान्ह वेलायें कुंकुमढटित मंडपमां सर्वने बेसाड्या, मखमलनां पांतिया नाख्यां, ते उपर सर्व पवित्रथइने आवीबेठा, तेना पेट पातासे पेठा, आगल स्वर्णरत्नजडित बाजोट मेल्या, तिए उपर सोनाना थाल,जमवावाला थया उजमाल ॥ कनेमेली कटोरीयां, निर्मल जलसें धोये, मांहे मुखडा जोवे, ते कहेवा ठे तोके ? फांवाला, फुंवाला, डंवाला, छुंदाला, आंखे अणिआला, मुछाला, केइ जमाइ केइ साला, इसी पांति बेठी, तिहां पीरसणवाली पेठी, ते घणी रूपाली, नला वस्त्र पहेर्यां, शोले सणगार कर्या, हाथमां महोटी जारी, जुवानोंकी निजरो गारी ॥ हाथधोवाया, मनमें काम जुराया, पहेलां ते फल पिरसे, देख्यासें मन विकसे ॥ ते कहेवा फल पिरस्यां तेनां नाम कहे ठे अखोड मिसरिकीपात, चोपडी चारोली, केला रायण लीलांनालियेर बदाम पिस्ता द्राख आखा आंबा तथा स्याग वाल पक्क, सेवां सेतुत दाडिम नारंगी मीठांलींबु, पाकांकिरणां खारक खजुर सेव जांबु शुंदा पेमदीखोर लीलीद्राख ढोलेली सेलडी कांगटा जामफल रामफल सीताफल बीजोरां, इत्यादिक उदार मनथी पिरस्यां, ढेरकीया खातां हीया हर्ष्यां ॥ किस्याक खावे के पिर सवाचालीतेना मुख सामा जोइ मोहमां पड्या खायां जावे, पण पेटफाटे ते नजर न आवे ॥

माळवानी जमीनमां नीपज्या घउं हाथथी मसल्या धोइने वल्या नला वस्त्रथी मेदो गल्यो तेना पिरस्या खाजां, दांतोमां करे अवाजा ॥ हवे कहुं पकवान, खावा थया सावधान ॥ पिरसण वाळी सुहाळी, मानकरे रढीयाळी, पहेळी पिरसे लाडु, जिमे थेंग जाणे साहु, सिंहकेसरीया मेळ्या, मसाळा अधिका भेल्या ॥ कसार मगदारा मोदक, किटिया जसरीया दाळिया, इस्यामो दक खावे, बूढो मरद हो जावे, अछीपिरसी सुरकी, खावा जीभडी फुरकी, जलेबी मुखमां घाले, रसना गटका चाले, पेहापेटमा पडिया, मुखमेलंता गुडिया, मखाणा मुखमां घाले बडबड जाणे घोभे, घेवर मुखमां धरिया, खातां घृतबहु झरिया, जीणातारनी फीणी, आणीसेवा जीणी, वहीथरा दोंग खावे, मनमां हसता जावे, सांकळी तिळनी खाधी, सिंघोडा सेवसु साधि, आवे साकर सीरो, मोकरा मन थयो धीरो, लापसी आढी आवे, मेवाखीचडी खावे ॥ इम अनेक पकवान, जिमे थेग राजान ॥ वेंवसुगंधीसाळ, खावा थया उजमाळ ॥ मुगदाळनें भेळी, घीसुगधी ढेळी ॥ खीचडी पतळी पोळी, थाये इकवीशनी एककोळी ॥ साळणा मुखमां नावे, जीनवरफरी थावे ॥ मूगीया केर रायमोमी, वाळोळ, करमदा काचा, केळां, चोरानी फळी, मुगनी फळी, नीळाचणा, मिरच, पीपळ, सागरी, काचरी, वावल्या, करेलां, भींमी, तरोइ, वेंगणं, मोगरी काकडी तढा तीमसी इस्या जातना साग, जीरा मिरच समभाग ॥ गरम मसाला पडिया, घृतमांहे पहेला ढमकिया ॥ हिंग वघार सुगधा, खातां तज्या सब धधा ॥ जीनवरफरी होवे, कळीकहने जोवे ॥ भाजीविणारीमेथीरीचदळेवारी पालखारी सुआरी थेगरी, खाता जीन शोभाधरी ॥ मिसरीमां भेल्यो दूध, पीतां नरही सुध ॥ नथोपेट वोल्या सहु एम, हवे खावानो नेम ॥ वहीवेखीनें मुखडे चाल्यो पाणी, जीराराव सुध तिहां आणी ॥ करवो खाधो

पूर, राइपडी रायतापूर ॥ मीठा पाणी पीधां, पापडमुख शुद्ध कीधा ॥ शुद्ध पाणीसें चळु करीजें, न मावे पेटमें उत्तर दीजे ॥ वळी दीधा पान तंबोळ, केशरछांटे रंगरोळ ॥ हीरचीर मखमल पटंबर, वस्त्रदीधां ते पहिरे सुंदर ॥ फूलमाळा पहेरावे, हर्षे मने बहुलावे ॥ आ नूषण पहेरामणी देवे, एम सिद्धार्थ जस बहु लेवे ॥ इति सिद्धार्थराजाकृत जन्मोत्सव ॥ एवीरीतें मरुदेशश्राविकमा जे नोजन विधि कहेवाय छे ते प्रमाणे लख्यो ॥ हवे वळी प्रकारां तरें कच्छगुर्जरादि देशोमां जे प्रमाणे नोजनविधि कहेवानो चाल प्रवर्त्ते छे ते मुजब आहीं लखीयें छैयें ए वे प्रकारमांथी वाचनारने जे रुचे ते वांचवुं अथवा बेहु प्रकार सला आगळ वांची सनलाववा ते प्रकारांतर आंहीं लखीये छैयें ॥ मांझ्यो तोरण उत्तग मांझवो, तरत आंगणु बेसवानुं नवु ॥ तेतो नीलां रतन तणुं, तिहां सखरा मांझ्यां आसन, बेसतां किसी विमासण ॥ वळी आगळ मूकी सोनानी आंझणी, ते केम जाये गंझणी ॥ उपर सोनाना थाळ, अत्यंत घणा विशाळ ॥ विचमा चोसठ वाटकी, लगार नही जास काट की ॥ गंगोदक दीधा थाळ, कचोळामें हाथ फाळ ॥ हवे सघली पंक्ति बेठी, एटले पीरशण हारी पेठी ॥ ते कहेवी छे? शोळ शणगार सज्या, बीजां काम तज्यां ॥ हावनावनी रूडी, खळके हार्थे सोनानी चूडी ॥ लघु लाघवनी कळा, मन कीधां मोकळां ॥ चित्तनी उदार, अति घणी दातार ॥ बोलती हाथ, परमेश्वर देजो तेहनो साथ ॥ धसमसती आवे, सघळांने मन नावे ॥ पहेलां फळहवें पीरसे, सघळांना मन हर्षे ॥ एवी छे पिरसनारी नली, मृगनयनी, हांसनी पूरी, धर्मनी शूरी, शीलवति, शक्तिवति एवी पिरसनारीयो छे ते प्रथम फळ खावानां लावे छे पाकां आंबानी कातली, ते भूरा खांमडी नली ॥ वळी पातलां पाकां केळां, ते खांमडी

कीधां नेजा ॥ सखरा करणां, वली पीजा वरणां ॥ जीला नारंगा, दीसे महासुरंगा ॥ नी
लीरायण, पीरसी नली नायण ॥ दाडिमनी कली, खाता पूगे मन रली ॥ लींवजाने अखोड,
खातां पूगे मनना कोड ॥ डाखने वदाम, कइ कागदीने कइ श्याम ॥ सिलेमी खारेकने खजू
र, ते पीरस्यां नरपूर ॥ नालियेरी नगरी, ते मालवी गोलथी नरी ॥ लींबु खाटाने मीठा, एह
वां ते कदी न दीठा ॥ चारोलीने पीस्तां, लोक जमे हसतां ॥ वली शेलडीने सीताफल, ते पण
पीरस्यां परिघल ॥ हवे पकवान आणे, तें केहेवा वखाणे ॥ सतपडा खाजा, ते तुरत कीधां
ताजा ॥ सवलाने साजां, जाणे प्रसादनां ठाजा ॥ एहवां पवित्र प्रधान, मालवी घउ, तेह
ने वल्या तेहनी पडछुदी, महाचतुरें शोधी ॥ घीयें करमोइ, तेहनां खाजा घीयें तल्या फूल्या,
महाविशाल, एवा सातपुडां खाजा, वली फगफगता फेणा, डधवर्णा दहीथरां ॥ घृतवर्णीसु
वाली, अमृतजेवी जलेबी ॥ घीनाघेवर पतासा मोतीचूर गुंदवडा एलचीवाणासहित साक
रीया चणा, खांमसाकरनां दहीथरां, अनेक नातिनी सुखमी पिरसे विशुद्दसें केलव्या, सा
रमिश्र खांमथी नेलव्या ॥ माहे एलचीना चमत्कार, पछी पिरस्या लाडु, जाणे नाना गाडु ॥
कुण कुण तेहना नाम, जमता मन रहे नही एक ठाम ॥ वली लाडुनां नाम कहे छे मो
तीआ लाडु, दलिया लाडु, सेवैया लाडु, चूरमांना लाडु, तिलना लाडु, तिगडुना लाडु, मग
ना लाडु, जगरीना लाडु, सिंहकेसरीया लाडु, कीटीना लाडु, तेजाना लाडु, खसखसीयाना
लाडु, जांखरीया लाडु, चोंटीया लाडु, अडदीया लाडु, अमृतिया लाडु, दीठा वाढ गले, पूर
णपुन्याइयें ए मले ॥ नोजनने अर्थे पीरसे, लक्ष्मी एवा मोदक, जातजातना दीसे, जमतां
वाधे मुखनो वान, तेनां हैयडाहीसे ॥ दातारना हाथें परीघल, कृपणना हाथ धुजे ॥ वली

बीजां आण्या पकवान, जमतां वाधे सुखनु वान ॥ कुण कुण जाति, नव नवि जाति, सखरासांटां, तेमांहे नही खाटां ॥ घरफीनी जाति, फीणीनी जाति, मरकीनी जाति, ऊधपिंमीनी जाति, सा करीयामोतिचूरनी जाति, मसूरनी जाति, जलेबीनीजाति, सक्करपारानीजाति, गोलपापडीनी जाति, हवे आव्या वडां गुदवडा, फीणी सखरां सोट ॥ तेमांहे नही खोट ॥ दहीवडां, फेण वडां, मयीयावडां, कांजीयावडां, सालियावडां ॥ पातली सेव, पीरस्यानी रूडी टेव, ताजो गुद, तल्यो गुद ॥ कुम्लारुत जलेबी, शीरो, लापसी ॥ जिण दीठे दाढा गले, स्वर्गछुति देव देवी टलवले ॥ वली मीठो मगद, सारो माल नगद ॥ खांमनु चूरमु, साकरनु चूरमु, पछी पीरशी सालि, ते जमीयें विशाल ॥ ते कुण कुण भेद, सांभलतां उपजे उमेद ॥ सुगधसालि, सुवर्ण सालि, धवली सालि, राती सालि, नीली सालि, पीली सालि, मदा सालि,सूक्ष्म सालि, कोमुदि सालि मालवी सालि, कलम सालि, कुंकणी सालि, तिलवासी सालि, जीरा सालि, कंद सालि, रायभोग सालि, कुवारी सालि, षडायण सालि, निकी सालि, गुरुडा सालि, वली साबु चोखा अखम चोखा ने वली खांमघा, सवला ढांमघा, हलवा हाथथी सोह्या, नख थकी वीण्या, उत्तम स्त्रीयें ऊंख्या, सुजाण स्त्रीयें ऊसाया, एवा अणीयाला सुगधि फरहरा, ऊंवा कूर पीरस्या ॥ वली उपर दाल पीरशी, तेनां नाम कहे छे, मंमोरनी दाल, मुगनी दाल, कासली च णानी दाल, गुजराती तुयरनी दाल, अडदनी दाल, जालरनी दाल, मठनी दाल, वर्णे पीली, परिणामें सीली, वली परिघलघृत पीरश्यां ते कहेवां छे ? तो के आजना ताव्यां, एवा गायनां घी, भेंशनां घी, पीला वरणनां घी, नाकें पीयां घी, मजीठवर्णा घी, हवे पोली पीरसी, ते कहेवी छे ? तो के आठी पोली, घीमांहे जबोली, फूकनी मारी फलसी जाय, एकवीश पोलीनो

एक कोलीउ थाय ॥ ठप्पो ॥ मुरकी मोतीचूर, सेवफिणी साकर सरखी ॥ खाजां खुरमां खांस,
प्रिया तिहां पीरसें दरखी ॥ केला तणी कातली, श्रबरस मूके घोली ॥ घल घल घीनी नाल,
पीरसें पातली पोली ॥ साल वाल बहुसालणां, गोरस करवे चित्त ठर्युं ॥ रूपन कहे ए जमण
कर्युं, थाकी सघलुं एजो वर्युं ॥ १ ॥ चोला मरटी तेल, साक विण नित्यें सारे ॥ पीरसे जूमी
नार, पेट कहो केणी परें गारे ॥ ठपर ढीली घेंश, ठास पण पीरसे पाणी ॥ सिंधव नहीं ल
गार, किहुं कहे कर्मेनी कांणी ॥ श्राहार सेर श्रढी तणो, सेर सवा दोहिलो लहे ॥ कवी रूपन
कहे एजो थयुं, जोजन एहने कुण कहे ॥ हवे शाक पीरस्यां तेनां नाम कहे ठे, नीली मो
मीनां शाक, टिंडसीनां शाक, चीलडांना शाक, कोहेला, ककोडां, करमदां, कालिंगडां, केला,
कारेला, श्रारियां, तुरियां, खडबुजां, वेंगण, मोघरी, नींबु, श्रवोलीया, वालोल, चोलानी
फली, सरगवानी शिंग, सांगरी, काचरी, श्रामलां, केरनां फूल, केरडां, लीलां मरचां, लीली
पीपर, लीली रायण, खाटां, खारां, मोलां, गल्यां, तल्यां, वघार्यां, फुगार्यां, ठमकार्यां, वली
पीरसी नाजी, ते ठपरें सहुको राजी ॥ ते कोण कोण जातनी ते कहे ठे सरसवनी ना
जी, सूवानी नाजी, मूलानी नाजी, चणानी नाजी, चीलनी नाजी, मेथीनी नाजी, थेगीनी
नाजी, श्रफीणनी नाजी, तांदूलनी नाजी, हवे वडीनां शाक कस्या तेना नाम कहे ठे वाल
वडी मलकावडी चूयरावडी घासवडी घारवडी वहीवडी घोलवडी पापडवडी मरियालावडी,
घणा जोलेंनीना, घणा वघार मसालाना चमत्कार सबडका देता श्रगुली चाटता मनमां
विशेषे नावतां, हवे रायतानां नाम कहे ठे खारेकना रायतां, टोपरानां रायतां, शखना रा
यतां, वदाम श्रमुख मेवानां रायतां, हवे वडा कइ कइ जातनां पीरश्यां? ते कहे ठे मरचा

नां वडां, तळ्या वडां, कोरां वडा, काजीघोळवडां, घोळ वडा, मगनी दालना वडा, चोळानी दालनां वडा, अडदना वडां, दहींवडां, गूदवडां, फेणवडा, मेथीया वडां, सालीयावडां, घणे जोळें नीना, घणे तेलें सीना, मरचांना घणा चमत्कार, अत्यंत घणा सुकुमार, हाथें लीधा ठळसे, मुखें घाल्यां तरत गळे, घणु शुं कहियें ए वडा एवां तो ठे, के जेने खावाने अर्थें घणा देव देविउ पण टलवळे ने हवे पक्षेव पीरसी, ते कहेवी ठे? चोखानी पक्षेव, सुहारनी पक्षेव, बाजरीनी पक्षेव, गहुनी पक्षेव, हळदीया पक्षेव, पीपळीयां पक्षेव, सुठीया पक्षेव, लवडकीया पक्षेव, हवे नोजन जमतां वचमां पीवानां पाणी आवे ठे, ते कहे ठे साकरनां पाणी, डाखनां पाणी, खांमना पाणी, गगानां पाणी, पाळर पाणी कपूरे वास्यां पाणी, एळचीयें वास्यां पाणी, टाढां सीतन पाणी, हीमनां पाणी हवे दही अने दहीनां घोळ आवे, ते कहेवा ठे? ते कहे ठे गायनां दहीं, नेशनां दहीं, काठा जाम्यां दहीं, मधुरां, सखरां, सजीरालां, सलवणा जाम्यां, घोळ, तेनां नयां कचोळ, चावळशुं जिमतां, थया रंगरोळ ॥ वळी सखरां करंबा नरी आणीने पीरस्या, ते करंबामांहे घणी राइ, जमतां ढील न कांइ, उपर जीरा लुणनो प्रतिवास, करणहारी पण खास ॥ एम नोजन कराव्या पठी एकांते तेहज आशने रह्या थका ने चळु कराव्या ते चळु करावनानां पाणी केवां आव्यां, ते कहे ठे केवडानी वासनां पाणी, कायाना पाणी, कपूरें वास्यां पाणी, चदने वास्यां पाणी, पाम्हलें वास्यां पाणी, सुगंधी पाणी, गगोदकना पाणी, चंदने निवास्यां पाणी, एळचीयें निवास्यां पाणी, इत्यादिक पाणीयें करी चळु कर्या पठी टणशला प्रमुखथी मुख सोधी दांतोनी शुद्धि करीने परम सोच्य थया हवे मुखवास दीधां ते कहे ठे वांकडी सोपारी, चीकणी सोपारी, ते पण केशर वरणी, कपूरें वा

चित्र १८





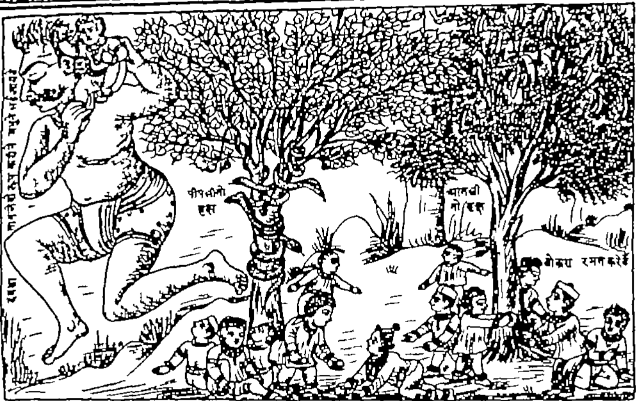
सित, वली तीखां लविंग, जावंत्री, जायफल, मोटा मोमा, एलची, पाकां नागरवेलनां पान, ते वली काथा चूना सहित दीधां, वली घणां आदर सन्मान, घणां गीत गान, घणां ताननें मान, हवे कइ कइ जातिनां कइ कइ नांतिनां वस्त्रोनी पहेरामणी करी, ते कहे ले देवडुष्य वस्त्र, रत्नकंबलवस्त्र, पांनडी, खीरोदक, अटाणां सेलां, अधोतर, मूलकसवी, जरवाप, मख मल, चिणीयां, बुलबुल, चसम, पाट्ठ, टसरिया, शणीया, नेरव, नारीकुंजर, पट्टहीर, पट सोर्व्ली, पंचसइयां फूलपगर, फूलकारी, दोरीयां, जादर, चादर, नेत्रपट्ट, धोतीपट्ट, राज पट्ट, गजवडी, सुवर्णवडी, हंसवडी, कालवडी, शुभ्रश्चिआ, पटकूल, पट्टहीरसाडी, घाटडी, चीर, कुंमखाव अतलशलादि खाराचीनी, पापडीआंचीनी, सथीआ गुआगरी, आसणिआ आगराइ, सणलीपट्टणी,मशरु तास्ता, शाल्लु, दोपट्टा, त्रपट्टा, बास्ता, टुकडी, मुगटां, गयल नारी कुंजर, शाडला, रत्नकमल, चुनडी, घाटमी, इत्यादिक पांचरंगी वाघा पहेराव्या, वली कासमीरी केशरना छांटणां कीधां, नलां नलां सुगंध बावना चंदननां विलेपन कीधां, अरगजा, चूआ, चपेल, फूलेल, केवडो, मोगरो, जाइ, जुइ, कुंद, मचकुंद, चंपो, मरुओ, दमणो, केतकी अने मालती प्रमुख फूलोनी मालाउ पहेरावी पछी वली मुकुट, तिलक, बाजुबंध, हार, चीर, वेर स्या, रत्नावली, मुक्तावली, चशावली, हीरावली, प्रवालावली, सूर्यावली, ग्रहावली, नक्षत्रा वली, श्रोणिसूत्र, कटीसूत्र, पट्टशीखर, चूडामणि, कुंडल, कटक, कंकण, अगद, मुद्रादक, दशमुद्रक, चक्रक, अजर, मेखला, मुदक, पदक, सांकलु, सांकली, चिचिट, नगवत्तरी, हारा हांशडी, कपाली, ग्रैवेयक हेमजाली, मणिजाली, मौक्तिकजाली, वर्णसरीका, जांजर, नेउर, घुघरा, पीगडां, वींठीया, अगुठडी, वालाजाल झुमणां, अकोटा,रूपाला, हरीयारारवडी, गो

सित, वळी तीखां लविंग, जावत्री, जायफल, मोटा मोफा, एलची, पाकां नागरवेलनां पान, ते वळी काथा चूना सहित दीधां, वळी घणां आदर सन्मान, घणां गीत गान, घणां तानने मान, हवे कइ कइ जातिनां कइ कइ नातिनां वस्त्रोनी पहेरामणी करी, ते कहे छे देवदूष्य वस्त्र, रत्नकंबलवस्त्र, पांमडी, खीरोदक, अटाणां सेला, अधोतर, मूलकसबी, जरबाफ, मख मल, चिणीयां, बुलबुल, चसम, पाटु, टसरिया, शणीया, नेरव, नारीकुंजर, पट्टहीर, पट सोळली, पंचसइयां फूलपगर, फूलकारी, वोरीयां, जावर, घावर, नेत्रपट्ट, धोतीपट्ट, राज पट्ट, गजवडी, सुवर्णवडी, हंसवडी, कालवडी, सुअखिआ, पटकूल, पट्टहीरसाडी, घाटडी, चीर, कुंमरखाव अतलशलादि खाराचीनी, पापडीआंचीनी, सपीआ शुआगरी, आसपिआ आगराइ, सणलीपट्टणी,मशरु तास्ता, शालु, वोपट्टा, त्रपट्टा, मास्ता, टुकडी, मुगटां, गयल नारी कुंजर, शाडला, रत्नकंबल, चुनडी, घाटडी, इत्यादिक पांचरंगी वाघा पहेराव्या, वळी काशमीरी केशरना छांटणां कीधां, जलां जलां सुगंध बावना चंदननां विलेपन कीधां, अरगजा, चूआ, चंपेल, फूलेल, केवडो, मोगरो, जाइ, जुइ, कुंद, मचकुंद, चंपो, मरुओ, दमणो, केतकी अने मालती प्रमुख फूलोनी मालाओ पहेरावी पछी वळी मुकुट, तिलक, बाजुबंध, हार, चीर, वेर खा, रत्नावली, मुक्तावली, चंद्रावली, हीरावली, प्रवालावली, सूर्यावली, महावली, नक्षत्रा वळी, श्रोणिसूत्र, कटीसूत्र, पट्टशीखर, चूडामणि, कुंडल, कटक, कंकण, अंगद, मुद्रवक, दसमुद्रक, चक्रक, अजर, मेखला, मुदक, पदक, सांकळु, सांकली, चिचिट, जगवत्तरी, दारा दोरडी, कपाली, ग्रैवेयक हेमजाली, मणिजाली, मौक्तिकजाली, वर्णसरीका, जांजर, नेउर, घुघरा, पीगडां, वींछीया, अणुवडी, वालाजाल कुमणा, अकोटा,रूपाला, हरीयाराखडी, गो

फणा, ढलसीयो, त्रिसंधीयो, श्रोटी, वोरढांकरी, वेढला, मुरकी, मोतीदर, गंठोडा, तुगल, ष
पकली, पानडी, होमेरताली, मोतीसर, सरलीया, टीक्तां, टीली, चांदला, श्राड, नवमद्द, मु
द्दी, श्रंगुठी, वींटी, वांकरुं, गलसरी, ठापकरजाली, हेमजाली, मादलीयां, खेलमादलीयां,
कवोरा, पाटीश्राला कंदोरा, लटकणमोड, नागफूली, नागला, मोरवेसण, नथवाली, सिंदूर,
कुंकुमरीली, जवलाचूडी, घरचूडी, चूमा, कांकणी, कारेली, लाल, पोंची, मेखला, हायलां
कली, सोना लदेरीयां, तावीत, फमलां, कमली, वांकडी, वेलीयां, जोलीया, इत्यादिक श्राज
रण पहेराव्यां ए रीतें मित्र, ज्ञाति पोताना क्षत्रियो तथा कुटुंब, सगा संबंधीनी ज़क्ति विवि
ध प्रकारनी कीधी इति जोजन तथा श्राजरण विधि हवे बालकनुं श्रीवर्द्धमान एवुं नाम
दीधु, ते वखाणे ढे हवे ते मित्र, न्याती, गोत्री, स्वजन, पितरीया प्रमुखने सत्कार, सन्मान
श्रापीने त्रिशलादेवी तथा सिद्धार्थराजा एवुं कहेवा लाग्या ॥१०५॥ ॥जे हे देवानुप्रियो !
श्रमारे घेर ए पुत्र गर्जने विषे श्रावी उपन्या पढी श्रमें रूपेंकरी, श्रणघडे सोनें करी, धान्यें
करी, राज्यें करी, वाहनें करी, मनुष्यना सत्कारें करी, श्रत्यंत घणा वृद्धि पाम्या तथा सा
मंत जे सीमाडाना राजा श्रने चंडप्रद्योतनादिक राजा, ते पण श्रमारे वश थया तथा श्रमारी
चाकरी करवा श्राव्या॥१०६॥ तेथी श्रमारा मनमा एवुं चितव्युं हतु के जेवारे श्रमारे घरे बाल
कनो जन्म थाशे तेवारें ए बालकनुं नाम रूप गुणें करी प्रधान निष्पन्न श्रीवर्द्धमान एवो
श्रापीशुं, ते श्रमारा मनोरथ सिद्ध थया, श्रमारी इछा पूरण थइ माटे श्रमें ए कुमारनुं वर्द्ध
मान एवुं नाम श्रापीयें ढैयें तमें पण ए कुमारने श्रीवर्द्धमान कुमार एवा नामें बोलावजो
एरीते संबंधी सर्वने शिरपाव पहेरामणी करीने सर्व सज्जननी साखें बालकनुं नाम स्थापन

कस्यु ॥ १०८ ॥ पछी ते सर्वने विदाय कस्या ॥ इतिश्री वर्द्धमान नामस्थापन संपूर्ण ॥ ते श्रीवर्द्धमान ज्गवान् कहेवा छे? तोके सात हाथनुं महोटुं शरीर छे जेनु, वली समचोरस संस्थान छे, सुवर्णवर्ण देहनी निर्मल कांति छे, वज्र रुषननाराच संघयण छे, एवा ज्गवान् छे हवे श्रीवर्द्धमान स्वामीनां सर्वमली त्रण नाम थयां ते कहे छे एकतो माता पितायें आपेलु नाम श्रीवर्द्धमान ज्गवान् छे अने बीजु रागद्वेष रहित तपस्यामा खेद सहन करवाथी श्रमण एवुं नाम जाणवुं अने त्रीजु जे अकस्मात् उपजे ते जय अने सिंहादिकोना उपद्रवथी जे जय उत्पन्न थाय ते जैरव कहीये ए जय जैरवोथी चलायमान थया नही निर्जय पणें रह्या थका जूख तृषा प्रमुख परिसहे करीने क्षोज पाम्या नहि एम परिसह उपसर्ग सहन कस्या तथा सर्वतोजद्र प्रमुख प्रतिमाना पालवा वाला, चारज्ञान सहित, धैर्यवान, अरति रति परिसहने वेठीने रागद्वेष रहित पणे सुख दुःख सहन कस्यां तेथी ड्व्यवीर्य पाम्या थका मोक्षजवानो निश्चय कस्यो छे तोपण चारित्र पालवामां तत्पर रह्या एवा वीरपणांनां गुणोये करी देवताउयें श्रीमहावीरस्वामी एवुं नाम दीधु तथा ज्गवान् आमल क्रीडा करतीवेलायें देवता क्षोज पमाडवा आव्यो तेनाथी बीक पाम्या नही ते कथा आगल कहेवाशे तेवारे पण देवतायें महावीर एवुं नाम दीधु ॥ १०९ ॥ ॥ हवे ज्गवान् श्रीमहावीरस्वामी दिवसें दिवसें चंद्रकलानी पेरें वधता थकां, घणा दासदासीयो साथे परवस्था थकां, अत्यंतरूपवान, मस्तकें जमरानां सरखा काला केश छे जेना, कमल सरखां नेत्र छे, परवाला समान बिंबोष्ठ छे, धोला दांत छे, कमल गर्ज सरखो गोर वर्ण छे, कमलना गंध सरखो श्वासोश्वास छे, सर्व देवताउना रूपथी पण घणुज रूपछे जेनु एटले सर्व देवोनुं रूप जो एकठुं करीयें तो ज्गवानना

मावा पगना अगुगनी एक कलाने पण पदोचें नदी केमके त्रणे लोकमां सर्वथी अधिक रूप श्रीतीर्थंकर नगवाननुं दोय ठे तेथी उंबु गणधर मदाराजनुं रूप, तेथी उंबुं आदारक शरीर वाला साधुनु रूप, तेथी उंबु अनुत्तर विमानवासी देवोनु रूप जाणवु, तेथी उंबुं नव ग्रैवेयकना देवोनु रुप, तेवार पठी बारमो देवलोक, अगीयारमो, दशमो, नवमो, आठमो, सातमो, ठठो, पांचमो, चोथो, त्रीजो, बीजो, पदेलो देवलोक ए सर्व क्रमें करी एक बीजाथी उतरता उतरता रूप वाला कदेवा तेवार पठी जोतिषि देवोनुं, पठी नवनपतिदेवो, पठी व्यंतर देवो, पठी चक्रवर्त्तिराजा, पठी वासुदेव, पठी बलदेव, पठी मरुलिक सामान्यराजानुं रूप जाणवु ए सर्व अनुक्रमें एकेकथी दीनदीन रूपवाला जाणवा वली नगवान जातिस्मरण ज्ञानसहित अप्रतिपाति मति, श्रुत अने अवधि मली त्रणज्ञानें करी सदित, सर्वथी उत्कृष्ट देदनी कांति ठे जेनी, एवा नगवान अबीद, बलवत, बुद्धिमत, सुरूपी, दिव्यस्वरूपधारी, सादसिक वली रूपाला, रंगीला, रढीयाला, रेखाला, रतीला, मतिला एवा नगवान रमता रमतां जेवारें आठवर्षना थया तेवारें सरखे सरखा राजकुमारो सार्थे क्रीडाकरता थका ते देशमां प्रसिद्ध पामेली एवी आमलकी क्रीडा रमवा सारु नगरनी बादिर एक पीपलीनुं वृक्ष ठे त्यां सर्वकुमारो एकठा थइने सर्व ठोकरा दोडवा लाग्या ते आवीरीतें के बे बे ठोकरा सार्थे दोडे तेमां पदेलो जे पीपलीना वृक्षने जइ पकडे ते जीत्यो अने जे पाठल रहीजाय ते दार्यो पठी जे दारे ते पोतानी खांध उपर जीतेला ठोकराने बेसाडीने जे स्थानकथी दोड करीने दोड्या दोय ते स्थानकें पाठो जइ मूके एवीरीतनी रमत पोताना जेवडा ठोकरा सार्थें नगवान करे ठे एवामां सौधर्मेंद्र सनामां बेठा थका अवधिज्ञाने करी नगवाननुं महाबल


चित्र १९

जाणीने सभामां कहेवा लागा के, आजना समयमां जेवा श्रीमहावीर भगवान बलवान छे एवो कोइ बीजो बलवान नथी जो महारासहित सर्वदेवो मलीने तेने डराववा जाय तोपण डरे नही एवा छे ते इन्द्रमहाराजना वचनने अणसद्दहतो थको एवो कोइ मिथ्यात्वी देवता तिहांथी आवीने जिहां भगवान रमे छे तिहां आव्यो अने छोकरानुं रूप करी भगवान साथें रमवा लाग्यो तेवारे भगवान अत्यंत वेगथी छोडीने तरत जइ पीपलीना झाडने हाथ लगाडीने आगल चाल्या अने देवतायें पीपलीना नीचेनी डालीयोमां सर्वत्र फूंकरा करतो एवा सर्पनुं रूप बनाव्युं ते भगवाननी सामो फणाटोप करीने बीवराववा लाग्यो पण भगवानें सर्पने पोताना हाथथी दूर करीने पोतें पीपली उपर चढीगया अने मनमां ते सर्पनो कोइ पण भय आण्यो नही हवे जेवारे ते देवकृत बालक हार्यो अने श्रीवर्द्धमान जीत्या तेवारे ते देवरूप बालके पोतानी खांध उपर भगवानने चढावीने तेने बीवराववा सारु सात ताडवृक्ष जेटलुं उंचु रूप कर्युं तेने जोइने बीजा सर्व बालको भयपामीने नाशि गया अने प्रभुना मातापिताने जइ सर्ववृत्तांत कह्युं तेवारे माता पिता चिंता करवा लाग्यां तेमनी चिंता टालवाने माटे भगवाने वज्रप्रहार जेवी पोतानी मुष्टि, देवनी पीठ उपर मारी तेथी ते देव अरराट करतो चीस पाडतो थको जमीन उपर पडी गयो पछी घणो लज्जायमान थइ पोतानुं रूप प्रगट करीने कहेवा लाग्यो के हे प्रभु ! जेवा तमोने इन्द्रमहाराजे वखाण्या तेवाज तमे धीरजवाला महाबलवान छो ए अवसरमां इन्द्रमहाराज पोतें पण तिहां आव्या अने ते देवताने भगवानने पगे लगाड्यो देवतायें पण भगवानने पगे लागी अपराध खमाव्युं ते देव मिथ्यात्वपणुं त्यागी समकेति थयो पछी इन्द्रमहाराज तेने पोतानी साथें देवलोकमां लइ गयो इति आमलपीपलि क्रीडा सपूर्ण ॥

हवे जगवान आठवर्षना थया एटले माता पितायें मोहना वशथकी विचार्यु ॥श्लोक॥ लाल येत्पंचवर्षाणि, दशवर्षाणिताडयेत् ॥ प्राप्तेषोडशकेवर्षे, पुत्रमित्रवदाचरेत् ॥ १ ॥ ॥ तथा ॥ मातावैरीपिताशत्रु, पुत्रोयेन नपाठित ॥ शोजते न सजामध्ये, हंसमध्येवकोयथा ॥२॥ ॥ अर्थ –ढोकराने पांचवर्ष रमाडवो रमतकरावको अने दशवर्षनो थाय तेवारें धाकमां राखवो तथा शोलवर्षनो जेवारें थाय तेवारें तेने मित्र सरखो जाणवो ॥ १ ॥ ॥ तथा जो पुत्रने जणावे नहि तो माता तेनी वैरिणी जाणवी अने पिता तेनो शत्रु जाणवो केमके जो जणे नहींतो ते पंमितोनी सजामां जेम हंसोनी पंक्तिमां बगलो शोजे नही तेमतेपण शोजा पामे नही ॥ २ ॥ एवो विचारकरी, सारु मुहूर्त्त जोइने शुजदिवसे पोताना स्वजन क्षत्रियोने जमाडी वस्त्राजरण आपी, केशर कस्तूरीनां ढांटणा करी, हाथी रथ घोडा शणगारी, गीत वाजित्र सहित महा महोत्सवथी निशालीयाउने आपवा सारु गोलधाणी मेवा प्रमुख लीधां तेनां नाम कहेछे वरसोला, गुदवडा, खारक, टोपरां, डाख, खजूर, सिंघोडा, अखोड, बदाम, चारोली, नालियेर, साकर, सेव, पेडा, फल, फूल, साकरीया चणा, एलचीपाक, धाणी, गोलधाणी, बीजोरा, चणा, सोनानाखडीया, रत्नजडित लेखणो, रूपानीपाटीउ, पानना बीडां प्रमुख अनेक वस्तुउ साथें लइने तथा पंमितने आपवा योग्य वस्त्राजूषण साथें लइनें सोहागणी स्त्रीयो गीत गाती थकी श्रीवर्द्धमानने स्नान करावी शणगार पहेरावी हाथी उपर बेसाडी मेघा म्बर छत्र चामरो सहित, याचकोने दान देता थका, जाटस्तुति करता थका, ब्राह्मणवेदध्वनि जणता थका, आशिर्वाद करी वधावतायका, जणाववा वाला पंमितनी पासें आव्या तेवारे पंमित पण सिद्धार्थराजानो ढोकरो सकलदेशनो अधिपति महारीपासें जणवा आवे छे एहुं


चित्र ३०
भणावनार मेता
वृद्ध ब्राह्मणने
रूपे इन्द्र महाराज
भणनार विद्यार्थिया

जाणी अहंकार आणी मदोटुं आसन मंमावी शणगार करीने वे मणिबंध, बे बाहु, बे कहा, बे कान, वे काननी मूलमां, एक ललाटमां अने एक कोटमां एवा बार स्थानके तिलक करी पोताना परिवारने सर्व शणगारी वाट जोतो जोतो बेठो ठे ए अवसरमां इंड्रमहाराजनुं आ सन पण ध्वजानी पेरे कंपायमान थयुं अथवा जलमां चंद्रबिंबनी पेरे चपल थयुं अथवा हाथीना काननी पेरे चपल थयुं तेवारे इंड्रमहाराजें अवधिज्ञाने जोयुं तो जगवान जणवा बेठा ठे एवुं देखी कौतुक पामी चिंतववा लाग्यो के आ मोहनीयनो चमत्कार जुठ कहेवो ठे माटे मातापिता जाणे जे एने जणावीयें पण जगवानतो त्रणज्ञाने सहित ठे महागंजीर ठे एने शुं जणवुं ठे? एतो जल्या गुल्या स्वयंबुद्ध ठे, अमृतमां वली मीठाश शी करवी ठे? सरस्वतीने वली पोथी शी देखाडवी ठे? चंद्रमाने वली उज्वलता शी करवी ठे? आंबाने विषे तोरण बांधवुं? तथा मातानी आगल मोसाल वर्णव करवो तेम एमणे अज्ञानना वशथी जगवानने निरर्थक जणवा बेसाड्या ठे माटे हवे जगवाननी आशातना न होवी जोइयें एवुं विचारी शक्रेंद्र ब्राह्मणनुं रूप करी जिहां जगवान नीशालमां आव्या ठे तिहां ब्राह्मणनें सिंहा सन उपरथी उगडी जगवानने उंचा सिंहासन उपर बेसाडी प्रथमतो उपाध्यायनी समीपें बेशी तेने केटलाएक शास्त्रार्थना प्रश्न पूछ्या परंतु उपाध्यायथी बराबर तेनो जवाब अपाणो नही तेवारे वली तेहज प्रश्न जगवानने पूछ्या तेना उत्तर जगवाने नि संदेह पणे आप्या ते जोइ अध्यापक जे जणावनारो ते मनमां विचार करवा लाग्यो के आ वातोना तो महारा मनमां पण आज सुधी संदेह हता में पूर्वे घणा पंमितोने एनां अर्थ पूछेला हता पण कोइये महा री शंकानुं समाधान कर्युं नही अने आ न्हाना बालकें महारा संदेह दूर कर्या ए महोटो

आश्चर्य जणायछे वली पण इंद्रमहाराजें नगवाननें शब्दोनी उत्पत्ति पूछी तेवारें नगवानें संज्ञा सूत्र, परिनाषा सूत्र, विधि सूत्र, नियम सूत्र, प्रतिषेध सूत्र, अतिदेश सूत्र, अधिकार सूत्र, अनुवादसूत्र, विनाषा सूत्र अने निपात सूत्र ए दश सूत्रना अर्थ सर्व पृथक् पृथक् कही बताव्या, शब्दसाधनिका बतावी तेवारे लोकोये जाण्युं जे आ कोइ परदेशी ब्राह्मण आवेलो छे ते बालकने प्रश्न करे छे अने बालक तेना उत्तर आपे छे पण एवा उतरतो आ नणावनार पंमितनां मातापिता पण जाणतां नथी एम लोक सर्व आश्चर्य पामीने विचारवा लाग्यां के आटलां शास्त्र आ वालक ते क्यहां नण्यो हशे ? अनें उपाध्याय पण चमत्कार पामीने कहेवा लाग्यो के आते कोण ब्रह्मा पोते साक्षात् आहीं आव्या छे केशुं ? ते वारें सर्व लोकना मननां संशय मटाडवा सारुं इन्द्रमहाराज बोल्या के अरे लोको आ वर्द्धमान कुमार छे, एने सामान्य पुरुष जाणशो नही ए त्रण लोकनो नाथ छे, सर्व पदार्थोंनो जाण छे, परंतु महागन्नीर छे माटे पूछयाविना उत्तर आपे नही लोकोमां केवत छे के गला ते वाजणा, गला थोला पोलाढोल, जाणे आश्विन अने कार्त्तिकनो मेघ, जेवो असति स्त्रीनो स्नेह तथा जेवो शरदृतुनो गर्जारव तेवो गलो जाणवो पण जे पंमित छे ते तो वर्षादना मेघ सरखा गला बोले नही जे मूर्खहोय ते पोतें पोतानें जाणेजे हुं पंमित छुं एवी लपरायो करे पण एवा महोटा पुरुष जे छे ते विना पूछे बोले नही एवुं कहीने नगवाने प्ररूप्यां जे व्याकरण संबंधि दशप्रकारना सूत्र तेनी वृत्ति तथा उदाहरण करीने व्याकरण बनाव्युं ते जिनेंद्र व्याकरण नामा आठ व्याकरणनी आदिमां थयो पछी इंद्रमहाराज पंमित प्रमुख लोकोमां नगवान सर्वज्ञ ने एवुं जणावी पोतानुं रूप प्रगट करीने स्वर्गमां गयो उपाध्यायें नगवानने पगे

लागीने कह्युं के हे प्रज्ञु ! तमे ज्ञानसमुद्र ठो द्धुतो अपूर्ण कलशनी पेरे हुं माटे तमे महारा गुरु ठो पठी प्रज्ञुयें उपाध्यायने घणुं दान आप्युं जगवानना माता पिता घणां राजी थयां थकां जगवानने हाथी उपर बेसाडी उत्सव सहित गाजते वाजते घरे तेडी आव्या इति लेखक शालामहोत्सव समाप्त ॥ ॥ हवे प्रथम इंद्रमहाराजें आवीने जगवानने जलेना अर्थ पूठ्या ठे ते विस्तार होवाथी उपरे सूचव्या नथी माटे अहीं लखीयें ठेयें ॥ ॥ अथ जलेना अर्थ प्रारंज ॥ श्रीवीरप्रज्ञुने नीशाले बेठा जाणीने सौधर्म इंद्र ब्राह्मणनें रूपें आवी प्रज्ञुने नमस्कार करी सर्वलोकनें चमत्कार उपजाववा निमित्तें प्रथम जलेना अर्थ पूठ्या थकां प्रज्ञुजीयें आ प्रमाणे अर्थ कह्या ॥ १ बे लीटी ते जीवनी बे राशि ठे तेमां एक सिद्धना जीव ते निष्कर्मी अने बीजा संसारी जीवते सकर्मी जाणवा २ जले ते अरे जीव तुं सिद्धना जीवनी राशिमां जलवानी इछा राखजे ३ मिंडुं ते संसार रूप गोलाकारें ऊंमो कूप ठे ते मांहेथी निकलवानुं ठिद्र ठे माटे नीकलीश तो सिद्धमां जलीश ४ बिलाडी ते जेम कूवामां वस्तु पडी होय तेने लोढानी बिलाडीथी बाहेर काढाडीयें तेम इहां संसारी जीवने संसार रूप कूप मांथी काढाडवानी एक देशविरति अने बीजी सर्वविरति रूप बे बिलाडी जाणवी हवे ते सिद्धना जीव किहां रहे ठे ते कहे ठे ५ ऊंगण चोटीउं माथे पोटीओ एटले चौदराज लोकना एक अधोलोक बीजो मध्यलोक अने त्रीजो ऊर्ध्वलोक एवा त्रण जाग ठे तेमा ऊर्ध्व लोकनें चोटीने स्थानके बार योजन विस्तार वाली इसीपजारा नामे पृथिवी ठे तिहां एक योजननें चोवीशमें जागें ३३३ धनुषउपर बत्रीश अंगुल जेटला विस्तारमां लोकने मस्तकें अलोकने अडी रह्यां थकां सिद्धना जीव रहे ठे ६ ननो वीटालो ते हे जीव ! तुं संसारना

कामजोगमां मग्न थइ वीटाइ रह्यो छो तेथी अधोगति एटले नीचीगति पामीश ७ ममो माउलो ते आ ससारजे छे ते जीवनुं अनादि घरछे तेमां मोहनामे माउलो एटले मोसाली यो छे ८ ममा हाथ थे लाडुवा ते पूर्वे कहेलो जे मोह नामे मोसालीयो छे ते जीवने काम जोग रूप वे लाडवा हाथमां आपीने जोलवी राखे छे संसारमांथी नीकलवा देतो नथी ए सेरीराणी घोकडी ते सिद्धिरूप राणीने मंदिर चढतां चार कपाय रूप चोकडीनी चोकी राखी छे ते घोकीनें वचीने कदापि कोइ ऊंचो चढे तोपण तेने चढवा आपती नथी १० पाछी चारकुमावलि ते अगीआरमी पावडीथी पाछो ढोलीने तेने ते घोकडी संसार कूपमां नाखे छे ११ ढाव ढांउं ढोकलो माथे गोकरो एटले हे जीव ' तुं संसारमां धाइ धाइनें गर्भावासमां पडीश तिहां ढोकलानी पेरे सीजाइ रहीश वली छोकरां छैयां ते ताहारे माथें विटंबना पाडशे माटे जो तु धर्मना चक्रवर्त्ती महाराजनुं सिद्ध नगर छे तेने जोवाने वांछतो होय तो प्रथम तेनो सम्यक्त्व नामे महामन्त्रीश्वर छे तेनी साथे मलजे एटले ते तुजनें धर्म महाराजथी मेलाप करावी देशे हवे ते सम्यक्त्व नामा प्रधानना घर सुधी जातां थकां वचमां घाट छे तिहां लूटारा रह्या छे तेने निवारण करवानो उपाय कहे छे १२ हाथमां मोगरी ते धर्मकथा वार्त्तारूप यथा प्रवृत्ति करण करी, अपूर्वकरणना शुभ परिणाम रूप मोगरी एटले महामुद्गर हाथमां लइने १३ आडहा वो जाडहा वडो जाइ कांनो एटलें राग द्वेष रूप बे जाडहानें पछाडी वेगला करजे तथा बीजो पण सात प्रकृति रूप चोरनो क्षय करी अपूर्वकरण रूप मुद्गरथी मिथ्यात्वनी गांठ जांगीनें एटले मथीनेद करी आघो जाजे तिहां सम्यक्त्वनामा महामन्त्रीश्वर पांच रूप करी रह्यो छे तेनां तुं दर्शन पामीश पछी तेनी सेवामां रहेतां थकां ते ताहा

रामां योग्यता जाणीनें आगळ धर्म चक्रवर्त्तीनी बे पुत्री छे १४ रुडिकेवली रुडियकारु एटले एक देशविरति नामे लघु पुत्री छे अने वीजी सर्वविरति नामे महोटी दीकरी छे ते तुजने पर णावी देशे परंतु जो सम्यक्त्व मत्रीनी सेवा एकाग्रचित्तें सन्मुख रही करीश तो ते प्रसन्न थाशे केमके १५ आठ आठ आंकोडा वडे आंकड फांकोडा एटले तिहां शका कंखा कषाय रूप आंकडा फांकडा महोटा छे तेनी जो तुं संगत करीश तो सम्यक्त्व मत्रीना चित्तमां जर्म पडशे तेवारें ते ताहारी साथे वोढेलो थाशे १६ निलीतोडवे कांगोला वडे एटले तिहां वली विषय कषाय रूप अथवा ममता माया रूप एवी बे विषनी वेलडी छे तेमाहे काम अने भोगरूप बे सर्प सूताछे तेने जगाडीशमां छेडीशमां एम करवाथी स्वामी सुप्रसन्न थयो थको तुजने सिद्ध नगरीयें जवानो सथवारो करी आपशे १७ एनवेन वेगाडी एटले समिति अने गुप्ति रूप बे गाडीयोमां वेसाडीनें १८ उरखवाला बलदिया एटले तेमा ज्ञान अने चारित्र रूप बे बलद जोतरी आपशे तेने १९ अमीयां बे रासडी एटले सवर अने निर्जरा रूप बे रासडी बांधीनें गाडली शिवपुर नगरना मार्गे जणी चलावजे २० क कोकेवडो एटले केवलज्ञान रूप वोलावा विना सिद्ध नगरे पोहोचातु नथी ते केवल ज्ञा नतो अणाहार मार्गथी उपजे छे माटे २१ खस्को खाजलो एटले तु चार प्रकारना आहारनो स्वादी थाइशमां रसेंद्रियना लोलुपी थाइशमां २२ गगा गोरी गाय वीयाणी एटले ते अणा हारीजे तपादिक मार्ग छे तेना वतावनारा तो गुरु छे माटे गुरुनी भक्ति वहुमान्य करजे केम के गुरुमहोटा उपकारी छे ससार समुद्र तरवाने वोधवीज धर्मनुं आलवनादिक गुरु आपे छे माटे गुरुनुं गौरव पण करजे २३ घघोघरट पलाण्यो जाय एटले अरे जीव तुं घरनो धंधो जे

आरंन समारंन तेना नारें करी अदर्निश पजाएयो थको वदे छे ते नारथी तुजने गुरु मू कावशे २४ ननीछ आमण वूमणो एटले गुरुयें जे घरनो नार छोडाववा माटे पांच अणु व्रत अने पांच मदाव्रत रूप अनिमद नियमादिक अगीकार कराव्या ते पालतां थकां आमण वूमणो नम्र चित्तवालो थइने पश्चात्ताप करीशमां २५ चश्वाचिनीचोपडी एटले गुरुदत्त चारित्र धर्म पालवानी चित्तमां चोंप राखजे २६ छद्मावद्वियापोटला एटले छद्मस्थ पणे गुरु समीपें श्रुतज्ञात चौदपूर्वनी विद्यानुं पोटलुं बाधजे ज्ञाननो अन्यास घणो करजे २७ जक्षोजेसलवा णीछ एटले नियाणशल्य, मायाशल्य अने मिथ्यात्वशल्य ए त्रणशल्य तादारा अतरंगने विषे छे तेने टालवानो वणिज व्यापार करजे २८ ऊक्षोऊरीसारिखो एटले तुं ऊारी सरखो स्वनाव राखजे जेम ऊारीनुं मुख साकडुं दोय अने पेट पोदोळुं दोय तेम तुं पण पेट मदोटुं राखजे अने मुखथकी कोइना दोष मर्म प्रकाशीशमां एवीरीतें मुखने सांकडुं राखजे २९ अञीयो खांमोचांदे एटलें खांमोचांदो ते अर्द्धचन्द्रमा जाणवो तेना जेवा आकार वाली सिद्धशिला छे ते स्थानकें जावानुं तुं निरंतर साधन करजे ३० टष्टापोजिखांमेड्ड एटले तुं पोताना व्रत नियम अगड आखडी जे कांइ गुरु समीपें लीधां छे ते खंमित करीश नदी अर्थात् पच्चरकाणनी पोल जे वारणा तेने दृढ राखजे ३१ ठगठोवर गारुडे एटले तुं ठोवर ते नांगेलो घडो तेनी पेरें थाइशमां गुरुयें आपेली श्रुतिशिक्षा ते हृदयरूप घटने विषे समद करी राखजे ३२ ड्डाडामरगांठे एटले तु वाह्य आडंबर करी अन्यतर कर्मनी गांठे बधाइशमां ३३ ढढा सुणोपूंछे एटले तु सुणो ते श्वान तेना पूछडानी पेरें वक्रस्वनाव राखीश नदी परंतु सरल स्व नाव राखजे ३४ राणोताणोसेले एटले जो तुं मोहराणा सार्थे फूणकरे तो ज्ञान, दर्शन, चारित्र

तथा त्रणगुप्तिरूप त्रण सेल छायमां राखजे ३५ तप्पोताबे तेल्लें एटले तुं तप जप करतो थको कोइनां आक्रोश वचन सांजलीने तस तेलनी पेरें तातो थाइशमां ३६ थद्दा थेरखवा ली एटले कदापि तादारु मन वशवर्त्ति नथाय तो पण वचन अने काया ए बेनें तो थिरथाप करी राखजे ३७ दद्दीयोदीवड्डो एटले समकेत दर्शनरूप दीवो तेने हृदयरूप घरमां राखजे वली दया दमननें दान तेनी अनिलाषा धरजे ३८ धद्दीयोधाणको एटले तु धन कमाववानुं परिग्रह मेलववानुं ध्यान राखीशमां केवल धर्मध्यान तादारा हृदयमां राखजे ३९ ननीयो घुलायरो एटले तु नास्तिक मति अंगीकार करीने हृदयमांथी समकेतने पोलु एटले पातलुं करीशमां ४० पप्पापोलीपाटें एटले पाप आववानी पोल जे पांचेंद्रियनां आश्रवद्वार छे तेने सवर रूप कमाड जडीनें बंधकरी राखजे पण पोलां राखीश नही जेम अढार पापस्थानकनो प्रचार तेमां प्रवेश करी शके नही एवां दृढ मजबुत बंधकरी राखजे ४१ फप्फाफगडेजोडे एटले फोकट फांसीया, असुद्ध, अविनीत, अनाचारीनी जोडे सगत करी विचरीशमा ४२ बब्बा मांदेचांवणु एटले बोधबीजनो वधारो करजे जेम जेम बोध वधतो जाशे तेम तेम हृदयने विषे ज्ञानरूप चांदणु एटले चक्रमां प्रगट थाशे ४३ नभ्भोनारीनेंसको एटले नेंस जेम सूकुं लीलुं नक्षण करीने पेटें नारी थाय तेम तु पण बावीश अनक्ष अने बत्रीश अनतकाय जे क दमूल कहेवाय छे ते पामीने तेनुं नक्षण करी पेटे नारी थाइशमां कदापि देवादिक आवीने चलावे तोपण चलायमान थाइश नही मामभूकीशमां एटले अर्हन्नक श्रावकनी पेरे दृढ ता राखजे तथा वली व्रत नियमादिक पालतो थको मनमां मदोटो अनिमान धरीशमां, फरी कहे छे ननीयोनाटचूलेतरो एटले जेम चूलानी नाट धगधगती रहे छे तेम तु कोइना आ

क्रोश असह्यमर्मवेधाळां वचन सांभळीने अंतरंग हैयामां क्रोध रूपअग्नियें धगधगतो रहीशमां एटले क्रोधाग्नियेंजेटीशमां ४४ ममयीयोमोचक एटले आठकर्मने मूकजे मोक्ष मार्ग महोटो छे तेने आदरजे ४५ ययीयोजाडोपेटको एटले ससारमांहें यमजे कृतांत तेनुं पेट महोटुं छे ते सर्वजगतने ग्रास करे छे तोपण तेनुं पेट भरातुं नथी तेमाटे एनो भय ताहारा हृदयमां राखीने धर्मने विषे आळस करीशमां ४६ रायरोकटारमल्ल एटले राग अने द्वेष ए बे महोटा मल्ल छे तेमां रागना वळी बे प्रकार छे एक प्रशस्तराग अने बीजो अप्रशस्तराग ए बेहु मल्लने जीतीश तो कर्मथी हळवो थइ केवलज्ञान उपार्जन करीने अक्षयपद जे मोक्षपद तेनो भोगी थइश ४७ लब्धाघोडोलातवा एटले लोभरूप घोडानी लातथी वेगळो रहेजे ४७ वधाविगणवासवे एटले कामादिक व्याग छे तेने ताहारा मनरूप घरमां वास एटले वसवा देजे नही, केमके जो कामादिक ताहारा मनरूप घरमां प्रवेश करशे तो आत्माना उत्तमगुण रूप धनने सर्व चोरी लइ जशे ४९ शशाकोटा मरडीया एटले ससलानी पेरें कोट अने कानथी ढकाइने गळीयार थइ बेसी रहीशमां पण धर्मने विषे उद्यमी थाजे जे पटलालोकनी गतियाशे तेम ताहारी पणथाशे एवु चितवता एकदिवसें काळरूप पाराधी झगीतिमां लइजाशे जेम ससलाने आहेडी लेइ कोट एटले गळुं मरडी नाखे तेम तुजने पण काल आहेडी मरडी नाखशे ५० पपासूणे फाडिया एटले खरुं बोलजे खोटुं बोलीशमां केमके एक पण मृषावाद वचन बोलवाथी सर्वगुण अने सर्वव्रतनो नाश थइ जाशे जेम कोइक वस्त्रनो कोथळो सूणें फाटो पडी तेमां जे वस्तु भरेली होय ते हळवे हळवे निकळतीथकी अनुक्रमें सर्वखाली थइ जती रहे तेम ताहारा गुण तथा व्रत जता रहेशे तथा सूणेबेशी एटले कोइ नही देखे एवीरीते एकांते बेसी पाप करीश तो

पण ते आगल यवयिककालें प्रगट थाशे इत्यर्थः ५१ सारसे वंती लोक एटले जो तुं मोहरा जानी साथे युद्ध करे तो वंती एटले हाथीनी पेरें साहसिक थाजे जेम हाथी साहसिक थको सर्वनी आगल आगेवान थइ किल्लानां कपाट, गढ कोट सर्वने नांगी नाखें तेम तुपण मोह राजानो मिथ्यात्वरूप गढ नांगी नाखीश ५२ हाहोलोहरिणेकलो एटले तुं मोहरूप पाराधीनां पाशमा पडीशमां पण हरण जेम पाराधीने देखी नाशी जाय तेनीपेरें तुंपण फाल मारीने नाशी जाजे परंतु जो मोहना पाशमां पड्यो तो संसारनां बंधनथी छूटीश नही ५३ लावेलछी दोप णीहार एटले जोतुं मोक्षनो अभिलाषी थइने संसारनां बंधन छेदीस तो एक इव्यलक्ष्मी अने वीजी नावलक्ष्मी ए बे प्रकारनी लक्ष्मी ताहारे घेर पाणी नरशे एटले जो अनुत्तरविमाने देव ता पणे उपजीश अथवा मनुष्यनवे नरदेव चक्रवर्त्ति पणे उपजीश तो नरतादिक जेम इव्य लक्ष्मीनां सुख नोगवीने सिद्धने विषे नावलक्ष्मी नोगवे छे तेम तुं पण पामीश ॥ हवे एवां सिद्धनां सुख केवीरीते पामीयें ते आगल कहे छे ५४ खडीयाखाटक मोर पालें बांध्या बे चोर एटले संसारने विषे षट्काय जीवोना आत्माना जे ज्ञानादिक गुण छे तेने छूटवाने माटे राग अनें द्वेष रूप बे चोर खडा छे एटले उन्ना छे तेने पकडी बांधीने तेनुं बीजमात्र का ढाडी नाखजे के जेथकी कर्मरूप वृक्षनी उत्पत्ति फरी थायज नही ॥ रागोयदोषोयमाबीज ॥ इतिवचनात् ॥ माटे ए बे ने टालीने चारघनघातीया कर्मने टालजे के जेम केवलरूप लक्ष्मी पामे पछी ते केवलश्री नोगवीने अंते चौदमे गुणठाणे योगनिरुधी शैलेसी करण करी शुक्ल ध्यानने चोथे पाये कार्मणशरीर छेदी क्रिया रहित थइ सिद्धना जीवोनी राशिमां नलजे के जेम ५५ मंगलमहाश्री, देविया परमेश्वरी एटले मंगलिक रूप महोटी नावलक्ष्मी पामीश अर्थात्

पोताना आत्मानां अनतज्ञान, अनतदर्शन, अनतचारित्र, अनतवीर्य, अगुरु लघु, अरूपी, अखंड, अक्षय, अव्यय एवी महामंगलिक रूप जावलक्ष्मी पामी सादिअनतनांगे अजर, अमर, अविनाशि पणे, महानंद, परमानंद पद पणे रहीश इतितत्त्व ए जलेनो अर्थ समाप्त थयो ॥ वली एनो अर्थ प्रकारांतरे जुवा जुवा महापुरुषोनो करेलो घणा प्रकारनो टीकामां आव्यो छे परंतु आंही ग्रंथगौरवना जयथी मात्र आ एक प्रकारनोज दाखल कर्यो छे ॥ ॥ हवे जगवान जेवारें बाल्यावस्थायें करी रहित थया अने यौवनवय पाम्या तेवारें मातापितायें रूडुं मुहूर्त जोवरावीने घणा आडंबर सहित समरवीरनामा सामंतनी पुत्री यशोदा नामे हती ते प्रभुने परणावी घणी प्रतोमां नरवर्मराजानी पुत्री यशोदा परण्या एवा अक्षर लखेला छे पछी ते यशोदा राणी सार्थे विषयसुख जोगवतां प्रियदर्शना नामे एक पुत्री थइ ते पुत्री जगवाननी बहेननो पुत्र जमाली नामे हतो तेने परणावी एम करतां जगवानने गृहस्थ पणामां अठा वीश वर्ष वीत्यां ॥ हवे जगवानना परिवारनां नाम सूत्रकार वर्णवे छे महावीरस्वामीना पिता काश्यपगोत्रीया छे तेनां त्रण नाम छे ते कहे छे एक सिद्धार्थ, बीजुं श्रेयांस, त्रीजुं यशस्वी हवे जगवाननी मातानुं वाशिष्टगोत्र छे अने तेमना पण त्रण नाम छे ते कहे छे एक त्रिशला, बीजुं विदेहदिन्ना, त्रीजुं प्रीतिकारिणी तथा जगवाननां काकानुं सुपार्श्व एवुं नाम छे तथा जग वाननां महोटा जाइनुं नंदीवर्द्धन एवुं नाम छें तथा बहेननुं नाम सुदर्शना छे तथा स्त्रीनुं नाम यशोदा छे तेनुं कोडिन्न गोत्र छे तथा जगवाननी पुत्रीनुं काश्यप गोत्र छे तथा तेनां अणोजा अने प्रियदर्शना एवां बे नाम छे तथा जगवाननी दौहित्री तेनुं काश्यपगोत्र छे अने शेषवती तथा यशवती एवां बे तेनां नाम छे ॥ ११० ॥ ॥ हवे जगवान श्रीमहावीरस्वामी



चित्र ३१


चित्र ३७
श्रीमहावीर
भगवान्
नवलोकान्तिक
देव

कहेवा छे तोके ' सर्वकलाउंमां निपुण छे, जलीरीतें निर्वाह करवा वाला, जला रूपवत, सर्व गुणे सपूर्ण, सरलपरिणामी, विनयवान, ज्ञातराजाना पुत्र, प्रसिद्ध एवाजे सिद्धार्थराजा तेनां कुलमा चन्द्रमा समान, जलो छे देह एटले शरीर जेमनुं, वज्रऋषननाराच सघयण, समचउरंस सस्थान, त्रिशलामाताना पुत्र, महा कोमल शरीर वाला, कांतिवत, ममता रहित, दीक्षानी वांछा करनार, त्रीशवर्ष गृहस्थावासें रह्या तेवारे मातापितातो प्रजुनी अठावीशवर्षनी वयमां देवलोके पहोतां हता ते दिवसें दीक्षा लेवाने माटे पोताना महोटा जाइ नदीवर्द्धननी आज्ञा लीधी अने जाइने कह्युं के मातापिता जीवता रहे तिहां सुधी महारे घरमां रहेवु एवी म हारी प्रतिज्ञा हती ते पूरण थइ फरी जाइनी अनुमतिथी बे वरस घरमां रह्या तेवारे लोका तिक देवो आवीने इष्टकारी वल्लन वाणीयें करी नित्यआशीष देता थका नित्य स्तवना करता थका एवु कहे ॥ १११॥ ॥ के हे प्रजु ' हवे तमारो अनिग्रह पूरण थयो, ते हवे अनिग्रह सबंधि वात लखे छे जगवान अठावीश वर्षना थया तेवारे जगवानना मातापिता देवलोके गयां ते आवश्यकनिर्युक्तिमां तो चोथे देवलोके गयां एवु लख्युं छे अने श्रीआचारांगसूत्रमां बारमे देवलोके गया एवुं लख्युं छे ए वातनुं समाधान करवा सारुं केटलाएक एवी कल्पना करे छे के देवोनी सर्वमली चारनिकाय छे तो ते चार देवनिकाय आश्रयी ए चोथी निकाय वैमानिक देवोनी छे माटे ए चोथो देवलोक ते चोथी निकाय वैमानिक देवोनी समजवी तो ते चोथी निकायमां बारमो देवलोक आवीगयो तेथी आचारागमां कह्या प्रमाणे बराबर वात मली आवे छे ए प्रमाणे समाधान करे छे पछी तत्त्वकेवलीगम्य छे ॥ हवे मातपिता देवलोके गया पछी महोटा जाइ नदीवर्द्धनने, जगवाने पूछ्यु के हुं दिक्षा लव तेवारे नदीवर्द्धन बोल्या

के नाइ तु दाळया उपर लूण नाखे छे केमके मातापिता मरण पाम्यां तेना वियोग रूप दाघ जे अंतरा एटले फोडला तेतो हालमां मने कायम छे तेना उपर वली ताहारा वियोग रूप लूण नाखवु ते महाराथी सखुं जाय नही हजीतो माता पितानो शोक पण मट्यो नथी माटे हुं दीक्षा लेवानी रजा हमणा आपीश नही तेवारें नगवान बोल्या जे माता पिता नाइ बहेन एतो जीवने अनंतिवार थयां ते सर्वने मूकीने वली जीवतो एकलोज आवे छे, एकलोज जाय छे, एकलोज पोतानां करेलां शुनाशुन कर्मोने नोगवे छे, एवीरीतें संसारमां कोइ कोइनो सगो नथी तो हवे कोनो कोनो शोक करीयें अने कोनी कोनी सायें प्रतिबंध राखीयें ? फरी नंदीवर्द्धन बोल्या के नाइ ! एवुं हुं पण जाणु बुं तोपण हुं शुंकरु जे महारे मोहनीयकर्मनो बंध हजी घणो नारे छे तेथी ताहारो विरह हुं खमी शकतो नथी तेमाटे हजी महारा कहेवाथी तु बे वर्ष घरमां रहेतो ठीक छे हवे उत्तम पुरुषनी चाल छे के दुःखीयाने देखी तरत करुणा आवे माटे नाइनुं एवुं कहेण सांनलीने कयुं के हे नाइ हुं बे वर्ष रहीश पण नातपाणी सर्व फासु लइश महारा वास्ते आरंन करीने कांइपण बनाववुं नही तेवारे नाइयें कयुं के सुखे एमज रहो अमे तमारा वास्ते कांइ करीशुं नही तेवारें नगवान फरी पण बे वर्ष गृहवासें रह्या ॥ हवे जेवारें नगवान जन्म्या हता तेवारें लोकमां एवी प्रसिद्धि थइ हति जे चौद स्वप्न मातायें दीठा माटे ए चक्रवर्त्ति थाशे, एवुं जाणीनें श्रेणिक अने चंडप्रद्योतन राजायें पोताना कुमरोने बालक ठाकोरनी सेवा करवा निमित्तें मोकल्या हता ते सहुयें प्रनुने आवा घोर अनुष्ठान करता देखीने विचार्युं जे ए चक्रवर्त्ति नथी एतो संयम माही तीर्थंकर छे एवुं जाणी ते सर्व पोतपोताने स्थानकें गया नगवान पण एवी स्थितिमां

वखत दीक्षालीधी छे ते वखत सचित्तजलथी स्नान कर्युं छे केमके एवी मर्याद छे जे दाक्ष लेती वखतनुं स्नान उष्णजलथी करवुं तीर्थंकरने न होय तेथी प्रतिमाने पण उष्णजल च ढावता नथी एवी स्थिति छे पछी वे वर्षमांथी जेवारे एकवर्ष वीत्युं तेवारें नवलोकांतिक देवो आव्या तेनां नाम कहे छे १ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वन्हि, ४ वरुण, ५ गर्दतोय, ६ तुपित, ७ अव्याबाध, ८ अग्नि, ९ अरिष्ट ए नव आवीने जो पण जगवान स्वयंबुद्ध छे तो पण एमनी एवी मर्यादा छे माटे प्रजुनी पासे आवीनें जाण करे केवीरीतें जाण करे ते केहे छे जय जयवत होवो हे समृद्धिमान! हे कल्याणवान! तमारुं जद्र थाउ, हे क्षत्रियोमां वृषनसमान! तमारो जयहोवो बोधकरो बोधकरो बुजो बुजो हे जगवान! हे लोकनाथ! सर्वजगत जीवने हितकारी प्रवर्त्तो हे जगवान्! तमे धर्मतीर्थ प्रवर्त्तावो, ते धर्मतीर्थ सर्वलोकनें हितकारी, सुखकारी, मोक्षकारी थाशे एवुं कहीने जयजय शब्द कहे ॥११२॥ ॥ हवे श्रमण जगवान श्रीमहावीरस्वामीने मनुष्ययोग्य गृहस्थधर्मथी, गृहस्थना व्यवहारथी पहेला, पण अनुपमउपयोग ते अप्रतिपाति एवुं अवधिज्ञान अने अवधि दर्शन होतुं हवुं ते अनुत्तर अवधिज्ञान अने अवधिदर्शने करी पोतानी दीक्षानो अवसर जाणीने, रूपानो त्याग करीने, सोनानो त्याग करीने, धननो, राजनो, देशनो, वाहननो, कोठारनो, जंडारनो, अंतेउरनो, देशवासी लोकनो, धन, कण, धान्य, मणिरत्न, मोति, दक्षिणावर्त्त शंख, शिला, प्रवालुं, रातांरत्नादिक जे पोतानी पासें छतां छे हाजर छे ते सर्वनो त्याग करीने अर्थात् तेना उपरथी मन उतारी लीये, सर्व रूपादिक छोडीने जे चांदी प्रमुख धरतीमां दाटेला होय तेने बाहार काढा

हीने ते सहु आपणा गोत्रियाने वांटी आपीने आ सूत्रथी वरसीदाननो अधिकार एवो छे के जगवान दिक्षाना दिवसथी एक वर्ष पहेलां वरसीदान देवा मांमे ते सूर्यउग्याथी मांमीने जमवानी वेला सुधी प्रतिदिवसें प्रजातना सवा पहोर दिवस चडता सुधी नित्यप्रत्यें एक क्रोडनें आठ लाख सोनैया जगवान दानमां आपे अने गाममां एवी उद्घोषणा करे के जेने जे वस्तु जोइयें ते धणी ते वस्तु मागे तेवारें जे धणी जे मागे तेने ते आपे ते सर्वशक्रेंड्रना आदेशथी देवता पूरण करे एवी रीते एक वर्षमां जेटला सोनैया दान आपे ते कहे छे त्रणसो क्रोड एटले त्रण अब्ज अठासी क्रोड ने एशीलाख एटला सोनैया एक वर्षमां दान आपे ते सोनैयो एक एंशी रतीजार जेटलो होय अने तेना उपर तीर्थंकरनां मा बापनुं तथा पो तानुं नाम होय ते बारसो सोनैयानो एक मण करता नवहजार मण सोनैया दिनप्रत्यें दान देवाय तेना आजना समय प्रमाणे एक गाडलामां चालीशमण जार नाखतां बसोने पच्चीश गाडलां थाय ते सोनैया शक्रेंड्रना आदेशथी वैश्रमण देवता देवमायायें करी आठ समयमां नीपजावीनें, तीर्थंकरना घरमां जरे, ए दानदेवानो अतिशय छे, अने तीर्थंकरना हाथने विषे सौधर्मेंड् एवी स्थिति करे के दान देतां थकां तीर्थंकरनो हाथ थाके नही अने इशानेंड् रत्ने जडित सुवर्णनी लाकडी लइ उन्नो रहे ते चोसठ इंड्रवर्जीने बीजा सामान्य देवताउने दान लेतां वर्जे तथा जे मनुष्यनां ललाटमांहे जेवी प्राप्ति होय जेटलुं जेने आपवुं पोसाय तेटलुं तेना मुखमांथी इशानेंड् वचन कहेवरावे, तथा चमरेंड् अने बलेंड् ए बे इंड् जो तीर्थंकरनी मुठीमांहे अधिकड्व्य आव्युं होय तो पाछुं पडावी नाखे अने उंछु ड्व्य आव्युं होय तो पूरण करे मागनारनी प्राप्ति माफक पामे तथा ज्जुवनपति देवता

चित्र ३३





नरतक्षेत्रनां मनुष्यने दानलेवा सारुं तेडी आवे अने वाणव्यंतर देवो ते मनुष्यने पाछा तेने स्थानके मूकी आवे तथा ज्योतिषी देवता विद्याधरोने दान लेवानी खबर आपे ए सर्व तीर्थकरनां अतिशय जाणवा ए प्रस्तावें तीर्थकरनो पिता महोटी त्रण शालाउ करावे आंहीं नगवाननां मातापिता देवलोकें गयां छे माटे तेने ठेकाणे एमनो महोटो नाइ नंदीवर्द्धन छे ते त्रणशालाउ करावे तेमां पहेली शालायें नरतक्षेत्रनां मनुष्यने अन्नपानादिक आपे, बीजी शालामां वस्त्र आपे अने त्रीजी शालामां आनरण आपे हवे तीर्थकरना हाथनां दाननो महिमा कहे छे चोसठइन्द्रने दानने प्रनावे बार वरस पर्यंत मांहोमांहे कलेश उपजे नही तथा राजा अथवा चक्रवर्त्ति प्रमुख तीर्थकरनुं दान लइने ते सोनैया पोताना नंमा रमां मूके तो बार वर्ष सुधी तेमनो नंमारअखूट रहे तथा शेठ सेनापति आदिकने दान मलेतो तेना महिमा थकी बारवर्ष पर्यंत यश कीर्त्ति घणी वधे तथा रोगी पुरुषने दान मलेतो तेना प्रनावथी रोग सर्व मटी जाय अने फरी बारवर्ष पर्यंत तेना शरीरमां कोइ नवो रोग पेदा थाय नही इत्यादिक दाननो महिमा जाणवो हवे छ घडी दिवस चड्या पछी दानदेवा मांमे ते पोणा बे पोहोर दिवस चड्या सुधी दान आपे एवो पाठ घणी प्रतोमां लखेलो छे परंतु आमां सूर्यउग्याथी ते जमवाना वखत सुधी आपे एवो प्र थम लेख आव्यो छे एवीरीते प्रनुजी वरसीदान रूप वर्षाद एकवर्ष सुधी वरसावीने मनुष्योना दारिद्र रूप दावानलने उपशमावे जे दारिद्री हता ते सर्व धनवत थया, घोमें करी वध्या, वस्त्रेंकरी वध्या, आनरणे करी वध्या, ए आदिक लक्ष्मीयें करी सहित थया ए प्रनुना हाथनुं दानलइने जेवारें पोताने घेर पाछा आवे तेवारे तेना घरनी स्त्रीयो

सरखी पण पोताना स्वामीनें उलखे नही पछी इंद्र महाराज आवी उलखाण करावे ते वारें तेने सर्व प्रकारनी उलखाण पडे ए प्रभुना हाथनुं दान सर्व भव्यजीवोने मले परंतु अभव्यनेंतो ए प्रभुना हाथनुं दान सर्वथा मले ज नही इति संवत्सरीदान महिमाधिकार वर्णन समाप्त ॥ ॥हवे भगवान महाराजनो दीक्षा समय जाणीने नंदीवर्द्धन राजा दीक्षानो महोत्सव करवाने अर्थें प्रथमतो क्षत्रियकुंडपुर नगरने विषे ध्वजाउ बंधावी हाट शणगार्यां, घरघर तोरण बंधाव्यां एवीरीतें नगरशणगारीने पछी चोसठ इंद्र अभिषेक करवा आवे तेवारे देवोना प्रभावथी देवोयें करेला जे आठजातिना अभिषेक कलश ते कलश नंदीवर्द्धन राजाना करावेला अभिषेक कलशमां प्रवेश करी मली जाय पछी नंदीवर्द्धनराजा भगवानने पूर्व सन्मुख बेसाडीने देवतायें लावेला जलथी भगवानने अभिषेक करे तेवखतें इंद्रादिकदेवो सर्व भृंगार दर्पण हाथमां लइ जयजयशब्द कहेता थका आगल ऊभा रहे पछी भगवानना शरीरने लूही बावनाचंदने करी शरीर लेपे अमूल्य वस्त्र मुकुट, मोतीना हार, कंठसूत्र, केयूर, बाजुबंध, वहिरखा अने कुंडलादिक सर्व जातनां आभरण पहेरावे, पुष्पादिके करीने कल्पवृक्ष समान करे पछी नंदीवर्द्धनना कहेवाथी अनेक सेवक पुरुष पञ्चाशधनुष लांबी,पच्चीश धनुष पोहोली अनें छत्रीश धनुष ऊंची मणिकनक रचित एवी एक चंद्रप्रभानामे पालखी बनावे तेमज देवता पण एवीज एक पालखी बनावे ते पालखी दिव्यानुभावे नंदीवर्द्धनकृत पालखीमां प्रवेश करे पछी ते पालखी प्रभुना मुख आगल मूके प्रभुते पालखीमां पूर्व सन्मुख सिंहासनें आवीने बेसे अने भगवाननी जमणी बाजु कुलमा वडेरी कुलमहत्तरिका हंसलक्षण स्त्री साडीलेइने बेसे तथा डाबी बाजु भगवाननी धात्र्यमाता आवी दीक्षानां उपकरण लइने बेसे तथा भगवान

नी पछवाडे शोळ शणगार पहेरीनें एक घणीज स्वरूपवान जली स्त्री छत्रधरीने बेसे तथा इशानकोणे एक स्त्री जलें पूरण कलश हाथमां लइ उनीरहे अग्नि कोणे एक स्त्री मणिमय विचित्र वीजणो करती उनीरहे,ए सर्व स्त्रीयो शणगार करेली युवान अवस्था वाली जाणवी तेवार पछी नंदीवर्द्धन राजानी आज्ञाथी एक हजार सेवक पुरुषो जेटलामां ते शिबिकाने उपाडे एटलामां ते वखतमां शक्रेंद्र ते पालखीनी जमणी बाजुनी आगली उपरली तरफनी बाहा उपाडे,तथा इशानेंद्र मावी बाजुनी आगली उपरली बाहा उपाडे तथा चमरेंद्र जमणी बाजुनी पाछली तरफनी उपरली बाहा उपाडे तथा बलिंद्र मावी बाजुनी पाछली तरफनी उपरली बाहा उपाडे अने बीजा जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक देवोना जे ६६ छे ते जिहां जेसे तिहांथी उपाडे, केटलाएक देवडउन्नी वजावे, केटलाएक पंचवर्ण फूलनो वर्षात करे पछी शक्रेंद्र अने इशानेंद्र वाहने छोडीने चामर ढोले तेवारे शिबिकानें बीजा इंद्र उपाडे एम शिबिकाने प्रथमतो मनुष्य उपाडे पछी सुरेंद्र, असुरेंद्र, नागेंद्र उपाडे बीजा सर्वदेवो हर्ष पाम्या थका केटलाएक आकाशे रह्या थका नृत्यादिक करे आ ठेकाणे जेम वनखंड फूलें करी शोभे, जेम पद्मसरोवरमां शरदकालें कमल शोभे, तेम देवता आकाशें रह्या थका शोभे छे तथा जेम अलसीनुं वन, कणेरनुं वन, चपानुंवन, फूलेकरी शोभे तेम क्षत्रिय कुंड नगरथी मांमीने देवताना जवन सुधी देवदेवीउंये करी आकाश संकीर्ण थयुंथकु शोभे छे प्रधान पटह भेरी जल्लरी डउन्नी इत्यादिक कडोगमे वाजित्र आकाशें तथा धरतीयें वाजी रह्यां छे, घरना व्यापारधंधा मूकीने मनुष्यना वृंद जोवा मल्या छे, हवे पालखी चालता देवदेवी तथा नर नारी पोतपोतानी खुशी प्रमाणे मनमा आवे तेवाप्रकारनां हर्षनां वाजां बजावे छे, गाय छे, नाचे

ते,फूल फल मोतीप्रमुखने वरसावे छे ॥ हवे वरघोडामां भगवाननी आगल अनुक्रमे सहुथी पहेलातो आठमंगल चाले,पछी पूरण कलश भृंगार चाले,पछी महोटी वैजयंति ध्वजा चाले,पछी छत्रधरचाले, पछी मणीपीठ सिंहासन चाले,पछी शणगारेला पण अस्वार विनाना एवा एकसोने आठ हाथी चाले, पछी एकसोने आठ घोडा चाले, पछी एकसोनें आठ शस्त्रे भरेला रथ चाले, पछी एकसोने आठ पुरुष चाले, पछी घोडा, हाथी, रथ अने पाला ए चार प्रकारनी सेना चाले, पछी एक हजार योजन ऊंचो अने न्हानी न्हानी एक हजार ध्वजायें मंडित एवो महेंद्रध्वज चाले, पछी कुंतग्रहा, बाणग्रहा, तीरग्रहा, गोफणग्रहा, हास्यकारिका, कर्म कारिका, वशकारिका, ज्ञानकारिका, विनोदकारिका, खड्गधर, धनुर्धर, एवा पुरुषो चाले, पछी पा टीया धरवावाला पुरुष चाले, पछी घणा चारण भीखारी मागता थका चाले, पछी घणा उग्र भोगकुलादिकना क्षत्रिय, मांडविक, कौटुंबिक, शेठ, सेनापति, सार्थवाह, देव, देवी प्रजालोक चाले, भगवाननी पछवाडे घणी सेनायें परवर्या थको, छत्र चामर धरावतो थको, घणा आड बर सहित नंदीवर्द्धनराजा चाले, बीजा पण घणा लोक चाले, ते वखत अनेक प्रकारनां वाजां वाजे तेनो शब्द सांभलीने नगरनी स्त्रीयो पोतपोतानुं काम मूकीनें त्यां आवे ते केवी थकी आवे तोके? त्रणवातो स्त्रीयोने वल्लभ छे एक झगडो, बीजुं काजल, त्रीजो सिंदूर वली त्रण वातो बीजी अत्यंत वल्लभ छे एक दूध, बीजो जमाइ, अने त्रीजुं वाजु यतः ॥ तिन्निवि तिया वल्लहा, कलिकज्जल सिंदूर ॥ एपुण अतिहि वल्लहा, दूध जमाइ तूर ॥ १ ॥ ॥ माटे ते स्त्रीयो वाजानो शब्द सांभलीने उतावलथी आवीयो तेथी कोइएक स्त्रीतो काजल आंखमां आजती हती ते आंखने बदले गालोमां लगावी दीधुं अने गालोमां कस्तुरी लगा


चित्र ३४

उवी ते आंसोमां आजी दीधी, केटलिएक स्त्रीयो पगोमा फांफर पदेरवां नूलीगइ तेने बदले गलामां फणेणाट करतां फांफर पदेरी लीधां, केटलिएक स्त्रीयोये गलामां पेदेरवानां घरेणा ते पगमां पदेरी लीधां, केटलीएक स्त्रीयोये कटीमेखला गलामां पदेरी लीधी अने गलानो दार ते कटीमेखलाने स्थानके केडमां बांधी दीधो, केटलिक स्त्रीयोये चंदन घसीने पगे चोपड्यु अने अलतो मस्तकें चोपडी लीधो, केटलिएक स्त्रीयो अर्धुस्नान कर्युं न कर्यु एवी थकी दोडती आवी, कोइकतो घाघरा उंदीनें चालती आवी तेथी नीचेना जागमां नागीज दीसवा लागी, कोइक बीजी पारका पुरुषनी स्त्रीयोनां ठोकरा ते नूलथी पोताना काखमां तेडीने दोडी आवी, केटलिएक तो पोताना रडतां बालकने पडतां मूकी चाली आवी, केटलिएकें पदेरवानुं वस्त्र ताणी बांध्युं नदी तेथी वायराने योगें ते वस्त्र उडीगयुं तेना योगें नववधू बालकुमारी सरखी दीसवा लागी, कोइएक स्त्रीये एक कानमां आनूषण पदेर्यु अने बीजा कानमां पदेरतां नूलीगइ, कोइएक स्त्री जमी तो रदी पण चलु करवुं रदीगयुं, कोइक स्त्रीये एकज पगधोयो बीजो धोवो रदीगयो, कोइक कांचली पदेरता वीसरीगइ एवी उतावलथी जोवा नीकली केटलिएक चावल उगाले ठे, केटलिएक नाचे ठे, एवा आडंबरथी जगवानना दिक्षा मदोत्सव थयो ते कया दिवसे थयो ते दिवस कदे ठे तेकालने विषे ते समयने विषे श्रमण जगवंत श्रीमदावीरस्वामी ते देमतरुतु एटले शीयालानी रुतुनो पदेलो मदीनो पदेलु पखवाडीयु, मागशिरवदि दशमीने दिवसें दिवसनी पाठली ठाया एटले पोरिसी दिन रदे एक पदोर दिवस रदे तेवारे तथा सुव्रतनामा दिवसनुं नाम ते दिवसने विषे, विजयमुहूर्त्त आवे थके, चंद्रप्रजा नामा पालखीमां बेठा थका, जेनी आगल पाठल देवता अने

मनुष्य चाली रह्या ढे, शखना वजाववा वाला, सोनानां चक्रना धरवावाला, हलना धरवा वाला तथा मगल शब्द बोलवावाला एवा भिक्षु प्रमुख चारण प्रमुख भाट प्रमुख तथा घंटाने वजाववा वाला तेमनो समुदाय ते सर्व आशीष आपे ढे ॥११४॥ के हे समृद्धिवंत ! तमारो जय जय होवो, हे कल्याणवंत ! तमोने भद्र थाउ, तमारां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र अतिचार रहित होवो, एमां भग मथाजो, नही जीतवामां आवे एटले जीतवाने घणी कठण एवीजे इंद्रियो तेने तमे जीतो, साधुधर्म पालो, सर्वविघ्न रहित होवो, उग्रविहार करवामां तमारुं नाम थाउ, रागद्वेषरूप बे मल्लोने तमो हणो, तथा तपरूप धैर्य अने संतोष रूप लंगोटाने कसीने आठकर्मरूप शत्रुउंनु मर्दन करो, उत्तम शुक्लध्यानें करीने अप्रमत्तपणे रह्या थका विचरो, हे वीर ! तमे आराधना पताका ग्रहण करो, त्रणलोकरूप रंग एटले मल्लनो अखाडो तेमां अंधकार रहित एवुं अनुपम केवलज्ञान, ते तमे पामो मोक्षरूप परमपद पामवाने के वली भगवाने देखाड्यो जे सूधो मार्ग ते मार्गे तमे जाउ केवीरीतें जाउ तोके ? बावीश परिसह रूप फोजने हणीने जाउ, हे क्षत्रियोमां वृषभ समान, तमारो जय थाउ, घणादिवस, घणा पक्ष, घणामास घणावर्ष जय पामो वली बे पक्षनो एक मास, बेमासनी एकऋतु थाय, त्रण ऋतुयें एक अयन थाय अर्थात् ढ मासें एक अयन थाय एवा घणा अयन लगें, वली बे अयनें एक वर्ष थाय ढे, पांच वर्षनो एक संवत्सर थाय ढे, एवा घणा संवत्सर पर्यंत परीसह तथा उपसर्गोथी भय नही राखो, वीजली सिंहादिकोना भीहामणा जय भैरवोने क्षमायें करीने सहन करो, तमोने धर्ममां कोइ विघ्न म करो, एवुं कहीने जय जय शब्द करे ॥११५॥ पढी भगवान श्रीमहावीर स्वामी विहार लेवा नीकल्या ते वखत हजारो नेत्रोथी देखता थका

अर्थात् हजारो लोको देखी रह्या छे, देखीदेखीनें हर्ष पामे छे, हजारो लोको वचने करी स्तवना करी रह्यां छे, हजारो लोकोना मनमा एवुं छे के घणा कालपर्यंत ए जीवता रहो, हजारो लोको विस्तारी विस्तारीने मनमां एवा मनोरथ करी रह्या छे के ए तीर्थंकर थाशे तेवारे एनी सेवा करीशुं, एमना कांति रूप गुण देखीने लोको एवु चिंतवन करे छे के ए अमारो स्वामी थाओ, हजारो लोको पोताना जमणाहाथनी आंगुलीथी देखाडी रह्या छे के ए भगवान शिगज्या छे एम कहेते थके, हजारो लोकोना एटले हजारो पुरुष हजारो स्त्रीयो अंजली सहित हाथ जोडीजोडीने प्रणाम करे छे ते जमणा हाथें लेते थके, हजारो गमे घरोनी श्रेणी प्रत्ये उल्लंघते थके, एवा प्रकारें वीणा, हस्तताल, वाजित्र, गीत, शब्द ते मीठा मनोहर जयजय शब्दनी साथे मलेला एवा लोकोना स्वरे करीने सावधान होते थके, सर्व ऋधिसहित, सर्व आमधर सहित, सर्वबले सहित, सर्वसेना सहित, सर्ववाहन सहित, सर्वसमुदाय सहित, सर्वआदर सहित, सर्वसंपदा सहित, सर्वउत्सव सहित, देखवाने मनमा आवे एवा सर्वमलाप सहित, सर्वलक्ष्मी सहित, सर्वसंभ्रम सहित, सर्वनगरलोक सहित, सर्वनाटक सहित, सर्वतालेचर सहित, सर्वअंतेउर सहित, सर्वपुष्प गंधमाला घरेणायें सुशोभित, सर्व वाजाना घोष सहित, महोटी ऋद्धि, द्युति, बल, वाहन, समुदाय सहित, महोटा जला वाजां समकाल वाजता थका, शंख ढोल, पटह, झालर, खरमुखी, हुडुक, देवदुंदुभी प्रमुख वाजाना प्रतिशब्द सहित, क्षत्रियकुंडपुरनगरनी वचमा थइने निकले, नीकली करीने जिहां ज्ञातखंडवन नामें उद्यान छे तिहां अशोकवृक्ष घणुज रुडुं छे, तिहां आवे ॥ ११६ ॥ ॥ आवीनें अशोकवरवृक्षनी नीचे पालखी राखे राखीने पालखीथी उतरे उतरीनें पोतानां हाथथीज घरेणां माला प्रमुख अलंकारादि

उतारे, उतारीने ते घरेणा जे तेमनां कुलमा वडेरी हंसलक्षण स्त्रीते पोताना वस्त्रमां लीये, पछी पोताना हाथथीज पंचमुष्टि लोच करे ते केश इन्द्रमहाराज पोते लइजइने खीरसमुद्रमा मूके लोचकरीने चउविहारी छठ एटले बेउानी तपस्या करे, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रनी साथें चन्द्रमानु योग आवे थके एकज शक्रेंद्रे आपेला देवदुष्य वस्त्र लइने, एकला रागद्वेष रहित तथा साधुना सथवारा रहित थका द्रव्यथी अने भावथी मुण्डित थइने, गृहस्थपणानो त्याग करीने अणगारपणानो अंगीकार कर्यो ॥ ११७ ॥ ॥ हवे जे वखतें भगवान सामायिकनो उच्चार करे ते वखतें शक्रेंद्र सर्व कोलाहल वाजित्र प्रमुख बंध करे पछी भगवान् नमोसिद्धाण एवु कहीनें करेमिसामाइयं इत्यादि यावत्तस्सपडिक्कमामि इत्यादिक कहे इहां बीजो गुरु करवानो अभाव छे पोते स्वयं चारित्र लीये छे माटे भंते ए पद कहे नही तीर्थंकरनो एवोज कल्प छे, ते माटे भंते पद न कहे, इहां भगवानने चोथुं मनःपर्यवज्ञान उपन्युं हवे सर्व इन्द्र तथा देवो ते भगवानने नमस्कार करीनें नंदीश्वरद्वीपे जइ अठाइ महोत्सव करीनें पोत पोतानें स्थानके गया, अने भगवाने पण पोताना भाइ नंदीवर्द्धन प्रमुखने पूछीनें विहार कर्यो हवे स्वजनादिको पण ज्यांसुधी भगवान नजरे देखाता हता त्यांसुधी त्यांज उभारह्या पछी भगवानना गुण याद करता झूरता झूरता पोताने घेर आव्या ॥ इति कल्पव्याख्याने पंचमो वखाण समाप्त ॥ ॥ हवे भगवाने दीक्षा लइने पछी विहार कर्यो ते वखतमां बे घडी दिवस शेष बाकी रह्यो हतो तेवारे भगवान कुमारगामनी बाहेर काउस्सग्ग रह्या ते वखत एक हाली आव्यो तेणे पोताना बलदो भगवानने भलाव्या अने पोते घेर जइ जमीने केट लिएक वार रही पाछो तिहां आव्यो एटलामां आखो दिवस खेडवाथी थाकी गयेला बल


चित्र ३५
इन्द्र
भगवान्
नंदीवर्धन
राजा
रा


चित्र ३६
गोवालिया
भगवान्
इन्द्र
सिद्धार्थव्यंतर
बलदो

वीया तो वनमा चरता चरता क्यांय चाल्या गया पठी हालीये इहां तिहां घणा जोया पण बलद मल्या नही तेवारे जगवानने पूठवा लाग्यो के बलद क्यां गया ते वखत जगवान मौन रह्या थका काइपण बोल्या नही पठी ते हालीयें वनमां जइ आखीरात्रि बलदोने शोध्या परंतु तेने बलद जड्या नही अने बलदतो वनमा चरीचरीने पाठली रात्रें पोतानी मेले त्यांज आवी बेशी रह्या हालीपण पाठो आवीने जूएठे तो बलद त्यांज बेठा ठे ते देखीनें क्रोध पाम्यो थको बोलवा लाग्यो के हे पापी ! हे पाखंमी ! आ बलद तेंज सताडी मूक्या हता ए बधु ताहारुज काम करेलुं देखाय ठे मने आखी रात्रि निरर्थक जमवुं पड्युं एम कही हाथमां रासडी लइने जगवानने मारवा दोड्यो ते वखतमां इन्द्रमहाराजें पण अवधिज्ञाने करी जगवानने थतुं उपसर्ग जाएयुं अने पोतें तिहां आवीने हालीने कहेवा लाग्यो के अरे इष्ट ! तुं जाणतो नथी के आ श्रीवर्द्धमान स्वामी नदीवर्द्धनराजाना जाइ ठे, सिद्धार्थराजाना पुत्र ठे एणे दीक्षा लीधेली ठे एमकहीने हालीने हलकारी काहाड्यो पठी इन्द्रमहाराजे जगवानने कह्युं के हे जगवान ! आपने बारवर्ष पर्यंत ठद्मस्थपणु ठे तेमां उपसर्ग घणा थवाना ठे माटे आप आज्ञा करो तो हु आपनी पासें हरहमेश रहु अने आपनी सेवा करु तथा उपसर्ग निवर्त्तन करु एवो महारा मननो मनोरथ ठे तेवारें जगवान बोल्या हे इन्द्र ! आ वात थई नथी थातीनथी अने थाशे पण नही जे श्रीअरिहंत जगवत इन्द्रना सहायथी केवलज्ञान उपजावीने मोक्ष जाय ? अरिहंततो पोतानाज उठाणकर्म बलवीर्यथीज केवलज्ञान पामीनें मोक्ष जाय एवु सांजल्यु तोपण इन्द्रे मरणांतिक उपसर्ग टालवा सारु जगवाननी माता त्रिशलादेवीनां बहेनना पुत्र सिद्धार्थनामे व्यंतर तेने आज्ञा आपीने जगवान पासे मूकी गयो आंही सिद्धार्थवि

तरने मासीनो बीकरो कह्यो पण कोइक स्थानके एने काको करी पण लखेलो छे पछी इन्द्रमहाराज देवलोके गयो अने हालीपण पोताने घेर गयो ॥ इतिहालीकृत उपसर्ग॥ हवे प्रभातमां भगवान तिहांथी विहार करीनें कोल्लाग सन्निवेशें गया तिहां बहुलनामे ब्राह्मणने घरे कांस्य पात्रें खीरलइने प्रभुयें परमान्ने पारणुं कीधुं पात्र धर्म बतावबा सारु गृहस्थनां कांस्य पात्रमां खीर लीधी तिहां पांचदिव्य प्रगट थाय ए भगवतनो अतिशय छे ते पांचदिव्य कहे छे एकतो आकाशमां ध्वजा विस्तार देवता करे, बीजो सुगंधि जलदेवता वर्षावे, त्रीजो फूल वर्षावे, ४ चोथो देवदुन्दुभी बजावे, पांचमो अहोदानमहोदान एवो ध्वनि करे, प्रकारांतरें क्यांएकतो साडीबार क्रोड सोनैया वरसावे एवा पाठ पांचमां दिव्य विषे लखेला छे इहांपण कोइक आचार्यना मतें पाचमुं वखाण पुरुथयुं कहेवाय छे ॥ ॥ हवे प्रभुयें जेवारें दीक्षा लीधी, तेवारें इन्द्रादिकोयें सुगंधितद्रावना चंदनादिकें करी भगवतने शरीरें लेप कर्यो छे, तेनो गंध, चार मास जाजेरा पर्यंत न जाय, ते वासनायें करी हजारो गमे भ्रमरादिक मदोन्मत्त थया थका भगवतना अंगोपांगने वेधे छे, महोटो उपद्रव करे छे कोनी पेरें तो के ? जेम कामी पुरुष कामांध थया थका स्त्रीने आलिंगन देता तेना गलस्थल होठादिकने विषे अनुकूल पणे चुंबन करे, मुख मारे तेम भमरापण वासनायें अधलुब्ध थया थका, भगवतना शरीरना अवयवें डंकमारे छे ए दृष्टांत कह्यु पण अहींआं एटलो फेर छे, जे स्त्री तो कामी पुरुषथी हारी जाय, परंतु भगवान् तो भमरानो एटलो थयो उपद्रव छतां पण वज्रऋषभनाराच संघयणना प्रतापथी मेरुनी पेरें अडग रहे छे अथवा बीजे अर्थे अजाण्या कामी पुरुष, गंध उपर मूर्छा पाम्या थका गंध लेवाने अर्थे, भगवान्नां शरीर सार्थे पोतानुं शरीर घसवा लाग्या तथा कामी स्त्रीयो आवीने आलिं

गन्त करवा लागी एम जगवान पासेंथी सुगंध मागवा लागा एवो उपसर्ग चार महीना जाजेरा रह्यो तोपण जगवान मग्या नहीं मेरुनी पेरे अकंप रह्या॥ ॥ हवे जगवान तिहांथी विचरता मोराक सन्निवेशने विषे सिद्धार्थराजा प्रभुना पिता तेनो मित्र कुलपति, दुइज्जंत नामा तापसने आश्रमें आव्या, तापस पण जगवानने देखी सामो मलवा आव्यो, तेने जग वत पण हूकडा पुर्वपरिचयान्यास थकी हाथ पसारीने मल्या, पछी तेना आग्रहथकी नीराग चित्तथका एक रात्रि तिहां रह्या, फरी प्रजातें विहार करवा लागा, तेवारें ते तापस, पहोंचा ववा सार्थे चाल्यो अने आठ मास अन्यत्र विहार करीने चोमासुं पोताना आश्रमें रहेवानी प्रभुने विनति करी, घणो आग्रह कस्यो तेवारें प्रभुयें देशकाल विचारीने कह्युं के एमज थाउ एवु कही पछी चार ज्ञानें सहित एवा प्रभु ते पृथिवीने विषे विहार करतां जेवारें चोमासुं आव्युं तेवारे ते तापसनी फुपडीमां रहेवाने आव्या कुलपतियें तृणपलाझ फुपडुं प्रभुने रहेवा सारु आप्युं जगवान तेमां रह्या पण दैवयोगें वर्षाद न थयो तेवारें गामनी गायो प्रमुख ढोर जूखें मरतां थका फूपडीना तृणखला खावा आवे ते जोइ बीजा तापसो तो पशुना समूहने हांकी काढे पण प्रभुतो मौन पणे रहे कोइ जानवरने तृणखलां खातां दूर करे नहीं, एम करतां सर्व तृण पशुउ खाइ गयां तेवारें फुपडुं उघाडुं देखी कुलपति बोल्यो के हे देवाणुप्रिया हे प्रभु! पंखीउ पण पोताना माला साचवे छे अने तमे तो राजपुत्र थइ पोतानो आश्रम केम सां चवी शकता नथी? एवी रीतें कुलपतिने अप्रीति उपनी देखी जगवाने निर्धार्युं जे महारे अहीं आं रहेवु नहीं, पछी आशाढी पूर्नेमथकी पंदर दिवसें एटले श्रावण वदि अमावास्यायें चो मासाना पन्नर दिवस जातां प्रभुयें तिहांथी विहार कस्यो तेथी उपरांत जगवतने न गणे

चोमासु एवु कहेवाए तिहां जगवतें पांच अजिमह लीधा, ते कहे छे एक अप्रीति उपजे तिहां न रहेवुं बीजु ज्यांसुधी ग्मस्थपणु छे त्यांसुधी निरंतर काउस्सग्गमाज रहेवुं, त्रीजु गृहस्थनो विनय न करवो, चोथुं यथा सजवें मौन पणे रहेवुं, कायायें करीउंचु ज्जाउज रहेवु पण सुवु नही पांचमु सर्वदा हाथमां जोजन करवुं, एवा अजिमह सहित विचरता थका शूल पाणि यक्षने वेहरे अस्थिग्रामे प्रथम चोमासुं रहेवा पधास्था, त्यां अत्यंत उपसर्ग सहन क रीने शूलपाणि यक्षने प्रति बोध्यो, तेनी कथा कहे छे धनदेव नामें सार्थवाह पांचशें गाडां मालनां जरी, व्यापार करवा कोइ गामांतरे जतो हतो, मार्गमां वेगवती नामे बहुवालुका नदी वर्द्धमान गामपासे आवी, तिहां उनालाना दिवस हता तेथी कोइ बलद ते रेती जरेली नदी मांथी गाडुं ताणीने चाली शके नहीं पण ते बलदोमां एक बलद घणो जोरावर हतो तेणे ते पांचशें गाडां नदीथकी उतारी पहेले पार कस्यां, परंतु पोतें त्रुटी पड्यो, तेथी चाली न शक्यो ते वारें सार्थवाहें चारा पाणीने अर्थें वर्द्धमान गामना अधिकारि शेठ, पटेल, गामोद, पटवारी, प्रमुख पंचने ते धोरी जलाव्यो तेने घृत गोल तृण जलादिक सारु घणु धन आप्युं, वली ते बलदनी चा करी करवानी घणी जलामण आपीने शेठ तिहांथी चाल्यो गयो पछवाडेथी ते गामना लोकोयें ते बलदनी सार सजाल कांइ पण कीधी नही, शेठनु धन आपेलुं सर्व वाटीने खाइ गया पछी ते बलद जूख तृषायें पीड्यो थको अकाम निर्जरायें मरण पामीने व्यंतर देवोमा शूलपाणीनामे यक्ष थयो, तेणें अवधिज्ञानें पाछलु वृत्तांत जोयुं, पछी गामनां लोको उपर रुष्टोथको मरकी विकूर्वी तेथी घणां माणस अनें ढोर मरवा लाग्यां तिहां कोइ माणसने बालवावालो पण मले नही जे कोइ मरे तेने कोलो गामनी बाहेर नाखी जाय तेथी त्यां हाडकांना ढगलां थइ पड्यां तिहां आवजाव


चित्र ३७
शूलपाणी यक्ष
सिद्धार्थ व्यंतर
भगवान्
पूजक

करनारा लोकोयें तेनुं अस्थिगाम एवुं नाम पाडी दीधुं पठी घणा माणसोने मरता देखीने गामनां लोकें मली तेने आराध्यो तेवारें यक्ष प्रगट थइ आकाश वाणीयें करी बोलवा लाग्यो के हु बलदनो जीव छुं, तमें महारु इव्यखाइने कोइपण चाकरी करी नही तेथी तमे मने कुमरणें माखो ठे माटे हुं कोप्यो बु तो तमें हवे महारा नामनुं हाडका उपर देहेरुं करावो, तेमां वृषभना रूपें शूलशस्त्र हाथमां आपीने महारी मूर्त्ति थापो, तेनी पूजा करो तो रोग पण मटशे, अने जीवता पण रहेशो नहींकां सर्व मरण पामशो एवी वात सांजलीने लोकोयें म रण जयथी तेनी प्रतिमां करी देहेरे थापी पूजा करी, तेथी मरकी उपशम थइ हवे जगवान् ते शूलपाणी नामा यक्षने प्रति बोधवाने माटे तेने देहेरे आव्या, तेवारें ते यक्ष महादुष्ट ठे, कोइने पोताना देहेरे रात्रें वास करवा आपे नहीं, तेथी ते यक्षना देरानो पूजारो इन्द्रशर्मा नामें विप्र हतो, तेणें जगवतने रहेवानी मनाइ करी, तेम बीजा लोकोयें पण वास्था, तो पण प्रजु मौनपणे तिहां रात्रें काउस्सग रह्या, ते देखीने यक्ष रूठो अने संध्या समयथी उपसर्ग करवा लागो, तिहां प्रथम तो मरावदा सारुं अट्टहास्य कर्युं, पठी हस्तीनु रूप करी उठाल्युं, पिशा चनां रूप करी ठरी कहाडी बीवराव्यु, तेमज सर्प थइने मंक माखो इत्यादि घणा उपसर्ग क रवा मांमया पण जगवत लगार मात्र क्षोज न पाम्या तेवारें वली मस्तक, कान, नासिका, आंख, दांत, होठ, पूठ, नख, ए आठ स्थानकें विविध वेदना उपजावी तथापि जगवतने अ क्षोज जाणी, यक्ष प्रतिबोध पाम्यो अने प्रजुनी जक्ति करवा लाग्यो, एटलामां सिद्धार्थ व्यंतर आव्यो, तेणें कर्युं के अरे शूलपाणि यक्ष ! आ तें शुं कर्युं ? तुं नथी जाणतो के ए सिद्धार्थ राजानो पुत्र ठे, महोटी समतानो जंमार ठे, जो इन्द्रमहाराज जाणशे, तो तने बाहिर काढी

मूकशे, ते सांजली जगवाननी शांतमुझा देखी वली पण यद्दें पोतानो अपराध खमाव्यो अने प्रजु आगल गीत गान करवा लागो तिहां ते यक्ष समकेत पाम्यो इति ॥ हवे जगवत पण रात्रिना चार प्रहर कदर्थना पाम्या तेना श्रमें करी काउस्सग्गमांज पाछली रात्रें वे घडी निशा आवी गई, तिहां निशामां दश स्वप्न प्रजुयें दीगं, ते कहे छे एक तालपिशाच हण्यो, बीजु उजलो कोकिला पक्षी अने त्रीजु पंचवर्ण विचित्र कोकिलानुं जोडुं, सेवा करतुं दीनुं, चोथी फूलनी माला वे दीठी, पांचमुं गायनो वर्ग दीगे, बहुं पद्मसरोवर दीवुं, सातमुं समुद्र भुजायें तस्यो दीगे, आठमुं सूर्य उगतो दीगे, नवमुं आंत्रडे वींट्यो मानुष्योत्तर पर्वत दीगे, दशमुं पोते मेरुपर्वतें चढ्या एवुं दीगे, ए दश स्वप्न देखीने जगवत प्रजातें जाग्या, ते वखतें लोक पण एवुं जाणताहता जे ए साधु रात्रें मरीजशे तेथी प्रजातना जोवा आव्या तिहां जगवाननो देव महिमा देखीने लोकोयें जगवतने पूंज्या, घणां हर्ष पाम्यां, यक्ष पण नाटकादिक पूजा सेवा करतो हवो, तेथी लोक चिंतववा लागा जे साधुने उपसर्ग करी हवे गीत गान करे छे, पुष्पादिकें करी पूजे छे त्यां लोके पण स्वामीनो घणो महिमा कस्यो, एवा समयने विषे श्रीपार्श्वनाथनो श्रावक उत्पलनामा निमित्तियो ते पण तिहां आव्यो प्रजुने वांद्या, अने कहेवा लागो जे हे स्वामि ! तुमें पाछली रात्रें स्वप्न दीगं तेनुं फल कहु छु ॥ हे प्रजु ! तमें जे ताल पिशाच हण्यो, तेथी तमें तरत मोहनीय कर्मनें हणशो वली श्वेत कोकिलापंखी दीगे, तेथी अक्षोज शुकलध्यान ध्यावशो पांचवर्णा विचित्र कोकिल पंखीनुं जोडलुं दीठुं, तेथी द्वादशांगी प्ररूपशो तथा गायनो वर्ग दीगे तेथी अनुपम चतुर्विध संघनी थापना करशो वली तमें देवतायें सेवित पद्मसरोवर दीवुं तेथी चार निकायना देवता तमारी सेवा करशे,वली मेरुपर्वतनी चूलिका उपर

तमे चढ्या एवु दीठु, तेथी तमे देवायें रचित सिंहासने बेसी, धर्मोपदेश देशो, धर्मनी प्ररूपणा करशो वली सूर्यंनु मण्डल दीठुं, तेथी केवलज्ञान पामशो,तथा मानुष्योत्तर पर्वत आंत्रडे वींट्यो दीठो, तेथी जगत्मा जशकीर्त्तिनु मण्डाण पामशो तथा प्रतापवत देवनिकाये करी सेवनीय थाशो पोतानी भुजायें समुद्र तर्यो दीठो तेथी तमे ससार रूप समुद्रने तरशो, हे जगवन्! तमें फूलनी मालानुं युगल दीठु तेनो अर्थ हु नथी जाणतो माटे तमेज उपकार करीने कहो तेवारें जगवत मोन छे माटे छद्मस्थावस्थाने विषे बोल्या नहीं,तेथी सिद्धार्थ व्यंतरो जगवानना मुखमां प्रवेश करीने कहेवा लागो के फूलनी बे माला दीठी माटे श्रावकनो अने यतिनो ए बे प्रकारना धर्मनी प्ररूपणा हु करीश एवीरीतें फल सांजलीने सर्वलोक जगवानने वदन करी पोतपोताने स्थानके गया हवे जगवाने निरविघ्न पणे पन्नरदिवस न्यून प्रथम चोमासु तिहां पूर्ण करीने मेरुनी परे धैर्य धरता समता रूप रसमयथका चोमासीपारणुकरी तिहांथी विहार कर्यो ए प्रथम चोमासु ॥१॥ तिहांथी विहार करी मोराकसन्निवेशें उद्यानमांआवी काउस्सग्गें रह्या तिहा जगवाननो महिमाकरवा सारु सिद्धार्थ व्यतरो स्वामीना शरीरमां सक्रमीने लोक आगल जूत, जविष्य अने वर्त्तमान सबधि निमित्त जाखें छे तेथी त्यानां लोक जगवाननी सेवा करवा लागा हवें ते गाममां अहछदक नामा निमित्तियो रहे छे ते जगवाननी इर्ष्या करवा लाग्यो केमके लोक तेने कहेवा लागा के देवार्य सरखो तु निमित्त जाणतो नथी में काले खेत्रमा सर्प दीठो ते तेणे कही दीधो तथा हु जमीने गयो हतो ते कही दीधु तेवारें ते अहछंदक नामा निमित्तियो क्रोधकरी जगवाननु निमित्त जूठुं करवा सारु हाथमा तृण लइने प्रजुने पूछवा लागो के हे आर्य आ तृण छेदाशे, किंवा नहीं, ते सांजली सिद्धार्थें ना कही तेवारें

ते छेदवा लागो एटलामां इंद्रें अवधियें जोइने जगवतनो महिमा राखवाने ते निमित्तिआनी आंगली छेदी नाखी तेथी हणकुटणुं नहीं निमित्तिउ विलखो थयो पछी सिद्धार्थें लोक आगल कह्युं के ए निमित्तिउ चोर छे, कांइ जाणतो नथी एणें वीराघोष कर्मकरनो दश पलनो कांसानो पात्र चोरीने खजूरीनावृक्ष हेठे दाट्यो छे तथा इंद्रशर्मा ब्राह्मणनो बोकडो मारीने तेनुं मांस एणे खाधुं छे, तेनां अस्थि एना घरनी पछवाडे बोरडीनाझाड नीचें दाट्यां छे तथा त्रीजुं दूषण जे एमां छे ते हुं नहीं कहीश एनी स्त्रीज केहेशे एवुं सांजली लोकें सर्ववातसाची मानी एनी स्त्रीने जइ पूछ्युं, तेवारें ते स्त्री बोली के ए पापिष्ट, पोतानी जगिनीने जोगवे छे, एवी पोतानी निंदानी वातो प्रसिद्ध थयाथी अहंछक लज्जापाम्यो अने गाममां फिट फिट थयो थको प्रभुपासें आवी विनति करी के तमें त्रैलोक्य पूजनीक छो, हुं अहींआज सुखे उदर पूरणा करुं छुं ने जीवुं छुं जगवतें अप्रीति जाणी त्यांथी विहार कर्यो ॥ ॥ हवे जगवान श्रीमहावीर स्वामी एक वर्ष उपर एक महीना सुधीतो इंद्रे आपेला देवदूष्य वस्त्र सहित रह्या अने ते वार पछी वस्त्र रहित अचेलक थया हाथमां जोजन करे पण अतिशयना योगथी नागा देखाय नहीं हवे वस्त्र रहित शीरीतें थया ते कहे छे जगवाने जेवारें वरसीदान दीधुं तेवारें सिद्धार्थराजानो मित्र सोमदेव नामा ब्राह्मण जन्मथी दारिद्रीछे ते परदेश धनकमाववा गयो हतो पण क्यांयें धन पाम्यो नहीं तेवारे वली जगवाने दीक्षा लीधा पछी जेवो गयो तेवो ठाले हाथे पाछो पोतानें घेर फरी आव्यो पण एक कोडी मात्र कमाइ आव्यो नहीं दारिद्रीज रह्यो तेवारें तेनी स्त्रीयें तेने घणो निभ्रंछ्यो अने कहेवा लागी के अरे निर्जाग्य तुं किहां गयो हतो तुं जिहां गयो हतो तिहां आवोने आवो दारिद्री रह्यो जेम घडो जिहां जाय

तिहां पाणीजरे तथा कपासीयो जिहां जाय तिहां जोडाय तेम तुं पण जिहां गयो तिहां वरिड़ी रह्यो पण दारिद्र्य ताहारो केडो मूकतुं नथी जेम कोइ दरिड़ी पुरुष धन कमावानें अर्थें परदेशे जवा तैयार थयो तेवारें ते पुरुषें दारिद्र्यने कह्युं के ॥ रे दालिद्दनियस्कणा, वत्ता इक्क सुणिय, हम देसांतर चल्लिया, तु थर घरें रहिज्ज ॥१॥ एटले हे दारिद्र्य हे विचक्षण, तुं एक महारी वात कहुं ते सांजल जे हवे हुं देशांतर जाउं छुं अने तुं घरमांज थिरथइ रहेजे एवां तेना वचन सांजली दारिद्र्य वोल्युं ॥ पडिवन्नो गिरुआ तणो, अविहड जाण सुजाण ॥ पाठा तरें ॥ पालिज्जइ सुविहाण ॥ तमे देसांतर चल्लिया, तो अमे आगेवान ॥ १ ॥ अर्थ – हे जाइ सांजलो हुं तो महोटानो विनय मूकुं नही केमके जे उत्तमपुरुष अंगीकार करे ते अविचल जाव जीव अंगीकार करे तेमाटे हे जाइ' जो तमे देशांतर जाशो तो हुं पण आगेवान थइने तमारी साथें आगलनुं आगल चालुं छुं तेम हे निर्जाग्य' ताहारी पठवाडे पण एमज दारिद्र्य रहे छे तुं हमणाघरमां आव्यो छे पण घरमा तो काइ पण नथी, खावाने अन्न नथी, पीवाने पाणी नथी, भुखे मरती नेठी छु, क्यांथी ताहारा वास्ते खावा सारुं लइ आवु, घरमां तो शाकमां नाख वाने मिरची अने मीठुं पण नथी, मात्र दारिद्र्य लहेरो ले छे ॥ यत ॥ जिणघर नेंस न रीके पाडो, जिणघर वलद न दीसे गाडो ॥ जिणघर नारि न चूडी खलके, तिणघर दारिद्र ले हेरि लहके ॥ १ ॥ ॥ अर्थ – जेना घरमां नेंस सहित पाडो रीकतो न होय, वली जेना घरमां वलद अने गाडु दीसतुं न होय, वली जेनां घरमां स्त्रीना हाथमा चूडी खलकती न होय, तेना घरमां दारिद्र लहेरें लहकतुं जाणवु ते माटे तु घरमां आवीश नही आवीश तो भूखे मरीश अरे दारिड़ी हजी हमणा पण तु जगवान पासें जइश तो कांइक पण मलशे

एवो स्त्रीना वचन सांजली ते ब्राह्मण, जगवान पासें आव्यो अने बे हाथजोडी हीनस्थितियें थको दीन वचने करी श्रीवीरजगवाननें पगे लागीने विनति करतो हवो के हे कृपानाथ, हे परउःखनंजक! हे परमार्थना करनार! हे महाराजसिद्धार्थना पुत्र! हे दारिद्र्य रूपवेलडीनां छेदक! तुं महारी मूलथकी विनति सांजलीने महारो निस्तार कर, आ महारो दारिद्ररूप बांधव, महारो सहायी, महारी सार्थे जन्म्यो, महारी सार्थे वध्यो, वली परणवानें समयें पण महारा पहेलां महारी स्त्रीनें एणे परणी, हुं घणु तमारा आगल कहुं ए दारिद्र्य महारा शरीरनी छा यानी पेरे तथा पोतानी बांधेली कर्मप्रकृतिनी पेरें एक क्षण मात्र पण महारो केड मूकतुं नथी में धन उपार्जन करवा निमित्तें परदेश चालवानें समयें एने घणो घणो वर्ज्यो तो पण ए महारी सार्थेज चाल्यो, में गंगामां स्नान कर्युं तो पण एणे महारी सार्थेज स्नान कर्युं, में यमुना, नर्मदा सवधि तीर्थकर्यां तो एणे पण महारी सार्थेज तीर्थकर्यां, माटे एना प्रजावथी परदेशमां घरघरने विषे लोकोनी आगल जिक्षा मागतो वखत हुं तो सर्वने देखुं परंतु दारिद्र्य बांधवना प्रतापथी हुं प्रत्यक्ष प्रगट छता पण मने कोइ पण देखे नहीं ॥ यदुक्तं ॥ दीसतिजोग सिद्धा, अंजनसिद्धा य केइ दीसति ॥ दारिद्दजोग सिद्धा, पासेविठिया न दीसति ॥ १ ॥ पुनरपि ॥ जोदारिद्र्यनमस्तुभ्यं, सिद्धोहंतवदर्शनात् ॥ अहंसर्वंप्रपश्यामि, नमांपश्यति कश्चन ॥ २ ॥ ए बे श्लोकोनो जावार्थ कहे छे जे योगसाधीने सिद्धथया तेपण नजरे देखाय छे, वली जे आंखोमां अंजन करी अदृश्य थाय एवा सिद्ध जे होय तेपण कोइएक प्रयोगथी प्रगट नजरे देखाय, परंतु दारिद्र्यरूप योगें करीने जे सिद्धथया ते पुरुष जो पासें उनारह्या होय तो पण देखाय नहीं ते माटे हे दारिद्र्य! तुजने नमस्कार थाउ जे हुं ताहारा दर्शनथी सिद्धपुरुष

थयो तेथी हुंतो सर्वने वेखुं छुं पण मनेंतो कोइ पण वेखतो नथी ॥ १ ॥ ए कारण माटे हे स्वामी! ते दारिद्र्य बांधवना प्रसादथी हु परदेशने विषे घणो नम्यो, घणो उद्यम कस्यो, घणा शेठ साहुकारोनी चाकरी करी पण, हुं नाग्य हीन तेथी एक फूटी कोडी मात्र पण धन पाम्यो नही जेवो घरथी गयो हतो तेवोज घेर पाछो आव्यो तेथी में हजी महारा घरमां प्रवेश न कस्यो तेनी पहेलांज तेणे माहारा घरमां प्रवेस कस्यो तेना प्रतापथी अनार्जणी एवी जे महारी स्त्री ते क्रोध करी मुसललेइने महारी सन्मुख मने मारवाने छोडी आवी तेवारे में जाण्युंजे मंगलिक करीने मुजने वधावे छे पण तेपोतो पासें आवीने एवां कठोर अने निष्ठुर वचन बोलवा मांड्यां अने कह्युंके हे निर्नाग्य शिरोमणी! अरे जन्मदरिद्री अरे निर्गुणनाथ! अरे ढोलण! हु तुजने धनविना साक्षात् दारिद्री रूपनें शुंकरु! तु परदेशें गयो थको पण कांइ लाव्यो नही महारे पण ताहारा दारिद्र्य रूप नाइनां सहायथी ॥ यत ॥ अन्ननास्त्युदकनास्ति, गृहे नास्ति सुगंधरो ॥ शाकमध्येलवणनास्ति, तन्नास्तियत्नुज्यतें ॥ १ ॥ नावार्थ – स्त्री कहे छे के ताहारा बांधवना सहायथी महाराघरमां अन्नपण खावाने नथी अने पाणीपण पीवाने नथी, जुवार पण नथी शाकमां नाखवानें मीठु पण नथी एवु कांइ पण घरमा नथी के जेथी तुजने आदरकरी घरमां वेसाडीने जमाडुं महाराघरमां तो एक दारिद्र्य लहके छे वली ब्राह्मणी कहे छे रे ढोला, धनेकरीने जगतमां मानीता थाय छे, पण धनविना जगतमां कोइ कोइने पूछतुं नथी, यदुक्त ॥ धनैर्दुष्कुलीना कुलीनान्नवति, धनैरेवपापात्पुन र्निस्तरंति ॥ धनिन्यो विशिष्टोन लोकेपिकश्चित् धन प्रार्जयध्वंधन प्रार्जयध्व ॥ १ ॥ नावार्थ – धनेकरीने हीणाकुलवालो पण उत्तम कुलवान कहेवाय, वली धनेकरीनें पापथकी निस्तार पामे, धन

वान होय तेज जगतमां महोटो कहेवाय, ते कारण माटे धनउपार्जन करवानो उद्यम पुरुपने श्रेष्ट छे वली धनविना जीवतो थको पण पुरुप मडदा समान छे ॥ यडुक्त ॥ धनमार्जय काकुस्थ, धनमूलमिद जगत् ॥ अंतरंनैवपश्यामि, निर्द्धनस्य मृतस्यच ॥ १ ॥ भावार्थ – जेवारें रामचंद्रजीने वनवास थयो तेवारें विचार्यु जे वसिष्ट ऋषिने नमस्कार करीने चालीयें तेवारे जिहां कदलीवनमां वसिष्ट ऋषि बेठा छे तिहा जइ रामचंद्रजीयें नमस्कार कर्यो परंतु वसिष्ट ऋषियें नेत्र उघाडीनें सामुं पण जोयुं नही कारण के रामचंद्रजीनी पासें ते वखत धनकांइ पण न हतु पछी जेवारें लंकाजीतीने चतुरंगिणी सेना लइ धनधान्य सहित पाछा आव्या ते वखत वसिष्ठ ऋषि सात आठ पगलां सामा चाली आव्या तेवारे रामचंद्रजी बोल्या के तेहज हुं रामचंद्र छुं अने आ तेजु तेज कदलीवन तथा तमे वसिष्टऋषि पण तेना तेज छो परंतु पहेला हुं तमारी पासें आव्यो हतो तेवारें तो तमे नेत्र उघाडीनें सामु पण जोयुं न हतु अने हमणा उठीने सात आठ पगलां सामा आव्या तेनुं शुं कारण? तेवारें वसिष्ठजी पूर्वोक्त श्लोक कहेता हवा के हे काकुस्थ,! हे रामचंद्र! एक धननुं उपार्जन करो, आ जगतमां धनेकरीनेंज प्राणी शोभे छे, परंतु निर्धनने अने मडदाने कांइपण अंतर देखातुं नथी, ते कारणे तुं प्रथम आव्यो हतो तेवारे निर्धन हतो तेथी में ताहारा सामुं न जोयुं अने हमणातो तुं सर्व विभूति सहित छो माटे हुं सामो चाली आव्यो छु एवुं कहीने वली स्त्री कहेवा लागी के हे मूर्ख! धनविना हुं तने शुं करु? वली कह्युं छे के ॥ पुत्रायसीसायसमविभत्ता, रीसाय देवाय समविभत्ता ॥ मुरकातिरिरकाय समविभत्ता, मुपादरिद्राय समविभत्ता ॥ १ ॥ भावार्थ –पुत्रने शिष्य ए बे बरोबर जाणवा, वली ऋषी अने देव ए बे पण बराबर जाणवा,

वली मूर्ख अने तिर्यंच ए बे पण समान जाणवा, तेम मूवेला अने दारिद्री ए पण बे सर खाज जाणवा ॥ वली ते स्त्री कहेवा लागी के अरे नाग्यहीन ! श्रीवीरनगवानें वरसीदान आपीने सर्वना दारिद्र्यदुःखनो विनाश कर्यो, ते वेलायें तुं परदेश गयो ते ताहारे कहेवु थयुं के जेम डाख पाकवान समये कागडानी चांच पाकी आवे तेनी पेरे थयु अथवा नदी तटे जवासाना काड तुल्य तुं थयो अथवा रात्रि दिवस मेघ वर्षतां छतां पण पलाशवृक्षनां पान त्रणज होय माटे रे अनिष्ट ! रे पापिष्ट ! रे पांडुरपृष्ठ ! तु इहांथी जा इत्यादिक निष्ठुर वचने घणो निर्भ्रंछीने गलहत्थो देइ मने घरथी बाहेर काहाड्यो ते कारण माटे ॥ आगेंदारिद्र्य पाछे दारिद्र्य, मावे जमणे पासि ॥ पिंभियाणीमुज मारण मांमधो, तेणे हुं आयो नासि ॥ १ ॥ माटें हे स्वामी ! महारे आगल पण दारिद्र्य चाले छे, पाछल पण दारिद्र्य चाले छे अने बे बाजुयें पण दारिद्र्य चाले छे एम महारे चारे बाजु दारिद्र्य चाल्यु आवे छे तेथी ब्राह्मणीयें मने मारवा मांम्यो माटे हुं नाशिनें तमारी पासें आव्यो छु अने में विचार्यु जे श्रीवीर अगम्यगतिवंत छे, जो पण दीक्षा लीधी छे तो पण परमकृपालु छे, माटें मुजने निश्चयथी कां इक पण आपशे एवुं चिंतवीने प्रतीति पूर्वक निरधारकरीने तमारी पासें आव्यो छुं माटे म हारा दारिद्र्यने चूरीने मनोरथ पूर्ण करो पण हे स्वामी ! एवु मनमा आणशो नही जे महारा वर्षीदाननें अवसरें सर्वलोक मनवांछित दान पामी गया अने तु कांइपण केम पा म्यो नही एवो विचार आणशोमां ॥ यत ॥ स्वामिन्कनकधाराभि, स्त्वयि सर्वत्रवर्षति, अना ग्यछत्रसछन्ने, मयिनायांतिबिंदव ॥ १ ॥ नावार्थ -हे स्वामी ! तमें कनक रूप धारायें सर्वत्र वरस्या पण महारा मस्तक उपरें अनाग्य रूप छत्र ढंकायुं हतु तेथी एक बिंदुमात्र पण

मह्वारे माथे पडशुं नही तेवारें एवुं विचाखुं जे यत ॥ रे मन अप्पा खतिधर, चिंताजाल म पाड ॥ फलतत्तोह्दिज पामीयें, जित्तो लख्यो लिह्नाड ॥ १ ॥ एम चिंतवी बेसी रह्यो पण हे स्वामी! एकतो तमारु दान न पाम्यो ने वली तमारा दाननो व्यतिकर सांनलीनें सामो मुजने मह्वारीस्त्रीयें घरथी काढाडी मूक्यो तेमाटे कह्युं ठे के ॥ यत ॥ त्वयि वर्षति पर्जन्ये, सवपल्लविता डुमा ॥ अस्माकमर्कवृक्षाणां, पूर्वपत्रेपु संशय ॥ १ ॥ नावार्थ – हे स्वामि! तमारा रूप मेघवर्षतां ठतां सर्वजन रूप वृक्ष नवपल्लवयुक्त थयां अने मह्वारा सरखा अर्क वृक्षोनें पूर्वपत्रनो संशय थयो इत्यादि ललित पल्लवित वचन सांनलीनें, कृपासागर नगवंत विचारता हवा जे हुं निर्ग्रंथ छु मह्वारी पासें कांइपण नथी अने ब्राह्मणने नही देवाथी ईश्वादिक सर्वलोक समक्ष प्रार्थना नंग होय ते प्रार्थनां नंग कस्याथी लघुता थाय ॥ यत ॥ तणलहु यं तूस लहु यं, तिणतुस लहुयंच पह्वणा लहुयं ॥ तत्तोवि सो लहुउ, पह्वण नंगो कउजेण ॥ १ ॥ नावार्थ – सर्वथकी तृणलघु ठे ते थकी तुष लघु ठे अने तृणथकी तथा तुष थकी पण प्रार्थना करवा वालो लघु जाणवो अने वली प्रार्थनानो नंग करवा वालो जे ठे तेतो सर्व थकी लघु जाणवो ॥ पुनरपि ॥ परपह्वणापवत्ति, मा जणणी जणउ एरिसपुत्त ॥ उयरोवि मा धरिज्जउ, पह्वण नंगो कउ जेण ॥ १ ॥ नावार्थ – परपासें प्रार्थनानो करवा वालो एवो पुत्र हे माता तुं जणीश नही अने वली प्रार्थना नंग करनारनें तो उदरने विपे पण धारण करीशमां ॥ पुनरपि ॥ यांतुयांतु धत प्राणा, अर्थिनिर्व्यर्थे तांगते ॥ पश्चादपिह्दिगतव्य, क्वसार्थ पुनरीदृश ॥ १ ॥ नावार्थ – जाउ रे मह्वारा प्राण जे अर्थिप्राणी व्यर्थ घरथी जाय तेनी साथें तमे पण जाउ केमके पाछल पण तमने कोइक


चित्र ३८
भगवान्
देवदूष्य वस्त्र
आपेत
ब्राह्मण

विवसें जावु तो छेज तो एवो साथ वली तमोने मजवो मुशकील छे माटे हमणाज जाउ ॥१॥ इत्यादिक शिष्टाचार आचारनो विचार जाणीने श्रीमहावीर देव कृपाकरी अरधुं देव दुष्य वस्त्र फाडीनें ब्राह्मणने देता हवा ए विप्रने चीवर दीधाथी बीजा प्राणीउने एवु जणावता हवा ॥ यत ॥ जांसंतितो देज्जु धन, इणपरि अस्कइ वीर ॥ पितामित्र बाम्हण जणी, आधो दीधो चीर ॥ १ ॥ जावार्थ —ज्यांसुधी घरमां संपत्ति होय त्यां सुधी धन, चीवर, अन्नादिकनु दान देवु, पिताना मित्र ब्राह्मणनें अरधुं चीर आप्याथी श्रीवीर एवुं पूर्वोक्त प्रमाणे जणावता हवा ॥ १ ॥ हवे ते ब्राह्मण अरधुंचीर लइने पोताने घेर गयो तेने चीवर सहित बारणाने समीपें आवतो देखीने ब्राह्मणी हर्षित थइ थकी स्हीने सन्मुख आवी बे हाथ जोडी ए वीरीते कहेती हवी के हे प्राणनाथ ! हे मम जीवना ! हे महारा हैयाना हार, हे कांत ! सुजग हुं तमारी मेघनी पेरें वाटजोत्ती हती अने जेम जल विना माछली टलवले तेम तमारा विना हुं टलवली रही हती इत्यादिक मीठां मनोहर वचन रचना कथन पूर्वक अपूर्वरीतें घणी प्रीतियें स्नान मज्जन करावी जोजन पान तांबूल आपीने वली घणा सन्मान पूर्वक सुखशय्या शयन प्रमुख सुख उपचार करीनें स्त्री घणो प्रमोद पमाडती हवी तेवार पछी ब्राह्मण ते वस्त्रनी दशीयो वंधाववाने वास्ते तुंनारा पासें गयो तुनारे पण ते वस्त्र तेवु अणत्रुट्यु जाणीने सोमविप्रने कहेवा लागोके हे ब्राह्मण ! आ वस्त्रनो बीजो कटको लइ आव्य तो एनें सांध्या थका ए लाख मूलनु थाशे तेथी ताहारा अने महारा बेहुना दारिद्र्यनो नाश थाशे तेवारें ते विप्र पाछो फरीने लोजें वधतो छतो श्रीवर्द्धमान स्वामी पासें आवतो हवो पण मनमा विचारवा लागो के हु वारंवार केवीरीतें याचना करु, अतिलोज करवो पुरुषनें युक्त नथी अने जग

वान पण एवुं जाणश जे आ विप्र लोनी ठे एवु जाणीने लाजनो मार्यो मौन करी रह्यो पण मुखथी मागे नही ॥ यत ॥ लज्जा वारेइ मुहं, असपया नणई मागिरे मग्ग ॥ विन्न मानकवाडं, वेहित्तिमग्गिया वाणी ॥ १ ॥ नावार्थ– लज्जा ठे ते मुखने वारती हवी अने असंपदा कहेति हवी के माग्य रे माग्य ! पण मानरूप कमाड देवराणा तेथी आपो एवी वाणी मुखथी न निकलती हवी ॥ १ ॥ अने जाण्युं जे क्यांय पण खंनाठपरथी पडी जाय तो उपाडी लइश एवीरीतें जेवारें नगवतने दीक्षा लीधे एकवर्षने ठपर एक मास थयो त्यां सुधी नगवाननी पाठल ते ब्राह्मण चाल्यो पठी एकदिवस ते देवडुष्य नगवानना खंना ठपरथी वायराना गोटथी उपडयु ते उत्तरचावालागामनी पासें सुवर्णवालुका नदीनें कांठे थोरडीना वृक्षनां कांटामां जइ पड्युं तेने विप्रे ग्रहण कर्युं नगवान पण सिंहावलोकन दृष्टियें करी देखता हवा इहां कोइकतो कहे ठे के ममत्वें करीनें देखता हवा, कोइक कहे ठे के शुनस्थानकें पड्युं के अशुनस्थानकें पड्यु ते जोवाने माटे देखता हवा वली कोइक कहे ठे के सहसा स्कारे देख्युं, कोइक कहे ठे के महारी पाठल महारा शिष्योने वस्त्रपात्र सुलननावे थशे के नही थाय एवा कारणथी देखता हवा कटके लाग्युं तेथी नगवाने विचार्युं जे महारी पठवाडे जे साधु स्वसंतानिक थाशे ते सर्व बहुल कषायि कटकी कलहकारी प्राय असमाधिकारक थाशे मूरुा घणा थाशे अने साधु थोडा थाशे एवु जाणीनें निर्ममत्वथी ग्रहण न कर्यु, हवे विप्र पोताना आत्माने धन्य कृतार्थ मानतो थको, संपूरण मनोरथवत थयो थको तुनारा पासें ते खंड सं धावी तूणावीने वेंच्युं तेना लक्ष सोनैया आव्या तेमांथी अर्द्धा तुनाराने दीधा अने अर्द्धा ब्राह्मणे राख्या तेहनुं दारिद्र्य गयुं जावज्जीव सुधी सुखी थया आनंदमां रह्या ॥ इति अचेलक

दृष्टांत ॥ ॥ तेवार पछी जगवाने कपडां राख्यां नही ते दिवसथी अचेलक थया अने बीजा त्रेवीश तीर्थंकरोनां देवडुष्य वस्त्र जावज्जीव रह्यां हतां केटलिक प्रतोमां वचला बावीश तीर्थंकरोनां देवडुष्य जावज्जीव रह्यां कह्यां छे तेथी ते सचेलक जाणवा हवे श्रीमहावीर स्वामी बारवर्ष उपर साडा छमहीना छद्मस्थपणे कायाने वोसरावी कांइ शुश्रूषा करे नही एवायका विचखा तेमां जे कांइ देवताना करेला, मनुष्यना करेला, तिर्यंचना करेला, अनुलोम अने प्रतिलोम एवा बे प्रकारनां उपसर्गो थया तिहां जे नाटक देखाडवां, आलिंगन करवां, इत्यादिक देवादिकोये करेला उपसर्गो ते सर्व अनुलोम उपसर्गो जाणवा अने जे देवादिकोयें जय बताव्या, प्रहार कख्या, कूट्या, माख्या एवा उपसर्गो ते सर्व प्रतिलोम उपसर्गो जाणवा ए बन्ने प्रकारना उपसर्गो सर्व पोतानी खुशीथी सहन कख्या पण चारित्रथी लगार मात्र चलायमान थया नही तेमज कोइ उपर रागद्वेष पण लाव्या नही तथा कोइनी पासें दीन वचन पण बोल्या नही तेमज कोइनु जय पण लाव्या नही एवी रीतें अनेकप्रकारना उपसर्गो सहन कख्या ते कही देखाडे छे॥ ॥ एकदा जगवान् उत्तर वाचाल सन्निवेशें जातां मार्गें वर्द्धमान गामें आव्या, तिहां एक सुवर्णवालुका, बीजी रूपवालुका, ए बे नदीउ आवी, ते उतरी आगल चालतां एक वक्रमार्ग बीजो सरल मार्ग, एवा बे मार्ग आव्या, तिहां लोके निवाख्या के पाधरामार्गमां सर्पनो जय छे माटे जाशो नही तो पण जगवंत वक्रमार्ग मूकीने सरल मार्गें चन्मकोशीया सर्पने प्रतिबोध देवासारुं चाल्या, ते मार्गमां कनक खल नामा वनमा तापसनो आश्रम छे, तिहां एक महा जोरावर घणो फशीलो चन्मकोशीयो सर्प रहे छे ते चन्मकोशिया सर्पने जगवाने देवता कख्यो, तेनी कथा कहे छे कोइक गामने विषे बे साधु गुरु चेला चोमासु रह्या हता ते एक दिवसें

मास खमणना पारणाने अर्थे वे जणा गोचरीयें गया, त्यां वर्षाऋतुने लीधे घणा जीवानी उत्पत्ति थये ठते मार्गमा गुरुना पग नीचें सूक्ष्म मेमकी आवी ते चपाइ मरण पामी तेवारें चेलायें कयुं मद्दाराज तमारा पग नीचें मेडकी आवी ते मरण पामी एवुं सांजली गुरु बोल्या घणी मेडकी मरेली पडी ठे माटे बीजा कोइनो पग आववाथी मरण पामी हशे तेवारें तिहां ते चेलो मौन रह्यो वली गोचरी आलोवतां शिष्य बोल्यो के मेडकीनो मिछामि डुक्कड ल्यो ते सांजली गुरुने रीश चडी अने चेलाने कहेवा लागो जे अरे आ मेडकीतो प्रथमथीज मरेली हती, मेंतो मारी नथी चेले घणुं कयुं तो पण मान्युं नही तेवारें चेले विचार्युं जे सांजें पडिक्कमणामां आलोयण लेशे गुरुयें पण सांजें पडिक्कमणामां सर्व आलोयण लीधी, पण मेडकीनी आलोयणा न लीधी तेवारें वली पण चेले कयुं जे मद्दाराज मेडकीनी आलोयणा ल्यो तेवारें पण गुरुयें रीश करीने तेवोज जवाब आप्यो फरी रात्रें सथारानी वेलायें कयुं के हे मद्दाराज! मेमकीनी आलोयणा ल्यो एवुं सांजलतां गुरुने रीश चडी तेथी हाथमां उंघानी मांमी लइने मारवा दोड्यो रातनी वेला हती तेथी चेलो नाशी गयो, गुरु तेनी पाठल दोड्यो अने उपाशराना थांजलामां अथडायो तेथी गुरुनुं मस्तक फूटयुं त्यांथी मरण पामी बीजे जवे ज्योतिषी देवता थयो त्यांथी चवीने चमकोशी नामें तापस थयो तेना पांचसो शिष्य थया परंतु पोतें घणो क्रोधी हतो तेथी एक दिवसें राजकुमारने वाडीमांथी फूल लेतां देखीने हाथमां फरसी लइ तेमने मारवा दोड्यो तिहां पग लपसीगयो तेथी मार्गमा एक अंध कूवो आव्यो, तेमां पड्यो पोताने फरसीवागी तेथी आर्त्तध्याने मरण पामीने तेहज आश्रमने विषे चोथाजवें चमकोशीउ सर्प्प थयो ठे, आंख्यमा जहेर घणु ठे, जे कोइने


चित्र ३९
भगवान्

देखे, तेने बाली जस्म करे ले, घणा तापसोने बाल्या, बीजा केटलाएक नाशी गया लोकें पण ए मार्गे जवानु लोडी दीधुं, एककोश प्रमाण जूमिमां रहेला जीवमात्रने बाली नाखे ले त्यां ते सर्प कोइने रेवा देता नथी ते सर्पना बिलउपर जगवत काउस्सग्गें रह्या, ते देखी सर्पें क्रोध आणीने प्रजुने मख मार्यो, तेवारें प्रजुना पगमांथी दूध सरखु लोही मांस नीकल्युं, तेने देखी सर्पें विचार्युं जे हुं जेने साहामुं जोउं, तेने पण बाली जस्म करु अने एने तो मख मार्यो तो पण थोडुं लोइ नीकल्युं माटे ए कोइ महोटो पुरुष ले एम चितवीने जगवाननां मुख सामुं जोयुं तेवारें जगवान् बोल्या के अरे चंमकोशिया ! बूज बूज तुं नथी जाणतो एवुं केतां थकां ते सर्पने विचार उपन्यो जे आवुं रूप में क्यांक दीठुं ले एटलामां मूर्छा आवी गइ अने जाति स्मरण ज्ञान उपन्युं तेवारें पाउलो जव दीठो, पढी प्रजुने त्रण प्रदक्षिणा देइ विनति करी के हे करुणासागर ! दुर्गतिरूप कूपथी तमें मुजने उद्धर्यो, पढी वैराग्यपामी पन्नर दिवसनु अन शन करी परोपकारार्थे ते सर्प पोताना बिलमांहे मुख घाली अने आखु शरीर बाहेर राखीने रह्यो पढी ते मार्गे दूध, दहीं, घृतनी वेचनारी आहिरलोक तेणें ते नागराज सतुष्ट थयो एवुं जाणी दूध, दहीं, घृत, शर्करादिकें करी सर्पने पूज्यो तेनी गंधें करी कीडीउ शरीर उपर चडी पढी विचार्युं, जे हुं महारा शरीरने फेरवीश तो कीडीयो मरीजशे एवु जाणी शरीर हलाव्यु नहीं कीडीयें ते सर्पने फोली चालणी सरखो कीधो, ते सर्प शुजध्यानें मरण पामीने आठमे देवलोकें देवता थयो प्रजु तिहांथी विचरता उत्तर वाचाल सन्निवेशें पहोता तिहां नागसेन श्रावकनें घेर परमान्नें पारणु कर्युं, देवतायें पंचदिव्य प्रगट कर्या तिहांथी विहार करीनें जगवान श्वेताबिका नगरीये गया तिहां परदेशीराजायें प्रजुनो महिमा

कह्यो ॥ तिहांथी विचरता थका जगवान सुरजिपुरनगरनां मार्गमां गंगानदी आवी ते उत्तर वाने अर्थें घणा लोक सिद्धदत्त खारुआनी नावमां बेठा तेनी सार्थें प्रभु पण बेठा एवा मां घूवड बोल्यो तेनुं शुकन जोइ क्षेमिलनामे निमित्तिर्ज ते नावमा हतो तेणे कह्युं के हे लोको आज आपणने मरणांत कष्ट उपजशे परंतु आ साधु महात्मा पुरुषना प्रजावथी जी वता रहीशुं मरशुं नहीं एवामां जगवते त्रिपृष्ठ वासुदेवना जवमां जे सिंहने विदार्यो हतो ते सिंह घणा जवभ्रमण करीने हमणां जुवनपति देवोमां सुदंष्ट्रनामे नागकुमार देवता थयो ठे ते अवधिज्ञाने प्रभुने जोइ पूर्व वैर संजारी इहां आवीने नाव बूडाववानो उपद्रव करवा लाग्यो तेवखत नवा उपन्या एवा कंबल अने संबल नामे बे नागकुमार देवता तेणे आवीने एक देवतायें तो नाव बूडती राखी अने बीजा देवतायें पहेला,सुदंष्ट्रदेवनी सार्थें लडाइ करी तेमां सुदंष्ट्र हारीगयो तेथी जगवान सुखें गंगानदी उतर्या हवे ए कंबल संबलनी पूर्वजव संबंधि कथा कहे ठे, मथुरा नगरीमां जिनदास नामा श्रावक रहे ठे तेनी साधुदासीनामे स्त्री ते पण श्राविका ठे ते बन्ने जणायें पांच अणुव्रतमां चतुष्पद जीवो राखवानो त्याग करेलो ठे तेथी दूध दही जे घरमां वापरवा सारु जोइयें ते एक आहिर पासेथी मूल्य आपीनें वेंचातु लीये ठे तेने लीधे ते आहिरने अने शेठनें मांहोमांहे प्रीति थइ ते आहिर सार्थें लेवड देवडनो संतोष व्रतमा, राखेलुं ठे हवे एकदिवस ते आहिरने घेर विवाह आव्यो तेवारे आहिरे शेठ पासेंथी विवाहने माटे केटलिएक चीजो मागी शेठे पण तेने चंद्रवा प्रमुख सर्व उपकरण तेना माग वा मुजब आप्या तेथी तेनो विवाह घणो सरिकार थयो तेवारें ते आहिर खुसी थइने सर खी अवस्थावाला घणा रूपवत एवा बे बाल वृषन लावीने शेठने घेर बलात्कारें बांधी चा



चित्र ४०

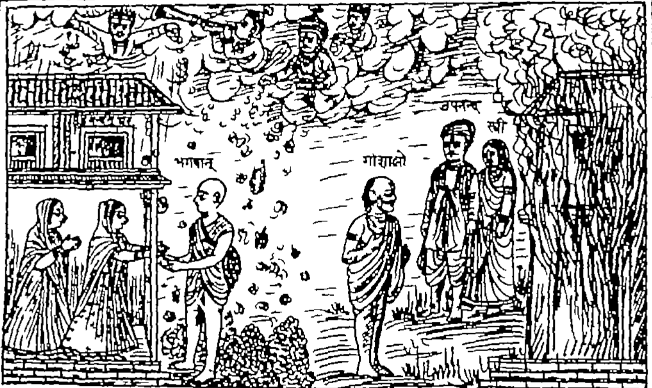
ल्या गया त यद्यपि शेठने ता राखवानी इछा हती नही तोपण शेठे विचार्यु जे पाछा आ पीश तो ए बीजें क्यांय वेचशे तिहां ए बापडा दुःखी थाशे, बांध्या रहेशे, नार ताणशे, एवुं विचारीनें पोताने घरें राख्या तिहां तेमने पुत्रनी पेरे फासु घास जज प्रमुख खवरावीने पोष्या कंवल अने संवल एवां वे नाम दीधां हवे शेठ पाखीने दिवसे पोसह करे धर्मचर्चा करे पुस्तक वांचे ते वातो सांजलतां सांजलतां ते बलदीया घणीज रूडी समजण वाला थया एवा जद्रिक परिणामि थया के शेठ जेवारें उपवास करे तेवारे ते पण उपवास करे तृणादिक चारो बिलकुल खाय नही एवीरीतें शुजजावनायें विचरे छे हवे एक दिवस शेठ पोसहमां बेठा हता एटलामां कोइएक शेठनो मित्र आव्यो ते पुष्ट रूपवन्त जोडलुं देखी शेठने पुछ्या विना पोताना रथमां जोडीनें जंमीर वनमां यक्षनी यात्रायें जइ गयो मार्गमां घणा दोडाव्या तेथी ते बलदोनी नाडियो त्रूटी पडी पछी ते छानो आवीने पाछा शेठने घेर बांधी गयो पण हाडकां जांगी गया तेथी चारो पाणी त्यागी बेठा शेठें पोताना पुत्र जेवा बलदोने दुःखी थयेला देखी घणो विषाद करीने अनशन कराव्युं चार आहारना पच्चरकाण करावी न वकार संजलाव्युं ते बलदीया शुजध्याने मरण पामीनें नागकुमार देव थया ते नवा उपन्या थका अवधिज्ञाने उपयोग आप्यो तेथी ए कृत देखी इहां आवीनें जगवानने थतो उपसर्ग मटाड्यो अने जगवान आगल नाटक नाची गीतगान करी पूजा सत्कार करी स्वस्थानकें गया ॥ इति कंवल संवल दृष्टांत ॥ एक दिवसें जगवान् विहार करता गंगा नदी उतरतां सूक्ष्मवेलु मांहे प्रतिबिंबित पगलानी श्रेणीने विषे चक्र, ध्वज, अंकुश प्रमुख लक्षण थया एवामां पाछ लथी कोइ एक पुष्पनामा सामुद्रिकशास्त्रनो जाण, आव्यो तेणे मनमां चिंतव्युं जे आ कोइएक

चक्रवर्त्ती थनारो जीव छे चक्रवर्त्ति विना एवा पग बीजानां न होय ते हमणां एकाकी जाय छे माटे हुं जइ एनी सेवा करुं, पछी ते चरणानुसारें तिहां आव्यो अने जगवानने वस्त्ररहित दिगम्बररूपें देखीने विचारवा लागो जें हुं सामुद्रिकशास्त्र फोकट जण्यो हुं जो एवा लक्षणनो धणी निक्षुकरूपें एकाकी छे तो ए महारां पुस्तक खोटां छे पाणीमां बोळवा लायक छे, एम चिंतवी पुस्तकने पाणीमां बोळवा लाग्यो, इंद्रमहाराजें ए वृत्तांत जाण्युं तेवारें तिहां आवीने प्रजुनी सेवा साचवी पुष्पनिमित्तिया आगल प्रजुनुं स्वरूप वर्णवी शास्त्र पाणीमां बोळवा न दीधां, पछी जगवंतना गुण ग्राम कही इंद्र स्वस्थानकें गयो, पुष्प पण इंद्र पासेंथी मणि कन कादिक धन पामी हर्ष पामतो पोताने स्थानकें गयो, प्रजुयें परोपकारार्थे गंगानदीउतरी वि हार कीधो ॥ हवे गंगानदी उतरीने जगवान बीजे चोमासे राजगृही नगरीयें नालंदीनामा पाडामां वणकरनी एटले तंतुवायकनी शाला छे तेना एकदेशने विषे रहीने मास खमण कयुं अहींआं शरवणग्रामे मंखली पुत्र सुनद्रानो अगज बहुल ब्राह्मणनी गोशालाने विषे उपन्यो छे तेमाटे तेनुं नाम पण गोशालो राख्यो छे ते अनुक्रमें जमतो जमतो जगवत पासें आव्यो, जगवाने तिहां चारमासमां चार मास खमण करीने चार पारणा कर्यां तेमां पहेला मास खमणने पारणे प्रजुनें विजयशेठें क्षीरादिक विपुल जोजने पारणुं कराव्युं तिहां देवतायें पंच दिव्य प्रगट कर्या पछी ते सरस क्षीरादिक कूरादिक मोदकादि कनो आहार देखीने गोशालायें विचार्युं जे एने घर घर वोरावे छे माटे हुं पण जूदो जि क्षायें फरीश तो माहारी पण मान्यता वधशे, तेवारें जगवतने जेणे वोहोराव्या तेना पा डोशीने घरें गोशालो पण वहोरवा गयो ते देखी पाडोशी हर्ष पाम्यो जे महारें घरे जग

वान् पधास्या तेथी छठी वेगो थयो पछी वांदीने कह्युं के हे महाराज ' महारे घरे पारणुं करो तेवारें गोशालायें बे हाथ पसास्या गृहस्थें ऊनी ऊनी रसोइ पीरशी अने जेंचुं मासुं करी जोवा लाग्यो जे महारे घरे सोनैयानो वर्षाव थाय एम करतां वायस आवी माथे वेगो ते वारें मेहा उपरथी गोशालाना हाथ उपर एक थाइयें देवता नाख्यो ते जोइ शेठें विचार्युं जे पाडोशीने घेर तो सोनैयानो वर्षाव वरस्यो अने माहारे घरे तो कोयला वरस्या गोशालाना हाथ बल्या तिहांथी उदास थइ गोशालो निकल्यो हवे जगवानने बीजुं पारणुं नंदे पकान्ना दिकनुं कराव्यु, त्रीजे मासखमणे त्रीजुं पारणुं सुनंदे परमान्नादिकें कराव्युं तिहां सर्वत्र पंच दिव्य प्रगट थयां ते जोइ गोशाले मनमां विचार्युं जे एनी पासें सारविद्या छे जे घर घर सोनुं वरसावे छे, ए विद्या हुं पण शीखुं माटे एनी सगत करुं तो शीखुं अने महारी शोजा वधे ' एम विचारी गोशालो बोल्यो हे जगवान ' हुं आपनो शिष्य छुं एम कही जगवत सार्थे फरवा लागो, जगवाने तिहांथी जइ चोथुं पारणुं कोल्लागसन्निवेशे बहुलनामा ब्राह्मणने घेर केवल खीरना जोजने कर्युं तिहां पांच दिव्य प्रगट थयां ए बीजुं चोमासुं जाणवुं ॥ २ ॥ पाछलथी गोशाले जगवानने दीठा नहीं सर्व नगरमां फरी जोयुं तो जगवान मल्या नहीं तेवारें सर्व उपक रण ब्राह्मणने आपी मुंडमुंड थइने चाल्यो पछी कोल्लागसन्निवेशें जगवानने देखी बोल्यो के आ पनी दिक्षा मुजने हो हुं आपनो चेलो छुं ए वात जगवाने पण मानी पछी गोशाला सहित जगवान विहार करी एक दिवसें जगवान् स्वर्णखलग्रामें चाल्या, मार्गमां कोइ गोवालीए खीर पकावतां देखी तिहां गोशालो बोल्यो, हे जगवान् ' ए खीर थाशे ते खाइने जइशुं माटे थो डीवार बेसो तेवारें सिद्धार्थ बोल्यो ए खीरनुं पात्र जागशे पछी गोशालायें जइ गोवालीयाने

कर्युं हांमी फुटशे गोवालीयायें घणा यत्न कराव्या तो पण हांमी फूटी गइ तेवारें गोशालो बो ल्यो जे थानार होय ते थायज एवुं बोली दृढ पकडी नियतवादीपणु पडिवज्युं ॥ तिहांथी नगवान विहार करी ब्राह्मण गाम गया तिहां एक नंद अने बीजो उपनंद ए बे नाइना बे पाडा बे तेमांथी नगवाने नंदनां पाडामां पारणु कर्युं अने गोशालाने उपनंदने घेर वाशी अन्न सातदिवसनी घेंस मली तेथी कोपायमान थइने गोशालो बोल्यो जे महारा धर्माचा र्यना प्रनावथी तहारुं घर बली नस्म थाउ एवुं कहेतांज व्यंतरदेवोयें नगवाननुं महत्त्व रा खवा माटे तेनुं घेर बाली नाख्युं हवे त्रीजें चोमासें बे बे मासनी तपस्यायें प्रञ्जु चंपानगरीयें रह्या ए त्रीजुं चामासुं ॥ ३ ॥ ॥ त्यां बेल्लुं पारणु करी कोल्लाग सन्निवेशें गया तिहां शून्य गृहमां काउस्सग्ग रह्या तिहां सिंहो रजपुत चोधरीनो पुत्र विद्युन्मती दासी सायें क्रिडाकरतो हतो तेने रमतो देखीने गोशालो हस्यो तेवारें तेणे गोशालाने कूट्यो गोशालो प्रञ्जुने कहेवा लागो जे मने मार आपे बे माटे तमें एने कां वारता नथी ? प्रञ्जु मौन बे तेथी सिद्धार्थ बोल्यो के आज पबी एवुं हास्यनुं काम म करीश ए काम करीश तो एवांज फल पामीश तेवार पबी स्वामी मोराकसन्निवेशें रमणीय नामा उद्यानमां काउस्सग्ग रह्या, त्यां कुंनारशालामां श्रीपार्श्वनाथना शिष्य मुनिचंद्र सूरि घणा शिष्यो साथे रह्या बे ते साधुउने देखी गोशाले पूछ्युं तमें कोण बो, ते बोल्या अमें साधु बैयें गोशालो बोल्यो तमें क्यां अने महारो धर्माचार्य क्यां ? तेवारे ते साधु बोल्या जेवो तुं बे, तेवो ताहारो गुरु पण हशे तेवारें गोशालो रुगे थको बो ल्यो जे महारा धर्माचार्यना तप तेजना प्रनावथी तमारो आश्रम बली नस्म थाउ तेवारे शिष्य बोल्या एथी कांइ अमे मरता नथी हवे आश्रमवल्यो नहीं तेवारें गोशाले आवीनें प्र

चित्र ४८



छुने कर्यु के स्वामी आगल जेवो तमारो प्रनाव हतो तेवो हमणां नथी तप तेज घटी गयुं जणाय छे तेवारें सिद्धार्थ बोल्यो अरे गोशाला ! ए साधुउने शाप लागे नही ए साधु नहीं बले, पछी ते पार्श्वनाथना शिष्य मुनिचंड सूरिजिनकल्पनी तुलना करता काउस्सग्गमां ऊना छे तेने कुंनारें चोर जाणीने मार आप्यो मुनिचंडने अवधिज्ञान उपन्युं मरण पामी देवलोकें गया तेनो देवतायें महिमा कर्यो त्यां अजवालुं थयुं ते देखीने गोशालो बोल्यो जुउ साधुना आश्रम बले ने म्हारा गुरु साचा छे, तेवारें सिद्धार्थ व्यंतरो बोल्यो के, अरे कुपात्र ! ए तो मुनिचंड देवलोकें गया तेनो महोत्सव थाय छे ते सांनली गोशालो विलखो थयो ॥ ते पछी प्रभु चोरा नगरियें गया तिहां गोशालो गाममांहे हेरतो फरे तेवारें त्यांना लोकोयें हेरु जाणी प्रथम गोशालाने(कूप) खोडामांहे घाल्यो पछी नगवतने पण नाखवा लागा, एवामां उत्पलनामा विप्रनी बेहेन सोम जयंतिनामें ते चारित्र त्यागीने सन्यासणी थइ छे तेणे आवी नगवानने उलखीने छोडाव्या गोशालाने पण छोडी मूक्यो ॥ तेवार पछी त्यांथी विहार करीने चोथुं चोमासुं स्वामी पृष्ठ चंपायें चार मासी तप करीने रह्या, तिहां चोमासुं संपूर्ण करी बाहेर पारणुं कर्युं ए चोथुं चोमासुं जाणवुं ॥ ४ ॥ ॥ तिहांथी विहार करी नगवान कयंगलें गया, तिहां माघ मासें जागरणना दिवसें दारिद्र अने स्थविर पाखंमिणी नाचें छे, गाय छे तेनी गोशाले हांसी करी तेथी तेउंए गोशालाने मार आप्यो वली प्रभुनो शिष्य जाणी मूक्यो ॥ तिहांथी विहार करी नगवान सावत्थीनगरीयें आवीने काउस्सग्गें रह्या तिहां पितृदत्तवणिकनी स्त्री श्रीनद्र छे तेने पुत्र जीवता नथी, तेवारें शिवदत्त निमित्तियें तेने पूर्वें कह्युं छे के मृतक पुत्रनुं मांस खीरमां राधीने कोइ निक्षुकने खवरावजो तो तमारा पुत्र जीवता रहेशे, हवे ते स्त्रीने जेवारे

छुने कह्युं के स्वामी आगज जेवो तमारो प्रनाव हतो तेवो हमणां नथी तप तेज घटी गयुं जणाय ढे तेवारें सिद्धार्थ बोल्यो अरे गोशाला ! ए साधुउंने शाप लागे नही ए साधु नहीं बले, पढी ते पार्श्वनाथना शिष्य मुनिचंद्र सूरिजिनकल्पनी तुलना करता काउस्सग्गमा रह्या ढे तेने कुंनारें चोर जाणीने मार आप्यो मुनिचंद्रने अवधिज्ञान उपन्युं मरण पामी देवलोकें गया तेनो देवतायें महिमा कस्यो त्यां अजवालुं थयुं ते देखीने गोशालो बोल्यो छुउं साधुना आश्रम बले ने महारा गुरु साचा ढे, तेवारें सिद्धार्थ व्यंतरो बोल्यो के, अरे कुपात्र ! ए तो मुनिचंद्र देवलोकें गया तेनो महोत्सव थाय ढे ते सांनली गोशालो विलखो थयो ॥ ते पढी प्रज्नु चोरा नगरियें गया तिहां गोशालो गाममांहे हेरतो फरे तेवारें त्यांना लोकोयें हेरु जाणी प्रथम गोशालाने (कूप) खोडामांहे घाल्यो पढी नगवतने पण नाखवा लागा, एवामा उत्पलनामा विप्रनी बेहेन सोम जयंतिनामे ते चारित्र त्यागीने सन्यासणी थइ ढे तेणे आवी नगवानने उंलखीने ढोडाव्या गोशालाने पण ढोडी मूक्यो ॥ तेवार पढी त्यांथी विहार करीने चोथुं चोमासुं स्वामी पृष्ट च पायें चार मासी तप करीने रह्या, तिहां चोमासुं संपूर्ण करी बाहेर पारणुं कस्युं ए चोथुं चोमासुं जाणवुं ॥ ४ ॥ ॥ तिहांथी विहार करी नगवान कयंगलें गया, तिहां माघ मासें जागरणना दिवसें दारिद्र अने स्थविर पांखमिणी नाचें ढे, गाय ढे तेनी गोशाले हांसी करी तेथी तेउंए गोशालाने मार आप्यो वली प्रज्नुनो शिष्य जाणी मूक्यो ॥ तिहांथी विहार करी नगवान सावहीनगरीयें आवीने काउस्सग्गें रह्या तिहां पितृदत्तवणिकनी स्त्री श्रीजद्रा ढे तेने पुत्र जीवता नथी, तेवारें शिवदत्त निमित्तियें तेने पूर्वें कह्युं ढे के मृतक पुत्रनुं मांस खीरमां राधीने कोइ निक्षुकने खवरावजो तो तमारा पुत्र जीवता रहेशे, हवे ते स्त्रीने जेवारे

मृतक पुत्र थयो तेवारें तेनां मांसनी खीर तैयार करी राखी अने अहीं गोशाळे सिद्धार्थ व्यतरने पूछ्युं के मने आज केवुं भोजन मळशे? सिद्धार्थें कह्युं तनें आज मनुष्यनुं मांस मळशे, ते सांभळ्या पछी सिद्धार्थनुं वचन खोटुं करवा सारु गोशालो श्रावक वाणीयाने घेर वोहोरवा गयो, मनमां विचार्युं के वाणीयाने घेर मांस होयज नहीं एवुं जाणी तिहां खीर जमी फरी पाछो आवी सिद्धार्थने कह्युं के हुं खीर जम्यो छुं सिद्धार्थें कह्युं तुं मांस जम्यो छो, तेवारें गोशालायें गळामां आंगळी घाली वमन कर्युं, मांहे मांसना कटका दीठा तेवारें गोशालो क्रोध करीने तेने घेर गयो परंतु ते स्त्रीयें भरापना भयथी घरनुं बारणुं फेरवी नाख्युं हतुं तेथी गोशालायें घर लाध्युं नहीं तेवारें कहेवा लाग्योजे म्हारा स्वामीना तप प्रभावथी तमारो पाडाडो बळी भस्म थाजो तेथी पाडो बळ्यो ॥ इति ॥ तिहांथी भगवान दरिद्र सन्निवेशनी बाहेर काउस्सग्गें रह्या तिहां पंथीयोयें भगवानना पग पासें वासदी बाळी तो पण भगवान किंचित्र मात्र खस्या नहीं भगवानना पग बळता देखीनें गोशालो नाशि गयो ॥ तिहांथी गळगामें वासुदेवनें देहरे काउस्सग्गें रह्या तिहां गोशालो आंख्यो काढीने बाळकोने बीहीवराववा लाग्यो तिहां लोकोयें मार्यो, कूट्यो बाध्यो भगवाननो शिष्य जाणी मूक्यो त्यांथी विहार करीने भगवान आवर्त्त गाममां बलदेवनां मंदिरने विषे काउस्सग्गें रह्या तिहां गोशालायें छोकराउने बीवराववा सारु म्होटुं मरडी बताव्युं तेथी छोकरा सर्व भय पामीने पोताना माता पितानी आगळ कहेवा लागा तेवारें ते माता पिताउ तिहां आवीने कहेवा लागा के आ चेलानें शुं मारवो एना गुरुनेंज मार आपो एटले फरी चेलाने पाधरे मार्गे चालवानो उपदेश करशे एवुं कहीने जेटलामां भगवानने मारवा

तैयार थया एटलामां धलवधन। मूलनय हल जइने लोकोनें मीवराव्या तेवारें सर्वलोक नगवा नने नमवा लागा ॥ पढी तिहांथी विहार करी घणा क्लिष्टकर्मोनी निर्जरा करवाने अर्थे नग वान लाटदेश गया तिहां अनार्य लोकोयें घणाज उपद्रव कस्या ते प्रजुयें सहन कस्या ॥ ति हांथी पूरणकलश नामें अनार्य गामें जातां थकां नगवाननें मार्गमां बे चोर मल्या ते न गवानने देखी अपशुकन थयां एवु मानीने खड्ग लइ मारवा दोड्या तेने इंद्र महाराजें वज्रथी मारी नाख्या केटलिक प्रतोमां इंद्रमहाराजें ते चोरोना पग थंन्या तेथी ते वृक्षनी पेरें ति हांज उना रह्या एवीरीतें उपसर्ग निवारण थयो ॥ पढी तिहांथी प्रजु चोरांगे आव्या तिहा मारुवे धान रधातु देखी गोशालो नीचो थइ जोवा लाग्यो तेने लोकोयें चोर जाणी मास्यो, गोशालो रुठो थको बोल्यो जे महारा स्वामीना तप बलें तमारो मंरुप बलजो, ते तेमज थयुं तेवार पढी नगवत हरिवृक्ष नीचें काउस्सग्गें रह्या, तिहां कोइ पंथीयें आगल नूमिका बाली हती तिहा गोशालानां पग बल्या तेवारें त्यांथी गोशालो नाठो ॥ तेवार पढी पांचमुं चोमासुं प्रजु नद्रिकानगरीयें रह्या तिहां चोमासी तप प्रजुयें कीधुं ए पांचमुं चोमासुं चार मासी त पनुं जाणवुं ॥ ५ ॥ ॥ पढी पारणुं करी तिहांथी नगवान कुदिक सन्निवेशें गया त्यां लो कोयें चोर जाणीने पकड्या पढी श्रीपार्श्वनाथजीनी एक विजया बीजी प्रगल्ना ए बे सा ध्वियो परिव्राजिकणी थयेलीउं ठे तेमणे ठोडाव्या तिहां गोशालायें जाण्युं जे एनी पठवाडे फरवाथी घणा डुःख सहन करवा पडे ठे एवुं विचारी नगवतथी जुदो विचस्यो मार्गमां जातां पाचसें चोर मल्या ते मामो मामो कहीने गोशालानी खांध उपर चढी आगल पाढल फराववा लागा तेथी डुःख पाम्यो वली बीजे पण ज्यां जाय त्यां तोफान करे, तेवारे

मृतक पुत्र थयो तेवारें तेनां मांसनी खीर तैयार करी राखी अने अहीं गोशाले सिद्धार्थ व्यतरने पूछ्युं के मने आज केवु जोजन मलशे? सिद्धार्थें कह्युं तनें आज मनुष्यनुं मांस मलशे, ते खाइश पठी सिद्धार्थनुं वचन खोटुं करवा सारु गोशालो श्रावक वाणीयाने घेर वोहोरवा गयो, मनमां विचार्युं के वाणीयाने घेर मांस होयज नही एवुं जाणी तिहां खीर जमी फरी पाछो आवी सिद्धार्थने कह्युं के हुं खीर जम्यो छुं सिद्धार्थें कह्युं तुं मांस जम्यो छो, तेवारें गोशालायें गलामां आंगली घाली वमन कर्युं, मांहे मांसना कटका दीठा तेवारें गोशालो क्रोध करीने तेने घेर गयो परंतु ते स्त्रीयें शरापना जयथी घरनुं बारणुं फेरवी नाख्युं हतुं तेथी गोशालायें घर लाध्युं नही तेवारें कहेवा लाग्योजे महारा स्वामीना तप प्रजावथी तमारो पाहाडो बली जस्म थाजो तेथी पाडो बल्यो ॥ इति ॥ तिहांथी जगवान हरिद्र सन्निवेशनी बाहेर काउस्सग्गें रह्या तिहां पंथीयोयें जगवानना पग पासें बाहेर वाली तो पण जगवान किंचित्र मात्र सरक्या नही जगवानना पग बलता देखीनें गोशालो नाशि गयो ॥ तिहांथी गलगामें वासुदेवनें देहरे काउस्सग्गें रह्या तिहां गोशालो आंख्यो काढीने बालकोने बीहीवरावबा लाग्यो तिहां लोकोयें मार्यो, कूट्यो वार्यो जगवाननो शिष्य जाणी मूक्यो त्यांथी विहार करीने जगवान आवर्त्त गाममां बलदेवनां मंदिरने विषे काउस्सग्गें रह्या तिहां गोशालायें ठोकराउने बीवरावबा सारुं महोटुं मरडी बताव्युं तेथी ठोकरा सर्व जय पामीने पोताना माता पितानी आगल कहेवा लागा तेवारें ते माता पिताउ तिहां आवीने कहेवा लागा के आ चेलाने शुं मारवो एना गुरुनेंज मार आपो एटले फरी चेलाने पाधरे मार्गे चालवानो उपदेश करशे एवुं कहीने जेटलामां जगवानने मारवा

सुधी अनेक प्रकारना उसद अनिमह कया ए ठवु चोमासु जाणवुं ॥ ५ ॥ ॥ ह्वां ठ म
हीना वाहेर नटकीनें गोशालो पण फरी आवी प्रजुने मल्यो हवे ए चोमासु पुरु थया
पठी शेषकाल आठ महीना सुधी जगवान मगधदेशमां विचया ते आठ महीनामां जगवानने
कोइ पण उपसर्ग थयो नही तेवार पठी सातमो चोमासो आलंनिका नगरीनी वाहिर देव
कुलें चारमासी तप करीनें रह्या ए सातमुं चोमासु ॥७॥ ॥ तिहां गोशालायें वलदेवनी प्रति
माना मुखमां लिंग घस्युं ते लोकें दीठु तेवारें गोशालाने मार आप्यो कोइक प्रतमां वलदेवनी
मूर्त्ति उपर पुरुषचिन्ह राखीने सूतो तेथी पूजारायें मार आपी एम पण लखेलु ठे तिहांथी
विहार करी मर्दनग्रामे वासुदेवने देहेरे तेमज गोशालायें मूर्त्ति उपर पुरुषचिन्ह कर्युं तिहां पण
मार खाधो पठी प्रजु उन्नागगामे जता रस्तामा कोइएक नवपरिणीतवधूने तेडी जाय ठे तेमां
वरना दांत बाहार निकलेला महोटा हता अने वहु कांणी हती ते जोइ गोशालो हसीने
बोल्यो के आ तो देवें सरखी जोड मेलवी आपी ठे तेणे गोशालानें मार आपीनें वंशजालमा
नाखी दीधो ॥ आ ठेकाणे कोइक कूटपूतनानो उपसर्ग लखे ठे एकदिन विचरता थका जग
वान पुरिमताल नगरनी बाहेर शकटमुख उद्यानमां काउस्सग्गे रह्या ते वखत ते नगरनो व
ग्गुर नामा शेठ तेनी सुजद्रा नामे नार्या ते बेहु जणे पुत्र थवा सारुं श्रीमल्लीनाथजीनी मा
नता करी हती ते जेवारें पुत्र थयो तेवारे उद्यानमां श्रीमल्लीनाथजीनुं नवु मंदिर करावीने
तिहां नित्य पूजा करे ठे हवे जे वखत शेठ स्त्रीसहित पूजा करवा आव्यो ठे तेवखत जगवाननी
आगल इन्द्रमहाराज बेठा ठे तेणे जगवाननो महिमा करवा माटे शेठने कयुं के हे शेठ ! जेनी
तुं पूजा करे ठे ते हु तुजने प्रत्यक्ष देखाडुं एवु कही शेठने तेडी जगवानने पगे लगाड्यो शेठें

लोक मार आपे तेथी गोशालायें विचार्युं जे जगवत सार्थे रहेवुंज नहुं ठे एवुं जाणी जग वानने जोवालाग्यो हवे जगवत विशाला नगरियें गया, तिहां लोहकारनी शालायें काउ स्सग्गें रह्या, लोहार पण ठ महीना सुधी आजारी हतो, ते पण ते दिवसें साजो थयो ठे, तेथी लोह घडवानां उपकरण लइने आव्यो, प्रजुने मुंमा देखी अपमंगलिक जाणी घण लइने मारवा उठ्यो, एटलामां इंडें अवधिज्ञानथी जाणी त्यां आवी लोहारने निवार्यो कोइक स्थानकें इंडमहाराजें लोहारने तेहज घणथी मारी नाख्यो एम स्पष्ट लखेलुं ठे पठी तिहांथी जगवान ग्रामाकसन्निवेशे आव्या तिहां वनमांहे विजेलक यक्षें महिमा कर्यो त्यांथी निकल्या थका शालिशीर्षग्रामनी बाहेर आवी काउस्सग्गें रह्या ते वखतें माघ मासनी ऋतु हती तेमां अत्यंत टाढाढ पडे ठे एवा वखतमां जगवानें शीत उपसर्ग सहन कर्यो ते कहे ठे त्रिपृष्ठ वासुदेवना जवमां जगवाननी अपमानिती स्त्री हती ते स्त्री अनेक जवज्रमती थकी ते वखत कटपूत नामा व्यंतरी थयेली ठे जगवानने देखी तेने द्वेष उपन्यो तेथी तापसणीनुं रूप करी पोतानी जटामांहे पाणी जरीने परमेश्वरनां शरीर उपर ठांटयुं घणो कठण शीत उप सर्ग कर्यो एकतो शीयालानी ऋतु हती तेमां वली व्यंतरियें मेघवृष्टि करी, घणो ठंमो वायरो विकुर्व्यो एवा एवा विकट उपसर्ग कर्या ए सर्व प्रमाण विनानां पूर्वकृतकर्म प्रजुनां हतां ते आर्ही आवी नड्यां तेने कठण उपसर्ग सहन करीनें दूर कर्या पठी व्यंतरिनां उपसर्गथी प्रजु अजग रह्या एवा धैर्यवत प्रजुने जाणी पोतानो अपराध खमावीने व्यंतरि स्वस्थानकें गइ हवे तिहां शीतवेदना सहन करतां थकां जगवतने ठठ्ठें तपें करी यथार्थ लोकावधि ज्ञान उपन्युं ॥ त्यांथी जगवाने फरी ठठ्ठुं चोमासुं जद्दिका नगरीयें कर्युं तिहां चार महीना

पण नावेकरी सहित जगवानने पूजीने पठी श्रीमल्लीनाथजीनी पूजा करी तेवार पठी श्राठ
मु चोमासुं जगवानें राजगृही नगरीमां कस्तु तिहां चार मास तप कस्तु पठी चोमासी तपनुं
पारणे पारणु करीने प्रजु अनार्यदेशमां विचरवा गया ठे ए आठमु चोमासु जाणवु ॥ ७ ॥
हवे अनार्यदेशमा विचरता थकां जगवानें घणा घणा कठण उपसर्ग सहन कस्या ठे अने न
वमु चोमासुं पण तिहां अनार्यदेशमांज कस्तुं ते वली चारमासी तप सहित कस्तुं वली ति
हां रहेवानें जग्या पण मली नही तेथी विचरताज रह्या ठे ए नवमु चोमासु जाणवुं ॥
॥ ए ॥ वली पाठल पण बे महिना तिहांज अनार्यदेशमा तप सहित विचस्या ते पण आहार
विनानुं बे मासी तप थयुं ॥ पठी अनार्यदेशमांथी विहार करीनें सिद्धार्थगामथी कूर्मगामें जतां
मार्गमां एक तलनु जाड वधुं देखीनें गोशाले जगवानने पूठयु के आ थंज थाशे के नही
थाय जगवानन कस्तुं ए तिलना फूल सात ठे तेना जीव मरण पामीने एक सांकलीमां शींगमां
तलपणे उपजशे ते सान्नली गोशाले जगवाननु वचन जूतुं करवा सारुं ते जाडने उखेडीने
फेकी दीधुं तेवारें निकट रहेला व्यंतर देवतायें चंतव्यु जे जगवाननुं वचन जूतुं म थाजो एवुं जाणी
वर्षाद कस्यो पठी गायना खुरथी ते तलनुं जाड चपाणु तेथी धरतीमा पेठु थिरथयुं अने
वर्षादना योगें पाठुं उन्नुं थयुं ॥ हवे जगवान कूर्मगाम गया तिहां एक वेश्यायन नामा ता
पस ठे तेनुं नाम वेश्यायन केम पडयु ते कथा कहे ठे राजगृही नगरी अने चपानगरी ए
बेनी वचमां गूर्वर नामा एक गाम ठे तेमा कोशवी नामे एक कुटुंबी रहे ठे हवे ते गूर्वर गा
मनी पासें वली एक बीजु गाम ठे ते गामनी बाहेर कोइक राजानी फोज आवी पडी तेथी
गामना लोक सर्व नाशी गया तेमां एक स्त्री पोताना पुत्र सहित नाशति थकी जाय ठे ते स्त्रीनें

मार्गमां चोर लोकोयें पकडी लीधी अने बालक गूर्वरगामने बाहेर पड्यो रह्यो तेने कोशवी नामा कुटुंबीयें बाहेर जमतो देखीने उपाडी लीधो ते कुटुंबीने पुत्र हतो नही माटे तेने पुत्रनी पेरे राखीने महोटो कर्यो अने ते ठोकरानी माताने चोर लोकोये जइ चंपानगरीमां कोइ वेश्यानी पासे वेची तेथी ते वेश्यानो धंधो करवा लागी पछी अनुक्रमें ते ठोकरो जेवारे महोटो थयो तेवारे एक दिवसें चपानगरीमां व्यापार करवानें अर्थें आव्यो तिहां पोतानी माता जे वेश्यानो धंधो करे छे तेनी सार्थे अजाण पणे नोगनोगववा लाग्यो एक दिवस तेनी कुलदेवी गाय वाछडानुं रूप करीनें रस्तामां आवी रेही एटलामां ते ठोकरो पण वेश्यानें घेर जाय छे तेणे रस्तामां वाछडानां पूठ उपर पगदीधो तेवारे वाछडो बोल्यो जूउ माताजी आ महारा पूठ उपर पग आपीनें चाल्यो जाय छे पण रस्तो देखतो नथी तेवारें गाय बोली के हे बेटा' तुं एनुं नाम लइश नही एतो पोतानी सगी माता सार्थे नोग करतां पण कांइ मरतो नथी तो वली ताहारू शुं सांजलशे? ए वात सांजली ठोकरो चमक्यो पछी सर्वहकीगत कुलदेवीयें कही तेथी सांजलीने तापस थयो लोकोये तेनुं वेश्यायन ऋषि एवु नाम आप्युं ते जाडमां उंघे मुखे लटकतो नीचे अग्नि कुंम कर्यो छे तेमां तापे छे तेने तेजोलेश्या उपजी छे एवामां तिहांथी नगवान चाल्या जाय छे पछवाडे गोशालो पण चाल्यो जाय छे ते वखत वेश्यायन पोतानी जटाजूटमांथी जूउ निकलीने जमीन उपर पडी गयेली छे तेने उपाडीने पाछी पोतानी जटामां मूके छे ते जोइने गोशालो बोल्यो अरें तुंतो निष्केवल जूनोज घर छे के मुनिछो? एवु हास्यनुं वचन त्रणवार बोल्यो एटले वेश्यायनने क्रोध चड्यो तेवारे गोशाला उपर तेजोलेश्या मूकी ते जोइ नगवानने करुणा आवी तेवारें नगवाने तेने साहामी सीतलेश्या मूकी तेथी गोशालो बल्यो नही


चित्र ४२
वैश्यायन तापस
गोशालो
भगवान्

तपसीये पण जगवाननो प्रताप जाणी जगवानें खमाव्या पढी गोशालायें जगवानने पूढ्युं के तेजोलेश्या केम प्राप्त थाय तेनो उपाय बतावो तेवारें जगवान बोल्या के बेलानी तपस्या करे एटले ढठ करीने पारणे एक मुठी अडदना बाकुला खाइने तेना उपर एक पसलीजर उष्ण पाणी पीये, सूर्य सादामो उन्नो रहे, एरीते ढ महीना सुधी करे तो ढेवट तेजोलेश्या पुरुषनें उपजे आंही केटलाएक कहे ढे सिद्धार्थ व्यंतरे ए विधि कह्यो ढे गोशाले पण ए सामान्य विधि धारण करी लीधो ॥ हवे जगवान कूर्मगामथी सिद्धार्थपुरें आवतां रस्तामां पूर्वे कहेलु तलना छाडने उगेलुं यज्ञरूप देखी तेनें गोशालें विचार्युं तेमां सातपुज तल दीठा तेवारे सर्व सत्य मानीने गोशाले विचार्युं जे थवा वालु होय ते जरुर थाय एवीरीतें मानीजइने दृढनिश्चय वादी थयो ए मत निरधार करी लीधो तेवार पढी गोशालो जगवानथी जूदो रह्यो अने सावठीनगरीयें आवी तेजोलेश्या साधि तेपण सिद्ध थइ, तथा दिशाचरोनी पासेथी अष्टांग निमित्त शीख्यो ते जिन नही एटले तीर्थंकर नहतो तोपण लोकोने कहे हुं तीर्थंकर ढुं एवीरीतें तीर्थंकर नाम धरावतो पोतानी सिद्धाइ लोकोनी आगल देखाडतो थको जगवानथी न्यारो सावठी नगरीयें फरे ढे ॥ एवामां जगवान पण विचरता विचरता दशमुं चोमासु सावठी नगरीयें आवीने रह्या अने तिहां अनेक प्रकारनां तप कर्यां ए दशमु चोमासु जाणवु ॥ १० ॥ हवे जगवान चोमासुं पुरुं कर्या पढी विचित्र तपें विचरता थका ॥ यतंच ॥ दृढनूमि बहुमिछा, पेढालु जाणमागयो जयव ॥ पोलास चेइयंमि, ठिएगरायं महापडिमं ॥ १ ॥ सक्कोइय देवराया, सन्नागउ जणइ हरिसीउ वयणं ॥ तिन्निविलोग समछा, जिणवीरं मण चलेउजे ॥ २ ॥ सामाणिय संगमउ, देवो सक्कस्ससो अमरिसेण ॥ अह आगउ तुरंतो, मि



चित्र ૪૩

छविढि पढिनिविढो ॥ ३ ॥ ॥ हवे जगवान दृढ एटले कठणनूमिने विषे बहुम्लेछ जिहां वसे छे एवा म्लेछना देशमां गया तिहां जगवानने कुतरा प्रमुखें करच्या छे एवा बीजा पण अनेक प्रकारना कठण उपसर्ग थया छे ते सर्व सहन कस्या पछी एकदिवस जगवान पेढाल नामा ग्रामना उद्यानमां पोलास नामा कोइएक देवनो चैत्य छे तेने विषे अष्टमतपें सहित एक रात्रि महाप्रतिमायें रह्या छे एवामां शक्रेंद्र देवताउनो राजा ते पोतानी सजाने विषे रह्यो थको जगवानना धीरपणानी प्रशसा करे छे के जो त्रणलोक जेगा थाय तोपण श्रीवीरप्रजुने चलाववानें समर्थ थाय नहीं एवुं प्रजुनुं सत्व छे एवु इंद्रमहाराजनु वचन सर्व देवतायें सत्य करी मान्युं परंतु एक संगम नामे सामानिक देव मिथ्यादृष्टि अजव्यजातिनो छे तेणे अमर्ष आणीने विचार्युं जे मनुष्यने चलाववुं मगाववु एकांइ महोटी वात नथी एवुं चिंतवी इंद्रमहाराज पासें बोल्यो के हुं एक क्षणवारमा चलावी आवु एवुं कही इंद्रनां वचन अणमानतो थको चलाववानी प्रतिज्ञा करीने तुरत प्रजु पासें आव्यो तेणे आवीने एक रात्रिमां महोटा वीश उपसर्ग प्रजुने कस्या तिहां प्रथमतो धूल उडावी धूलनो वरसाद करीने प्रजुनां श्वासोश्वास रुंध्या, पछी बीजो वज्रना जेवां मुखवाली कीडीयो विकुर्वीनें प्रजुना शरीरनें चुटाव्युं करडाव्युं चालणी जेवुं शरीर कयु, पछी त्रीजु वज्रना जेवा मुखवालां डांस मछर विकुर्वीने प्रजुना शरीरने करडाव्युं, चोथुं घीमेल कीडीयो बनावीने चुटाव्युं, पांचमु वींछी बनावीने शरीरने करडाव्यु, छठु सर्पनां रूप करीने डसाव्युं, सातमु नोलीयानां रूपबनावीने मुख अने नखथी शरीरने विदारण कराव्यु, आठमु उंदरोनां रूप बनावीने शरीरने करडाव्युं, नवमु हाथी अने हाथीणीना रूप करीने सुंढथी उंचा उछाल्या, दसमुं दांत

अने पगथी शरीर मर्दन एटले शरीरने कचराव्यु, अगीआरमु पिशाचोना रूप बनावीने अट्ट हास्य करी बीवराव्या, बारमुं सिंहनुं रूप करी नख मार्या, शरीर फाड्युं, तेरमु सिद्धार्थ पिता तथा त्रिशला मातानां रूप करीने विलाप करतो बोल्यो के हे पुत्र! अमे ताहारां माता पिता आव्यां छैयें माटे तु दुःख देखीशमां अमारी साथे आव अमे तुने सुख करी आपीशु, चौदमु तीक्ष्ण चांच वाला पंखीना रूप विकुर्वीने प्रभुना कान अने मुखनु मांस खवराव्यु, पन्नरमु चांडालनां रूप करीनें तर्जना करी, सोलमु लाकडा खंधा बाली करीनें बेहु पग उपर हांडी चडावी उपर खीर रांधी, अग्निथी बाल्या सत्तरमु प्रचंड वायरे करी भगवतने घणा उछालीने पाछा नीचे जमीन उपर पटकी दीधा, अढारमु कलिकाल वायरो विकुर्वीने जे वायरो भगवानने चक्रनी पेरे भमाडे तेरीतें भमाड्या, ते पछी ओगणीशमु हजार भार प्रमाण लोहमनो गोलो बनावीने भगवानना मस्तक उपर नाख्यो तेणे करी भगवान केडसुधी केट लिक प्रतोमा ढींचण सुधी भूमिमांहे पेसी गया ए उपसर्गथी जो बीजो कोइ गमे तेवो बलवान होय तो पण चूरण थइ जाय पण एतो तीर्थंकरनुं शरीर छे तेने कांइ पण थयुं नही, वीशमु रातनी वखतें दिवस करी देखाड्यो अने संगमो बोल्यो के हे देवार्य! प्रभात थयुं माटे हवे विहार करो, गोचरी जाओ ते वखत भगवाने अवधिज्ञाने करी रात्रि जाणीने विचार्यु जे ए देवकृत चरित्र छे पछी संगमाये देवतानी ऋद्धि देखाडी देवांगनानां रूप करी हाव भाव दे खाडी अनुकूल उपसर्ग कर्या अने वली बोल्यो के तमोने जोइये ते वर मागो जो स्वर्ग मागो तो स्वर्ग आपु एवुं कह्युं तो पण कोइ रीतें भगवान लगारमात्र मन्या नही चलायमान थया नही एम महाविकट एवा वीश उपसर्ग एक रात्रिमा संगमे कर्या पछी जेवारे भगवान

गाममां गोचरी करवा जाय तेवारे ते घरनो आहार अशुद्ध करी आपे जे भगवानने लेवो कल्पे नही एवो करी नाखे तथा हरहमेश गाममांथी चोरी करीने ते चीज भगवान आगल मूकी जाय तेथी लोक भगवानने मार आपे कलंक चढावे वली भगवाननो चेलो बनीने गाममां कोइकोइ लोकोनां छिद्र जोवा जाय जेवारें लोक पूछे के तुं शावास्ते आंही आडोअवलु जोयां करे छे तेवारे तेने कहेके महारो गुरु रात्रिये चोरी करवा आवशे ते माटे हुं आगलथी जोइ राखु छु ते सांभली लोक आवीने भगवाननें मार आपे एवो उपसर्ग थयेलो जोइने भगवाने अभिग्रह कर्यो के ज्यांसुधी आ उपसर्ग मने थाय छे त्यांसुधी महारे आहार पाणी लेवुं नही वली ते संगमो केटलिएक गामनी स्त्रीयो भगवान साथे मलती छे एवुं लोक माने तेवु करी देखाडे तेवुं छता पण त्यां भगवान एकांत स्थाने रह्या एवा छ महीनासुधी उपसर्ग कर्या तो पण इंद्रमहाराजे तेने उपसर्ग करताने वार्यो नही केमके इंद्रमहाराजें एवु विचार्यु जे हुं एनें वारीश तो ए कहेशे के हुं तो भगवतने चलायमान करत पण शुं करुं के तमे मने वर्जना करी तेथी लाचार थयो एवो अपवाद टालवा सारु इंद्रें तेने काइपण कर्यु नही तोपण ज्यांसुधी एणे उपद्रव कर्या त्यांसुधी इंद्रें श्वास लीधो नही, मनमां घणोज उदास रह्यो, बीजां पण सर्व देव देवीयो शोकमां निस्तेज थकां बेशी रह्यां एम करता छ महीनानी अंते ते संगमो देवता पोतानी मेलें पोतेज हार खाइनें बोल्यो के हे आर्य! तमे सुखेथी गोचरी करो हुं हवे बिलकुल उपसर्ग करीश नही तेवारें भगवाने कह्युं हुं महारी इच्छायें गोचरी जइश एवी रीतें हारीने संगमो स्वर्गमां गयो, इंद्रमहाराजें तेनुं मुख पण जोयुं नही लाकडीयोथी कुटावी मार मराव्योनें स्वर्गमांथी काहाडी मूक्यो, ते ति

अने पगथी शरीर मर्दन एटले शरीरने कचराव्युं, अगीआरमुं पिशाचोनां रूप बनावीने अट्ट हास्य करी बीवराव्या, बारमुं सिंहनुं रूप करी नख मास्या, शरीर फाड्युं, तेरमुं सिद्धार्थ पिता तथा त्रिशला मातानां रूप करीने विलाप करतो बोल्यो के हे पुत्र ! अमे ताहारां माता पिता थाप्या छैयें माटे तुं दुःख देखीशमां अमारी साथे आव अमे तुने सुख करी आपीशुं, चौदमुं तीक्ष्ण चांच वालां पंखीनां रूप विकुर्वीने प्रभुना कान अने मुखनुं मांस खवराव्युं, पन्नरमुं चांमालनां रूप करीनें तर्जना करी, सोलमुं लाकडा खंधा बाली करीनें बेहु पग उपर हामी चढावी उपर खीर रांधी, अग्निथी बाल्या सत्तरमुं प्रचंम वायरे करी जगवतने उंचा उछालीने पाछा नीचे जमीन उपर पटकी दीधा, अढारमुं कलिकाल वायरो विकुर्वीने जे वायरो जगवानने चक्रनी पेरे जमाडे तेरीतें जमाड्या, ते पछी उंगणीसमुं हजार जार प्रमाण लोखंमनो गोलो बनावीने जगवानना मस्तक उपर नाख्यो तेणे करी जगवान केडसुधी केट लिक प्रतोमां ढींचण सुधी जूमिमांहे पेसी गया ए उपसर्गथी जो बीजो कोइ गमे तेवो बलवान होय तो पण चूरण थइ जाय पण एतो तीर्थकरनुं शरीर छे तेने कांइ पण थयुं नही, वीसमुं रातनी वखतें दिवस करी देखाड्यो अने संगमो बोल्यो के हे देवार्य ! प्रजात थयुं माटे हवे विहार करो, गोचरी जाउ ते वखत जगवाने अवधिज्ञाने करी रात्रि जाणीने विचार्युं जे ए देवकृत चरित्र छे वली संगमाये देवतानी ऋद्धि देखाडी देवांगनाना रूप करी हाव जाव दे खाडी अनुकूल उपसर्ग कस्या अने वली बोल्यो के तमोने जोइये ते वर मागो जो स्वर्ग मागो तो स्वर्ग आपुं एवुं कह्युं तो पण कोइ रीतें जगवान लगारमात्र मम्या नही चलायमान थया नही एम महाविकट एवा वीश उपसर्ग एक रात्रिमां संगमे कस्या पछी जेवारे जगवान


चित्र ४४
भगवान्
पूरणसेठका घर
भैसो
जीरण सेठका घर

ह्यांथी निकलीने पोतानी देवांगनाउ साथें लइने मेरुपर्वतनी चूलिकायें आवी रह्यो, एहनुं एक सागरोपमनुं आयुष्य छे, अने ए अभव्यजीवनी जाति छे एहवुं कहेवाय छे एम प्रभुनें दशमा वर्षने विषे घणा उपसर्ग थया पछी प्रभुयें छमासी तपनुं पारणुं वज्रगाममां गोपालकनें घरे खीरना भोजने कर्युं घणी प्रतोमां गोकुलने विषे वत्सपालीनामें वृद्ध स्त्रीयें परमान्ने पारणुं कराव्युं कह्युं छे तिहां पांचदिव्य प्रगट थयां वली चोसठ इंद्रादिकोयें तथा देवोयें आवीने प्रभुने सुखशाता पूछी सावत्थी नगरीयें शक्रेंद्रें प्रतिमामां प्रवेश करीनें प्रभुने वांद्या लोकोये देखीनें भगवाननो महिमा कर्यो ॥ हवे अगीआरमुं चोमासुं भगवाने विशाला नगरीमां कर्युं, तिहां जीर्णशेठें भावना भावी के भगवान भातपाणीनो लाभ देजो एवीरीतें चार महीनां पर्यंत भावना भावी तोपण मिथ्यात्वी पूरणशेठें दासीने हाथे अडदना बाकुला आप्या ते लइने भगवाने तेने घेर पारणुं कर्युं तिहां पंचदिव्य प्रगट थयां तेवारें लोक सर्व पूरणशेठने धन्य छे धन्य छे एम कहेवा लाग्या अने जीर्णशेठें जाण्युं जे हुं भाग्यहीण तेथी महारे एवो योग किहांथी मले, एम पश्चताप करतो रह्यो पछी केटलेक दिवसे केवली भगवान ते गाममां पधार्या तेवारें राजा प्रमुखें पूछ्युं के महारा नगरमां भाग्यशाली कोण छे? केवलीबोल्या के जीर्णशेठ भाग्यशाली छे राजायें पूछ्युं भगवानने दानतो पूरणशेठें दीधुं छे? केवली बोल्या एणे भावविना दान दीधुं छे माटे तेने द्रव्यथी लाभ थयो छे अने जीर्णशेठें भावथी दान दीधुं छे माटे बारमो देवलोकनुं आयुष्य बांध्युं छे ए अग्यारमुं चोमासुं कर्युं ॥ ॥ ११ ॥ हवे भगवान तिहांथी विहार करीने सुसमारपुरे प्रतिमास्थित काउस्सग्गें रह्या तेव स्तें चमरेंद्रनुं सौधर्म देवलोकें जावुं थयुं छे अने ते चमरेंद्रें प्रभुनुं शरण लीधुं छे ए अधिकार


चित्र ४४
भगवान्
पेसो

आगळ वश अछेरानी वातमां सविस्तर आवी गया छे माटे आहीं लख्या नथी तेवार पछी अनुक्रमें चवनवालायें प्रजुने पडिलाभ्या छे एटले जगवंतें कांइक कर्म शेष रह्यां जाणी कोश बीनगरीने विषे पोष वदि एकमना दिवसें पोतानी इच्छाथी एवो अनिग्रह कीधो छे के १ इव्य थीतो सूपडाना खूणामां अडदना बाकला राखेला होय, २ क्षेत्रथी एक पग घरनी ऊंबरानी मांहेली कोरे होय अने एक पग ऊंबरानी बाहेर रह्यो होय ३ कालथी सर्व भिक्षुक लोक भिक्षा मागी जाय ते पछी ४ जावथी राजानी पुत्रीहोय परंतु दासपणुं पामेली होय, ५ माथु मुंड्युं होय, ६ जेनां पगमां बेडीयो पडेली होय, ७ अठ्ठम तपकर्युं होय ते वली रुदन करती थेकी होय एवी स्त्री जो बे पोहोर दिवस चडे मध्यान्ह पछी भिक्षा आपे तो महारे पारणुं करवुं एवो अनिग्रह करीने श्रीवीरभगवान् गोचरियें नित्य भ्रमण करे पण क्यांय एवो योग बने नही त्या राजाना मंत्रीश्वर प्रमुखें अनेक उपाय कर्या पण कोइरीतें प्रजुनो अनिग्रह पूर्ण थाय नही एवा अवसरमां चंपानगरीनो दधिवाहन नामें राजा तेनी धारणी नामा स्त्रीनी वसुमतिनामा पुत्री छे तेनुं अपर नाम चंदनबाला छे हवे कोशंबी नगरीनो सतानिक नामें राजा छे तेणें राज्यविरोधें लशकर लेइ चंपानगरीने लूंटी तेवारे दधिवाहन राजा नाशी गयो अने धारणी राणी तथा चंदना ए बे कोइ एक सतानिक राजानो पायदल सेवक हतो तेना हाथमां आवी तेणे धारणीने कह्युं के तने हुं महारी स्त्री करीश ते सांभली धारणी राणी तो पोतानी जीन चांपीने मरण पामी पछी सुभटें विचार्युं जे रखेने आ छोकरी पण मरी जाय एवुं जाणी तेने विश्वास आपीने कोशंबी नगरीना चोवटा मांहे ते चंदनबालानें वेचवा गयो तेने वेश्या लेवा आवी तेवारे चंदनायें पूछ्युं तमारो शो आचार छे वेश्या बोली उत्तम पुरुष साथे

प्रीति करवी जलां मन मान्यां जोजन करवां, ए अमारो आचार ठे तेवारें चंदना बोली ए म हाराथी न थाय तथापि ते वेश्यायें बलात्कारें सेवा मांमी तेवारें शासन देवीयें वेश्याना कान अने नाक ठेदी नाल्यां वेश्या नाशी गइ पठी धनावहनामे शेठ जिनधर्मी हतो तेणे मूल आपी चंदनाने वेचाती लइ पोताने घेर तेडी आव्यो अने चंदना एवुं नाम आपी पुत्री पणे थापी, पण चदनानुं सु रूप देखी धनावहशेठनी मूलानामा वाजणी कुहाड स्त्री ठे ते मनमां द्वेष राखवा लागी के रखेने ए माहारी शोक थाय ' तेमाटे प्रथमथीज कांइ उपाय करु तो सारु पठी एक दिवस शेठना पग पखालतां चंदनाना माथानी वेंणी धरतीयें पडी तेने शेठें उपाडी ऊंचीकरी ते पेहेली दुराचार मूला स्त्रीय दीठी अने मनमां चितववा लागी जे शेठ एनी वेणीयें मोह्यो देखाय ठे मुखथी तो पुत्री कहे ठे पण एने स्त्री करी राखशे एमां सदेह नथी केमके हुं हवे बुढी थइ हु अने ए स्वरूप वती ठे पठी एक दिवसें शेठ कोइएक गामें गया पठवाडे मूलायें चंदनानुं मस्तक मूमावी हाथ पगमां बेडी घाली धूसानुं वस्त्र पहेरावीने ठाणा प्रमुखना ओरडामा बेसाडी पोते घरने बारणें तालुं आपी पोतानें पीयरें जती रही हवे चदना तो ओरडामां बेठी नवकार गणे ठे पोताना करेला कर्मने निंदे ठे एम करतां चोथे दिवसें शेठ फरी पोताने घेर आव्यो तिहां चंदनबालाने दीठी नही, तेवारे पडोसी लोकने पूठवा लाग्यो पण पहेली कजीयाखोर मूलानी बीकथी कोइ जवाब आपे नही पठी एक डोकरीयें सर्व वात कही तेवारें शेठें तालुं उघाडी ओर डामांथी बाहेर काहाडी मेडीमां बेसाडीने कयुं के हु लोहारने बोलावी जावु हु ते ताहारी बेडीयो उघाडशे चंदनायें कयुं हुं भूखें मरुं हुं तेवारें शेठें अडदना बाकला एक सूपडाने खुणे नाखी चंदनाने आपी आप्या अने कयुं के हु त्रण दिवसनी भूखी हो से आ बाकला खाजे हुं


चित्र ४५
इन्द्र
राजा
सेवको
भगवान्
चंदन बाला

१४। काढावा सारु लोहारने तेडा आवु छु एम कहा। चदनाना पूर्वजो अवस्था सादृत
उंमरे वेसाडी पोते लोहारने तेडवा गयो पठवाडे शुद्धसम्यक्त्वनी धरनारी चदना सती चिंतवे
छे जे कोइ अतिथि आवे तो तेने ए वोहरावी आपु एवामां मध्यान्ह वीत्या पठी प्रज्ञु पधा
स्या तेने देखी चंदनवाला हर्षवत थइ थकी बाकला देवा लागी परतु प्रज्ञुयें लीधेला अनिग्र
हना चार नेद तो मलता दीठा पण पांचमु रुदन दीठुं नहीं तेथी पाठा वल्या तेवारें चदना
डु:ख धरती थकी रुदन करवा लागी जे साधु पण महारा हाथनो आहार लेता नथी माटे
मने धिक्कार छे पठी नगवते रुदन करती देखी पोतानो सपूर्ण अनिग्रह थयो जाणी ते अ
डदना बाकला लीधा तिहां देवतायें पंचदिव्य प्रगट कर्यां वेडी नांगीने नेउर थया मस्तकें
वेणी पाठी आवी इन्द्रमहाराज आव्या, चंदनानी मातानी बहेन मृगावती ते चदनानी मासी
थाय तेना सबधथी संतानिकनामे राजा धन लेवा लाग्यो तेने इन्द्रे वार्यो अने कह्युं के चद
नाने दीक्षा लेवानी वखते ए धन काममां आवशे, चंदनायें कह्युं ए धन धनावह शेठनें
स्वाधीन करो तेने आपीने इन्द्र बोल्यो नगवाननी प्रथम साधवी ए चदना थाशे एम कही इन्द्र
स्वस्थानके गयो आहींआ पांचदिवसें उणा ठम्मासी तपनुं प्रज्ञुने पारणु थयु वली कोइक
प्रतमां एम कह्युं छे के वसुधारानी वृष्टि आपणे घरे थइ एवुं सांनलीने मूला पोताना पिय
रथी ठटति ठटति कसति कांचलीने जेम तेम बांधती तिहां आवी पठी महोटो जोलो वाल
ती ठतावलमां खोला नरीने धन उपाडवा मांड्युं ते उपाडतां अग्निज्वाला ठठी वस्त्र सर्व
बली नस्म थया श्याम वदन थइ थकी जाती हवी तेने देवतायें तर्जना करी कह्युं के ए
द्रव्य चदनबालानु छे चंदनायें ते धन शेठने आप्युं शेठें ते सर्व धन चदनानी दीक्षाना म

होत्सवें स्वरच्युं ठे पठी जगवान पण्माजिन्निका गामे कायोत्सर्गें रह्या तेवारें इन्द्रमहाराज वां दवा आव्या अने बोल्या के हे जगवान! आपने आटला दिवस पठी अमुक दहाडे केवलज्ञान उपजशे एवुं कहीने गया हवे प्रज्ञु विचरता अनुक्रमें चंपा नगरीयें स्वातिदत्त ब्राह्मणनी शा लायें बारमुं चोमासुं रह्या ए बारमुं चोमासुं ॥ १२ ॥ ॥ पठी तिहांथी पारणुं करीने जग वान विचारता पण्मानिक गामें आवी बाहेर उद्यानमां काउस्सग्गें रह्या ॥ ते अवसरमां जग वतना कानमां गोवालियें खीला ठोक्या ते उपसर्ग कहे ठे प्रज्ञुयें त्रिपृष्ठ वासुदेवने जवें शय्या पालकना कानमां तरुउं उष्ण करी नखाव्युं हतुं ते कर्म अहीआं प्रज्ञुने उदयें आव्युं, ते शय्या पालक अनेक जवभ्रमण करी हमणां गोपालक थयो ठे, तेथी ते वेरने लीधे तेणे गोवालीयें प्रज्ञुने बलद जलाव्या पोतें गाममां गयो त्यांथी पाठो आव्यो तेवारें बलद न दीठा, पठी बलद जोवा सारु चार प्रहर रात्रि जम्यो प्रजातें आव्यो तो जगवत पासे बलद बेठा दीठा, ते वखत ते गोवालीयाने पूर्वजवना वेरथी द्वेष उपन्यो तेथी जगवतना कानमां खीला बेसाड्या, जेम कोइ देखे नहीं कोइने खबर पडे नही तेवीरीतें बाहेरथी कापीने सरखा करीदीधा ते खीला जेना तीर थाय ठे एवा शरकट वृक्षना अग्र कापीने कानमां ठोक्या तेथी जगवतने महावेदना प्राप्त थइ तेनायोगें अत्यंत रुश थइ गया पठी जगवत तिहांथी विहार करता मध्यम अपापायें सिद्धार्थ वणिकने घेर गोचरीयें पधार्या तिहां खरक वैद्य बेठो हतो तेणे मार्गानुसारें प्रज्ञुने सशल्य दीठा ते वारें शेठने कहेवा लाग्यो के जगवाननें व्यथा ठे.शेठे कह्युं तो ए व्यथा मटावी आपवानो लाज तमे का लेता नथी? पठी शेठ अने वैद्य बेहु प्रज्ञुनी पठवाडे गया तिहां वैद्यें विचार करी बे साणसा लइ बे वृक्षोनी वच्चे वृक्षोनी माजीयो रेसमथी बांधी कान मांहेली खीली ... पकडीने


चित्र ४६
गायो
भगवान्
खीलाठोकनार
गोवालीयो


चित्र ४७
सिद्धार्थ शेठ
औषध लई ऊभो छे
भगवान्
खर वैद्य

रेसमनी दोरीयोथी ये वाछुयें वे वृक्षोनी माळोमां बांध्यां पछी ते बेहु माळीयो एकज वखतें
सायेज छोडी तेथी बेहु काननां खीला तरत सायेंज नीकळी आव्या एम बुद्धिना प्रपंचें करी खी
लातो काढ्या पण तेवखते प्रभुने वेदना एटली थइ के ते वेदनाना योगथी हांकमारी अर
राट मूक्यो वनमां घोराकार शब्द थयु तेथी पर्वत फाटी पड्या ते पर्वत हाळमां वंजणवाड
गामनी पासें छे त्यां वजणवाड तीर्थ थयो प्रभु मूर्छापामी धरतीयें पड्या तेने वे पुरुषे उ
पाडी बेसाड्या एम लोको कहे छे परन्तु तीर्थंकरने एवु सजवे नही ते उपरथी अनुमान क
रीयें छैयें के कायाना व्यापारथी हांक थइ हशे पण जावथी थयेली जणाती नथी "अनंत
बलित्वात्" ए वचन उपरथी निरधार थाय छे पछी काननी उपर व्रणसंरोहिणी औषधी ल
गावी तेथी ते घाव मळी गयो समाधि थइ ते शेठ अने वैद्य बेहु मरण पामी देवलोकें गया,
गोवाळीयो मरी सातमी नरकें गयो ए रीते जगवानने ए छेल्लो महोटो उपसर्ग गोवाळीये
कर्यो हवे जगवानने जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एवा त्रण प्रकारना उपसर्ग थया तेमां कया
कया जातिना उपसर्गमां महोटामां महोटो उपसर्ग कयो कयो थयो ते कही देखाडे छे प्रथम
जघन्य उपसर्गोमां तो शीत परीसहनो महोटो उपसर्ग व्यंतरीयें कर्यो तथा मध्यम उपसर्गो
मांहे संगम देवतायें महोटो उपसर्गकर्यो, अने उत्कृष्ट उपसर्गोमांहे महोटो उपसर्ग कानमां
खीला ठोकाणा तथा खीला काढधानो थयो ए रीतें जगवाने बारवर्ष सुधी काया वोसरावी जेम
कोइ पुरुष गाय दोहोवाने बेसे तेवे आसने प्रभु बेठा पण कोइ दिवसें धरतीयें बेठा नही ॥
तेमा मात्र बे घडी शूलपाणि यक्षने देहेरे निद्रा करी बाकी सर्वकाळनिद्रा विनानु गयुं
एम श्रीवीरप्रभुनें घणा उपसर्ग सहन करवा पड्या अने श्रीऋषभदेव तीर्थंकरने एक वर्ष सुधी

निद्रा मनी नही एटलो उपसर्ग थयो तथा मध्यम वावीश तीर्थंकरने स्वल्प उपसर्ग थया छे ॥
हवे जगवान जेवारे आगार एटले घर तेणे करी रहित एवा अणगार थया तेवारे एक घाल
गानी ईर्या समिति एटले जोइने चाले, बीजी जाषा समिति एटले विचारीने बोले, त्रीजी
एषणा समिति एटले दोष रहित आहार लीये, चोथी आदाण जमत्त निरकेवणा समिति ए
टले जाम मात्रां प्रमुखने जोइने जयणायें ग्रहण करे तथा जयणाये मूके, पांचमी उच्चार प्र
श्रवण खेलजल्ल सिंघाणपारिष्ठापनिका समिति एटले उलो, मात्रो, खंखार अने सेमो ए सर्व
निर्जीवस्थानकें परठवे ए पांच समितियें समता होता हवा पण श्रीतीर्थंकरनो आहार निहार
कोइनां दीठामां आवे नही, कोइना जाणवामां आवे नही, खेल, नाकमल, खंखार, होयज नही
केमके एने रोगनो अजाव छे वली जगवान मन, वचन अने कायाने कुकर्मेमां न चलावता
हवा मन वचन कायानें जलीरीतें वर्त्ताववाथी त्रण समिति सहित थया ॥ वली जगवान म
नगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति ए त्रण गुप्तियें गुप्ता होताहवा, वली जगवान इन्द्रियोने गो
पवी नववाड सहित शील राखता हवा, वली क्रोध मान माया अने लोजरहित, घणाज शी
तल स्वजाववाला, जेमने क्रोधादिक उपशांत थइ गया छे एवा छे, वली जेणे पापने रोधि मू
क्यां छे, निराश्रव थया छे, ममत्त्वरहित, धनरहित, ग्रथरहित होवाथी निर्ग्रंथ थया छे जेम
कांसानां पात्रने पाणी लागे नही तेम जगवान पण निर्लेप स्नेह रहित छे, जेम शखने रंग लागे
नही तेवा निरंजन छे तथा कोइ उपर राग नही द्वेष नही माटे रागद्वेष रहित, जेमजीवनी गति
क्याय रोकाती नथी तेम जगवानने क्यांयजातां गति हणाती एटले जगवानने विहार करवामां
कोइ रोकी शके नही,आकाश जेम निरालंब छे तेम जगवान पण कोइनो आधार राखता नथी,

वायरानी पेरें अप्रतिबद्ध विहार करें, शरदऋतुना मेघ समान जेनु हृदय निर्मल छे कमलना पत्रनी पेरें निर्लेप जाणवा, काचबानी पेरें इंद्रियोने गोपवी राख्यां छे, वली खग्गी नामनुं जानवर थाय छे तेना शिंगडानी पेरें एकजात छे, पंखी जेम पोतानी पासे कांइ पण परिग्रह राखे नही तेम भगवान पण पोतानीपासे कांइ पण परिग्रह राखे नही, भारंडपंखीनी पेरे अप्रमत्त, हस्तिनी पेरे कर्मरूप शत्रुउने मथन करवामां महापराक्रमवंत, वृषभनी पेरे संयमरूप भार निर्वाह करवाने सामर्थ्यवान, सिंहनी पेरें परिसह जीतवामां दुर्द्धर, मेरुनी पेरे अचल अकंप चलायमान थाय नही एवा छे, समुद्रनी पेरे गंभीर छे, चंद्रमानी पेरें सौम्यले श्यावत छे, वली सूर्यनीपेरे दीपतुं तेज छे जेनुं, तपाव्या कुंदनना सोना सरखा जातरूप छे, पृथ्वीनी पेरें सर्व फरस सहन करनार छे, घृते होमेला अग्नि सरखा तेजे करी जाज्वल्यमान छे, तेथी भगवानने क्यांये प्रतिबंध नथी, हवे जेनो प्रतिबंध नथी ते प्रतिबंध चार प्रकारनो छे ते कहे छे प्रथम द्रव्यथकी प्रतिबंध त्रण प्रकारनो छे तेमां एकतो मातापिता पुत्रादिक ते द्रव्य थकी सचित्त प्रतिबंध जाणवो बीजो घरेणा प्रमुखनो प्रतिबंध ते द्रव्यथी अचेत प्रतिबंध जाणवो, त्रीजो शणगार करेली स्त्री प्रमुखनो प्रतिबंध ते मिश्रप्रतिबंध जाणवो एरीतें द्रव्यथकी त्रणे प्रकारनो प्रतिबंध जेने नथी माटे ममत्व रहित छे वली बीजो क्षेत्रथकी प्रतिबंध ते गाम, नगर, उजाड, क्षेत्र, खलां, घर, घरनां आंगणां, आकाश इत्यादिक कोइनी उपर महारा पणु नथी माटे प्रतिबंध नथी, त्रीजो कालथी प्रतिबंध ते समयने विषे, आवलिका, श्वासोश्वास, सातश्वासोश्वासें एक स्तोक, क्षण, सातस्तोकनो एक लव, बे घडीनुं मुहूर्त्त, त्रीशमुहूर्त्ते एक अहोरात्रि, पन्नर अहोरात्रीयें एक पक्ष, बे पक्षे एक मास, बे मासे एक ऋतु, त्रण ऋतुनुं एक अयन, बे अय

नवुं एक वर्ष, पाच वर्षनो एक संवत्सर, इत्यादिक बीजा पण दीर्घ कालने विषे कोइ वखत आ अमुक काम हुं करीश एवो प्रतिबंध नथी तथा चोथो जावथी प्रतिबंध ते क्रोध, मान, माया, लोज, जय, हास्य, राग, द्वेष, वचन युद्ध, खोटुं कोइने कलंक आपवु, चुगली करवी, परना दोष प्रगट करी कहेवा, अरति द्वेष, रति प्रीति, कपटथी बोलवुं, मिथ्यात्वशल्य ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ५०० ॥ ए काम करे तो जावथी प्रतिबंध कह्यो कहेवाय ते मांहेलो ए जगवानने विषे कांइ पण नथी ॥ ११८ ॥ ॥ वली ते जगवंत वर्षाविना कालविना शेष उनाला अने शीयालाना आठ महीनामां गामने विषे एक रात्रि अने नगरने विषे पाच रात्रि लगण रहेवु एवो विहार कह्यो एवा थका विचरे तथा जेम कुहाडो चंदनने कापीनाखे पण चंदनतो उलटो कुहाडानी धारनें सुगंधज आपे अने जे नही छेदें तेने पण सुगंध आपे छे तेम जगवानने कोइ वासले छेदें कोइ चंदने लेपे ते बेहुनी उपर समान सरखु मन छे जेनुं वली तृण अने मणी तथा पाणो अने सोनुं ए बेहु समान छे जेने, दुःख अने सुख बेहु समान छे जेने, इहलोक अने परलोकनी गरज नथी जेने, जीववा अने मरवानी इछा नथी जेने, संसार समुद्रथी पार थवा वाला, कर्म रूप शत्रुनें मारवाने उजमाल थया एवा थका विचरे छे ॥ ११९ ॥ ॥ जे जगवाननां उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन अने चारित्र छे, आदि रहित स्थान विहार पराक्रम आर्जव मार्दव अल्प उपधी क्षमा निर्लोजता गुप्ति मनप्रसन्नता ए सर्व काम उत्कृष्ट छे साचो संयम तप करवाथी उपचय करेलुं फल निर्वाणमार्ग तेने विषे आत्माने जावता थका विचरे एवी रीतें जगवाननें बारवर्ष वीत्या ॥ हवे जगवाने बारवर्षमां जे कांइ तप कर्युं तेनी संख्या तथा पारणा कर्यां तेनी संख्या कहे छे एक संगम देवना उपसर्गमां छ मासी तप तेनुं पारणुं

एक बीजुं पांच दिवसें न्यून छ मासी तप तेनुं एक पारणुं, नव वखत चारमासी तप कर्युं तेना नव पारणां, बे त्रिमासी तपनां बे पारणां, बे अढीमासी तपनां बे पारणा, छ दोयमासी तपनां छ पारणां, बे दोढमासी तपनां बे पारणां, बार एकमासी तपना बार पारणां, ब होतेर अर्द्धमासी तपनां बहोतेर पारणां, बसेनें ओगणत्रीश छठ तप कर्यां तेनां बसेने ओगण त्रीश पारणां, ए बेलानी तपस्या करतां पन्नरमहीनानें आठ दिवस तपस्यामां गया, जद्र प्रतिमा दिन बे, महाजद्र प्रतिमा दिन चार, सर्वतोजद्र प्रतिमा दिन दश, ए त्रण प्रतिमानां त्रण पारणां अने तपना दिवस सोल जाणवा तथा एक रात्रिकी प्रतिमा बार तेनां पारणां बार ए रीतें सर्व तपना दिवसो मेलवतां सरवाले अगीआर वर्ष छ महीनानें पचीश दिवस एटला सर्व दिवस निराहार पणे चउविहारा जाणवा एनां यंत्रनी स्थापना नीचें करी छे तेमां बशेने उगणत्रीश छठ करी छे तेनां पारणा बशे ओगणत्रीश थयां तेमांथी एक छठ्ठुं छेलुं पारणुं केवली पणे थयुं गणीने बाकी बशे अठावीश पारणा लख्यां छे तथा बार एक रात्रिकी प्रतिमाने स्थानकें बार अठ्ठम तप लखीने सरवाले ४१६५ दिवस चउविहारा तपना थया अने ३५० दिवस प्रथम पारणा सहित आहारना थया सर्वमली ४५१५ दिवस छद्मस्थपणे रह्या तेना एकवर्षमां ३६० दिवसनी संख्या करतां बार वर्षने साडा छमहीनां थाय एरीतें जग वानें नित्य जोजनतो रह्युं पण चोथ तप एटले एक उपवास करीने पण पारणुं कोइ वखत कर्युं नही थोडामा थोडुं तप कर्यु ते पण छठ्ठं एटले बे उपवासनुं कर्युं छे॥ यंत्र स्थापना ॥ हवे श्रीवीरचरित्रानुसारें छद्मस्थपणाना चोमासानी संख्या कहीयें छेयें एक अस्थिग्रामें, बीजुं नालंदी पाडे, त्रीजुं चपानगरीयें, चोथुं पृष्ठचंपायें, पांचमुं जद्दिकायें, छट्ठुं पण जद्दिकायें,

तपनां नाम	केटला कस्या	एकवरदिव सनीसंख्या	पारणानी संख्या
छमासी पूरण	१	१८०	१
पंचदिवसूण छ मासी	१	१७५	१
चारमासी	९	१०८०	९
त्रणमासी	२	१८०	२
अढीमासी	२	१५०	२
वेमासी	६	३६०	६
दोढमासी	२	९०	२
एकमासी	१२	३६०	१२
अर्धमासी	७२	१०८०	७२
प्रतिमा, अठ्ठमतप	१२	३६	१२
छठ्ठतप	२२९	४५८	२२८
नद्रप्रतिमा	१	२	१
महानद्रप्रतिमा	१	४	१
सर्वतोनद्रप्रतिमा	१	१०	१
सरवाले		४१६५	३५०

सातमुं आलनिकायें, आठमुं राजगृहीयें, नवमु वज्रनूमीयें, दशमुं सावछियें, अगीआरमु विशालायें, बारमु चपानगरीयें, एरीतें बार चोमासां प्रनुनां थयां ॥ हवे तेरमां वर्षने विषें वर्त्तमान थका उनालानो बीजो महीनो, चोथुं पखवाडयु एटले वैशाखशुदि दशमने दिवसे पाछलो पोहोर दिवस रहे थके सुव्रतनामा दिवसे विजयमुहूर्त्तमां जंनिक गामने बाहेर रुजुवालुका नदीना तीर उपर वैयावर्त्तनामा चैत्यने घणु दूर नही तेम घणु ढुकडुं पण नही एवा स्थानकें सामक नामे गाथापतिना खेत्रमां शालिवृक्षने नीचे नगवान गोडुह आसने एटले गायने दोहोवा बेसीये तेवा आसनें उकडा बेसी आतापना लेता थका पाणी रहित बेलानी तपस्यामां आत्मानें नावता एवा स्वरूपें रह्या थका उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे थके ते अव

सरें ध्यानमां वर्त्तमान अर्थात् शुक्लध्यान ध्यावता थका जगवानने जे समान बीजुं कोइ ज्ञान नथी एवो व्याघात रहित, आवरण एटले ढांकणा रहित, सर्व द्रव्य पर्यायोने ग्रहण करवा वालुं संपूर्ण पूर्णिमानां चंद्रनी पेरें केवल एटले एकज पण बीजो कोइ जेने सहाय नही एवुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयुं ॥१२०॥ पछी जगवान श्रीमहावीरस्वामी अर्हन् एटले पूजनीय थया, राग द्वेष रहित थया, केवली थया, सर्व जाण थया, सर्वना देखवावाला थया, सर्व देव, मनुष्य, असुर लोकना पर्यायोने जाणे देखे, सर्वलोक सर्वजीवोनी आगति, गति, जवांतरमां जावुं, आयुष्य, देवलोकादिकोथी चववुं, देवलोकादिकोमां जइ उपजवुं, ते जीवोने मन, मनमां चिंतवेते, अन्न प्रमुख खाय ते, चोरी प्रमुख करे ते, मैथुनादिक सेवे ते, प्रकटकर्म करे ते, ढांकुं कर्म करे करावे ते, इत्यादिक वातो मांहेली कोइ एक पण वात जेनाथी ढानी रहे नही एवा ज्ञानवान थया जेनी जघन्यथी पण एक क्रोड देवता सेवा करे एवा थया, ते कालमां मन वचन कायाना योगमा वर्त्तमान सर्वजीवोना सर्व जाव जाणता थका, देखता थका जगवान विचरे ॥१२१॥ ॥ हवे जगवानने केवलज्ञान उत्पन्न थया पछी चोसठ इंद्रोनां आसन चलायमान थयां तेवारें चोशठे इंद्र दिक्षा महोत्सवनी पेरे केवलज्ञाननो महोत्सव करवा आव्या ते महोत्सव करीने जांजिकागामनी बाहेर समोसरणनी रचना करी तिहां प्रभुयें क्षणेकवार देशना आपी पण ते देशना निष्फल गइ कोइयें मात्र सामायिकादिक व्रत पण ग्रहण कर्यां नही तथा देव सर्वे अव्रति छे तेणे नवकारशी प्रमुख पच्चरकाण पण कर्युं नही, "इदमपिआश्चर्य" एटले ए पण आश्चर्य जाणवुं जे तीर्थंकर जेवानी देशना पण खाली गइ तेवारे जगवाने लाजनो अजाव जाणी आगल लाज थवानो अवसर जाणी तेज वखत तिहांथी विहार कर्यो यतः

कहेतां जेमाटे कह्युं छे के ॥ श्लोक ॥ तत्राविश्यक्षणधर्मं, देवोद्योतेजगद्गुरु ॥ ज्ञानाज्ञानावान्मध्य मार्यां, महसेनवनेगमत् ॥१॥ ॥ अर्थ —जिहां केवलज्ञान उपन्युं तिहां जगवान जीत एटले तीर्थंकरनो आचार पालवा माटे एक क्षणमात्र धर्मदेशना आपीने देवोना उद्योतने विषे जग तना गुरु एवा वीरस्वामी लाजनो अजाव जाणी तिहांथी बार योजन मध्यम पावानगरी तेनो महसेन नामक वन तिहां आवता हवा एटले रात्रियें विहार करवानी मर्याद नथी अने एमणे विहार कर्यो ते कल्पातीत पणु जणाववा माटे जे तीर्थंकर आचरे ते कल्पमां होय तथा कदापि नही पण होय परंतु छद्मस्थ साधु तो जे प्रमाणे तीर्थंकरें कल्प कह्यो होय ते प्रमा णेज चाले पण जो तेथी विपरीत चाले तो प्रायश्चित्तने पामे वली रात्रिनो विहार ते जीवनी जयणानें अर्थें वर्ज्यो छे केमके रात्रियें कोइ जीव जोवामां आवे नही माटे इहां श्लोकमां देवोद्योत एवो पाठ कह्यो ते व्यवहार जणाव्यो अन्यथा तीर्थंकरनें तो ज्ञान उद्योत सदा सर्वदा छे वली देवरचित कनककमल उपर पगला देतां चाले छे तेमाटे एमनु चालवुं सदा रात्रि दिवस सरखुं छे पण एनु दृष्टांत आपीने जे साधु रात्रिये विहार करे छे ते सुखशीलिया तीर्थंकरनी आज्ञा बाहिर छे माटें ते चारित्रथी भ्रष्ट जाणवा ॥ हवे जगवान मध्यमपावापुरीयें आव्या तिहां शुं थयुं ते कहे छे जेवारें मध्यम पावापुरीयें वीर प्रभु पधार्या तेवारं देवोये विशेष समवसरणनी रचना करी तिहां जगवंत पूर्वने बारणें पेसी अशोकवृक्षने त्रण प्रदक्षिणा देइ सिंहासने बेसी “ नमोतित्थस्स ” एम कही धर्मोपदेश आपे इहां मंगलाचार जणाववा माटे तीर्थ एवु सूत्रनुं नाम छे तेने नमस्कार करीनें पछी धर्मोपदेश करे हवे एहवामां तिहां एक सोमिल ब्राह्मण यज्ञार्थि यज्ञ एटले होम करावे छे

तिहां घणा ब्राह्मणो एकठा थयेला छे वली तेना तेड्या अगीयार महा पंमित सर्वेशिरोमणि ब्राह्मण आव्या छे यत ॥ अपापायां महापुर्यां, यज्ञार्थी सोमिलोद्विज ॥ तदाहूता समा जग्मु, रेकादशद्विजोत्तमा ॥ १ ॥ ॥ अर्थः– अपापा नामनी महानगरी तेने विषे रहेनारो सोमिलनामा ब्राह्मण तेणें यज्ञकरवाने अर्थें अगीयार महोटा ब्राह्मण बोलाव्या ते तिहां आव्या छे " तेषां नामानि " एटले तेनां नाम कहे छे १ इन्द्रनूति, २ अग्निनूति, ३ वायुनूति, ४ व्यक्त, ५ सुधर्म, ६ मंमित, ७ मोर्यपुत्र, ८ अकंपित, ९ अचलभ्राता, १० मेतार्य, ११ प्रनास ए अगीयारे महापंमित, चौदेविद्यानां जाण, वेदपाठी, महाअनिमानी छे ते एवु जाणे छे के अमारा जेवो जगतमां कोइ पंमित नथी तेम सर्वज्ञ जे लोक कहे छे ते अमेज छैयें हवे ते अगीयारे जणना मनमां जे अगीयार जुदाजुदा सदेह छे ते कहे छे ॥ पहेला इन्द्रनूतिना मनमां जीव छे के नथी एवो संदेह छे, बीजा अग्निनूतिना मनमां कर्मनो सदेह छे, त्रीजा वायुनूतिना मनमां जीव अने कर्म जुदां छे के एक छे एवो सदेह छे, ए त्रणे संदेह वाला त्रणे जण सहोदर एटले सगा नाइ छे एमनुं गौतमगोत्र छे चोथा व्यक्तना मनमां पंचनूतनो सदेह छे, पांचमां सुधर्मना मनमां जे जेहवो ते तेहवो एटले जे स्त्री होय ते मरीने बीजे नवे पण स्त्रीज थाय अने जे पुरुष होय ते मरीने पुरुषज थाय एवो सदेह छे, छठा मंमितना मनमां बंध मोक्ष छे के नथी एवो सदेह छे, सातमा मौर्यपुत्रनां मनमां देव छे के नथी एवो संदेह छे, आठमा अकंपितना मनमां नरक छे के नथी एवो सदेह छे, नवमा अचलभ्रातना मनमां पुण्य पाप छे के नथी एवो संदेह छे, दशमा मैतार्यना मनमां परलोक छे के नथी एवो सदेह छे, अगीआरमा प्रनासना मनमा मोक्ष छे के नथी एवो संदेह छे एवा अगीयारे जणने वेदना अर्थ

विपरीत समजवाथी सचेद रही गया छे पोतापासें पंमितास्रुं बल घणु छे माटे अनिमा नथी बीजानी वात चालवा वेला नथी हवे ए अगीआरनी पासें जे छात्र जणे छे तेनी सख्या कहे छे ॥ गाथा ॥ पंचण्हं पंचसया, अद्धुठसयाइंद्रुति दुन्निगणा ॥ दुन्न तु जुअल सयाण, तिसउ तिसउ हवइगछो ॥ १ ॥ ॥ अर्थ – पहेला पांच पंमितोनी पासें पाचपाचसो छात्र जणे छे ते पाचेनां पचीशसो छात्र थया तथा छठा अने सातमा पासे अद्धुठसया एटले साडात्र एसें साडात्रणसें छात्र जणेछे एम बेछना सातसे थया तेवारपछी वली बे युगल एटले आठमो अने नवमो ए पहेलो युगल अने दशमो तथा अगीआरमो ए बीजो युगल मली चारजणनी पासे त्रणसो त्रणसो छात्र जणे छे ते चारना मली बारसो थया एम सरवाले अगीआरेना मली चुमालीशसो छात्रोनो गछ एटले समुदाय थयो एटले अगीआरे पंमितोने चुमालीशसो विद्यार्थिउ छे एम घणा विप्र तिहां यज्ञमां मल्या छे ते सर्व यजन, याजन, अध्ययन, अध्या पन, दान, प्रतिग्रह ए षट्कर्म साधे छे, प्रभातें ब्रह्म गायत्री जपे छे, मध्यान्हे विष्णुगायत्री जपे छे, संध्यायें शिवसरस्वती जपे छे, हवे एमां प्रथम उपाध्यायनां नाम कहे छे शंकर, शिवकर, इश्वर, महेश्वर, धनेश्वर, सोमेश्वर, शुभंकर, सीमकर, क्षेमकर, करुणाकर इत्यादि हवे जानीनां नाम कहे छे गंगाधर, गयाधर, विद्याधर, महीधर, श्रीधर, लक्ष्मीधर, धरणी धर, भूधर, दामोदर, वृषोदर इत्यादि हवे दवेनां नाम कहे छे महादवे, शिवदवे, रामदवे, धामदवे, कामदवे, सहदवे, हरदवे, वासुदवे, श्रीदवे, बलदवे, धनदवे, चंद्रदवे हवे व्यासनां नाम कहे छे श्रीपतिव्यास, उमापति, गणपति, प्रजापति, विद्यापति, भूपति, महिपति, ज क्ष्मीपति, गंगापति, पृथ्वीपति, देवपति, दानवपति, धनपति हवे पंमितोनां नाम कहे छे


चित्र ४५
यज्ञशाला
यज्ञशालाना ब्राह्मणो

नागार्जुन पंडित, गोवर्द्धन, गुणवर्द्धन, विष्णु, कृष्ण, मुकुंद, गोविंद, आनंद, परमानंद, उद्धव, माधव, केशव, पुरुषोत्तम, नरोत्तम हवे जोशीनां नाम कहे छे स्वामिदत्तजोशी, भीमादत्त, रामदत्त, प्रज्ञादत्त, गुणदत्त, विद्यादत्त, सोमदत्त, धनदत्त, कर्मदत्त, धर्मदत्त, देवदत्त, चंद्रदत्त, सूरदत्त हवे त्रिवाडीनां नाम कहे छे हरिशर्म, अग्निशर्म, महाशर्म, देवशर्म, नरशर्म, सोमशर्म, सूरशर्म, राजशर्म, वासशर्म, गुणशर्म, धर्मशर्म, कर्मशर्म, कुमारशर्म, धनशर्म, जयशर्म, नागशर्म, विष्णुशर्म, शिवशर्म हवे चतुर्वेदीनां नाम कहे छे हरि, हरिहर, नरहरि, नारायण, नीलकंठ, कालकंठ, वैकुंठ, श्रीकंठ, मुरारि, हरिराम, जगन्नाथ, विश्वनाथ, श्रीराम, रामकृष्ण, शुकदेव, वामदेव, वडदेव, स्वयंभू हवे शुक्लनां नाम कहे छे कमलाकर, दिवाकर, प्रज्ञाकर, शंकर, यशस्कर, शोभाकर, गुणाकर, रत्नाकर, श्यामदास, रामदास, गोकुलदास, कृष्णदास, देवीदास, हरदास, द्वारिकादास, इत्यादिक जुदीजुदी शाखानां नामवाला ब्राह्मण ते देवलोकनां सुख पामवाने अर्थे यया थका यागकर्म करी रह्या छे ॥ एवा अवसरमां श्रीवीरस्वामी पूर्वे सन्मुख बेठा थका मिथ्यात्वकर्दम दूर करे एवी मेघसमान गंभीर ध्वनियें देशना आपे छे ते सांभलवा सारुं वैमानिक देवता आकाशें देवदुंदुभि वजाडता थका आवे छे, ते दुंदुभिनो नाद सांभली सर्व ब्राह्मण हर्ष पाम्या अने चिंतववा लागा के अमारा यज्ञमंत्र कहेवा छे के जे भणवाथकी प्रत्यक्ष देवो आवी ऊभा रहे एवा मंत्र अमे हमणा भण्या जेथी देवो पण आव्या एटलामां तो जेम चांडालनो पाडो वेगलो मूकीनें माणस बीजे रस्ते चाले तेम ते देवो पण विप्रोनो याग मंडप मूकीने श्रीवीरने समोसरणे जावा लागा वली ते देवो मांहो मांहे एवुं कहेता थका चाल्या जाय छे

के जलदी ठतावला जइ सर्वज्ञदेवने वांदीयें एवीदेवोना मुखनी वाणी सांजलीने इन्द्रनूति म नमां अमर्ष लावीने बीजा ब्राह्मणोनी आगल कहेवा लागो के जूवो जाइ ए आश्चर्य जेवी वात ठे के जे मनुष्यतो अजाण ठे मूर्खठे माटे नूले पण आ देवो ज्ञानवान थइने पण नूले ठे जे माटे ए आश्चर्य लागे ठे के आवो महोटो यज्ञमंमप देखीने आघा ते वली किहा जाय ठे वली महाराथी उपरांत वीजो सर्वज्ञ ते कोण ठे के जेनी पासें ए जाय ठे? तेवारे ते ब्राह्म णमांथी एक ब्राह्मण कहेवा लाग्यो के हे स्वामी! ए कोइक महोटो ढोंगी इन्द्रजालीर्ठ आ नग रनी बाहेर आव्यो ठे ते ईन्द्रजाल काढीनें पोते ज्ञानी थइ बेगे ठे बीजा लोकोने कहे ठे के हुं पारका मननी वात वधी जाणु हुं, एम घणा लोकोने नरमाव्या ठे तेथी देवता पण तिहा जोवा जाय ठे एवुं सांजली इन्द्रनूतिने अत्यंत मान सहित क्रोध चढयो तेवारें कहेवा लाग्यो के एवो कोण ठे जे महारा ठता ज्ञानीनु अनिमान धरीने इहां आवे ते शुं मने जाणतो नथी? माटे जूउ जाइ ए देवजे नूला ते एदेव पण एनां जेवाज अणसमजु हशे जेवो ए ज्ञानी तेवा ए देव पण जाणवा ॥ यत ॥ अहोसुरा कथम्रांत्या, तीर्थाम्बुवायसा ॥ कमलाकरव ेका, मक्षिकाचंदनयथा ॥ १ ॥ ॥ अर्थ —अहो इति आश्चर्य जे ए देव थइने भ्रांतियें करी जेम कागडा तीर्थप्रत्यें ठोडी जाय ठे तेम ए पण यज्ञ ठोडीने जाय ठे माटे ए देव का गडा सरखा ठे, वली जेम देडका समुद्र तजी जाय ठे तेम ए पण समुद्र जेवो यज्ञ तजीने जाय ठे माटे देडका जेहवा ए देव ठे वली जेम मक्षिका चंदनने ठोडी जाय तेम ए देव पण यज्ञरूप चंदनने ठोडी जाय ठे ॥ श्लोक ॥ करजा इव स[illegible] [illegible] शकरायथा ॥ अ

छे जेम ऊंट जला वृक्षोने छोडी केडने कांटाना वृक्ष उपर जाय तेम ए देवो पण यज्ञने छोडी चाल्या जाय छे, माटे उट जेवा छे, वली जेम क्षीरना जोजनने मूकीने जूंड विष्टा उपर जाय तेम ए देवो पण यज्ञरूप क्षीर जोजन तेने मूकीने विष्टाना जोजन समान इन्द्रजालीया पासे जाय छे माटे जूंड जेवा ए देव छे; वली जेम सूर्यना तेजने मूकीने घूड अंधारामां जाय तेम यज्ञरूप सूर्यने मूकीने ए देव अंधाररूप इन्द्रजालीया पासे जाय छे माटे घूड समान ए देवो छे ॥ ४ ॥ ॥ अथवा वली एवी पण रीतिछे के जे जूंडो माणस होय ते जूंडा पासे जाय जे माटे कयुं छे के ॥ गाथा ॥ अहवा जारिसो चिय, सो नाणी तारिसा सुरावेति ॥ अणुसरिसो सजोगो, गाम नडाण च मुरकाण ॥ १ ॥ ॥ अर्थ – अथवा वली इन्द्रभूति चिंतवे छे के जेहवो ए ज्ञानी छे तेवा ए देव छे तेथी ए बेहुनो सरखो संयोग मल्यो छे जेम ग्रामनट मूर्ख छे तेम गामना लोक पण मूर्ख छे ए बेनो सरखो सयोग मले छे तेम ए देवता जे जाय छे ते पण मूरख छे अने जे ए ज्ञानी छे ते पण मूरख छे तेमाटे जे पोते जेवो होय ते पोताना सरखा बीजा पासे जाय एम सरखे सरखा एक बीजानी पासे जाय आवे छे ए रीत छे वली गाहा ॥ रे छिद्धी विछिद्धी करेली, मम चडिस पायवे निंबे ॥ अहवा तुझ न दोसो, सरिसा सरिसेण रचंति ॥ १ ॥ ॥ अर्थ – कोइ एक माणस कारेलीनी वेलिने लिंबडाना वृक्ष उपरे चढती देखीने बोल्यो के हे सखि ! हे कारेली ! तु ए निंबना वृक्ष उपर चढीश नही केमके तु पोते कडवी छो अने निंब वृक्ष पण कडवो छे माटे रे जूंडी ! तु वली अधिक कडवी थइश एवु केण तेणे मान्युं नही अने निंबना वृक्षनी उपर चढती बंध थइ नही तेवारे ते माणस बोल्यो हे जोली ! ए ताहारो दोष नथी केमके जगतमां सरखे सरखा

मळे तेवारे राजी थाय तेम तमे पण बे सरखे सरखां छो तो एमा कांइ आश्चर्य नथी तेम इहां पण ए देवता अने ए ज्ञानी बेहु सरखे सरखा मळ्या छे वळी एवा इन्द्रजाळीयाने जइ देवो वांदे छे तो शुं ए देवो पण जूला पख्या न कहेवाय ? वळीपण इन्द्रभूति चितववा लाग्यो के महारा जेवा पंडितनी आगल ए लोकोने ठगे छे अने ज्ञानी नाम धरावे छे, ते महाराथी केम सहन करी शकाय ! महाराथी तो एनु खोटु अभिमान सघु जाय नही अने ए ढोंगीनो ढोंग पण माहारा शिवाय बीजो कोइ पाधरो करी शकशे नही माटे हुं जइने एनु अभिमान उतारी नाखुं जेम एक आकाशमां बे सूर्य होय नही वळी एक गुफामां बे सिंह एकठा न रहे तथा एक म्यानमां बे तरवार समाय नही तेम ए पण सर्वज्ञ अने हुं पण सर्वज्ञ एम कोइ वारे थायज नही ए इन्द्रजाळियो तो विदेशे कला शीखी आवेलो छे ते सर्वज्ञनुं नाम धरावी लोकोने अने देवताओने नोजवे छे अने हुतो सर्व विद्याओमां निपुण छुं एवो विचार करे छे एवामां प्रभुने वांदीने समोसरणथी केटला एक लोक फरी आव्या तेमने इन्द्रभूति पूछवा लाग्यो के अहो लोको तमे जेनी पासे गया हता ते सर्वज्ञ कहेवोक छे ? तेवारे लोक बोल्या के एनी वात कांइ कहेवामां आवती नथी परंतु तमे पोते सर्वज्ञ नाम धरावीने अमने शुं पुछोछो, ते सर्वज्ञतो बधी मननी वातो जाणे छे पण तमे तो एटलुं पण नथी जाणता अने फोकट सर्वज्ञ कहेवरावो छो ते सांभळी इन्द्रभूतियें जाण्युं जे ए निश्चय मायानु घर छे माटे सर्वलोकतो एने मानवा लाग्या पण जेवारे हुं जइश तेवारे ए माहारा आगल बोली शकशे नही, यत ॥

घरसूरा मछ पंडिया, गाम गमारा गोछ ॥ नरी सभामां बोलता, थरथर धूजे होठ ॥ १ ॥

॥ अर्थ – पोताना घरमां तो बधाय कहेके अमे शूरवीर छैयें अने पोताना मठमां पण ब

घाय फद्देके अमे पंमित ठेयें वली पोताना गाममां जे गमार होय तेपण पंच थाय ठे परंतु जे वारे पंमितोनी जरी सजामां बोलवुं पडे तेवारे तो तेना होठपण थर थर धूजवा मांडी जाय ठे तेम ए पण सर्वज्ञ एवुं नाम बीजानी आगल कहे ठे पण माहारी आगल ते बोली शकशे नही वली पण विचारे ठे के जे अग्नियें पर्वतोने बाली नाख्या तो ते अग्निनी आगल वृक्षनो श्यो जार? तथा जे वायुयें हाथी जेवाने उडाडी मूक्या ते वायरानी आगल पुणीनुं शुं जोर चाले? तथा जे नदीमां हाथी तणाइ गया ते नदीमां कीडी बापडी शा हिसाबमां गणाय? एम इंद्रभूति चिंतवे ठे एवामां अग्निभूति बोल्यो के हे जाइ! तमे ए इंद्रजालीयाने जीतवा माटे एटलो विचार शुं करो ठो, ए कीडी उपर कटक श्यो करवो? अलसीयानी उपर गरुडने तेडवो ते शुं? तृणनी उपर कुहाडो उपाडवो ते शा कामनो, कमलनी नालने कापवा सारु फरशी उपाडवी ते शा कामनी, वेलडी उखेडवामाटे हस्तिनुं शुं काम पडे! तेम ते बिचारा गरीबडा सर्वज्ञ पासे तमे वाद करवा शुं जाशो, मनेज आज्ञा आपोतो हुंज एने जीती आवुं, एवां जाइनां वचन सांजली इंद्रभूति बोल्यो के हे जाइ! एने शुं जीतवो ठे एनेतो महारा पांचशे शिष्य मांहेलो कोइ एक शिष्य जाय तेपण जीती आवे तथापि महाराथी रहे जातुं नथी केमके थोडुं पण शल्य कामनुं नही माटे हुं पोतेज जाइश जे कारण माटे बीजा तो सर्व वादी मात्रने में जीत्या ठे पण एक ए किहांएक रही गयेलो देखाय ठे जेम हाथीना मुखमांथी कोइक कण पडी जाय, जेम मग रांधतां कोइक करडुं रही जाय, जेम घाणी पीलतां कोइक तलनो दाणो रही जाय, जेम अगस्ति ऋषिने समुद्रनां त्रण चलु करतां कोइक जलबिंदु रही जाय, जेम चणा भुजतां कोइक चणो बाहेर पडी जाय, तेम ए

पण रही गयेलो जाणवो माटे हे नाइ' ए एकने अणजीते सर्वने न जीत्या एम लोकोमां कहेवाय जेम एकवार जे स्त्रीनुं शील खंमन थयुं ते स्त्री असती कहेवाय तेम एने जीत्या विना लोकमां महारो यश रहे नही माटे एनाथी माहारे पोतानेज वाद करवा जवुं पडशे अने एने हु हरावुं तोज महारो यश जगतमां रहे, वली पण अभिमानथी इच्छाति कहेछे॥ ॥ यतः ॥ हंहो वादिगणा लोटा, कर्णाटादि समुद्भवा ॥ कस्माददृश्यतां प्राप्ता, यूयं मम पुर सदा ॥ १ ॥ ॥ अर्थ – अरे कर्णाटादिक देशोमां उत्पन्न थयेला वादिउ' तमे महारा आगल केम नथी देखाता? शा माटे अदृश्य थइ रह्या छो? भावार्थ ए छे जे तमे घणाय वादियो महारा आगल हारेला छो तेथी छुपी रह्या छो, ते शा माटे के में आटला देशोना पंमितोने हराव्या छे ते कहेछे–॥ काव्य ॥ लाटा दूरगता प्रवादिनिवहा मौन श्रिता मालवा, मूकस्व मगधागता गतमदा गर्जति नो गुर्जराः ॥ काश्मीरा प्रणता पलायनकरा जातास्ति लंगोद्भवा, विश्वे चापि सनास्ति योहि कुरुते वाद मया सांप्रतं ॥ १ ॥ ॥ अर्थ –लोट कर्णाटक देशना वादि माहारी आगल अदृश्य थया, तो बीजा देशोना वादिउनो माहारे आगल श्यो भार तेज कहे छे, लाट देशना वादिउना समूह तेतो महारु नाम सांभलीने दूर जइ रह्या, परंतु कोइ ढुकडो नाव्यो, एटले तेणे एवुं विचार्युं जे जश्युं तो हारीने पाछु आववु पडशे एम जाणी दूर जइ रह्या तथा एकलाखने बाणु हजार मालव देशना वादि हता ते हारी जवाना भयने लीधे माहारी आगल मौनपणु धारण करी रह्या वली मगध देशना दश लाख वादि तेतो महारा आगल मुंगा थया एटले एक बोलपण बोली शक्या नही तथा सत्तर हजार गुजरात देशना वादि ते महारी आगले मद रहित थइ गया परंतु हाथीनी पेरे गाजीने

एक शब्द पण कही शक्या नही एटले वीन थइ रह्या हता वली जिहां सरस्वतीनो वास छे एवो श्रीकाश्मीर देश तिहाना वसनारा वादी ते आवीने महारे पगे लागा तथा जे तेलग देशमां उत्पन्न थयेला नवलाख वादि तेतो मात्र महारुं नाम सांजलीने नाशि गया वीजी कांइ पण वुद्धि तेमने उपनीज नही वधारे शुं कहुं जगतमां एवो कोइ पण पंमित नथी जे महारी साथे आवीने हमणा वाद करे एटले में सर्वकोइने जीत्या पण मने जीतनारो जगतमां कोइ पण नथी तो ए इन्द्रजालीयानो शो नार छे हुं ज्यांसुधी प्रमादमां हुं त्यांसुधी ए सर्वज्ञ कहेवाय छे पण जेवारे हुं वाद करवाने साहामो थयो तेवारे ए तेज वखत नाशि जाशे जेमाटे कह्युं छे के ॥ श्लोक ॥ तावद्गर्जति खद्योता, स्तावद्गर्जति चन्द्रमा ॥ उदिते तु सहस्रांशो, न खद्योतो न चन्द्रमा ॥ १ ॥ ॥ अर्थ —खजुआनो उद्योत क्यांसुधी रहे के जिहांसुधी चन्द्रमानो उद्योत नथाय त्यांसुधी खजुउ जलहल करी गाजतो चलके परतु चंन्द्रमानो उद्योत थाय तेवारे खजुआनो उद्योत कांइ पण चाले नही अने चन्द्रमानो उद्योत पण क्यांसुधी रहे के ज्यांसुधी सूर्यनो उदय नथाय त्यांसुधी रहे, पण जेवारे हजार किरणोने धरनार एवो जे सूर्य तेनो उदय थाय तेवारे खजुआनो अने चन्द्रमानो ए वेहुनो उद्योत रहे नही तेम वीजा वादीओने हराववाने तो ए इन्द्रजालियो समर्थ छे पण माहारी आगल एनो प्रनाव चाले नही एणे ज्यांसुधी मुजने दीठो नथी त्यांसुधी वीजा लोकोने नरमावे छे तो हवे महारे फोकट घरमां वेशी मान करवुं ते शा कामनुं ' हुं पोते तिहां जइने तेनुं वल पराक्रम जोउं के ए शुं नणे छे मुजने एटलां शास्त्रतो नलेना पाठनी पेरे आवडे छे ॥ श्लोक ॥ लक्षणे मम दक्षत्व, साहित्ये सहिता मतिः ॥ तर्के कर्कशता नित्यं, क्व शास्त्रे नास्ति मे श्रम ॥ १ ॥ ॥ अर्थ —लक्षण शा

स्त्रमां मद्दारुं वक्तपणु ठे एटले लक्षण शास्त्रतो हु सारी पेठे जाणुं स्त्री पुरुषादिकोनां व त्रीश लक्षण रुडीरीते कही देखाडुं तथा पदार्थना लक्षण तो एवां प्रतिपादन करु के जेमां अव्याप्ति प्रमुख दोष रहे नही ॥ १ ॥ तथा साहित्य शास्त्र जे काव्यादिक तेतो सर्व माहारे अस्खलित ठे ॥ २ ॥ तथा तर्कशास्त्रमां तो हु एवो निपुण हु के मद्दारा साहामो कोइने ज वाब देतां आवडेज नही एवा कठण तर्कने हुं जाणु हुं माटे तर्कशास्त्र मद्दारे कठण नथी एतो सदा अकर्कश ठे ॥ ३ ॥ घणु शुं कहियें एवु कयुं शास्त्र ठे के जेमां मद्दारो श्रम न थयो होय ? अर्थात् अढार व्याकरण, कोशनीतो गणतरीज नथी, छंद रत्नाकरादिक, अलंकार ते काव्यनी शोजा अतिशयालंकारादिक, नवरसादिक ते वात्स्यायनादिक, धर्मशास्त्र ते सर्व पुराण मीमांसादिक, ज्योतिष शास्त्र ते चूडामणि प्रमुख, वैद्यकशास्त्र कालज्ञानादिक, ए वधां शास्त्र मद्दाराथी अजाण्यां नथी तो ए इन्द्रजालीयो ते शुं मद्दाराथी जीते एवोठे माटे हवे हु त्यां जइ देव, दानव, मानव सर्वने देखतां एने हरावीने एनुं सर्वज्ञपणानुं बिरुद टाली नाखुं एवो मनमां गर्व आणी पांचशे ठात्रोने लेइ जेम जाणे इन्द्र खेंची लइ जतो होयनी ? ते श्यामाटे के जगवानना देशना प्रथम खाली गइ ठे ते माटे जगवान बार योजन चालीने एक रात्रीयें आव्या तेथी इन्द्रमहाराजे जाण्युं के एमने शिष्यनी प्राप्ति थाय तो रुडुं थाय ते माटे इन्द्रनो प्रेर्योज जाणे इन्द्रजूति समोसरण तरफ जतो होयनी ? एवी कवीश्वर घटना करे ठे अन्यथातो एमज थनारु ठे हवे इन्द्रजूति पांचशे ठात्रसहित परवर्यो थको वाद कर वानी इच्छाथी श्रीवीर जगवानना समोसरण तरफ चाल्यो ते वखते पांचशे ठात्रो इन्द्रजूतिनी बिरुदावली बोले ठे ते कहीयें ठैयें सरस्वती कंठाजरण एटले सरस्वतीतो अमारा उपाध्या

यने गलानुं आनूपण ठे अर्थात् सरस्वतीतो सदा एमना कंठमांज वसेठे, वादिविजय लक्ष्मी शरण, ज्ञात सर्वपुराण, वादिकदली कृपाण, पंमितश्रेणी शिरोमणि, कुमतांधकार नजोमणि, जितवादिवृंद, वादिगरुड गोविंद, वादिघटमुद्गर, वादिघूकनास्कर, वादिसमुद्र अगस्ति, वादिवृक्ष हस्ति, वादिमुखनंजन, सकलनूपालरंजन, षड्नाषावल्लीमूल, परवादिमस्तकशूल, वादिगोधूमघरट्ट, मर्दितवादि मरट्ट, वादिकंदकुद्दाल, वादिवृंदनूपाल, वादिगजसिंह, वादिशिरलीह, वादिवेश्यानुजंग, शब्दलहरी, गंगातरंग, सरस्वतीनंमार, चौदविद्या अलंकार, वादिहृदयशाल, वादियुथमाल, बहुराजसमाजमुकुट, महाबुद्धिविकट, ज्ञानरत्नाकर, शब्ददिवाकर, महाकवीश्वर, कृतशिष्यवृंदस्पति, निर्जितनार्गवमति, कौजंगम सरस्वती, प्रत्यक्षनारती, जितानेकवाद, सरस्वतीलब्धप्रसाद, इत्यादि अनेक प्रकारनी बिरुदावली गात्रो बोली रह्या ठे अने इन्द्रनूति चाल्यो जाय ठे वली रस्तामा विचार करवा लाग्यो के अरे जुउंतो खरा के आ मूर्ख चुं कर्युं एणे सर्वज्ञपणाना आटोपथी मने नाहक क्रोध चडाव्यो तो हवे एथी ए चुं सुखी थवानो ठे जेम कोइ अग्निमां पडे तो वली नस्म थया विना रहे नहीं तेम एणेपण कर्युं ठे एम चिंतवतो चालतो चालतो जेवारे समवसरणनी पहेली पावडी ठे तिहां चडीने जोवा लाग्यो ने जोयुं तो त्रण गढ दीठा ते गढ कहेवा ठे ते कहेठे त्यां प्रथम रूपानो गढ ठे तेना सुवर्णमय कोशीशा ठे, चारेदिशायें चार पोहोल ठे बीजो सुवर्ण गढ ठे तेना रत्नना कोशीशा ठे त्रीजो रत्ननो गढ ठे तेना मणिकातना कोशीशा ठे एक योजनने विस्तारे ठे तेनी वचमां अशोकवृक्ष ठे उपर त्रण ठत्र तिहां सुवर्णनुं सिंहासन ठे तेनी उपर स्वामि बेठा ठे ते इन्द्रनूतियें पोतानी नजरे दीठा तेवारे मनमां विचार्युं जे में घणाय वादी दीठा ठे परंतु आवो प्रकार किहां पण

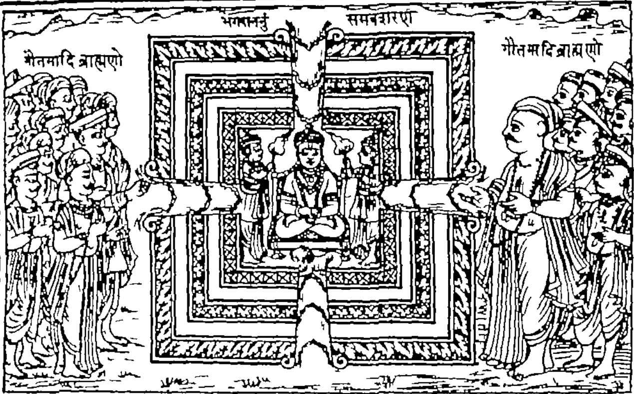
वीजो नथी तो ए शुं ब्रह्मा छे, ना ए ब्रह्मा पण देखातो नथी केमके ब्रह्माने तो सावित्री नामे स्त्री छे, हाथमा पवित्री छे, करे कमंमल छे, हंसवाहन छे, पांचमु गर्दन्नु मुख छे एटलां एं घाण मलतां नथी तेमाटे जाणीयें छैयें जे ए ब्रह्मा तो नथी, तो शुं ए विष्णु छे, ना ते पण नथी केमके विष्णुनेतो लक्ष्मी नामे स्त्री छे, चार हाथ छे, शख, चक्र, गदा अने धनुष ए आयुध छे, गरुड वाहन छे, वरणे श्याम छे, ते एंधाण एने नथी माटे ए विष्णुपण नथी तो ए शुं ब्रह्मज्ञानी छे, ना ते पण नथी केमके ते तो अरूपी छे, वली चंद्रमा सोले कलायें संपूर्ण छे परंतु कलंकसहित छे माटे चंद्रमा पण ए नथी तथा वली जो एने सूर्य कहु तो सूर्यथी पण एनुं तेज तो घणु अधिक छे परतु तेना किरण उष्ण छे ते उष्ण किरण एने नथी माटे सूर्य पण केम संजवे ! ! वली इंद्र छे एम जो कहु तो ते पण नथी कारण के तेने सहस्रनेत्र छे ते एने नथी वली जो ए मेरु हशे एम कहु तो मेरु कठण छे ते एमां कठणपणु देखातुं नथी माटे ए मेरुपण नथी तो ए सर्वगुणसंपूर्ण सर्वथी अधिक जे तीर्थंकर कहेवाय छे ते ए तीर्थंकर छे केमके एवा गुण तो तीर्थंकर विना बीजा कोइमां होय नही माटे समस्त पापहर, सर्वलोकना शिवकर, षट्कायना रक्षक, अनाथना नाथ, असरण शरण, तरण तारण, एवा श्रीवर्द्धमान सर्वज्ञ तीर्थंकर जे कहेवायछे ते ए संजवे छे सूर्यनी पेरे तेजवत, चंद्रमानी पेरे सौम्य, समुद्रनी पेरे वीठे उत्तर, एवा ए छे ते श्रीमहावीर तीर्थंकर विना बीजो केम संजवे ! ! वली पण इंद्रजूति श्रीवीर प्रभुने देखीने चिंतवे छे ॥ काव्य ॥ किंनदी किंमुरारि किंमुरतिरमण किंनल किंकुबेर, किंवा विद्याधरोसौ किमिंद्र सुरपतिः किंविधु किंविधाता ॥ नायं नायं न चायं न खलु न हि न वा नापि नासौ न चैव, तीर्थं कर्तुं प्रवृत्तो निजगुणविजवैर्वीरदेवाधिदेवः ॥

॥ १ ॥ ॥ अर्थ– शुं ए महादेव छे? अथवा शुं ए कृष्ण छे? अथवा शुं ए बहुरूपवंत छे माटे कामदेव छे? अथवा शुं ए नलराजा छे? अथवा शुं ए ईंद्रनो भंमारी कुवेर छे? अथवा शुं ए विद्याधरछे? अथवा शुं स्वर्ग ए इंद्र आव्यो छे? अथवा शुं ए चंद्र छे? अथवा शुं ए विधाता छे? एवीरीतें कल्पनाओ करीने पछी विचारपूर्वक निर्णय करवा लाग्यो के ए महादेव तो नथी केमके ते तो लगोट्यो छे तथा एनो सुवर्ण सरखो वर्ण छे माटे ए कृष्ण पण नथी वली स्त्रीवर्जित छे माटे ए कामदेव पण नथी वली राजचिन्हे करी वर्जित होवाथी निश्चयथी ए नलराजा पण नथी वली त्यागी छे माटे कुवेर भंमारी पण नथी, तथा पादचारी छे माटे विद्याधर पण नथी, नगरहित छे माटे इंद्र पण नथी, कलंक रहित छे माटे चंद्र पण नथी, घटना विवर्जित छे माटे विधाता पण नथी, एतो ए पूर्वे जे कह्या ते सर्वथी अधिक लक्षण धारी छे तो ए कोण छे एम विचार करतां जाणवामां आव्युं जे अरे एतो तीर्थंकरवाने अर्थे पोताना अतिशयादि गुण रूप धनवडे करीनें प्रवर्त्यो छे एवो देवाधिदेव श्रीवीर जिनेंद्र जे लोक कहे छे ते एज छे बीजो कोइ नथी एम जणाय छे तो हा इतिखेदे एमें शुं कयु आ हुं क्हेवा सकटमां आवी पड्यो, हवे हुं शुं करु एनी आगल माहरुं मान केम रहेशे'॥ श्लोक ॥
कथं मया महत्वं मे, रक्षणीयं पुरार्जितं ॥ प्रासादं कीलिकाहेतो, भंक्तुं कोनाम वांछति ॥ १ ॥
अर्थः– तो हवेजे महारु पूर्वे महोटापणुं थयुं छे तेने हुं केम करीने राखीश? एटले में पूर्वे घणा वादियोने जीत्या छे तेथी हु लोकमां प्रसिद्ध थयो छु, पंमित कहेवाउं, तो हवे मुजने महारा पंमितपणाने राखवानो उपाय श्यो करवो के जेथकी ए महारी पंमिताइ लोकोमां कायम रहे अने जो एनाथी वाद न करु तो लोको कहेशे के ए वाद करवा गयो हतो ते पाछो केम फरी

आव्यो, माटे में ए मूरखाई करी तो पण हवे वाद कया विना महारे पाछुं जावु नही केमके मारे तो हवे ए एकज जीतवो रह्यो छे तो हवे अप्पने माटे महारो बधो यश न गमाववो जेम कोइने एक खीलो जोइतो होय तो ते एक खीलाने माटे आखो प्रासाद नांगी खीलाने काढवा वाछे नही एवो मूर्ख कोइ होय नही वली कहेछे ॥ श्लोक ॥ सूत्रार्थी पुरुषोहारं, क स्रोटयितुमीहते ॥ क कामकलशस्यांश, स्फोटयेत् ठिकरीकृते ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ – एवो कोण पुरुष होय जे सूत्र एटले तांतणाने अर्थे हारने त्रोडवानी वांछना करे एटले सूत्रनो तागो जोइतो होय तेटला माटे हार त्रोडवो एम कोइ वांछे नही तेम महारे पण ए एकने हराव्या विना महारो यश रूपी हार त्रोडी नाखवो नही ए तात्पर्य जाणवुं तथा वली कोण पुरुष ठीकरी जोइती होय तेने अर्थे मनोवांछितने पूरनार एवो जे कामकुंभ तेना गला प्रमुखने फोडी नाखे अर्थात् ठीकरीने अर्थे कामकुंभने कोइ फोडी नाखे नही तेम हुं पण एनी साथे वाद कया विना जो एमज पाछो फरी जाउं तो कामकुंभ जेवो माहारो यश रूप घट ते फोडी नाख्या जेवुं थइ पडे, तेथी हुं मूर्खोनी गणतीमां थावं माटे महारे एम न करवु वली पण कहेछे ॥ श्लोक ॥ भस्मने चंदनकोवा, दहेद्ध प्राप्यमप्यथ ॥ लोहार्थी कोमहांनोधौ, नौभंग कर्तुमिच्छति ॥ ४ ॥ ॥ अर्थ – वली कोण माह्यो पुरुष भस्म एटले राखने अर्थे ड से प्राप्त थाय एवा चंदनने बाले एटले भस्मने अर्थे मलयागिरि चंदनने कोइ बाले नही तथा एवो कोण मूर्ख होय जे लोखंडना कटकाने अर्थे महासमुद्रनी मध्ये नाव एटले वाहाण तेने भांगी नाखवानी वांछा करे अर्थात् कोइ पण भांगे नही परंतु जो मूर्ख होय तो भांगी नाखे तेम जो हुं एनी साथे वाद न करुं तो महारुं यशरूप मलयागिरि चंदन ते बालीने

जस्म थाय तथा मढारी यश रूपी नौका मढासमुद्रमां नांगी नाख्या जेवुं मने थाय माटे एवो मूर्ख हुं न थाउ इति ॥ अथवा ए पूर्वोक्त श्लोकोनो अर्थ आवी रीते मेलववो जे इन्द्रभूतियें जगवानना अतिशय दीठा तेथी चिंतववा लाग्यो जे ए कोइ मढापुरुष ठे माटे एनी साथे हु वाद करीने अवश्य हारी जइश तेथी में पण एनी पासें आवीने एक खीलाने माटे मढारो यशरूपी प्रासाद नांगी नाखवा जेवी मूरखाइ करी तथा एक तांतणाने माटे हार त्रोडी नाखवानी इछा करी वली एक ठीकरीने माटे कामकुंजनें फोडी नाखवा जेवुं कर्युं तथा राखने अर्थें चंदन बालवा जेवुं कर्युं तथा लोखंडना कटकाने अर्थें मढासमुद्रमां मढारा संपादन करेला यशरूपी जढाजने नांगी नाखवां जेवुं कर्युं एम चिंतवी प्रजुना वचननो अतिशय जोवा मांड्यो तो आ प्रमाणे ठे ते कढेठे ॥ श्लोक ॥ सारंगी सिंहशाव स्पृशति सुतधिया नंदिनी व्याघ्रपोतं, मार्जारी हंसबाल प्रणयपरिवशात्केकिकांता जुजंगं ॥ वैराण्याजन्मजातान्यपि गलितमदा जंतवोन्येत्यजंति, श्रुत्वासाम्यैकरूढ प्रशमितकलुषं योगिनं क्षीणमोहं ॥ १ ॥ ॥ अर्थ – समपरिणामे करी एकांते रहेवाथी प्रकर्षें करीने उपशम्यां ठे कलुष एटले पाप जेमनां एवा वली क्षीण थयो ठे मोह जेमनो एवा योगीयोने सुणीने एटले उपसमसहित, पापरहित, मोहरहित एवा जे योगी मुनिराज तेमने सुणीने अर्थात् एवा मुनिनां वचन सांजलीने बीजा जीव पण जेने जन्मथकीज अरस्परस एक बीजानी साथे वैर रहेलां ठे एवा तिर्यंच जीव पण समोसरणमां मदरहित थया थका पोतपोतानां वैरने ठांडे ठे एटले जेनां एवां वचन ठे के जे सांजलवा थकी जीवो जन्मनां वैरने पण जूली जाय ठे ते वैर कोने कोने ठे ते कही देखाडे ठे –प्रजुना समोसरणमां आवेली (सारंगी के०) मृगली ते सिंहना बालकने स्पर्शे ठे एटले सिंहने अने हरणने

जन्मनुं वेर छे पण इहां समोसरणमां तेने वैर मटी जाय छे तेथी ते पोतपोतामां मळीने एकठां
बेठां छे तथा (नदिनी के०) गाय ते (सुतधिया के०) पोताना पुत्रनी बुद्धियें करीनें (व्या
घ्रपोतं के०) वाघना वाळकने चाटी रही छे एटले वाघने अने गायने वैर छे तोपण इहां ते
वैर टली गयुं छे माटे वाघना बाळकनी पासे बेठी थकी लाड करे छे वळी बिलाडी छे ते (प्र
णयपरिवशात् के०) स्नेहना वश थकी हंसना बाळकने स्पर्श करीने बेठी छे एटले बिलाडी
पण हंसना बाळकने मारती नथी वळी मोर अने सर्प्पने पोतपोतामां वैर छे तोपण ते इहां
प्रभुना समोसरणमां कहेवा थई बेठा छे तोके (केकिकांता के०) ढेल छे ते (भुजंगं के०)
सर्पनी साथे बेठी छे ए रीते इहां एवा प्रकारनां वैर ते सर्व जीवोनां मटी गयां छे एवो भग
वानना वचननो अतिशय देखी इंद्रभूति विस्मय थइ रह्यो छे एटलामां भगवान बोल्या के हे
इंद्रभूति ! गौतम गोत्रिया ! तुं भले आव्यो तुं सुख समाधिमां वर्त्ते छे एवु स्वामिनुं वचन सांभळी
इंद्रभूति मनमां चिंतववा लाग्यो जे ए महारुं नाम गोत्र किहांथी जाणे छे केमके हुं एनी
साथे क्यारे पण मळ्यो नथी, तथापि वळी एम विचार्युं जे महारुं नामतो जगतमां प्रसिद्ध
छे माटे कोण नथी जाणतो सर्व कोइ जाणेज छे जे हु कांइ अछतो माणस नथी सूर्य किहां
पण छानो रहे नही पण एणे मने महारु नाम कहीने जे बोलाव्यो तेनुं तत्व महारा जाण
वामां आवी गयुं के एणे मात्र मने छगवा सारुज बोलाव्यो जणाय छे परंतु हु कांइ एवो अण
समजु नथी जे एना मीठा वचनथी रीझ पामु पण हु तो जेवारे ए महारा मनमां जीव छे
के जीव नथी एवो संदेह रहेलो छे ते कही आपे अथवा ते संदेह भांजी आपे तेवारें रीझ
पामीने जाणु जे ए खरेखरो सर्वज्ञ छे नही कां तो मात्र महारी साथे एने वाद करवो पडे


चित्र ४८
भगवाननुं समवसरण
गौतमादि ब्राह्मणो
गौतमादि ब्राह्मणो

तेथी वीहितो थको मन राजी राखवा माटे मीठे वचने करी बोलावे ठे तेणे करी ए पोताना मनमां एवु समजतो हशे जे ए महारी साथे वाद करशे नही, पण ते तो हु मानुं नही एवुं विचारे ठे एटलामां फरी जगवान बोल्या हे इन्नूति ! जीव ठे के नथी एवो ताहारा मनमां संदेह ने ते हे इन्नूति ! ते वेदना पद जीवने ठथापवावालां अने जीवने थापवावालां जा णीने संदेहमां पडयो ठो तेहनो अर्थ तुं विपरीत करे ठे तेथी तने संदेह रही गयो ठे माटे ते वेदनां पदोनो अर्थ पूर्वापर विरोध रहित हु तमोने कहु ठु ते सांजल एम कही जगवान पोतें समुखें वेदनां पदोनुं उच्चारण करे ठे ते कहेवा ध्वनिथी करे ठे ते कहे ठे श्लोक ॥ समुद्रोमथ्यमान किं, गंगापूरोथवा किमु ॥ आविब्रह्मध्वनि किंवा, वीरवेदध्वनिर्बनौ ॥ १ ॥ अर्थ –जेम समुद्र मथन करता मांमयु होय ते वखतें जे ध्वनि थाय तेहवोज ध्वनि थायठे के शुं ? अथवा गंगानदीनु पूर आवे ते वखतें जे ध्वनि थाय तेज ध्वनि थाय ठे के शुं ? अथवा आविब्रह्म ध्वनि थायठे के शु एवो वीर जगवानना मुखथी ध्वनि थयो तेमां वेदमां जीवसत्ता निषेधपद एवां ठे ते कहे ठे ॥ अथ वेदपदानि यथा ॥ अर्थ –वेदना पद एम ठे " विज्ञान घन एवैतेच्योजूतेच्य समुठाय, तान्येवानुविनश्यति, नप्रेत्यसंज्ञास्तीति इति जीवाजावश्रुति ॥ अर्थ –हे गौतम ! ए वेदना पदोनो अर्थ तें आ प्रकारें जाण्योठे के विज्ञानघन एटले विज्ञान समूह जे चेतननो पिंम (सएव के०) तेहज चेतन पिंम ते (एतेच्योजूतेच्य के०) जूतजे पृथ्वी, अप, तेज, वायु अने आकाश ए पांच जूतो थकी (समुठाय के०) उत्पन्न थइने (तान्येवानुविनश्यति के०) ते जूतोनो नाश थया पठी ते विज्ञानघन चेतननो पण नाश थाय ठे तेमाटे (नप्रेत्यसंज्ञास्ति के०) परलोक नथी एटले ए पृथिव्यादिक पांच जूतोथी जीव उत्पन्न

थाय छे अने ए पृथिव्यादिक पांचभूत जेवारें नाश पामे तेवारें जीवनो पण नाश थइ जाय ते माटे जीव मरण पामीने परलोके जाय छे एम कहेवु वृथा छे केमके परलोकें जाय एवो जीव नथी तो छुं छे तोके ज्ञान छे तेहज ए भूतोथी उत्पन्न थाय छे जेम दीपक उपजीने जेवारें विनाशने पामे छे तेवारें तेनो प्रकाश पण जतो रहे छे तेम भूतोनो नाश थये ए जीवनो पण नाश थाय छे वली प्रयोग पण इहां छे ॥ ज्ञाननान्यभवगत्नोतिकत्वात् दीपवत् ॥ अर्थ —ज्ञान छे ते भूतथकी उत्पन्न थायछे माटे बीजे भवे जनार नथी एटले बीजा भवमां जवावालुं नथी जेम दीपक छे तेम ए पण छे माटे परभवे जनारो जीव नथी वली प्रत्यक्ष देखीयें छेयें जे पांचभूतलो देखवामां आवे छे पण जीव देखवामां आवतो नथी जेवारें माणस मरण पामे छे तेवारें तेने बालीने राख करीयें छेयें तिहां हाम प्रमुख तो नजरें दीठामां आवे छे पण जीवनु चिन्ह तो काइ देखातु नथी एवो विचार वेदना पदना अर्थथी तने भासे छे के जीव नथी बीजु वली ताहारा मनमां एम पण थाय छे के वेदमां एवुं पण पद छे॥ सवेअयमात्मा ज्ञानमयो मनोमयो वाङ्मयश्चक्षुर्मय आकाशमयो वायुमय स्तेजोमय आपोमय पृथिवीमय क्रोधमयः अक्रोधमय हर्षमय शोकमय धर्ममय अधर्ममय इत्यादि ॥ अर्थ —(स के०) ते (वे के०) पादपूरणे अथवा संबोधने (अयं के०) ए (आत्मा के०) जीव ते ज्ञानमय एटले ज्ञानवत, मनवालो, वचनवालो, नेत्रवालो, एमज आकाशमय, वायुमय, तेजमय, जलमय, पृथ्वीमय तथा क्रोधमय, अक्रोधमय, हर्षमय, शोकमय, धर्ममय, अधर्ममय, इत्यादिक वेदनां पद देखवाथी तने शंका उत्पन्न थयेली छे के जीव छे के नथी एवो तुने संदेह छे पण हे इन्द्रभूति! योगीश्वरें प्रत्यक्ष जाणेलो एवो ए आत्मा छे एटले ज्ञानीने

ए आत्मा प्रत्यक्ष छे जेम परमाणु बीजा सामान्य जीवोने दीठामां आवतां नथी पण ज्ञानवत जाणे छे (अनुमानादपि के०) अनुमानथी पण ए जीवसत्ता सिद्ध थाय छे ते अनुमान आ प्रमाणेछे—अस्त्यात्माशुद्धपदवाच्यत्वाद्‌घटवत् ॥ अर्थ —छे आत्मा शुद्धपद कहेवापणु छे माटे जेम घट पद छे ते असंयोगी पद छे तो ए घट नथी एम न कहेवाय तेम आत्मा पद जे छे तेपण संयोग रहित पद छे तेथी एनी पण नास्ति कहेवाय नही जगतमां जे जे पदार्थ शुद्धपद वाच्य छे ते ते पदार्थ असत् नथी अर्थात् सत् छे वली शास्त्रमां पण आत्मा कहे छे तो हवे शुं जाणीयें जीव छे के नथी केमके एक सूत्र जीव कहे अने एक सूत्र नास्ति कहे एवु जाणी हे इन्द्रभूति ! तने संदेह पड्यो छे पण ते संदेह खोटो छे, व्यर्थ छे, केमके जीवने नास्ति कहेनारू जे " विज्ञानघन " पद तेनो अर्थ तु विपरीत करे छे तेथी ए पूर्वापर विरोधने लीधे तने शंका रही छे माटे एनो अर्थ आम करवो योग्य छे जे विज्ञान एटले ज्ञान अने दर्शन ते अभिन्नपणाथकी विज्ञानघन एवु जीवनुं नाम छे तेहज "एतेभ्योभूतेभ्य " एटले भूत ते घटादिक छे तेने देखी उत्पन्न थाय छे एटले ज्ञाता जे विज्ञानघन तेने घटादिक जे ज्ञेय ते देखी ज्ञान उपजे छे तेवारे जाणे जे घट ते एहज छे ए ज्ञान ते (समुत्थाय के०) उपजीने (तान्येवके०) तेहज ज्ञान ते ज्ञेयनो उपयोग जावाथी तेमांज नाश थाय (अनुविनश्यति के०) पछी ते घटना बोधनो पर्याय करीने विनाश पामे छे (नप्रेत्यसंज्ञास्ति के०) जे पूर्वली ज्ञानसंज्ञा हती ते रहे नही एटले जे घट दीठो ते घटनु ज्ञान तेहज घटमां रह्युं पण घटनो उपयोग पटमां नथाय परमार्थ ए छे जे इन्द्रभूतिने विज्ञानघननी श्रुतिना अर्थथी संदेह हतो के जीव भूतमां उत्पन्न थाय अने भूतमांज नाश थाय परंतु परलोक नथी ए संदेह हतो ते

टाळी, मदगामी, येराग्यपामी, वीश सहस्त्रमी पावडाय चडा, आवारप्रभुन त्रण प्रदक्षिणा देइ, इंद्रभूति पगेलाग्यो अने शुद्धभावथी पाचसो गात्रो सहित दीक्षा लीधी एनुं गोतमगोत्र हतुं माटे गोतम एहवे नामे प्रसिद्ध थयो भगवानना मुखथी उपन्नेवा, विगमेश्वा, ध्रुवेवा ए त्रिपदी पामीने द्वादशांगीनी रचना करी जे माटे कहे छे ॥ श्लोक ॥ श्रीवीरमुखतोवेद, पदार्थ मगगत्यच ॥ प्रव्रज्य त्रिपदीं लब्ध्वा, द्वादशांगीं स निर्ममे ॥ १ ॥ ॥ अर्थ —श्रीवीरना मुखथी वेदपदनो अर्थ जाणी दीक्षा लेइने त्रिपदी पामी बार अंगने रचतो हवो ॥ इति प्रथम गणधर ॥ १ ॥ ॥ हवे इंद्रभूतियें दीक्षा लीधी ए वात एनो बीजो भाइ अग्निभूति छे तेणे सांभळी तेवारे विचारवा लाग्यो के कदाचित् अग्नि जे छे ते पाणी थइ जाय, पाषाण नरम थइ जाय, पर्वत वायुथी भगी जाय, सूर्य पश्चिम दिशायें उदय थाय, चंद्रमाथी अंगारा वर्षे, पाणी छे ते अग्निज्वाळा थइ जाय, अमृत खाधाथी मरण नीपजे, विष खाधाथी जीवतो थाय, पातालमां पृथ्वी पेसी जाय, मेरु पर्वत चलायमान थाय, समुद्र मर्यादा मूकी आपे, एटला वाना थनी जाय तेनी ना नथी परंतु महारो भाइ ए इंद्रजालीयाथी हारी जाय ए वात केवारे थने नही एम चिंतवना करे छे एवामां समोसरणथी केटलाक बीजा लोको गाममां आव्या तेमने अग्निभूतियें पोताना भाइ संबंधि वृत्तांत पूछवाथी ते कहेवा लाग्या के शुं पूछो छो ? इंद्रभूतितो भगवानना शिष्य थया ए अमे अमारी नजरे जोइ आव्या छैयें एवुं सांभळी अग्निभूति विचारवा लाग्यो के महारो भाइ अत्यंत माह्यो छतां केम छलाय ! पण वेदार्थें रखते छलाइ गयो हशे तो हवे हुं त्यां जइ ए इंद्रजालियाने जीतीने महारा भाइने पाछो वाळी आवु अने एना सर्वज्ञ पणानुं बिरुद पण टाळी आवु एम कही आमर्षे सहित

पांचशे गात्रोना परिवारे परवस्थो थको बिरुदावली बोलावतो थको त्यां जइ समवसरणनी पहेली पावडीयें पग आप्यो तेवारे प्रभुयें पण तेने पूर्वली रीते नामगोत्र कहीने बोलाव्यो अने कह्युं के हे अग्निभूति ! तुजने कर्म छे किंवा नथी एवो संशय छे ते तुं वेदपदनो अर्थ जाणतो नथी तेथी संशय रहे छे ते आवी रीते –अथ वेदपद ॥ पुरुष एवेदङ्सर्वंयद्भूतं यच्च भाव्यं ॥ इत्यादिक वेदना पदथी तु जाणे छे के जीव छे तेहज सर्व छे तो एथी बीजुं कर्म ते वली शुं केम संभवे ! एटले कर्म नथी केमके आत्मा तो अमूर्त्ति छे तेने कर्म केम लागे कारण के मूर्त्तिने अने अमूर्त्तिने मांहोमांहे संयोग होय नही माटे कर्म नथी वली कर्मथी जीवने सुखदुःख पण केम थाय ए पद उपरथी कर्म नथी एम तु माने छे तथा वली कोइक वेदना पद आम पण छे जे "पुण्य पुण्येन, पाप पापेन" ए उपरथी कर्म छे एम पण देखाय छे तो शुं कर्म छे के नथी ए ताहारो संदेह छे पण हे अग्निभूति ! ते जे वेदनां पद छे ते आत्मस्तुतिनां छे, परंतु कर्म निषेध करनारां नथी केमके अमूर्त्ति छते मूर्त्त द्रव्य साथे संयोग तो प्रत्यक्ष देखाय छे अमूर्त आकाशने मूर्ति वादला तेउने परस्पर योग थाय छे जे मूर्तिवत छे ते अमूर्तिने सुख दुःख करे छे जेम मदिरापान करनारने अचेत पणुं थाय छे ते मदिरा मूर्तिवत छे पण अमूर्ति जीव छे तेने मुझावे छे ते माटे कर्म छे एम सिद्ध थाय छे वली लोकमां एक सुभाग्य, एक दुर्भाग्य, एक सुरूपवान एक कुरूपवान, एक धनवान एक दारिद्री ए सर्व शुभाशुभ कर्मविना केवी रीते संभवे ए रीते वेदपदमां पण कर्म सत्ता सिद्ध छे तेथी कर्म अवश्य छे, इत्यादिक वेदपदना अर्थ सांभलीने अग्निभूतिनो पण संशय टल्यो तेवारे अहंकार छोडी भावसहित पांचशे छात्रनी साथे दिक्षा लीधी ॥ इति द्वितीय गणधर ॥

॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजो नाइ वायुनूति ठे तेणे अग्निनूतियें दीक्षा लीधी ते वात सांजली ते वारे चितववा लाग्यो जे महारा वे नाइयें ए सर्वज्ञनी पासे दिक्षा लीधी तो ते कोइ महात्मा पुरुषोत्तम देखाय ठे तेमाटे हुं पण तेने वांडु पूजु अने सशय पूठी पाप रहित थाउ एम विचारी ते पण नगवान पासे आव्यो नगवाने तेमज पूर्वोक्त रीते बोलाव्यो अने कह्युं के हे वायुनूति ! जीव तेहज शरीर एटले जीव अने शरीर ए वे एक ठे एवो तुजने सशय ठे ते वेदपदना अर्थ बरावर न जाणवाने लीधे ठे ते वेदपद "विज्ञानघनएवैतेन्योनूतेन्य'समुष्ठाय" इत्यादिक एनो अर्थ पूर्वली पेरे जाणवो ए पदथी जीव सत्ता ठे तो एम जाणीयें जे जीव ठे तो ते जीवनु नोग्य जे शरीर ते जीवथी निन्न ठे तथा ॥ सत्येनलन्यस्तपसाह्येषब्रह्मचर्येण ॥ इत्यादि वेदपदनो ए अर्थ ठे के सत्य, तप, ब्रह्मचर्य, एणे करीने सयतपुरुष, एह जाणे ठे जे जीव शरीरथी निन्न ठे वली प्रमाणथी पण प्रत्यक्ष जीव अने शरीर निन्न देखाय ठे केमके ए महारु शरीर ठे एम कहेवाय ठे तो इहां महारु शरीर ठे एम कहेनारो जीव ठे माटे जीव अने शरीर निन्न ठे एवु सांजली वायुनूतियें पण दीक्षा लीधी ॥ इति तृतीय गणधर ॥ ३ ॥ ॥ हवे चोथो अव्यक्त पण प्रज्ञुपासें आव्यो स्वामीये कह्यु के पांचनूत ठे के नथी ए तुजने सदेह ठे ते तुं वेदपदनो अर्थ नथी जाणतो माटे सदेह रहे ठे ते वेदपद (स्वप्नोपमंवैसकलके०) स्वप्ननी पेठे सर्व ठे एवो अर्थ थाय ठे ए पद उपरथी तुं जाणे ठे जे पांचनूत ठे के नथी ! पण ए पाठ जे ठे ते अनित्यता बतावनारो ठे परंतु नूतनी नास्ति करनारो नथी वली पृथ्वी देवता, आपो देवता, इत्यादिक वेदपद जे ठे ते सहु नूतनी सत्ता जूदी जूदी कहे ठे माटे पांचनूत ठे ते प्रत्यक्ष देखाय ठे एवुं सांजली संशयरहित थइ तेणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति चतुर्थ गणधर

॥ ४ ॥ ॥ हवे पांचमो सुधर्म आव्यो तेने जगवाने कह्युं के हे सुधर्म ! आ जवमां जे जेहवा होय ते परजवमां तेहवाज थाय एटले पुरुष मरीने पुरुषज थाय अने स्त्री मरण पामीने पर जवमां पण स्त्रीज थाय छे एवो तुजने संदेह छे ते वेदपद कहे छे ॥ पुरुषोवैपुरुषत्वमश्नुतेपशु पशुत्व ॥ एनो अर्थ तुं आवीरीतें जाणे छे के पुरुष मरीने पुरुष थाय अने पशु मरण पामीने पशु थाय ए अर्थ तु नित्य जाणे छे परंतु नित्य नथी ए जे वेदपद छे ते कोइक जीव आश्रयी छे जो ए पद नित्य होय तो वेदमां लखे छे जे ॥ शृगालोवैजायतेयःसपुरुषोदह्यते ॥ अर्थ –(य कें०) जे पुरुष (दह्यते के०) बले छे (स के०) ते पुरुष (शृगालो के०) सीआलीउ वै शब्द पादपूरणार्थमां छे (जायते के०) थाय छे एटले जे पुरुष बले छे ते पुरुष मरण पामीने सी आल थाय छे एमां पुरुष ते सीयाल थाय एम कह्युं माटे पुरुष मरीने पुरुषज थाय एवो संशय रा खवो नही पुरुष मरी सीआल पण थाय इत्यादि सांजली संशय मटावी दीक्षा लीधी ॥ इति पं चम गणधर ॥ ५ ॥ ॥ हवे छठ्ठो मंडितजी आव्यो तेने प्रभुयें कह्युं बंध मोक्ष छे के नथी ए तुजने संशय छे ते तुं वेदपदनो अर्थ जाणतो नथी ते वेदपद कहे छे ॥ सएषविगुणोविभुर्नबध्यते, संसरति वा न मुच्यते ॥ अर्थ –(सके०) ते (एष के०) ए (विगुण के०) सत्वगुणादि रहित (विभुके०) सर्वव्यापी (नबध्यते के०) कर्मेकरी बधातो नथी (संसरतिवा के०) संचरतो नथी एटले चालतो पण नथी (नमुच्यते के०) कर्मादि बंधनथी छूटतो पण नथी ए अर्थथी तु जाणे छे जे जीवने बंध मोक्ष नथी परंतु एम न जाणवुं ए वेदपद जे छे ते सिद्ध वर्णववु छे केमके सिद्धना जीवोने बंध मोक्ष नथी पण जे रागादियुक्त संसारी जीवो छे तेने तो बंध अने मोक्ष बेहु छे एवु सांजली संशय टाली एणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति षष्ट गणधर ॥ ६ ॥ ॥

हवे सातमो मौर्यपुत्र आव्यो तेने प्रभुयें कह्युं हे मौर्यपुत्र ! तुजने देव नथी एवो संदेह छे ते तुं वेदना पदनो अर्थ बराबर जाणतो नथी ते वेदपद आम छे ॥ मायोपमान इन्द्र यम वरुण कुबेरादि ॥ एनो अर्थ – माया जेम इन्द्र, यम, वरुण, अने कुबेरादिक छे एनाथी तुजने एवो संदेह छे के देवादि सर्व मायारूप छे परंतु वस्तुगतें नथी एम तुं जाणे छे पण ए मायारूप जे कह्या छे तेतो अनित्यता जणाववामाटे कह्याछे अने वेदमां ॥ सएष यज्ञायुधी यजमानो ऽञ्जसा स्वर्गलोकं गच्छति ॥ अर्थ – यज्ञरूप आयुध छे जेहने ते ए यज्ञ करनारो यजमान त त्काल सूधो स्वर्ग एटले देवलोकें जाय छे ए वेदपद उपरथी हे मौर्यपुत्र ! देवलोक छे एम सिद्ध थाय छे एवीरीतें वेदपदनो अर्थ सांभली मौर्यपुत्रनो संदेह टळ्यो तेथी दीक्षा लीधी ॥ इति सप्तमगणधर ॥ ७ ॥ ॥ हवे आठमो अकंपित आव्यो तेने स्वामीयें कह्युं हे अकंपित ! तुजने नारकी नथी एवीरीतनो संदेह छे ते वेदपदना अर्थनुं रहस्य तुं जाणतो नथी तेने लीधे संदेह छे ते वेदपद कहे छे ॥ नेह वै प्रेत्य नरके नारकास्सन्ति ॥ ए वेदपदना अर्थथी तुं एम जाणे छे के परलोकमां नारकी नथी परंतु ते अर्थ तुं खोटो समजे छे एनो अर्थ आम छे ते हुं तुजने कहुं छुं के (नेह के०) नहीं इहां (प्रेत्य के०) परलोकमां (नरके के०) नरकने विषे शाश्वता (नारका के०) नरकना जीव (वै के०) निश्चें एटले नारकीना जीव शाश्वता नथी एम जाणवुं, पण नारकी नथी एम न जाणवुं केमके वेदपदमां नारकी छे ते पद कहुं छुं ॥ नारको वै एष जायते यः शूद्रान्नमश्नाति ॥ अर्थ – जे शूद्रनुं अन्न लीये ते नारकी थाय ए वेदपद उपरथी नारकी छे एवो अर्थ सांभली एणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति अष्टम गणधर ॥ ८ ॥ ॥ हवे नवमो अचलभ्रातजी आव्यो तेने प्रभुयें कह्युं के ताहारा मनमां पुण्य पाप छे किंवा नथी एवो

संदेह ने ते तु वेदना पदनो अर्थ विरुद्ध समजे ठे तेने लीधे ठे ते वेदपद ॥ पुरुष एवेदछु ॥ इत्यादि बीजा गणधरना वेदपदना पाठमां एनो वधो अर्थ करेलो ठे ते रीते अहिं पण जाणवो माटे जीव पुण्यथी सुख पामे अने पापथी दुःख पामे एम पुण्य अने पाप ए वे वेदमां ने ए अर्थ सांजली संदेह टाली एणे पण दिक्षा लीधी ॥ इति नवम गणधर ॥ ए ॥ हवे दशमो मेतार्यजी आव्यो तेने प्रभुयें कयुं हे मेतार्य ! परलोक ठे के नथी एवो तुजने संदेह ठे तेना उपर वेदनां पद जे रीते प्रथम गणधरने कह्यां हतां ते रीते सर्व कही देखाड्यां वली ॥ अस्ति परलोक इहलोकस्यान्यथानुपपत्तेस्त्वत्पूर्वजवत् ॥ अर्थ —परलोक ठे जो न होय तो आ लोक पण केम कहेवाय माटे तादारा पूर्वजनी परें परलोक पण ठे जेम तादारा पूर्वज ठे तो तुं पण ठे अने जे पाप करीने मरण पामे ते नरकमां जाय अने धर्म करे ते मोक्षे जाय एवो अर्थ सांजली तेणे पण दिक्षा लीधी अने प्रभुनो शिष्य थयो ॥ इति दशम गणधर ॥ १० ॥ ॥ हवे अगीआरमो प्रजासजी आव्यो तेवारे प्रभु बोल्या हे प्रजास ! तुजने मोक्ष ठे के नथी एवो संदेह ठे ते तुं वेदपदनो अर्थ बराबर जाणतो नथी तेने लीधे ठे ते वेदपद कहे ठे ॥ जरामर्यं एतत्सर्वं यदग्निहोत्र ॥ अर्थ – जे ए (अग्निहोत्र के०) यज्ञ ठे (तत्सर्वं के०) ते सर्व (जरामर्यंवा के०) जावज्जीव करवो अने ए होममां जीव मरण पामे ठे ते पाप रूप ठे ते स्वर्गना सुख आपे पण तेथी मोक्ष न थाय केमके जावज्जीव ए करवो कह्यो माटे स्वर्गेज जवाय पण ते विना मोक्ष जावानो उपाय नथी तो मोक्ष केम थाय एम विचारतां मोक्ष नथीज एवो अर्थ तुं करे ठे तेथी तुजने संदेह रह्यो ठे परंतु ते अर्थ तु करे ने तेम नथी एनो अर्थ आवी रीते ठे ते हु तुजने कहु छुं ते सांजल जे ए अग्नि

होत्र छे ते जावज्जीव सर्व पण छे परंतु वा शब्दथी मुक्तिना अर्थी जे जीवो छे तेउए मोक्षना कारण सारू पण क्रियानुष्ठान करवुं एटले ए होमज सर्वकाल करवो नही परंतु मोक्षनो पण उपाय करवो तथा वली बे ब्रह्म छे (परमपरंके०) तेमा एकतो परब्रह्म अने बीजो अपर ब्रह्म (तत्रपरंसत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म के०) तिहां परब्रह्म तो सत्यरूप ज्ञान अनंतरूप नाशरहित ब्रह्म छे एटले अनंत ज्ञानमय ब्रह्म ते पर छे ए श्रुतिथी मोक्ष छे एम जाणवु ए अर्थ सांभली एणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति एकादशम गणधर ॥ ११ ॥ ॥ एरीते श्रीगोतम स्वामीथी मांडीने यावत् प्रभासजी पर्यंत सर्व मली अगीआर गणधर आव्या ते सर्वना म नमा जे जे संशय रह्या हता ते प्रभुयें टाल्या तेथी अगीआरे जणे मली पोताना चुम्मालीशसो शिष्यो सहित प्रभु पासेथी दीक्षा लीधी प्रभुयें सर्वने त्रिपदी आपी ते आवीरीतें – प्रथम उपणेइवा ॥ एटले सर्व उपजे छे एम कह्यु तेवारे शंका पेदा थाय जे सर्व उपजे छे तो ते जगतमां केवीरीतें समाय तेवारे बीजुं पद ॥ विगमेइवा ॥ एटले विनाश पामे छे ए पदमां पण शंका उपजे छे के जो विनाश थतो जाय तो सर्व संसार शून्य थइ जाय एम विचारी त्रीजुं पद कहेछे ॥ धुवेवा ॥ एटले ए संसारनी स्थिति निश्चल छे तेवारें जाण्युं जे उपजे छे, विणसे छे अने रहेनारो छे ते रहे पण छे एवी संसारनी स्थिति सदा सर्वदा त्रणेय कालमां चालती आवे छे एम त्रिपदी प्रभु पासेथी पामीने ए अगीआरेय गणधरे बे घडीमा एटले एक मुहूर्त्तमां द्वादशांगीनी रचना करी ते अवसरने विषे इंद्र महाराज पोते रत्नना थालमां वासक्षेप लेइ हाजर थया तेमाथी प्रभुयें मुठी भरीने अगीआरे गणधरने माथे अनुक्रमे वासक्षेप कर्यो ए तीर्थनी स्थापना थइ देवताउए देवडुंदुभि वगाड्यां अने जयजय शब्दने बोलवा लाग्या ॥ इति गणधरवाद

स्तया गणधरस्थापनाधिकारः ॥३॥ ॥ पछी चंदनबालायें जगवाननी देशना सांजली प्रतिबोध पामीने महामहोत्सव सहित प्रजुपासेथी दीक्षा लीधी तेनी पछवाडे बीजा पण घणा जनोए दीक्षा लीधी घणा श्रावक थया,घणी श्राविकाउं थइ, एम चार प्रकारना सघनी स्थापना करी॥ ॥ हवे गौतम स्वामीनो संबंध कहे छे, गौतम स्वामीनुं उत्कृष्टरूप, प्रथम संघयण, प्रथम संस्थान, छठ अछमादिक तपश्चर्या करता थका, धर्मदेशना देता थका, तेजोलेश्यादिक अठावीश लब्धि नाधरनार, चार ज्ञानवंत, चौदपूर्वधारी, श्रुतकेवली थया, जेने दीक्षा आपे, तेने केवल उपजे पोताने प्रजुउपर स्नेह घणो तेथी केवल उपजे नही तेवारें चिंतव्युं जे केम मने केवलज्ञाननी प्राप्ति थाशे के नही ? गौतमनी एवी चिंतवणीजोइ श्रीवीर जगवान देशनामां एवीरीतें बोल्या के जे पोतानी लब्धियें अष्टापद पर्वत उपर चढी चोवीश तीर्थंकरनें वांदे, ते जीव तेहज नवें मोक्ष जाय, एवी वीरनी वाणी सांजली बत्रीश कोश उंचो अष्टापद पर्वत छे जेनी आठ पाव डीयो छे तेना उपर सूर्यना किरण अवलंबीने श्रीगौतम स्वामी पोतानी लब्धियें चढया, तिहां चोवीश जिनने वांदी जगचिंतामणि स्तवन जोडी श्रीवयरस्वामीनो जीव तिर्यक्जृंनकनामा सामानिक देवछे तेने पुंमरीकाध्ययनें प्रतिबोधीने नीचें उतरया, तेवारें पन्नरशेंनें त्रण तापस चोथ, छठ अने अछम तपने पारणें कंदमूल फलादिनुं पारणुं करे, एम करतां बार मास वही गया छे तेमणें श्रीगौतमने उतरता दीठा तेवारें चिंतव्युं जे आपणे एना शिष्य थाइयें तो अ ष्टापद उपर जइ देवने वांदीयें एम धारी उठीने श्रीगौतमजीने पगें लागा, गौतमें तेमने प्र तिबोधिने दीक्षा आपी पछी मकोलारें अष्टापदें चढावी तापसने देव वदावीने पाछा उतारया, तेवारें गौतमजीयें पूछयुं के हे शिष्यो ! तमें पारणुं करशो ? ते बोल्या हा स्वामी, पछी गौत

मजी पोतानी लब्धियें करी खीरनो एक पडघो सवा शेरनो जरी आव्या अने तापसोने कह्युं के ज्वो पारणु करो, तेवारें खीरपात्र देखी तापस कहेवा लागा के खीर थोडीने खानार घणा माटे आटली खीरथी तो आंखे आंजण थाशे ? अथवा बधाने एकेकुं टीलुं कराशे ! पछी, गौतमजीयें कह्युं के हे शिष्यो मामले चालो महारे पारणु करी गुरु पासें जावु छे एम कही मामले बेसाडी तापसोनो सदेह जांजवाने अर्थें खीरना पात्रामा पोतानो अंगुठो मेल्यो, तेवारें अक्षीण लब्धियकी पन्नरशें त्रणे तापसने पारणां कराव्या, पोतें पण पारणु कर्युं, तिहां पांचशे ने एक तापसने तो खीर जमता जमतां श्रीगौतमना गुण चितवतां चितवतां केवल ज्ञान उपन्युं अने पांचशेने एकने प्रभुनु समोवसरण देखी केवल ज्ञान उपन्युं तथा पांचशें एक तापसने तो श्रीवीर जगवाननु मुख देखताज केवल ज्ञान उपन्युं एम पन्नरशें त्रणे तापस केवली थया तेणे वीरजगवानने वांदी केवलीनी सजायें जावा मांड्युं, तेवारें गौतम बोल्या हे शिष्यो ! तमे छद्मस्थनी सजायें बेसो अर्हीयातो केवलीनी सजा छे माटे न बेसवु तेवारें वीरजगवान् बोल्या हे गौतम ! तमें केवलीनी आशातना म करो, ए पन्नरशें त्रणे केवली थया छे, ते सांजली गौतम खेद पाम्या के हुं ? महारा शिष्य केवली थया पण हुं केवली थातो नथी एम घणो घणो चित्तमा खेद करवा लाग्यो, तेवारें जगवानें कह्युं के हे गौतम ! तुं खेद म कर, अंते आपणे बे सरखा थाशुं ॥ इति गौतम संबंध ॥ हवे जगवानें कया कया गाममां केटलां केटलां चोमासा कर्या ते सूत्रकार कहे छे — ते कालने विषे, ते समयने विषे, श्रमण जगवत श्रीमहावीरस्वामीने अस्थिग्रामनी निश्रायें वर्षाकालनुं पहेलु चोमासु थयुं तेवार पछी चपानगरीमां अने पृष्ठचपानी निश्रायें त्रण चोमासां वर्षावकालना थया एव चार तथा विशाला नग

रीयँ वाणिय गामनी निश्रायें करीने बार चोमासा वर्षाकालनां थया एव सोल तथा राजगृह नगरना नानदीनामे पाडानी बाहेर निश्रायें चोद चोमासां वर्षाकालनां थया एव त्रीश तथा मिथिना नगरीयें ठ चोमासां कर्या तथा नद्दिका नगरीयें बे चोमासां कर्या तथा आलन्निका नगरीयें एक चोमासु कर्युं तथा सावथि नगरीयें एक चोमासु कर्युं तथा अनार्य देशमां एक चोमासुं कर्युं एव एकतालीश थयां ठेल्लुं बेतालीशमु चोमासु मध्यम पावापुरी अपापा नगरीयें हस्तिपाल राजानी जूनी लेखकशालामा जगातनी मामवी कारकुननी सत्नामां वर्षाकाले रह्या ॥ १२३ ॥ ते चोमासानो चोथो महीनो सातमुं पखवाडीयुं कार्त्तिक वदि आमावास्याना दिवसनी रात्रिना ठेल्हाने विषे, जगवान श्रीमहावीरस्वामी काल प्राप्त थया जाति, जरा, मरण बधन एटले जनमवुं, वृद्ध थावुं, मरवुं तेनु जे बधन तेने छेदीने सिद्ध थया, तत्त्व जाणवा वाला थया, मुक्त थया, सर्व दुःखनो अत कर्यो, संताप रहित थया, सर्व दुःखनो क्षय थयो ॥१२४॥ पांच सवत्सर मांहेलो चद्रनामा बीजो सवत्सर वर्त्ते ठे तेने विषे, प्रीतिवर्द्धन नामे मास ते कार्त्तिक मास तेने विषे, नदीवर्द्धन नामा पक्ष, अग्निवेश्य नामा दिवस तेने विषे तथा क्यांएक उपशम एवुं बीजु नाम ए दिवसनु कहे ठे, देवानदा नामा रात्रि क्याएक बीजो निरत्ति एवु नाम पण ए रात्रिनु ठे जे लवमां जगवत मोक्षे पहोता ते लवनो नाम अर्च ठे एटले अर्च नामा लव, मुहूर्त्त नामा प्राण एटले श्वासोश्वास, सिद्ध नामा स्तोक, नाग नामा करण, सर्वार्थ सिद्ध नामा मुहूर्त्त, स्वाति नामा नक्षत्रनी साथें चद्रमानो योग होते ठते जगवान कायस्थिति नवस्थिति खपावीने कालगत थया, यावत् मन सबंधि शरीर सबंधि सर्व दुःखथी रहित थया ॥ १२५ ॥ ॥ जे रात्रिमां श्रमण जगवत श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया ते रा



भगवान् सुवर्ण कमले बेठा घणा भव्य जीवोने धर्मोपदेश देता थका निर्वाण पाम्या समाधिस्थ थया

त्रियें चारे निकायना घणा देव, घणी देवीयो स्वर्गलोक थकी हेठा तिर्छा लोकने विषे उतरवा लाग्यां तेणे करी तथा उंचा उर्ध्वलोकने विषे जावा लाग्यां तेथी करीने ते रात्रिने विषे आकाशमां घणो उद्योत होतो हवो ॥१२५॥ ॥ जे रात्रियें श्रमण जगवत श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया, ते रात्रियें घणा देव अने देवीयो आवतां जातां बहुज आकुल थयां तेथी अव्यक्त कोलाहल शब्द थवा लाग्यो ॥१२६॥ ॥ जे रात्रियें जगवान श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया ते रात्रिमां गौतम जे इन्द्रजूति अणगार जगवानना शिष्य तेनुं प्रेमबंधन त्रूटयु तेथी श्रीगौतमजीने केवल ज्ञान केवल दर्शन उपन्युं ॥ १२७ ॥ ॥ जे रात्रिमां श्रीगौतमस्वामीजीने केवल ज्ञान उपन्युं ते केवीरीते उपन्युं तेनी कथा कहे छे – पोतानो अंतसमय जाणीने श्रीमहावीर देवें श्री गौतमजीनो पोतानी उपर निवड स्नेह जाणी ते प्रशस्त स्नेह राग निवर्तन करवाने अर्थे सध्यासमयथी पहेलां श्रीगौतमस्वामीने देवशर्मा ब्राह्मणने प्रतिबोध करवा सारु पार्श्ववर्त्ती ग्रामें मोकल्या हता, ते ब्राह्मणने प्रतिबोध आपी तिहां रात्रि रही प्रजातें पाछा वल्या, तेवारें मार्गमां केटलाएक देवोने शून्य चित्ते देख्या अने उपयोगथी वीरनिर्वाण सांजल्युं, ते वारें वज्राहतनी पेरें मूर्छा पाम्या, थोडीवेला पछी सावधान थया, तेवारें मोहने वशें विलाप करवा लागा के हे प्रजो! तमे त्रण लोकना सूर्य अस्त पाम्या तो हवे मिथ्यात्वरूप अधकार पसरवा माण्डशे ! कुतीर्थरूप घुवडना समूह जागृत थइ गर्जारव करशे ! डुरमति ड कालरूप राक्षस प्रवेश करशे ! कुमतिरूप चोर घणा थाशे ! जेम सूर्य अस्त थये कमल कुमलाय, तेम चतुर्विध संघरूप कमल वन कुमलाशे ! जेम चंद्रविना आकाश, जिम दिवाविना मंदिर, जेम सूर्यविना दिवस, ए जेम शोजता नथी तेम तमारा विना ए जरत क्षेत्र शोजा रहित थाशे !

हे वीर तमारा विना हवे सात प्रकारना इति उपद्रव प्रवृत्त थशे, हे वीर तमारा विना पा
खंडी रूप तारा वे दीप्यमान थशे, तमाराविना धर्मरूप चन्द्रमाने पापरूप राहु ग्रहण क
रशे, हे श्री महावीरदेव ! हवे हुं कोना पगतलियां उपासतो थको महारा मनना संदेह पू
छीश कोने हुं जगवान् कही बोलावीश ! कोने हुं नमीश ! हे प्रजो ! हवे मुजने तुम विना
बीजो कोण गोतम कही बोलावशे ! हाहा ! ! हे वीर हे वीर ! तमें ए शुं कर्युं जे आ वखतें मने
दूर कीधि, लौकिक पणु पण नही राख्युं, शुं बालकनी पेरे आडो थेशी आपनो छेडहो प
कडी रहेत ? अथवा शुं केवल ज्ञाननो जाग मागत ? शुं मोक्षमार्ग संकीर्ण थात ? अथवा
शुं तमोने कांइ जारलागत ? के मुजने जोलावीने चाल्या गया, हे वीर जे वेलायें पोतानो बा
लक वेगलो होय तो पण तेने बोलावीने पोतानी पासें राखवो जोइयें ते वेलायें उलटो तमे
मुजने पोताथी दूर कर्यो, हे वीर तमे शुं तमारा उपर महारो कृतिम स्नेह जाण्यो ? हे वीर
हुं तमारे शुं असुखकारी थातो हतो जेथी मने मूकी गया, हे वीर तमे मुजने केम वीसारी
मूक्यो, हे वीर तमे आजे मुजने महोटा विरह रूप समुद्रमां नाख्यो, हे वीर तमारा विना हुं
महोटा वियोग रूप वाहमां वाढ्यो, हवे तमारा विना महारो डुःख कोण नांजशे, हे वीर हवे
समोसरणनी शोजा विलय थइ गइ, हवे मुक्ति मार्गनो साथ जांग्यो, हे वीर हवे जेम जल
विना माछली टलवले तेम तमारा विना चतुर्विध श्रीसंघ टलवलतो थशे, हे वीर तमारा व
चनरूप उपशम जलविना जिनशासन रूप वाडीयो बाग बगीचा सूकाइ जशे, हे वीर तमारा
विना समता रूप केतकी सूकाइ जशे, हे वीर हवे जव्यजीवना मनरूप भ्रमर ते किहां जइने
गुंजारव करशे, हे वीर हे गुणनिधान, हे जिनशासन नायक, हे जव्यजीव सुख दायक, हे

स्वामीमां महोटो अतिशय रह्यो छे इति गौतम केवलोत्पत्ति संपूर्ण ॥ जे रात्रीयें भगवान मोक्ष गया ते रात्रिमां नव मल्लनी जातिना उपन्या, नव लच्छनी जातीना उपन्या, काशी कोशल्य देशना मालक गण एटले परिवारना धणी एवा अढारे गण राजा छे ते भगवाननो मामो चेडो महाराजा छे तेना ए अढारे देशना राजा मित्र समान छे माटे मलवाने अर्थे आव्या छे ते राजा अमावास्याने दिवसें उपवास करीने रात्रें पोसहमां बेठा हता पछी ते राजाउए भगवत निर्वाण पाम्या माटे केवलज्ञान रूप जे भाव उद्योत हतो तेतो गयो तो हवे द्रव्य उद्योत करीशुं ॥ १२९ ॥ एटले पोसह उपवास रूप जे द्रव्य उद्योत ते आगला वरसो वरसें ए अमावास्या आवे थके करीशुं अथवा हवे द्रव्य उद्योत करशुं एवुं विचारीनें दीवा प्रमुख द्रव्य उद्योत कर्यो ते दिवसथी मंगलिकने अर्थे महोटु पर्व दीवालीनु थयु ते पर्वे भगवान मोक्ष पाम्या, शिवसुख निरुपद्रव सुख पाम्या ॥ वली कार्त्तिक शुदी एकमने दिवसें गौतम स्वामीने केवलज्ञान उपन्युं तेनो हर्ष जाणवो अने कार्त्तिक शुदी बीजने दिवसें भगवाननो महोटो भाइ नंदीवर्द्धन छे ते प्रभुनुं निर्वाण सांभलीने घणोज शोकवंत थयो तेनो शोक मटाववा सारुं भगवाननी बहेन सुदर्शनायें पोताने घेर नंदीवर्द्धनने तेडीने जिमाड्यो भाइनो शोक टाल्यो ते दिवसथी लोकोमां भाइबीज चाली ॥ १२९ ॥ जे रात्रिमां भगवान मोक्ष गया ते रात्रिमां क्षुद्र एटले क्रूर स्वभाव छे जेनो एवो अठ्यासी ग्रह माहेलो त्रिशमो भस्मराशिनामा ग्रह तेनी बे हजार वर्षनी एक नक्षत्र उपर स्थिति छे ते भगवानना उत्तराफाल्गुनी नामे जन्मनक्षत्र उपर आव्यो छे ॥ १३० ॥ ॥ जे दिवसथी भस्मराशि नामा महोटो ग्रह भगवानना जन्म नक्षत्र उपर आव्यो ते दिवसथी प्रारंभीने निर्ग्रंथ जे साधु साधवी छे तेमनी घणी

पूजा एटले उठीने उनुं थावुं आहारादिकनुं देवुं तथा सत्कार ते वस्त्रादिकनुं देवुं तेनी वृद्धि थाशे नहीं ॥१३१॥ इहां प्रथम जगवानने सौधर्मेंद्रे वीनति करी हती के हे महाराज ! तमे मोक्ष जाउंगे परंतु तमारा संतानीयांने बे हजार वर्ष पर्यंत पीडा थाशे माटे बे घडी जस्म ग्रह बाकी रह्यो छे एटलु बे घडीनु आयुष्य तमारुं वधारो एटले जस्मग्रह उतरी जाय तो पाछलथी आपना संतानीयां चेला चेलीने शाता उपजशे ते सांजली जगवान बोल्या हे इंद्र ! ए वात त्रणे कालमां न थाय तमे तो बे घडी आयु वधारवा कहो गे परंतु एक समय मात्र आयु पण महाराथी वधे नहीं त्रूटयु आयु कोइथी वधार्युं जाय नहीं ए एमज जावी छे जे बे हजार वर्ष पर्यंत महारा तीर्थमां शिष्योने बाधा थवा वाली छे तेने कोण वर्जी शके कोइनु पण सामर्थ्य नथी अने जेवारे जस्मराशी ग्रहना बे हजार वर्ष पुरण थइ जाशे तेवारे निर्ग्रंथोनी घणीज पूजा सत्कारादिक मानता थाशे धर्मनो उदय थाशे, श्रीसंघने हर्ष थाशे ॥ दोहो ॥ घडीन लभे आगली, इस्युं अखे वीर ॥ इम जाणी जीव धर्मकर, ज्यां लगे वहे शरीर ॥ १३२ ॥ ॥ जे रात्रियें जगवान मोक्ष गया ते रात्रियें घणा जीणा जीणा कुंथुआ तेंद्रिय जातीना जीव उत्पन्न थया ते उठ्या पण नजाय, उठरीने अलगा पण न मूकाय अने साधु साधवीने नजरे नहीं आवे सीघ्र चाले तेवारे देखाय ॥ १३३ ॥ ते देखी घणा साधु साध्वीयें जात पाणी आदिक चारे आहारनो त्याग करी अनशन कर्युं तिहां शिष्यें पुछयुं जे हे गुरु महाराज आवी रीतनो उपद्रव केम थयो तेवारें गुरु बोल्या हे वत्स ! आज पछी चारित्र दुःखे पलशे ॥ १३४ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे जगवान श्रीमहावीरस्वामीने इंद्रजूति आदेदेइने चौद हजार उत्कृष्टी साधुउनी संपदा थइ ॥ १३५ ॥ ॥ जगवान श्रीमहा

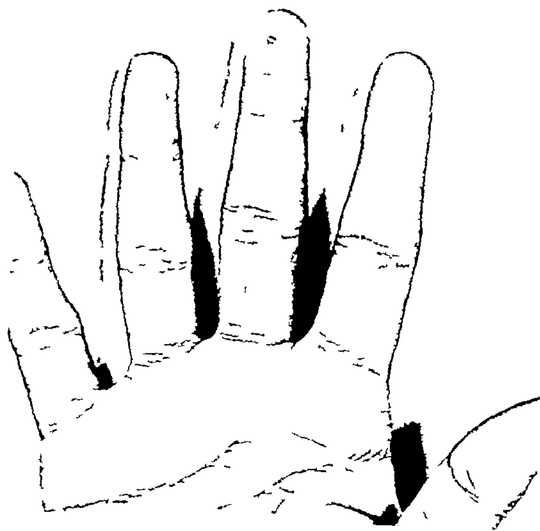
वीरस्वामीने चंदनबाला प्रमुख छत्रीश हजार उत्कृष्टी साध्वीउनी संपदा थइ ॥ १३५ ॥ ॥ जगवानने शंखजी तथा शतकजी आदे देइने १५९००० उत्कृष्टी श्रावकोनी संपदा थइ ॥ ॥ १३७ ॥ ॥ जगवानने सुलशा, रेवती प्रमुख ३१८००० उत्कृष्टी श्राविकाउनी संपदा थइ ॥ १३८ ॥ जगवानने केवली नही पण केवली सरखा सर्व अक्षरोना संयोग जाणे तेवा केवलीनी पेरें सत्य प्ररूपणा करवा वाला एवा त्रणशें साधुउं चौद पूर्वधारीनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ १३९ ॥ जगवानने तेरशो साधुउं अवधिज्ञानीनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ १४० ॥ ॥ जगवान श्रीमहावीर स्वामीने सातसें केवलज्ञानी संपूर्ण केवलज्ञान अने केवल दर्शनना धरनारनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥१४१॥ ॥ जगवानने जे देवतानी ऋद्धि बनावी लीये एवा सातशें वैक्रियलब्धिना धरनारनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥१४२॥ ॥ जगवानने पांचशें विपुलमति जे अढीद्वीप बे समुद्रमां संज्ञीपंचेंद्रीय पर्याप्ता जीवोना मनना जाव जाणे एवा विपुलमति मन पर्यवज्ञानीनी उत्कृष्टी संपदा थइ १४३ जगवानने जे देवो अने मनुष्योनी परषदामां वेशी वाद करता कोइथी हारे नही एवा चारसे वादिउंनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥१४४॥ ॥ श्रीमहावीरने जे अंते एटले समीपे वासी एटले वसे रहे तेने अंतेवासी कहीयें एवा सातशे शिष्य उत्कृष्टा मोक्ष गया ए जगवानना पोताना हाथ दिक्षित जाणवा तथा चौदशे साधवी उत्कृष्टी मोक्ष गइ ते पण पोतानी हाथ दिक्षित जाणवी ॥१४५॥ ॥ श्रीमहावीरने जे आगामि नवे मोक्ष जावावाला जेमनी गतिनुं नद्रुं आयुष्य एवा उत्कृष्टा आठशो साधुउं विजयादि पांच अनुत्तर विमाने गया ॥ १४६ ॥ श्रमण जगवान् श्रीमहावीर स्वामीने बे प्रकारें अंतगड नूमि थइ एटले मुक्ति मार्गनी मर्यादा थइ ते आवी रीते के नव जे संसार तेनो अंत करवो तेनी जे नूमिका एटले मर्यादा अथवा

कर्मनो अंत करवो तेनी मर्यादा ते बे प्रकारनी थइ ते बे प्रकारनां नाम कहे छे एक युगांत कृत भूमि अने बीजी पर्याय अंतकृत भूमि जाणवी तेमां प्रथम युग एटले कालमान विशेष, अनुक्रमे गुरु शिष्य प्रतिशिष्यादिरूप जे पुरुषो तेना प्रमाणे कालमान जाणवुं ते आंही श्रीवीर भगवानने त्रण पुरुषना पाट पर्यंत काल सुधी कर्मनो अंत थयो एटले बीजा घणा जीवोए कर्म खपाव्यां छे ते श्रीवीर भगवानना पाटथी मांडीने श्रीजंबूस्वामी पर्यंत मोक्ष मार्ग चाल्यो तेमां एक तो श्रीवीर भगवान पोते बीजा तेमने पाटे तेमना शिष्य श्री सुधर्मा स्वामी त्रीजा भगवानना प्रतिशिष्य अने श्रीसुधर्म स्वामिना शिष्य श्रीजंबूस्वामी ए त्रण पाट सुधी मोक्ष मार्ग वह्यो छे तेने युगांतकृत भूमि कहीयें अने बीजी पर्याय अंत कृतभूमि ते श्रीतीर्थंकरने केवल ज्ञान उपन्या पछीनो काल ते आश्रयी जाणवो ते भगवान श्रीमहावीरस्वामिने केवलज्ञान उपना पछी चार वर्षे मुक्तिमार्ग वह्यो एटले प्रभुने चार वर्षनो केवल पर्याय थया पछी बीजा कोइक जीवने कर्मनो अंत थयो कोइ मुनि मोक्ष गयो एम चार वर्ष वीते मोक्षमार्ग प्रवर्त्यो छे, बीजा जीवोने कर्मनो अंत थयो छे ते पर्याय अंतकृत भूमि कहीये ॥ १४७ ॥ ॥ ते कालने विषे, ते समयने विषे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी त्रीश वर्ष घरवासे रह्या अने कांइक जाजेरा बार वर्ष छद्मस्थ पणे रह्या तथा कांइक उंछा एटले साडा छ मासे उणा त्रीश वर्ष केवली पणे विचर्या एकंदर बेतालीश वर्ष भगे चारित्र पर्याय पाली साधुपणुं पाल्युं सर्वमली बहोतेर वर्षनुं आयुष्य पालीने वेदनीकर्म, आयुकर्म, नामकर्म अने गोत्रकर्म ए चार कर्म शेष रह्यां हता ते क्षय थयां तेवारे एहज अवसर्पिणी कालने विषे दुःखम सुसमानामे चोथो आरो घणो वीत्यो अने चोथा आराना

त्रण वर्षने साडा श्याठ महीना वाकी रहे थके पावानगरीमां हस्तिपाल राजानी कारकुननी सन्नामां पोते एकला परतु साथे वीजो कोइ नही एटले वीजा तीर्थकरो सर्व साधुउंना परिवार सहित मोक्ष गया छे श्यने श्रीवीर नगवान तो एकलाज वेलानुं तप एटले पाणी रहित वे उपवास चउविहारा करीने पल्यांठीवाली वेठ थका स्वाति नक्षत्रमां चंद्रमानो योग श्यावे थके पाठली चार घडी रात रहे थके पञ्चावन्न श्यध्ययन पुण्य फलना कहेवावाला श्यने पञ्चावन्न श्यध्ययन पाप फलना कहेवावाला तथा ठत्रीश श्यध्ययन पूठया विना कहीने ठेल्लो प्रधान नामा मरुदेवीनुं श्यध्ययन प्ररूपता थका काल प्राप्त थया, उंचा गया, जाति जन्म जरा मरणनुं बंधन कापीने सिद्ध थया, बुद्ध थया, मुक्त थया, कर्मोनो श्यंत करीने सर्व संताप रहित थया दुःखथी बूटा ॥ १४७ ॥ ॥ नगवान श्रीमहावीर स्वामि मोक्ष गया पठी नवसे वर्ष वीत्यां श्यने दशमां सैकडानां एंसी वर्ष थयां तेवारे एटले वीरनिर्वाणथी ए८० वर्षे पुस्तक लखाणु श्यने वांचनामां नवशे त्र्याणु वर्षे पुस्तक लखाणु एवुं देखाय छे ॥ १४ए ॥ हवे नगवतनुं निरवाण थयुं, तेवारे इंद्रादिकना श्यासन चलायमान थया, नगवतनुं पांचमुं निर्वाण कल्याणक जाणी सर्व इंद्र नेगा थइने चमरेंद्रादिकें बावना चंदने करी नगवतनी चय रची, श्यग्निकुमार देवोयें श्यग्नि मूक्यो, वायुकुमारे वायरो विकूर्व्यो, नगवतना मांस सर्व शोषाव्यां पठी मेघकुमार देवोयें वरसाद वरषाव्यो शरीरनी राख खीर समुद्रमां नाखी, नगवतनी उपरली दाढा सौधर्मेंद्रे लीधी, हेठली दाढा चमरेंद्रे लीधी, ते दाढाने रत्नमय डाबलामां राखी पूजे ए विस्तारे श्यधिकार श्री जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिमां कह्यो छे, त्यांथी जोवुं ॥ हवे पुस्तक लखाणु ते श्या प्रमाणे के श्रीवीर निर्वाण पठी वल्लभीपुर नगरे देवर्द्धिगणि क्षमाश्र



भगवानने अग्नि संस्कार करवामाटे पालखी माथी उतार्या





अग्निसंस्कार कर्याबाद स्थानक बुगला करी तेमाथी देवताओ दाढा अने अस्थि प्रमुख लई जायछे केटलाएक राखनी पोटली भ
माथी लई जायछे

मण प्रमुख सर्व श्रीसंघे मळीने सिद्धांत पुस्तकारूढ कीधो, एटले आगल तो सर्व सूत्रो आचार्य प्रमुखने मुखपाठे हतां पछी बार वर्षे दुःकाळ पड्यो तेने लीधे केटला एक साधुउ मरण पाम्या तेथी घणा सूत्रपाठ साधुउने मुखे हता ते विछेद गया, तेवार पछी जेवारे सुगाल थयो, तेवारे सूत्रोनो विनाश थतो देखी साधुनो संघ भेगो थइ जेने मुखे जेटलो पाठ स्मरणमां रह्यो हतो ते सर्व तालपत्र उपर लखी पुस्तकारूढ कर्यो तथा केटला एक एम कहे छे के नवशे एशीमा वर्षथी सर्व सिद्धात पुस्तकें लखवा मांम्या ते नवशेने त्र्याणुमे वर्षे संपूरण लखाइ रह्या एवुं पण देखाय छे यत ॥ वल्लहिपुरम्मिनयरे, देवढिपमुह सयल संघेहिं ॥ पुत्थे आगमलिहिउ, नवसय असिआउ वीराउ ॥ १ ॥ तथा कोइ एक कहे छे के स्कंदिलाचार्ये माथुरी वाचना करी पुस्तक लिख्यो छे तथा कोइएक कहे छे के कालिकाचार्ये चोथनी संवत्सरी नवशेने त्र्याणु वर्षे थापी अने पक्खी चौमासी एक दिवसे थापी एवा केटला एक मतथी बोले छे तेनो मुद्दो केवली जाणे ए वातनो विशेष विस्तार दीपिका प्रमुख थकी जाणवो॥ श्रीवीर प्रभुना शासननुं प्रमाण एकवीश हजार वर्षनुं कह्युं छे॥ श्रीवीर प्रभुना नव गणधरतो प्रभु पोते छताज राजगृहि नगरीयें एक महीनानी संलेषणा करीने परिवार सहित सिद्धि पाम्या छे अने वीरनिर्वाण पछी बार वर्षे श्रीगौतम स्वामी मोक्ष पाम्या छे, सांप्रत पांचमा कालमां जे मुनिराज वर्त्ते छे ते सर्व भगवतना पाटे श्रीसुधर्मा स्वामी पांचमा गणधर वेग हता तेनो परिवार जाणवो ते श्रीसुधर्मा स्वामी वीरनिर्वाण पछी वीश वर्षे सिद्धि पाम्या छे तथा श्रीवीर भगवानना जन्म चैत्र महीनामां छे अने कार्तिक मासमां मोक्ष गया छे माटे बहोतेर वर्षायु बराबर मलतुं नथी ते बाबत घणा ग्रंथोमा संवत्सरना दिनमानना फेर

त्रेखाडी समाधान करे छे परंतु खरेखरी वात केवली गम्य छे ए श्रीमहावीरना पाच कल्याणक विस्तारे कह्यां ए छठा वखाण पर्यंत श्रीवीर नगवाननो अधिकार जाणवो ॥ इति सुबोधिनी नाषाया षष्ठी व्याख्यान समाप्तं ॥ ६ ॥ ॥ अथ सप्तम व्याख्यान प्रारंनः ॥ ॥ हवे पश्चानुपूर्वी न्यायथी श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनां पांच कल्याणक कहे छे ते कालने विषे ते समयने विषे श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत त्रेशठ शिलाका पुरुषमां प्रसिद्ध जेने सर्व मतवाला जाणे छे एवा श्रीपार्श्वनाथ स्वामीना पांच कल्याणक विशाखा नक्षत्रमां थया ते कहे छे विशाखा नक्षत्रमां देवलोकथी चवीने वामादेवीनी कुखे उपन्या, विशाखा नक्षत्रमां जन्म पाम्या, विशाखा नक्षत्रमा गृहस्थ पणाने त्यागीने साधु पणानु ग्रहण कीधुं, एटले दिक्षा लीधी, विशाखा नक्षत्रमा सर्वोत्कृष्ट केवलज्ञान अने केवल दर्शन उत्पन्न थयु छे अने विशाखा नक्षत्रमा मोक्ष गया छे इति संक्षेप वाचना ॥ १५० ॥ ॥ हवे विस्तारथी वाचना लखीये छैयें ते कालमां ते समयमां श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोमां प्रधान ते उनालानो पहेलो महीनो, पहेलु पखवाडधु एटले चैत्रवदि चोथने दिवसे प्राणातनामा दशमा देवलोकथी वीश सागरोपमनु आउखुं पूरण करीने तिहांथी चव्या ते इहां जम्बूद्वीपना नरत क्षेत्रने विषे वाणारसी नगरीमा अश्वसेन नामा राजा तेनी वामादेवी नामे राणी तेमनी कूखे मध्यरात्रीयें विशाखा नक्षत्रमां चंद्रमानो योग होते छते देव संबंधि आहार, देव संबंधि शरीरनो त्याग करीने ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ७०० ॥ गर्नपणे उपज्या ॥ १५१ ॥ ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथ नगवान प्राणात देवलोकें कया नवथी आव्या ते दर्शाववा सारु श्रीपार्श्वनाथ स्वामिना दशनव लखियें छैयें ॥ आ जंबूद्वीपना नरतक्षेत्रमां पोतनपुर नामक नगरनो अरविंद नामा राजा तेनो विश्वनूति नामे

पुरोहित हतो तेनी अनुध्दरी नामनी स्त्रीना एक कमठ अने बीजो मरुभूति ए बे पुत्र हता पछी अनुक्रमे तेनां माता पिता काल धर्म पाम्यां केडे राजायें कमठने पुरोहित पदवी आपी पण ते कमठ स्वभावे कठोर, लपटी, दुष्ट मागलक्षणवालो मूर्ख छे तेनी स्त्रीनु नाम वरुणा छे अने मरुभूति तो सरल स्वभाववालो नद्रकपरिणामी धर्मात्मा श्रावकधर्म पा लनारो छे तेनी स्त्री वसुधरा नामे अत्यंत स्वरूपवाली अने घणी चपल स्वभाववाली छे एक दिवसे ते कमठ मरुभूतिनी स्त्रीने देखी रूपें मोह्यो थको भोग करवाने माटे तेने बे त्रण वार बोलावी तेवारे ते स्त्री पण कमठ उपर राग करवा लागी एक दिवसे कमठे प्रधान वस्त्राभूषण आपीने वसुंधराने पोताने वश करी मांहोमांहे प्रीति बांधी भोग कर्म करवा मांड्यो ते वात कमठनी स्त्री वरुणाना जाणवामां आवी तेवारे पोताना भरतारने कहेवा लागी जे हे भरतार! आ अकृत तमे करोछो ते सारु देखातु नथी जो देवरना जाणवामां आवशे तो लोकोमां निंदा थाशे एवो पोतानी स्त्रीयें कहेलो उपदेश कमठे मान्यो नही तेने लीधे ते वरुणा नाराजी थइ थकी कमठना अनाचारनी वात मरुभूतिने कही तेवारे मरुभूतियें जाण्युं जे पोतानी नजरे दीठा विना एकाएक स्त्रीयोनी वात मानवी नही एम विचारी एकदिवसें कपटथी कोइक गामे जवानो मिष करीने बाहेर गयो वली कापडीनो वेश करी पाछो मरुभूतिने घेर एटले पोताने घेर आवी रह्यो ते रात्रीयें तेणे दुराचार। कमठ अने पोतानी स्त्री बेहुने क्रीडा करतां दीठां तेवारे क्रोधकरीने प्रभातें कमठना दुराचारनी वार्त्ता अरविंद राजा आगल आवीने कही राजायें कमठने पकडी चोरनी पेरे भुंडे हाले करी रासभ उपर चडावी नगरमां फेरवी विटंबना करी शहेरनी बाहेर काढाडी मूक्यो अने मरुभूतिने पुरो

हित कयो पछी कमठ दुःखी थयो थको कोइ तापसनी पासेथी दीक्षा लइ बारवर्षे पर्यंत तपस्या करतो पृथ्वीमां जमतो जमतो फरी पाछो पोतनपुरनी बाहेर एक पर्वतनी उपर आवी तपस्या करवा लाग्यो पण गाममां न आवे गामना सर्वलोक तेने तपशी देखी जो जनादिक आपे प्रशसा करे तेवात मरुनूतियें सांजलीने विचारयोजे ए महारो महोटो जाइ छे में एने दुःख दीधुछे तेथी तापस थयो छे माटे हुं पण जइने महारो अपराध खमावी आवु एम चितवी घणा जोजनादिक रथावी साथे लइ कमठने खमाववा गयो तिहां जइ तेने पगे लागी पोतानो अपराध खमावी पाछो वले छे एटलामां कमठे मरुनूतिने उंलखी पोतानो वेर स जारी तेना मस्तक उपर एक महोटी शिला नाखी तेथी मरुनूति मरण पाम्यो ए पहेलो जव कह्यो ॥ १ ॥ ॥ हवे ते मरुनूतिनो जीव आर्त्तध्यानथी मरण पामीने बीजे जवें विंध्याच लनी अटवीमां सुजातिक नामा हाथी थयो अने कमठनो जीव पण दुष्टकर्मना जोरथी ते पर्वत उपरथी उतरता नीचें त्रूटी पड्यो तेथी मरण पामीने तेहज विंध्याचलनी जूमिमां पं खीनी पेरे उडतो चाले एवो कूर्कट नामे सर्प थयो हवे एकदा अरविंद राजायें सध्या सम यने विषे पंचवर्णी वादलां दीठां तेथी वैराग्य पामी दीक्षा लेइ अगीआर अंग जणी उग्रतप करता थका एकाकी विचरवा लाग्या एकदा सागरचंद नामा सार्थवाहना संघनी सार्थे अष्टा पद समेतशिखरनी यात्रायें गया तिहां विंध्याचल वनमां एक सरोवर देखी सघे तेस्थानके उ तारो कर्यो एवामां मरुनूतिनो जीव जे हाथी थयो छे ते पोतानी हाथणीयोना परिवार स हित तिहां सरोवरने विषे जल पीवा सारु आव्यो तेणे क्रोधें करी सर्व संघने उपद्रव कर्यो तेथी सर्व संघवाराना लोक नासी गया पछी साधु काउस्सग्गमां ऊना हता तेने ते हाथी मा

रवा श्राव्यो तेवारें मुनिना तपप्रनावथी तिहां थंनाइ गयो ते श्रलगो रह्यो थको मुनिने जो वालागो मुनिने जोता थकां हाथीने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेवारें पूर्वलो नव देखी साधुने ओलख्या पठी शूढ लाथी करी साधुनें पगें लागो मुनियें पण नव्यजीव जाणीने तेने प्रतिबोध श्राप्यो तेथी ते हाथी समकेत पाम्यो ते जोइने बीजा पण घणा लोक तिहां प्रतिबोध पाम्या पठी हाथीयें श्रावक धर्म श्रंगीकार कस्यो श्रावकना बार व्रतनी श्रनिलाषा धरतो थको साधुने नमस्कार करी सरोवरमांथी पाणी पीइने पोताने स्थानकें गयो साधुज। पण तिहांथी विहार करी सथवारानी पाठल चाली यात्रायें गया चारित्र पालीने शुनगति पाम्या हवे मरुनूतिनो जीव हाथी ते एक दिवस उनालाना दिवसोमां मध्यान्ह समयें तृषायें पीडायो थको तलाव उपर पाणी पीवाने श्राव्यो तिहां कादवमां खूची रह्यो ते वखत पेहेलो कूर्कट सर्प पण तृषायें पीडायो थको उडतो उडतो तिहां श्राव्यो तेणे पाणी पीइने पठी हाथीने वीठो तेवारे श्रागला नव ना वैरनेलीधे हाथीनी उपर चढीने तेना मस्तकमां डंक मास्यो तेथी तेज वखत हाथीने फेर व्यापी गयुं तिहां श्रावकधर्म पालवाना योगें शुनध्याने मरण पाम्यो ए बीजो नव ॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजे नवे ते हाथी त्यांथी मरण पामीने श्रावमें देवलोकें देवता थयो श्रने हाथी पडता सर्प पण चपाइने मरण पाम्यो ते हाथीनी घातना पातकथी पाचमी नरकें जई नारकी पणे उपन्यो ए त्रीजो नव ॥ ३ ॥ ॥ चोथे नवें मरुनूतिनो जीव श्रावमा देवलोकथी चवीने जंबूद्वीपना पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमा सुकछ नामा विजयना वैताढ्य पर्वतनी दक्षिणश्रेणिमा तिलवती नामा नगरीने विषे विद्युतगतिराजानी कनकवती नामा स्त्रीनी कूखें पुत्र पणे उपन्यो तेनुं करणवेग एवु नाम मातपितायें दीधु श्र

नुक्रमें युवावस्थायें सुरुपा नामा स्त्री परण्यो, राज्यने पण पाम्यो एकदिवसें सुरुपा राणी साथें सुख भोगवतां गोखमां बेठा थकां सध्या फूली देखी वैराग्य पामी दीक्षा लीधी पछी वैताढ्य ना हेमशैल उपर काउस्सग्गमां ऊभा रह्या ते अवसरमां कमठनो जीव पांचमी नरकथी नीकलीने ते पर्वत उपर सर्प थयो छे तेणे साधुने करड्यो तेथी साधुयें काल कीधो ए चोथो भव ॥४॥ ॥ पांचमें भवें साधु बारमे देवलोके देवता थया अने सर्प्प मरण पामीने पांचमी नरके गयो ए पांचमो भव ॥५॥ ॥ छठे भवे मरुभूतिनो जीव बारमां देवलोकथी चवीने आ जंबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे गंधीलावती विजयमां शुभंकरा नगरीनो वज्रवीर्य नामे राजा तेनी लक्ष्मीवती नामे राणीनी कूखें पुत्र पणे आवी उपन्यो मात पितायें तेनुं वज्रनाभ एवु नाम दीधुं अनुक्रमे तेना पितायें तेने राजपाटें बेसाड्यो ते यौवनवयमां राज पालतो थको संसारिक सुख भोगवे छे एक दिवसें शुभंकरा नगरीना उद्यानमां श्रीक्षेमकर नामा तीर्थंकर आवी समोसर्या तेमने वज्रनाभ राजा वांदवा गयो तिहां तीर्थंकरनी देशना सांभली संसार अनित्य जाणी तीर्थंकर पासेथी दीक्षा लइ अगीआरे अंग भण्या जंघाचारणनी लब्धीना बले करी सुकच्छविजय मांहे निज्वलन पर्वत उपर काउस्सग रह्या ते अवसरमां कमठनो जीव पांचमा नरकथी नीकलीने वली वचमां संसारने विषे बीजां पण घणां भवभ्रमण करी ते पर्वतमां कुरंग नामा भिल्ल थयो छे ते भिल्ल पोताना स्थानकथी बाहेर आहेडो करवा निकल्यो छे तेवारे वज्रनाभ साधुने देखी आगला भवना वैरने लीधे साधुने देखतांज अपशुकन थयुं जाणी क्रोध उपन्यो माटे साधुने सामुं एक बाण मार्युं ते मर्मस्थानके लाग्युं तेथी साधु शुभध्यान ध्यावता मरण पाम्या ए छठो भव ॥ ६ ॥ ॥ सातमे भवे साधु शुभध्याने मरण

पामीने मध्यम ग्रैवेयकें देवता पणे उपन्यो अने भिल्ल मरण पामी साधुनी घातना पापथी सातमे नरकें गयो ए सातमो नव ॥ ७ ॥ ॥ आठमे नवें मरुनूतिनो जीव मध्यम ग्रैवेय कथी चवीने आ जंबूद्दीपना पूर्व महाविदेहमा शुनकर विजयने विषे पुराणपुर नामे नगर तिहां कुशलबाहु नामे वासुदेवनी सुदर्शना नामे राणीनी कूखनेविषे पुत्रपणे आवी उपन्यो मातायें चौदसुपनां दीठां पठी पुत्रजन्म थयो त्यारे माता पितायें सुवर्णबाहु एवु नाम आप्युं हवे चौद सुपन देखवाना प्रनावथी ते सुवर्णबाहु चक्रवर्त्तिनी पदवी पाम्यो, ठ खंम साधी चक्रवर्त्तिनी पदवी नोगवी, वृद्धावस्थामां तीर्थंकरनी देशना सांनली दीक्षा लइ वीश स्थानकनुं तप आराधन करी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं हवे ते साधु एक दिवसें उजाडमां काउ स्सग्ग ध्याने रह्या ठे एवामां ने निल्लनो जीव सातमा नरकथी मध्यम आउखु पूरण करीने तिहांथी मरण पामी ते उजाडमां क्षीर गुफायें सिंह पणे आवी उपन्यो ठे तेणे तिहां सुवर्ण बाहु मुनिने दीठो तेवारे पुर्वनवना वैरथी सिंहने क्रोध उपन्यो तेथी साधुने विदारी नाख्यो ए आठमो नव ॥८॥ ॥ नवमे नवे साधु शुनध्याने मरण पामी दशमा प्राणात देवलोके देवता पणे जइ उपन्या अने सिंह मरण पामीने चोथे नरकें गयो ए नवमो नव ॥९॥ ॥ हवे दशमा नवने विषे मरुनूतिनो जीव दशमा देवलोकथी चवीने श्रीवामादेवीनी कूखें आवी उपन्यो अने कमठनो जीव चोथा नरकथी मरण पामीने एक दारिद्री ब्राह्मणने घेर पुत्रपणे आवी उपन्यो तेनां मा बाप बालपणामाज मरण पाम्या पाठलथी दुखी थयो थको लोके तेना उपर दया आणीने महोटो कीधो अनुक्रमे यौवनावस्था पाम्यो तेवारे निर्द्धनपणा माटे स्त्री मली नही तेथी अमर्ष धरी पेट नरवा सारु अज्ञान तपस्या आदरी तापसनी पठवाडे लागी पंचाग्नि

साधवा लाग्यो तेथी ते तापस अग्नितापणे कमठनामें विख्यात थयो इति पार्श्वनाथ वश नव अधिकार समाप्त ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत, पुरुषमां प्रधान, त्रण ज्ञाने करी सहित माताना कूखमां आव्या इहां चौदसुपन मातायें दीठां तथा सुपनपाठक बोलाव्या यावत् गर्भनी प्रतिपालना करी इत्यादिक सर्व अधिकार श्रीमहावीर स्वामिनी पेरे जाणी लेवो ॥ १५२ ॥ ॥ ॥ ते काळने विषे ते समयने विषे पार्श्वनाथ स्वामी शीयालानो बीजो महिनो त्रीजु पखवाडियुं पोषवदि दशमीने दिवसे नव महीनाने साडासात दिवस गर्भमां गया थका मध्यरात्रिमां विशाखा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवे थके वामाराणीनी कूखे रोगरहित पुत्रपणे जन्म्या ॥ १५३ ॥ ॥ जे रात्रिमां श्रीपार्श्वनाथ जन्म्या ते रात्रिमां घणा देवता आव्या ॥ १५४ ॥ ॥ यावत् चोसठ इंद्र जन्ममहोत्सव प्रमुख करवा आव्या तथा दिग्कुमारिकादि आवी ते सर्व श्रीमहावीर स्वामिनी पेरे श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनुं नाम लइ लइने इहां पण कहेवु पछी अश्वसेन राजा जन्ममहोत्सव करीने कहेता हवा के महारी वामाराणीनी कूखे जेवारे ए पुत्र आव्यो तेवारे वामाराणीयें शय्यामां पोतानी पासेथी निकळतो काळो सर्प दीठो तेथी अमारा आ पुत्रनुं नाम पार्श्व होजो एम कही श्रीपार्श्व एवु नाम दीधुं ॥ १५५ ॥ ॥ पांच धावे पालन कराता, बीजना चंद्रमानी पेरे वृद्धि पामता, माता पितादिकने आनंद उपजावता थका अनुक्रमे युवान अवस्था पाम्या तेवारे कुशस्थल नगरना प्रसेनजीत नामे राजाने म्लेच्छ लोकोये रोक्यो तेनो सहाय करवा माटे अश्वसेन राजा जावा लाग्यो ते वखत पिताने वर्जीने पार्श्वकुमर तिहां जवाने तैयार थया ते जोइ इंद्रमहाराजे पोतानो रथ सारथी सहित मक्यो ते ऊपर [illegible] ते जोइ सर्व म्लेच्छ लोको नाठी

चित्र ५३





श्री पार्श्वनाथनु रथ


चित्र ५४
कमठ तापस
पार्श्वनाथ

गया जगवान तिहां गया तेने प्रसेनजीत राजायेँ सन्मान दीधु तिहां नीलवर्ण छवी, नवहा थनु शरीर, युवान अवस्था अने एक हजार आठ लक्षणधारक, अत्यंत रूपवान, महा कातिवत सुदर देदीप्यमान तेजस्वी एवा श्रीपार्श्वकुमरने देखीने प्रसेनजीत राजानी पुत्री प्रजावती नामे हती ते बोली जे हे पिताजी! मुजने पार्श्वकुमर साथे परणावो पछी जगवानने परणवानी इछा हती नही तो पण राजायेँ घणो आग्रह करीने पोतानी पुत्री परणावी ते परणीने पाछा घेर आव्या प्रजावती राणी साथे सुख जोगवे छे एवामां एक दिवसे वाराणसी नगरीने बाहेर पेलो कमठ नामा तापस आव्यो तिहां घणा लोको हाथमा पूजापो लइने पंचाग्नि तापतो देखी तापस पासे जाता हता तेने प्रभुयें गोखमां बेठा थका दीठा तेवारे पार्श्वकुमर बोल्या के आ लोको सर्व क्यां जाय छे तेवारे हजुरीउ चाकर पासे उभो हतो ते बोल्यो हे महाराज! एक दरिद्री ब्राह्मण हतो तेना मा बाप न्हानापणमां मरी गया तेथी तापस थइ कमठ नाम धारण करीने फरतोफरे छे ते इहां आव्यो छे तेने आ सर्व लोको पूजवाने जाय छे ते सांजली जगवान पण तिहां आव्या त्यां काष्टमां बलता सर्पने अवधि ज्ञानथी देखी करीने जगवान बोल्या अरे मूढ तपस्वी! आ तु दयाविना शुं वृथा कष्ट करे छे; आ ताहारो श्रम ते दयाविना सर्व मिथ्या छे तेवारें क्रोध करीने कमठ तापस बोल्यो अरे राजाउना पुत्रोने तप जप करवानी शी परीक्षा होय तमे तो हाथी घोडाउनी परीक्षा करो तपनी वाततो अमेज योगी पुरुषो समजीयें छेयें ए वातमां तमे शुं समजो? एवुं कमठनुं बोलवुं सांजली जगवाने ते अग्निकुंममांथी एक बलतु लाकडु बाहेर कढाव्युं तेने कोहाडायी फडाव्यु तेमाथी तापे करी व्याकुल थयेलो सर्प नीकल्यो ते सर्प जगवानना मुखने देखीने श्रद्धापूर्वक

जगवानना मुखथी नवकार पच्चरकाण सांजलीने तत्काल मरण पामी धरणेंद्र नागराजा थयो "घणी प्रतोमां तो अग्निकुंममांथी बलतुं लाकडु जगवाने सेवकने हाथे बाहार काढावी कुहा डो मगावी फोडाव्यु अने बलता सर्पने जे नवकार संजलाव्यो ठे ते पण सेवकना मुखथी स जलाव्यो ठे एम स्पष्ट लखेलुं ठे" पठी तिहां एकठा थयेला लोको कमठने कहेवा लागा के अरे ए अज्ञानी अधर्म करे ठे जीवोने हणे ठे एवो पोतानो अवर्णवाद सांजलीने कमठ लज्जा पाम्यो, जगवान घरे आव्या पठी कमठ तिहांथी मानभ्रष्ट थइ वली अन्य स्थानके जइ घणा हठथी घणा कालपर्यंत विशेष पणे अज्ञान तपस्या करी मरण पामीने जवनपतिमांहे मेघ माली नामा देवता थयो ॥ ॥ हवे एकदा वसतऋतुमां जगवान पोतानी राणी सार्थे वन क्रीडा करवा गया तिहां एक सुदर प्रासाद जोइ तेमां जइ बेठा ते प्रासादमां नेमीश्वर जग वाननी जान संबंधी राजीमतीने त्यागी दीक्षा लीधी तेनुं चित्र चित्रेलु जोइने वैराग पाम्या हवे जगवान श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत दक्ष, चतुर, जली प्रतिज्ञा वाला, रूपवान गुणवान, जद्रक,वि नयवान, त्रीश वर्ष लगण गृहस्थावासें रह्या पठी लोकांतिक देव आवीने तेमने इष्टकारी वाणीयें करी कहेता हवा ॥ १५६ ॥ ॥ जयजय होवो हे समृद्धिमान्! यावत् हे कल्याण वान्! एवु कहीनें जयजय शब्द करे ॥ १५७ ॥ ॥ पहेलां पण श्रीपार्श्वनाथजी मनुष्ययोग्य गृहस्थ धर्ममां पण अवधिज्ञाने करी सहित ठे तेणे करी जाण्युं जे महारे हवे दीक्षा लेवानो अवसर आव्यो एवु जाणीनें सवत्सरी दान प्रमुख सर्व श्रीमहावीरस्वामीनी पेरे आपीने शीआ लानो बीजो महीनो, त्रीजु पखवाडियुं, पोषवदि अगीआरसने दिवसें बपोर पहेला विशाखा नामा पालखी , देव मनुष्ये ते पालखी उपाडी ए सर्व दीक्षा महोत्सव श्रीमहावीरजीनी

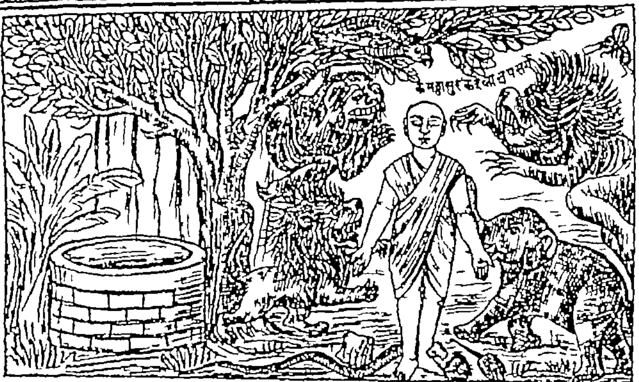


चित्र ५५

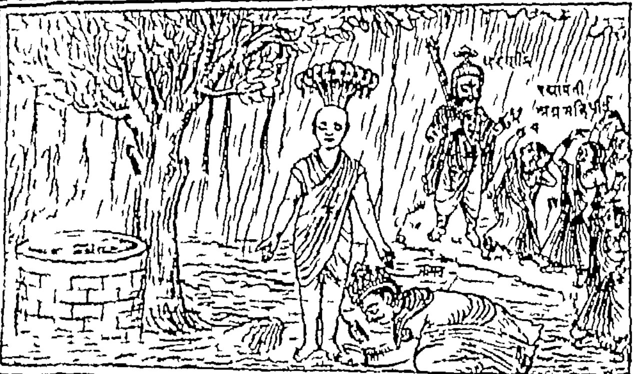


पेरें आर्वी पण समजयो परंतु एटलुं विशेष जे वाराणसी नगरीमांथी पइनें जिहां आश्रम पद नामा उद्यान छे जिहां अशोकवृक्ष छे तिहां आवीने पालखीथी उतरीने अशोकवृक्षनी नीचें पोताना हाथथी घरेणा प्रमुख सर्व उतारीने पोताना हाथथी पंचमुष्टी लोच करे लोच करीने अष्टम तप पाणीरहित करीने विशाखा नक्षत्रें चंद्रयोग आवे थके एक देवडुष्य वस्त्र लेइने त्रणसें पुरुषोनी साथें दीक्षा लीधी, अणगार थया ॥ १५७ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत च्याशी दिवस पर्यंत नित्य कायाने वोसरावीने जेकोइ देवना मनुष्यना अने तिर्यंचना करेला उपसर्ग होय ते सर्व सहन करे ॥ १५९ ॥ ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथजीयें अष्टम तपनुं पारणुं कोपट सन्निवेशमां धन्नाने घेर परमान्ने करी कर्युं तिहां पांच दिव्य प्रगट थया साडी बारकोड सोनैया वर्ष्या ॥ ॥ एकदिवस जगवान् विचरता थका कादंबरी अटवीमां गया, तिहां कलिगिरि पर्वतनी नीचे कुंमनामा सरोवरनी पासे काउस्सग्गमां रह्या ते स्थानके महीधरनामा हाथी पाणी पीवा आव्यो ते जगवानने देखीने जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो, तेणेकरी पोतानो पूर्वलो जव दीठो जे आगला जवमां हुं हेमलनामा वामनो कुलपुत्र हतो महारां सजन कुटुंब महारा उपर हसतां हता तेथी मने चिंतातुर देखीने महारो सुप्रतिष्ट नामा मित्र मने गुरु पासें लइ गयो तेनी पासेथी में श्रावकधर्म लीधो पण अंत अवस्थामां महारी वामणी न्हानी कायाने निंदतो थको मरण समयें महोटी काया पामवानुं में नियाणुं कर्युं तेना योगथी हुं महोटी काया वालो हाथी थयो छुं एवुं जाणी ते हाथीयें जगवानने कमले करी पूज्या ए हाथीनी वात सांजली चंपानगरीनो वासी करकंडू राजा तिहां आव्यो ते टलामां जगवान विहार करी गया जेथी राजा घणो दुःख करवा लागो तेवारें इंद्रें आवीने

तिहां नव हाथनी श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनी प्रतिमा प्रगट करी पछी राजायें तेनी पूजा करीने तिहां मंदिर कराव्युं ते स्थानकें कलिकुंड नामे तीर्थ थयुं, हाथी मरण पामीने व्यंतर देवता थयो ते चैत्यनो अधिष्ठायिक थइ रह्यो॥ ॥ एकदा समये राजपुरनो ईश्वर नामा राजा ते श्रीपार्श्वनाथ स्वामीने काउस्सग्गमां उभा देखी जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो, तेणे करी पोतानो पूर्वलो भव दीठो तेथी मूर्छा आवी गइ पछी ज्यारे सावधान थया त्यारे तेने मंत्रीयें पुछ्युं स्वामी तमे मूर्छा केम पाम्या? तेवारें राजा बोल्यो में म्हारो पूर्वलो भव दीठो जे हुं वसंतपुर नगरमां एक कोढीयो ब्राह्मण हतो ते रोगना दुःखने लीधे गंगानदीमां पडीने मरवा तैयार थयो हतो एटलामां एक चारण मुनियें आवीने मुजने प्रतिबोध दीधो पछी समकेत वासनाथी हुं नित्य चैत्यनां दर्शन करवा जाउं तिहां मुजने पुष्कल नामा श्रावकें दीठो अने कहेवा लागो के अरे आ कोढीयो मंदिरमां केम जाय छे? पछी ते श्रावकें मुनिने पूछ्युं महाराज! ए कोढीउ मंदिरमां जाय छे तेनो कांइ दोष छे किंवा नथी तेवारें मुनि बोल्या दूरथी नमवामां कांइ पण दोष नथी वली हे श्रावक! ए ब्राह्मण आगामिक भवे राजपुरनगरे ईश्वर नामा राजा थाशे ते श्रीपार्श्वनाथजीने काउस्सग्गे रह्या देखीने जातिस्मरण पामशे माटे हे प्रधान! ते कोढीयो ब्राह्मण मरीने हुं ईश्वर नामे राजा थयो छुं, पछी ते ईश्वर राजायें भक्तिभावथी तिहां चैत्य कराव्यो तेमां श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा थापी तिहां कुक्कुडेसर नामे तीर्थ थयुं॥ एक समये भगवान विहार करता थका कोइ नगर नजीक तापसनो आश्रम हतो तेनी पासें आव्या एटलामां सूर्य अस्त थयो तेवारें भगवान वडवृक्षने नीचे एक कूवानी पासें अभंग ध्याने काउस्सग्ग रह्या ते अवसरमां पूर्वभवनो वैरी मेघमाली अ



चित्र ५६


चित्र ५७

धम देखता अवधिज्ञानने वडे भगवानने ज्यां ऊभा देखी पूर्वभवनुं वैर संभारी अमर्षे पूर्यो थको क्रोधे करी उपसर्ग करवा लाग्यो तेणे प्रथम वेतालनां रूप करी भगवानने बीवराव्या पण भगवान तेनाथी भय्या नही पछी सिंहना रूप, वींछीनां रूप, सर्पनां रूप, हाथीनां रूप बीजा पण अनेक जातिनां रूप विकुर्वीने भगवानने करडवा लाग्यो मसलवा लाग्यो तोपण भगवान तेनाथी क्षोभ पाम्या नही चलायमान थया नही तेवारे विशेष क्रोधारुण थइने घणो गर्जारव करी विजली विकुर्वी तेनी साथे कल्पांतकालनो पवन विकुर्वी ते पवने करी धूलने उमावतो थको आकाशने पण ढांकी मूक्यु अने धूल साथे मलेला पाणीनी मूसल धारायें वृष्टि करी तथा ब्रह्मांड स्फोट सदृश गर्जारव कर्यो, दशे दिशायें वीजलीना कणीया उत्पन्न करी त्रास पमाडवा लाग्यो तिहां पाणीनुं पूर नवी जेवु वहेवा लाग्यु जोरवालुं पाणी चढ्यु, मेघलीनेविषे आकाश अंधकारमय थइ गयुं ते वखते भगवानने कण्ठसुधी पाणी ऊंचु आवी लाग्युं तोपण भय्या नही ते समये धरणेंद्रनुं आसन चलायमान थयुं तेवारें अवधिज्ञान प्रयुंजी भगवानने उपसर्ग थयो जाणीने पद्मावती प्रमुख अग्रमहीषीयो सहित तिहां आवीने प्रभुने मस्तकें फणाटोपे करी छत्र धर्यु अने प्रभुना चरणनी नीचें कमलनी रचना करी ए प्रकारें वरसादना समूहने बंध राखवा [illegible]य करी पोतें इंद्राणी सहित प्रभु आगल नाटक करवा लाग्यो पण वरसाद पडतो बंध थयो नही तेवारें धरणेंद्रें जाण्युं जे प्रलयकाल तो हमणा छे नही तो आवा प्रकारनो मेघ केम वरसे छे एम विचारी अवधिज्ञाने जोयुं तो मेघमाली कृत उपसर्ग जाण्यो तेवारे मेघमालीने जलकाव्यो के अरे दुष्ट, पापिष्ठ, उद्धत, अधम, तें आ शुं अकार्य करवा मांड्युं छे प्रभुयें तो ताहारा उपर गुण कर्यो छे ते उलटो

तुजने अवगुण थइ परिणम्यो तेथी तु विपरीत थइने एमनी उपर द्वेप करे छे परंतु जग वान पोते तो अतुलबलना धणी छे तथापि ते क्षमावत दयालु छे तेतो सहन करशे पण हु ता हारो अपराधसहन करनार नथी अरे मूर्ख ! तुजने रुडो उपदेश पण वैरकारी थइ पड्यो तो हवे तुजने हु ताहारी कमाइ देखाडीश, तें स्वामीनी घणी आशातना कीधी छे पण हवे तु क्यां नाशी जइश एम कही धरणेंद्रे तेना उपर वज्र मूक्युं तेवारे जेम बाजने देखी सूडो तथा कबुतर नयभ्रांत थाय तेम कमठ नयभ्रांत थयो थको पोतानी देवांगना सहित जग वान पासें आवी तेमना चरणनुं शरण ग्रही जगवानने नमस्कार करीनें पोतानो अपराध खमाववा लाग्यो अने कहेवा लागो के हवे आजपछी हुं एम नही करीश ते जोइ धरणेंद्रे कह्युं के तुं महोटाने शरणे आव्यो माटे महारो साधर्मि जाइ समजीने तुने मूकुछुं पछी दश जवनुं वेर खमावी प्रजु पासे नाटक करीने कमठ पोताने स्थानके गयो अने धरणेंद्र पण नाटक करी पोतानी इन्द्राणी सहित स्वस्थानकें गयो आहीं धरणेंद्रे त्रण दिवस पर्यंत जग वानने मस्तकें फणनु छत्र राख्युं तेथी ते नगरी अहिछत्रा एवे नामे करी प्रसिद्ध थइ ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथ स्वामी अणगार थया, पांच समिति अने त्रण गुप्ति सहित थया यावत् ग्रामानुग्राम विचरता आत्माने जावता थका च्यासी दिवस वीत्या अने चोराशीमो रात्रि दिन वर्त्तमान छतां उनालानो पहेलो महीनो, पहेलु पखवाडियुं चैत्रवदि चो थने दिवसे, विशाखा नक्षत्रें चन्द्रमानो योग आवे थके, पहेला वे पहोरना काल सम यने विषे, धावडी वृक्षनी हेठे पाणीयें रहित चउविहारो छठ्ठतप कीधे थके, निर्व्याघात पणो आवरण रहित समग्र परिपूर्ण जलहलता सूर्य सरखुं पहुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन

प्रभुने उत्पन्न थयुं तेथी सर्व जीवोना भाव जाणता थका देखता थका विचरवा लाग्या ॥ ॥ १५९ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने एक शुज, बीजो आर्यघोष, त्रीजो विशिष्ठ, चोथो ब्रह्मचारी, पांचमो सोम, छठो श्रीधर, सातमो वीरजद्द, अने आठमो यशस्वी ए आठ मद्योटा गच्छना धणी एवा गणधरोनी संपदा थइ ॥ १६० ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने आर्यदिन्न प्रमुख शोलहजार साधुउंनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ १६१ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी पुष्पचूला प्रमुख आडत्रीश हजार साधवीउंनी संपदा थइ ॥ १६२ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी सुव्रत आदिदेइ एक लाखने चोसठ हजार श्रावकोनी संपदा थइ ॥ १६३ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी सुनंदा प्रमुख त्रण लाखने सत्तावीश हजार श्राविकाउंनी संपदा थइ ॥ १६४ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी केवली नही पण केवली सरखा एवा साडा त्रणशे चौद पूर्वधारी मुनिउंनी संपदा थइ ॥ १६५ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी चौदशे अवधि ज्ञानिउंनी संपदा थइ, एक हजार केवलीउंनी संपदा थइ, अगीआरसे वैक्रिय लब्धिवतोनी संपदा थइ, छशे ऋजुमति मनःपर्यवज्ञानीउंनी संपदा थइ, एक हजार साधु मोक्ष गया, बे हजार आर्या मोक्ष गइ, आठशे विपुलमतिनी संपदा थइ, छसे वादीउंनी संपदा थइ, बारसे साधु अनुत्तर विमाने गया एकावतारी थया, ए प्रभुना परिवारनुं प्रमाण जाणवुं ॥ १६६ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथ पुरुषादाणीने बे प्रकारनी अंतगड भूमि थइ तेमां एकतो युगतकृतभूमि ते श्रीपार्श्वनाथना चार पाट पर्यंत मोक्ष मार्ग चाल्यो वह्यो, बीजी पर्याय अंतकृतभूमि ते जगवान केवल ज्ञान पाम्या पछी त्रणवर्षे कोइक मुनि सिद्धि पाम्यो एटले त्रणवर्षे मोक्षमार्ग चाल्यो ॥ १६७ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने

विषे श्रीपार्श्वनाथ पुरुषादाणी त्रीशवर्ष पर्यंत घरवासे रह्या अने त्र्याशी दिवस ठद्मस्थपणे रह्या तथा त्र्याशी दिवसे न्यून सीतेर वर्ष पर्यंत केवल पर्याय पाल्यो परिपूर्ण सीतेर वर्ष साधुपणु पाल्युं सर्व मली एकसो वर्षनुं आयुष्य पालीने, शेष रहेलां चार कर्म खपावी आ अवसर्पिणी कालनो दुषम सुषमा नामे चोथो आरो ते घणो वीती गयो अने स्वल्प रह्यो ते अवसरमा वर्षादनो पहेलो महीनो बीजु पखवाडियुं, एटले श्रावण शुदि आठमने दिवसे समेतशिखर पर्वतनी उपर मास खमणना चउविहारा पाणीरहित तपमां अणसण कीधे थके सैलेसी अवस्थायें योग रूंधीने तेत्रीश बीजा साधुउ अने चोत्रीशमा श्रीपार्श्वनाथ पोते, विशाखा नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे थके मध्यरात्रिना समयमा लांबा हाथें काउस्सग्गें उन्ना काल प्राप्त थया निरवाण पाम्या सर्व दुःखथी रहित थया ॥ १६८ ॥ ॥ विशेष वात श्रीपार्श्वनाथ चरित्र थकी जाणवी, श्रीपार्श्वनाथ परमेश्वर पुरुषमांहे आदानी एटले आदेय वचनीय ए बिरुदना धरनारा ठे एम प्रत्येक शब्दे जोडी लेवाडीयें श्रीपार्श्वनाथ स्वामी मोक्ष गया पठी बारसोने त्रीश वर्षे श्रीकल्पसूत्र पुस्तक उपर लखाणु केमके श्रीपार्श्वनाथ मोक्ष गया पठी अढीशे वर्षे तो श्रीमहावीरस्वामी मोक्ष गया ते पठी नवशे एसी वर्षे पुस्तकारूढ थयुं ॥ १६९ ॥ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ चरित्र समाप्त ॥ ॥ हवे पश्चानुपूर्वीयें करीने बावीशमा श्री नेमनाथ स्वामिनुं चरित्र लखीयें ठेयें ते कालने विषे, ते समयने विषे अरिहंत श्रीअरिष्ठनेमि तेमना पांचे कल्याणक चित्रा नक्षत्रमां थया ते कहे ठे एक चित्रा नक्षत्रमां देवलोकथी चव्या, बीजो चित्रा नक्षत्रमां जन्म थयो, त्रीजो चित्रा नक्षत्रमां दीक्षा लीधी, चोथो चित्रा नक्षत्रमां केवल ज्ञान उपन्युं, पांचमो चित्रा नक्षत्रमां मोक्ष गया इति संक्षेप वांचना ॥ १७० ॥ ॥


चित्र ५८
साधुओनी साथे
पार्श्वनाथ
निर्वाण पाम्या

विशेष वांचना कहे छे ॥ ते कालमां ते समयमां श्रीनेमनाथ स्वामी आ वर्षा कालनो चोथो महीनो, सातमो पक्ष एटले कार्त्तिक वदि बारसने दिवसें अपराजित नामा महा विमान जिहां बत्रीश सागरोपमनुं आयु छे तिहांथी चवीने आ जम्बूद्वीपना नरतक्षेत्रनेविषे शौरीपुर नगरना समुद्रविजय नामा राजानी सिवादेवी नामे नार्या तेनी कूखमां मध्यरात्रिने विषे चित्रा नक्षत्रमां चन्द्रमानो योग होते छते गर्नपणे आवी उपन्या तेवारें चौदस्वप्न माताये दीठां इत्यादिक सर्व वर्णन श्रीमहावीर स्वामीनी पेरें इहां पण कहेवुं ॥ १७१ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे श्रीनेमिनाथ अरिहंत वर्षाकालनो पहेलो महीनो, बीजु पखवाडिउं एटले श्रावणसुदि पंचमीने दिवसें नव महीनाने साडासात दिवस गर्नमां पूरण थये थके यावत् चित्रा नक्षत्रे चन्द्रमानो योग आवेथके पुत्र पणे जन्म्या, इहां जन्म महोत्सव प्रमुख सर्व श्रीमहावीरस्वामीनी पेरे श्रीनेमिनाथजीना नामथी कहेवुं पछी माता पितायें अरिष्टनेमि एवुं नाम आप्युं, तेनुं कारण कहे छे जे नगवाननी माता शिवादेवीजीयें पन्नरमा स्वप्नमां अरिष्ट रत्ननुं चक्र दीठुं तेथी अरिष्टनेमि एवु नाम आप्युं तथा लोकोनां अरिष्ट चूकां मटाड्यां माटे अरिष्टनेमि एवुं नाम दीधुं हवे नगवानने बालपणामां इन्द्राणी आवी रमत करावे जे वारें प्रभुने नूख लागे तेवारें पोताना अंगूठाने चूशे ते अंगूठामां देवो आवीने अमृतनो संचार करे परंतु मातानां स्तन चूशे नही एवा अनुक्रमे प्रभुजी वृद्धि पामता हवा प्रभुना शरीरनो श्यामवर्ण छे तथापि महा स्वरूपवान छे एकदिवसे श्रीनेमिनाथजी पालणामां रमत करे छे ते वखते इन्द्रमहाराजे पोतानी सन्नामांहे प्रभुना बल पराक्रमनी प्रशंसा करी ते वात कोइएक देवता असहहतो थको त्यांआवी नगवानने पालणामांहेथी कपाडीने सवालाख

योजन दूर लइ गयो तेवारे जगवाने आ कोइ देवप्रयोग छे एवुं जाणीने कोइक स्वल्प मज
देखाडयुं तेथी देवता नीचे आवी पड्यो अने एकसो योजन पर्यंत धरतीमां पेसी गयो तेवारे
इंद्रे आवी अनुकंपा आणीने देवताने छोडाव्यो अने जगवानने पाछा पालणामां मूकी स्त
वना करीने इन्द्रमहाराज पोताने स्थानकें गया ॥ ॥ हवें सूत्रकार आगल एवुं कहेशे के श्री
नेमीश्वर जगवाने द्वारिका नगरीमां दीक्षा लीधी तेवारें सांजलनारने आशंका उपजशे के ज
न्मतो शोरीपुरमां थयो अने दीक्षा द्वारिकामां लीधी ए वात केम मले ए संदेहने मटाव
वाने माटे यादवोनी उत्पत्ति कहे छे ॥ ॥ पूर्वें हरि अने हरिणी ए बे युगलीया थकी हरि
वंश कुल प्रगट थयुं, ए वात आगल दश अछेराना अधिकारमां संक्षेपथी लखाइ गइ छे ते
पछी ते हरिराजानो पुत्र अश्व थयो अने तेनो पुत्र वसुराजा थयो तेना वंशमां अनुक्रमें यदु
राजा थयो तिहांथी यादववंश प्रगट्यो पछी ते यदुनो पुत्र शूरराजा थयो तेना वली एक शोरी
अने बीजो सुवीर ए बेपुत्र थया तेमां महोटो पुत्र शौरी छे तेने मथुरानुं राज्य आपीने सुवी
रने युवराज पाटे थापी शूरराजायें चारित्र लीधुं, पछी शोरीराजायें पोताना न्हाना जाइ सुवी
रने मथुरानुं राज्य आपी पोतें कुशावर्त्त देशमां जइ पोताने नामे शोरीपुर नामा नवीन नगर
वसावीने तेनुं राज्य करवा लाग्यो अने सुवीर मथुरानुं राज्य करे छे हवे शोरीराजाने अंधक,
वृष्णि नामे पुत्र थयो अने सुवीरने जोजकवृष्णि नामा पुत्र थयो ते जोजक वृष्णिने वली
उग्रसेन नामा पुत्र थयो पछी जोजकवृष्णियें उग्रसेनने मथुरानुं राज्य आपी पोते
दीक्षा लीधी, हवे अंधकवृष्णिने दश पुत्र थया तेनां नाम कहे छे एक समुद्रविजय, बीजो अ
क्षोन, त्रीजो स्तमित, चोथो सागर, पांचमो हिमवंत, छठो अचल, सातमो धरण, आठमो पू

रण, नवमो अनिचंद अनें दशमो वसुदेव ए दशे दशार्द कदेवाय हवे अधकवृष्णियें पोताना मद्दोटा पुत्र समुद्रविजयने शौरीपुरनुं राज्य आप्युं अने एज अधकवृष्णिनी एक कुंती अने बीजी माद्री ए वे नामे वे पुत्रीउं थइ तेमां कुंती पांमुराजाने परणावी अने माद्री दमघोष राजानें परणावी ॥ ॥ इहां संक्षेपथी पांमवोनी उत्पत्ति कदे छे, प्रथम ऋषजदेवजीनो पुत्र कुरु नामा थयो तेणे कुरुदेश वसाव्यो तेनी पछवाडे तेना पाटें असंख्यात राजा थइगया तेमांथी एक दस्ति राजायें दस्तिनागपुर वसाव्युं तेवार पछी केटलोएक काल वीत्याकेडे सुनूमनामा चक्रवर्त्ति राजा थयो तेवार पछी वली घणा राजा थयाकेडे एक शंतनु नामे राजा थयो तेनी वे स्त्री थइ तेमां एकतो विद्याधरनी पुत्री गंगा दती तेने गांगेय नामे पुत्र थयो तेनु जीष्मपितामद एवुं बीजुं नाम लोकमां प्रसिद्ध थयुं दतुं अने बीजी राणी सत्यवती नामे दती तेना वे पुत्र थया एकनुं नाम चित्रांगद अने बीजानु नाम विचित्रवीर्य पछी शतनु राजा चित्रांगदने राज्य आपीने परलोक प्राप्त थयो दवे ते चित्रांगद एक दिवसे कोइ नीलांगद राजा सार्थे युद्ध करतां मरण पाम्यो तेवारें विचित्रवीर्य राजा थयो तेनी एक अंबिका, बीजी अंबालिका अने त्रीजी अंबा ए त्रण नार्यो दती तेमां अंबिकानो पुत्र धृतराष्ट्र थयो तेनी गांधारी प्रमुख आठ स्त्रीयो दती तेना दुर्योधनादिक सो पुत्र थया अने बीजी अंबालिकाने पांमु नामे पुत्र थयो तेनी एक कुंती नामे स्त्री दती तेने एक युधिष्ठिर, बीजो नीम अने त्रीजो अर्जुन ए त्रण पुत्र थया अने वली बीजी माद्री नामे स्त्री दती तेनुं अपर नाम पद्मा एवुं दतुं तेना एक नकुल अने बीजो सहदेव एवा वे पुत्र थया एम बन्ने स्त्रीयोना मली पांमु राजाना पांच पुत्र थया ते पांच पांमवो कदेवाणा, दवे विचित्रवीर्यनी त्रीजी स्त्री अंबा दती तेने एक विदुर नामे

पुत्र थयो एरीतें पांम्रवोनो संबध संक्षेपथी कह्यो ॥ ॥ ह्वे अधकवृष्णिनी वीजी पुत्रीजे दमघोष राजाने परणावी हती तेनो शिशुपालनामा पुत्र थयो तेने श्रीकृष्णे मार्यो छे एवीरीतें व्यवस्था कर्यापछी अधकवृष्णियें दीक्षा लीधी, ह्वे मथुरानुं राज्य उग्रसेन राजा चलावे छे तेनी धारणी नामे राणी छे अने शौरीपुरनुं राज्य समुद्रविजयराजा चलावे छे तेनी शिवादेवी नामे नार्या छे ते शिवादेवीने नेमिकुमार पुत्र थयो बीजा पण सर्व नाइउ एकठा नेला रहे छे ह्वे मथुरामां उग्रसेनराजा सुखे राज पाले छे एक दिवसे ते नगरीनी बाहेर वनमां एक मासी उ पवासनो करनारो एवो एक तापस आव्यो तेनो एवो नियम छे के महीनानी अवर कोइ आ वीने कहे के म्हारे घेर पारणुं करजो तो तेने घेर पारणु करे पण वीजाने घेर पारणु करे नही अने जो नोतरुं आपनार धणी नूली जाय अने तापसने पारणुं करावदा माटे तेडवा सारु नही आवे तो वली बीजा एक मासनुं पञ्चरकाण करी लीयें एवो ते तापस मासिक उपवास करीने वनमां वेठो छे तिहां उग्रसेन राजा रमवा गयो अने वनमा तापसने देखी राजायें पोताने घेर पारणु करवानी वीनति करी पारणु करवु कबुल करावीने पोताने घेर आव्यो परंतु जे दिवसें पारणु करावबानुं हतुं ते दिवसें विस्मृतिमा तापसने बोलाववा मा णस मोकल्यु नही तापसें पण सांज सुधी वाट जोइ कोइ बोलाववा नही आव्यो तेवारे वली वीजा महीनानी तपस्यानो नियम करी लीधो तेवारपछी वली केटलेक दिवसें राजाने ते तापस याद आव्यो के अरे में आ केवु अकार्य कर्यु जे तापसने नोतरीने जमवा तेड्यो नही एम चितवी फरी पण तापसने जमवानुं आमत्रण करी आव्यो परंतु बीजी वार पण पारणाने दिवसें जमवा सारुं तेडवाने नूली गयो एवीज रीतें वली त्रीजे महीने पण नोतरुं

आपीने जमाडवाने वखतें तेडवानुं नूजी गयो तेथी तापसें राजा उपर क्रोध करीने विचार्युं जे आ डुष्ट राजा मने नोतरुं आपी जाय ठे ने जमाडतो नथी माटे जो मद्दारा तपनो प्र नाव होयतो हु एने नवातरमा डुःख देवावालो थाउं एवु नियाणु करी तिहांथी मरण पा मीने उग्रसेन राजानी नार्या धारणीनी कूखमां आवी उपन्यो तेना प्रनावथी राणीने त्रीजे मद्दीने राजानु काळजु खावानो मोहोलो उपन्यो तेथी शरीरें डुर्बल थइ तेने घणु घणु राजायें पूग्यु तेवारे मोहोला संबधि जेवी वात हती तेवी राजा आगल कही, पठी राजायें प्रधाननी अक्लथी ते मोहोनो पूरण कस्यो राणीयें गर्न पाडवाना घणा उपाय कस्या पण गर्न पड्यो नही तेरट नव मद्दीना पूरण थये पुत्र जन्म्यो ते जन्मताज राणीयें तेने कांसानी पेटीमां नाखीने मांहे नामांकित मुद्रिका मूकीने ते पेटी यमुना नदीमा वहेवरावी दीधी ते कांसानी पेटी तरती तरती मथुराथी शोरीपुर आवी एवामां घृत अने तेलनो वेचनार सुनइ नामे वा णीयो ते यमुना नदीमां स्नान करवा आव्यो तेणे ते पेटी नदीमांथी बाहेर काढाडी लइने उघाडी जोइ तो तेमा बालक दीठो तेवारे ते वाणीयो मुद्रिकासहित ते बालकने ठानो मानो पोताने घेर लइ आवीने पोतानी स्त्रीने पुत्र सोंप्यो अने लोकोने कहेवा लाग्यो के म हारी स्त्रीने गूढगर्न पुत्र थयो तेनुं नाम कंस आप्युं अनुक्रमे ते बालक मद्दोटो थयो तेवारे मस्ति करे लोकोना ठोकराउने मार आपे तेथी लोक आवीने सुनडने नित्य उंलना आपे तेवारे वाणिये विचार्युं जे हुंतो सामान्य माणस हुं अने आतो राजपुत्र ठे माटे मद्दारे घेर ए केवीरीतें रही शके एवु जाणी वाणीयायें ते ठोकरो वसुदेव कुमरने जइ सोंप्यो अने कंस पण वसुदेवजीनो चाकर थइ रह्यो तेमज वसुदेवजी पण कंस उपर घणी रुपा दृष्टि राखवा

लाग्या एवा अवसरमां वसुराजाना वसमां वृहद्रथ राजा थया तेनो पुत्र जरासंध नामे प्रति
वासुदेव त्रण खंमनो जोक्ता ठे ते राजगृही नगरीमां राज्य करे ठे अने यादव पण सर्वे ते
नीज आज्ञा पाले ठे ते जरासंध राजायें समुद्रविजयनी उपर दूतनी सार्थे एक कागल लखी
मोकल्यो के वैताढ्य पर्वत पासेनो रहेवासी सिंहनामे पल्लिपति ते सिंहपुर नगरनो राजा ठे
तेने जीवतो बांधी पकडीने जे महारी पासे लइ आवे तेने हुं महारी जीवयशा नामे पुत्री ठे
ते परणावुं अने वली एक नगर जे ते धणी पसंद करे ते नगरनुं राज्य पण आपु एवी री
तनो कागल वांचीने समुद्रविजयजी पोतानी सेना तैयार करी सिंह नामा पल्लिपतिने जी
तवा माटे चडाइ करवाने तैयार थया एटलामां वसुदेव कुमरें आवी समुद्रविजयजीने वर्ज्यो
अने कंसने साथे लइ पोते सैन्य सहित ते राजानी उपर चडी गयो तिहां जइ कंसने आगे
वान करी तेनी साथे युद्ध कर्यु तिहां कंसे सिंहराजाने बांधी लावीने वसुदेवजीने स्वाधीन
कर्यो पाछलथी समुद्रविजयजीयें कोइक निमित्तियाने पूछ्युं जे वसुदेवजी अने जीवयशानुं
जोडुं मलतुं ठे के नथी? तेवारें निमित्तिये कह्युं के ए जीवयशा जे ठे ते परण्या पठी श्वसुरना
कुलनो अने पोताना पिताना कुलनो एरीते बेहु कुलनो क्षय करनारी ठे माटे तमे विचा
रीने काम करजो महारा वचनमां लगार मात्र संदेह जाणशो नही एवु सांजली निमित्तियाने
शीख आपी विदाय कर्यो अने निमित्तियानी वातथी चिंतातुर थयो थको विचारवा लाग्यो जे
वसुदेवजी जीत्यो एवुं सांजलशे तो जरासंध पोतानी पुत्री वसुदेवजीने आपशे अने ते
कन्या तो मेंने कुलनो क्षयकरनारी ठे तो हवे आपणने एनो शो उपाय करवो एवो चिं
तातुर थको बेठो ठे एटलामां तो वसुदेवजी पण सिंहराजाने बांधीने समुद्रविजयजीनी पासे

लइ आव्यो अने समुद्रविजयजीने चिंतातुर थयेला देखीने पूछवा लाग्यो जे तमे शी चिंतामां थेवा छो? तेवारें वसुदेवजीने एकांतमां लइ जइने समुद्रविजयजीयें, जीवयशा वेहु कुलना रूपने करवावाली छे ए वात संजलावी तेवारें वसुदेवजी बोल्या के ए सिंहराजाने में बांध्यो नथी परंतु कंसें बांध्यो छे ए वात सांजली समुद्रविजयजी विचारमां पड्या के ए वाणियाना छोकरामां एटलु बल होय नहि माटे तेनी हकीगत पूछवासारु सुनद वणिकने बोलाव्यो तेणे सर्व वृत्तांत कह्यो पछी ते वाणियानी पासेंथी मुद्रिका मगावी कंसने आपी सिंहराजासहित कंसने राजगृहनगरे जरासंध पासें मोकल्यो जरासंधें पण कंसने पोतानी पुत्री जीवयशा परणावी दीधी अने वली कंसें तेनी पासेंथी मथुरानुं राज्य माग्युं तेवारे जरासंधें पोतानुं सबल सैन्य आप्युं ते लेइ कंसें मथुरामा जइ पोतानो पिता जे उग्रसेन तेने जीवतो झाली काष्ठना पांजरामा नाखी दीधो अने पोतें मथुरानु राज्य करवा लाग्यो, हवे पोतानो पिता काष्ठपिंजरमां पड्यो थको दुःख नोगवे छे एवुं जोइने कंसनो न्हानो नाइ अतिमुक्तक नामे छे ते संसारथी विरक्त थयो अने दीक्षा लइ चाली निकल्यो ॥ ॥ हवे वसुदेवकुमरें पूर्वनवमां स्त्रीवल्लन कर्म उपार्जन कर्युं छे ते पूर्वनवनी कथा कहे छे वसुदेवनो जीव पाछला नवमां कोइएक गामनेविषे नंदीषेण एवे नामे कुलपुत्र हतो तेनां माता पिता बाल्यावस्थामां मरण पाम्या पछी ते मामाना घरमां रहीने महोटो थयो ते जेवारे युवान अवस्था पाम्यो तेवारे कालुं रूप, कुदर्शनी, बिलाडाना जेवी न्हानी आंख, गणेशना जेवु महोटुं पेट, हाथीना जेवा मोटा दांत, उंटना जेवा मोटा होठ, वानराना जेवा कान, नासिका चापडी, त्रिखूणु कपाल, एवो कुरूपो देखीने तेने कोइ कन्या आपे नही सर्व स्त्रीयो तेनी निंदा करे

तेथी चिंतातुर थयो थको मामाना घरमां कामकाज करवुं मूकी दीधुं, मामाये कह्युके म
हारी सात पुत्री छे तेमांथी एक तुजने परणावीश तु चिंता करीश नही पछी मामायें पो
तानी दीकरीयोने एनी सार्थे परणवानुं कह्युं तेवारे ते साते जणीउं बोली जे अमे मरी
जाइयें ते कबुल करीये पण ए वांतलाने तो कदापि काले परणीयें नही एवुं सांभली ते
नदीषेण मरवाने माटे कोइएक पर्वत उपर चढीने त्यांथी पडवा लाग्यो एवामां एक मुनि
राजें तेने वर्ज्यो अने कह्युं के हे जोला आवा प्रकारें मरवाथी तारुं दुःख मटे नही
तिहां प्रतिबोध पामीने चारित्र लीधुं अने साधुउंनो वेयावच्च करवानो अभिग्रह धारण कर्यो
वली पोते मासखमणनी तपस्या करे अने साधुउंनो पण वेयावच्च करे एक दिवसें इन्द्रमहा
राजें पोतानी सन्नामां ते नदीषेणनी वेयावच्च करवा आश्रयी घणीज प्रशंसा करी के एना
सरखो वेयावच्चनो करनार बीजो कोइ नथी ते वातने एक देवता अणमानतो थको तिहां
आव्यो तेणे अतिसारना रोगेंकरी ग्रस्त थयेला एवा एक साधुनुं रूप विकुर्वीने एक गामने
बाहेर जइ बेसाड्यो अने वली बीजा एक साधुनो रूप बनावीने जिहां नदीषेण मासखम
णनुं पारणुं करवा लाग्यो छे तिहां मोकल्यो ते कृत्रिम साधु आवीने नदीषेणने कहेवा लाग्यो
के अरे, अतिसारना रोगवालो साधु बहार पड्यो छे तेनो वेयावृत्य कर ते सांभली नदी
षेण पारणुं करवुं पडतुं मूकीने तरतज ते साधुनी शरीर शुद्धिने माटे गाममां सूजतु
पाणी लेवा सारु फरवा लाग्यो परंतु तेपण ते देवे देवमायाथी असूजतु करी दीधुं लेवा
योग्य क्यांय मले नही तोपण मनमां खेद आवतो नथी पण उलटो पश्चात्ताप करवा लाग्यो
के अरे जुउंतो खरा के हुं केहवो जाग्यहीन छु जे आवा मुनिउंनो वेयावच्च करवामां पण

मने अंतराय पडवा लागो छे पछी एम करतां पाणी पण मळ्युं ते लइने साधु पासें आव्यो ते
वारे ते अतिसारी साधुयें रीसकरी जात मारीने पाणी ढोळी नाख्युं अने कहेवा लाग्यो के अरे
मूर्ख आटलो वखत रहीने केम आव्यो एम कह्युं तो पण तेना उपर रोष न कर्यो पछी ते सा
धुने पोतानी खांध उपर चढावी गाममां लइ चाल्यो तेवारे ते साधुयें देवमायाथी घणी अत्यंत
दुर्गंधित विष्टा करवा मांडी तेथी नंदिषेणनुं शरीर संपूर्ण मळथी भराइ गयुं तो पण नंदिषेणने द्वेष
उपज्यो नही एवी तेनी धीरज जोइ देव तुष्टमान थइ नंदिषेणने वांदीने स्वस्थानके देवलोकमां
गयो एवीरीते नंदिषेणे बार हजार वर्ष चारित्र पाळ्युं अने घणा ग्रंथोमां पंचावन्न हजार वर्ष
चरित्र पाळ्युं एम कहेलुं छे अंते अनशन कर्युं ते वखत कोइक चक्रवर्ति तेने वांदवा आव्यो तेवारे
चक्रवर्तिनी पटराणीने देखी तेणे नियाणुं कर्युं जे हुं परभवे स्त्रीवल्लभ थाउं एवुं नियाणुं बांधी
तिहांथी काल करी देवलोक गयो अने देवलोकथी चवीने इहां वसुदेव थयो छे तेनुं पूर्वे करेला
नियाणानां प्रभावथी कामदेव जेवुं रूप थयुं छे ते वसुदेव जे वखत शौरीपुर नगरमां फरे
तेवारे ते नगरनी सर्व स्त्रीयो पोताना घर उघडां मूकी तथा बीजां पण सर्व कामकाज
पडतां मूकी रूपे मोही थकी वसुदेवनी पछवाडे फरे अने भरतारनुं कह्युं पण माने नही
तेथी कोइ कोइना घरोमां चोर पेसी जाय अने घर पण लूंटी चाल्यो जाय एवुं कृत्य जोइ ते
नगरना रहेनारा सर्व लोकोयें समुद्रविजय राजानी पासे जइ विनति करी के गामनी सर्व
स्त्रीयो घर सूनां मूकीने वसुदेव कुमरनी पाछळ भमे छे माटे जो तमे वसुदेवजीने नही वर्जो
तो अमने बीजे क्यांइ रहेवानी जगा बतावो ते सांभळी समुद्रविजय राजा बोल्या के हे पंचो!
तमे कहो छो तेम हुं करीश हवे तमे सुखे आपणे घरें जाओ अने सुखसमाधिमां रहो एम

कही महाजनने शीख आपी, थोडी वार पठी वसुदेवजी पण समुद्रविजयने पगे लागवा सारु तिहां आव्यो तेवारे वसुदेवजीने खोलामां वेसाडीने समुद्रविजयजी बोल्या के हे नाइ! आज काल तु शरीरमां डुर्बल थइ गयेलो देखाय ठे ते हु जाणु बु जे तुं इहां तिहां घणो रखडे ठे माटे वेलाये कुवेलाये कोइ ठिद्र जोइ ठल करीने ताहारा रूपनी खरावी करशे तथा वली आपणे राजा ठेयें माटे आपणा वेरी पण घणा ठे ते कोइ उपद्रव करे माटे तुं आ पणा घरना बगीचामां रम्या करजे पण बाहेर जमवानुं मूकी आपजे वली बाहेर जम वाथी विद्या शीखेली ठे ते पण नूली जइश एवुं सांनली वसुदेवजी पण विनयपूर्वक बोल्यो के तमारो हुकुम महारे प्रमाण ठे एम कही घरनी वाडीमांहेज रमत करवा लाग्यो एवामा उनालो आव्यो तेवारे शिवादेवीयें समुद्रविजयजीने माटे चंदन घसी तेनी कटोरी नरी ढांकीने दासीना हाथमां आपी समुद्रविजयजी पासे मोकली ते कटोरी दासी लइ जाय ठे तेने देखी वसुदेव बोल्यो के आ शुं ठे? दासी बोली हजुरने विलेपन करवा सारु चंदननी कटोरी राणीयें दीधी ठे ते लइ जाउं बुं तेवारे वसुदेवजीयें ते दासीना हाथमांथी ठीनवी लइ पोताना अंग उपर चंदननुं विलेपन करी लीधुं ते जोइ दासी कोप करीने बोली जे ताहारां आवा लक्षण ठे तेथीज तु बंदीखाने पड्यो ठो ते सांनली वसुदेवजीयें दासीने पूठ्युं के बंदीखानुं ते वली शुं? तेवारे दासीयें जवाव दीधो नही पण जेवारे घणो हठ करीने पूठ्युं तेवारे दासीयें गामना लोको संबंधि विचार सर्व कही संनलाव्यो तेथी वसुदेवजी राजानी उपर तथा पंचोनी उपर अमर्ष आणीने अर्द्धरात्रे एकलो घरमांथी बाहेर निकली गयो, अने विचार्युं जे हवेथी ए समुद्रविजयजी महारी आशा मूकीने पठवाडे शोध

करवा नीकळे नही एवो कोइ उपाय करुं पठी नगरनी बाहेर एक मडदाने बालीने पोळना कमाड उपर लोहीना अक्षरोथी लख्युं जे हे नगरवासी लोको ! तमे सांभळो हुं तमोने तथा महारा महोटा भाइने सुख थवाने माटे बळी भस्म थयो छुं हवे तमे सुख समाधीमां रहेजो एवी रीते लखीने चालतो थयो प्रभाते पोळीयें पोळ उघाडी तेवारे मुडदु बळ्युं दीठुं अने वसुदेवजीना लखेला अक्षर वाची समुद्रविजयजीने जइ कह्युं समुद्रविजय तिहां आवी ते रुत्य जोइ शोकथी मरवा लाग्यो तेवारे प्रधानादि लोकोयें तेने समजावी राख्यो तोपण शोकमां गरकाब थयो थको राज्य करे छे हवे वसुदेव गामें गामे फरवा लाग्यो ते ज्यां ज्यां जाय तिहां पूर्व करेला नीयाणाना प्रभावथी अत्यंत स्वरूपवान कन्याउ परणे एम क्यांक दश, क्यांक वीश, क्याक सो, क्यांक पांचसो कन्याउने परणे ते सर्व विद्याधरराजाउनी पुत्रीयो तथा बीजा भूचरराजाउनी पुत्रीउ तथा शेठ प्रमुख महोटा धनाढ्य लोकोनी पुत्रीउ जाणवी एम सर्वमली बहोंतेर हजार कन्याउने वसुदेवजी परण्यो अने घणी विद्याउ पण शीख्यो, एवा अवसरमां रोहक राजानी पुत्री रोहिणी नामे छे तेनो स्वयंवर मंडप मंडाणो छे तिहां त्रण खंडनो स्वामी जरासंध आदि देइने सर्वराजाउ ते स्वयंवर मंडपें आव्या छे तेमज समुद्रविजय प्रमुख सर्व यादवो पण आव्या छे ते रात्रियें वसुदेवजीने रोहिणीप्रज्ञप्ति विद्यादेवीयें आवी स्वप्नामां कह्युं के हे वसुदेव ! रोहिणीना स्वयंवर मंडपने विषे तु जा अने तुजने ते रोहिणी परणशे वळी रोहिणी शिवाय बीजी पण एक कन्या तु हजी परणीश एम सर्वे तुजने ते कन्याउनी प्राप्ति हवे थवानी छे माटे तु का सूतो छो ! प्रभातें तु तिहां जाजे एम कहीने पछी ते विद्यादेवीयें रोहिणीनी पासें जइ तेने पण स्वप्नामां कह्युं के तु मृ

दग वजाववावाला कुवडाने परणजे ॥ हवे रोहक राजायें प्रजातें स्वयंवर मम्प शणगायो त्यां सर्व राजा, राजकुमारो पण शणगार करी पोत पोताना नामना सिंहासनो वपर आवी विराजमान थया एटलामां रोहिणी राजकन्या पण पोताने शरीरे सोल शणगार करी स खीउंये करी परवरी थकी हाथमां फूलमाला लेइने स्वयंवर मंम्पमां आवी तेवारे सर्व राजा ते कन्याने देखवा लाग्या अने ढढीवारणी प्रतिहारिणी प्रत्येक राजाउंना गुण रूपादिकनो वर्णन करे ठे केमके ते रोहिणी सती ठे माटे काचमांथी सर्व देखी शके नही तेथी प्रतिहारिणीये सर्व राजाउंने वर्णवी देखाड्या पण कुलदेवीना वचनने हृदयमां धरीने जे मृदग वगाडनारा कूवडाने रूपें वसुदेव आव्यो ठे ते एज वसुदेव एज वसुदेव एवो मृदगशब्द वजावे ठे तेने जोइने तेना गलामां वरमाला पहेरावी तेवारे कूवडो नाचवा लाग्यो अने मुखथी आ रीतें शब्दोच्चार करतो हवो के अहो आ सर्व राजाउ करतां हुं अधिक नाग्यशाली हुं जेमाटे ए सर्व राजाउ वेग रह्या अने मुजने वरमाला मली गइ एवुं जोइ ते मम्पमां आवेला सर्व राजाउ ते कन्या उ पर क्रोध करीने, केटलाएकतो कन्याने निंदवा लाग्या, केटलाएक कन्याना पितानी निंदा क रवा लाग्या अने केटलाएक वोल्या अरे आ कूवडाने मारीने एनी पासेंथी वरमाला खोंसी ल्यो फोकट बीजा उपर रीश करवाथी शुं थाय एवुं मांहोमांहे कहीने बोल्या के जेना सुनट कूवडा पासे घलेला ठे तें कूवडा पासेंथी वरमाला खोंसी लीये अने तेनीज ए वरमाला पण जाणवी एवुं सांजली सर्व राजाउंना सेवक ते कूवडा पासें आव्या तेने कूवडे सोनाना मृदंगथी मारीने जमीन उपर नाखी दीधा तेवेखी सर्व राजा शस्त्र लइने मारवा दोड्या तेवारे वसुदेवें सर्व राजाउंने विरूप करी नागमा कोइनी मूछो माडी कापी नाखी कोइने ठंम मुंम करी

नाख्यो ते जोइ जरासंध राजायें समुद्रविजयना सांमासुं जोयुं तेवारें समुद्रविजय राजा बकतर,
टोप पहेरी धनुष बाण लइने युद्ध करवा चढ्या तेने देखी वसुदेवें जाण्युं जे भाइनी सार्थे ल
ढवुं नही तो हवे हुं महारूं स्वरूप प्रगट करी देखाडुं नहीतो संग्राम थाशे एवो विचारी
ढूयवानुं रूप त्यागी मृदंग नाखी देइने समुद्रविजय पासे एक बाण नाख्यो तेमां वसुदेवनो
तमोने नमस्कार छे एवुं सुवर्णमयी अक्षरोथी लखेलुं हतुं ते वांचीने समुद्रविजय विस्मय
थयो अने विचार्युं जे वसुदेव मरण पाम्याने केटला वरस थइ गयां तो आहीं वसुदेव
क्यांथी आव्यो आतो कोइ इंद्रजालीयो मने भोलवतोतो नथी एवुं विचारे छे एटलामां
तो वसुदेव पण आवी पगें लागो तेवारें तो समुद्रविजयजीयें सारीपेठें ओलख्यो अने सर्व
यादव खुशी थया जरासंध प्रमुख राजाओ पण खुशी थया, महोत्सव करीने वसुदेवने रो
हिणी परणावी तथा आगल पण जेटली स्त्री परण्या हता ते सहुनी हकीगत सर्व समुद्रविज
यजीने कही पाछलथी बहोतेर हजार कन्याओने भेली करी विमानमां बेसाडी लावीने वसुदेव
घेर आव्या ॥ हवे स्नेहने लीधे वसुदेवजीने मथुरा नगरीमां कंस लइ आव्यो त्यां कंस तथा वसु
देवजी बेहु मथुरामां रहे छे एकदा देवकराजानी पुत्री देवकीजी, वसुदेवने परणावी छे
ते देवकीजी अने जीवयशा ए बे साथे रमत करे पण जीवयशा पोताना बापना बलना गर्वकरी
उन्मत्त छे हवे जेवारे देवकीजीनो विवाह मंडाणो तेवारें जीवयशा मदिरापान करी देवकी
जीने पोतानी खांध उपर बेसाडी नाचे छे एवा अवसरमां कंसनो न्हानो भाइ अइमुत्तो नामा
साधु थयो छे ते गोचरी सारु फरतो थको कंसने घरे आव्यो तेने जीवयशायें दीठो तेवारे म
दोन्मत्त थइ थकी मुनिने कंठे वलगीने बोली जे हे देवरजी! तमे भला अवसरमां आव्या छो

तो हवे एक राजकन्या तमोने पण परणावीश एवु बोलती थकी तेने मूके नही तेवारे तेने
धीरावववा माटे साधु बोल्या के अरे मूरखणी तुं शुं नाचे कूदे छे जेने तें ताहारा खांध उपर
वेसाडी छे तेनो सातमो गर्भ जे थाशे ते ताहारा भरतारने तथा ताहारा पिताने मारवा
वालो थाशे एवा साधुनां वचन सांभली साधुने कंठे वलगेली हती ते मूकी दीधो त्यारथी
साधुतो विहार करी गयो अने जीवयशाने मद उतरी गयो मनमां शका पडी जे साधुनुं व
चन खोटु थाय नही पछी ते वात एकांते जइ पोताना भरतार कंसने कही कंसें पण ते
वात सत्य करी मानी तोपण ते वचन जूठु करवाने अर्थें विचार्युं जे आ वात कोइने जाण
वामां नही आवे तेवीरीतें एनो उपाय करवो एवु चितवन करी एक दिवस वसुदेवजीने कंसें
राजी कर्यो तेवारें वसुदेवजी बोल्या हे कंस ! ताहारा उपर हुं तुष्टमान थयो छु माटे माग
माग जे मागीश ते हु आपीश एवुं सांभली कंस बोल्यो जे हे मित्र ! तुं तुष्टमान थयो तो देव
कीजीना पहेलवेलां साते गर्भ मने आपजे ते वात वसुदेवजीयें सरल चित्तथी मान्य करी
अने कंसने कह्युं के हुं तमोने साते गर्भ आपीश एवीरीतें वसुदेवजी वचनथी बंधाइ गया,
पछी ते वात देवकीजी आगल कही तेवारें देवकीजीयें अइमत्ता मुनिनां कहेलां वचन वसुदे
वजीनें संभलाव्यां अने कह्युं के आ कंस आपणा पुत्रोने लइ मारी नाखशे ते सांभली वसुदे
वजीने पश्चाताप थयो पण वचने बंधाइ गयो त्यां शो उपाय ? सत्पुरुषनुं बोलवु फरे नही
माटे सत्पुरुषें जे बोलवुं से विचारीने बोलवु हवे एवा अवसरमां भद्दिलपुर नगरनो रेवासी
नाग नामे शेठ छे तेनी सुलसा नामा स्त्रीने मृतवत्सा दोष छे तेथी ते घणा मुवेला पुत्रने जन्म
आपे छे माटे ते स्त्रीयें अट्ठम तपकरी हरणीगमेषी देवनुं आराधन कर्यु ते देव प्रीता कर


चित्र ५९
सुलसानीने
राय

गासमां प्रगट थइने बोल्यो जे मने शावास्ते बोलाव्या तेवारें सुलसा बोली के दे वेर मुजने मृतक पुत्र आवे ठे ते जीवता करी आप तेवारे देवता बोल्यो कोइनुं कर्म दूर करवाने हुं समर्थ नथी माटे ताहारा पुत्रतो जीवता रहेशे नही ए वात निश्चयात्मक ठे तथापि तारी पुत्रसंबंधि इछा हुं पूरण करी आपीश एवुं कहीने देवता जतो रह्यो पठी कर्मयोगें देवकीजी अने सु लसा ए बेहुने सार्थेज गर्भ रह्यो अने सार्थेज जन्म्यो तेवारें हरणीगमेषीयें देवकीजीना जी वता पुत्रो लावीने सुलसानी पासें मूक्या अने मूवेला सुलसाना पुत्र ते देवकीजीनी पासे लावी मूक्या ते मूवेला बालकोने कंसना चोकीदारोये लइजइने कंसने स्वाधीन कस्या कंसें तेमने शिला उपर पगाडी मारी नाख्या एवीरीतें देवकीजीना ठ पुत्र सुलसानी पासे वृद्धि पाम्या अने सुलसाना मृतक पुत्र देवकी पासेथी लइने कंसें मास्या ते देवकीजीयें पूर्वेला ज न्ममां पोतानी शोकनां सात रत्न चोरी लीधां हतां तेथी शोक दिलगीर थइने जेवारें घणुं रुदन करवा लागी तेवारें एक रत्न तेने पाछु दीधुं हतु ते कर्मना योगें अनिकयशा, अनंत सेन, विजयसेन, निहतारि, देवयशा अने शत्रुसेन ए ठ पुत्र देवकीजीना लइने हरणीगमेषी देवें सुलसाने आप्या हवे देवकीजीनो सातमो गर्भ सात सुपने सूचित पांचमा देवलोकथी चवीने देवकीजीनी कूखें आवी उपन्यो ते गर्भ जन्मतांज लइ जवाने माटे कंसनां मा णसो चोकीदार बेठेला हता तेथी देवकीजीयें वसुदेवजीने कह्युंके आ सातमो गर्भ उत्तम ठे माटे कोइपण उपाय करीने कदापि एने माटे जुठुं बोलवुं पडेतो जुठु बोलीने पण आप णें, ए गर्भ राखवो ए वात वसुदेवजीयें सांभलीने पठी वसुदेवजी जे वखत देवकीजीने प रण्या हता ते वखत जे देवकराजायें दायजो आप्यो हतो तेमां गोकुलगाम पण साथे आप्युं

हतुं ते गोकुलगाममां नदनामें गोप तथा तेनी यशोदा नामें स्त्री ए बे रहे छे तेपण ते वाय
जामां आवी गया हतां एटलामां देवकीजीने गर्भ थयो ते वर्णे कालो हतो तेने देखी कृष्ण
कृष्ण एवु कहीने वसुदेवजी तेने तिहांथी छानो लइने निकली गयो ते वखत कंसें बेसाडेला
चोकीदारोने निद्रा आवीगइ हती आगल जतां दरवाजो खोलीने निकल्यो तेवारे उग्रसेन
बोल्यो आ कोण छे वसुदेवजी बोल्या आ ताहारुं काष्ठनुं पांजरु भांगीने तेमांथी तुजने मुक्त
करनार छे एवुं कही आगल चाल्यो मार्गमां यमुनानदीयें पण मार्ग आप्यो ते नदी उल्ल
घीने गोकुलमां जइ यशोदाजीने ते बालक सोंप्यो अने ते वखत यशोदाजीने पुत्री आवी
छे ते लइ आवीने देवकीजीने सोंपी पाछलथी कंसना पोरायत निद्रामांथी जाग्या ते बोल्या
शुं पुत्र आव्यो के पुत्री आवी तेवारे वसुदेवजीयें पुत्री आपी ते कंसे लइने तेनुं नाक कापीने
पाछी वसुदेवजीने आपी आ ठेकाणे अन्यदर्शनीउ कहे छे के कन्याने पण शिला उपर पछाडी
ते वीजली थइगइ ए वात मिथ्या छे हवे कंस निश्चित थयो आणीगम गोकुलमां यशोदाजी
वसुदेवना कहेवाथी कृष्णनुं पुत्रनी पेरे पालन पोषण करे छे कृष्ण पण सुखें सुखें वृद्धि पामे
छे हवे देवकीजीने कृष्णजीने देखवानी घणी घणी चाहना रहे पण कंसनी बीकने लीधे पन्नर
पन्नर दिवसें अथवा महीने महीने आज वछ बारश छे आज गोत्राट छे आज काजली त्रीज छे
एवा नवा नवा उत्तर करी करीने गोकुलमां जाय तेने लीधे ते दिवसो सर्व मिथ्यात्वीउना पर्व
थया पछी तिहां जइ देवकीजी श्रीकृष्णने रमत करावे, दूध धवरावे, अने यशोदाजीने कहे के
ताहारो पुत्र मने घणो वल्लभ लागे छे एवां वचन कही पाछी घेर आवे एरीतें कृष्णजी बाल
लीला करता थका यशोदाजीनां दूध दही प्रमुखनां ---- ---- नाखे फोडी नाखे इत्यादिक

चित्र ६०







वसुदेवजी श्रीकृष्णनेलई गगानदी उतरेछे

तेनी यशोदा नामें स्त्री ए बे रहे छे तेपण तें वाय हतुं ते गोकुलगाममां नवनामें गोप तथा जामां आवी गया हतां एटलामां देवकीजीने गर्भ थयो ते वर्णे कालो हतो तेने देखी कृष्ण कृष्ण एवुं कहीने वसुदेवजी तेने तिहांथी छानो लइने निकली गयो ते वखत कंसें बेसाडेला चोकीदारोने निद्रा आवीगइ हती आगल जतां दरवाजो खोलीने निकल्यो तेवारे उग्रसेन बोल्यो आ कोण छे वसुदेवजी बोल्या आ ताहारुं काष्ठनुं पांजरु भांगीने तेमांथी तुजने मुक्त करनार छे एवुं कही आगल चाल्यो मार्गमां यमुनानदीयें पण मार्ग आप्यो ते नदी उल्ल घीने गोकुलमां जइ यशोदाजीने ते बालक सोंप्यो अने ते वखत यशोदाजीने पुत्री आवी छे ते लइ आवीने देवकीजीने सोंपी पाछलथी कंसना पोरायत निद्रामांथी जाग्या ते बोल्या शुं पुत्र आव्यो के पुत्री आवी तेवारे वसुदेवजीयें पुत्री आपी ते कंसें लईने तेनुं नाक कापीने पाछी वसुदेवजीने आपी आ ठेकाणे अन्यदर्शनीउं कहे छे के कन्याने पण शिला उपर पछाडी ते वीजली थइगइ ए वात मिथ्या छे हवे कंस निश्चिंत थयो आणीगम गोकुलमां यशोदाजी वसुदेवना कहेवाथी कृष्णनुं पुत्रनी पेरे पालन पोषण करे छे क्रम पण सुखें सुखें वृद्धि पामे छे हवे देवकीजीने कृष्णजीने देखवानी घणी घणी चाहना रहे पण कंसनी बीकने लीधे पन्नर पन्नर दिवसें अथवा महीने महीने आज वछ बारस छे आज गोत्राट छे आज काजली त्रीज छे एवा नवा नवा उत्तर करी करीने गोकुलमां जाय तेने लीधे ते दिवसो सर्व मिथ्यात्वीउना पर्व थया पछी तिहां जइ देवकीजी श्रीकृष्णने रमत करावे, दूध धवरावे, अने यशोदाजीने कहे के ताहारो पुत्र मने घणो वहालो लागे छे एवां वचन कही पाछी घेर आवे एरीतें कृष्णजी बाल लीला करता थका यशोद[illegible]

अनेक प्रकारनी रमत करतो विचरे छे एकदा वसुदेवजीयें देवकीने कह्युं के तमारे घणी वखत तिहां जावुं नही कारणके जो कंसने ए वातनी खबर पडशे तो वली कांइक उत्पात करशे हवे जेवारे कृष्ण सात आठ वर्षना थया तेवारे तेने कलाउ शीखववा सारु रोहिणीना पुत्र बलदेवजीने कंसथी छानो मोकल्यो अने ते छानो रहेवानी हेतुभूत कंससंबंधि सर्व हकीगत बलदेवजीने निवेदन करी एम बलदेवजी अने कृष्ण बेहु जण गोकुलमां नंदने घेर रहे छे अने बलदेवजी श्रीकृष्णने विद्याउ जणावे छे सर्व कलाउ शीखावे छे एम करतां श्रीकृष्ण चौदवर्षना थया हवे राम कृष्ण बन्ने जाइउ तिहां गोवालीआउनी साथे नाचे कूदे गाय वजावे नीला पीला वस्त्र पहेरे,कृष्ण पोताने मस्तके मोरपीछ राखे, मुरली वजावे, गोपीयोनी साथे गाय,आखो दिवस रमत करे, सांजना घेर आवे एवा अवसरमां वली एक दिवसें कंसना मनमां एवी वात आवीके साधुनुं वचन जूठुं थयुं के नथी थयुं तेनी चोकसी करवा माटे निमित्तियाने पूछ्युं के मने कोइ मारनार छे किंवा नथी? ते सांभली निमित्तियो बोल्यो के साधुनुं वचन जूठुं नथी ताहारो शत्रु कोइक जगायें महोटो थइ रह्यो छे पण ताहारो शत्रु मरण पाम्यो नथी तेवारे कंसें पूछ्युं ते केवीरीतें महारा जाणवामां आवे, निमित्तियो बोल्यो जे अरिष्ट नामा बलदने दमन करशे, जे कालीनागने वश करशे, जे ताहारा केशी नामना घोडाने दमशे, जे खर अने मेष नामा खरोने मारशे, जे चंपोत्तर अने पद्मोत्तर नामा हाथीउने मारशें, जे सारंग धनुष्य चढावशे, जे चाणुरमल्ल अने मुष्टिकमल्ल ए बेने मारशे ते ताहारो मारनार जाणजे ए वात सांभली कंसें तेनी निगाह करवाने माटे पडह वजाडाव्यो के जे कोइ सारंग धनुष्यने चढावे तेने महारी बहेन सत्यभामा हुं परणावुं ए वात सांभली घणा

राजा तिहां भेला थया एवा अवसरमा वसुदेवजीनो एक अनाधृष्ठ नामा महाबलवंत पुत्र छे ते पण धनुष्य चडाववाने जाय छे मार्गमां सांज पडी तेथी रात्रे श्रीगोकुलमा रह्यो तेने बलभद्र ओलखतो हतो तेथी तेनी घणी सेवा करी प्रभात थयुं तेवारे अनाधृष्ठ बलभद्रने कहेवा लाग्यो के एक वलावो आपो तो मने मथुरानो मार्ग देखाडी आवे ते सांभली बलभद्रे श्रीकृष्णने अनाधृष्ठ साथे मार्ग देखाडवा मोकल्यो मार्गे जता अनाधृष्ठनो रथ वृक्षोमां अटकी रह्यो ते अनाधृष्ठथी निकल्यो नही तेवारें कृष्णजीयें ते बेहु वृक्षोने लात मारी उखेडी नाख्यां अने मार्ग करी रथ बाहेर रस्ते चडावी दीधो तेजोइ अनाधृष्टीये तेने बलवान जाणी रथमां बेसाडी मथुरामां लइ गयो त्यां जइ अनाधृष्टी धनुष्यने हाथ फरसवा लाग्यो दैवयोगथी पाछो पड्यो तेवारे तेना उपर लोक हस्या श्रीकृष्णें अनाधृष्टीनुं हास्य थतु देखी ते धनुष्यने सहेज उपाडीने चडावी लीधु सत्यभामा पासे उभी हती तेणे श्रीकृष्णने वरमाला पेरावी तेवारे वसुदेवजी अनाधृष्टी उपर क्रोधकरी कहेवा लाग्यो के एने शा वास्ते आंही लइ आव्यो जा हम णाज पाछो मूकी आव ते सांभली अनाधृष्ठी छानोमानो कृष्णने गोकुलमा लइ आव्यो एटला दिवसद्युधी आ बलभद्र महारो भाइ छे एवु श्रीकृष्णना जाणवामां न हतुं हवे अनुक्रमें श्रीकृष्ण सोल वर्षनो थयो एवा अवसरमां कंसें केशी घोडो अने मेष घोडो तथा अरिष्ठनामा बलद ए सर्वने गोकुलमां मोकल्या ते जइ गोकुलमां उपद्रव करवा लाग्या तेमने श्रीकृष्णें मारी नाख्या एवा अवसरमां वली मथुरामां कंसें मल्लनो अखाडो मांड्यो तिहां घणा मल्ल एकठा थया छे तेमां एक चाणूरमल्ल अने बीजो मुष्टिकमल्ल ए बे मल्ल घणा बलवान छे ते वखत कंसें जाण्युं जे धनुष्य चढाववावालाने में सारीपेठे ओलख्यो नही माटे हवे कोइरीतें

ते आंही आवे तो हुं तेने मारी नाखु एवुं विचारी एक बाजु कंस बेठो रह्यो छे एवामां श्री
कृष्णें सांभळ्युं जे आज मल्लयुद्ध छे ते हु देखवा जाउ एवुं चितवी बलभद्रने गुरु जाणी पगें
लागी बोल्यो स्वामी आज आज्ञा आपोतो मथुरामां मल्लयुद्ध जोवा जाउ तेवारे बलभद्रें जाण्युं
जे तिहां जवाथी कदाच कंसनी साथे युद्ध थइ जाय माटे कृष्णने नाहपणानी वात जणावी
आपु एम विचारी बलभद्र बोल्यो हे यशोदा ! अमोने स्नान करवा माटे उन्हुं पाणी आप
अमे आज मल्लयुद्ध देखवा जइशुं ते वखत यशोदा बीजा कोइ काममां पडी हती तेथी बल
भद्रनु वचन सांभळ्युं अण सांभळ्या जेवु करी दीधुं तेवारे बलभद्र बोल्यो केम यशोदा तु
महारा नाइनुं पालण पोषण करवाथी शुं राणी बनी बेठी ? दासपणु भूली गइ जे थकी
महारी वातने गणकारी नही एवुं कहीने श्रीकृष्णने साथे लइ बलभद्र बोल्यो के चालो
आपणे यमुनामांहेज स्नान करीशुं पछी मथुरामां जइशुं एम यशोदाने कडवां वचन बल
भद्रें कह्यां तेथी श्रीकृष्ण नाराजी थयो तेवारे मार्गमां बलभद्रें छ नाइने मारवा आदिक
कंस संबंधि सर्व वृत्तांत कह्युं तथा आपणे बे नाइनी माताउ जुदी जुदी छे परंतु बाप एकज
छे तने कंसना नयने लीधे इहां श्रीगोकुलमां राख्यो छे ते वात सांभळीने श्रीकृष्ण बोल्यो
के जो आजने आज हु महारा छ नाइने मारवानुं वैर कंस पासेथी लेउ तोज हुं खरेखरो
कृष्ण ? एम कही मार्गें यमुना नदीमां स्नान करवा प्रवेश कर्यो तेवारे कालियद्रहनो काली
नाग आव्यो तेने श्रीकृष्णें पकडीने नाक वींधी नाकमां कमलवेलथी नाथी तेना उपर चढी
असवार थइने घोडानी पेठे दोडाव्यो आ वात लोकोये जइ मथुरामां एक बीजानी पासे
करी कंसें पण लोकोना मुखथी सांभळी जे आजे नद गोवालीयाना पुत्रें कालिनागने दम्यो

एटलामांतो राम कृष्ण वेहु जाइ घणा गोवालीयाना वृंदे परवस्था थका नगरने बारणे आव्या तिहां चपोत्तर अने पद्मोत्तर ए बे हाथीये तेमने रोक्या तेथी बधा गोवालीया भरवा लाग्या पछी बलजदें अने कृष्णें मली हाथीउंना वतोसल उखेडी नाखी हाथीउंने उपाडी दूर फेकी दीधा तेथी हाथीउ मरण पाम्या पछी कृष्ण बलजद वेहु जण मल्लने अखाडे आव्या तिहां एक राजाने मच उपरथी नीचे पटकीने ते मच उपर बेठा त्यां बलजदें श्री कृष्णने पोतानुं सर्व कुटुंब बताव्यु वली कंस पण देखाड्यो अने कह्यु के ए कंस आपणोज छे परंतु डुष्ट छे एटलामां कंसें पण चाणूरमल्ल अने मुष्टिकमल्ल ए बे ने युद्ध करवा तयार कर्या अनुक्रमें कृष्णजायें चाणूर मल्लने मार्यो अने बलजदें मुष्टिक मल्लने मारी नाख्यो ए रीते बेहु मल्लने मरण पामेला जोइ कंस क्रोध करीने बोल्यो अरे सुजटो जेणे ए बन्ने सर्पने पालण पोषण करी मह्योटा कर्या छे ते नद अने यशोदाजी बेहुने बांधी पकडीने इहां लइ आवो एटले घाणीमां पीली नखावीये एवु कंसनुं बोलवु सांजली श्रीकृष्ण रोषारुण थया थका कूदको मारीने कंसने कहेवा लाग्या अरे डुष्ट महारा छ जाइने तें मार्या छे तेनु हुं वैर लेउ छु एम कही कंसनी चोटली पकडी, नीचो नाखी देइ, मूकी मारी तेथी कंस मरण पामी नरके गयो यादवोये मली उग्रसेन राजाने पांजरामांथी बाहेर काढाडी बूटो करी सजामां लइ आवी बेसाड्यो, तेवारे लोकोये जाण्युं जे आ राम अने कृष्ण बेहु वसुदेवना पुत्र छे पछी उग्रसेन राजाये सोल वर्षनी उमरवाला श्रीकृष्णजीने त्रणसे वर्षनी उमरवाली सत्य जामाने परणावी दीधी हवे यादवोये जरासंधथी बीक पामीने जीवयशाने पूछ्युं के कंसने अग्निसंस्कार करीये ? तेवारे जीवयशा बोली राम कृष्ण तथा बीजा पण घणा यादवोनी

चित्र ६१









साथे कंसनें वाद् वेवाशे तमे छुउंतो खरा शुं थाय ठे ? ते सांनली कृष्णजी बोल्या के अरे जारे
शुं ताराथी थवानुं ठे एवुं सांनली जीवयशा तिहांथी निकली परवारी राजगृहमा पोताना
पिता पासे जइ छपाडे माथे रोवा लागी अने कह्युंके ताहारा जीवतां यादवोये ताहारा
जमाइने मारी नाख्यो यादव घणा उन्मत्त थया ठे ते सांनली जरासध बोल्यो हे पुत्रि ! तुं
धीरज धर जे थवानुं हतु ते थयुं हवे ए राम कृष्ण वेहु महारा अपराधी ठे ते वेहुने आवी
महारे स्वाधीन करी जाशे तोज यादवो महारा राजमां रही शकशे नहींकांतो हु ए सर्व
यादवोने मारी नाखीश एवी रीते जीवयशाने दिलासो आपी संतोषी पठी एक सोमनामा
सामंतने यादवोनी पासे जरासघें मोकल्यो ते यादवो पासे आवीने समुद्रविजय प्रमुख
राजाउंने कहेवा लाग्यो के हे यादवो ! तमे महारी वात सांनलो के, जे थवावालु हतुं ते
थइ गयुं हवे मात्र एक राम अने बीजो कृष्ण ए बे गोवालीयाना ठोकरा ठे तेने बांधीने म
हारी साथे आपी जरासंध पासे मोकली आपो ए वासोने लीधे तमारा सर्व यादवकुलनो
क्षय करावो नही, ते सांनली समुद्रविजय बोल्या अरे सोम ! तु समजतो नथी जे एवा
गुणवान अने बलवत पुत्रोने मरावावानें अर्थें अमे तुजने आपी दइये तो हवे अमे वृद्ध थया
ते केटला एक काल पर्यंत जीवता रहीशुं माटे जे थवानुं हशे ते थशे अमे कांइ अमारा
पुत्र आपीशुं नही वली बलनइ बोल्या के अरे सोम तुं पिताउंनी पासेथी पुत्रनें मागता
लजातो नथी शुं ? अरे हजीतो अमे अमारा एक नाइ मारवानुं कंस पासेथी वेर लीधु ठे
परंतु पांच नाइ बीजा माया ठे तेनुं वैर लेवुं बाकी रह्युं ठे माटे तुं जीववानी चाहना रा
खतो होयतो इहांथी चाल्यो जा नहींकां तने तो हमणाज फल देखाडीश एवुं सांनली सो

मनामा सामत धीक पामीनें जरासंध पासे गयो पाछलथी यादवो जय पाम्या थका कोष्टिक निमित्तियाने पूछ्युं के अमारो जय क्यां थशे ते दिशा अमने बताव तेवारे निमित्तियो बोल्यो तमारा कुलमां राम अने कृष्ण महापुरुषो छे वली नेमीश्वर जगवान तीर्थंकर छे माटे त मारो कोइ रीते बिगाड थवानो नथी परंतु हाल तमे कृष्णने राजा करीने पछी पश्चिमदिशायें जाओ ते मार्गमां जतां जतां जे स्थानके सत्यजामा, पुत्रनुं जोडलुं प्रसवे ते स्थानके तमारे रही जावुं तिहां तमारी वृद्धि थवावाली छे पण आही तमारे रहेवुं नही एवुं सांजलीनें शौरीपुरथी समुद्रविजय प्रमुख अगीआर कुलकोटी यादव नीकल्या अने मथुराथी उग्रसेन प्रमुख सात कुलकोटी यादवो एकठा थइने सर्व कुटुंबसहित सोरठ देश तरफ चाल्या हवे तिहां सोम नामा सामतें राजगृह नगरे जइ राजा जरासंधने समाचार विदित कस्या जरासंध पण सैन्य सज्ज करी यादवो उपर चढाइ करवा तयार थयो, ते वखत जरासंधनो पुत्र कालकुमर बोल्यो के जो महारु नाम काल छे तो हुं सर्व यादवोने कालरूप थइ मारी नाखीश जो यादवो आकाशमां उंचा गया हशे तो नीसरणी मांमीने उपर आकाशमां जइ यादवोनो नाश करीश अने जो यादवोयें जमीनमां प्रवेश कस्यो हशे तो जमीन खोदीने हुं पण प्रवेश करी तेमने मारीश जो पाणीमां यादवोयें प्रवेश कस्यो हशे तो हु पण पाणीमां प्रवेश करी तेमने मारीश तथा जो अग्निमां यादवोयें प्रवेश कस्यो हशे तो हुं पण अग्निमां प्रवेश करीने यादवोनो नाश करीश एवुं पण लइ पांचशे जाइयो सहित पिताने नमस्कार करीने कालकुमरे यादवोनी पछवाडे चढाइ करी अने जीवयशाने पण जती वखते कहेवा लाग्यो के महारा बनेवीजीनुं वैर यादवो पासेथी लउं तो महारु नाम काल करी जाणजे


चित्र ६२

तेवारे जीवयशायें आशीर्वाद आप्यो अने कर्यु के जाइ तारुं मृत्यु थाय तो नहीं थाउ पण यादवोनो क्षय करजे ए रीतें जेम थवानु छे तेम जीवयशाना मुखमांथी वचन पण नीकळ्यु हवे पांचसो जाइउंसहित घणी ताकीदथी कालकुमर चाल्यो ते चालतां चालतां जेवारे यादवोथी एक दिवसना मुकाम जेटले अतरे आवी रह्यो एटलामां श्रीनेमीश्वर तीर्थंकर, कृष्ण वासुदेव, राम बलदेव बीजा पण वली तद्भव मोक्षगामी एवा घणा जनो यादवोंना परिवारमां छे तेमना पुण्यना योगें खेंची थकी यादवोनी कुलदेवी आवीने यादवोनुं मुकाम तथा कालकुमरनुं मुकाम जे जे स्थानके हतु तेना वचला मध्यजागमां एक पर्वतनी रचना करी ते पर्वतना मार्गमां एक चिता सलगावी ते चितानी पासे वली एक मोशीनुं रूप करीने कुलदेवी रुदन करती थकी बेठी तेने कालकुमरें आवीने पूछ्युं के आ चितामां कोण बल्या छे अने तुं शावास्ते रुदन करे छे तेवारे कुलदेवी छल करी रोती थकी बोली के हे पुत्र! कालकुमरना जयने लीधे सर्व यादवोनु कुटुंब आ चितामा बली जस्म थइ गयुं छे कोइ पण यादव रह्यो नही माटे हुं तेमनी कुलदेवी छु तो हवे मने कोण पूजशे ए कारण माटे मुजने बहु दुःख लाग्यु तेथी रुदन करु छु ते वात सांजली कालकुमर पोताना मुखें करेली प्रतिज्ञा राखवा माटे घणा सामत तथा केटलाएक जाइयोसहित तरवार काढाढीने यादवोने मारवा सारु अग्निमां पड्यो अने बली जस्म थइ गयो पछी प्रजाते वाकी रहेला जरासंधना लश्करमाहेला लोको देवमाया जाणीने पाछा फरी राजगृहे जइ जरासंधने सर्व वृत्तांत कर्युं हवे आही सर्व यादवो मोज मजामा खुशी थया थका पश्चिम समुद्रना तट उपर आव्या तिहां सत्यजामायें भ्रमरनामा पुत्रनुं जोडुं जण्यु तेवारे नैमित्तिकना कहेवा प्रमाणे

यादवो सर्व तिहां ज रह्या पछी कृष्ण महाराजें अट्ठम तप करी सुस्थित नामा लवणाधिप देवनुं आराधन कर्युं तेथी देवता प्रत्यक्ष आवी ऊभो रह्यो तेनी पासेथी श्रीकृष्णे रहेवाने सारु जगा मागी तेवारे देवतायें कर्युं इन्द्रमहाराजने पूछीने तमोने जगा आपीश एवुं कहीने सुस्थित देवता इन्द्र महाराज पासे जइ सर्व वात कही इन्द्रें धनद नामें जंभारीने मोकल्यो तेणे आवीने बार योजन लांबी अने नव योजन पोहोली एवी एक द्वारिका नगरी बनावी तेने फरतो अढार हाथ उंचो अने बार हाथ जाडो तथा नव हाथ पृथ्वीमा ऊंडो एवो सो नानो कोट बनाव्यो ते कोटने रत्नना कांगरायें करी शोभित कर्यो वली ते कोटनी बारे बाजु फरती खाइ करी तथा वाडी बाग बगीचाउ सहित एवो ते सुंदर कोट बनावी पछी धनदें ते द्वारिका नगरीमां श्रीकृष्णने वसवानी आज्ञा आपी ते नगरीमां एक सातभूमिवाळु कल्प वृक्षोनी वाडीसहित एवुं घर श्रीकृष्णजीने रहेवा सारु बनाव्युं वली ते घरनी एक बाजु समुद्रविजयादिक दश भाइउने माटे घरो बनाव्यां तथा ते श्रीकृष्णना घरनी बीजी बाजुमां वली उग्रसेननुं घर बनाव्यु तेनी बाजुमां वली बीजा सर्व भाइउना घर बनाव्यां ते सर्व घरो त्रण दिवस पर्यंत धन, धान्य, वस्त्र, घरेणा प्रमुख उत्तम वस्तुउंथी भरीने श्रीकृष्णने स्वाधीन करी धनद देवता स्वर्गमां पोताने स्थानके गयो हवे सर्व यादवोये मली द्वारिका नगरीमां वास कर्यो तिहां यादवोना कुटुंबोनी वृद्धि थवा लागी ते अनुक्रमे पच्चास वर्षनी मुदतमां अढार कुलकोडी यादवोमांथी वधीने छपन्न कुलकोडी यादवोनी वस्ती थइ एवा अवसरमां राजगृही नगरीमां कोइ रत्नकंबलना व्यापारीउंयें आवीने एवी वात करी के आ नगरीमां कोइ माल नथी सत्वविनानी निर्धन लोकोये करी भरेली छे कारण के अमारा रत्न कंबलना



श्रीकृष्णअने जरासंघनु युद्ध

लेवावाला पण कोइ आवा शहेरमां निकल्या नही अनें द्वारिकामां यादवो वसे छे ते महा सुखी छे एवीरीतें द्वारिका नगरीनी प्रशंसा जरासंघें सांभलीने विचार्यु के महारा वैरी हजी लगण जीवता छे माटे हवे एनो नाश करु, एम चितवी सेना लइ युद्ध करवा चाल्यो एवामां नारद ऋषीयें जइ श्रीकृष्णने कह्युं के तमारे चेतवुं होय तो चेतजो जरासंध तमारा उपर चढी आवे छे ते सांभली श्रीकृष्ण पण सेना तयार करी लडवाने तेनी सामे चाल्या तेणे पंचासरा गामनी पासे आवी पडाव दीधो मुकाम कर्युं अने जरासंधनुं लश्कर पण पंचासरा गामथी चार योजन दूर आवी पोहोच्युं तेमां जरासंधनुं लश्कर चक्रव्यूहना न्यायथी अने श्रीकृष्णनुं लश्कर गरुडव्यूहना न्यायथी एवा आकारे आवी पडाव दीधो ते बेहु लश्करने माहोमांहे महोटुं युद्ध थयुं लाखो गमे सुभटो मरण पाम्या छे इत्यादि विशेष अधिकार श्रीनेमिनाथचरित्रादि अनेक ग्रंथोथी जाणी लेवो, आंही ग्रंथगौरवना भयथी लखता नथी हवे ते बेहु तरफवाला सुभटोनी लडाइ चालतां श्रीकृष्णने जीतवो आपणने कठण थइ पडशे एवुं जरासंघें विचारीने कोइ उपाय न सूजतां जरा नामें एक बाण हतो ते श्रीकृष्णनी सेना उपर नाख्यो तेथी श्रीकृष्णनी सर्व सेना मुखें लोही वमती मूर्छा पामी गइ, तेवारे श्रीनेमिनाथजीना कहेवाथी श्रीकृष्णें अष्टम तप करी धरणेंद्रने आराध्यो धरणेंद्रें आवीने आगामिक तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा श्रीकृष्णने आपी तिहां मंगल निमित्तें श्रीकृष्णजीयें सुस्थित देवें आपेलो शंख वजाव्यो अने धरणेंद्रें आपेला बिंबनुं स्थापन कर्यु तिहां श्रीशंखेश्वर एवे नामें तीर्थ थयु ते आज लगण मोजुद छे कोइक आचार्य वली एम पण कहे छे के श्रीकृष्णजी त्रण दिवस उपवास करी बेठा ते त्रण दिवस पर्यंत श्रीनेमि

ाथ स्वामीयें सग्राम कर्यो वली इन्द्र महाराजें मातली नामा सारथी सहित रथ मोकल्यो
ेना उपर चढीने नेमिनाथजीयें शंख वजाव्यो तेथी जरासंधनी सेना शिथिल थइ गइ, अने
ाण दिवस श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथनी मूर्तिनो न्हवण पोतानी सेनामां श्रीकृष्णें छांट्यु तेथी
ीकृष्णजीनी सेना सज्ज थइ छेवट कोइ पण रीतें श्रीकृष्णने जीतवानो उपाय जरासंधने
ूज्यो नही तेवारे श्रीकृष्णने मारवा सारु जरासंधें पोतानु चक्र तेना उपर चलाव्यु तेथी कांइ
ीकृष्णनुं बगड्युं नही पण उलटुं ते चक्र श्रीकृष्णने त्रण प्रदक्षिणा आपीने तेमना हा
ामां आवी बेठुं पछी तेज चक्र लइ श्रीकृष्णें जरासंध उपर चलाव्युं तेणे जरासंधनु
ास्तक छेदी नाख्युं ते वखत देवताउ आकाशमां देवदुंदुभी वगाडीने बोल्या जे श्रीकृष्ण न
ामो वासुदेव थयो, ते वात सांभली समस्त जरासंधनी सेना आवीने श्रीकृष्णजीनी सेवा
ां हाजर थइ पछी श्रीकृष्ण द्वारिकामां आव्या सुख समाधिमा त्रण खंडनुं राज्य भोगवता
ंहां रह्या छे बहोतेर कुलकोडी यादव द्वारिकामां रहे छे अने साठ कुलकोडी यादवो द्वा
िकानी बाहेर रहे छे तथा महापुरुष समुद्रविजयादिक दशे दसार तथा बलदेवादिक पांच
हावीर एटले महोटा योधा, तेमज उग्रसेनादिक सोल हजार राजाउ तथा प्रद्युम्नादिक साडा
ाणक्रोड कुमर तथा सांबादिक सोल हजार दुर्दांत कुमर अने वीरसेन प्रमुख एकवीश हजार
ीर तथा महासेनप्रमुख छपन्न हजार बलवंत राजाउ ए सर्व द्वारिकामां वसे छे वली रु
क्मणीप्रमुख बत्रीश हजार राणीउ तथा अनंगसेना प्रमुख अनेक गणिकाउ एवा परिवार
ाहित परवर्यो थको महोटुं राज्य श्रीकृष्णजी करे छे एवा अवसरमां इन्द्रमहाराजें श्रीनेमि
नाथजीना बलनी प्रशंसा करी तेवारें ते सभामां कोइ मिथ्यात्वी देव इंद्रमहाराजना वचनने

नही मानतो थको गिरनार पर्वत उपर आव्यो तेणें त्यां छुरंधरा नामें नवीन नगर वसाव्यु
तेमां ते देवता पोते आवीने मनुष्यनुं रूप धारण करीने रह्यो अने द्वारिका नगरीना रहे
नारा लोकोने नित्यप्रत्यें घणुंज दुःख देवा लाग्यो, उपद्रव करवा लाग्यो, ए वात सांभली
ने महा अभिमाननो धरनार एवो अनाहष्टि ते देवने पकडवा सारुं गिरनारनी उपर ते देवें
वसावेला नगरनी उपर चढी आव्यो, तेने देवतायें देव मायायें करी जीती लीधो अने
बांधीने पोताना नगरमा लइ गयो, ए वात सांभलीने समुद्रविजयजी तेनी साथे लडवाने
माटे जवाने तयार थया तेवारें राम कृष्ण बे भाइए समुद्रविजयने वर्ज्यो, अने पोते
लडाइ करवा सारु गया तेने पण देवतायें हरावीने पोतानां नगरमां लइ जइ बंदीखानामां
नाखी दीधा, तेवारें द्वारिकामा हालकल्लोल थइ रह्यो अने लोको कहेवा लाग्या के राम कृष्ण
बे भाइ हारी गया तो हवे आपणी रक्षा कोण करी शकशे? त्यार पछी सत्यभामाजी प्रमुख
स्त्रीउंये जइ श्रीनेमनाथजीने कह्युं के तमे अनत बली छतां तमारा भाइने शत्रु दुःख आपे
छे तो एथी तमारी लाज जाय छे तेवारे नेमीश्वर भगवान एकला रथमां बेशीने शत्रुना न
गरने चारे बाजु रथ फेरव्यो तेथी कांगरासहित सर्व कोट पडी गयो तेवारे देवें सिंह विकुर्व्या
ते जोइ नेमिनाथें धनुष्यनो टंकारव करीने सर्व सिंहोने भगावी दीधा तेवारे देवतायें अं
धकार करी मूक्यो, भगवाने उद्योतवालो बाण मूकीने अंधकारनो नाश कर्यो, तेवारें देव
तायें मेघ वरसाव्यो, भगवाने वायरो चलावीने मेघने दूर कर्यो, तेवारे देवतायें अंगारानो व
र्षाद वरसाव्यो, तेने भगवाने पाणीथी बूझावी नाख्यो, पछी भगवाने मोह बाण मूक्युं तेथी
सर्व शत्रु मूर्छा खाइने पडी गया, महादुःखी थया, तेवारें इन्द्रमहाराज तिहां आवीने विन

ति करवा लाग्यो, के महाराज ! ए अज्ञानी देव छे ते आपना अनत बलने शु जाणे? ते वारे नगवाने रूपा करीने देवताने छोडी मूक्यो पछी ते देवतायें महोटा महोत्सव सहित श्री रूष्णादिकने द्वारिकामां मोकली दीधा पोते नगवानने नमीने पोताने स्थानकें गयो हवे अनु क्रमें श्रीनेमीश्वर नगवान त्रणसे वर्षना थया पण परणवानी इछा राखे नही तेवारे शिवादेवी जीये कह्युं के हे पुत्र ! तु एक विवाह करीने महारा मनोरथ पूरण कर तेवारे नगवान बोल्या हे माताजी ! कोइ महारा योग्य कन्या हशे तो हुं परणीश ते वात सांजली माताजी मोन धारण करी रह्यां हवे श्रीसमुद्रविजयकुलसणगार, शिवादेवी मात मल्हार, एक दृढ नेमि, वीजा दृढनेमि, त्रीजा अतिनेमि, चोथा अरिष्टनेमि अने पांचमा रहनेमि ए पांच कुमर मांहेला श्रीअरिष्टनेमि कुमर ते लघुवय सरखा सरखी जोडि, मनतणे कोडि, घणा कुमरे परवर्या लीलायें रमता जमता श्रीरूष्णनी आयुध शालायें आव्या, आयुध जोवा लाग्या, तेवारे रक्षपाल वोल्यो तमे लघु बालक छो, माटे अलगा रहो, एनो स्पर्श करवो पण दो हिलो छे, छोकरहे छाश न पीवाय, महोटुं कार्य ते महोटाथाज थाय, ते न सांजलतां श्रीअ रिष्टनेमि कुमारें श्रीरूष्णना चक्रने उपाडी कुंजारना चक्रनी पेरे नमाड्युं तथा सारंग धनुष्य उपाडीने तेने कमलना नालनी पेरे नमाव्यु तथा कोमोदकी नामें गदाने लाकडीनी पेठे उपाडीने पोताना खांधा उपर राखी हवे जेवारे पांचजन्य शंख पूर्यो तेवारे तेनो शब्द सांज लीने त्रण भुवन कंप्या, पर्वतना शृंग तूटी तूटीने पडवा लाग्या, समुद्रजल छलता हवा, हस्ती तुरगमादिकना वधन तूटी पड्या तेथी सर्व नागी गया, लोक सर्व बहेरा थइ गया, धरती धूजवा लागी, नगरनो कोट पण भज्यो. समड छलक्यो. विग्गसत्रास पाम्या. यावत

चित्र ६४





सर्वे मूर्छागत जेवा थइ गया, सर्वे बीक पामवा लाग्या, श्रीकृष्ण, बलन्नद्र, कंपता हवा अने नयाकुल थया थका चिंतववा लाग्या जे आ ते कोण बलवत छे? के जेणें सर्वे पृथ्वी क्षोन पमाडी एवी रीतें तेमने कांइ पण जप न आव्यो, तेथी तरत तिहां आव्या अने पूछा करी, ते वारे सर्वे बोल्या जे श्रीअरिष्टनेमि कुमारनो ए बल छे, ते सांनली चमत्कार पाम्या पछी श्री कृष्णें कयुं के हे नाइ! आपणे बलपरीक्षा करीयें, तो वछित शीजे तेवारे नेमिकुमर बोल्या के जे नूमि लुवनादिक बाह्य खेल करवुं, ते उत्तम नरने योग्य नही, माटे माहोमाहे एकेकनी नूजावालीने बलपरीक्षा करियें, ते वचन श्रीकृष्णे प्रमाण करी पोतानी नूजा लबावीने कयुं के, आ महारी बाह नमाडो तेवारे नेमिकुमारें कमलनालनी पेरे एक आंगुलीयें श्रीकृष्णनी बाह नमावी दीधी पछी श्रीनेमिकुमारें पोतानी बाह लंबावी तिहां कृष्ण घणु बल करी वान रनी पेरे वलगीने हिंच्या तेवारे श्रीनेमिकुमर बोल्या के हे कृष्णजी! तमोने माता देवकीयें पालणे पोढाडीने रमाड्या नही, ते माटे हवे हुं तमने हिंचोलु, एम कहीने श्रीकृष्णने हिं मोलानी माफक हिंचोल्या एरीतें जेम जुगारी दाव हारे, तेम कृष्ण हारी गया एवुं जोइने बलन्नद्रजी बोल्या के हे नाइ भ्रमरने नारे तरुशाखा नमे नही, पछी कृष्ण तथा बलन्नद्रजी चिंतातुर थका चिंतवे छे के ए पितराइ नाइ आपणाथी अधिक बलवान् छे माटे आपणु सर्व राज्य लइ मूकशे कीडी तीतर न्याय करशे एटलामां आकाशे देव वाणी थइ के अहो कृष्ण वासुदेव तमे चिंता म करशो एतो नेमीश्वर नगवान, बाल ब्रह्मचारी, बावीशमा तीर्थं कर एनुं अतुली बल छे तथापि तमारो राज्य लेवानी एने गरज नथी अने स्त्री परणवानी पण गरज नथी ए तो परण्या विनाज संसारनो त्याग करी दिक्षा लेशे ए वचन सांनली

कृष्णजी हर्ष पामी पोताने घरे पोहोता हवे एक दिवस शिवादेवीजीये नेमिकुमरने निरागी जाणीने गोपीयोने जलामण करी के तमे वसंत रमवाने माटे नेमीश्वरने तेडी जाओ अने एने जेम तेम सरागी करी विवाह करवानो मनावो तेवारे सत्यभामाप्रमुख सोल हजार गोपीयो मलीने श्रीनेमीश्वरने सहस्राम्र वनमां लइ जइ विचित्र प्रकारना वचनो कहेवा लागी तिहां एक बोली तमे शामाटे परणता नथी तमारो भाइ श्रीकृष्ण सोल हजार स्त्रीयो परण्यो छे अने तमे एक पण परणता नथी तेनुं कारण शुं? तेवारे बीजी बोली हे भला पुरुष! आवी रीतें युवानपणु कां फोकट गमावो छो, परणवामां घणी मजा छे, त्रीजी बोली परण्याविना मोक्ष पण जइ शकशो नही, केमके ऋषभादिक तीर्थंकर पण सर्व परणीने मोक्ष गया छे तो वली तमे ते कोइ नवा मोक्ष जवावाला थया छो, एक बोली एतो मोल्यो थाशे परणीने शुं करशे, सत्यभामा बोली जो नही माने तो एनो पल्लो पकडो, तेवारे लक्ष्मणा बोली ए पूज्य छे माटे एनी साथे जबराइ करवी नही, पण परणवुं तो अवश्य जोइयेज, वली सत्यभामाजी बोली एनी पासे कोइ सामर्थ्य नथी कारणके जो स्त्री परणे तो तेने पालवानु काम मुश्केल छे ते एनाथी बनी शके नही तथापि जो परणी लेशे तो सोल हजारने एनो भाइ पाले छे तेनी साथें एक एनी पण पालशे एवी वातो सांभलीने नेमिनाथजी कांइक हस्या तेवारे सर्व गोपीयो ताली आपीने बोलवा लागी जे एणे विवाह मान्यो, मातापितायें पण जाण्युं जे विवाह मान्य कर्यो एवुं समजीने शिवादेवीना कहेवाथी श्रीकृष्ण तथा समुद्रविजयजी प्रमुख राजायें उग्रसेन राजान घरें जइने राजीमती कन्यानी मागणी करी तेणे पण खुसीथी कर्युं के सुखेथी परणावो पछी बेहु जगाये विवाहनो महोत्सव थवा मांड्यो परणवा माटे



નેમીશ્વર ભગવાન્ જળક્રીડા કરવા ગયા તેનું ચિત્ર

शणगार कराववा लागा पण नेमजी विनयवान छे माटे मातापितानो दृषभंग करवाना ज यथी जो पण निस्पृही छे तोपण मौन धारण करी रह्या हवे जान निकली ते वखत अनेक यादवोना क्रोडो गमे मनुष्य साथे चाल्या, सर्व राजाउ साथे चाल्या, अनेक वाजां वाजतां, हाथी उपर बेठा, चमर ढलता, देवदेवी आकाशमा चालतां, स्त्रीयो पृथ्वी उपर गीत गाते थके चालता चालता उग्रसेनना महेल पासे जान आवी तेवारे नेमजी सारथीने पूछवा लाग्या के आ महेल कोनो छे, सारथी बोल्यो तमारा श्वसुरानो महेल छे, आंही विवाह मनाववा तथा जान संबंधि युक्ति बीजी प्रत उपरथी लखीयें छैयें जेवारें वसंत मास आव्यो, तेवारे बत्रीश हजार राणी सहित श्रीकृष्ण वासुदेव श्रीनेमिकुमरने साथें लइ वसंतक्रीडा करवा वनमा आव्या तिहां स त्यभामादिक राणीयोनें नेमिकुमरने विवाह मनाववानो सन्कारी कृष्ण स्थानांतरे रह्या, हवे ते अनेक स्त्रीउ मली थकी श्रीनेमिकुमरने केसर, गुलाब प्रमुख सुगंध नीर छांटे, फूलनो दडो हृदयजणी नाखें, कटाक्ष बाणे वींधे, कामचेष्टापूर्वक जल छांटे, एम घणा प्रकारे हास्य करीने कहेवा लागी के हे देवर! विवाह मानो अने एक स्त्रीतो परणो, जो स्त्रीनु भरण पोषण तमाराथी न थाय तो तमारो भाइ बत्रीश हजार स्त्रीयोनो भरण पोषण करे छे, तेम तमारी एक स्त्रीनुं पण पोषण करशो ? तेनी चिंता करशो नही, पण स्त्री जरुर परणो, स्त्री विना पुरुष शोभे नही, कोइ विश्वास न करे, कोइ माने नही, वली अगनी शुश्रूषा कोण करे, प्राहुणा प्रहीने कोण साचवे, ते माटे पाणिग्रहण अंगीकार करो, मन मानती कन्या वरो, ए विनति मानो, वधे जेम वानो, नही तर पण नही छूटो, जोर करी जुगे, अमने वश आव्या आज, करवी हवे केही लाज एवा वचन सांभली नेमीश्वर नीचु जोइ रह्या, जे

ए स्त्रीउ साथे ते वली श्यो वचनविचार करवो एम चिंति हा ना कांइ न कही, तेवारे स्त्रीउ
रुद्वेयालागी के मान्यो मान्यो विवाह, सहुने थयो उछाह, श्रीसमुद्रविजय शिवादेवी राणीने
तिणीताल, आपे वधामणी उजमाल ॥ हवे श्रीकृष्ण नरिंद, मनने आणंद, उग्रसेन राजान,
पासे बहुमान, मागे राजीमती कन्या, सतीशिरोमणि धन्या, उग्रसेन पभणे सघले साज,
इहां आणो ते वरराज, तो देउ कन्या तास, जग विस्तरे जश वास ॥ हवे समुद्रविजय
राजा, शिवादेवी राणी ज्योतषी कोष्टुकना मुखथी श्रावण सुदि छठ्ठं लगन जाणी, वांटे
वधामणी, तेडावे सगासणीजा जणी, मांके मोहोटो आडंबर, धवल मंगल गाये घर घर,
पोपे नल नजे पकवान, स्तुगते चलावे जान ॥ तद्यथा ॥ शोल हजार मुकुटबद्ध छत्राधिपति
राजान, बेतालीश लाख हस्ती ऐरावतसमान ॥ बेतालीश लाख घोडा, सुवर्ण साजतेने स
जोडा ॥ बेतालीश लाख रथ, शोभा पामता पथ, अडतालीश कोडी पायक, शस्त्रबल धा
यक, नव कोडी सामान्य तुरंगम, एक एकथी अनोपम ॥ छहु कोडी चिराकवार, नव
कोडी छागलियावार ॥ बार कोडी वाजित्र वाजे, अंबर गाजे, सांबकुमरप्रमुख शाठ सहस्र
दुर्दांत कुमर ते पारसीक जातिने घोडे चढया, प्रद्युम्नप्रमुख पंचोतेर सहस्र कुमर महाधीर
ते हयरेवा जातिने अश्वे आरूढ थया, अरिमर्दनप्रमुख पांच लाख कुमर ते बहोली जा
तिने अश्वे चढया, वीरप्रमुख सात लाख कुमर ते पाणी पंथा जातिने तुरंगे चढया, साग
रचंद्रप्रमुख एक लाख कुमर ते कंबोजा जातिने अश्वे चढया, अनाहष्टिप्रमुख तेर लाख
कुमर रेवाधिरूढ थया, पालकप्रमुख सात लाख कुमर अष्टमंगल जातिने अश्वे चढया, दं
ढनेमिप्रमुख बार लाख कुमर रेमगली जातिने अश्वे चढया, रहनेमिप्रमुख नव लाख कु



नेमीश्वर भगवाननी जान

मर चउप्रना जातिने अश्वे चढया, महानेमिप्रमुख पन्नर लाख कुमर अश्वि पंया जातिने अश्वे चढया, एवा यादव कुमर, जोगी नमर, जेहना जाणीता कुल, जालानुं चल, आगलथी चाले, थोडुं बोले, थोडुं ठकुरने नमे, दर्शनीने नमे, परनारी सहोदर, वाचा अविचल, श रणागत साधार, सूर वीर दातार, फूकार रणांगण धीर, रिपुक्षय दल सीर, कसवोड गर काव, केशरीए पागे, लीधीए वागे, कांधाल, मूगल, नलनला नूपाल, आवे उमह्या, पंथे वह्यां, वली वे कोडी सेजवाला, चोराशी कोडी स्त्री गीत गान करे, छपन्न कोडी अलव धजा, बार कोडी नाट बिरुदावली बोले, बार कोडी सुखासन पालखी, पन्नर लाख खचर ड्ये नया, त्रण लाख श्रीछत्र, बेतालीश लाख रथ, त्रण कोडि चामर ढले, एंसी लाख नीसान वाजे, सत्तर लाख ढोल वाजे, छन्नु कोडी नेरी वाजे, नव लाख मादल वाजे, पीस्तालीश कोडी छडीदार, शाठ कोडी सुरदीया, वडवडा वहीया, मंत्रीश्वर प्रधान, कहियें केता अभि धान, नवाणु कोडी सामान्य वहिल, यइ इम जाननी चहिल पहिल, हवे वर राजाने सर्वौ पधिनीरे कराव्यु स्नान, उज्ज्वलुं विशेषे वान, मातायें नालस्थले कीधो तिलक, अक्षतनो प्रतिष्ठयो उपर पदक, नव कोडीनो मुकुट, पच्चाश कोडीनो नवसरो, बार कोडीना वे कुंमल, अडतालीश कोडीनुं रत्ने जडित तिलक, पच्चीश कोडीनी मुद्रिका, पच्चीश कोडीना अनेक रत्न जडित हार, वे लाख कोडीनी रत्नजडीत शांकली, जनोइनी पेरे पहेरे, पन्नर कोडीनी चंप कलि, देवदत्त असुलिक पागडी, पच्चीश लाख कोडीनी कवाइ, एकाणुं कोडीना वे बहिरखां, पीस्तालीश कोडीना बे बाजुबंध, सत्तावीश लाखनो कणदोरो, पच्चीश कोडीनो रत्नजडित कणो, त्रीश कोडीनी वाणही पगरखां, छन्नु कोडीनो अनेकरत्नजडित श्रीफल रूप फूलवडो,

शृङ्गार रस पहेरावी, सकल सणगार करावी, आंख आंजी, मुख मांजी, सिर धार्यो खूप, शोभे सुरूप, आण्यो गजराज, सुवर्णमय साज, मेघाडंबर छत्र, प्रतिष्ठ्यो पवित्र, चढ्यो वर राज, जाणे इन्द्रमहाराज, के मूर्त्तिवंतो कामराज, शोभा समाज, पसर्यो तूर्यमंगलनिनाद, गह गह्यो स्त्रीजनसाद, आकाशे अनेक देव देवांगना इन्द्र इन्द्राणी रंभा अपत्सरा आवे, मनने भावे, किन्नरी गीत गाये, सरस्वती वीणा वाये, तुंबर गंधर्व नाचे, सहु मन राचे, रूपण बल भइ दशे दशार छमावे, जीर्ण दुर्ग जणी जान आवे, जेम ज्येष्ठमास उद्यान, साजन जनने अधिको मान, याचक जनने देतो दान, हुइ धवल मंगल उच्चार, आवीउ वर तोरण बार, जोये जोवणहार, धन्य धन्य राजीमती नार, जेणीयें वर लाधो श्रीनेमिकुमार, हवे राजीमती गवाक्षमां रेती थकी सखीयोने कहे छे के म्हारो भर्त्तार कहेवो छे तेवारे सखीयो बोली आ हाथी उ पर बेठा थका महाऋद्धिसहित चाल्या आवे छे ते नेमजी छे तेवारे प्रद्युम्न रूप देखी मोह पामीने विचारवा लागी के म्हारो म्होटो भाग्योदय थयुं जे नेमजी जेवो वर आवीने मुने परणशे एम विचारती चन्द्रानना, मृगलोचना सखीसहित वार्त्ता करतां सखीयें कह्युं के, ए वर सर्वगुणसंपूर्ण छे पण एक अवगुण ए छे जे एनुं श्यामवर्ण छे, वरतो गोरो जोइयें, राजीमती बोली एतो दूधमांहेथी पूरा काढवा मांड्या श्यामवस्तु मांहे तो घणो गुण छे, जमि, चित्रा वेली, अगर, कस्तूरी, मेघ, कीकी, केश, कशोटीनु पाषाण, मसी, रात्रि, इत्यादिक वस्तु श्याम होय छे ते जगतमां भली कहेवाय छे तथा धोली वस्तु कपूर छे, तेने मरी श्रंगाराचुं मेल छे, चित्रा ने रोहिणी श्याम होय तो शोभे, नि केवल गोर तो लुण, अस्थि, हिम, स्वेत कुष्ठ, एमां हे शुं वखाणवा योग्य छे? श्यामले वरणे वरप्रशस्य देखी लोचन अमीय भराणी, स्वप



भोजन आपवा माटे एकठा करेला जनावर जीवो तथा पांजरामां रहेला पक्षीओ तेमने भगवान् छूटा करी मूके छे

कमल वक्षस्यां, मनना मनोरथ रूप वेली प्रसरति हवो ॥ ॥ एवामां राजीमतीनी ज
मणी आंख फूरकी तेवारें शोच करवा लागी अने जाण्युं जे सर्वथा प्रभुनो संयोग न मले,
पठी सखी प्रत्ये कहेवा लागी के महारो जमणो अंग फूरके ठे ते सांजली सखी बोली तु
मंगलमां अपमंगल कां बोले ठे एवामां प्रभुयें पण तोरणें आवतां थकां मार्गमां चतुष्पदा
दिक जीवें नर्यां वाडा दीठां तथा पंखीयें नरेला पांजरा दीठां तथा घणा जलचर जीव पा
णीविना ठचा ठचा कुमी रह्या ठे तथा थलचरमां हरिण, सांबर, रोज, गेटा, मेंढा, ससला,
प्रमुख अनेक जातिना जीव तथा खेचरमां कूर्कुट, तीतर, मोर, सारसना जोडला, राजहंस,
कोयल, बगला, सूडा, इत्यादिक जीवो एकठा कर्यां ठे, तेनी पोकार सांजली तथा एवामां एक
हरिण अने हरिणली कोटें कोट नरावी विलाप करतां प्रभुने विनति करे ठे के हे प्रभु ! अ
मने आ कष्टमांहेथी उगार, अमे कांइ अपराध कीधो नथी, तृणखला मुखे दीये ठैयें, हे अनाथ
नाथ ! प्रभु, राख राख ते जोइ श्रीनेमिकुमरे हस्ति मावतकने पूठ्युं के ए जीवोने शे कारणे रों
की राख्या ठे, तेवारें मावत बोल्यो तुमारा विवाह गोरव नोजनार्थें राख्या ठे ते सांजली प्रभु
बोल्या धिक् धिक् ए विवाहें सर्युं मने आ नरकना मूलरूप विवाह जोतो नथी प्रभु दीनद
याल सर्व जीवायोनीने ठोडावी हस्तिथकी ठतरी रथें वेसी पाठा वल्या, तेवारें श्रीसमुद्रवि
जय राजा, शिवा देवी राणी, कृष्णवासुदेव, अने बलजद्रप्रमुख ठप्पन्नकुलकोटि यादव रथ
अटकाववाने आडा फर्या परंतु प्रभु कोइना वाळ्या वल्या नहीं अने एवु बोल्या के आ सर्व
जीवो बंधनमां बांध्यां थकां महाडुःख देखे ठे तेम हुं बंधाउं नहीं अने संसारमां पण रहुं
नही हाथीउ बांधे जाल्या न जाय, तिहां जायरे जाय यादव राय ॥ एवी वार्त्ता सांजली रा

जीमती धरणी ढली पडी क्षण एकें सचेतन थइ तेवारें मुखथकी बोली के हे हे हे प्रभु तमें दूर्षस्थानकें ए श्यो विपवाद उपजाव्यो ? एम कहेती हार त्रोडती, वलय मोडती आज रण नाजती, वस्त्र मांजती, किंकणीकलाप ठोडती, मस्तक फोडती, कुतलकलाप रोलती, भूमि लोटती, सांजन बाष्पजलें भूमि सींचती, सखीजन अपमानती, जेम थोडा पाणी माहे माछली टलवले तेम विकल थाती, विरहमाती, क्षणे रोवे, क्षणे जोवे, क्षणे आक्रंद करे, क्षणे नीसास नरे, क्षणे मूछे, क्षणे बूजे, क्षणे धूंजे, क्षणे न सूजे, वली अनेक उलना पूर्वक वचन कहे छे के हा यादवकुलदिनकर, हा करुणासागर, हे शरणागतवत्सल, हु अबलाने एम एकली मूकवी तुमने न घटे, जो सर्वजग जीवनी दया पालो छो तो मुज उपर कां दया न आणी, माटे अरे निष्ठुर निर्लज्ज हैडा तने प्रभु मूकी गया तो हवे तुं शतखंड कां नथी थातो ? हवे तु श्यो लाहो लइश एवा राजीमतीना विलाप सांजली सखीवर्ग, सज्जनवर्ग, मातापितादिक क हेवा लाग्या के ए निस्नेही छे श्यो राग करवो तुं एटला विलाप शावास्ते करे छे तहारो कोइ विवाह थयो नथी माटे ए कालो कुरूपो वर गयो तो शुं थयुं ताहारे वली बीजो रूपवान वर मलशे माटे हवे अन्य उत्तम वर वरो तेवारें राजीमती बोली ए वचन सांजलवा योग्य नहिं, तमे एवा वचन मुजने म कहो, महारे तो श्रीनेमिनाथना चरणनुं शरण छे, काली तो कस्तुरी पण थाय छें ते गुणवान छे माटे तेनुं मूल्य घणुं थाय छे अने जे सपेत लसण थाय छे ते निरगुणी छे माटे तेनो कोइ नाव पण पुछतो नथी तो ए प्रभुजीयें मारो हाथ न साह्यो माथे मूकावीश ए प्रभुने नामे हुं सौभाग्यवती छुं माटे जो एणे

+ ... तेनी ... ... पढ़वाढे फरीश पण बीजो वर प


चित्र ६७
भगवान् दीक्षा
अशोक वृक्षनी नीचे

२७८ नहीं एम कही वली गिरनारजीने कहेवा लागी के हे गिरनार मुजने त्यागीने नेमजी जो तादारी पासे आवे तो तु एने पेसवा आपीश नही वली एवो छलनो आपजे के तुं अवलाने छ खणी करीने का आव्यो अथवा राजलक्ष्मी छोडी दीधी तो जाणवुं जे एतो त्यागवावालानी रीती छे इत्यादिक विकल्प करती, शील पालती थकी पोताना पिता ना घरमां रहे छे एवामा रथनेमि राजीमतीने कहेवा लाग्यो के नेमजीयें तुजने परणी नही अने हु नेमजीनो भाइ छु माटे हवे तु मनेज परण तेवारे राजीमती बोली अरे वमेला आ हारने खानानी तु शुं चाहना राखे छे? हुं तो एक श्रीनेमीश्वर विना बीजानी चाहना कर ती नथी एवुं सानली रथनेमि विलखो थइ वेशी रह्यो ॥ हवे अरिहंत श्रीअरिष्टनेमि तोरण थी पाछा फरी घरे आव्या थका मली त्रणशे वर्ष कुमारावस्थायें घरमा रह्या पछी लोकांतिक देवो आवी बोल्या हे प्रभु! धर्म प्रवर्त्तावो नेमिनाथ स्वामीयें अवधि ज्ञानथी पोताने दीक्षानो अवसर जाणी वरसी दान देवा मांड्युं ॥ १७२ ॥ ॥ हवे आ वर्षाकालनो पहेलो महीनो, बीजु पखवाडियुं, श्रावणसुदि छठ्ठने दिवसे पहेला पहोरथी पूर्वदिनमा अर्थात् मध्यान्ह प हेला, उत्तर कुरानामा पालखीमा वेशी ते पालखी देव तथा मनुष्ये उपाडी यावत् द्वारिका नगरीनी वचमांथी थइने जिहां रेवत नामा उद्यान छे तिहां आवीने अशोक वृक्षनी नीचे पालखीमांथी उतरीने, पोताना हाथथी सर्व घरेणा अलंकार उतारीने, पांच मुष्टि लोच क रीने, छठ भक्त पाणीरहित एटले चउविहारा बे उपवासे, चित्रा नक्षत्रे चंद्रमानो योग होते छते, एक देवदुष्य वस्त्र लइने एक हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी, घर त्यागीने साधुपणु अंगीकार कीधुं ॥१७३॥ ॥ अरिहंत अरिष्टनेमि चोपन रात्री छुधी काया वोसरावी यावत्

त्रीजो महिनो, पांचमु पखवाडियुं, आ
पंचावनमे दिन रात अतरे वर्त्तमान जे वर्षाकालनो त्रीजो महिनो, पांचमु पखवाडियुं, आ शोजविदिनी अमावासने दिवसें पाछला पहोरमां, गिरनार पर्वत उपर, वेतस नामा वृक्षनी नीचे पाणी रहित अठ्ठमना तपमा चित्रा नक्षत्रें चन्द्रमानो योग आवे छते शुक्लध्यान ध्या वता थका अनतु केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयुं, सर्वनाव जाणता देखता थका विचरे ॥ १७४ ॥ ॥ श्रीनेमिनाथ स्वामीने गिरनार पर्वतना सहस्राम्र वनमां केवलज्ञान उ पनुं, देवे समवसरण रच्यो, वनपालकें आवी श्रीकृष्णनें वधामणी आपी, श्रीकृष्ण महोटी ऋद्धिसहित वांदवा आव्यो, राजीमतीपण वांदवा आवी, बीजापण घणा लोक वांदवा आव्या, जगवाननी देशना सुणीने वरदत्तनामा राजायें बे हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी हवे कृष्णजीयें पूछ्यु के हे स्वामी आपनी उपर राजीमती एटलो मोह केम राखे छे तेनुं कारण मने समजावो, जगवान बोल्या हे कृष्ण महारे एनी साथे पूर्वे आठ जवनो संबंध छे तेमा पहेले नवें हुं धननामे राजा हतो तेवारे ए महारी धनवती नामे राणी हती, बीजा जवमा वेहु जण पहेले देवलोके देवपणे उपन्यां, त्रीजे नवे देवलोकथी चवीने हुं चित्रगतिनामा वि द्याधरराजा थयो तेवारे ए रत्नवती नामे महारी स्त्री थइ, चोथा जवमा बन्ने जण चोथे देव लोके गया, पांचमे नवें देवलोकथी चवी हुं अपराजित नामे राजा थयो तेवारे ए प्रियमती नामे महारी राणी थइ, छठे नवे बेहु जण अगीआरमे देवलोके देवता थयां, सातमा जवमां हुं शंखनामे राजा थयो तेवारे ए सोमवती एवे नामे, महारी राणी थइ, आठमे नवे अमे बेहु अपराजित नामा अनुत्तर विमाने देवता पणे जइ उपन्यां तिहांथी चवीने नवमां जवमां हुं



रेवार पर्वतनुपर एक गुफामा रहनेमी साधु काउस्सग करेछे अने तेम गुफामा राजीमतीजी नग्न थईने पोताना वस्त्र सुकावे छे

द्वांथी विहार कर्यो अने श्रीकृष्णादिक तथा राजीमतीप्रमुख वृत्तात सान्नली द्वारिकांयें गयां,
पढी वली एकदा श्रीनेमिनाथजी गिरनारें आवी समोसर्या तेवारें राजीमतीयें बीजी घणी
राजकन्याउंनी सार्थे दीक्षा लीधी अने रथनेमीयें पण दीक्षा लीधी, द्दवे एक दिवस राजीमती
जीने गिरनार पर्वत उपर न्नगवानने वांदवा जतां मार्गमां वर्षाद वर्ष्यो तेथी राजीमतीना
वस्त्र न्नीजाइ गयां तेने सूकाववा सारु एक गुफामां प्रवेश कर्यो तेज गुफामा आगलथी रथनेमि
काउसग्ग ध्याने रहेलो ठे तेनी कांइ राजीमतीने खबर हती नहीं तेथी राजीमतीयें ते गुफा
मांहे पोताना न्नीजेला सर्व वस्त्र उतारी नाखीने सूकववा मूक्या तिहां राजीमतीने नग्न दे
खीने रथनेमीनुं मन चलायमान थयुं अने कामे पीड्यो थको लज्जानो त्याग करी बोलवा
लाग्यो के हे राजीमती ! तमे शा वास्ते तपस्या करीने नकामा शरीरने शोषवो ठो आवोनी
महारी पासें आपणे वेहु जण विषयसुख न्नोगवीयें हमणा युवान अवस्थामा तप करवानो
अवसर नथी फरी वृद्धावस्थायें दीक्षा लइशुं अकस्मात् ए वचन सांन्नली, अंगोपांग संवरी,
धैर्य धरी, दृढता धारण करीने, राजीमती बोली के अरे तने धिक्कार पडो जे तु दीक्षा ग्रहण क
रीने एवी वात करे ठे ? अरे समुद्रविजयराजाना पुत्रें सर्व सावद्य व्यापार त्यागी साधुपणु
आदर्युं तेणे मुजने वमी ठे माटे जे अगंधकुलना सर्प ठे ते जो पण तिर्यंच जातीना ठे तो
पण ते वमेला वस्तुने वांठता नथी तो तुं शुं ते तिर्यंचथी पण नीच थाय ठे जेमाटे वमेली
वस्तुने न्नोगववा वांठे ठे वमेली वस्तुने तो श्वानादिक वांठे ठे माटे तुं तहारु मन ठेकाणे
राख हुं कोइ रीतें तहारे हाथ आववानी नथी अरे तु न्नोग त्यागीने फरी नरकें जवानी अ
जिनापा शामाटे करे ठे तो हे महानुन्नाव ए पापनी आलोवणा लइ फरी संयमनो स्वीकार कर

नहीकां डुर्गतिमां पडीश इत्यादिक वचन रूप अंकुशे करी हस्तिनी पेरे रथनेमीने स्थिर कीधो पठी रथनेमी पण पापनी आलोचना लइ खमावी संयमने विषे स्थिर थइ केवलज्ञान पामी अनुक्रमें मोक्ष पोहोतो ॥ ॥ हवे श्रीनेमीश्वर नगवानथी राजीमतीजी आठ वर्ष उमरमां न्हाना हतां एवु कोइक आचार्य कहे ठे तथा राजीमतीजी चारसें वर्ष पर्यंत घरवासें रह्यां वली एक वर्ष पर्यंत ठद्मस्थपणे रह्या अने पांचशो वर्ष केवल पर्याय पाली सर्व मली (ए०१) वर्षनुं आयुष्य नोगवीने श्रीनेमिनाथजीनी पहेलां मोक्ष गया इहां कवि उत्प्रे क्षा करे ठे के राजीमतीजीयें एवु जाण्युं जे शिवनारी जे मोक्षरूपिणी स्त्री ठे तेने महाराथी अधिक रूपवती जाणीने तेना उपर नेमीश्वरजी मोहित थया ठे तो हु पहेलाथीज ते स्त्रीने देखी तो खरुं एटले मुक्तिरूप स्त्रीयें राजीमतीना नर्त्तारनु मन वश कीधुं माटे ते पोतानी शोकने जोवा सारु राजीमतीजी पण क्षपकश्रेणी साधि, कर्म खपावी पोताना नर्त्तारनी प हेलांज मुक्तियें गइ इति ॥ ॥ श्रीअरिष्टनेमि नगवानने अढार गछ अने अढार गणधर थया ॥ १७५ ॥ वली वरदत्त आदे देइने अढार हजार साधुउंनी संपदा थइ ॥ १७६ ॥ ॥ तथा गुणरूप मणिरत्नना नमार जेवी यक्षणीप्रमुख चालीश हजार साध्वीउंनी संपदा थइ ॥ १७७ ॥ वली नंदीषेण आदे देइने एक लाख उंगणोतेर हजार श्रमणोपासक व्रतना धर नार श्रावकोनी संपदा थइ ॥ १७८ ॥ ॥ तथा महासुव्रताप्रमुख त्रण लाखने ठत्रीश ह जार श्राविकाउंनी संपदा थइ ॥ १७९ ॥ ॥ वली चारशो साधु चौद पूर्वधर ते जिन नही पण जिन सरखा एवा सर्व अक्षरानुयोगना जाणनी संपदा थइ ॥ १८० ॥ ॥ तथा पन्न रशो साधु अवधि ज्ञानीनी संपदा थइ तथा पन्नरशो साधु वैक्रिय लब्धिना धरनारनी संपदा

थइ तथा पन्नरशो केवलज्ञानी केवलीनी सपदा थइ तथा एक हजार साधु विपुलमतीना धणी मन पर्यव ज्ञानीनी सपदा थइ तथा आठशो वादी साधुर्जनी संपदा थइ तथा शोलशे साधु पांच अनुत्तर विमाने पोहोता, पंदरशो साधु जगवत थका सिद्धि पाम्या तथा त्रण हजार आर्यका एटले साध्वीउ जगवत थका मोक्षे गइ सिद्धि पामी ॥ १७१ ॥ ॥ ए रीते श्रीनेमीश्वर जगवाननो परिवार जाणवो, अने राजीमती पण प्रजुने हाथे सयम ग्रहण करी प्रधान मोक्षप्रत्यें पामी ॥ अरिहंत श्रीअरिष्टनेमिने वे प्रकारनी अंतगड जूमि थइ तेमा आठ पाट पर्यंत मोक्षमार्ग चाल्यो ते युगतरुतजूमि जाणवी तथा जगवानने केवलज्ञान उपना पछी बे वर्षे कोइक साधु सिद्ध थयो ते पर्याय अतरुत जूमि जाणवी ॥ १७२ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे श्रीअरिष्टनेमि जगवान त्रणशो वर्ष गृहस्थावासे कुमारावस्थायें रह्या, चोपन्न दिवस उद्मस्थ पर्यायें दिक्षा पाली अने चोपन्न दिवसे ऊणा सातशो वर्ष केवल पर्याय पाल्युं एटले सातसे वर्ष साधुपणे रह्या एम सर्व मली एक हजार वर्षनु पूर्ण आयु जोगवीने शेष रहेलां चार कर्म खपावीने आ अवसर्पिणीनो दुसम सुसमा नामे चोथो आरो ते घणो वीत्यो अने थोडो रह्यो ते वखतमा गिरनार पर्वतने विषे, उनालानो चोथो, मास आठमो पक्ष, आषाढ शुदि अष्टमीने दिवसे गिरनार पर्वत उपरे मध्यरात्रियें, चित्रा नक्षत्रे चंद्रमानो योग आवे थके, पाचशो ने छत्रीश साधुर्जनी साथे, एक मासनुं चउविहारो पाणी रहित अनशन कीधे उते, पद्मासने बेठा थका कालधर्म पाम्या ॥ प्रथाग्रथ ॥ ७०० ॥ यावत् सर्व दु ख थकी रहित थया ॥ १७३ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथ जगवानथी ब्याशी हजार सातशोने पचाश वर्ष पूर्वे ए श्रीनेमिनाथ जगवान थया एटले श्रीअरिष्टनेमि जगवान मोक्ष पोहोता

पछी चोराशी हजार नवशे नेएंसी वर्षे पुस्तक लखाणु वाचना थइ ॥ १८४ ॥ ॥ इति श्रीनेमिनाथ अधिकार ॥ ॥ हवे सर्व तीर्थंकरोना वखाण कहेतां ग्रंथ वधे माटे आही एकवीशमा तीर्थंकरथी आंतरानो अधिकारज कहियें छेयें एकवीशमा श्रीनमिनाथ भगवान निरवाण थया पछी पाच लाख वर्षे गये थके बावीशमा श्रीनेमिनाथजी निर्वाण थया अने नेमिनाथजीथी ८४९८० वर्षे पुस्तक लखाणु ॥१८५॥ ॥ वीशमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी मोक्ष गया पछी छ लाख वर्षे एकवीशमा श्रीनमिनाथजी मोक्ष गया ते पछी ५८४९८० वर्षे पुस्तक लखाणु ॥ १८६ ॥ ॥ उंगणीशमा श्रीमल्लिनाथ मोक्ष गया पछी चोपन्न लाख वर्षे वीशमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी मोक्ष गया ते पछी ११८४९८० वर्षे पुस्तक लख्युं ॥१८७॥ ॥ अढारमा श्रीअरनाथ मोक्ष गया पछी एक हजार कोडी वर्षे उंगणीशमा श्रीमल्लिनाथ स्वामी मोक्ष गया ते पछी ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लखाणु ॥१८८॥ ॥ सत्तरमा श्रीकुंथुनाथ मोक्ष गया पछी एक हजार कोडी वर्षे न्यून एक पल्योपमनो चोथो भाग एटला वर्षे अढारमा श्री अरनाथ मोक्ष गया ते पछी एक हजारक्रोड उपर पांशठ लाख चोरासी हजार नवशेने एसी वर्षे पुस्तक लखाणु ॥ १८९ ॥ ॥ शोलमा श्रीशांतिनाथजी मोक्ष गया पछी अर्द्धो पल्योपमे श्री कुंथुनाथ मोक्ष गया ते पछी एक पल्योपमना चोथा भागनी उपर पांसठ लाख चोरासी हजार नवसेने एसी वर्षे पुस्तक लख्यु ॥ १९० ॥ ॥ पन्नरमा श्रीधर्मनाथ मोक्ष गया पछी पोणा पल्योपमे उंणा त्रण सागरोपम गये श्रीशांतिनाथजी मोक्ष गया ते पछी पोणा पल्योपम उपर ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लख्यु ॥ १९१ ॥ ॥ चौदमा श्रीअनंतनाथजी मोक्ष गया पछी चार सागरोपम गये थके श्रीधर्मनाथजी मोक्ष गया ते पछी त्रण सागरोपम ६५८४९८०

र्षे पुस्तक लखाणु ॥ १ए२ ॥ ॥ तेरमा श्रीविमलनाथजी मोक्ष गया पठी नव सागरोपम गये थके श्रीअनत नाथजी मोक्ष गया ते पठी सात सागरोपम उपर ९५८४ए८० वर्षे पुस्तक लखाणु ॥ १ए३ ॥ ॥ बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामी मोक्ष गया पठी त्रीश सागरोपम गये थके श्रीविमलनाथ मोक्ष गया ते पठी शोल सोगरोपम उपर ९५८४ए८० वर्षे पुस्तक लख्यु ॥ १ए४ ॥ ॥ अगीयारमा श्रीश्रेयांसनाथ निरवाण थया पठी चोपन सागरोपम गये थके श्रीवासुपूज्य स्वामी मोक्ष गया ते पठी ठेतालीश सागरोपम उपर ९५८४ए८० वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १ए५ ॥ ॥ दशमा श्रीशीतलनाथजी मोक्ष गया पठी एकसो सागरोपम तथा ठासठ लाख ठवीस हजार वर्ष उपर एटला वर्षे एक क्रोड सागरोपममांथी उंठा करीयें तेटला वर्षे एटले एक क्रोड सागरोपममांथी एकशो सागरोपम उंठा करीयें तथा वली ठासठ लाखने ठवीश हजार वर्ष बीजा पण उंठा करीयें बाकी जेटला वर्ष रहे तेटले वर्षे श्रीश्रेयांसजी निरवाण पाम्या अने ते पठी बेतालीश हजार त्रण वर्षने साडा आठ महिने न्यून एवा ठाशठ लाख ठवीश हजार वर्षे अधिक एकशो सागरोपम गये थके श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया, तेवार पठी नवशेने एसी वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १ए६ ॥ ॥ नवमा श्रीसुविधिनाथ मोक्ष गया पठी नवकोडी सागरोपम गया थका श्रीशीतलनाथ मोक्ष गया ठे तेवार पठी बेतालीश हजारने त्रण वर्ष तथा उपर साडा आठ महिना एटले वर्षे न्यून एक कोडी सागरोपम गये थके श्रीवीर निरवाण थया तेवार पठी नवशोने एशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ १ए७ ॥ ॥ आठमा श्रीचंद्रप्रज स्वामी मोक्ष गया पठी नेवु कोडी सागरोपम गये थके श्रीसुविधिनाथजी मोक्ष पाम्या ते पठी बेंतालीश हजार त्रण वर्षने साडा आठ महिने

न्यून दश कोडी सागरोपम गये थके श्रीवीर निरवाण पाम्या ते पछी नवसेंने एशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ १९८ ॥ सातमा श्रीसुपार्श्वनाथ मोक्ष गया पछी नवसें क्रोड सागरोपम गये थके श्रीचंद्रप्रभ स्वामी मोक्ष गया ते पछी बेंतालीश हजार उपर त्रण वर्षने साडा आठ महीना एटले वर्षे न्यून एकसो क्रोड सागरोपमे श्रीवीरप्रभु निरवाण पाम्या ते पछी नवसेंने एशी वर्षे पुस्तक लिख्युं ॥ १९९ ॥ छठा श्रीपद्मप्रभजी मोक्ष गया पछी नव हजार क्रोड सागरोपमें श्रीसुपार्श्वनाथ मोक्ष गया ते पछी बेतालीश हजार त्रण वर्ष उपर साडा आठ महीना एटले वर्षे उणा एक हजार क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरप्रभु मोक्ष गया ते पछी नवसेंने एशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ २०० ॥ पांचमा श्रीसुमतिनाथजी निरवाण पाम्या पछी नेवु हजार क्रोड सागरोपम गये थके श्रीपद्मप्रभ स्वामी निरवाण पाम्या ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्षने उपर साडा आठ महीना एटले वर्षे उणा दस हजार क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया ते पछी नवसेने एंसी वर्षे पुस्तक लिख्युं ॥ २०१ ॥ चोथा श्रीअभिनंदनजिन मोक्ष गया पछी नवलाख क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीसुमतिजिन निरवाण थया ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्षने साडा आठ महीना उपर एटला वर्षे न्यून एक लाख क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीमहावीरजीनुं निर्वाण थयुं ते पछी नवसेंने एंसी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ २०२ ॥ त्रीजा श्रीसंभवनाथजी निर्वाण पाम्या पछी दश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीअभिनंदनजिन निर्वाण थया ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्ष उपर साडा आठ महिना एटले वर्षे न्यून दश लाख क्रोड सागरोपम गये श्रीवीर निरवाण पाम्या ते पछी नवसेंने एंसी वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ २०३ ॥ बीजा श्री

अजितनाथ जिन मोक्ष गया पछी त्रीश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीसंभवनाथजी मोक्ष गया ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्षने साडा आठ महीने न्यून वीश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरजिन मोक्ष गया ते पछी नवसेंने एशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ ॥ २०४ ॥ पहेला श्रीक्षपभदेव जगवान मोक्ष पाम्या पछी पचास लाख कोडी सागरोपम गये थके श्रीअजितनाथ जगवान निरवाण पाम्या ते पछी बेतालीश हजार त्रण वर्ष उपर साडा आठ महीना एटला वर्षे न्यून पचास लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरप्रभु निर्वाण पाम्या ते पछी नवसेंने एसी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ ॥ ए श्रीमहावीर प्रभुना निरवाणथी लइने पश्चानुपूर्वीयें आंतरा कह्या हवे चोथो, पांचमो अने छठो ए त्रणे आरानुं प्रमाण एक कोडाकोडी सागरोपमनुं छे तेमा बेतालीश हजार पचोतेर वर्षनी उपर साडा आठ महीना एटला वर्ष उणां करीयें तेवारे चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीरजिननो जन्म थयो तेमां बहोंतर वर्ष श्रीमहावीर स्वामीनुं आयुष्य हतुं अने चोथा आरानां त्रण वर्षने साढा आठ महीना शेष रह्या तेवारें श्रीवीर निरवाण थया तथा एकवीस हजार वर्षनुं कालमान पांचमा आरानुं जाणवुं अने एकवीश हजार वर्षनुं कालमान छठा आरानुं जाणवु ए सर्वनो सरवालो करीयें तेवारें एक कोडाकोडी सागरोपम पूर्ण थाय ॥ ॥ इति श्रीकल्पव्याख्यानाधिकारे सप्तम व्याख्यान सपूर्ण ॥ ॥ अथ अष्टम व्याख्यान प्रारंभ ॥ एमां श्रीआदिनाथ जगवाननुं चरित्र कहेवाय छे ॥ ते कालनेविषे ते समयनेविषे श्रीक्षपभनाथ अरिहंत अयोध्या नगरीमां थया तेने लीधे एमने कौशलिक कहियें तेमना चार कल्याणक तो उत्तराषाढा नक्षत्रमां थया अने पाचमो कल्याणक अभिच नक्षत्रमां थयो छे ॥ २०५ ॥ ॥ उत्तराषाढा नक्ष

अहीं घणा आचार्यो कहे ने के पांचशे कूपा घृतना वहोरावी दीधा पछी वली जाएयुं जे हवे तो पणु वेवाणु एवी रीतें शेठना परिणाम घटता देखीने मुनिउंये कर्युं के हे महानुनाव ! हवे अमारे खप नथी, परंतु जो थोडीक वार हजीपण शेठनो नाव वधतो रह्यो हत तो केवल ज्ञान उपजी जात पण पाछा परिणाम घटवाने योगे केवल उपन्युं नहीं परतु समकेतथी पो तानो आत्मा निर्मल कर्यो पछी वर्षाकाल वीत्याबाद वसतपुरें आव्या, धर्मघोप आचार्य पण सार्थवाहने धर्मलान देइने तीर्थयात्रा करवा गया धनो पण घणा दिवस समकेत पाली अंते शुनध्याने मरण पाम्यो ए पहेलो नव ॥१॥ ॥ हवे बीजा नवमां उत्तरकुरुक्षेत्रें जइ युगली यामां उपन्यो तिहां त्रण पल्योपमनुं आयुष्य नोगवी मरण पाम्यो ए बीजो नव ॥२॥ त्रीजे नवें सौधर्म देवलोके देवता थयो ए त्रीजो नव ॥३॥ ॥ चोथे नवें देवलोकथी चवीने पश्चिम महाविदेहें गंधिलावति विजयें शीतबल राजानी चड्कांता राणीना महाबलनामा पुत्र थया, परंतु महा विषयलोलुपी नोगपुरंदर थया विनयवती प्रमुख घणी राणीयो छे, तेमनी साथें विषयसुख नोगववामां मग्न रहे छे, धर्मनी वात न जाणे, सर्वदा गीत, गान, तान, मान, अने नाटकने प्रियकारी जाणे छे एम महामोहनी निद्रामां काल गमावतां एक दिवस नाट [illegible]क थाय छे ते देखे छे, गीतमां एक चित्त लागी रह्युं छे, ते वखतें सुबुद्धिनामा प्रधानें रा जाने प्रतिबोधवा सारुं एक गाथा कही ते आवी रीतें "सबं विलविअं गीअं, सबं नट्ठं विडंबणा॥ सबे आनरणा नारा, सबे कामा डुहावहा ॥ १ ॥ ॥ अर्थः—ए सर्व गीत जे छे ते विलापात करवा जेवा छे, सर्व नाटक जे छे ते विटंबना सरखां छे, सर्व आनरण जे छे ते नार समान छे, अने ए सर्व कामनोग जे छे ते डुखावहा एटले डुःखदायी छे ॥ १ ॥ ॥ ए गाथा सां

नजी राजा बोल्यो के हे प्रधान ! तमें विना प्रस्तावें आ वैराग्य उत्पन्न करनारी गाथा केम कही " यत्र सरागस्तत्र विराग कथं ? यत्र विरागस्तत्र सराग कथ ? यत्र श्रीरर्थः तत्र अश्री रर्थ कथं ॥ माटे हे मत्री ! विना प्रस्तावें आ वात शा कामनी तेवारें प्रधान बोल्यो में आ वात प्रस्तावेंज कही छे, ते आवी रीतें के आज मुजने केवली मल्या तेमणें कह्युं के तमारा राजानुं आयुष्य एक मासनुं शेष रह्युं छे माटे हुं आपने चेतवणी आपु छु एवी वात सांजली राजा चमक्यो, मरण समान कोइ जय नथी, पछी मत्रिने कहेवा लागो के हुं तो मोहनिद्रामा सुतो हतो, तें सुताने जगाड्यो तो खरो, परंतु आग लागीने कूवो केम खणाय ? तेम हवे एक मासनु आयु रह्युं, तेमां शुं धर्मसाधन थाय ! तेवारें प्रधाने कह्युं तमे विषाद म करो, एकदिवसनुं चारित्र पण मोक्षने देवावाळु थाय छे अने जो मोक्षप्राप्ति न थाय तोपण देवताना सुखनें तो आपे छे एवुं सांजली पुत्रने राज्य आपी सात क्षेत्रें धन वावरी अठाइ महोत्सव करी सुगुरु पासें चारित्र लई चोत्रीश दिवस चारित्र पाली अंते अनशन करी काज कस्यो ॥ ए चोथो जव ॥ ४ ॥ ॥ पांचमे जवें ईशान देवलोकें श्रीप्रजनामा विमानने विषे ललितांगनामा सामानिक देवता थयो तिहां स्वयंप्रज नामा देवी घणीज वल्लन्न छे तेनी साथें विषयसुख जोगवतो विचरे छे, पछी एक दिवसें स्वयंप्रजा नामा देवी तिहांथी चवी तेना विरह थकी मूर्छा पाम्यो, घणो दुःखी थई शोक करतो थको रुदन करवा लागो, तेवारें पूर्वजवनो सुबुद्धि मत्री पण तिहांज देवता थयो छे, तेणें प्रतिबोध्यो, तथापि तेनो शोक मट्यो नही तेवारें मत्री देवतायें कह्यु तमारी स्त्रीने हुं जाणु छु तेने मेळवी आपवानो हु उपाय बतावुं तमे शोक करशो नही, हवे ते स्त्रीनो संबध कहे छे धातकी खंडना महाविदेह क्षेत्रें नंदनामा

त्रमां देवलोकथी चवीने गर्भमा आवी उपन्या छे, उत्तराषाढामा जन्म थयो छे, उत्तराषाढामां दीक्षा लीधी छे अने उत्तराषाढामां केवल ज्ञान उपन्युं छे तथा अभिच नक्षत्रमा मोक्ष गया छे ॥ २०६ ॥ ॥ हवे प्रथम श्रीऋषभदेवजीना तेर भव कहेवाने अर्थे गाथा कहे छे ॥ धण मिहुण सुर महब्बल, ललियंगो वयरजंघ मिहुणोय ॥ सोहम्म विज अच्चु, चक्की सबठ उसभेय ॥ १ ॥ ॥ अर्थ—पहेले भवें आ जंबूद्वीपने विषे महाविदेह क्षेत्रमा सुप्रतिष्ठित नामा नगरें प्रियंकर नामा राजा राज्य करे छे ते नगरमा महोटो धनाढ्य धन्नो एवे नामें एक सार्थवाह रहे छे एकदा ते धन्नो सार्थवाह वसतपुर नगरे जवाने तयार थयो तेवारें नगरमां पडहो वजडाव्यो के जो कोइने वसतपुर नगरे जावु होय तो तेणे महारी साथे आववुं तेनो हु नि रवाह करीश एवो पडह सांभली घणा लोक तेनी साथे जवाने एकठां थयां, महोटो सथवारो थयो हवे ते नगरमा श्रीधर्मघोष सूरि पाचसें साधु साथे रहेला हता तेमने पण यात्राने अर्थे वसंतपुर जवानी इछा थइ तेथी धन्ना सार्थवाहनी पासें आवीने धर्मलाभ आपी बोल्या के हे सार्थवाह जो तमारी आज्ञा होय तो अमे पण वसतपुर जवाने अर्थे साथे आवीयें तेवारें धन्नो बोल्यो के हे स्वामी सुखेथी महारी साथे पधारो तेवारें आचार्य पण तेनी साथे चाल्या, हवे मार्गे जतां एकदिवसें शेठने आंबानुं भेटणु आव्युं ते साधुने आपवा मांड्युं पण साधुयें सचेत जाणी लीधु नही हवे सथवारो हलवे हलवे धीमे धीमे थोडा थोडा कोश हररोज चाल्यो जाय छे तेथी मार्गमाज चोमासुं आवी गयुं वर्षाद घणो वर्ष्यो, नदीओ आवीगइ तेने लीधे पंथिजनोने चालवानो मार्ग रोकाइ गयो हरिप्रमुख जीवोनी उत्पत्ति थइ, कादव पण घणो थयो तेथी लोक चाली शके नही तेवारे सथवारो एकठो थइ तंबुडेरा आपीने जंगलमांज

रह्यो अने धर्मघोष आचार्य पण एक पर्वतनी गुफामां निरवद्य स्थानक देखीने पांचसें साधु सहित मासखमणनी तपस्या करी चोमासु रह्या थका धर्मध्यान करवा प्रवर्त्त थया, एम करतां सथवारना लोको पासे सबल खुटी पडघु माटे सर्वलोक कदमूलफलादिक नो आहार करीने दिवस निर्गमन करवा लाग्या तेथी साधुउने पण पारणें शुद्धमान आहार मले नही एम करतां केटलाक दिवस पछी तिहां एक नाट आव्यो ते शेठने खुशी करवा माटे सुलाषित कहीने बोल्यो के हे शेठ ! महोटा पुरुष जे वात अगीकार करे ते पार पाडे पण अधवच मूकी आपे नही ए वात सांजलीने शेठे धर्मघोष सूरीने याद कर्युं अने मनमा विचारवा लाग्यो के अरे महारा कहेवा उपरथी साधुउ महारी साथें आव्या अने में तो एक दिवस पण तेमनी सारसंजाल कीधी नथी माटे तेउनो विश्वासघाती हु थयो तो हवे प्रजातें एमनी पासें जइने खमत खामणा करु एम चितवी प्रजातें आचार्य पासे जइ वदना करीने लज्जाथी पोतानु मुख नीचु करी बेगे अने विनति करवा लागो जे हे स्वामी ! महारो अपराध तमे खमजो में आपनी कोइ वखते पण निगाह करी नथी हे महाराज ! लोकनुं सर्व संबल क्षीण थयुं ले आपमुजने कांइ आज्ञा करो, हुकुम फरमावो तेवारें आचार्य बोल्या हे सार्थेश ! अमारा माटे तमे कांइ पण चिता करशो नही, अमारे तो सुखे धर्मध्यान थाय ले, तमारा साथना योगे अमे घणी अटवी उल्लंघन करी तेमां तमे अमारी महोटी वात्सल्यता करी एवुं सांजली धनो शेठ खुसी थयो अने सर्व साधुउने आहारनी निमत्रणा करी सथवारामा लइ आव्यो पछी पोतानी पासे शुद्ध आहार घृतना कूपा हता ते साधुउने घणाज उलटथी वहोरावता थका अत्यंत जावनी वृद्धि थवा मांडी तेथी समकेत पाम्यो

अहीं घणा आचार्यो कहे छे के पांचशे कूंपा घृतना वहोरावी दीधा पछी वली जाणुं जे हवें तो घणुं वेवाणुं एवी रीतें शेठना परिणाम घटता देखीने मुनिउंये कह्युं के हे महानुजाव ! हवे अमारे खप नथी, परंतु जो थोडीक वार हजीपण शेठनो जाव वधतो रह्यो होत तो केवल ज्ञान उपजी जात पण पाछा परिणाम घटवाने योगे केवल उपन्युं नहीं परंतु समकेतथी पोतानो आत्मा निर्मल कर्यो पछी वर्षाकाल वीत्याबाद वसतपुरें आव्या, धर्मघोष आचार्य पण सार्थवाहने धर्मलाज देइने तीर्थयात्रा करवा गया धनो पण घणा दिवस समकेत पाली अंते शुजध्याने मरण पाम्यो ए पहेलो जव ॥१॥ ॥ हवे बीजा जवमां उत्तरकुरुक्षेत्रें जइ युगलीयामां उपन्यो तिहां त्रण पल्योपमनुं आयुष्य जोगवी मरण पाम्यो ए बीजो जव ॥२॥ त्रीजे जवें सोधर्म देवलोके देवता थयो ए त्रीजो जव ॥३॥ ॥ चोथे जवें देवलोकथी चवीने पश्चिम महाविदेहें गंधिलावति विजयें शीतबल राजानी चइकांता राणीना महाबलनामा पुत्र थया, परंतु महा विषयलोलुपी जोगपुरंदर थया विनयवती प्रमुख घणी राणीयो छे, तेमनी साथें विषयसुख जोगववामां मग्न रहे छे, धर्मनी वात न जाणे, सर्वदा गीत, गान, तान, मान, अने नाटकने प्रियकारी जाणे छे एम महामोहनी निद्रामां काल गमावतां एक दिवस नाटक[illegible]विक थाय छे ते देखे छे, गीतमां एक चित्त लागी रह्युं छे, ते वखतें सुबुद्धिनामा प्रधानें राजाने [illegible]बोधवा सारुं एक गाथा कही ते आवी रीतें "सवं विलविअं गीअं, सवं नट्टं विडंबणा॥ सवे आजरणा जारा, सवे कामा दुहावहा ॥ १ ॥ ॥ अर्थ —ए सर्व गीत जे छे ते विलोपात करवा जेवा छे, सर्व नाटक जे छे ते विटंबना सरखां छे, सर्व आजरण जे छे ते जार समान छे, अने ए सर्व कामजोग जे छे ते [illegible] ॥ २ ॥ ॥ [illegible]

जी राजा बोल्यो के हे प्रधान ! तमें विना प्रस्तावें आ वैराग्य उत्पन्न करनारी गाथा केम कही " यत्र सरागस्तत्र विरागः कथ ? यत्र विरागस्तत्र सराग कथं ? यत्र श्रीरर्थः तत्र अश्रीरर्थ कथ ॥ माटे हे मंत्री ! विना प्रस्तावें आ वात शा कामनी तेवारें प्रधान बोल्यो में आ वात प्रस्तावेंज कही छे, ते आवी रीतें के आज मुजने केवली मल्या तेमणें कह्यु के तमारा राजानु आयुष्य एक मासनुं शेष रह्यु छे माटे हुं आपने चेतवणी आपु छु एवी वात सांजली राजा चमक्यो, मरण समान कोइ जय नथी, पछी मंत्रिने कहेवा लागो के हुं तो मोहनिद्रामां सुतो हतो, तें सुताने जगाड्यो तो खरो, परंतु आग लागीने कूवो केम खणाय ? तेम हवे एक मासनु आयु रह्यं, तेमां शु धर्मसाधन थाय ! तेवारें प्रधाने कह्यु तमे विषाद म करो, एकदिवसनु चारित्र पण मोक्षने देवावालुं थाय छे अने जो मोक्षप्राप्ति न थाय तोपण देवताना सुखनें तो आपे छे एवुं सांजली पुत्रने राज्य आपी सात क्षेत्रें धन वावरी अठाइ महोत्सव करी सुगुरु पासें चारित्र लई चोत्रीश दिवस चारित्र पाली अंते अनशन करी काल कस्यो ॥ ए चोथो जव ॥ ४ ॥ ॥ पांचमे जवें ईशान देवलोकें प्रजवनामा विमानने विषे ललितांगनामा सामानिक देवता थयो तिहां स्वयंप्रज नामा देवी घणीज वल्लन छे तेनी सार्थे विषयसुख जोगवतो विचरे छे, पछी एक दिवसें स्वयंप्रजा नामा देवी तिहांथी चवी तेना विरह थकी मूर्छा पाम्यो, घणो दुःखी थई शोक करतो थको रुदन करवा लागो, तेवारें पूर्वजवनो सुबुद्धि मंत्री पण तिहांज देवता थयो छे, तेणें प्रतिबोध्यो, तथापि तेनो शोक मट्यो नही तेवारें मंत्री देवतायें कह्युं तमारी स्त्रीने हुं जाणु छुं तेने मेलवी आपवानो हु उपाय बतावुं तमे शोक करशो नही, हवे ते स्त्रीनो संबंध कहे छे धातकी खमना महाविदेह क्षेत्रें नवनामा

मामने विषे नागिल नामे एक गृहस्थ महादरिद्री छे, तेनी नागश्री स्त्रीयें पूर्वे छ पुत्री तो जणेली छे, कह्युं छे के दारिद्रीने छोडीयो घणी थाय, पछी तेणे विचार्युं जे हवे जो महारी स्त्रीने सातमी पण पुत्री आवशे तो हुं वेश त्यागीने चाल्यो जइश दैवयोगे स्वयंप्रभा देवीनो जीव पण तेने घेर आवी अवतर्यो तेथी वली पण ए सातमी पुत्री नागिलने थइ तेवारें शेठ शेठाणी बेहु दुःख धरवा लागां अने नागिल दुःखे पीडातो परदेश गयो, पछवाडे कुटुंबी छए ते पुत्रीनुं नाम पाड्युं नही अनामिका कही बोलावे, अभागणी माटे कोइ परणे पण नही तेथी काष्ठना भारा वेचीने पेट भरे तथा लोकने घेर काम करीने पेट भराइ करे एक दिवसें कोइ धनवतना बालकने मोदक खातां देखी अनामिकायें पण पोतानी माता पासेथी मोदक माग्या, तेवारें मातायें कह्युं ताहारो पिता मोदक लेवा गयो छे ते आवशे त्यारे आपीश, त्यां सुधी ए अतरतिलक नामा पर्वत थकी काष्ठनो भारो लाव पछी रुदन करती भारो लेवा गइ तिहां युगधर मुनिने केवलज्ञान उपन्युं छे, तेनो इंद्र महाराज महोत्सव करे छे, तिहां अनामिका पण नमस्कार करी बेठी धर्म देशना सांभली केवलीने पूछ्युं के हुं एवी दुःखनी अवस्था केम पामी? तथा महारे भर्तार प्रमुखनुं सुख काइ पण थयो नही तेनुं कारण शुं? प्रभुयें कह्युं तें पूर्वे धर्म आराध्यो नथी माटे रे भोली धर्म विना सुख होय नही तो हवे जो सुखनी इच्छा होय तो धर्म कर धर्मना प्रभावे देवना सुख पामीयें पछी अनामिकायें श्रावकनां व्रत आदर्यां उपाश्रयें बेठी श्रावकनो धर्म करे तेथी लोकोयें धर्मिणी एवुं नाम दीधुं साधर्मि श्रावको तेने पारणा प्रमुखनो सहाय आपे छे एम धर्मना प्रभावथी ते सुखी थइ छे पछी छेवटे अनशन करी सुती छे, ते समयें ललितांगने स्वयंबुद्ध

मत्रियें कर्युं के तमे त्यां जइ तमारुं रूप एनें देखाडो के जेम ए नियाणो करे ते सांजली ललितांगे आवी पोतानुं अत्यंत उत्कृष्ट रूप देखाड्युं ते रूप देखी अनामिकायें व्यामोह पामी नियाणुं कर्युं के महारे तपस्यानुं फल होय तो एनी स्त्री हुं थाउं, पछी अनामिका मरण पामी स्वयंप्रजा देवी थइ तेनी साथे ललितांग देव सुख जोगववा लागो ए पांचमो जव ॥ ५ ॥ तिहांथी चवीने छठे जवे जंबूद्वीपें पूर्व महाविदेहे पुष्कलावती विजये लोहार्गल नगरे सुवर्णजंघ राजानी लक्ष्मीवती राणीनो वज्रजंघनामा पुत्र थयो अने स्वयंप्रजा देवी पण तेहिज विजयें पुम्नरीक नगरीयें वज्रसेन नामा चक्रवर्त्तिनी श्रीमती नामा पुत्री थइ, ते यौवन पामी थकी एक दिवसें चडोदय सजामां बेठी छे ते समयें कोइ साधुने केवल ज्ञान उपन्युं छे तेने देवता वांदवा आवे छे, ते देवोने देखी एने पण जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेवारें विचार्युं जे महारो पूर्वजवनो जर्तार ललितांग नामा देवतानो जीव किहां उपन्यो हशे ? ते मले, अने हुं तेने परणुं तो सारु थाय, एम विचारी मौनपणे रही, मातापितायें अनेक उपचार कर्या पण बोले नही, पछी धाई मातायें एकांते वात पूछी तेवारें कुमरीयें तेने एक कागल उपर चित्राम करी कुंवर आलेखी आप्यो, धाइयें ते चित्रपट राजाने दीधो पछी एना पिता वज्रसेन चक्रवर्त्तीना वर्षमहोत्सवें अनेक राजपुत्रो आव्या अने ते धाई पण दिवसें चित्रपट लइ राजमार्गें बेठी, ते राजकुमर पण जति वखतें चित्रपटने अणुहार देखतां जाय छे, तेवारें वज्रजंघ ते चित्रपटने देखी जातिस्मरण पाम्यो अने कहेवा लागो के आ चित्र तो महारी पूर्वजवनी स्त्री स्वयंप्रजा नामें देवीनुं चितरेलुं छे, ए वात धाइ मातायें श्रीमतीने कही पछी श्रीमती ते वात सांजलीने वज्रजंघ कुंवरने परणी सुखे समाधे रहे छे, घणी प्र

तेणे
तोमां श्राम लख्युं ठे के ते पुत्री तीर्थंकरनी सन्नामां देवोने देखी जातिस्मरण पामी
पूर्वन्नव जाण्यो तिहां श्रनामिका श्रने स्वयंप्रन्नानो नव देखी विचार्युं जे महारो पूर्वन्नवनो
न्नर्तार ललितांग केवी रीते मले पठी पिताये पूछ्युं तेवारें सर्व पूर्वन्नवसंबंधि वात कही चक्र
वर्त्तीयें केवलीने पूछ्युं के एनो पूर्वन्नव न्नर्तार किहां उपन्यो ठे केवलीये वज्रजंघ नाम कह्युं
पठी चक्रवर्त्तियें वज्रजंघने परणावी तथा कोइक कहे ठे चित्रपट बनावीने कह्युं के एना स्व
रूपने जे कहे तेने हुं परणुं पठी बीजा राजाउए श्रनेक प्रकारनी वातो बनावीने कही पण
ललितांगनी वात मले नही परंतु जेवारे वज्रजंघें कह्युं के श्रा महारी स्वयंप्रन्ना देवीनुं रूप
ठे तेवारें चक्रवर्त्तियें तेने श्रीमती परणावी एवो लेख ठे तत्त्व केवलिगम्य एकदा सुवर्ण
जंघे पोताना वज्रजंघ पुत्रने राज्य श्रापी पोते दीक्षा लीधी, पठी वज्रजंघे पण श्रीमती रा
णीसहित गोखमां बेठां थकां संध्या फूली देखीने वली विलय थइ जोइ तेवारें विचार्युं जे
सर्व विलय थवानी वस्तुउ श्रा संसारमां ठे माटे चितव्युं जे प्रन्नातें पुत्रने राज्य श्रापी
दीक्षा लेशुं ते समयें पुत्रें पण राज्यनें लोन्ने फेरनो धूमाडो करी मातापिताने एटले श्रीम
तीसमेत राजाने विषप्रयोगे मार्यो ए ठठो न्नव ॥ ६ ॥ ॥ तिहांथी मरण पामी सातमे
न्नवे राजा राणी बेहु उत्तर कुरु क्षेत्रने विषे युगलीयां थयां ए सातमो न्नव ॥ ७ ॥ ॥ श्रा
ठमे न्नवें सौधर्म देवलोके मित्रपणे देवता थया ए श्राठमो न्नव ॥ ८ ॥ ॥ तिहांथी चवी
नवमे न्नवें जंबूद्वीपे महाविदेह क्षेत्रें क्षितिप्रतिष्ठितनगरे सुविधिनामा वैद्यनो जीवानंद
नामा पुत्र थयो ते दिवसें ते नगरीयें बीजा पण चार जीव पुत्रपणे श्रवतर्या, एक प्रसन्न
चंद्र राजानो पुत्र महीधर जन्म्यो, बीजो सुनासीरनामा प्रधाननो पुत्र सुबुद्धि थयो, त्रीजो ध

नाशेठनो पुत्र गुणाकर थयो, चोथो सागरनामा शेठनो पुत्र पूर्णचंद्र थयो, हवे श्रीमतीनो जीव सौधर्म देवलोकथी चवीने ईश्वरदत्तनो पुत्र केशव थयो, ए पांचे जीवानंदना परम मित्र छे ए छए मित्र साथे मळी जमे, रमे, सुखें काळ निर्गमन करे छे, एक दिवसें जीवानंदने घेर ते छए जणा बेठा छे एटलामां एक कोढीउ साधु गोचरी करवा आव्यो, तेने देखीने ते पांचे मित्र एकठा थइने वैद्य पुत्रने कहेवा लाग्या के अरे वैद्यतो मतलबीया थाय छे, जो पुण्यने अर्थे वैदु करता हो तो आ साधुनो कोढरोग मटावी आपो तेवारें तो अमे पण जाणीयें जे तमे धर्मात्मा छो ते सांभळी जीवानंद वैद्य बोल्यो हे मित्रो ! तमे म्हारी वात सांभळो आ साधुनो रोग मटाववा माटे लक्षपाक तेल जोशे तेतो म्हारा घरमां तयार छे पण बीजो रत्नकंबळ तथा गोशीर्ष चंदन खपशे ते म्हारी पासे नथी माटे जो ए बे चीजो क्यांथी पेदा करो तो साधुनी वैयावच्च करीयें ए वात सांभळी ते छए जणे मळी अढीलाख सोनैया भेळा कीधा पछी ते छए मित्र मळी नगर शेठने घेर जइ सोनैया आपीने बोल्या के एक रत्नकंबळ अने बीजो गोशीर्ष चंदन ए बे चीज अमने आपो शेठें पूछ्यु जे तमे एने शुं करशो तेणे कह्युं के अमे साधुनी वैयावच्च करीशुं ते सांभळी शेठे विचार्युं जे ए बाळको छे तोपण ह्युत कहेवा धर्म बुद्धि वाळा छे अने हुं आटलो म्होटो वृद्ध थयो छु तोपण हजी लगण कांइ धर्ममां समजतो नथी एम चिंतवी ते शेठे सोनैया तो धर्मदा वापरी नाख्या अने रत्नकंबळ तथा गोशीर्ष चंदन तेमने आपीने पोते दीक्षा लइ साधुपणुं पडिवजी अंतगड केवळी थइने मोक्ष गयो हवे ते छए जणा औषध लइ वनमा गया तिहां मुनि काउस्सग्गमां ऊभा रह्या छे तेने "अनुजानीध्व" एवुं कही चामडा उपर मुनिने सुवारीने लक्षपाक तेल मसळ्युं पछी चंदननो लेप करी रत्न

कांबलमां लपेटी दीधो तिहां पहेलीवारमां तो ते सर्व चामडीमां जे कांइ कीडा हता ते सवे कांबलमां श्रावी लागा तेने गायना मृत कलेवरमां मुक्या फरी बीजीवार तेल मसल्युं तेनी उपर चदन लगावी रत्नकांबलथी वींट्यो तेवारें मांसमांहेला कीडा निकली पड्या तेमज त्रीजीवार एमज पूर्वोक्त रीते कर्युं ते वखत हाड मींजीना कीडा निकली पड्या पछी रोहिणी औषध साधुने शरीरें लगाडी तेनुं शरीर कंचन सरखु करी मूक्युं पछी ते छए जणे रत्नकंबलनुं द्रव्य सात क्षेत्रमा खरचीने दीक्षा लीधी निरतिचार चारित्र पालीने काल कर्यो ए नवमो जव ॥ ए ॥ ॥ दशमे जवें ते छए जणा बारमे देवलोकें देवपणे जइ उपन्या छए देव मित्र थया ए दशमो जव ॥ १० ॥ ॥ अगीआरमें जवे बारमां देवलोकथी चवीने जंबूद्दीपना महा विदेहक्षेत्रें पुष्कलावती विजयें पुंडरीकिणी नगरीयें वज्रसेन नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूखमां ते छ मांथी पांच जण अनुक्रमे पुत्रपणे आवी उपन्या तेमा जीवानद वैद्य जे धन्ना सार्थवाहनो जीव छे ते चौद सुपन सूचित मातानी कूखमा उपन्यो जन्म्या पछी माता पिताये तेनुं वज्रनाज नाम आप्युं ए जीव रुषजदेवजी थावावालो छे हमणा चक्रवर्त्ति पणे उपन्यो छे हवे बीजो राजानो पुत्र महीधरनो जीव ते बाहु नामे थयो त्रीजो मत्रीनो पुत्र सुबाहु नामे थयो, चोथो शेठनो पुत्र गुणाकरनो जीव, पीठ नामे थयो अने पांचमो सार्थ वाहनो पुत्र पूर्णजड्नो जीव महापीठ नामे थयो ए पांच तो जाइ पणे आवी उपन्या अने छठो केसवनो जीव जे पूर्वे निर्नामिकानो जीव छे ते वली बीजा एक राजाने घरे पुत्र पणे उपन्यो ते वज्रनाज नामा चक्रवर्त्तिने घणोज वह्लज छे तेथी ए एनो सार्थि थाशे एरीते छए मित्र सुखे रहे छे हवे वज्रसेन राजा तीर्थंकर थवाना छे माटे लोकांतिक देवोना वचनथी

उदास थइ वज्रनाभ नामा पुत्रने राज्य आपी सवत्सरीदान देइ दीक्षा लइ घनघातीकर्म क्षयकरी केवलज्ञान पाम्या तीर्थंकर थया ते पुन्डरीकिणी नगरीयें आव्या वनपालके वज्रनाभने वधामणी आपी तेवा अवसरमा चक्ररत्न प्रगटवानी पण वधामणी आवी तेवारें विचार्युं जे पहेलां केनी पूजा करु ? एम विचारतां निरधार कस्यो जे तीर्थंकरने पूज्या तो सर्वने पूज्या ए त्रण लोकना नाथथी वली बीजो कोण वधारे गणाय एम चितवी केवल महोत्सव कस्यो, भगवानने वांदवा आव्यो पछी चक्रने पूज्यो अनुक्रमे छ खंड साधी, सुखे राज्य भोगवे छे एक दिवस वली वज्रसेन तीर्थंकर समोसस्या तेमने वज्रनाभ प्रमुख वांदवा गया तिहां प्रभुनी देशना सांभली छए जणायें दीक्षा लीधी तेमा पहेलो वज्रनाभ चक्रवर्त्ति साधु थयो ते चौदे पूर्व भण्यो अने बीजा पांचे अगीआर अंग भण्या, वली बाहुनामा जे साधु छे ते पांचसें साधुने आहार लावी आपे अने सुबाहु पांचसें साधुउंना पग चांपे तथा पीठ अने महापीठ ए बे एकांतें तप करे तथा सजाय ध्यान करे, हवे बाहु अने सुबाहुनी गुरुप्रमुख सर्वे प्रशंसा करे तेथी पीठ अने महापीठ एवु जाणे के जुओ काम सर्वने वल्लभ छे जो साधु थया तोपण मतलबी देखाय छे केमके अमे सजाय ध्यान करीयें छैयें तो अमोने कोइ प्रशंसता नथी अने बाहु सुबाहु एमनी चाकरी करे छे तो तेमनी प्रशंसा सर्व करे छे माटे जगत् सर्व स्वार्थी छे पछी वज्रनाभे वीश थानक तप करीनें तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कस्युं तथा बाहु साधुये आहारना दानथी भोगफल उपार्जन कस्युं तथा सुबाहु साधुयें पगचंपीना प्रभावथी बाहुबल नाम कर्म उपार्जन कस्युं तथा पीठ अने महापीठें इर्ष्या करवाथी स्त्रीवेद बांध्यो अने छठो निर्नामिकानो जीव ते श्रेयास कुमर थाशे अंते सर्वे अनशन करी

॥ वारमे जवे ठए जए सर्वार्थसिद्ध विमाने
मरण पाम्या ए अगीआरमो जव ॥ ११ ॥ ॥ पठी सर्वार्थसिद्ध विमानथी तेत्रीश सागरो
जइ देवपणे उपन्या ए बारमो जव ॥ १२ ॥ जवे वज्रनाजनो जीव ते श्रीरूपजदेवजी थया
पमनु आयुपूरण करीने तिहांथी चवी तेरमें जवे वज्रनाजनो जीव ते श्रीरूपजदेवजी थया
तथा बाहुनो जीव जरतचक्रवर्त्ती थयो अने सुबाहुनो जीव बाहुबल थयो वली पीठ अने म
हापीठनो जीव ब्राह्मी अने सुंदरी थया ए पांचे जीव अनुक्रमे मोक्ष जाशे ए तेरमो जव ॥
॥१३॥ ॥ इति रुपज जव ॥ ते काळने विषे, ते समयने विषे श्रीरुपजदेव अरिहंत ते उना
ळानो चोथो महिनो, सातमुं पखवाडियुं, आषाढवदि चोथने दिवसें, सर्वार्थसिद्ध विमानथी,
देवतानुं आयुष्य पूरण करीने चव्या ते आ जंबूद्वीपना जरतक्षेत्रने विषे इक्ष्वाकुजूमीमा नाजि
कुलगरनी मरुदेवी जार्या तेमनी कूखें मध्यरात्रिने विषे देव संबंधी आहार, देव संबंधि जव,
देव संबंधि शरीर त्यागीने गर्जमां पुत्रपणे आवी उपन्या ॥ २०५ ॥ ॥ इक्ष्वाकु वंशमां उ
पन्या तेथी इक्ष्वाकु जूमि थइ ते केवी रीतें थइ ते कहे ठे जे पूर्वे सर्वे युगलिया हता परंतु न
गर कोइ हतुं नहीं तिहां युगलीयामां तो कल्पवृक्ष मनोरथ पूरण करतां हतां तेमां पहेला
सात कुलगर थया तेनी उत्पत्ति आ प्रमाणे ठे ॥ ॥ आ अवसर्पिणीना त्रीजा आराना
अतमां पल्योपमनो आठमो जाग बाकी रहे ठते आ दक्षिण तरफनो अर्द्ध जरत तेने दक्षि
णार्द्ध जरत कहीयें तेना त्रण जाग करवा ते त्रण जाग माहेला मध्य जागमां एटले विचला
जागमां पहेला त्रण कुलगर थया तेमां प्रथम कुलगर एवीरीतें थयो के पश्चिममहाविदेहमां
बे वाणीया हता ते बेहु वाणीया मांहोमांहे मित्र हता परंतु तेमा एक कपटी हतो अने
एक सरलमनवाळो हतो ते जेवारें मांहोमांहे द्रव्य वांटे तेवारें जे कपटी ठे ते सरल स्वजाव

वालाने ठगीने तेनाथी घणुं धन पोते राखे अने सरल तो कपटरहितपणे व्यापार करे एक दिवसें सरलचित्तवालानी स्त्रीनें देखीने कपटी मित्रें जोग जोगववानुं कह्युं तेवारें ते सरलनी स्त्री पतिव्रता छे ते बोली के अरे मर्यादाहीन ! मित्रनी स्त्रीने वांछे छे ? एवुं कहीने निर्भछना करी बाहेर काहाडी मूक्यो पछी ते कपटीयें जइने सरलचित्तवालाने कह्युं के ताहारी स्त्री मने गोठती हती परंतु में तेने नाकारो कह्यो एवी कपटाइ करी पछी ते सरल चित्तवालो वैराग्य पामी मरीने इक्ष्वाकुभूमिमां मनुष्यरूपें युगलीयो थयो अने कपटी मित्र मरण पामीने इक्ष्वाकु भूमिमां हाथीरूपें युगलीयो थयो केमके जीव कपटाइथी बहुलतायेंकरी तिर्यंच पणाने पामे, एकदा समयने विषे हाथी युगलीये सरलयुगलीयाने दीठो तेथी बेहु मांहोमांहे जातिस्मरण ज्ञान पाम्या पछी परमस्नेहथी हाथी तेमने पोताना स्कंध उपर बेसाडीने रात्रदिवस फर्या करे तेमने सपेत हाथी उपर बेठो जोइने बीजा युगलीया बोलवा लाग्या के ए विमलवाहन छे एवुं तेनुं नाम पाडी दीधुं केटलोएक काल गयो तेवारें कालना माहात्म्यथी जेवा कल्पवृक्ष प्रथम हता तेवा रह्या नही तेवारें युगलीया लडवा लाग्या अने सहु पोत पोताना कल्पवृक्ष थापी बेठा सहु कोइ पोताना कल्पवृक्षमां रहे बीजाने आववा दीये नही अने कदापि कोइ आवे तो तेनी विमलवाहननी पासे राव आपवा आवे तेवारें विमलवाहन तेने हकार एवो दंम आपे तेथी युगलीयो मनमां जाणे जे सर्व महारी वात गइ एवो जाणी लढे करे नही ए प्रथम हकार नीति थइ ते विमलवाहनने चंद्रयशा नार्या हती, नवशो धनुष्य प्रमाण शरीर हतुं ए प्रथम कुलघर ॥ १ ॥ ॥ पछी ते विमलवाहनना पुत्र चक्षुष्मान् थया तेनी चंद्रकांता नार्या अने आठशो धनुष्य शरीरनुं प्रमाण, एनी पण हकार दंमनीति थइ ए बीजो

कुलघर ॥ २ ॥ ॥ त्रीजो यशोमान् कुलघर थयो तेनी सुरूपा नामें जार्या एनुं सातसो धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवुं एनी वखतमां मकार दंमनीति जाणवी ॥ ३ ॥ ॥ चोथो अभिचंद्र नामा कुलघर थयो तेनी प्रतिरूपा नामे जार्या एनुं साडा उसें धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवुं एनी वखतमां म एटलो कहेवाथी मरी जाय माटे मकार दंमनीति जाणवी ॥ ४ ॥ पांचमु प्रसेनजित् नामा कुलगर थयो तेनी चक्षुष्मती नामें जार्या एनुं उशें धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवुं एमां धिक्कार एटलु कहेवाथी ते एवुं समजी जाय के मने महोटो दंम थयो माटे धिक्कार दंमनीति जाणवी ॥ ५ ॥ ॥ उठो मरुदेव नामा कुलघर थयो तेनी श्रीकांता नामें जार्या एनुं साडा पांचसें धनुष्य प्रमाण शरीरनु मान जाणवु एना वखतमां धिक्कार दंमनीति जाणवी ॥ ६ ॥ ॥ सातमो नाजिनामें कुलघर थयो तेनी मेरुदेवी नामें जार्या एनुं सवा पांचशे धनुष्य प्रमाण देहमान जाणवुं एनी वखतमां धिक्कार एटलो कहे तेवारें ते समजे के मुजने महादंम थयो फरीथी जनम पर्यंत ते अन्याय करे नही एरीतें पहेला तथा बीजा कुलघरना वारामां हकार दंमनीति हती अने त्रीजा तथा चोथा कुलघरना वारामां जघन्यथी हकार अने उत्कृष्टथी मकार दंमनीति चाली एटले घणो अन्याय करे तेवारे तेने (म) एटलो कहे तेथी ते एवुं समजे के मने महोटो दंम थयो फरीथी कोइवारे ते अन्याय करे नही तथा पांचमा, उठा अने सातमा कुलघरनी वखतमां जघन्यथी तो हकार तथा मध्यमथी मकार अने उत्कृष्टथी धिक्कार एवी त्रण प्रकारनी दंमनीति चालु थइ ॥ श्री रूषननाथ अरिहंत त्रण ज्ञानें सहित मेरुदेवी मातानी कूखे आवी उपन्या यावत् मेरुदेवीये चौद सुपना दीठा इत्यादिक सर्व अधिकार महावीर स्वामीनी पेरे अहीं पण जाणी लेवुं

परंतु एटलों विशेष जे मेरुदेवीजीये पहेला सुपनामां वृषन मुखमांहे पेसतो दीठो अने बीजा बावीश तीर्थंकरनी मातायें पहेले सुपने हाथी मुखमांहे पेसतो दीठो तथा श्रीमहा वीरस्वामीनी मातायें पहेले सुपने सिंह मुखमां प्रवेस करतो दीठो वली इहां सुपनानुं फल नाजीराजायें पोतेज कह्यु परंतु सुपन पाठक ते वखते हता नही ॥ २०७ ॥ ते कालनेविषे ते समयनेविषे ऋषननाथ अरिहंत उनालानो पहेलो महिनो, पहेलो पखवाडियुं, चैत्रवदि आठ मना दिवसे नवमास उपर साडासात दिवस रात्री गर्न्नमां प्रतिपूर्ण होते छते उत्तराषाढा नक्षत्रे चड्मानो योग आवे थके निराबाध पणे जन्म्या ॥ २०८ ॥ ॥ इहां जन्ममहोत्सव इन्द्रादि कोये आवी कर्युं इत्यादिक सर्व अधिकार श्रीमहावीरजीनी पेठे कहेवु परंतु बंदीखानामांथी केदीउने छोडी मूकवा तथा तोल वधारवा तथा कुलमर्यादा करवी तथा पूजादिकने अर्थे द्रव्य रखाववो ए कृत्य ते युगलीयाना वखतमां गाम शहेरादिकना अनावने लीधे हता नही माटे ते कथा नथी बाकी सर्व श्रीमहावीर स्वामीना पाठनी पेठे आंही पण कहेवुं ॥२०९॥ तथा ते वखत सर्व युगलीया हता तेथी प्रजुनुं नाम स्थापन करवानुं महोत्सव संबधी व्यव हार पण चाल्यो नही तेवारें जगवाननी जंघामां रोमनु वृषन सरिखो लंछन दीठो तथा प्रजुनी मातायें पहेला सुपनामां पण वृषन दीठो तेथी ऋषन एवुं नाम दीधु ॥ ते जग वान महा स्वरूपवान थका देव तथा देवीउ साथे रमत करे, इन्द्राणी पोते खोलामां लइने रमाडे, हवे सुनंदा युगलीयाणी तो जगवाननी साथेज युगलपणे जनमी हती तथा एक युग लीयाना मस्तक उपर ताल वृक्षनुं फल पड्युं तेथी ते बालपणामाज मरण पाम्यो अने तेनी साथे जन्मेली युगलणी जीवती रही हती तेने बीजा कोइ युगलीयायें दीठी तेणे ति

हांथी उपाडीने नाभि कुलगरने जइ आपी नाभिकुलगरे कह्युं के आ महारा पुत्र ऋषभ देवनी सुनंदानी साथे ए पण स्त्री करीशुं एम कही तेनुं सुमंगला एवुं नाम आप्युं ते पण भगवाननी साथे वधे छे, भगवाननो सुवर्णमय शरीर छे हवे ऋषभ देवजी गुणगुण बोले, थाकता थाकता चाले, हशे, तेवारें माता कहेके हे पुत्र तुं इंद्राणीने वल्लभ छो अने देवताये दीधेला अमृतनु पान करे छे, महारी पासे तो रहेतो नथी, महारा स्तन पण चूसतो नथी, तो हुं ताहारी माता छु एवो जगतमां कोण जाणशे? इत्यादिक वातो करी रमाडे ॥ हवे जेवारें भगवान देशोऊणा एक वर्षना थया तेवा अवसरमां इंद्रमहाराज भगवाननुं वंश स्था पन करवा सारु हाथमां सेलडी लइने आव्यो तेवारें भगवान नाभि कुलगरना खोलामांहे बेठा हता ते खोलामांहेथी सेलडी लेवा सारु हाथ लांबो कर्यो तेथी इंद्रे जाण्युं जे प्रभुने सेलडी खावानुं मन थयुं ते माटे इंद्रे तिहां भगवाननो वंश इक्ष्वाकुकुल स्थापन कर्यो श्रीऋषभदेवने देवकुरु अने उत्तरकुरु क्षेत्र संबंधि कल्पवृक्षोना फलनो आहार देवताउये आणी आप्यो ते आ हार गृहस्थ पणामां थयो अने बालपणामा तो अंगुठमां देवोए संचारेला अमृतनो आहार सर्व तीर्थंकरोने होय छे अने एक श्रीऋषभदेव विना बीजा तीर्थंकरोने तो बालपणुं टल्या पछी महोटा थाय तेवारें पक्व थयेलो आहार होय अने संयम लीधा पछी तो सर्व तीर्थंकरोने फासु आहार होय हवे भगवान जेवारें भोग भोगववाने समर्थ थया तेवारें सर्व इंद्र अने इंद्राणीयो चारे निका यना देव अने देवीयो विवाह करवा आव्या तेमां इंद्रादिक देवो तो वर राजानी तरफ रह्या थका श्रीऋषभदेवने वींद बनाव्यो अने इंद्राणीउ प्रमुख सर्व देवीउ ए मलीने कन्यानी तरफ रही थकी सुनंदा तथा सुमंगलाने वीवणीयो बनावी, सणगार कराव्या, मांमवा मांम्या इत्या

चित्र ७८



ऋषभदेवजीने इन्द्र महाराज शेलडी आपे छे मुकुट कुंडल आपे छे



नाभिराजा सभामा बेठा छे

दिक सर्वप्रकारनी विवाह संबंधी जे रीतीउ ठे ते रीतीठ करीने वर कन्याने परणाव्या ति
हांथी युगलीयामां विवाह करवानी रीती प्रवर्त्तमान थइ ते आजदिवस पर्यंत चाली आवे ठे
हवे श्रीरुषनदेवजीने, सुनंदा तथा सुमंगला ए बे राणीयो साथे नोग नोगवतां ठ लाख पूर्व
व्यतिक्रम्या तेवारें सुमंगलाने नरत अने ब्राह्मी ए बे पुत्र पुत्रीनो जोडलो थयो, अने सुनंदाने
एकतो बाहुबली तथा सुंदरी ए बे पुत्र पुत्रीनो जोडलो थयो तथा उंगणपचास तो निकेवल पुत्रो
नाज जोडला थया एरीते रुषनदेव स्वामीने सो पुत्र तथा बे पुत्रीनो परिकर थयो हवे काल
ना महात्म्यथी अनुक्रमें दिवसें दिवसें युगलीयाउमां कषायनी वृद्धि थवा मांमी तेवारें हकार,
मकार अने धिक्कार ए त्रण जातनी जे दंमनीतिउ चालती हती तेने पण लोक उल्लंघन क
रवा लाग्या तेने मान्य न करता पोतपोतामां क्लेश उत्पन्न थवाथी श्रीरुषनदेवनी पासे आवी
कहेवा लाग्या के अमारो न्याय करी आपो तेवारें नगवान बोल्या हुं राजा नथी महारा पिता
नाजिकुलधर राजा ठे तेनी पासे तमे जाठ ते सांनली युगलीया नाजीराजा पासे गया ना
जीराजायें तेमने कह्युं के तमारो राजा रुषनदेव होवो ते तमारो न्याय करशे ए अवसरमां
इंद्रमहाराजनुं आसन चलायमान थयुं तेवारें अवधिज्ञानथी नगवानने राज्यपाटे स्थापना क
रवानुं अवसर जाणी इंद्रमहाराजें तिहां आवी नगवानने मुकुट,कुंमल, हार प्रमुख पहेरावी
सिंहासन उपर बेसाडी राज्य अनिषेक कस्यो तिहां युगलीया इंद्रमहाराजना कहेवाथी जल
लेवा गया हता परंतु ते राज्याजिषेक थइ गया पठी जल लेइने आव्या तेवारें नगवानने स
णगार सहित सिंहासन उपर बेठेला जोइने युगलीयाने विवेक आव्यो जे बीजा तो सर्व श
रीर उपर शोना थइ रही ठे परंतु एक नगवानना पग खाली देखाय ठे एवु जाणी पग उ

पर पाणी ढोळ्युं केटली प्रतोमां तो युगलीया मांहोमांहे वढवाड करीने नाभि कुलघर पासें
न्याय कराववा गया नाभिराजाये तेमने कह्युं के अमे गरढा थया माटे तमे ऋषभने जइ कहो
ते तमारो न्याय करशे युगलीयायें जइ ऋषभजीने कह्यो ऋषभजी बोल्या मने राज्य अ
भिषेक करी राजा स्थापो तेवारें युगलीयाये धूलनो एक महोटो उंटलो बनावी तेना उपर प्र
भुने बेसाडी पोते अभिषेक करवा पाणी लेवा गया एवामां इन्द्रनुं आसन कंप्युं तेणे आवीने
मुकुटादिक अलंकार पहेरावी सिंहासने बेसाडी, वस्त्रविभूषित करी राज्याभिषेक विधि सा
चव्यो प्रभु उपर छत्र धारण कर्युं, चामर वींजतो थको इन्द्रमहाराज पोते प्रभुनी सेवा करे छे एट
लामां युगलीया पण कमलपत्रना भाजनमां पाणी भरी लइ आव्या तिहां भगवाननुं स्वरूप स
र्वालंकारविभूषित देखीने चिंतववा लाग्या के प्रथम भगवानना केहवा प्रमाणे जो पाणी एम
ना मस्तक उपर नाखियें तो सर्व वस्त्र, अलंकार भीजाइ जाय माटे स्वामीनो डावो पग
छूटो छे तेना उपर न्हवण करीये एम विचारी डावा पग उपर अभिषेक कीधो तेवारें इन्द्र
महाराज बोल्या ए युगलीया भला विनीत पुरुषो छे तेमाटे इहां विनीता नामें नगरी वसा
ववी एवुं कहीने वैश्रवण नामें देवने इहिं नगरी वसावी आपवानी आज्ञा आपी तेवारें वैश्र
वणें विनीता नगरी बनावी ते केवी रीतनी बनावी तोके बार योजन लांबी, नव योजन
पोली, आठ दरवाजा कर्या, फरतो महोटो कोट कर्यो, ईशान कोणमां सात भूमिउ चोखूणो
एवो एक महोटो नाभिराजाने रहेवा माटे घर बनाव्युं, अने पूर्व दिशायें भरतने रहेवा सारु
सात भूमीनुं घर बनाव्युं, अग्निकोणमां बाहुबलीने रहेवा माटे महोटुं घर बनाव्युं तेनी व
चमां श्रीऋषभदेवजीने रहेवा सारु एकवीश भूमिनो घर बनाव्युं, एकसो आठ जिनमंदिर

वनाव्या, वली राज्यने अर्थे हाथी, घोडा, गाय, ऊंट, वेसर, बलद प्रमुख चतुष्पदोनो समह करो आगल तो ए हाथी प्रमुख सर्व जीवो जंगलमां फरतां रहेता हता वली केटलाएक जुगलीया अपराधमां आवे तेमने दंड देवामाटे उग्र एवा नामथी माणसो स्थापन कस्या, केट लाएक गुरुस्थानीया करी तेमने जोगा एवा नामथी स्थापन कस्या, केटलाएक मंडलाधिप करीने तेमने राजन्य एवा नामथी थाप्या, बीजा पायदल क्षत्रियो एवा नामेंकरी थाप्या एम चार प्रकारना पुरुषोनी व्यवस्था थइ ॥ तथा वली जे ब्रह्मचर्य पाले ते ब्राह्मण, जे शस्त्र राखे ते क्षत्री, खेती करावे ते वैश्य, चाकरी करे ते शूद्र, एवा नाम स्थापन कस्या वली ए विनीता नगरीमां चोरासी चौटा कस्या तेमां सोगंधिक, गांधी, तंबोली, कंदोइ, सोनार, मणि यार, सोनुं वेचनार, माणिक वेचनार, नाणावटी, जाडखुंजा, धान्यबजार, दोसी, चमार, क सारा, माली, घृत बजार, तथा तेल, सूत्र, कपास, जांभा, जाडा इत्यादिक बजारो करी अनेक जातना उद्यमीत वगेरे थया ॥ ॥ श्रीरूषजनाथ स्वामीना पांच नाम थया एक रूषजनाथ, बीजु प्रथम राजा, त्रीजु पहेलां निक्षाचर, चोथु पहेला केवली अने पांचमुं पहेला तीर्थंकर ए पांच नाम थया ॥ २११ ॥ ॥ श्री रूषजनाथ अरिहंत महाचतुर, जली प्रतिज्ञाना पाल नार, जला रूपवत, सर्वगुणसहित, सरल, विनीत, वीश लाख पूर्व पर्यंत कुमर पदे रह्या, त्रे शठ लाख पूर्व लगें राज्य जोगव्यो, तिहां राज्य करतां लखवानी कला, गणवानी कला, बहोंतेर कला पुरुषोनी तथा चोशठ कला स्त्रीयोनी, कारीगरोना सो जेद, खेतीकर्मादिक त्रण कर्म इ त्यादिक वातोनो लोकोना हित करवाने सारु उपदेश दइने, सो पुत्रोने सो देशनो जूदोजूदो राज्य आपीने वली लोकांतिक देवोना प्रतिबोधथी वरसीदान देइने, गोत्रीयाने धन वांटी आपीने,

उनालानो पहेलो महिनो, पहेलु पखवाडियुं, चैत्र वदि आठमना दिवसें, पाछले पहोरे, सुदंसणा नामा पालखीमा बेसीने, देवमनुष्यसहित, यावत् विनीतानी राज्यधानीमांथी थइने, जिहां सिद्धवण उद्यान छे तिहां अशोक वृक्षनी नीचें पालखी राखीने, ते पालखीमांथी नीचे उत रीने, सर्व घरेणा पोताना हाथथी उतारीने, चार मुष्टि लोच करे, वेलानो एटले छठ्ठं तप पाणी रहित चउविहारो करे छते, उत्तराषाढा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवे थके उग्रकुलना, जोगकुलना, राज्यकुलना, क्षत्रियकुलना एवा कछ महाकछ प्रमुख चार हजार पुरुषोनी सार्थे इंद्रदत्त एक देवदुष्य वस्त्र लइने, दीक्षा लीधी, गृहस्थपणो त्यागीनें साधुपणो अंगीकार कर्यो ॥ २११ ॥ ॥ हवे वली जगवाने दीक्षा लीधी तेथी पहेलानी वात घनेली ते लखियें छेयें ॥ जरतनी सार्थे ब्राह्मी जन्मी हती ते बाहुबलीने परणावी अनें जे बाहुबलीनी साथे सुंद रीनो जन्म थयो हतो ते जरतने स्त्रीरत्न करवा माटे राखी एटले युगलधर्म मटाड्यो ॥ हवे युगलीयाने आहार पचे नही ते आश्रयी कहे छे प्रथमतो युगलीया कल्पवृक्षना पत्रादिकनो आहार करतां हता ते अयोग्य थया, खावा योग्य रह्या नही तेवारें लोक मूल, पत्र, कंद, फल अने फूलनो आहार करवा लाग्या अपकशालिप्रमुख काचुं धान्य खावा लाग्या, ते खातांखातां पचे नही, पेटमा दुःखी आवे तेवारें जगवान् पासे आवी कहेवा लाग्या के आहार कर्यायी अमारुं पेट चडी आवे छे जगवान बोल्या लगारेक हाथमां मसलीने हाथनी घाफ आपीने खाउंतो पची जासे केटलाएक दिवस पछी ते पण पच्यो नही पछी कांखमां अने हृदयमां राखी घाफ आपीने आहार करवा कह्युं केटला काल पछी ते पण पचवा लाग्यो नही एवा अ वसरे वनमांहे वंश घासते घासते अग्नि उपन्यो ते देखीने युगलीयायें जाण्युं ए कोइ अपूर्व



चित्र ७१

ऋषभदेवजी हाथी उपर बेसीने माटीना वासण बनावीने युगलीयाने आपेछे तथा युगलीया माटीना पिंड लई आवी भगवानने

रत्न उत्पन्न थयुं छे एवुं जाणी तेने हाथमां लेवा लाग्या तेथी हाथ बलवा मांन्घा तेवारें तेनाथी बीहीता थका ऋषभदेवजीने जइ कहेवा लाग्या के हे स्वामि एक अपूर्व रत्न उपन्युं छे परंतु तेमां क्रोध घणो छे तेथी हाथ लगाडीयें तो बालवाने दोडे छे एविषे क्याएक एवु पण लखेलु छे के युगलीआउए जइ जगवानने कह्युं के कोइ राक्षस उठ्यो छे पछी जगवाने अवधिज्ञाने जोयुं तो अग्नी उपन्यो दीठो तेवारें युगलीयाने कह्युं के तमे एमां तृण लगावीने अग्नि ग्रहण करो तेमां शालिप्रमुख धान्य पचावीने खाउ तेवारें युगलीयाउए पलवाडाना तिरणा तोडीने अग्नि जूदो सलगावी, तेमां धान्य नाख्युं ते सर्व बली गयु कांइपण पाछुं हाथमां आव्युं नही ते जोइ फरी जगवान् पासें आवीने कहेवा लाग्या के ते पोतेंज खाय्यो छे माटे सर्व धान्य खाइ जाय छे अमने कांइ पण आपतो नथी ते सांजली जगवान् बोल्या हुं हाथी उपर चढीने आवुं तेवारें मने एक माटीनो पिंम आपजो पछी युगलीयायें तेमज कर्यु माटीनो पिंम लइ आव्या ते माटीमाथी जगवाने हांमी, कुंमी प्रमुख वासण बनावी आप्या अने सर्वे रीत पण कही समजावी जे आवीआवी रीते बनावीने, वासणमा पचावी एमां धान्य पाणी नाखीने अग्नि उपर चढावी पाकुं धान्य करीने खाउ एवा जगवानें बतावेला विधिथी युगलीया अन्नने पचावीने खावा लाग्या तेवारें अन्न पचवा लाग्युं ए जोजनविधि कह्यो ॥ ॥

हवे जगवाने अढार जातिनी लीपी ब्राह्मीने जिमणा हाथथी लखवाने बतावी तेना नाम कहे छे १ हंसलिपी, २ जूतलिपी, ३ यक्षलिपी, ४ राक्षसलिपी, ५ उड्डी लिपी, ६ यावनी लिपी, ७ तुरकीलिपी, ८ कीरीलिपी, ९ द्राविडीलिपी, १० सैंधवीलिपी, ११ मालवीलिपी, १२ नडीलिपी, १३ नागरीलिपी, १४ लाटीलिपी, १५ पारसीलिपी, १६ अनिमित्तिलिपी, १७

वाणाकीलिपी, १८ मूलदेवीलिपी ए अढार लिपीना नाम तथा बीजी पण देशना नामे लिपी ज
मके लाटी, चोटी, माहाली इत्यादिक लिपी जाणवी ॥ तथा गणित जे आंकनो विधान ते सुव
रीने भरतने माथे हाथे करवाने बताव्युं ते स्या भणी तोके " अंकानां वामतो गति ॥ अक्षराणा
वक्षिणतो गतिः" वली भरत महाराजने रूप करवानुं कर्म बताव्युं तथा बाहुबलीने पुरुषाविलक्षण
बताव्या तथा पुरुषनी बहोंतेर कलाउ बतावी तेना नाम कहे छे १ लेखनकला, २ पठनकला ३
गणितकला, ४ गीत गावानी कला, ५ नाटकनी कला, ६ तालमाननी कला, ७ ढोल वजाव
वानी कला, ८ मृदंग वजाववानी कला, ९ वीणा वजाववानी कला, १० वांसली वजाववानी
कला, ११ भेरी वजाववानी कला, १२ हाथी परखवानी कला, १३ घोडा परखवानी कला,
१४ धातुवादनी कला, १५ दृष्टिवादनी कला, १६ मंत्रवादनी कला, १७ पलितविणासनी
कला, १८ रत्नलक्षण, १९ नारीलक्षण, २० नरलक्षण, २१ छंदकरण, २२ तर्कवाद, २३ न्या
य, २४ तत्त्वविचार, २५ काव्यकरण, २६ ज्योतिष, २७ चारवेदनी कला, २८ वैद्यकला,
२९ षट्भाषाज्ञान, ३० वशीकरण, ३१ अंजन, ३२ लिपी, ३३ कृषिकर्म, ३४ सुपन, ३५
वाणिज्य, ३६ राजसेवा, ३७ शकुन, ३८ इन्द्रजाल, ३९ वायुस्तंभन, ४० अग्निस्तंभन, ४१
मेघ वर्षाववानी कला, ४२ लेपनकला, ४३ मर्दनकला, ४४ ऊर्ध्व जावानी कला, ४५ घट
बंधननी कला, ४६ घणो फेरवो, ४७ पत्र छेदवो, ४८ मर्मभेदन, ४९ फल खेचवो, ५० पा
णीवृष्टि, ५१ लोकाचार शीखवानी कला, ५२ लोकोनी मरजी राखवानी कला, ५३ फल
भरवानी कला, ५४ खड्ग धारवानी कला, ५५ छुरीबंधन, ५६ मुद्राकरण, ५७ लोहघटन,
५८ दंतसमारण, ५९ काष्ठछेदन, ६० चित्रकरण, ६१ बाहुयुद्ध, ६२ दृष्टियुद्ध, ६३ मुष्टियुद्ध,

६४ दंडयुद्ध, ६५ खड्गयुद्ध, ६६ वाग्युद्ध, ६७ गरुडमर्दन, ६८ सर्पदमन, ६९ भूतदमन, ७० योगध्यान, ७१ वर्षज्ञान ७२ नामावली ए पुरुषनी बहोतेर कला भगवानें बतावी ॥ हवे स्त्रीयोनी चोशठ कला बतावी तेना नाम कहे छे १ नाचवानी कला, २ आदर देवानी कला, ३ चित्रकला, ४ वादकला, ५ मंत्रकला, ६ तंत्रकला, ७ ज्ञानकला, ८ विज्ञानकला, ९ दंभकला, १० जलस्तंभनकला, ११ गीत गावानी कला, १२ तालमाननी कला, १३ मेघवृष्टीनी कला, १४ फलाकृष्टीनी कला, १५ वाग्गोपन, १६ आकारगोपन, १७ धर्मविचार, १८ शकुन जोवुं, १९ क्रियाकल्प, २० संस्कृतभाषा बोलवी, २१ प्रसादनीति, २२ धर्मनीति, २३ वर्णिकावृद्धी, २४ सुवर्णसिद्धि, २५ सुगंधितेल करवुं, २६ लीलासहित चालवुं, २७ हाथी घोडानी परीक्षा करवी, २८ पुरुषस्त्रीलक्षण जाणवुं, २९ सुवर्णरत्नभेदनुं ज्ञान, ३० अढार जातिनी लीपी, ३१ तात्कालिक बुद्धि, ३२ वास्तुसिद्धि, ३३ वैद्यक्रिया, ३४ कामक्रिया, ३५ घटभ्रमण, ३६ सारिपरिश्रम, ३७ अंजनयोग, ३८ चूर्णयोग, ३९ हस्तलाघव, ४० वचनचतुरता, ४१ भोजनविधि, ४२ वाणिज्यविधि, ४३ मुखमंडन, ४४ शालिखंडन, ४५ कथा केहवी, ४६ फूलगुंथन, ४७ वांकुं बोलवुं, ४८ काव्यशक्ति, ४९ वेस बनाववो, ५० सर्वप्रकारनी भाषाउ बोलवी, ५१ अभिधानज्ञान, ५२ घरेणा पहेरवा, ५३ राजानी भक्ति करवी, ५४ घरनो आचार शीखवो, ५५ काव्यकरण, ५६ परने हरावबो, ५७ धान्य रांधवु, ५८ केश बांधवा गुंथवा, ५९ वीणा वजाववी, ६० वितंडावाद, ६१ अंकविचार, ६२ लोकव्यवहार, ६३ अंत्याक्षरिका, ६४ प्रश्नप्रहेलिका ए चोशठ स्त्रीयोनी कला भगवाने बतावी तथा श्रीऋषभदेवजीना सो पुत्रना नाम आवी रीतें छे १ भरत २ बाहुबली, ३ मस्तक, ४ पुत्रा

गारक, ५ मल्लिदेव, ६ अंगज्योति, ७ मलयदेव, ८ नार्गवनाथ, ए अगदेव, १० वसुदेव, ११ मगधनायक इत्यादिक सो पुत्र जाणवा तेमांथी नरतने तो अयोध्यानुं राज्य आप्युं तथा बाहुबलीने तिक्षशिला नगरीनुं राज्य आप्युं अने बीजा अठाणु पुत्रोने अग वग प्रमुख देशोना राज्य आप्या पठी पोतें चार हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लइने विहार कर्यो हतो ते वखत चार मुष्टी लोच कर्यो हतो अने बीजा तीर्थंकर सर्व पांच मुष्टी लोच करे ठे तेनुं का रण कही देखाडे ठे नगवाने जेवारें चार मुष्टी लोच करी लीधो तेवारें पांचमी मुष्टीयें उखेडी नाखीये एटला केस पाठल चोटलीमां रह्या एटलामां पवन वाह्यो तेने लीधे ते केसनी शिखा फरकीने पोहोली थइ तेथी घणीज सोनवा लागी ते जोइन इंद्रमहाराजे प्रभुने विनति करी के महाराज केशनी शिखा घणीज सारी रमणिक देखाय ठे माटे एमज रहे तो सारु प्र नुयें पण ते शिखा एमज राखी ते जेम पद्मद्रहमाथी सिंधूनदी निकलती वखते सवा ठ यो जननी पोहोली ठे अने पठी अनुक्रमे वधती वधती समुद्रमां मलतां साढी बाशठ योजननी पोहोलपणे थयली ठे तेम ए चोटली पण मस्तकना थडमाथी नीकलेली ते आगल आगल पोहोलाइमा विस्तारने पामती हीगमां आवी तेथी पद्मद्रह सिंधुनदीना प्रवाहनी पेरे शोना कारी देखवा लागी तेने लोक नाषायें अद्या चोटली पण कहे ठे हवे नगवान घोर अनिग्रह धारी थया थका ग्रामानुग्रामे विहार करतां थाकरा परिसह सहन करता थका विचरे ठे तिहां नगवानने यद्यपि ठठ तपनुं पारणु करवुं हतुं तथापि ते वखतमां सुपात्र साधुने दान देवानो विधि कोइ जाणतो न हतो निक्षानो व्यवहार कोइ जाणतो नथी साधु ते शुं अने निक्षा ते वली शुं? एवो कोइ समजे नही ते वखत कोइ निक्षानो मागनार पण डुनीयामां

हतो नही तेणेकरी जिहां जाय तिहां कोइ अन्न आपे नही तेथी चार हजार साधुउ भूख तृषायें पीड्या थका प्रभुने आहारनो उपाय पूछवा लाग्या पण प्रभु कांइ बोल्या नही मौन पणे रह्या तेवारें कछ अने महाकछने पूछ्युं तेणे पण कह्युं के अमे पण कांइ जाणता नथी तेवारें सर्वे विचार करवा लाग्या के आपणे प्रथमथीज भगवानने कांइ पूछ्युं नही अने हवे पाछा घेर जइने बेसवुं पण योग्य नथी तेम आहार कर्या विना पण रह्युं जाय नही तो हवे आपणने ए वनवासमां रहेवुंज भलुं छे एम चिंतवीने गंगानदीना दक्षिण तटना वनमां जटिल तापस थइने रह्या अने वृक्षमांथी नीचे तूटी पडेला पत्र, फल, फूल आदिकनो आहार करवा लाग्या तथा वृक्षनी छालना वस्त्र पेहेरे अने श्रीऋषभदेवजीनुं ध्यान करता थका विचरवा लाग्या ॥ हवे जेवारें प्रभुयें दीक्षा लीधी हती तेवारें सर्व पुत्रोने जुदा जुदा देशोना राज्य वहेंची आप्या हता ते अवसरमां कछ अने महाकछना पुत्र एक नमि अने बीजो विनमी ए बेहुने भगवानें पुत्रनी पेरे पाल्या हता ते बन्ने जण ते वखतें क्यांएक देशांतरें जता रह्या हता पण हाजर हता नही ते जेवारें पाछा फरी आव्या तेवारें तेणे भरतने आवी कह्युं के अमने राज्य केम न आप्यो भरतें कह्युं के हुं तमने थोडोक भाग आपुं तेणे कह्युं के ताहारा पासेथी न लहीयें तेवारें भरतें कह्युं भगवान जाणे ने तमे जाणो तेवारें बेहु भाइ भरतनी अवगणना करीने भगवाननी पासें आवी तेमना चरणकमलनी सेवा करीने केहेवा लाग्या के हे प्रभु तमे सर्वने राज्य दीधुं माटे अमोने राज्य आपो भगवाने तो ससारत्याग कर्यो छे माटे मौनपणे रह्या कांइ उत्तर दीधुं नही तेवारें ते बन्ने जण राज्यने अर्थे भगवाननी पाछल रह्या जिहां भगवान ऊभा

रहे तिहां जगा साफ करे, कांटो, काकरो काढाढी नाखे, पाणी छटकावे, फूल विछावे, मांस मशकादिक वमाडे, त्रिकाल खड्ग धरे एम प्रभुनी सेवा भक्ति करता थका विचरे छे एकदा धरणींद्र भगवानने वांदवा आव्यो तेणे नमि विनमिने कह्युं के भगवान तो त्यागी छे माटे तमे भरतनी पासे जाउ ते तमोने राज्य आपशे तेवारें ते बोल्या भगवान विना अमे बीजा कोइ पासेथी राज्य मागीयें नही एवुं सांभळी धरणींद्र तेमनी भक्तिथी संतुष्ट थइने कहेवा लागो के तमे एकमना थइने प्रभुनी सेवा करो छो तो महोटाना चरणनी सेवा केवारें पण निष्फल थाय नही तेथी हुं तमारा उपर निवाज्यो छु माटे जे मागो ते हुं आपु तो पण तेणे कांइ माग्युं नही तेवारें धरणींद्रे भगवतना शरीर अदृष्टि अदृष्टि एटले भगवानना मुखें अवतरीने अडतालीश हजार विद्याउ पाठ गुणतांज सिद्ध थइ जाय एवी शीखावी अने गौरी, गांधारी, रोहिणी तथा प्रज्ञप्ति प्रमुख शोल देवीयो ते विद्याउनी अधिष्ठायकाउ छे ते आपी अने वैताढ्य पर्वतनी दक्षिण उत्तर श्रेणीनुं राज्य आप्युं पछी विद्याउ साधी बन्ने भाइउ विद्याधरनी ऋद्धि पाम्या त्यारे पोतानो सर्व स्वजनवर्ग लइने रथनुपुर चक्रवालादि पचास नगर उत्तर श्रेणिना तथा गगनवल्लभ प्रमुख शाठ नगर दक्षिण श्रेणीना वसावीने विद्याना बलथी सर्व परिवार सहित तिहां रहेता हवा पछी ते बे भाइउने धरणींद्रे कह्युं के हे विद्याधरो तमे सांभळो जे एक तो केवली भगवाननी, बीजी जिनप्रतिमानी, त्रीजी चरम शरीरीनी अने चोथी प्रतिमाधर साधुनी ए चारनी जो तमे आशातना करशो अने वली एनुं बल्लंघन करशो एटले ए चारने रस्तामा मूकी तेना दर्शन सेवा कर्या विना एमज चाल्या जाशो तथा परस्त्रीनी साथे जोरावरीथी भोग भोगवशो तो तमारी विद्याउ निष्फल

थइ जाशे एवी रीते शिखामण आपीने ते शिखामण रत्नत्नीत उपर लखीने धरणेंद्र पोताने स्थानके गयो पठी जगवाननी सेवानुं फल जरतने कहीने शोलजाति विद्याधरोनी थापी दक्षण श्रेणीनुं राज्य नमि करवा लाग्यो अने उत्तर श्रेणीनुं राज्य विनमि करवा लाग्यो ॥ इति नमि विनमि प्रबंध ॥ हवे जगवान पूर्वकृत अंतराय कर्मना उदय थकी एक वर्ष पर्यंत आहार विना रह्या क्यांय शुद्ध जिक्षा न पामता हवा जिहां गोचरीयें जाय तिहां महोटो माणस जोइने कोइ वस्त्र आपे, कोइ आजरण आपे, कोइ मणी, माणिक अने मुक्ताफलना थाल जरी आपे, कोइक तो घणी स्वरूपवान् एवी कन्याने शोल शणगारे शणगारीने आपवा तयार थाय, कोइक तो हाथी, घोडा, रथ इत्यादिक वाहन आपवा आवे, कोइ एक धनजृत सुवर्णस्थालप्रमुख उचित वस्तु आपवा आवे एम घणा घणा पदार्थ लावीने लोको स्वामिनी आगल धरे ते सर्व अणखपता जणी स्वामी लीये नही पण अन्न कोइ आपवा आवे नही एवी रीते एक वर्ष पर्यंत स्वामी निराहारी रह्या पण आहार विना लगार मात्र म्लान्या नही दीनपणुं आव्युं नही एवी रीतें जगवान विचरता थका एकदा गजपुर नगरे पधार्या तिहां बाहुबलीनो पुत्र सोमप्रज नामे राजा राज्य करे ठे तेनो पुत्र श्रेयांस कुमर युवराजा ठे तेणे ते रात्रीये सुपनुं दीठुं हतुं जे मेरुपर्वत मलिन थइ गयो हतो तेने में अमृतना घडाथी धोइने उज्ज्वल शोजायमान कीधो तथा श्रेयांसना पिता सोमप्रज राजाने एवुं सुपनुं आव्युं जे कोइ एक पुरुषने शत्रुयें घेरी लीधो ते श्रेयांस कुमरना सहाय थकी जय पामी ठूटो थयो तथा ते नगरना सुबुद्धि शेठने सुपनुं आव्युं जे सूर्यना सहस्र किरणो पडता हता तेने श्रेयांस कुमरे पाठा सूर्यमां थाप्या ए त्रणे जण प्रजाते राजसजामां जेला थया तिहां स

ढुयें पोतपोताने आवेला सुपनानी वात कही तेवारें सर्वना मनमां एवो विचार आव्यो के
आ सुपनानुं सर्वे फल श्रेयांसकुमरने थाशे अने श्रेयांसने कोइ महोटो लाभ थाशे एम कही
सहु पोतपोताने घेर गया पछी मध्यान्ह समये गोचरी करवाने माटे श्रीऋषभदेवजी घरघ
रने विषे फरवा लाग्या तेने लोको पूर्वोक्त रीते वस्त्राभरणादिक वस्तु आपवा लाग्या पण प्रभु
लेता नथी तेथी लोकोमां कोलाहल थइ रह्यो छे जे भगवानतो कांइ पण लेता नथी एटलामा
श्रेयांस कुमर गोखमां बेठा हता तेणे श्रीऋषभदेवजीने दीठा पछी इहापोह करता जातिस्मरण
ज्ञान पाम्या तेणेकरी पूर्वलो भव दीठो तेवारें जाण्युं जे अहो ! हुंतो ए प्रभुनो पूर्वभवने
विषे सारथी हतो तिहां में पण दीक्षा लीधी हती तिहां वज्रसेन तीर्थंकरें एवुं कह्युं हतुं जे
ए वज्रनाभ राजर्षि भरतक्षेत्रमां पहेला तीर्थंकर थाशे तेज ए प्रभु तीर्थंकर, देवोना देव गो
चरीयें भमता देखाय छे एम जाणी गोखथकी हेठा उतरीने कह्युं के हे प्रभु लोको साधुने
दान देवानी रीतीमां वाकेब नथी एम कही पांच अभिगमन साचवी त्रण प्रदक्षिणा देइ॥ इ
च्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥ ॥ एम ख
मासमण आपी पछी इच्छाकारि सुहराइ सुहदेवसि सुख तप शरीर निराबाध सुख संजम जात्रा
निर्वहोछोजी हे भगवन् भातपाणीनो लाभ देवा पधारो महारुं गृहांगण पावन करो, महारे
घरे पधारो, शुद्ध बेंतालीश दोष रहित आहार वहोरीने महारो निस्तार करो एम इहां श्रेयांस
कुमर पहेला श्रावक प्रगट थया ते समयें शेलडीना रसे भरला एकशोने आठ घडा श्रेयांस
कुमरने कोइक भेट आपी गयेलो छे ते शुद्धमान घडा लइने श्रेयास कुमरे भगवतने भिक्षा
लेवानी विनती करी इहां कवी घटना करे छे के दान लेती वखतें प्रभुना बेहु हाथनो

मांहोमाहे विवाह थयो ते आवी रीते के प्रथम जमणो हाथ गद्‌गद्‌स्वरे करीने श्रेयांस कुमर प्रत्यें कहेतो हवो के अहो श्रेयांस तुं सांजल हुं श्रीऋषजदेवनो आजन्मनो सेवक छु, में श्री ऋषजदेवजीना प्रसादेंकरीने घणा महोटा महोटा उत्तम काम कस्या छे तेणेकरी हु घणो प्रतिष्ठा पामेलो छु ते महारा कर्त्तव्य तुं निरपेक्ष पणे सांजल प्रथम तो में इन्द्रादिक देवोने देखता थका जमणे अंगुठेकरीने प्रज्ञुने अमृतपान कराव्युं एटले तीर्थंकरनी एवी रीतिज छे के पोतानी मातानुं तथा अन्य स्त्रीयोनुं स्तनपान नकरे पण जेवारें क्षुध लागे तेवारें पोताना जमणा हाथनो अंगुठो चूसवा मांमे के तरतज तेमां अमृतमयी पुज्जल प्रणमी जाय तेथी क्षुधावेदनी उपशमी जाय ॥ १ ॥ वली वसस्थापनाने अवसरें में इन्द्रना हाथथी सेल ईनो सांठो महण करीने स्वामीनी वाछा पूरण करी माटें वसस्थापवामां पण हुं आगेवान थयो ॥ २ ॥ वली में जरतराजाने तिलक करीने विनीता नगरीनुं राज्य आपी छ खंमनो जोक्ता कस्यो एटले राज्यस्थापनमां पण जमणे हाथेज मंगलिक कामे टीलुं कराय छे ॥ ३ ॥ वली जरतनी पेरेज में बाहुबलीने तक्षशिला नगरीनुं राज्य आप्युं ॥ ४ ॥ तथा शेष अठाणु पुत्रने पण एज रीते में राज्य आप्युं ॥ ५ ॥ तथा सुनंदा अने सुमंगला ए बे कन्याउने पण हाथ मलाववाने अवसरे जमणे हाथे झालीने स्वामीने परणावी दीधी ॥ ६ ॥ वली में एक वर्ष पर्यंत स्वइछित वरसी दान आपीने त्रण जगतना मनोवांछित पूरण कस्या केमके दान पण जमणा हाथेज देवाय छे ॥ ७ ॥ ॥ वली हुं छत्र, चामर, चक्र, गदा खड्ग, धनुष्य, अंकुश वज्र अने शखादिक शुज लक्षणेंकरी बिराजमान थको शोजी रह्यो छु एवा सर्व लक्षण हुं (जमणो हाथ) धारण करु छु अनें लक्षण जोवावाला लोक पण महा

रीज रेखाउ आदिक सर्व लक्षणने छुए छे ॥ ७ ॥ वली तीर्थयात्रा, पुत्रप्राप्ति, सौजाग्य, यश कीर्त्तिनी सूचक रेखाउनो धारक पण हुज छुं एटले ए सर्व जावोने सूचववा वाली रेखाउ जो जमणा हाथमां होय तोज तद्रूप फलनी प्राप्ति थाय छे ॥ ए ॥ वली हुं चोखा देखवामां सो धवामा चतुर व्यापारवान छु एटले घोखा गोधूमादिकमांथी कांकरा प्रमुख सोधी काढाडवा ते जमणा हाथथीज बनी शके छे ॥ १० ॥ वली दानने विषे, जोजनने विषे, देवपूजाने विषे, परमेश्वरना स्मरणने विषे, प्रीति बांधवाने विषे, बोल तथा कबुलात आपवाने विषे दानने विषे, इत्यादिक शुज शुज कार्योमां महारोज अधिकार छे ॥ ११ ॥ एवी रीते हु सर्वनी उपर छुं अने महोटा महोटा कामोमां महारो अधिकार छे तो कहो आ स्वल्प सेलडीना तुछ रसनी देवा केवी रीतें थाउं वली में प्यासी लाख पूर्व लगें जगवाननी साथें राज्य साम्राज्य पाल्युं तो हवे हु हमणा जगवतनी आगल पश्ने केवी रीतें याचना कराउं तेज कारणथी में खावु, पीवुं, पहेरवुं, दवु, नाटक देखवुं, इत्यादिक क्रीडाविना मौन धरावीने वन गहन अटवीउमां प्रजुने जमाड्या तो हवे आ सेलडीना रसने हुं ग्रहण न करु माटे तमे मावा हाथने कहो तो ते मा गी लेशे एवा जमणा हाथना वचन सांजलीने मावो हाथ बोल्यो के हे निर्लज्ज तु वृथा पोतानी मेले पोताना आत्मानी महोटाइ करीने शुं प्रशंसा करे छे पोताना मुखथी जे पोतानी महोटाइ करे तेमां कोइ गुण होय तोपण ते लघुताने पामी जाय अने परनी प्रशंसा करवाथी जो निर्गुणी होय तो पण गुणवान् थाय गुणवंत होय तेना गुण तो पोतानी मेलेज प्रगट थाय जेम कपूरनो सुगंध, रत्ननुं तेज अने मणिनुं निर्विषपणु इत्यादिक जे गुणो छे ते पोतानी मेलेज प्रगट देखाइ आवे छे पण ते कोइ कोइने आगल कहेवा जाता नथी वली एकगाज रहेनारा बे जण होय तेमां

थी एक जण छोने पोताना गुण बीजानी आगल वर्णवी देखाडे ते युक्त नथी जेम माताना मुख आगल मामानुं वर्णन करी देखाडवुं युक्त कहेवाय नही तेनी पेठे ए पण जाणी लेवु ॥ माटे हवे श्रीश्रेयांस श्रीरूषभ देवना परपोत्रा महारु पण कर्तव्य जे छे ते तुं सांभल परमेश्वरे जे बे कन्याने परणवानु स्वीकार्यु तेमने सूवा बेसवानुं ठेकाणुं तो मेंज आप्युं कारण के स्त्रीयो जे छे ते पतिना डावापासा तरफ सूवे बेशे छे एटले जमणो हाथे तो मात्र स्त्रीनुं हाथ झालीने अलगडी मूकी पण तेमने बेसवा माटे स्थानक तो में आप्युं ॥ १ ॥ वली हुं ढाल आगल राखीने संग्रामनेविषे स्वामीनुं रक्षण करु छुं अने जमणो हाथ तो खड्ग उपाडीने पाछो नासी जाय छे ॥ २ ॥ वली हुं संग्राममां धनुष्यने आगल धारण करीने उभो रहुं छुं अने आ जमणो हाथ तो तीर लइने कानने विषे चुगलनी पेरे पेशे छे ॥ ३ ॥ वली आंक गणवानो व्यापार पण महारी पासे थाय छे एटले आंकनी वामगति होय छे ॥ ४ ॥ वली ग्रामांतरें प्रयाण करतां गधेडो पण जो महारी दिशा तरफ आवीने बोले तो सिद्धिदायक छे ॥ ५ ॥ तेमज देव चकली पण डावे पासे आवी बोले तेवारें शुभ फलनी सूचवनारी थाय छे ॥ ६ ॥ वली प्रथम प्रयाणने विषे प्रथम रात्रीना पहोरमां सीयालीया पण महारी दिशायें रह्या थका बोले तो सिद्धिना करवावाला थाय ॥ ७ ॥ वली जे प्राणी रोगादिकें पीडाणो होय ते पण घणु करीने डावे पासे सूवे तो तेने समाधि कारक थाय ॥ ८ ॥ वली महारी तरफनी चंद्रनाडी वहेतां जे शुभकामनो प्रारंभ कर्यो होय ते सिद्धिदायक थाय ॥ ९ ॥ वली हे श्रेयांस तु सांभल के आ पापी जमणा हाथे प्रभुने परणवाने अवसरे कन्याउनो हाथ ग्रहण कर्यो तेवारें पण मने बोलाव्यु नही ॥ १० ॥

वळी कसार पण एणे एकछेज खाधु पण एम न जाण्युं जे आ मद्दारो नाइ नूख्यो ठे माटे थोडोक एने पण बोलावीने खवाडुं एवो विचार कस्या विना मंद्दाराथी कपट करीने ए एक लोज खाइ गयो तेथी ए नि'केवल पेट जरो देखाय ठे, फोकट पोताना मुखथी पोताना गुणनुं वर्णन करे ठे ॥ ११ ॥ वळी दे श्रेयांस हुं सांनळ बीजी पण एनी निष्ठुरता कद्दी देखाडुं हु के जे वखत मिष्टान्नपान जोजन करे तेवारें जोजन तो पोते करे अने मक्षिकाउ मद्दारा पासे उडावे तो पण हुं ते वखत मद्दारी दाक्षिण्यताथी मद्दारो मद्दोटो नाइ जाणीने एने कांइ कहु नद्दी ॥ १२ ॥ वळी ए जमणा दाथमां चतुराइ किंवा बीजो कोइ गुण पण काइ नथी कारण के जे वखत मस्तकें पागडी वींटे ठे ते वखत एतो जेम तेम वींटी नाखे ठे पण पाठलथी बरोबर आंटा प्रमुख सुधारवा करवानुं काम, बराबर रचना करवी, सुंदर आकार करवो तेतो सर्व हुंज करुं हुं ॥ १४ ॥ वळी आ जमणो दाथ जे ठे ते जूवटानो रमवावालो ठे ॥ १५ ॥ ॥ इत्यादिक दे श्रेयांस हुं केटलुं तमोने कहु अमारा बेजणना सारा माठा लक्षण तथा गुण अने अवगुणने सर्व जगत्र जाणे ठे अथवा आ श्री रुषनदेव स्वामी पोतेंज त्रण लोकना नाथ ठे माटे सर्व जाणे ठे एवी रीते अमो बेहु जणने विवाद करता थका एक वर्ष व्यतीत थइ गयुं तेथी जगवान् वर्षी तपना करनार थया एम कुंटुंबनो विरोध केवारें पण कल्याणकारी न थाय ते माटे दे श्रेयांस ए घणोज दृठीलो ठे तथापि हुं तद्दारी दाक्षिण्यताथी एने समजावुं हु केमके कोइ प्रकारे जेवारें कुंटुंबमां विरोध उत्पन्न थाय ठे तेवारे संबंधीने संबंधीउज पोतपोतामां प्रतिबोध आपी समजावे ठे एम कद्दी मावो दाथ जमणा दाथने कहेवा लाग्यो के देजाइ आ अवसरे आपणने विवाद



श्रेयासकुमर भगवानने सेलडीना रस वहोरावे छे

करवुं घटतुं नथी हमणा स्वामीने केवल ज्ञाननी उत्पत्तिनेविषे तथा तीर्थ प्रवर्तननेविषे अने संघस्थापनाने विषे तमारुंज काम छे एमां बीजा कोइनुं काम नथी महोटाउने पोतानुं काम ते पारके अर्थेंज थाय छे जेम मातायें पीधेलुं दूध ते बालकने अर्थेंज थाय छे ते कारणे आ वखतें आपणने विरोध करवुं योग्य नथी एवी रीते झगडो हाथ बोली रह्यो तेवारें श्रेयांस कुमर बेहु हाथने समजाववा लाग्यो जे अरे जावा जमणा हाथो तमे बन्ने जण पोतपोताना काममां कल्याणकारी छो परंतु हमणा तमे महारी प्रार्थना सफल करो ते आवी रीते के तमे बेहु एकठा थाउ के जे थकी जगवानने बार मासना तपनुं पारणुं थाय अने महारे पण उत्तम दान आपवाथी संसारसमुद्र थकी तरवुं थाय माटे तमे जला थइ महारा उपर कृपा करीने बेहु जण जगडो मटावीने जेला थइ जाउ एवी श्रेयांसनी विनति सांजलीने बन्ने हाथ पसलीने आकारे एकठा मली गया तेवारें श्रेयांस कुमरे शुद्ध जावे करीने सेलडीनो रस वहोरावी दीधो तेनी शिखा उंची चढी तथापि एक बिंदुमात्र पण नीचे पड्यो नहीं जो हजारो घडा हाथमां उंधावाली आपो अथवा सर्व समुद्रोना पाणी नाखो तो पण एक टीपुं हाथथी बाहेर पडी जाय नही मात्र शिखा उंची चढती आवे एवी लब्धि जेवारें प्राप्त थयेली होय तेवारें करपात्री थाय यदुक्तं ॥ माइज्ज घडसहस्सा, अहवा माइज्ज सागरा सव्वे॥ जस्से आरिस्स लर्द्धि, सो पाणिपडग्गहा होइ ॥ १ ॥ ॥ ए जगवाननी लब्धिनो प्रजाव जाणवो पछी स्वामीयें तिहांज पारणुं कर्युं ते वखत पांच दिव्य प्रगट थया एकतो गधोदक फूलनी वृष्टि थइ, बीजुं वसुधारानी वृष्टि थइ, त्रीजुं वस्त्रनी वृष्टि थइ, चोथुं आकाशें देव दुंदुजी वागी, पांचमुं "अहोदानमहोदान" एवी उद्घोषणा देवोयें करी आ पात्रदानथी श्रेयांस

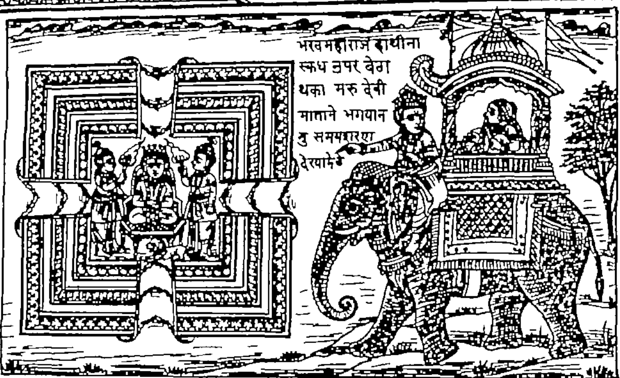
कुमरे मोक्ष फल उपार्जन कर्युं, जिहां भगवाने पारणुं कर्युं तिहां रत्नमय पीठ कराव्युं, ए भगवानना पारणानो दिवस वैशाख शुदि त्रीजनो हतो तेथी अक्षय त्रीज एवे नामे ते पर्व जगतमां मान्य थातो हवो, लोकोयें प्रशंसा करी के श्रीऋषभदेव सरखो पात्र अने सेलडीना रस सरखो शुद्ध आहार तथा श्रेयांस कुमरना जेवो भाव ए कोइ महोटा पुण्यना योगवडे थाय छे॥ यत ॥ रिसहेससमं पत्तं, निरवद्य इक्खुरससमं दाणं ॥ सियससमो भावो, हविय जइ मग्गिअ हुज्जा ॥ १ ॥ श्रीआदिनाथनुं पारणुं सेलडीना रसनुं थयुं अने बीजा तीर्थ करोनुं प्रथम पारणुं खीर भोजननुं थयुं हवे ते वखत श्रेयांस कुमरने लोकोए पूछयु जे अमे तो भगवान आहार लेशे एवुं जाणता न हता अने तमे शी रीते जाण्युं जे भगवान आहार लेशे तेवारें श्रेयांस बोल्यो के हुं भगवानना जीवनी साथे आठ भव पर्यंत रहेलो छुं तेथी दान देवानो विधि सर्व जाणुं छुं तेवारें लोकोयें पूछयु के ते आठ भव केवी रीते छे तेवारें श्रेयांसे कह्यु के पहेला भवमां भगवाननो जीव ललितांग देव हतो तिहां हुं एमनी स्वयंप्रभा नामें देवी हती, बीजा भवमां स्वामी वज्रधर राजा थयो हुं तेमनी श्रीमती नामें राणी थइ, त्रीजा भवमां अमे बेहु युगलीया थया, चोथा भवमां बेहु जण सौधर्म देवलोकमां जइ मित्रपणे देवता थया, पांचमा भवमां प्रभु वैद्यपुत्र जीवानंद नामे थया अने हुं एमनो मित्र थयो, छठ्ठा भवमां अच्युत देवलोके जइ बेहु जण देवतामां मित्रपणे उपना, सातमा भवमां प्रभुतो वज्रनाभ नामे चक्रवर्ती थया तिहां हुं एमनो सारथी थयो हतो, तिहां तीर्थंकरनी पासेंथी अमें सहुयें दीक्षा लीधी, आठमा भवमां सर्वार्थसिद्ध विमानें देवता पणे थया तिहांथी चवी ए भगवान थया अने हुं एमनो पोतरो श्रेयांस कु थयो ते वात

एटला दिवस पर्यंत हुं कांइ पण जाणतो नहतो परंतु आजे में जगवानने दीठो तेथी मुजने जातिस्मरण ज्ञान उपनुं तेथी में जे सातमा जवमां दीक्षा पाली हती तेनी सर्व रीत मने जाण वामां आवी तेवारें में साधुनी मर्यादायें आहार वहोराव्यो, ए महोटा पुरुष ठे, एमने कांइ ध नादिकनी गरज नथी, ए वात सांजलीने सर्व लोकोए साधुने आहार आपवानो विधि जाणी लीधो हवे जगवानने एक वर्ष पर्यंत जुख्यो रहेवु पड्यु अने आहार मल्यो नहीं ए कया अंतराय कर्मना उदयथी थयुं ते कही देखाडे ठे जगवान पूर्वे कोइक जवमां शेठनो जीव हता ते शेठ एक दिवस करसणीयोनी पासें उगराणी करवा गया तिहां ते करसणीयें खलो कर्यो हतो तेनो धान काहाडवा सारु ते करसणी पोताना बलदोने धानमां फेरवे ठे ते बल द फरता फरता जे वखत नीचें नमीने धानमां मोहोडुं घाले तेवारें करसणी बलदोना मोहो डाने उपर चाबका मारे ते जोइ शेठने दया आवी तेथी शेठें कणबीने कह्युं के अरे एने तु फोकट शावास्ते मारे ठे एमना मोहोडा उपर ठीकुं बांधी मूक तो धान खाशे नही पठी बधा करसणीउंये तेमज ठीका बांध्या ते ठीका बार पोर सुधी बाध्या रह्या ए अंतराय कर्म जगवाने बाध्यो हतो ते आ जवमां उदय आव्युं तथा कोइक आचार्य कहे ठे के जगवाने जेवारें महाविदेह क्षेत्रमां ठ मित्रनी साथें चारित्र लीधुं हतुं ते ठएमां श्रीऋषजनो जीव महोटो हतो ते सपरिवार विहार करता करता कोइक कणबीना खेत्रनी वाडे जाय ठे तेवामां ते कणबी पण धान काहाडवा माटे बलदोने फेरवे ठे हालरु खेडता वचमां वचमां ते बलदो नीचा थइ थइने धान खाये तेवारें ते कणबी तेने परोणे करी मार आपे ते देखी गुरु चितववा लाग्या जे ए कणबी बिचारा बलदोने परोणानो मार आपे ठे ते करतां जो ए बलदोना मुखे

शोकुं साथी मूके तो काइपण घान खाइ शके नही अने र्दीर्मघाज करे एवी रीतें मुखथी तो
बोल्या नही पण मनमा चितव्युं हतुं पठी ते अणआलोयुं कर्म आ नवमां उदय आव्युं तेना
प्रनावथी प्रज्ञु एक वर्ष सुधी आहार पाणी पाम्या नही ए पाठांतर ठे, माटे कोइने पण अंत
राय पाडवो नही एम आ अवसर्पिणी कालमां श्रेयांसकुमरथी पहेल वहेलुं सुपात्रदान प्र
वर्त्युं ॥ यत ॥ मिथ्यादृष्टिसहस्रेन्यो, वरमेको जिनाश्रयी ॥ जिनाश्रयिसहस्रेन्यो, वरमेकोह्य
णुव्रती ॥ १ ॥ ॥ अणुव्रतिसहस्रेन्यो, वरमेको महाव्रती ॥ महाव्रतिसहस्रेन्यो, वरमेको जि
नेश्वर ॥ २ ॥ ॥ जिनेश्वरसमं पात्रं, न नूतं न नविष्यति ॥ यत पात्रविशेषेण, देयं दान
शुनात्मन्नि ॥३॥ ॥ इति नगवत पारणाधिकार ॥ ॥ हवे नगवान विहार करता थका बहु
लीदेशमा तिक्षशिला नगरीने उद्याने संध्या समयें काउसग्गें रह्या तिहां वनपालकें जइने बा
हुबलिराजाने वधामणी दीधी तेवारें वनपालकने दान आपी संतोषीने पठी मनमा विचार्युं
के हमणा सांज पडी अवारु थयुं ठे तेथी थोडा वखतमां सर्व परिवार नेलो थइ शके नही
केमके त्रण लाख तो महारा पुत्र ठे वली पौत्रादिक अनेक ठे ते सर्व एकठा थइ शके नही माटे
प्रनातें महामहोत्सवसहित प्रज्ञुने वांदवा जइशुं एम चितवी बेशी रह्यो पठी प्रनातें नगरी शण
गारी घणा आम्बरसहित प्रज्ञुने वांदवा गयो एटलामां नगवानतो अप्रतिबंध विहारी ठे माटे
बाहुबली आव्यानी अगाउ विहार करी दूरदेशे चाल्या गया तेथी बाहुबलीये नगवानने
दीठा नही माटे घणो खेद करवा लाग्यो कानमां आंगलीउ नाखीने उच्चस्वरें रुदन कर्युं अने
प्रज्ञुना बे पग पासें ऊनो रही बोल्यो हे बाबा आदम हे बाबा आदम एवी बांग मारी तिहांथी
बांग चाली हमणा पण ते समुदायवाला करे ठे ॥ पठी नगवाननी नक्ति करवाने अर्थे जिहां

प्रभु काउस्सग्गमां ऊना हता ते स्थानकें धर्मचक्र एवें नामे आठ योजनना विस्तार वालो एक योजन ऊंचो, हजार खूणानो हजार पगथीआवालो एवो रत्नमय पीठ बांध्यो थूभ कराव्यो तेनी उपर जगवानना पगला थाप्या अने जाण्युं जे एज जगवान छे एवी बुद्धिथी नमस्कार कर्यो बीजा लोकोये पण तेवोज महिमा कर्यो पछी पण तिहां आवीने परणामादि विधि साचवतो हतो तिहांथी बाहुबलीकृतपीठनो महिमा चाल्यो एम प्रभु पृथ्वीतले विहार करे छे ॥ हवे जे दिवसथी जगवान दीक्षा लइने विहार करी गया ते दिवसथी मरुदेवीमाता जरत महाराजने उलंजा आप्यां करे छे अने कहे छे के हे जरत जेम कमलना फूलोनी मालाने नाखी आपीयें तेवी रीतें ए ऋषभनो मुजने छोडीने चाल्यो गयो अने एकाकी वनवासी थयो छे, क्षुध तृषायें पीडातो हशे, क्यांएक मसाण अथवा गुफाउमा तपस्या करतो हशे, टाढ ताप सहन करतो हशे, वर्षाकालमां जीजातो हशे, मांस मत्सर मक मारता हशे, अरे हुं पापणी छुं जे पुत्रने आटलुं दुःख थयुं छे ते सांजलुं छुं तेम छतां मरती केम नथी माटे महारा जेवी दुःखणी क्यांय पण कोइ हसे नही, अरे जरत तुतो राज्यना सुखमां लोजाणो छो, महारा छोकरानी खबर पण काढाडतो नथी, तुंतो सर्व प्रकारनी सुंदर रसोयो करीने खाय छे अने महारो पुत्रतो जिक्षा मागी सुका टूकडा खाय छे, तुतो सारा मजाना घरेणा गाठां पहेरे छे अने महारो पुत्रतो नग्न फरे छे, तुतो सुख सय्यायें सूवे छे अने महारो पुत्र कठण कांकरा कांटावाली जमीन उपर सुइ रहे छे, अरे जे मधुर गीत गानें करी जागतो हतो ते शृगालादिकना उपस्वरें जागतो हशे वली तेनी जूख तृषा अने शरीरनी सुश्रूषानी खबर कोण लेतो हशे तथा अणवाणे पगें चालतो हशे इत्यादिक अनेक उलंजा आपती रहे छे, पुत्रनी चिताथी

मरुदेवी माताने आंखें पडल आवी गया तेने वली भरतराजा समजावे के माताजी तमे कांइ दुःख करो नहीं तमारो पुत्र घणो सुखी छे तेवारें फरी माता कहे के मने देखाड तेने भरत कहे के हवे थोडा दिवसोमां अहींआं आवशे तेवारें हुं तमोने देखाडीश एम मरुदेवी माता भरतने उत्तर देता थका रह्या छे ॥ हवे श्रीऋषभदेव अरिहंते एक हजार वर्ष पर्यंत कायाने वोसरावी दीधी शरीरनी शुश्रूषा त्यागी आपी, एमने कांइ उपसर्ग थया नहीं परंतु एक वर्ष आहार मल्यो नहीं एटलुं कष्ट वीतुं ते कष्टने सहन करता थका, आत्माने भावता थका, एक हजार वर्ष वीत्या त्यारे सीयालानो चोथो महिनो, सातमुं पखवाडियुं, फाल्गुनवदि अगीआरसने दिवसें पूर्वान्ह कालना समयनेविषे पुरिमताल नगरना शकटमुख नामा उद्यानमा न्यग्रोध वडवृक्षनी नीचे, पाणीयें रहित अष्टम तप कीधे थके, उत्तराषाढा नक्षत्रें चन्द्रमानो योग आवे थके, शुक्लध्यानने विचाले वर्त्तता थका, जेनी समान बीजो कोइ जगतमां पदार्थ नथी एवुं अनोपम अनंतु केवलज्ञान अने केवलदर्शन उपन्नुं तेनायोगें यावत् सर्व भावने जाणता देखता थका विचरे ॥ ११३ ॥ हवे एवा अवसरमां भरतमहाराजनी आयुधशालामां चक्ररत्न पण प्रगट थयुं तेवारें ऋषभदेवना केवलज्ञाननी अने आयुधशालाये चक्ररत्न उपनानी ए बेहु वधामणी भरतजीने साथे आवी ते बेहु वधामणीयांने हर्षदान आपीने विदाय कर्या पछी भरतजी विचारमां पड्या के ए बे वधामणी साथे आवी एमांथी कोनो महोत्सव पहेलो करुं एम क्षणेकवार विचारीने निश्चय कर्यो के चक्ररत्नतो संसारिक छे अने श्रीतीर्थंकरनो केवल महोत्सव करवो ते लोकोत्तर छे वली पिताने पूज्या तो सर्वने पूज्या माटे प्रथम इहलोक अने परलोकनो सुखदाइ जे केवलज्ञान तेनो महोत्सव करुं पछी चक्ररत्ननी


चित्र ७३
भरतमहाराज हाथीना
स्कंध उपर बेठा
थका मरु देवी
माताने भगवान
नु समवसरण
देखाडे छे

पूजा करीश एम निरधारी श्रीमरुदेवीमाता पासें आवीने कहेवा लाग्या के हे मातजी तमे मुजने उलंजा देता हता ते तमारा पुत्र आजे अहींयां पधार्या छे माटे चालो महारी साथें हुं तमारा पुत्रनो महिमा तमोने देखाडुं एम कही मरुदेवीजीने हाथी उपर बेसाडीने पछी पोते पण वेग बेसीने घणा आडंबरसहित तिहांथी चाल्या ते चालतां चालतां जेवारें समो सरणने ढुकडा आव्या तेवारें मातजी बोल्या हे भरत आ देवसबधि वाजा किहां वाजे छे, भरतजीयें कह्युं ए वाजा तमारा पुत्रनी आगल वाजे छे तोपण माताजीयें मान्युं नही वली आगल चालतां घणा देव अने देवीउ समवसरणनी रचना करवा अने केवलज्ञाननो महो त्सव करवा आव्या छे ते पोतपोतामां एक बीजाने हांकोहांक करी रह्या छे त सांभली वली पण मरुदेवीजीयें भरतने पुछ्युं के आ कोलाहल शानो थइ रह्यो छे तेवारें भरतराजा बोल्या हे मातजी आ तमारा पुत्रनी पूजा करवाने माटे देव देवीउ आवे जाय छे तेमनो कोलाहल थाय छे तोपण मतायें मान्यु नही वली आगल जातां भरतमहाराजायें कह्युं के हे मातजी आ रूपां, सोना अने रत्नमयी एवा त्रण गढवाळुं तमारा पुत्रनुं घर तो जुउ' एनी शोभानुं हुं शुं वर्णन करु एनु वर्णनतो क्रोडो गमे ब्रह्माउ पण करी शके नही ए वातने मातजी सत्य करी मानती थकी पोतानी आंखोने हाथथी मसलवा लागी तेथी पटल दुर थइ गया तेवारें खरे खरो समोसरण दीठो तिहां अनेक देव देवीयोने देखी मनमां विचार कर्यो के हुंउतो खरा आ मोहनी विकलता कहेवी छे हुंतो जाणती हती के महारो पुत्र दुःखी छे अने आतो घ णोज सुखमां बेठो छे हुंतो रडीरडीने आंधली थइ गइ आंखे पटल वली गया अने एणेतो मने संभारी पण नही, महारी तो कथनकथन करतां जीभ पण सुकाइ गइ हती वली भरतने

ऊठतां वेसतां हती जे महारो पुत्र भूख, तृषा, टाढ, तडका तथा वर्षाद आदिकनी पीडा खमे छे अने उपानह तथा वाहाने रहित थको एकाकी डुंगर, वन तथा अटवीओमां भ्रमण करे छे तेने मनावी लइ आवो अने एतो महारा दुःखने कांइ पण जाणतो नथी, सुखवार्त्ता पण पुछतो नथी, आहीं आव्यो तो पण मन सदेसो मोकल्यो नही माटे धिक्कार छे ए मोहने तो हवे माहारे पण पुत्रनी साथे शुं काम छे, हुं कोण अने आ पुत्र ते वली कोण, जगतमां कोइ कोइनुं नथी, सर्व कोइ आपस्वार्थि छे, अरे महारा पुत्रे मने एटलुं पण कह्युं नही जे हुं सुखीयो छुं, महारी चिंता करशो नही, परंतु ए शावास्ते एम कहे केमके एतो निरागी छे एने कोइनी उपर राग रह्यो नथी अने हुंतो सरागी छुं तेथी मनेतो एवा विकल्प थाय एमां कांइ ससय नथी तो हवे महारे पण ए निरागी साथे श्यो प्रतिबंध करवो ए एकपख्खा स्नेहने धिक्कार हो इत्यादिक चिंतवना करी सर्व वस्तु उपर ममत्वरहित थइ थकी मरुदेवीजी माता शुभध्यानें अव्यक्त भावना भावता थका केवलज्ञान पामी तेज वेलायें अंतगड केवली थइने मोक्ष पोहोता इहां कवीश्वर कहे छे ॥ यतः ॥ पुत्रो युगादीशसमो न विश्वे, भ्रांत्वा क्षितौ येन सहस्रसहस्रम् ॥ यदर्जितं केवलरत्नमग्र्य, स्नेहात्तदेवार्पित मातुरह्न ॥ १ ॥ मरुदेवीसमा नास्ति, याऽगात्पूर्वं शिवेक्षितुं ॥ मुक्तिकन्यां तनूजार्थं, शिवमार्गमपि स्फुटम् ॥२॥ अर्थ – ए श्रीयुगादिदेव सरखो पुत्र बीजो कोइ विश्वमां थयो नथी अने थाशे पण नही के जेणे पृथ्वीनेविषे एक हजार वर्ष सुधी भ्रमण करी कष्ट सहन करीने उपार्ज्युं कमाव्युं एवुं जे केवलज्ञान रूप रत्न ते प्रधान स्नेह थकी प्रथम पोतानी माताने आप्युं तेमज मरुदेवी समान कोइ माता पण थइ नथी अने थाशे पण नही केमके जे पुत्रने परणाववाने अर्थे

मुक्तिकन्या जोवाने माटे आगलथी त्यां गइ के कन्या जोइने महारा पुत्रने परणावु एम आ अ वसर्पिणीमां पहेलवेला श्रीमरुदेवीजी मोक्ष गया ॥ इन्द्रादिकें तेना शरीरनुं संस्कार करी क्षीरसमुद्रमां परठव्युं वली इन्द्रना वचनथी शोक निवर्त्तावी, वावीमांहे स्नान करी, भरत म हाराजें हर्षे शोकाकुल थका जइ भगवतने वांद्या इहांथी पहेलवेलु केवली नाम प्रवर्त्त थयुं ॥ हवे प्रथम तीर्थंकर नाम थयुं ते कहे छे ॥ भरत महाराज श्रीऋषभदेवस्वामीने नमस्कार करीने परषदामां बेठा, तेवारें भगवाने धर्मोपदेश दीधो तिहां पहेली देशनामां ऋषभसेन प्रमुख पांचसो भरतना पुत्र तथा सातसें भरतराजाना पोतरा सर्व मली बारसें कुमरोयें दीक्षा लीधी ए बारसो कुमरोमां मरिचि पण भेलो जाणवो तिहां पुंडरीकादिक चोरासी गणधरोनी थापना करी तथा ब्राह्मीयें बाहुबलने पूछीने दीक्षा लीधी ए प्रथम साध्वी थइ अने भरत महाराज श्रावक थयो तथा सुंदरी दीक्षा लेती हती तेने घणी स्वरूपवाली जाणीने स्त्रीरत्न स्थापवा सारुं भरतें दीक्षा लेवानी आज्ञा आपी नही तेवारें ते श्राविका थइ एम साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका ए चतुर्विध संघने थापीने धर्मनी प्ररूपणा करी एटले तीर्थंकर नाम थयुं ॥ जे वृक्षनी नीचे प्रभुने केवलज्ञान उपन्नुं तेनुं नाम प्रयागवड थयुं ते वृक्षनी लोकोमां पूजा चा ली हमणा पण प्रयागवड नामें करीने ते पूजाय छे तथा कछ अने महाकछ ए बे तो तापसज रह्या माटे ते बे टालीने बीजा सर्व भद्रक परिणामना धणी जे तापसो थइ गया हता तेमणे आवी फरीथी दीक्षा लीधी, भरतमहाराज वांदीने पाछा अयोध्यामां आव्या अने श्रीऋषभ देवे अनेक जीव तारवाने माटे तिहांथी अन्यत्र विहार कर्यो ॥ ॥ हवे भरतराजायें घरे आवीने चक्ररत्ननो अठाइ महोत्सव कर्यो पछी छ खंड पृथ्वी साधवाने अर्थे भरत महा

राज सैन्य लइ चाल्यो तेनी आगल हजार देवतायें अधिष्ठित चक्ररत्न चाल्युं ते जेटले दूर चक्ररत्न जइ रहे तेटला योजन सैन्य पण चाले, अनुक्रमें गंगादेवीना घरने विषे तेणे कर्युं माटे रह्या तिहां नवी नवी जांते नवा नवा वेशें गंगादेवीनी साथे विषयसुख जो गव्या पछी गंगादेवीयें मार्ग आप्यो तेवारें तामस गुफा जांगी म्लेच्छोना देश साध्या एम षट् खंड साधीने शाठ हजार वर्षे जरत पाछा अयोध्यायें आव्या वली नमी विद्याधरने घरे पुत्री स्त्रीरत्न नवुं उपन्युं ते जरतजी परण्या छे अने सुंदरीयें पण शाठ हजार वर्ष सुधी आयंबिल तप कर्युं तेथी दुर्बल थइ गइ पछी जरत जेवारें आव्या तेवारें सुंदरीयें जरतने मोतीयें वधाव्या, सुंदरीने दुर्बल देखीने लोको उपर जरत खीज्यो अने कहेवा लाग्यो के तमे एनी सार संजाल कांइ करी नहीं तेवारें लोक बोल्या एणे आयंबिल तप कर्युं तेथी दुर्बल थइ छे पछी जरत जीयें तेने संयम लेवानी आज्ञा आपी सुंदरी पण दीक्षा लइने साध्वी थइ हवे जरतराजा अयोध्यामां सुख जोगववा लाग्यो एवामां आयुधशालानो अधिष्ठायिक पुरुष आवीने जरतने कहेवा लाग्यो के स्वामी चक्र आयुधशालामां आवतुं नथी तेने जरते पूछयुं के केम नथी आवतुं? तेवारें अधिकारीयें कर्युं तमारा जाइयो तमारी आज्ञा मानता नथी तेथी नथी आवतुं तेवारें जरतें सर्व जाइउनी उपर दूत मोकलीने कहेवराव्युं के जो तमो राज्य करवानी चाहना राखता हो तो सर्वे जाइउ महारी आज्ञा मानो, सेवा करो नहींतो राजनो त्याग करो ते सांजली अठाणुं जाइयें विचार्युं जे आपणने राज्यतो पिताजीयें दीधुं छे तो जरतनी चाकरी शामाटे करीयें एम चिंतवी जगवान पासें गया तेने जगवाने अंगारा करवा वालानो दृष्टांत आप्यो, सूयगडांग सूत्रनो वैतालिक अध्ययन संजलाव्युं तेवारें

प्रतिबोध पामीने सर्व भाइये दीक्षा लीधी, भगवानना शिष्य थया, ए वात दूतें आवीने भर
तने कही तो पण चक्ररत्न आयुधशालामां आवे नही तेवारें भरतनो मुख्य मंत्रीश्वर बोल्यो
हे स्वामी? बीजा तो सर्व आपनी आज्ञा माने छे पण बाहुबली महा अहंकारनो धरनार छे ते
तमारी आज्ञा मानतो नथी, पोतानी भुजाना बलनुं पराक्रम घणुं जाणे छे माटे एने मू
ळथी उठाडी देवो जोइयें, ए महोटो रोग छे ते तमोने व्याधि उत्पन्न करे छे एवुं सांभळी भर
तराजायें सुवेग नामे दूतने सर्व वात समजावीने बाहुबलीनी पासें मोकल्यो ते दूतने जता
थका पुठे छींक थइ, वस्त्रें कांटो वळग्यो, रथनी पींजणी भांगी, जमणो रासभ बोल्यो इत्यादिक
अनेक अपशकुन मार्गमां थया तोपण ते वन, अटवी अने पाहाड प्रमुख उल्लंघन करीने
बाहुबलीना देशे पोहोच्यो तेने मार्गनी धूले भर्यो देखीने गोवालणीयो तथा पाणीहारीयोए
पुछयु के तमे कोण छो? क्यांथी आव्या अने कोण तमारो मालेक छे तेवारें दूतें कह्युं हुं भर
तराजानो दूत छुं ते सांभळी स्त्रियो बोली के भरत ते शुं जे अमारा पहेरवानी कांचळीउमां
भरत काढीयें छैयें ते भरत अथवा वासणमां भरत, किंवा रोग संबंधि भरत ए त्रण भरततो
अमे जाणीयें छैय परंतु ए त्रण विना बीजो कोइ भरत राजा छे एवुं तो अमे सांभळ्युं पण
नथी तेवार दूत आश्चर्य पाम्यो अने विचारवा लाग्यो के आ बाहुबलीनुं राज्य पण बेपर
वाइ अने जबरजस्त छे एम वातो सांभळतो विचारतो विचारतो तिक्षशिला नगरीयें गयो
तिहां दरवाजा उपर पोळीये रोंकी राख्यो जेवारें बाहुबलीनी आज्ञा आवी तेवारें गाममांहे
प्रवेश करी राज्यसभामां गयो तेने बाहुबलें आंखोनी संज्ञा करी आसन उपर बेसाड्यो अने
पुछ्यु के अरे दूत, भरतने पोताना सवाक्रोड पुत्रादिको सहित कुशल छे? दूत बोल्यो हे राजन्

लाखो गमे देवताउ जेनी चाकरीमा तत्पर रहेला छे तेने कुशल केम न होय, तेने तो कुश लज छे परंतु आप तेनी चाकरीमा आव्या नही तेथी ते सर्व वात निष्फल गणे छे माटे तमे नरत राजानी पासे पधारो अने एटला दिवस नही आव्या तेनो अपराध खमावो ते पण तमारो महोटो नाइ छे ते तमारा पितानी जगाये छे माटे तमारो गुनाह सर्व माफ करशे वली अनेक राजाउ तेनी सेवा चाकरी करे छे अने तमोने तो वली अवश्य पूजवा योग्य छेज माटे चालो एवा दूतना वचन सांनली बाहुबली ते वचनोनो परमार्थ जाणी गयो अने नृकुटी चढावी, राता लोचन करी बोलवा लाग्यो के अरे दूत तु मारवा योग्य नथी माटे तुने मारतो नथी पण न्हाना अठाणु नाइउना राज्य लइ लीधा अने वली महारुं पण राज्य लेवा वांछे छे तेथी नाइनो स्नेह तो जाणी लीधो हवे तुं तेने कहेजे के बालपणामां जेवारें आपणे बेहु रमत करता हता तेवारें हु तुजने वडानी पेठे महारा हाथमां धरतो हतो ते दिवस नूली गयो छो के शुं? ढुंतो तेनो तेज हु जे माटे हमणा चाकरी करवानुं कहे छे त शुं तारा राजाने कांइ विचार छे के नथी तेवारें दूत बोल्यो हे राजन् जो बे दिवस सुखे जीववानी तमोने वांछा होय अने कुंटुबनी साथे प्रयोजन होय तो तमे एनी सेवा नक्ति करो हु तमोने सत्य कहुं हु ते सांनली क्रोध करीने बाहुबले दूतने धक्का अपावी काहाडी मूक्यो दूत पण पाछलना बारणाथी निकली पोतानो जीव लइ नाशी गयो ते चालतो चा लतो अयोध्यायें आवीनें नरत राजानी आगल बनावी बनावीने बमणी वात कही सनलावी तेवारें नरत पण रणनेंना वजडावी चतुरंगणी सेना लइने पोते श्रीऋषन्न देवजीनी पूजा करी, गजसमाद पहेरी, हस्तिरत्न उपर बेशी चाल्यो, तेनी पछवाडे तेना सवा क्रोड पुत्र तथा

पुत्रना पुत्र जे पोतरा ते पण घणा छे वली चोराशी लाख हाथी, चोराशी लाख अश्व, चोराशी लाख रथ, छन्नु क्रोड पायक, शोल लाख रणतूर वजाडनार, दश क्रोड ध्वजा, चौद हजार महोटा मंत्रीश्वर, अढार क्रोड महोटा घोडा, पच्चाश क्रोड दीवटीआ, चोराशी लाख महोटा नीशाण, नव निधान, चौद रत्न, शोल हजार यक्ष, बत्रीश हजार मुकुटबद्ध राजा, तथा वारांगनासहित बमणी करीयें तेवारें चोशठ हजार राजकन्याउ, बत्रीश हजार नाटक, वली बीजा पण घणा विद्याधर, यक्ष, किन्नरादिक अनेक प्रकारनो परिवार चाल्यो, भरते रणपट्ट मस्तके बंधावीने सुखेणनामा सेनाधिपतिने आगल कर्यो, एवी रीते सेना लइने चढयो, अनुक्रमे बहुली देशनी सीमायें आवीने लस्करनो पडाव दीधो तेवारें बाहुबलेपण लाइ आव्यो सांभलीने श्रीऋषभदेवजीनी पूजा करी वज्रनो सन्नाह पहेरीने, सर्व जगतने तृणसमान मानतो थको भद्रनामा हस्ती उपर बेशीने, भरतनी साहमो लडवा निकल्यो तेनी पठवाडे त्रण लाख पुत्र तथा पोतरापण घणा छे तेमज बार हजार राजा तथा घणा विद्याधरो, अनेक सुभट, हाथी, घोडा, रथ, पायक प्रमुख चाल्या वली पोतानो पुत्र सिंहरथने सेनापति करीने आगल चलाव्यो ते पण जइ भरतनी सेनाने मल्यो तिहां बेहु सैन्य एकठा मलवाथी धरती धूजवा लागी, समुद्र चलायमान थयो, पर्वतना टूक पडी गयां, भरतनी सेनामां शोल लाख रणतूर वाजते तेम बाहुबलनी सेनामां पण लाखो गमे रणतूर वाजते बंदीजनो बिरुदावली बोलते बेहु तरफना सैन्यनुं मांहोमांहे युद्ध थवा लाग्युं तिहां हाथीयें हाथी, घोडे घोडा, रथें रथ, विद्याधरे विद्याधर, पाले पाला एम न्याययुद्ध थवा लाग्युं एटलामां सुखेणनामे सेनापतियें पोतानी सन्मुख सिंहरथने आवतो दीठो ते

वारें सुखेणे कयुं हुतो नरतनो चाकर छुं अने तु तो बाहुबलनो पुत्र गे तेथी तु महारो स्वामी गे माटे तु पहेला महारा उपर शस्त्र चलाव ते सांजली सिंहरथे तेना उपर शस्त्र चलाव्यु तेवारें सुखेण सेनानीये खड्ग चलाव्युं मारगमां सिंहरथना जाइ सिंहकेतुयें ते खड्गने पाडी नाख्युं तेथी सुखेणने घणो क्रोध चड्यो तेवारें ते सुखेण बाहुबलनी सेनाने विलोवीने बाहुबलनी पासें गयो एवामां अनिलवेग विद्याधर आवी बाहुबलने नमस्कार करीने सुखेणनी सन्मुख लडवा आव्यो ते बेहु जण मल्लनी पेठे नीच्या अरस्परस मूठीउनुं युद्ध कर्युं, लागीयो मारवानुं युद्ध कर्युं ते वखत सुखेण खड्ग लइने सिंहरथने मारवा जाय ठे एवामां तो सूर्य अस्त थयो तो एमना संग्राममां एवी मर्यादा ठे जे कोइ पण श्रीऋषजदेवजीनी आण आपे तो लडवुं नही, बीजी सूर्य अस्त थयो पठी लडवु नही, त्रीजी मेघ वरसतो होय तेवारें ल डवु नही, तेमाटे जे सांज पड्यानी अगाउ मरीगया तेनो तो कोइ उपाय नही परंतु जे अर्द्ध मरेला होय तेमने कांगणीरत्नना जलेकरी नरत पोतानी सेन्याना माणसोने साजा करे अने बाहुबली तो सोमयशना कवचना आनरणोना जलथी साजा करे एवी मर्यादा करी ठे हवें फरी बीजा दिवसनी प्रनाते युद्ध थवा मांड्युं तेवारें सुखेण सेनानी अनिलवेगने वे खीने अग्निनी पेरे बलवा लाग्यो अने अनिलवेगने मारवा आव्यो एटलामां सिंहरथ वचमां आवी आडो पड्यो अने सुखेणने साहामो लडवा ऊनो रह्यो तेवारें अनिलवेग नरत राजानी सर्व सेन्याने उल्लंघन करी जिहां हाथीउना त्रण कोट बनावीने नरतराजा सूतो ठे तिहां आवीने हाथीउने कांकरानी पेठें उगाली महाविकराल रूप करीने सैन्यनुं मथन करतो करतो नरतनी पासें आव्यो नरते जाण्युं जे आ दुर्द्धर विद्याधर ठे ते महारी छुरत



आवी और
राजानी सर्व सैन्याने
कांकरानी पे

सारु एम चिंतवी तेना उपर चक्र मूक्युं ते चक्रने देखी
... जद्दां जाय तिद्दां चक्र पाछलनुं पाछल चाल्युं आवे तेवारें अनिलवेग
वज्रपिंजर करीने छ मद्दिना सुधी लवण समुद्रमा पेशी रह्यो पण चक्र माथे नमतुंज रह्युं छ
मद्दीना पछी समुद्रमांथी गाभडी बाहेर काढाडी तेवारें चक्रें ते गाभडीने कापी नाखी हवे
सूर्ययश बाहुबलीनुं कटक उलंघीने बाहुबल पासें आव्यो अने कहेवा लाग्यो के मने शस्त्र
मारो तेवारें बाहुबली हसीने बोल्यो अरे तुं इक्ष्वाकुवंशमां नलो सूर वीर छो पण हुं जो तु
जने एक मुठी मात्र मारीश तोपण तुं चूर्ण थइ जइश माटे जा दूर उनो रहे पछी तेने देव
तायें कह्युं के अरे मूर्खा बाहुबली साथे तुं शुं लडवा आव्यो छो नाहकनो मारयो जइश माटे
अमे तने वर्जीय छैयें के तुं चाल्यो जा तेवारें ते जतो रह्यो एवीरीते बारवर्ष पर्यंत युद्ध चाल्युं,
क्रोडो गमे माणसो मरी गया, लोहीनी नदीउ वहेवा लागी पण कोइ हार्यो नहीं तेवारें
घणो अनर्थ थतो देखी सौधर्मेंद्र अने चमरेंद्र ए बे इंद्र भरतनी पासे आवी कहेवा लाग्या
के भगवान तो लोकोनुं पालण पोषण करी गया अने तमे माणसोनो नाश करावो छो ए शुं?
भरत कहेवा लाग्यो जे बाहुबली मद्दारी आज्ञा मानतो नथी तिहां सुधी चक्र आयुधशालामां
आवतु नथी तो हवे कहो हुं शुं करुं? ते सांभली इंद्र बोल्या तमे बे भाइउ पोतपोतामां युद्ध
करो पण बीजा माणसोनो नाश म करावो ए वात भरते कबुल करी पछी ते बेहु इंद्र बाहु
बली पासें आव्या अनें कहेवा लाग्या के आ प्रमाणे युद्धमां लोकोनो नाश थइ जाय
छे ते करावो नही अने तमे बे भाइउज पोत पोतामां युद्ध करो बाहुबलीयें पण ते वात
मान्य करी पछी इंद्रे मलीने एक दृष्टियुद्ध, बीजुं वाक्युद्ध, त्रीजुं बाहुयुद्ध, चोथुं मुष्टियुद्ध,

अने पांचमुं दंडयुद्ध ए पांच युद्ध करवानो ठेराव कर्यो अने बेहु इंडे बन्ने लस्करोने श्रीआ
दिनाथजीनी दुवा आपीने दूर कर्या पछी पाणी छटकावी, फूल बिछावी, भूमि शुद्ध करीने
मुकुट, टोप, सन्नाह पहेरी करी बेहु भाइ सामासामा लडवाने आव्या ते युद्धने देवता आ
काशमां साक्षीधर रह्या थका देखे छे हवे प्रथम भरत अने बाहुबली बे भाइ आंखो काढा
ढीने एक बीजानी सन्मुख जोया, आंख मिटावे नही, मांहोमांहे एक बीजाने देखताज
रहे, महासूर वीर छे तो पण क्षणमात्र रह्या तेवारें जेम सूर्यनी सामो देखवाथी आंखमां
पाणी आवी जाय तेम भरत राजानी आंखोमां पाणी आवी गयुं ते जोइ देवता फूलोनो
वरसाद वरसावीने बोल्या के बाहुबली जीत्यो अने भरत हार्यो ए प्रथम युद्ध ॥ पछी भरतें
सिंहनाद कर्यो तेथी पर्वत कंपायमान थया अने बाहुबलीयें हाक मारी तेवारें ब्रह्मांड फू
टवा जेवो शब्द थयो तेथी भरतें पोताना कान ढांकी लीधा ते जोइ देवता बोल्या के बाहुबल
जीत्यो अने भरत हार्यो ए बीजुं युद्ध ॥ तेवार पछी बाहुयुद्धमां प्रथम भरत राजायें हाथ
लांबो कर्यो तेने बाहुबलीयें कमलनालनी पेरे वाल्यो अने बाहुबलीयें पोतानो बाह लांबो
कर्यो तेने भरत वालवा गयो पण लगार मात्र चसक्यो नही हिंडोलानी पेरे भरत लटकी
रह्यो ते देखी देवो बोल्या एमां पण बाहुबली जीत्यो अने भरत हार्यो ए त्रीजुं युद्ध ॥ ते
पछी मुष्टीयुद्ध करवा लाग्या तेवारें प्रथम तो बन्ने भाइ मल्लोनी पेठे भुजास्फोट करता
मल्या पछी भरते बाहुबलीने मुष्टी मारी तेथी बाहुबली थोडीशी वार आंखो मीची रह्यो
पछी भरतने दडानी पेरे उपाडीने आकाशमां उछाली दीधो परंतु फरी अनुकंपा आणीने
पाछो पोताना हाथमां पकडी करीने एक मुठी मारी तेथी भरत जमीनमां पेसी गयो ते

जोइ देवता बोल्या के एमां पण बाहुबली जीत्यो अने जरत हारी गयो ए चोथुं युद्ध ॥ पछी पांचमुं दंमयुद्ध करवा मांम्यो तिहां प्रथम तो जरत महाराजे लोहदंम लइने बाहुबलने मार्यो तेथी बाहुबलीनो मुकुट माटीनां घटनी पेरे चूरण थइ गयो अने बाहुबली गूमण सुधी जमीनमा पेसी गयो पछी जमीनमांथी बाहेर नीकलीने बाहुबलीयें लोहदंम मार्यो तेथी जरतनो मुकुट चूर्ण थइ गयो अने जरत महाराजनुं सपूर्ण सर्व शरीर धरतीमां पेसी गयुं ते जोइने देवता बोल्या जे आ युद्धमां पण बाहुबली जीत्यो अने जरत हारी गयो ए पांचमुं युद्ध ॥ एम पांचे युद्ध जरत हारी गयो तेवारें चितातुर थयो थको विचार करवा लाग्यो जे महारुं राज्य ए लइ लेशे आ ते वली कोइ बीजो चक्रवर्ति थयो छे के शुं? एवुं चितवीने पछी चक्रने पोताना हाथमां लइ जमाडीने पोतानी करेली प्रतिज्ञानो नंग करी बाहुबली उपर ते चक्र मूक्युं पण पोताना गोत्रमां चक्र चाले नही तेथी ते चक्र आवी बाहुबलीने त्रण प्रदक्षिणा आपीने पाछो जइ जरतना हाथमां आवी बेठो एवी रीते जरतें जेवारें प्रतिज्ञानो नंग कर्यो तेवारें बाहुबलने अत्यंत क्रोध चढी गयो तेणे करी जरतनी उपर मुष्टी उपाडीने मारवा चाल्यो तेवारें देवता बोल्या विचार करो ते सांजली बाहुबलीयें जाण्युं जे धिक्कार छे आ राजने के जेना लीधे महोटा जाइने पण मारवानो विचार थयो एवी रीते वैराग्य पामीने बाहुबले पोते जरतने मारवा माटे जे मुठी वाली हती ते महोटा पुरुषनी मुठी पाछी फरे नही माटे संवेग आव्यो तेवारें ते मुठीयें जरतने मारवुं मूकी दइने पोताना मस्तके लोच करी दीक्षा लइने विचरवा लाग्यो तेवारें देवतायें फूलनो वर्षाद वरसाव्यो, जरतराजा विलाप करवा लाग्यो के महारा सर्व जाइ दीक्षा लइने जता रह्या पछी बाहुब

लीना पुत्र सोमयशने तिक्षशिला नगरीनुं राज्य आपी जरत राजा अयोध्या नगरीमा आव्या हवे आगल जता बाहुबली साधुयें विचार्युं जे महारा न्हाना अठाणु जाइउए प्रथम श्री ऋषज्ञ देवजीनी पासेथी दीक्षा लीधेली ठे ते केवली थया ठे माटे हमणा हुं जगवानना समवसरणमा जईश तो न्हाना जाइउने वंदना करवी पडशे माटे हुं अहींआज काउसग्गें रही केवलज्ञान प्राप्त करीने पठी प्रजुपासें जइश एवुं चिंतवी मनमा अजिमान धारण करीने तिहांज काउसग्गें रह्या थका एक वर्ष वीती गयुं मस्तक उपर वेलीउ वींटाइ गइ तेने प्रतिबोधवा माटे श्रीऋषजदेव स्वामीयें ब्राह्मी अने सुंदरी ए बे साध्वीउने मोकली ते तिहां आवीने बाहुबलीजीने कहेवा लागीउ के हे वीरा हे जाइ तमे गज उपरथी नीचे उतरो हस्ती उपर आरुढ थयाथी केवलज्ञान उपजे नही एटलुं तेमनुं बोलवुं सांजलतांज जाणी गयो के आ साध्वीयो केवारें जुतुं बोले नही माटे हाथीतो महारी पासे नथी परंतु अहंकार रूप हाथीनी उपर हुं चडेलो छुं एम विचारी माननो त्याग करी तिहांथी पग उपाड्यु के तरतज केवलज्ञान पण उपन्युं अने प्रजुना समवसरणमां जइ केवलीनी परषदामां विराज्यो ए जरत बाहुबलनो संबंध कह्यो ॥ ॥ हवे एक दिवसें जगवान अष्टापद पर्वत उपर समोसर्या तेवारें जरतमहाराजायें विचार्युं जे वीजुं तो महाराथी काइ थतुं नथी पण आ सर्व साधुउने आहार वहोराबुं तो लाज पामुं एवुं जाणी पांचसें गाडा सुखडीना जरी लाव्यो अने जगवानने कहेवा लाग्यो स्वामीजी आजना दिवसे आ सर्व साधुउने आहार कराववानुं हुकुम महारे घेर थइ जाय तो घणोज रुडुं थाय तेवारें जगवानें कह्युं आधाकर्मिक राज्यपिंड साधुउने लेवुं कल्पे नही, वली सन्मुख आहार लइ आव्यो ते माटे साधुयें लीधो नही एवुं जो


चित्र ७५
बाहुबल मुनि
ब्राह्मी साध्वी
सुंदरी साध्वी

नरत राजायें जाण्युं जे ञुतो सर्व प्रकारे नक्तिरहित थयो एम शोच करवा लाग्यो ते जोइ इन्द्रमहाराजे नगवानने पुछ्युं के हे प्रञु ! अवग्रह केटला प्रकारना छे ? नगवान बोल्या पांच अवग्रह छे तेमां एक इंद्रनो अवग्रह, बीजो राजेंद्रनो अवग्रह, त्रीजो ग्रहपतिनो अवग्रह, चोथो सागारिकनो अवग्रह अने पांचमो साधर्मिकनो अवग्रह ए पांच अवग्रह जाणवा ते सांजली इन्द्र बोल्या हुं तो आपना सर्व साधुउने महारा सर्व क्षेत्रमां सुखें विचरवानी आज्ञा आपु छु तेवारें नरत महाराज बोल्यो के महारा छ खंम पृथ्वीमां हु पण आपना सर्व साधु उने विचरवानी आज्ञा आपु छुं एम कहेवाथी नरतने घणो संतोष थयो वली नरतें इन्द्रने पुछ्युं के आ आहारनुं हवे शुं करवु तेवारें इन्द्रे कह्युं ताहाराथी अधिक गुणवान होय तेने ए आहार जमाडो पछी नरतें पण ते आहार श्रावकोने जमाड्यो त्यांथी ब्रह्मनोजन चालुं थयुं ॥ हवे नरतराजा सदा सर्वदा श्रावकोने जमाडे छे केटला एक काल पछी जेवारें घणा जमनारा थया तेवारें परीक्षा करीने सर्वने सेजाणीनां कांगणी रत्ननी जनोइ आपी तथा देव, गुरु अने धर्म रूप त्रण तत्वसबधी त्रण रेखा प्रत्येक श्रावकने करी तिहांथी जनोइ आपवानी चाल पडी त्यां श्रीऋषनदेवस्तुतिना चार वेद थया ॥ एकदा नरत राजायें इन्द्रमहाराजने पुछ्युं के तमारु खरेखरु रूप केहेवुं छे ? तेवारें इन्द्रे एक अंगुली बतावी ते महाज्वाला मालाकुल देखीने नरत चमत्कार पाम्यो तिहांथी वर्षोवर्ष इन्द्रमहोत्सव चालु थयो ॥ हवे एक दिवसे नगवंत विहार करतां विनीतायें आव्या नरत वांदवा आव्यो, प्रञुयें देशना आपी संसारनुं अनित्यपणु देखाड्युं, जीव कर्मने नारे करी तुंबडाने दृष्टांते ससारमां बूडे छे, जेम तुंबडाने माटी चोपडी पाणीमा मूकीयें तो हेठु बेसे, तेम आठ कर्मे करी जीव

जारी थयो थको देवो थेसे छे, एवी जगवाननी वाणी सांजली जरत मनमा वैराग्य पाम्यो,
ज्ञान दशामां लय लीन थयो एम अनुक्रमे एकदा जरतराजा आरीशा जवनमां बेठा थका
अनित्य जावना जावता केवल ज्ञान पामी, मोक्षे पहोता छे पछी तेमने पाटे आदित्ययशा
राजा थया तेणे सोनानी जनोइ करीने एमज श्रावक जमाड्या, तेने पाटे महायशा राजा
थया तेणे रूपानी जनोइ करीने श्रावक जमाड्या एम आठ पाट लगें श्रावक जमाड्या छे
तेमां केटलाएक राजायें सूत्रनी जनोइ करी जमाड्या छे, पछी ते जनोइना पहेरनार सर्व ब्रा
ह्मण कहेवाणा जरतने पाटे आदित्ययशा, तेने पाटे महायशा, तेने पाटे अतिबल, तेने
पाटे बलजड, तेने पाटे बलवीर्य, तेने पाटे कीर्तिवीर्य, तेने पाटे जलवीर्य, तेने पाटे दंमवीर्य,
ए आठे राजायें जगवतनो मुकुट पहेर्यो अने ए आठे राजा आरीशा चुवनमां केवली थइ
मोक्षे गया छे जगवान श्रीरूषज देवजी एक लाख पूर्व पर्यंत विचरीने घणा जीवोने
प्रतिबोध्या ॥ हवे श्रीरूषजदेव स्वामीना परिवारनुं वर्णन सूत्रकार करे छे ॥ श्रीरूषजनाथजीने
रूषजसेन आदि देइने चोराशी गणधर थया, चोराशी गछ थया ॥ २१४ ॥ ॥ तथा रूषज
सेन प्रमुख चोराशी हजार साधुउनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१५ ॥ ॥ तथा ब्राह्मी अने
सुंदरी आदे देइने त्रण लाख साधवीउनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१६ ॥ ॥ तथा श्रेयांस
आदे देइने त्रण लाखने पांच हजार श्रावकोनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१७ ॥ ॥ तथा
सुजद्रा आदे देइने पाच लाखने चोपन हजार श्राविकाउनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१८ ॥
तथा चार हजार सातशेने पच्चास चौद पूर्वधर ते केवली नही पण केवली सरखा साधुउनी
उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१९ ॥ ॥ तथा श्रीरूषजनाथ अरिहंतने नव हजार अवधिज्ञानीनी

संपवा थइ तथा वीश हजार केवल ज्ञानीनी उत्कृष्टी संपवा थइ ॥ २२० ॥ ॥ तथा वीश हजारने छशो वैक्रिय लब्धिवत साधुउनी उत्कृष्टी सपवा थइ ॥ २२१ ॥ ॥ तथा बार हजार छशोने पच्चाश अढीद्वीपमां सज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ताजीवोना मनना परिणामने जाणे एवा विपुल मति, मन पर्यवज्ञानना धरनार साधुउनी उत्कृष्टी सपदा थइ ॥ २२२ ॥ ॥ तथा तेट लाज वादी जाणवा एटले बार हजार छशोने पच्चाश वादी साधुउनी संपदा थइ ॥ २२३ ॥ तथा वीश हजार साधु सिद्ध थया चालीश हजार साध्वी सिद्ध थइ ॥ २२४ ॥ ॥ श्रीऋष जनाथ अरिहंत कोशलिकनें बावीश हजारने नवशो साधुउ अनुत्तर विमाने गया, एकाव तारी थया ॥ २२५ ॥ ॥ श्रीऋषजदेव अरिहंतने बे प्रकारे अतगड जूमि थइ तिहां यावत् असंख्याता पाटलगे केवलज्ञान चाल्यो, मोक्षमार्ग वह्यो, ते युगंतकृत जूमि कहेवाय अने जग वानने केवलज्ञान उपन्या पछी अतर मुहूर्त काल वीते कोइ मोक्ष गयो एटले अंतर मुहूर्त पछी मरुदेवी माता मोक्ष गया ते पर्यायांतकृत जूमि कहेवाय ॥२२६॥ ॥ ते कालनेविषे, ते समयनेविषे, श्रीऋषजनाथ अरिहंत वीश लाख पूर्व सुधी कुमार पणे रह्या अने त्रेशठ लाख पूर्व राज्यावस्थामां रह्या एवी रीतें त्र्यासी लाख पूर्व घरवासे रह्या, सीतेर लाख क्रोडवर्षनी उपर वली बीजा छपन्न हजार क्रोड वर्ष वीते तेवारें एक पूर्व थाय एवा त्र्यासी लाख पूर्व घर वासें रहीने पछी एक हजार वर्ष छद्मस्थपणे रह्या तथा एक हजार वर्ष उणा एक लाख पूर्व के वल पर्याय पालीने सपूर्ण एक लाख पूर्व साधुपणु पालीने जवोपग्राही चार कर्मनो क्षय करी आ अवसर्पिणीनो सुखमदुःखमा नामा त्रीजो आरो ते घणो वीती गयो बाकी त्रणवर्ष ने साडा आठ महिना शेष रह्या तेवारें सीतकालनो त्रीजो महिनो, पांचमुं परववाडियुं, माघवदि ॥

॥ ग्रथाग्रंथ॥ ५००॥ तेरसने दिवसें अष्टापद पर्वतनी उपर दशहजार साधुउनी साथें चौद जक्त
एटले ठ उपवास पाणी रहित कीधे थके, अजीचनक्त्रें चन्द्रमानो योग आवे थके, प्रथम पहो
रनी पठी बपोरनी वखते, पालखी वाळेला आसने बेठा थका, कालगत थया यावत् सर्व
डु:ख थकी रहित थया ॥ २२७ ॥ ॥ ते अवसरमां शक्रेंइनुं आसन चलायमान थयुं तेवारें
आंखोमां आंसु जराणा एवो थको इहां आव्यो, आवीने जगवानने त्रण प्रदक्षिणा आपी,
नमस्कार करी, योग्यस्थानके बेठो, बीजा पण सर्व इन्डो आवीने बेठा पठी शक्रेंइें देवोने
मोकली नंदनवनमांथी चंदन मगाव्युं तेनी त्रण चय बनावी तेमां एक जगवानना शरीरने
माटे, बीजी गणधरोना शरीरने माटे अने त्रीजी सर्व साधुउना शरीरने माटे बनावी वली
आजियोगिक देवोनी पासे खीरसमुद्रनुं पाणी मगावी शक्रेंइें जगवानना शरीरने स्नान करा
व्युं, सर्व वस्त्र घरेणा प्रमुख पहेराव्यां पठी त्रण पालखी करी तिहां एक पालखीमां जगवा
ननुं शरीर, एकमां गणधरोनुं शरीर अने एकमां मुनिउनां शरीरने मूकी छुंढ जूमियें लइ
जइने चितानी पासे पालखीउ राखी तेमां शक्रेंइें जगवानना शरीरने पालखीमांथी ल
इने चितामां मूक्युं तथा अन्य देवोये बीजा गणधरादिकना शरीरने पालखीमांथी उता
रीनें चितामां मूक्या तथा शक्रेंइना हुकमथी अग्निकुमार देवो मनमांहे उदास थया थका
चितामां अग्नि सलगाववा लाग्या, तथा वायुकुमार देवोपण उदास थया थका वायु चला
ववा लाग्या, वली बीजा देवो चितामां घृत प्रमुखने सींचवा लाग्या पठी जेवारें मात्र हाडकाज
शेष रहे अने बीजो शरीरनो जाग सर्व बलीने जस्म थइ जाय तेवारें मेघकुमार देवो वर्षाद
वरसावीने चिताने बुजावी नाखे, पठी शक्रेंद्र जगवाननी उपरली जमणी दाढनी दाढा



चित्र ७६
पर्वतन फरती
देवता निर्वाण
साधुओनी साथे प्रभुनिर्वाण पाम्या
अष्टपद पर्वत

लीये अने ईशानेंद्र उपरली डाबी बाजुनी दाढा लीये तथा चमरेंद्र नीचली जमणी बाजुनी दाढा लीये अने बलेंद्र नीचेनी डाबी बाजुनी दाढा लीये तथा बीजा देवता जे छे तेमांथी केटलाएकतो जिनभक्तिना वश थकी, केटलाएकतो आपणु आचार छे एवुं मानीने, केटलाएक तो धर्ममानीने परमेश्वरना अंगोपांगना सर्व हाडका लइ लीये पछी शक्रेंद्र जे स्थानके दाग देवाणो होय ते स्थानके रत्नोनां त्रण पीठ बनावे एटलुं करीने सर्व देवो नंदीश्वरद्वीपने विषे जइ अट्ठाइ महोत्सव करीने पोतपोताने स्थानकें जाय तिहां जइने दाढा प्रमुख जे लइ आव्या होय ते पोतपोतानी सभानेविषे वज्रमयी डाबलामां जइ राखे, तेने गंधमाला दिकथी पूजे, धूप दीये, ए प्रकारनो निर्वाण महोत्सव सर्व तीर्थंकरोनो जाणी लेवो ॥ इति श्रीऋषभनिर्वाणमहोत्सव ॥ ॥ श्रीऋषभदेव स्वामी मोक्ष गया पछी पचाश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीअजितनाथ मोक्ष गया, श्रीऋषभदेव अरिहंत मोक्ष गया पछी त्रण वर्षने साडा आठ महिना त्रीजो आरो शेष रह्यो हतो ते पण वीती गयो पछी त्रणवर्षने साडाआठ महिना तथा उपर बेतालीश हजार वर्ष एटले वर्षे ऊणा एक कोडाकोडी सागरोपम गया नतर श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया एटले ते वखतें त्रणवर्षने साडाआठ महिना तो चोथा आराना बाकी रह्या हता अने पांचमां आराना एकवीश हजार वर्ष तथा छठा आराना एकवीश हजार वर्ष एम बे आराना मली बेंतालीश हजार वर्ष ते एक कोडाकोडी सागरोपममां ऊछा थयां तेमाटे बेतालीश हजारने त्रणवर्ष उपर साडाआठ महिने न्यून एवो एक कोडाकोडी सागरोपम काल चोथा आरानुं गये थके महावीर मोक्ष पोहोता अने ते पछी नवसेंने एंसी वर्ष गया तेवारें आ पुस्तक देवर्द्धीगणिक्षमाश्रमणे लख्यो अने नवसेंने त्र्याणु वर्षे सभामां वचाणु

एवु पयोएक लखे ले ॥२१८॥ ॥ इहां ॥ पुरिमचरिमाणकप्पो० ॥ ए गाथा मगलिकने अर्थे कहेरी इति श्रीकल्पसूत्रे बालछुबोधिन्यां अष्टम व्याख्यानम् कृत राजेंद्रसूरिणा ॥ ८ ॥ ॥ अथ श्रीस्थविरावली प्रारंन ॥ ते काजमां ते समयमां नगवान श्रीमहावीरस्वामीना नवगछ अने अगीआर गणधर थया ॥ २४ ॥ ॥ इहां शिष्य प्रश्न करे ले के हे गुरु महाराज ! मर्यादातो एवी ले के जेटला गणधर होय तेटलाज गछ पण होवा जोइयें परंतु आपतो नव गछ अने अगीआर गणधर फरमावो लो तेनु कारण शुं एवो शिष्यनो प्रश्न सांनलीने ॥२५॥ गुरु कहे ले के श्रीमहावीरस्वामीना महोटा शिष्य इन्द्रनूति नामा अणगार थया ते गोतमगोत्रीया हता अने पांचसें साधुउंने वाचना आपता माटे तेनो एक गछ ॥ एटले जेनी वाचना एक होय तेने गछ कहीयें इहां कोइ शका करे के वाचनामां फेर होय तो शुं केवलीना कहेवामां फेर फार ले ? तेने उत्तर कहीये लैयें जे केवलीना कहेवामां फेर नथी परंतु केवलीना वचन सांनलीने ते वचनोनां गणधरो सूत्रो बांधे ले गुथे ले तेनी रचनाना शब्दोमां फेर ले पण वातोमां फेर नथी मात्र शब्द अनेक प्रकारना ले तेमां रचना करती वखते एक गणधर एक जातिना शब्दथी गुंथे ले तो वली बीजो गणधर वीजी जातना शब्दोथी गुथे ले तेने लीधे रचनाना शब्दोमां फेर फार होय ले इति प्रथम गछ ॥ १ ॥ ॥ हवे बीजो वचलो नाइ शिष्य अग्निनूति अणगार ले तेनुं गौतम गोत्र ले अने पांचसे साधुउंने वाचना आपे ले ते बीजो गछ ॥२॥ ॥ त्रीजो न्हानो नाइ वायुनूति नामे शिष्य ले तेपण गौतम गोत्रनो ले ते पांचसे साधुउंने वाचना आपे ले ए त्रीजो गछ ॥ ३ ॥ ॥ ए त्रणे गृहस्थपणामा सगा नाइउ ले चोथा थविर आर्यव्यक्त नामा नारद्वायण गोत्रीया ते पांचसे साधुउंने वाचना

आपे छे ए चोथो गछ ॥ ४ ॥ ॥ पांचमा थविर आर्यसुधर्म नामा अग्निवेसायन गोत्रीया छे ते पांचसे साधुउंने वाचना आपे छे ए पांचमो गछ ॥ ५ ॥ ॥ छठा थविर मन्डित पुत्र वासिष्ट गोत्रीया छे ते साडा त्रणसें साधुउंने वाचना आपे छे ए छठो गछ ॥६॥ ॥ सातमा थविर मोर्यपुत्र काश्यप गोत्रीया छे ते साडा त्रणसें साधुउंने वाचना आपे छे ए सातमो गछ ॥ ७ ॥ ॥ आठमा थविर अकंपित गौतम गोत्रीया छे तथा नवमा थविर अचलभ्राता हारितायन गोत्रीया छे ए बेहु थविर त्रण त्रणसो शिष्योने वाचना आपे छे ए बेहु गणधरोनी वाचना एक छे तेमाटे एनो एक गछ गणीयें ए बन्ने गणधर भाइउ छे परंतु तेनी माता एक छे अने पिता बे छे तेथी एमनां गोत्र जुदां जुदा कह्यां छे आगल ब्राह्मणोमां बीजो भरतार करवानी चाल हती माटे बे भरतार कस्या कह्या छे ए आठमो गछ ॥ ८ ॥ दशमा थविर मेतार्य अने अगीआरमा थविर प्रभास ए बन्ने कौंडिन्य गोत्रीया भाइ छे ते त्रण त्रणसे साधुउंने वाचना आपे छे ए बेहुनी वाचना एकज छे माटे एकज गछ कहेवाय ए नवमो गछ ए रीते हे शिष्य ! अमे श्रीमहावीरना अगीआर गणधरना नव गछ कहीये छैयें ए अगीआरे गणधर द्वादशांगीना धरवावाला, चौद पूर्वधारी, सपूर्ण आचार्य रत्नकरंमीयाना धारक एटले द्वादश अंगरूप रत्नो करंमीयो तेना धरवावाला, ए अगीआरे गणधर राजग्रही नगरीमां एक मासी अनशन पाणी रहित करीने कालगत थया, मोक्ष पाम्या, सर्व दुःखथी रहित थया तेमां नव गणधर तो श्रीमहावीर स्वामी विद्यमान छतांज मोक्ष गया अने थविर इन्द्रभूति तथा थविर आर्यसुधर्म ए बे गणधरोये तो श्रीमहावीर भगवान मोक्ष गया पछी काल कस्यो छे, मोक्षे गया छे तथा बीजा सर्व गणधरोना तो शिष्योपण

काल करी गया हता कोइ पण शेष रह्यो हतो नही माटे जे कांइ हमणा वर्तमान समये साधुर्ज विचरे छे ते सर्व सुधर्म गछना छे बाकी कोइ गछना नथी बीजा सर्व गणधरोना शिष्यो जे हता ते विछेद गया छे तेथी एक सुधर्म गछज रह्यो ॥ २५ ॥ ॥ हवे पट्टावली लखीयें छैयें श्रीमहावीर स्वामी काश्यप गोत्री हता तेमना पाटे श्रीसुधर्म स्वामी पाचमा गणधर थया तेमनुं अग्निवेश्यायन गोत्र हतु तेनो संबंध आ प्रमाणे छे कुल्लाग सन्निवेस नामा नगरमां धम्मिल्ल नामा ब्राह्मण रहेतो हतो तेनी भद्दिला नामे भार्याना पुत्र सुधर्म नामे थया ते चौद विद्याना निधान, चार वेदना पारंगामी, पच्चाश वर्ष घरवासे रह्या पछी महावीरनी पासेथी दीक्षा लीधी, पांचमा गणधर थया, त्रीश वर्ष पर्यंत तो महावीरस्वामीना चरणकमल सेवता रह्या, अने श्रीमहावीर निर्वाण पाम्या पछी बार वर्ष पर्यंत छद्मस्थपणे विचर्या तथा आठ वर्ष केवली पणे विचर्या सर्व मली एकशो वर्षनुं आयुष्य पालीने मोक्ष गया ॥ १ ॥ ॥ तेवार पछी श्रीसुधर्म स्वामीना पाट उपर श्रीजंबुस्वामी थया तेमनु काश्यपगोत्र हतु तेनो संबंध आ रीते छे के एकदा श्रीमहावीरस्वामी राजगृही नगरीयें समोसर्या तिहां एक महोटो तेजवंत देवता पोतानी चार अग्रमहीषीयो सहित तथा बीजा पण घणा देव अने देवीयोना परिवारे परवर्यो थको भगवानने वांदवा आव्यो तेवारें श्रेणिक राजायें भगवानने पुछ्युं जे हे स्वामी महाराज आ देवतानी बीजा घणा देवोथी अधिक कांति केम थयेली छे तेवारें भगवाने कह्यु के आ देवतायें पूर्व भवने विषे दश वर्ष पर्यंत नित्य तप कर्यु छे तेना प्रभावथी ए पाचमा ब्रह्मदेव लोकनेविषे तिर्यक् जृंभकनी जातिमा महर्द्धिक देवता थयो छे वली पण ए देवता आजथी सातमे दिवसे देवलोकथी चवीने राजगृही नगरीमां

ऋषनदत्त शेठनी धारणी नामे जार्यानी कूखमा पुत्रपणे आवीने उपजशे पठी एनो जन्मम होत्सव करीने एनी माता स्वप्नमां जंबुवृक्ष देखशे तेथी एनुं जंबु एवु नाम आपशे अनुक्रमे युवान अवस्था पामशे तेवारें सुधर्म गणधरनी पासेथी धर्मदेशना सान्जलीने वैराग्य पामशे तेवारें कहेशे के हुं चारित्र लइश पण म्हारा मातापिताने पूठी आवुं एम कही पाठो घर तरफ जाय ठे एटले मार्गमां आवतां जंत्रथी उपडेलो पथ्थर, पोतानी पासेथी निकल्यो देखीने विचारवा लागशे के हमणा जो मने आ तोपनो गोलो लागी जात तो हुं अव्रतिपणामां मरण पामत, एवु जाणी सुधर्मनी पासे पाठो आवीने एकवारतो समकेत मूल जे बार व्रत ठे ते धारे व्रत लेशे तेमां चोथा व्रतमां एटली मर्यादा राखशे के, कदापि मातापितना कहेवाथी स्त्रीयो परणवी पडे तो तेने परणु पण ते स्त्रीयोनी साथें जोग जोगवुं नही एवो त्याग करी फरी घरें आवी माता पिताने कहेशे के मने आज्ञा आपो हुं श्रीसुधर्म स्वामी पासेथी दीक्षा लेउ ? माता पिता कहेशे के हे पुत्र ! दीक्षा पालवी घणी डुष्कर ठे एवी रीते घणो घणो समजावशे तोपण ए मानशे नही तेवारें मातापिता कहेशे के हे पुत्र ! आठ पुत्रीयो साथे ताहारुं सगपण करेलुं ठे माटे तेने परणीने पठी दीक्षा लेजे ते सांजली जंबुकुमर मौनपणु धारण करी रहेशे मातापिता आठ शेठीयाने कहेशे के अमारो पुत्र वैराग्यवान् थयो ठे माटे तमारे दीकरीयो परणाववानी मरजी होय तो जले परणावो पण ते कन्याउनो त्याग करीने जो दीक्षा लेशे तो अमारो दोष कहाडशो नही ते सांजली सर्व शेठीया कहेवा लागशे के अमे नही परणावीशुं पण ते शेठियाउनी दीकरीयो कहेशे जे अमेतो जंबुकुमरनेंज परणीशुं बीजाने परणवानो त्याग ठे तेवारें शेठिया

पोतानी पुत्रीयोने कहेशे के एतो दीक्षा लेशे तोपण दीकरीयो कहेशे के ए दीक्षा लीये तो नले त्यो पण अमेतो एनेज परणीशुं पछी ते एक रात्रीमां आठे कन्या परणशे अने रात्रियें शय्या उपर बेसीने सर्व कन्याउने कहेशे के हुंतो दीक्षा लइश केमके आ संसार सर्व अनित्य छे, कोइ कोइनें सार्थे आवनार नथी, तेवारें स्त्रीयो कहेशे के हे स्वामी ! तमे ह मणा दीक्षा लियो नही, हमणातो जे ससारनुं सुख मळ्युं छे ते सारी रीतें नोगवीने पछी दीक्षा लेजो, नहीतो करसणीना न्यायें पश्चात्ताप करशो जेम कोइ मारवाड देशनो करसणी पोताने घेर गहुं वावीने पछी मेवाडमां पोतानें सासरे गयो तिहां तेनी सासुयें सारा रोटला करीने थालमां मूक्या उपरथी काकब मूकी ते काकब करसणीने घणी सारी स्वादिष्ठ लागी पछी जेवारें शालाने पुछयुं के आ काकब तमोने किहांथी आवी ? तेवारें शालायें कह्यु के ए अमारा घरमा नीपजे छे बनेवीयें पुछ्यु केवी रीतें नीपजे छे ! तेवारें शालाये शेलडी वाववानो विधि देखाड्यो पछी करसणीयें जाण्युं जे महारे घेर पण ए हुं वावीश एम निर्धार करी घेर आ वीने प्रथम जे गहुंनुं खेत्र वाव्युं हतुं तेने उखेडी नाखवा लाग्यो तेवारें लोकोये कह्युं के आ तुं शुं करे छे ? तेणे कह्युं के हुं एमा शेलडी वावीश लोको कहेवा लाग्या के आ देशमां पाणी नथी तेमाटे शेलडी थशे नही, तेम छतां जो तने शेलडीज वाववानी इछा होय तो एकवार आ गहुंनी करेली खेती छे ते कपावी ले पछी शेलडी घनावजे एवुं लोकोनुं वचन तेणे मान्युं नही अने शेलडी वावी ते थोडी उगी एटलामां कूवानुं पाणी खुटी पड्युं तेथी जे उगेली शेलडी हती तेपण सुकाइ गइ तेवारें पश्चात्ताप करवा लाग्यो तेम तमे पण छतुं सुख मूकीने बीजा नवा सुखनी चाहना करो छो तो पछी पस्तावशो एवी स्त्रीयोनी वाणी सांनली

जंबूकुमर कहेछे के हुं पूर्वोक्त दृष्टांते पश्चात्ताप नही करीश परंतु जो नही समजशो तो त
मेज पसतावो करशो हुतो ललितांगकुमरनी पेरे तमारा फंदमां नही पडुं तेनी कथा कहुंछुं
ते सांजलो एक नगरमां एक शेठनो पुत्र ललितांगकुमर एवे नामे महारूपवंत हतो तेने
एक दिवसें ते नगरना राजानी रूपवती नामा राणी छे तेणे दीठो तेवारें एकांतें बोलावीने
तेनी साथे संसारसंबंधि जोग विलास करवा लागी एटलामां राजा पण तिहां आव्यो तेवारें
जयभ्रांत थइने राणीयें ते ललितांगकुमरने खालमां नाखी दीधो अने विचार्युंजे पछी का
हाढी लइश हवे राणीतो राजानी साथे रमवा लागी गइ अने ललितांग खालमां जूखे मरतो
कोइ अन्य आवीने एठवाडो नाखे ते खाय अने एठनुं पाणी पडे ते पीये एवी रीतें चार म
हिना पर्यंत ते खालमां पडी रह्यो अने ललितागना मा बापे घणोये जोयो पण लाधो नही
तेथी शोक करवा लेगां एटलामा वर्षाद आव्यो तेथी खालमां पाणी जराणुं ते पाणी काढ
ढवा सारुं खाल खोली ते खालना पाणीनी साथे ललितांग पण तणातो तणातो नगरनी म
होटी खालमा जइ पड्यो तेने लोकोये देखीने तेना मातापिताने जइ कह्युं मातापिता जइ खाल
माथी काढाडी घेर लइ आव्या तिहां मुर्छा खाइने पडी रह्यो, शरीर पीळुं पडी गयुं, हाडका
नीकली आव्या, माता पिताये घणा प्रकारना तैलादिक मसली जागतो कर्यो तेवारें कांइक
सावचेत थयो पछी औषधोपचार करतां करतां घणा दिवसे तेनु शरीर सारु थयुं तेवारें
वली कपडा प्रमुख पहेरीने बजारमां फरवा निकल्यो तेने राणीयें देखीने बोलाव्यो ते बोल्यो
हवे हुं तमारा फंदमां पडुं नही इति ललितांग कथा ॥ एवी रीते आठे स्त्रीयो जुदी जुदी
आठ कथाओ संसारना सुखनो त्याग न करवो ते आश्रयी जंबु कुमरने कहीं अने जंबु कुमर

फरी संसारनी असारता वतावनारी जुवी जुवी आठ कथाउ आठे स्त्रीयोने कहेशे तेवारें स्त्रीयो प्रतिवोध पामशे एवामां एक प्रनवो चोर पांचशे चोरने साथे लइने जंबु कुमरना घरमा आवशे ते सर्वने विद्याना बलथी अवस्वापिनी निंद्रा आपशे तेथी सर्वने निंद्रा आवी जशे परंतु जंबुकुमरने निंद्रा आवशे नही पढी तालां उघाडवानी विद्याथी नंमार खोलीने नवाणु क्रोड सोनामोरोनी गांठडीयो वांधी तेने लइने चालवा मांमशे एटलामां जंबु कुमरने यद्यपि द्रव्य उपर मूर्छा तो विलकुल नथी तथापि एवो विचार आवशे के महारे तो प्रनाते दीक्षा लेवी ठे अने आजे चोर लोको द्रव्य लइ जशे तो लोक कहेशे के जुउ नाइउ! एनुं धन सर्व चोर लोको लइ गया तेथी ए माथुं मुंमावे ठे एवी रीते धर्मनी निंदा थाशे ते वात सारी नही एवुं चितवीने नवकार गुणवा लागशे तेथी पांचशे चोरोना पग थनाइ जाशे तेवारें प्रनवाने विचार थाशे के आ ते शुं थयुं! जो जोवा लागशे तो जंबुकुमरने जागतो दे खशे तेवारें प्रनवो जाणशे के एनी पासे कोइ महा जोरावर विद्या ठे एवुं जाणी जंबुकुमरने कहेशे के महारी विद्या तमे ल्यो अने तमारी विद्या मने आपो जंबुकुमर कहेशे के महारी पासें कांइ पण विद्या नथी वली वीजी विद्या मने खपती पण नथी मने तो मात्र नवकार मत्रनो आधार ठे एवो धर्मोपदेश देशे तेवारें प्रनवो कहेशे के आ नवी परणेली स्त्रीयोनो त्याग करीने तु दीक्षा शा वास्ते लीये ठे? संसारना सुख नोगवी पढी दीक्षा लेजे तेने जंबु कहेशे के हे प्रनवा ससारमां सुख ठेज किहां के जेने हु नोगवुं संसारनुं सुख तो मधुबिंदुआ समान ठे तेनी लालचें जीव ससारमां रझले ठे जेम कोइ एक पुरुष नूलथी उजाडमां जइ पड्यो, तेनी पठवाडे एक हाथी दोड्यो, तेवारें ते हाथीना नयथी नासतो नागतो एक वडनी

शाखामां जइ लटकी रह्यो हवे ते शाखानी नीचे एक कूप छे तेमां चार सर्प्प पोतानुं मढोहुं फाडीने वेठेला छे; तथा वे अजगर पण मढोहुं फाडी वेठा छे, तथा वडना थडने हाथी धूणावी रह्यो छे, तथा जे शाखामां ते पुरुष लटके छे ते शाखाने एक कालो अने बीजो धोलो एवा वे उंदरो कापी रह्या छे, वली तेनी उपर एक मधुमाखीनुं मधपुडुं छे तेनी मक्षिकाउ उडी उडीने ते पुरुषना शरीरने चटका मारी रहेली छे, एटलामां ते मद्दुआलमांथी एक मधनुं टीपुं टपक्युं ते पहेला पुरुषनी जीभनें जइ लाग्युं, तेवारें ते पुरुषे कंचु जोवा मांम्युं तो तेणे दीठुं जे मद्दुआल मांहेथी ए मधुबिंदु पडे छे; एवुं जाणीने ते टीपानी नीचे मढोहुं उघाडुं राखीने लटक्यो अने टीपाना स्वादमां मग्न थयो थको पोतानी उपर पूर्वोक्त अनेक जातना दुःख पड्या छे ते सर्वे नूली गयो एटलामां एक विद्याधर आवीने कहेवा लाग्यो के हे पुरुष! ताहारु दुःख देखीने मने दया आवे छे माटे आव महारा विमानमां बेशी जा, हुं तुजने दुःखमांथी काहाडवा वाछुं छुं तेवारें ते पुरुष बोल्यो हे विद्याधर! आ एक टीपुं मधनुं महारा मुखमां आववा द्यो पछी हुं आपनी साथे विमानमां वेसी चालुं एम एक टीपुं आव्युं पछी वली पण कह्युं के आ बीजुं टीपुं आवे तो चालुं ए रीते एकेक टीपाना स्वादमां लोभाणो थको ते विकट स्थानने छोडे नही, तेवारें विद्याधरे जाण्युं जे एतो एवोज मुर्ख छे लोभी छे ए कांइ दुःखमांथी निकलशे नही एवुं जाणी तेने तिहांज मूकी विद्याधर चाल्यो गयो तेम हे भव्यो! आ जीव संसाररूप अटवीमां आयुष्यरूप वृक्ष छे तिहां कुटुंबरूप मधुबिंदुने खातो खातो आयुष्य खूटावे छे मोहें माच्यो थको रहे छे, तेने सद्गुरु आवीने चारित्ररूप विमानमां वेसवानुं कहे तेवारें स

सारी जीव स्त्रीना जोग रूप मधुबिंदुमा लोभायो थको संसारमाथी निकळवा वांछे नही माटे हे प्रभवा आ अवसर चूक्या तो फरी संसारमा पड्याने मनुष्य अवतार मळवो महादुर्लभ छे एवां वचन सांभळीने प्रभवो चोर पण प्रतिबोध पाम्यो अने बोल्यो के हे जंबु ! हुं पण ताहारी साथें दीक्षा लइश पछी वळी जंबुकुमर पोताना मातापिताने प्रतिबोध देशे तथा आठ कन्याउ वळी पोतपोताना मातापिताने प्रतिबोध आपशे तथा प्रभवो पण पांचशें चोरोने प्रतिबोध आपशे एम सर्व मळी प्रभातें पांचशेने सत्तावीश जनोनी साथे श्रीजंबुकुमर दीक्षा लेशे एवुं श्रेणिकराजाने श्रीमहावीरस्वामीयें कह्युं हतुं ते प्रमाणे नवाणु क्रोड सोनैया धर्मखेत्रोमा खरची नाखीने उत्तम महोत्सवसहित पांचशेने सत्तावीश जनोनी साथें श्रीजंबुस्वामीयें सुधर्मस्वामी पासेथी दीक्षा लीधी पछी द्वादशांगी भणी श्रीसुधर्मस्वामीनी पाटें बेठा, केवळज्ञान पाम्या, पोतानी पाटें प्रभवाजीने बेसाडीने पोतें मोक्ष गया ए श्रीजंबुस्वामी छेल्ला केवली थया इहां कवीश्वर कहे छे के जंबुजातना वाणिया घणा लोभी थाय छे एवुं लोक एटला माटे कहे छे के जंबुस्वामीना हाथमां केवलज्ञान रूप धन आव्युं ते बीजा कोइने आप्युं नही छेहेलुं केवलज्ञान एज पाम्या छे, मोक्ष नगरनो दरवाजो बंध करी बेठा माटे लोभी कहेवाणा ते उपरथी ए जातना वाणीयाने लोभी कहे छे तथा ए श्रीजंबुकुमर सरखो सोभागी कोइ थयो नही अने थाशे नही, शामाटे जे मोक्षरूपणी स्त्रीपण एने परण्या पछी बीजाने परणी नथी तथा एना जेवो कोइ कोटवाल पण नही थाय केमके एणे पांचसो चोरोने साधु बनावी दीधा ए कवीनी घटना कही हवे श्रीजंबुस्वामी मोक्ष गया पछी दश वस्तु विछेद थइ गइ तेना नाम कहे छे एक मनःपर्यवज्ञान, बीजो परमावधि, त्रीजी पुलाकलब्धि, चोथुं आहारक शरीर, पांचमी



पाचशो चोर सोना मोहोरोना पोटला बांधी माथे लई उभाछे


चित्र ७८
यज्ञ करनार ब्राह्मण
सेय्यंभवभट्ट
वे साधु

क्षपक श्रेणि, छठी उपशम श्रेणि, सातमो जिनकल्प मार्ग, आठमुं परिहारविशुद्धि चारित्र तथा सूक्ष्मसंपराय चारित्र अने यथाख्यात चारित्र ए त्रण चारित्र विछेद थया ते आठमो बोल तथा नवमुं केवलज्ञान अने दशमुं मोक्षे जवु ए दश वानां विछेद गयां श्रीमहावीरस्वामीथी चोशठ वर्षे श्रीजंबुस्वामी मोक्ष गया एमनुं सर्व मली एंसी वर्षनु आयुष्य हतुं ॥ ए बीजो पाट ॥२॥ हवे त्रीजे पाटे श्रीप्रभवस्वामी कात्यायन गोत्री हता, तेमणे एक दिवस पोताना गच्छमां तथा श्रीसंघमा उपयोग दीधो जे हुं कोने आचार्य करुं। ते उपयोग देतां गच्छमां तथा संघमा कोइ पोतानी पाटे बेसवा योग्य पुरुष दीठामा न आव्यो तेवारें अन्य मतोमां उपयोग दीधो तेमां सयंभवभट्टने दीठो तेवारें श्रीप्रभवसूरियें बे साधुयोने सीखावीने सयंभवने घेर मोकल्या ते सयंभवने घरे जइने बोल्या "अहोकष्टमहोकष्ट तत्व न ज्ञायते पुन" जूठ आ कष्ट करे छे वली तत्वने जाणता नथी, एवुं सांभली तत्काल खड्ग लेइने सयंभव गुरुनी पासे आव्यो अने खड्ग काढीने बोल्यो के अरे मने देखाड, तत्त्व केवुं छे? तेवारें गुरुयें विचार्युं जे माथो कपातां तत्त्व कहेवामां दोष नथी एम चितवी गुरु बोल्या, अरे तु यज्ञ करे छे ते यज्ञकीलकनी नीचे श्रीशांतिनाथजीनी प्रतिमा छे ते शांतिकारी छे तेनाथी शांति थाय छे परंतु यज्ञथी कांइ पण थतुं नथी ते सांभली तेणे प्रतिमा काढाडी प्रतिबोध पाम्यो अने पोतानी स्त्री गर्भवती हती तेने छोडीने दीक्षा लीधी श्रीप्रभवस्वामी त्रीश वर्ष गृहस्थ पणे रह्या तथा पञ्चावन्न वर्ष पर्यंत चारित्र पाल्युं सर्व मली पञ्चासी वर्षनुं आयुष्य भोगवी श्रीसयंभवने पोतानी पाटे बेसाडीने देवलोक गया ए त्रीजो पाट ॥३॥ ॥ हवे चोथे पाटे श्रीसयंभवसूरि वछगोत्रीया गर्भवती स्त्री छोडीने आव्या हता तेने पाछलथी पुत्र थयो तेनु नाम मनक दीधुं ते छो

करो एक दिवस पाठशालायें गयो तिहां छोकराउनी सायें लड्यो तेवारें बीजे छोकरे मेणुं मार्युं के हे निःपितृक ! घणो तने जाणीये छैयें तहारो बापतो छेज नही आ वात सांभलीने छोकरो दुःखी थयो थको पोतानी माता पासें आव्यो माताने पुछ्युं हे माता ! महारो पिता नथी ? त्यारें मातायें कह्युं हे पुत्र ! ताहारो बाप नही ते वली होय ! ताहारो बाप सय्यंभवसूरि छे छोकरायें पुछ्युं ते किहां छे ? तेवारें मातायें कह्युं हे पुत्र ताहारा बापने जैनना साधुउ जो लवीने लइ गया तेथी तेणे दीक्षा लीधी छे एवुं सांभली जे गाममां सय्यंभव सूरि हता ते गामनी बाहेर ते मनक पण आव्यो तेने साहामा थंडिलें जाता गुरु मल्या तेमने मनके पुछ्युं के महाराज इहां सय्यंभवसूरि छे एवु सांभलीयें छैयें ते कयी जगायें रहे छे ? गुरु बोल्या ताहारे शुं काम छे तेवारें मनके पोतानी सर्व हकीगत कही अने कह्युं के हुं तेमनो पुत्र छुं तेने गुरुयें पण कोइक उत्तर आपीने उपासरे मोकली आप्यो अने थंडिलथी पाछा फरी आव्या तेवारें गुरुयें तेने प्रतिबोध दीधो मनके कह्युं के मने दीक्षा आपो ते सांभली गुरु बोल्या महारुं तथा ताहारुं पितापुत्रपणुं जे छे ते तुं बीजा साधुउने नही कहे तो हुं तु जने दीक्षा आपुं त्यारें मनक बोल्यो हे महाराज हुं न कहुं ते सांभली गुरुयें दीक्षा आपी पण मनकनुं आयुष्य स्वल्प जाण्युं तेवारें गुरुयें सिद्धांतोमांथी सार लहीने दशवैकालिक सूत्र मनकने माटे बनाव्युं ते सूत्र छ महिनामां मनक भणी रह्यो सर्व आचार भणी गयो, छ महिना लगेरा चारित्र पालीने देवलोक गयो पछी श्रावको मनकना शरीरने दाग आपी गुरुनी पासें आव्या ते वखत यशोभद्रप्रमुख बीजा घणा शिष्यो हता ते पण सर्व गुरुनी पासें बेठेला हता तिहां गुरुयें श्रावकोने धर्मोपदेश आप्यो पण गुरुनी आंखोमां आंसु आव्या ते देखीने

यशोभद्रसहित सघना माणसो बोल्या हे पूज्य आपना अनेक साधुउ परलोक जाय हे परंतु आपनी आंखमांथी आंसु पडता केवारें पण दीठां नथी अने आज आंसु केम पड्यां ? तेवारें गुरु बोल्या मोहथी आंसु पड्यां संघे पुछ्युं कयो मोह हतो ' त्यारें गुरु बोल्या ए अमारे संसारी पणानो पुत्र हतो परंतु स्वल्प काल चारित्र पाल्युं तेथी मोह आवी गयो तेवारें साधुउ बोल्या महाराज तमे अमने क्यारें पण कह्युं नही जे ए अमारो पुत्र हे ' तेवारें गुरु बोल्या हु जो तमने एवुं कहेत के ए महारो संसारीपणानो पुत्र हे तो पही तमे एनी पासे वैयावच्च करावत नही तेथी एने शो लाभ थात ? माटे एना अल्प आउखामां एटलो लाभ जाणीने तमोने में कह्युं नही ए तात्पर्यार्थ हे पही गुरु, दशवैकालिकने पाछु सिद्धांतोमा नाखवा लाग्या तेवारें संघे विनति करी के हे स्वामी ए अल्प ग्रंथ हे ते आगल जतां अल्पबुद्धि अने अल्पायुषवाला लोकोने घणोज उपकारी थाशे माटे एमज रहेवा आपो ते सांभली दशवैकालिक एमज राख्यो पही सय्यंभवसूरि पोताना पाटे श्रीयशोभद्र सूरिने बेशाडीने श्रीमहावीर स्वामीथी अठाणुमे वर्षे स्वर्गे गया ए चोथो पाट ॥ ४ ॥ हवे पांचमे पाटे श्रीयशोभद्रसूरि तुंगीयायणगोत्रीया थेया तेना पाटे बे शिष्य थेया तेमां एकतो आर्यसंभूतिविजयजी माढरगोत्रीया अने बीजा आर्य श्रीभद्रबाहुस्वामी प्राचीन गोत्रीया तेमांथी भद्रबाहुजीनो संबध आवीरीतें हे के प्रतिष्ठान पुरना रहेवासी एक वराहमिहिर अने बीजा भद्रबाहु ए बे नामे बे ब्राह्मण भाइउ हता तेमणे श्रीयशोभद्रसूरिनी पासे धर्मदेशना सांभलीने दीक्षा लीधी, चौद पूर्व भण्या पही गुरुये विनीत पणानो गुण जोइने भद्रबाहुने आचार्यपद आप्युं अने वराहमिहिरने अविनीतपणाने लीधे आचार्यपद आप्युं नही कारणके जे आचार्यपद गणधरोये धारण कर्युं ते आचार्यपद जो

अविनीत अयोग्यने आपे तो ते गुरु जे आचार्य पदनो आपनार होय ते पण अनत स
सारी थाय हवे जद्रबाहुने आचार्य पद मळ्युं जोइने वराहमिहिर कोपानळ थयो थको ग
छथी बाहेर नीकळीने गुरुनी उपर द्वेष धरवा लाग्यो चोदे पूर्व जणेलो हतो तेथी नवीन
ज्योतिषना वाराहीसंहिता प्रमुख ग्रंथो बनावी साधुनो वेष मूकीने ब्राह्मणनो वेष धारण
करी लोकोनी आगळ निमित्त कहीने तेनाथी आजीविका चलाववा लाग्यो तेने लोक पूछे
के एटलुं तमे क्यांथी जाण्या, तेवारें लोकोनी आगळ एवुं कहे के में एक दिवस नगरनी
बारणे लग्न कुंडळी मांडी ते कुंडळीने जांग्याविना एमज पाछो चाली निकळ्यो पछी जेवारें
याद आव्यो तेवारें जूंसाडी नाखवा गयो अने तिहां जइने जोउं तो कुंडळीमां सिंहलग्ननो
स्वामी सिंह ते पूछडुं वधारीने उपर बेठो छे पछी में लग्ननी जक्तिने लीधे महारी छाती क
ठण करीने सिंहनी नीचे घुंसीने लग्न भुसाडी नाख्युं महारी जक्ति जोइने सिंहनो अधिपति
जे सूर्य ते आव्यो अने महारा उपर तुष्टमान थइने बोल्यो के माग माग तेवारें में कह्युं मने
नक्षत्रादिकनो चार खरेखरो जेवो छे तेवो बतावो पछी सूर्य पोताना ज्योतिषना मंमल
धारमां मुजने लइ गयो तिहां मने सर्व चार बताव्या, उदयास्तचक्र बताव्युं ते ज्योतिषना
बळथी हुं त्रण काळनी वात जाणुं छुं एवी कल्पित वातो कहीने लोकोमां पूजाय, राजा
प्रमुखने निमित्त कहीने खुशी करे अने चमत्कार पमाडे एम घणा लोकोने मिथ्यात्वी कर्या
एवा अवसरमां श्रीजद्रबाहु स्वामी पण ते नगरमां आव्या तेमने श्रावकोयें महोटा महो
त्सवसहित गाममां प्रवेश कराव्यो पण वराहमिहिरथी ते सहन थयुं नहीं तेवारें विचार्युं
जे एहनुं मान खंमित करुं तो सारी वात थाय एवुं चिंतवी एक दिवस राजसन्नामां जइने

राजाने कहेवा लाग्यो के आजथी पांचमे दिवसे पूर्व दिशाथी वर्षाद आवशे ते त्रीजे पहोरे वरसशे आ हुं कुंडाळुं करुं छुं तेना वच्चमां बावन पलनो माछलुं पडशे एवुं निमित्त कह्युं ते वात श्रावकोये आवीने भद्रबाहु स्वामी आगळ कही के हे स्वामी आ वराहमिहिरे कहेली वात सत्य छे किंवा असत्य छे तेवारें भद्रबाहु बोल्या कांइक सत्य छे अने कांइक असत्य छे केमके पूर्व दिशाथी नहीं पण इशान कोणेथी आवशे ते छ घडी दिवस पाछलो रहेशे तेवारें पडशे पण त्रीजो पहोर कह्यो ते जूठो कह्यो छे वळी बावन पलनो नहीं परंतु वायुथी सुकाइ जासे माटे साडी एकावन पलनो मत्स्य रहेशे तथा कुंडाळानां मध्यभागमां नहीं पडे पण कुंडाळानी कोर उपर एक बाजुयें पडशे माटे ते वराहमिहिर मिथ्यात्वना योगथी आटलुं जूठुं बोले छे ए वात पण श्रावकोये राजाने कही राजा बोल्यो साच जूठनी खबर हवे तरत पांच दिवसमां जणाइ आवशे एटलामां पांचमो दिवस आव्यो तेवारें वर्षाद वरश्यो अने श्रीभद्रबाहु स्वामीना कहेवा प्रमाणे सर्व वात सत्य थइ तेवारें राजा प्रमुख सर्व लोकोये श्रीभद्रबाहु स्वामीनुं ज्ञान वखाण्युं अने वराहमिहिरनी कांइ साची कांइ जुठी वात पडी गइ तेथी तेनी मानता कमती थवा लागी वळी एक दिवस राजाने घेर पुत्रजन्म थयो तेनी वराहमिहिरे जन्मपत्रिका बनावीने एकशो वर्षनुं आयुष्य वर्त्ति काढाडयुं त्यारें सर्व लोक अक्षत लइने राजाने वधाववा आव्या अन्यदर्शनी योगी सन्यासी प्रमुख सर्व आशीर्वाद आपवाने आव्या, परंतु एक श्रीभद्रबाहु गया नहीं तेवारें वराहमिहिर राजाने कहेवा लाग्यो के हे राजन् ! तमारे घेर पुत्रजन्म थयो ते भद्रबाहुने रुच्यो नहीं तेथी आंही आशीर्वाद आपवा आव्यो नहीं ए वात पण श्रावकोये जइ श्रीभद्रबाहु स्वामीने कही

तेवारें नइयाड्ड बोल्या वारंवार केम जवाय एकवार जइशुं श्रावक बोल्या केम जाशो गुरु बोल्या श्रावमे दिवसे रात्रीने वखते बिलाडीना योगथी पुत्र मरण पामशे तेवारें देखाडी श्रावशुं ए वात श्रावकोये जइ राजाने कही, राजायें सर्व बिलाडीयोने श्राखा गाममांथी बाहेर काढाडी मूकावी तथा बिलाडी कोइना घरमां अथवा गाममा न श्रावी शके तेना शेकडो गमे जाग्रता कस्या परंतु श्रावमे दिवसे दैवयोगें दासीना हाथथी कमाडनी ग्रंसणी बालकना माथा उपर श्रावी पडी तेथी बालक मरण पाम्यो तेवारें वराहमिहिर बोल्यो बिलाडीथी तो मरण पाम्यो नही? पठी गुरुयें ग्रंसणीनी उपर बिलाडीना मुखनो श्राकार लाकडामा करेलो हतो ते देखाड्यो तेथी वराहमिहिर लज्जा पाम्यो माटे तिहांथी निकली अन्यत्र स्थानके जइ अज्ञानकष्टथी मरण पामीने व्यंतर देवता थयो तेणे श्रावी श्रीसंघमां मरकीना रोगनो उपद्रव कस्यो तेथी घणा लोक मरवा लाग्या तेवारें श्रावकोनो उपद्रव टालवाने माटे महा महिमावंत एवुं "उवसग्गहर" नामे स्तोत्र गुरुयें बनाव्युं तेनो घरघरने विषे गणणो सरु थयो तेथी सर्व उपद्रव दूर थइ गयो पठी सर्व श्रावकोना घेरमां जो थोडुं शो काम होय तो पण ते उवसग्गहरनो पाठ करे के ते काम पार पडी जाय, एम करतां करतां ठेवट लोकोमा एवी चाल पडी गइ के जो गाय दूध न श्रापे तो पण उवसग्गहर स्तोत्र गुणे तेवारें गाय पण दूध श्रापती थाय एमज वली कोइक ठाणा वीणवा गइ ते एकली हती तेनी ठाणानी पोटली उपाडी श्रापवाने कोइ बीजो माणस ते वखत तिहां हाजर हतो नही तेवारें तेणे पण उवसग्गहरनो पाठ कस्यो तेवारें नागें पोते श्रावीने जारी उपाडी तेना माथा उपर राखी दीधी एमज एक स्त्री रोटला करवा बेठी हती तेनो ठोकरो फाडे गयो ते रोवा लाग्यो

तेणे जाण्युं जे रोटलो बली जाशे त्यारें उवसग्गहरनो पाठ कर्यो के तरत नागराजा आवीने कहेवा लाग्यो के शुं काम छे ? स्वोये कह्युं छोकरो रहे छे तेने राखो तेवारें ते छोकराने शौच करावी रोतो राख्यो एवु प्रायें सांजलीये छेयें एवीरीतें नीच कामो लोको कराववा लाग्या तेवारें नागराज खीजीयो अने गुरुपासें आवी विनति करी के हे महाराज संघथी हुं एक क्षणमात्र पण अलगो रही शकतो नथी लोकोतो पूर्वोक्त हलका हलका काम ते पण माहरी पासें करावे छे तेवारें गुरुयें जाण्युं जे ए निर्जाग्य लोको देवने खीजावशे तो उलटो अनर्थ थइ पडशे माटे आ स्तोत्र जंडारी मूकवुं युक्त छे तेमने नागेंद्रें कह्युं हे स्वामी नाथ आप छठी गाथा जंडारी मूको अने शेष पांच गाथाथीज हुं महारे स्थानके वेठो थको सर्व उपद्रव टालीश एवुं सांजलीने गुरुयें छठी गाथा जंडारीमूकी वली श्रीजद्रबाहु स्वामीना करेला आवश्यकनिर्युक्ति प्रमुख अनेक ग्रंथ हालमां विद्यमान छे ए श्रीजद्रबाहुस्वामी श्रीमहावीर स्वामीथी एकसो सितेर वर्षें देवलोक गया तथा बीजा श्रीसंजूतिविजयजी जाणवा ए छठो पाट ॥ ६ ॥

हवे श्रीसंजूतिविजयजी माढरगोत्रीया हता तेमना पाटें आर्य थूलिजद्रजी गौतम गोत्रीया थया तेमनो संबंध आवीरीतें छे के पाडलीपुर नगरमां नवमो नंदराजा राज्य करे छे तेनो शकडाल नामे प्रधान छे तेनी लाछलदे नामा जार्याना बे पुत्र थया एक थुलिजद्र अने बीजो सिरियो एक दिवस वररुची नामा ब्राह्मण राजा पासे आव्यो तेणे एकशोने आठ काव्य नवा बनावीने संजलाव्या एम ते ब्राह्मण नित्य आवीने एकशोनें आठ काव्य नवा नवा बनावीनें राजा आगल कहे पण जेवारें प्रधान तेनी प्रशंसा करे तेवारें राजा दान आपे नहीका दान आपे नही अने प्रधान तो वररुचीने मिथ्यात्वी जाणी तेनी प्रशंसा करे नही तेवारें

ररुचीनढे प्रधाननी स्त्री लावलवेने कह्युं स्त्रीयें प्रधानने कह्युं के ते विचारा जहने काइक अ पावजो तेवारें प्रधानना मनमांतो अपाववानो विचार न हतो पण स्त्रीना कहेवा उपरथी राज सजामा कह्युं के ए काव्य सारा ठे त्यारे राजायें संतुष्ट थइने नित्य तेने एकशोने आठ सोनैया आपवा मांरुया एम घणादिवस वेतां थया तेवारें प्रधान जाण्युं के आवी रीतें तो सर्व धन नाश थइ जाशे एवुं चितवीने पोतानी सात पुत्रीयो ठे ते एवी बुद्धिमान् ठे के पहेली पुत्रीतो एक वार कांइ काव्यप्रमुख सांजले तो ते काव्य तेने मुखपाठ थइ जाय अने फरी तेनो पाठ कही आपे एमज बीजी पुत्री बे वार सांजले तो तेने मुखपाठ थइ जाय, त्रीजी त्रणवार, चोथी चारवार, एम यावत् सातमी सातवखत सांजलीने पाठो कही संजलावे एम साते पुत्रीयो महा चतुरठे तेने सीखावी मूक्युं के तमे राजसजामां एवुं कहेजो जे ए काव्य जुना ठे अमोने आवडे ठे एम कही मुखपाठे संजलावजो प्रजातें वररुची पण नवा एकशो आठ काव्य ब नावीने सजामां आवी कहेवा लाग्यो ते वखत प्रधान बोल्यो हे महाराज, आगलना आपणा वडेरा नवराजानी पासे कहेला काव्य ठे ते नित्य आवी कहे ठे ए काव्य तो सर्व महारी पुत्रीयोने पण आवे ठे तेवारें राजायें पुत्रीयोने बोलावी सर्व काव्य कहेवराव्या ते साते ज णीयें अनुक्रमे एक बीजानी पाठल मुख पाठें कही देखाड्या तेवारें राजायें जहने निर्भठना करी काहाडी मूक्यो पठी ते वररुचीयें वली गंगानदीमां एक यंत्र नाखीने तेनी उपर ठानो पांचशे सोनामोरोनो दडो नित्य मूकी आवे अने प्रजाते लोक जेला करी तिहां जइ गंगानी स्तुतिना काव्य कही कल खटकावे के पांचशो सोनामोरोनो दडो हाथमां आवी पडे ते को तक जोइने लोको बोलवा लाग्या के जुठ राजायें आपवानुं बंध कर्युं तो पण आ पंमितने

गगावेवीज द्रव्य आपे छे ए वात राजायें सांजली त्यारें प्रधानने कयुं के आपणे पण जोवा चालीये, प्रधाने कयुं आवती काले चालीशुं पठी प्रधाने तिहां ठाना बूपा माणसो वे साख्या ते जेवारें सांजनी वखते नट सोनामोरोनी पोटकी यंत्रमां राखी आव्यो तेवारें ते ठाना बेठेला माणसोये पोटकी काढाडी लइने प्रधानने आवी सोंपी दीधी प्रजाते तो राजा प्रमुख सर्व लोको जोवा गया तेवारें ते वररुची पण गंगादेवीनी स्तुति करी घणा जोरथी कल वावे छे तो पण हाथमां कांइ आवे नही तेवारें राजा बोल्यो आम केम थयुं ते वखत प्रधाने सर्व प्रपंच प्रगट करी आप्यो ने पोटली पण बतावी आपीने पाछी नटने सोंपी दीधी तेथी लोकोमां नटनी घणी निंदा थइ हवे नट मंत्री उपर द्वेष करवा लाग्यो एवा अवसरमा प्रधानना ठोकरा सिरियानो विवाह मंमाणो छे तेवारें प्रधानना घरमां शस्त्रप्रमुख अनेक तरेनी तयारीयो देखीने नटें एक छुहो बनावी पोतानी पासे जणवा आवनार ठोकराने शिखाव्यो ते दोहो कहे छे ॥ नवराय जाणे नही, जे सिकमाल करेसि ॥ नवराय मारी करी, सिरियो रऊ ठवेसि ॥ १ ॥ ॥ ए छुहो ठोकरा राजाना महेल पासे आवीने कहेता थका निकल्या, राजायें नटने पूछ्युं आ वात केम छे नटे कयुं तमे चोकशी करावो सर्व जातिना शस्त्र तयार थाय छे राजायें चोकसी करावी युद्धसामग्री जाणीने कोपानल थयो अने निर धार कर्यो जे सकमालना सर्व कुटुंबने मरावी नाखु आ वात सकमाले जाणी तेवारें राजा पासें आव्यो, राजायें सकमालने जोइ मढोडुं फेरवी नाख्युं तेवारें प्रधान घरे आवीने सि रियाने कहेवा लाग्यो के महारी वात सांजल जेवारें हुं जइ राजाने नमस्कार करु ते वखत तुं महारुं मस्तक तरवारथी कापी नाखजे ए वात घणीज महेनतथी सिरिये मान्य

करी पछी सकमाले राजाने प्रणाम कर्यो राजायें मदोंढुं फेरवी नाख्युं प्रधाने पोताना मु खमां तालपुट विष नाखी लीधो हतो तिहां सिरियो बोल्यो के जे कोइ राजानो द्वेषी होय तेने तो मारवुंज जोइयें एवुं कहीने तरवार मारी तेथी मस्तक कपाइ गयुं राजा घणो खेद करीने पछी संतुष्ट थइ सिरियाने कहेवा लाग्यो के ताहारा पितानो अधिकार तुं ले, सिरियो बोल्यो म्हारो म्होटो नाइ थूलिभद्र छे तेने अधिकार आपवो जोइयें, राजायें पुछ्युं ते किहां छे त्यारे सिरियें कह्युं ए म्हारो नाइ न्हानपणमां पोथी वांचवा उपर कालनिर्गम करतो हतो ते परण्यो हतो पण पोतानी स्त्रीपासें जतो नही तेवारें माहारा मातपितायें जाण्युं ए संसारनी कला शीखशे नही एवुं विचारीने कोश्या वेश्याने कला शीखाववा माटे सोंप्यो छे तेने बार वर्ष थया वेश्याने तिहांहीज लोभाइ गयो छे बार क्रोड सोनैया खाइ गयो छे माटे तेने बोलावीने अधिकारी करो राजायें थूलिभद्रने तेडवा माटे छडीदार मोकल्यो, तेवारें वेश्या बोली राजा पासें म जाओ केम के जासो तो फरी राजा तमोने म्हारी पासें आववा देशे नही अने म्हारे पण तमारा विना केवी रीते रह्युं जाशे ते विचार करो जे एक क्षणवार पण तमारा वगर मने चेन पडतुं नथी ते तमे जाणोज छो माटे तमारे जावुं नही तेवारें थूलिभद्र बोल्यो एकतो म्हारा पितानुं मरण थयुं छे अने बीजो वली राजानो हुकुम आव्यो छे ते फरी शके नही तो पण एकवार तने मलवा माटे तो जरुर आवीश एवुं कहीने पोताने घेर आव्यो तिहां सर्व नंदना प्रपंचनी वात तथा पितानां मरणनी वात सांभलीने पछी राजापासें आव्यो राजायें तेने कह्युं के तुं प्रधानपद ग्रहण कर थूलिभद्र बोल्यो विचारीने ग्रहण करीश, तेवारें राजायें कह्युं तुरत विचारी ले पछी अशोक


चित्र ७८
थूलिभद्रजी साधु
कोश्या वेश्या नाटक
करेछे

वाडीमां जइने विचार कर्यो के जुओ आ संसारतो मतलबी छे, महारा पितानी एवी अवस्था
थइ माटे राज्यना काममां, आ लोकनुं पण सुख नथी अने परलोकमां तो नरकनी प्राप्ति
थाय एवो संसार असार जाणी रत्नकंबलनो उंघो बनावी, लोच करी, साधु थइने राजाने
जइ धर्मलाभ आप्यो अने तिहांथी निकल्यो राजायें जाण्युं जे आ व्यसनी छे माटे वेश्याने
घेर जशे एवुं विचारीने जोवा लाग्यो तेवारें ते तो कोइ महादुर्गंधित गलीमांथी थइने
गाम बाहेर निकली गयो पण दुर्गंधथी नाक ढांक्युं नही तेथी राजायें जाण्युं जे ए खरेखरो
वैराग्यवान् छे पछी थुलिभद्रें जइने श्रीसंभूति विजयजीनी पासे दीक्षा लीधी अने राजायें
सिरियाने मंत्रीपद आप्युं, महोर सोंपी हवे चोमासु आवे श्रीथुलिभद्रजी गुरुना आदेशथी
वेश्याने घेर चोमासुं रह्या अने एक साधु सिंहनी गुफायें चोमासुं रह्या तथा त्रीजो शिष्य
सर्पबिलें चोमासु रह्या, चोथो साधु कूआना वचला काष्ठ उपरे चोमासु रह्या ए चारेमांथी
थुलिभद्रजी वेश्याने घेर चोमासु रह्या छे तिहां चोमासु काढवु घणुं कठण छे कारण के
एकतो वर्षाऋतु छे ते कामनी जगाववा वाली छे केम के जे कालमां मेघ गर्जारव करे, वी
जली चमके, मोर बोले, पपइया पिउ पिउ करे, एवा कालमा भोगनी वांछा घणी थाय
वली रहेवाने चित्रामणवाली जगा, अने खावाने षड्रस भोजन नित्य मले, ए सर्वे भो
गना अंग मले अने जो स्त्री रागवाली न मले तो सर्व निष्फल थाय परंतु अहीं थुलिभद्र
जीने तो कोश्या वेश्या सरखी सर्वमां अग्रेसर रागवाली मली छे तेणे महोटा उमेदथी चित्र
शालिमां उतार्या, अनेक प्रकारना भोजन कराव्या, अनेक तरेना हाव भाव कर्या, फूल छ
पर नाटक कीधुं, भोग विलासना वचन बोली, तथापि ए महापुरुषनुं एक रोम पण

मग्युं नही सेवट वेश्या वोली जे हुं आटला विलाप करुं हुं तेनुं कांइ प्रत्युत्तर तो आपो तेवारें मुनियें उपदेश दीधो के हे नोली धर्मविना सर्व अवतार निष्फल छे इत्यादिक उपदेश सांजलीने कोश्या श्राविका थइ, एक राजाना हुकमदार पुरुष विना वीजा कोई पण पुरुषने घरमां पेसवा देवो नही एवी श्राविका करी चोमासुं पूरण थये मुनि गुरु पासे आव्या अने वीजा त्रण साधु पण आव्या तेमने तो गुरुयें किंचित् उठीने कह्युं के नले आव्या हे दुष्करकारक ! अने मुनिजइने तो आवतो देखतांज तत्काल गुरु उठी उना थइने वोल्या नले आव्या अहो दुष्करदुष्करकारक एवुं सांजली सिंहगुफावासी साधुयें अमर्ष आणीने विचार्युं के जुउ आ गुरु पण धनवंतना गरज्रु देखाय छे केमके जे सुख माल खाइने मातो थइ आव्यो तेने तो अहो दुष्करदुष्करकारक एवुं कह्युं अने में एवुं कठण तप कर्युं तेने तो दुष्करकारक एट लुज कह्युं एवुं जाणीने आवते चोमासे सिंहगुफावासी साधुयें गुरुने कह्युं के हुं वेश्याने घेर चोमासुं करवा जइश तेने गुरुयें कह्युं हे वत्स, कामदेवनी राजधानी सरखा घरमां जइ चो मासुं करवानुं काम अत्यंत कठण छे तुं भ्रष्ट थइ जइश माटे ताहारे जावुं नही तो पण तेणे मान्युं नही अने कोश्याने घेर चोमासुं रहेवा गयो तिहां एक सामान्य जगा वेश्यायें तेने रहेवा माटे आपी अने तेनी पासे सामान्य वेष करीने वेठी तो पण तेनुं रूप देखीने मुनि मगी गयो अने नोग करवानुं कह्युं तेवारें वेश्या वोली धनविना अमारे कामना नथी, साधुयें कह्युं के धन किहांथी लइ आवुं ? वेश्या वोली नेपाल देशनो राजा रत्नकंबल आपे छे ते लइ आवो साधु नोग करवानो मतलबी थयो माटे चोमासाना दिवसोमां कीचड खूंदतो खूंदतो नेपाल देशे गयो तिहांना राजा पासेथी रत्नकंबल लइने पाछो वल्यो तेवारें रस्तामां चोरोनो सूडो

बोल्यो " लक्ष याति " चोरोयें सूडानी वाणी सांजलीने साधुनी पासेथी रत्नकंबल खोंची लीधो फरी पाछो राजा पासें जइ कहेवा लाग्यो के कंबल चोरोयें लुटी लीधो तेवारें राजायें वांसनी लाकडीमां कंबल नाखीने दीधो पाछो फरतां वली पण रस्तामा सूडो बोल्यो " लक्ष याति " ते चोरोयें सांजल्यु परंतु कंबल दीठामां न आव्यो तो पण चोरोयें जाण्युं जे अ मारो सूडो जूठुं बोले नही तेथी मुनिने कह्युं हवे तमारो कंबल अमे लइशुं नही पण सत्य कहो जे तमारी पासें कंबल छे के नथी मुनियें सत्य कह्यु, चोरोयें छोडी दीधो, मुनियें रत्नकंबल लावीने वेश्याने दीधो, वेश्यायें स्नान करी कांबलथी शरीर लुछीने खालमां पटकी दीधो ते जोइ साधु बोल्यो हे जोली एवा अमूल्य रत्नकंबलने खालमा केम नाखी दीये छे? त्यारें वेश्या बोली अरे मूर्ख तुं पण शुं करे छे ' जे आ महादुर्लभ इहलोकमां अने परलोकमां सुखकारी रत्नकंबलथी पण अत्यंत अधिक मूल्यवान् एवु चारित्र रूप रत्न छे तेने मलमूत्रे करी जरेलु एवुं जे महारुं शरीर रूप दुर्गंधित खाल तेमां केम नाखी आपे छे ? माटे तुं महाराथी अधिक मूर्ख देखाय छे एवु सांजली प्रतिबोध पामी पाछो गुरुनी पासे आवीने साधुयें फरीथी चारित्र लीधुं ॥ हवे एक दिवस राजाना रथकारें कोश्या वेश्याने घणीज स्वरूपवाली सांजली तेथी तेनी पासे जवानी इच्छा थइ पण राजाना हुकम विना बीजाने वेश्या राखे नही एवो तेनो नियम जाणीने रथकारे राजाने कोइ पोतानी कला बतावीने राजी कर्यो तेवारें राजा प्रसन्न थइने बोल्यो के माग जे तु मागे ते हु आपु रथकारें कोश्यानी मागणी करी राजायें हुकम आप्यो अने कोश्याने रथकार सोंप्यो हवे कोश्या नित्य प्रत्ये रथकारनी पासे श्रीथुलिभद्रजीना गुणगान करे ते जोइ रथकारें जाण्युं जे हु एने कोइ कला ब

तावुं तो ए मद्दारा गुण जाणशो ने मद्दारी स्तुति पण करशो एवुं चिंतवीने गोखमां वेशी
एक बाणथी सात केरीनो ज़ुमखो वींध्यो तथा तेनी पठवाडे वली वीजुं बाण साध्युं एम
एकेकनी पठवाडे बाणो साधीने गोखमां बेठां थकांज आंबानी लुंब तोडीने वेश्याने आपी
दीधी अने कहेवा लाग्यो के जो आ मद्दारी कला केहेवी ठे? तेवारें कोश्यायें एक राइना
दाणानो ढिगलो करी तेना उपर फूल राख्युं तेमां एक दोरो शीववानी सूइ ठ्ली राखीने
तेनी उपर नाटक कर्युं ते नृत्य जोइने रथकार अत्यंत खुशी थइ गयो अने कहेवा लाग्यो जे
माग माग हुं तादारी उपर संतुष्ट थयो हुं कोश्यायें कह्युं तें कहेवोक तमासो जोयो के जे
थकी खुशी थइने मद्दारा उपर प्रसन्न थयो ? आ में जे सूइनी अणी उपर नृत्य करी बताव्युं
एवी कलाउ जो शीखवा बेसीयें तो हजारो शीखी शकाय ठे तेमज तें जे आम्रनी लुंब
तोडी आपी ए पण शीखवुं सहेज ठे एमां काइ कठण नथी अन्यास करवाथी वधी कला
शीखी शकाय तेवी ठे परंतु मद्दारा जेवी स्वरूपवाली स्त्री पासेनी पासे रहेली हती,
ने वली चोमासाना दिवस हता तेमज कामने जागृत करनारी एवी आ चित्रशाला
हती तथा शरीरने पुष्टीना करनारा मन्मथने उत्तेजन आपनारा एवा घणा श्रेयमां
श्रेय जोजन मलता हता ते आरोगी ने वली रात्रदिवस मद्दारी पासें रहेता तेम हुं पण
तेमना उपर अत्यंत मोहित थई थकी सराग दृष्टीयें बहुप्रीतिपूर्वक विषयसेवन क
रवानी याचना करी रही हती आटलुं ठतां एक क्षणमात्र पण जेनुं मन चलायमान
थयुं नहीं एवी कला श्रीथुलिभद्रजीनी पासें हती ते शीखवी घणीज कठण ठे मद्दा
[illegible] ठे जेनी आगल में घणा प्रकारना चाला कर्या तथापि ते मद्दापुरुष किंचिन्मात्र



थूलिभद्रजीये सिंहनु रूप कर्यु छे

मण्यो नही धन्य छे एमना मातपिताने के जेना कुलमां एवो पुरुष उत्पन्न थयो एवो उपदेश आपी रथकारनुं मन फेरवीने श्रीथुलिभद्रजी पासें मोकल्यो तेणे जइ दीक्षा लीधी ॥ हवे को इक समये बारवर्ष पर्यंत काल पड्यो तेवारें त्यां सर्व मुनिराजो अग्यार अंगना जाणनारा रह्या पण द्वादशांगीना जाणनारा कोइ न हता तेवारें सर्व संघे बे मनुष्य मूकीने श्रीभद्र बाहु स्वामीने बोलाव्यो, भद्रबाहु स्वामीयें कह्युं में प्राणायाम ध्यान चालुं कर्युं छे तेमाटे म हाराथी आवी शकाशे नही तेमने श्रीसंघे फरीथी कहेवराव्युं के हे महाराज जे श्रीसंघनी आज्ञा न माने तेने केवा प्रकारनो दंड करवो? श्रीभद्रबाहुजी बोल्या तेने गच्छ बाहेर करवो एवी चाल छे पण मने ध्याननो अंतराय थाय छे माटे श्रीसंघने एम करवुं योग्य छे के भ णवावाला साधुउने इहां महारी पासें मोकली आपवा जोइयें तो तेमने भणवानुं बनी श कशे तेवारें श्रीसंघे मली श्रीथुलिभद्र प्रमुख पांचशो साधुउने श्रीभद्रबाहुस्वामी पासें मो कल्या तिहां गुरुयें सर्व साधुउने सात वाचना दीधी तेमां बीजा सर्व साधुउतो भणवाथी हारी गया परंतु एक श्रीथुलिभद्रजी बे वस्तुयें उणा दश पूर्व भणी गया एवामां श्रीथुलि भद्रजीनी सात बहेनो यक्षा, यक्षदिन्ना, भूता, भूतदिन्ना, सेणा, वेणा अने रेणा ए साते साध्वीउ श्रीसंभूतिविजयजीनी शिष्यणीउ थयेली छे ते श्रीथुलिभद्रजीने वांदवा सारु आवी तेणे प्रथम श्रीभद्रबाहु स्वामीने वांदीने पुछ्युं के थुलिभद्रजी किहां छे? गुरु बोल्या पर्वतनी गुफामांहे भणेला पूर्वनुं गुणणुं करे छे तेवारें साते जणी तिहां गइ तेमने आवती जोइ ज्ञा नना बलेकरी चमत्कार देखाडवामाटे श्रीथुलिभद्र सिंहनुं रूप करी बेठो तिहां सिंहने देखी साध्वीउ भय पामी थकी फरी गुरु पासें आवीने केहेवा लागी के महाराज तिहां तो सिंह

थयो छे तेवारें गुरुयें जाण्यु एणे विद्या प्रगट करी जणाय छे एम विचारीने वली कह्युं के हवे तमे जाओ थुलिभद्रजी तिहांज छे तेवारें ते फरी तिहां गइ जाइने देखी हर्षसहित वंदना करी वली गुरु पासें आवीने पूछवा लागी के महाराज अमारी साथें सिरिये दीक्षा लीधी तेने अमारामांथी यक्षणीयें उपवास कराव्यो ते देवलोक गयो पछी यक्षणीने प्रायश्चित्त लेवा माटे श्रीसंघने कह्युं तेवारें श्रीसंघे काउसग्ग करीने शासन देवीने सीमधरस्वामी पासें मोकली सीमधरस्वामीना मुखथी बे चूलिका लइने शासनदेवी इहां आवी एवु कही गुरुने वांदीने पोताने स्थानके गइ हवे एक दिवस श्रीथुलिभद्रजी पोतानो एक ब्राह्मण मित्र हतो तेने घेर गया तिहां ते ब्राह्मणनी स्त्रीने पुछ्युं महारो मित्र किहां छे ? स्त्रीयें कह्युं अमने दा रिद्रीपणु प्राप्त थयुं छे माटे भीख मागवा गयो छे तेवारें श्रीथुलिभद्रें ज्ञानबलथी जोयुं तो एना घरमां वडिलोपार्जित घणु धन भरेलु दीठु पण ब्राह्मणने तेनी खबर नथी माटे भीख मागे छे पछी श्रीथुलिभद्रजीयें पोतानी दृष्टीथी दाटेला धननु ठेकाणु तेनी स्त्रीने बताव्युं अने पोतें चाल्या गया ब्राह्मणे आवीने पोतानी स्त्रीना कहेवा उपरथी दाटेला धननु स्थानक जाण्युं अने विचार्यु जे पक्का मुद्दा विना मुनिराज दृष्टी आपे नही माटे तेणे धरती खोदी जोइ तो तेमांथी घणु धन निकल्युं तेना योगें ब्राह्मण सुखी थयो एवी रीते एक सिंहनी विकुर्वणा करी अने बीजु ब्राह्मणने धन देखाड्यु ए बे वातो अयोग्य करीने वली श्रीथुलि भद्रजी गुरुनी पासें वाचना लेवा आव्या तेवारें गुरुयें कह्युं के पूर्वोक्त बे काम करवा थकी तमे वाचना लेवाने अयोग्य थया छो, फूटेला भाजनमां दूध नाखीयें तो ठेरे नही, तेम त मोने पण वाचना हवे देवाय नही एवुं सांभली श्रीथुलिभद्रजी उदास थया थका श्रीसंघने



समति राजा आर्यरक्षितजीने नमस्कार करेछे

होय तेने अमे आपीयें भिखारीयें कह्युं के भले तमारा जेवो मने पण करी ल्यो ते सांभळी गुरुयें पण लाभ जाणी तेने दीक्षा आपीने तेनी इच्छा मुजब भोजन कराव्युं अने सुहस्ति सूरियें कह्युं के शुद्ध भाव राखजो एटलामां तेने उलटी थइ तेवारें सर्व साधु तेनो वेयावच्च करवा लाग्या तेथी भिक्षुयें चारित्रनी अनुमोदना कीधी अने मरण पाम्यो तिहांथी मरीने उज्जयणी नगरीमां श्रेणिक राजाने पाटे कोणिक राजा, तेना पाटे उदायिन राजा, तेना पाटे नंद नामे नव राजानां नव पाट थया अहींसुधी श्रेणिकथी मांडी बार पाट थया तेरमे पाटे चंद्रगुप्त, चौदमे पाटे बिंदुसार, पन्नरमे पाटे अशोकश्री अने शोळमे पाटे अशोकश्रीनो पुत्र कुणाल थयो ते कुणालनो पुत्र संप्रतिनामे राजा थयो, जन्मतांज तेना दादायें तेने राज्य आप्युं ते अनुक्रमे त्रण खंड पृथ्वीनुं राज्य भोगवनारो थयो हवे एक दिवस ते संप्रतिराजा गोखमां बेठो छे तेणे रथयात्रामां आर्य सुहस्तिसूरि जाय छे तेने दीठा तेना योगें जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेथी पूर्वे भिक्षुना भवमां पोते साधु थयो हतो ते सर्व दीठामां आव्युं तेवारें गोखथी नीचे उतरी गुरुने पगे लागीने पुछ्युं के हे स्वामी अव्यक्त सामायिकनुं शुं फल? गुरुयें कह्युं राज्यादिप्राप्ति थाय ते सांभळी संप्रति राजा वळी विशेष दृढ थइने गुरुने पूछवा लाग्यो के हे स्वामी मने आप ओळखो छो? तेवारें गुरु उपयोग आपीने बोल्या के तुं भिक्षुना भवमां अमारो शिष्य हतो तो हवे तने राज्य मळ्युं माटे धर्मवृद्धि कर एवुं गुरुनुं वचन सांभळीने राजायें श्रावकपणुं लीधुं अने सवालाख जिनमंदिर नवा कराव्या, सवाकोटी जिनबिंब प्रतिष्ठाव्या, तेर हजार जीर्णोद्धार कराव्या, पंचाणु हजार पीतळनी प्रतिमाओ भरावी, सातसे दानशाळाओ करावी, देवालयोथी सर्व पृथ्वी शोभायमान करी, कर

चित्र ८१



सम्प्रति राजा आर्यरक्षितजीने नमस्कार करेछे

ठोडाव्या, साधुउंना वेश पहेरावीने पोताना छुनटोने अनार्य जेवा देशोमां मोकली तिहांना लोकोने समजावीने साधुउंने अनार्य देशोमां विचराव्या तथा बीजा घृत, गोळ, वस्त्र प्रमुखना सर्व व्यापारीउंने तेमज कंदोइ लोकोने कहेवरावी मूक्युं के तमे शुद्ध आहारादिक मुनिउंने वहोरावजो तेना पैशा जे थाय ते राजानी पासेथी लइ जाजो पण ए वातनी साधुउंने खबर पडवा देशो नही लोको पण तेमज साधुउंने देवा लाग्या, साधुउ पण अशुद्ध न जाणता थका आहारादि लेवा लाग्या, जाणे शुद्धज ठे एम समजवा लाग्या, एटलामां आर्यमहागिरिजी बोल्या हे शिष्यो आ एवो स्निग्ध आहार नित्य केम लइ आवो गो? तेवारें शिष्यो बोल्या अमे चोकसी तो नित्य करीयें ठैयें पण एनी मालम पडती नथी वली गुरुयें कह्युं हवे सारी रीते चोकशी करो पठी शिष्यो ए गोचरी करतां ठोकराउंने पुठ्यु अरे तमने नित्य लाडु प्रमुख किहांथी आवे ठे? तेवारें ठोकरा बोल्या महाराज सर्व आपणो प्रताप ठे अमे पण तमारे प्रतापे लाडु प्रमुख खाइयें ठैयें अने आपने पण वहोरावीयें ठैयें राजानो भंडार अखूट ठे ते सांभली शिष्यो ए आवीने आर्यमहागिरिजीने कह्युं आर्यमहागिरियें जाण्युं आ राजद्रव्य ठे पठी आर्यसुहस्तिने कह्युं हे देवाणुप्रिया तमे आहारनी चोकशी करो गो के नथी करता? आपणने राजद्रव्य आवे ठे ते केम? तेवारें आर्यसुहस्ति विना उपयोगथी बोल्या के राजद्रव्य तो सर्वत्र ठे, कहो राजद्रव्य क्यां नथी? आर्यमहागिरिजी बोल्या आवी शिथिलपणानी वात तमे केम करो गो? आजे तमे पोतेंज एवुं बोलो गो तेवारें तो प्रसिद्धपणे दोष लागवानुं थाशे माटे हवे तमारे ने अमारे सांभोगिकपणुं नथी एवुं कहीने अन्यत्र स्थानके विहार करी गया इहां सुधी तो एकज समाचारी हती अने एकज गछ हतो तथा

सूरिथी सांनोग भिन्न
एक सांनोगिपणो आचार्योनो चाल्यो परंतु आंही श्रीआर्य सुहस्ति
थयो आर्यसुहस्ति चारित्र पाळी देवलोक गया ए आठमो पाट जाणवो ॥ ८ ॥ ॥ हवे श्री
आर्यसुहस्तिना बे शिष्य थया तेमा एकतो सुस्थित अने बीजो सुप्रतिबद्धक एमणे कोटी
वार सूरिमंत्र जप्यो काकंदी नगरीमा जन्म्या तेमनो व्याघ्रापत्य गोत्र हतु ए नवमो पाट ॥
॥ ९ ॥ ॥ एमने पाटे श्रीआर्य इंद्रदिन्नसूरि कौशिक गोत्रीया थया ए दशमो पाट ॥ १० ॥
श्रीआर्य इंद्रदिन्न सूरिने पाटे श्रीआर्य दिन्नसूरि गौतम गोत्रीया थया ए अगीआरमो पाट ॥
॥ ११ ॥ ॥ श्रीआर्यदिन्नने पाटे श्रीआर्य सिंहगिरि कौशिक गोत्रीया थया जे जातिस्मरण
ज्ञान पाम्या हता ए बारमो पाट ॥ १२ ॥ ॥ आर्य सिंहगिरिने पाटे आर्यवज्रसूरि गौतम
गोत्रीया थया ए तेरमो पाट ॥ १३ ॥ ॥ आर्यवज्र सूरिने पाटे आर्यवज्रसेन सूरि उत्को
शिक गोत्री थया ए चौदमो पाट ॥ १४ ॥ ॥ एमना चार शिष्य थया एक नाइल, बीजो
पोमिल्ल, त्रीजो जयंत अने चोथो तापस ए चारने नामे एमनी चार शाखा निकळी ए पन्न
रमो पाट ॥ १५ ॥ ॥ हवे तेरमा आर्यसिंहगिरिथी मांडीने त्रण पाटनुं वर्णन कही देखा
डीयें छैयें ते आवी रीते छे के श्रीसिंहगिरिनी पासेथी सुनंदानो नाइ आर्यसमित तथा
बीजो सुनंदानो भरतार धनगिरि ए बे जणे दीक्षा लीधी अने सुनंदा पोते गर्भवती हती तेने
तुंबवन गाममां मूकी दीधी पछी सुनंदाने पुत्र थयो ते वखतमां बीजी पडोसीनी स्त्री बोली
के बाइ जो आज एना बाप धनगिरियें दीक्षा न लीधी हती तो आ पुत्रना जन्मनो महोटो
महोत्सव थात पण हमणा तो पिता विना बीजो कोण आवीने महोत्सव करे एवी वात
सांभळीने ते बाळकने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेवारें बाळके जाण्युं जे हुं जो महारी मा



सुनंदा पोताना भरथार धनगिरिजीने छोकरो वहोरावेछे झोलीमा नाखी साधु लई जायछे

ताने राजी राखीश तो ए मद्दारी माता मुजने गोढशे नद्दी माटे कोइ रीते एने कटालो उपजे तेवो उपाय करुं तो ए मने त्यागी देशे, तेवारें हुं दीक्षा लइश एवु जाणी माताने उद्वेग कराववाने माटे नित्य रुदन करवानुं घालुं कर्युं केमके एने तो चारित्र लेवानो जाव वर्त्ते छे तेवारें वालकना रुदनथी माता घणी उद्वेग करवा लागी अने विचार्युं जे हु आ पुत्रने शुं करु? कोइने आपी देउ तो ठीक एवा अवसरमां सिद्दगिरि आचार्य तिहां पधार्या तेवारें धनगिरि गोचरीयें जवा लाग्या तेने गुरुयें ज्ञान दृष्टीयें विचारीने कह्यु के आज तमोने गोचरीमां सचित्त अचित्त वस्तु जे मले ते लइ लेवी, हवे धनगिरि गोचरी फरतां फरतां सुनवाने घरे गया सुनदा बोली आ तमारा पुत्रें तो मने उलटो संताप करी दीधो छे माटे एने लइ जाउ साधुयें कह्युं हमणा तो तु आपे छे पण पाछलथी दुःख करीश, सुनदा बोली हुं दुःख नद्दी करु तमे सुखे लइ जाउ तेवारें धनगिरिजी घणी स्त्रीयोने तथा बीजा लोकोने साक्षी करी पुत्रने लइ फोलीमा नाखी उपासरे आव्या गुरुयें फोली उपाडी तेमां नार घणो लाग्यो तेवारें बोल्या के आ शुं वज्र छे के? एवु कहीने फोली उघाडी तो मांहे बालकने दीठो तेनुं वज्र एवुं नाम दीधुं हवे उपासरामां आव्या पछी बालकें रुदन करवुं बंध कर्युं गुरुयें सज्यातरनी वेवावाली श्राविकाने ते बालक सोंप्यो तेणे पारणामां राख्युं ते जेवारें छ महीनानो थयो तेवारें तिहां शालामां साध्वीउ जण्या करे छे तेमना वचन सांजली पारणामां सुतां सुतां अगीआर अग जणी गयो अनुक्रमें जेवारें त्रण वर्षनो थयो तेवारें सुनदा बोली जे हुं मद्दारो पुत्र पाछो लइश तेने संघे कह्युं के ए गुरुनो माल छे ते गुरु जाणे पण अमाराथी अपाय नद्दी पछी राज दरवारमां गइ तिहां सघनी विनतियी गुरु पण दरवारमां

आव्या राजायें एवी रीते न्याय थाप्यो के जेना उपकरण ए बालक लइ लीये तेनो ए पुत्र जाणवो तेवारें मातायें लाडु तथा घुघरा प्रमुख बालकने देखाड्या परंतु बालके तेनी सा हामु पण जोयुं नही पछी गुरुयें बालकने कह्युं के आ ओघो ताहारे लेवो होय तो लइ ले तेवारें बालकें ओघो ग्रहण कर्यो अने नाचवा कूदवा लाग्यो राजायें कह्युं न्याय थइ चुक्यो एम कही बालक गुरुने आपी दीधो ते जेवारें आठ वर्षनो थयो तेवारें दीक्षा लीधी ते वखत सुनंदायें कह्युं के म्हारो पुत्र पण तमे लइ लीधो तो हवे मने पण दीक्षा आपो, गुरुयें सुन दाने पण दीक्षा दीधी ॥ एक दिवस उज्जयणीना मार्गमां वज्र ऋषीना पूर्वभवनो मित्र कोइ देव हतो ते मनुष्यनुं रूप करीने वज्र ऋषीनी परीक्षा करवाने अर्थे कोलानी भीक्षा देवा लाग्यो वज्र ऋषीयें जाण्युं जे कोलानी ऋतु तो हमणा नथी तो आ वखतमां ए कोला क्यांथी लाव्यो, ए तो कोइ देवतायें छल कर्यो होय एम जणाय छे माटे देवपिंड न लेवो एवुं जाणी भिक्षा लीधी नही तेवारें देवें संतुष्ट थइने वैक्रिय लब्धि आपी फरी वली व नालाना दिवसोमां घेवरनी परीक्षामां देव चलाववा आव्यो तेमां पण वज्रमुनि चलायमान थया नही तेवारें देवतायें आकाश गामिनी विद्या आपी हवे एक दिवस गुरु स्थंडिल भूमियें गया अने केटलाएक साधुओ गोचरीयें गया तेवारें वज्रमुनि बालक्रीडाथी साधुओना संथारा दिक चारे बाजु मूकी पोते वचमां बेसीने जेवी रीते गुरु वाचना आपे तेवी रीते जूदी जूदी अगीआरे अंगनी वाचना देवा लाग्यो गुरुयें पण बारणे छाना ऊभा रहीने सर्व वाचना सांभली पछी बालकने कोइ पण शंका पडे नही तेवी रीते महोटा स्वरथी निस्सिहि कहीने गुरु उपास रामां आव्या तेवारें वज्रऋषीयें पण पोतानुं करेलुं सर्व कृत्य समेटी लीधुं हवे गुरुयें ते बाल



त्रणवर्ष थया पछी सुभद्राये राजसभामां फरीयाद करी परतु राजाये न्याय करी ते छोकरो अपाव्यु नही

कना गुण प्रगट करवाने माटे कह्युं के हे साधुउ तमे ईहां रहेजो हुं एक गामे जइने आवुं छु तेवारें साधुउ बोल्या अमोने वाचना कोण आपशे? गुरुयें कह्युं वज्ररूपी आपशे एवु कहीने गुरु बीजे गाम गया हवे ते साधुउ गुरुनुं वचन प्रमाण करवावाला, विनयवत छे माटे वज्रमुनिनो विनय करीने वज्रनी पासें वाचना लेवा लाग्या तेमने वज्रें पण एवी वाचना आपी के गुरु घणी वाचनाउथी जेटलुं जणावे तेटलु वज्रमुनियें एक वाचनामां जणावी दीधु तेवारें साधुउए विचार्युं के गुरु गामे गया छे तेने जो चार दिवस वधारे लागे तो ठीक तेटलामां अमारो आ अमुक श्रुतस्कध पूरण थइ जाय पछी केटलाक दिवस वीत्या केडे गुरु आव्या तेमणे पुछ्युं जो साधुउ तमारे वाचना सुखे थइ? साधु बोल्या हा महाराज हवे अमारे वाचनाचार्य ए वज्रज होजो तेवारें गुरुयें अगीआरे अग वज्रने आपीने वाचनाचार्य कर्यो हवे गुरुनी आज्ञाथी वज्रमुनि श्री उज्जयणी नगरीमां जद्गुप्ताचार्य पासेथी दश पूर्व जण्या पछी आचार्य पद पाम्या एक दिवस पाटली पुरमां धनशेठने घरे साध्वीउ उतरी छे तेणे वज्रस्वामीना गुण अने रूपनुं वर्णन कर्यु तिहां शेठनी पुत्री रुक्मिणीयें एवी प्रतिज्ञा करी के वज्रस्वामी विना बीजाने महारे परणवुं नही एटलामां वज्रस्वामी पण पाटली पुरमां आव्या अने विचार्युं के महारा रूपथी लोको क्षोभ पामे छे ते नही पामे एटला माटे विद्याना बलथी रूप सक्षेप करी सामान्य रूपथी धर्मदेशना आपवा मांडी तेवारें साधुउयें लोकोना मुखथी सांभल्युं जे गुरुनी देशनातो अमृत सरखी छे पण रूप तो सामान्य छे ए वात साधुयें वज्राचार्यने कही तेवारें बीजे दिवसे हजार दलनुं सुवर्ण कमल करीने तेनी उपर बेठा अने पोतानुं जेवु मूलरूप हतु तेवाज रूपथी देशना दीधी

मदारूपवाली रुक्मिणी नामा पुत्री
ते जोइ सर्व लोक विस्मय पाम्या, धनश्रेष्ठ पण पोतानी मदारूपवाली रुक्मिणी नामा पुत्री
अने एक क्रोड सोनामोरो लइ गुरुनी पासे आवी नेट करवा लाग्यो गुरुयें कन्याने प्रति
बोध आपी धर्म पमाडीने पोतानी शिष्यणी करी ॥ हवे एकदा वज्रस्वामीयें पदानुसारिणी
लब्धियें करीने श्रीआचारांग सूत्रना मदापरिज्ञा नामा अध्ययनमांथी मानुष्योत्तर पर्वत प
र्यंत जइ शकाय एवी आकाशगामिनी विद्या कादाडी वली एक समय उत्तर दिशामां दु
काल पडतो जाणी श्रीसंघने पट कपडा उपर बेशाडीने अन्यस्थानके लइ जवा तयार थया
एवामा तिहां सय्यात्तर बोल्यो महाराज हुं पण एमनो साधर्मि छुं तेवारें तेने पण पट उपर
बेशाडीने आकाशमां रह्या थकाज स्थानके स्थानके श्रीजिनचैत्य वदावता थका मदानिशि
नामा नगरीयें गया तिहां यद्यपि सुगाल तो छे तथापि राजा बौधमतवालो छे माटे तेणे
बौधदर्शनीना नक्त लोकोना कहेवा उपरथी पंजोसणना दिवसोमां जैनमदिरमां फूल लइ
जवा देवा नहीं एवो बदोबस्त कर्यो ते जोइने संघे श्रीवज्रस्वामीने विनति करी मदाराज
फूलनो अटकाव थाय छे? वज्रस्वामीयें कह्युं तमे चिंता करशो नहीं हुं एनो उपाय करुं छुं
एम कही आकाशमां उडीने माहेश्वरी पुरीमां हुताशन नामा देव तेना वनमां पोताना
पितानो मित्र वनमाली हतो तेने जइ कह्यु के तमे फूल तयार राखजो एवुं कहीने पछी हि
मवत पर्वत उपर गया तिहां पद्मद्रहना कमलनिवासिनी लक्ष्मीदेवीयें श्रीवज्रस्वामीने वांद्या
अने कहेवा लागी हे स्वामी! आपनी दासीने कांइ हुकम फरमावो तेवारें आचार्यें कह्युं
पूजाने अर्थें फूल जोइयें छेयें तिहा लक्ष्मीदेवी देव पूजाने अर्थें लक्षदल कमल लइ आवी
करी ने हाजर कर्यां तेने लइने फरी पाछा वलतां हुताशन वनथी वीश लाख फूल लइ

विमानमां बेशीने पूर्वभवनो मित्र तिर्यक् जृंभक जातिनो देव छे ते पण आचार्यनी साथे गीत, नृत्य, वाजित्र प्रमुख महोत्सव करतो थको रह्यो छे तेना सहित आवीने पुष्पो श्रावकोने आप्या अने जैनना चैत्यनो महिमा वधास्यो, श्रीसंघ पण घणोज आनंद पाम्यो, ते नगरनो राजा पण बौद्धधर्म मूकी जिनधर्मी थयो ॥ तथा वली एक दिवस दक्षिण मार्गमा जाता थका श्रीवज्रस्वामीने श्लेष्म थइ आव्युं तेवारें साधुउनी पासेथी गोचरीमां सूंठ मगावी ते साधुउ लइ आव्या तेने पोते कानमां धरी राखीने विचार्युं जे पछी खाइशुं पण नूलमां एमज रही गइ, खवाणी नहीं ते पडिक्कमणो करती वखते पडिलेहणां करतां नीचे पडी गइ तेवारें गुरुयें विचार्युं जे हुं दश पूर्वधर छुं तेने आवी नूल ते वली केम पडी? एथी जाणुं जे हवे महारु आयुष्य स्वल्प रहेलुं जणाय छे माटे अनशन करवानो विचार कस्यो अने पोताना शिष्य वज्रसेनने कह्युं के बार डुकाली पडशे तेवारें तुं सोपारापुर पाटण जाजे, कोइ तने पूछे के सुनिक्ष क्यारे थशे तेवारें ताहारे एम ध्यानमां राखवुं के जे दिवसे लाख मोहनी एक हांमी चडे ते दिवसथी बीजे दिवसे सुगाल थाशे एवु थतो देखीने जवाब आपजे अमे तो हवे अनशन करीशुं एम कहीने वज्रसेनने सोपारा पाटण जवाने विदाय कस्यो, पोतानी पासे रहेला साधुउने जेवारें निक्षा नहीं मले तेवारें विद्यापिंम करीने केटला एकने जमाड्या, पछी पांचशे साधुउने लइने अनशन करवाने माटे चाल्या तेमां एक न्हानो चेलो हतो तेने नोलव्यो के तुं इहां बेश हुं आवुं छुं पण ते चेलायें मोहथी कह्युं जे हुं तो तमारी पछवाडे आवीश तो पण गुरुयें समजावीने राख्यो तेवारें चेलायें जाण्युं जे गुरु महाराजने अप्रीति न थाय तेम करु तो ठीक एवु चिंतवीने फरी पर्वतना मूलमा आवी तपेली शिला

उपर ते चेलायें अनशन करी दीधो, ते बालक हतो माटे सुकुमार पणाथी तत्काल शुभ ध्याने मरण पामी देवलोक गयो, देवताउयें नेत्रा थइने तेनो महिमा कयो, तेवारें बीजा साधुउयें पण विशेष दृढ थइने अनशन कर्या परंतु मिथ्यात्वी देवो आवीने साधुउने अ नशनमा मोदकनी निमत्रणा करवा लाग्या अने बोल्या के हे महाराज आ शुद्ध निर्दोष आ हार छे ते ल्यो तेवारें साधुउयें जाण्युं जे एने अप्रीति छे एवु जाणी नजीकना बीजा पर्वत उपर जइने अनशन कर्युं शुभ ध्यानथी काल करीने वज्रस्वामी प्रमुख देवलोक गया, तेवारें इन्द्र महाराजे रथ उपर बेशी पर्वतने प्रदक्षिणा देइ सर्व साधुउने वांद्या तिहां ते इन्द्र महाराजना र थनी रेखा मंडाणी तेथी ते पर्वतनुं रथावर्त एवुं नाम थयु तथा तिहांना वृक्ष पण साधुउने नमवाथी नमेला थकाज आज पर्यंत देखाय छे श्रीवज्रस्वामी देवलोक गया पछी दशमो पूर्व तथा चोथो अर्द्धनाराच संघयण विछेद गया तेवार पछी वज्रसेनाचार्य सोपारा नगरमां जिनदत्त श्रावक तथा तेनी जायी ईश्वरी नामे छे ए बेहुने प्रथम श्री वज्रस्वामीनो प्रतिबोध थयो हतो तेमने घेर गोचरी गया तिहां देखे तो धान मले नही तेवारें शेठ अने शेठा णीयें पोताना चार पुत्रो सहित लाख मूल्य धान्यनी हांमी चढावीने विचार कर्यो के सर्व आपणे छ जणायें आ रांधेला अनाजमां जहेर मेलवी खाइने पछी अनशन करी लेवु एवुं चितवी हांमीमां जहेर नाखवाने तयार थया छे एटलामां वज्रसेन आव्या तेमणे ते कृत्य देखीने पुछ्युं के, छुं? मरवानो उपाय करो छो।। तेवारें शेठाणी बोली धन तो अमारा पासे घणु छे परंतु धान्य मलतु नथी तेवारें वज्रसेन बोल्या गुरुयें कह्युं छे के लाख द्रव्यनी हांमी च ढे ... शेठाणीने पण पूज्यना वचननी प्रतीति छे

माटे वोली के जो सुगाल थइ जशे तो आ महारा चारे पुत्र हुं आपने आपीश ने तमे चा रेने दीक्षा आपजो एवी प्रतिज्ञा करी हांमीमां जहेर नाखवुं बंध कर्युं तेवार पछी बार प होर गया केडे केटलाक वाहाणो अनड वायराना योगथी छेटे निकली गया हता ते सारो वायरो वाह्याथी पाछां आव्यां तेमां जुवार भरेली हती ते लोकोयें लीधी, सुगाल थयो, ते धान्यथी जुगत्कार थयो तेथी जुगधरी एवुं नाम धाननुं थयुं एने लोक जापामां जुवार कहे छे पछी शेठ अने शेठाणीयें एक नागेंद्र, बीजो चंद्र, त्रीजो निर्वृत्ति अने चोथो विद्याधर ए चारे पुत्रोने दीक्षा अपावी अने पोते पण दीक्षा लीधी ते चारे साधुउ बहुश्रुत आचार्य थया तेनी चार शाखा निकली हवे विस्तार वाचनामां केटलाएक कुल, केटलाएक गण, केटलिएक शाखाउ कहेली छे ते सूत्रथी सुगम छे माटे लखता नथी सूत्र उपरथीज जाणी लेवुं अने अर्थ पण सूत्र वोले ते प्रमाणे करी देवो ॥ पुणोअज्जजसभद्दाउपुरउ ॥ वली आर्य यशोभद्रनी आगल थविरावली आ प्रमाणे जोवी ते कहे छे ॥ थेरस्सणंअज्जजसभद्दस्सतुंगिया यणसगुत्तस्स ॥ थविर आर्य जसभद्र तुंगीयायण गोत्रीयाना ए वे शिष्य एवो अर्थ सूत्रनो समजी लेवो वाकी अमे तो मात्र कोइक शाखानो संबंध लखियुं ॥ थविर छलुए रोहगुत्ते कोसियगुत्ते ॥ एनाथी त्रैराशिक मत निकल्युं तेनी कथा कहीयें छेयें श्रीमहावीरथी पांचशे चुमालीश वर्ष गया पछी श्रीरोहगुप्ताचार्यनो गुप्त नामा शिष्य हतो ते अतरंजिका नामे नग रीमा आव्यो ते वखत एक महोटो वादी पोट्टशाला नामे तापस छे ते पण ते नगरीमां आव्यो ते कहेवो छे तो के वींछी, साप, उंदर, हरिण, सूअर, काग, अनें पंखी ए सात चीजो बनावी आपवानी सात विद्याउनो धरनारो छे तेना भयथी ते सर्व लोकोने एम कहेके

महारो पेट फाटीने कदाच विद्या बाहेर चाली जाय तेना नयथी में महारा पेट उपर पाटा बांधी राख्या ठे एवा अभिमाननी वातो करे वली एक जांबूनी डाली हाथमां राखे अने लोको आगल एवुं कहे के आ जंबूद्वीपमां महारी साथे जीतवावालो कोइ नथी एवी रीते ते तापसे आवीने नगरीना राजाने पण कह्युं वली कह्युं के तमारा नगरमां कोइ वाद करवा वालो होय तो सुखेथी तेने तेडावीने महारी साथे वाद करावो नहींकां मने जीतपताका आपो तेवारें राजायें पडह वजडाव्यो के जे वाद करवाने इछा राखतो होय ते आ पडह रोकी राखे एटलामां ते गुप्तनामा रोहगुप्ताचार्यनो शिष्य गाममां गोचरीयें आव्यो ठे ते पडह सांजलीने बोल्यो हुं वाद करीश एवुं कही गुरुनी पासे आवी पडहनी हकीगत कही गुरु बोल्या ए वात तें ठीक करी नही केमके ते योगी क्रोधी ठे माटे तहारा उपर विद्या च लावशे तेवारें शिष्यें कह्युं आप जेनी चेला थका ते जितपताका लइ जाय तो पठी आपणी शी विशेपता कहेवाय' एवो शिष्यनो निश्चय जाणीने गुरुयें तेने सात विद्याउ आपी वली पण कह्युं जो कदापि तने कोइ अधिक उपद्रव थाय तो आ उघो मन्त्री आपु छु तेने तु फेर वजे तेथी सर्व उपद्रव निवर्त थइ जाशे एवी रीते गुरु पासेथी आज्ञा लइने बलश्रीनामा राजानी सनामां आवी योगीने कहेवा लाग्यो जे तहारो वाद शुं ठे ते सांजलाव योगी ठल करीने बोल्यो अमारा मतमां एक जीवराशि बीजो अजीवराशि ए बे राशि कही ठे एवुं यो गीनुं बोलवुं सांजलीने शिष्यें विचार्युं जे आ वातनो जो हुं हाकारो करीश तो ए कहेशे के में महारी वात एने मंजुर करावी, महारुं मत एणे मान्युं, तेथी लोको जाणशे के शिष्य हारीगयो ... शिष्ये पण कुतर्क करी कह्युं के बे राशि तुं कहे ठे ते खोटुं कहे ठे परंतु जीव,

अजीव अने त्रीजो नोजीव एवी त्रण राशि छे तेवारें योगी बोल्यो तुं नोजीव राशि केवी रीते कहे छे?
शिष्यें तरत एक दोरो वाटीने नूमि उपर नाख्यो ते हालवा लाग्यो त्यारें कह्युं के जो आ नो
जीव छे, एवी घणी युक्तियो लगाडीने संसारमां सर्व मली जीव, अजीव अने नोजीव ए त्रण
वातो स्थापन करी आपी तेथी योगी हारी गयो पछी योगीयें विद्याउ चलाववा मांडी तिहां
प्रथमतो महोटा मंकने मारवावाला एवा वींछीउ बनाव्या तेवारें चेलायें गुरुयें बतावेली वि
द्याना बलथी मोर बनाव्या ते आवीने सर्व वींछीयोने खाइ गया,तेवारें योगीयें सर्प बनाव्या
तिहां चेलाये नोलीयां बनाव्यां, योगीयें उंदर बनाव्या तेवारें चेलाये बिलाडी बनावी, यो
गीयें तीखा सींगडावाला हरिण बनाव्या तेवारें चेलायें चितरा बनाव्या तेणे आवीने सर्व
हरिणोने मारी नाख्या, योगीयें सूअर बनाव्या तेवारें चेलायें सिंह बनाव्या, योगीयें काक
बनाव्या, चेलायें घूड बनाव्या, योगीयें पंखी बनाव्या, चेलायें बाज बनाव्या, एमां पण योगी
हार खाइ बेगे तेवारें गर्दनी विद्या चलावी तेवखत चेलाये उंघो फेरव्यो तेथी तेनी विद्या
नाशि गइ, एरीतें योगी हारीगयो अने चेलो जीत करीने घणा लोकोनी सार्थे परिवर्यो थको
गुरुनी पासें आव्यो गुरुयें पुछ्युं केवीरीतें जीती आव्यो तेवारें त्रण राशि थापी तेथी जीत्यो
एवु कह्युं त्यारें गुरु बोल्या हे वत्स तें आ सारी वात नही करी, नगवानना मतथी तु विपरीत
बोल्यो, माटे राजसनामां जइने मिछामि डुक्कडं दइ आव अने वादीने जीतवाने माटे जे कु
युक्ति लगाडी तेनो संघमां मिछामि डुक्कडं दइ आव, जो मिछामि डुक्कडं नही देइश तो जैनम
तनो उछापक थइश ते सांनली शिष्य बोल्यो हवे महारा मुखथी हुं केम जुगे पडुं, महाराथी
तो मिछामि डुक्कडं देवाय नही, में खोटुं पोहोंज थापन कर्युं छे ! राशितो त्रणज छे, गुरुयें

कह्युं के तुं महारी साथें पण जो वाद करवा इछतो होय तो चाल राजसत्तामां जइ आ
पणे बे वाद करीयें एम कही गुरु पोताना शिष्यने लेइने राजानी पासें आव्या अने केहेवा
लाग्या के हे राजन् आ महारा शिष्यें वादीने जीतवा माटे जे त्रण राशि थापन करी ते वात
जूठी छे, ए अमारुं कह्युं मानतो नथी ने महारी साथे वाद करशे तेनी वचमां आप साक्षी
धर रहो तो अमे वाद करीयें राजायें कह्युं सुखे वाद करो पछी ते बेहु गुरु शिष्य वाद क
रवा लाग्या तिहां छ महीना सुधी वाद कर्यो १४४४ प्रश्न कुतर्कना शिष्ये थापन करी पूछ्या
ते सर्व प्रश्न गुरुयें त्रोडी नाख्या तो पण समज्यो नही राजाने घणो वखत खोवो पड्यो ते
वारें राजायें जाण्युं जे हुं केटला दिवस एउंना झगडामां खोटी थाउं' एम विचारी गुरुने कह्युं
हे स्वामी आपनुं बोलवु सर्व साचुं छे पण महारा राज्यसबंधि कामकाजमां बिगाड थाय छे
माटे हवे मने साक्षीथी मुक्त करो गुरुयें कह्युं आवती काले सर्व रगडो मटाडी आपीश एम
कही बीजे दिवसें वाद ठहेरावीने कुत्रिकापणमां जे वस्तु त्रण लोकमां होय ते मले छे माटे
जो तु साचो होइश तो नोजीव ए चीज पण मलशे, ते लइ आवीश' ते वात चेलायें पण मान्य
करी अने राजा लोकोये पण कह्युं के ठीक छे पछी चेलायें कुत्रिकापण जइने जीव, अजीव
अने नोजीव माग्या तेवारें देवें जीवने बदले तो उंदर लावीने आप्यो तथा अजीव माग्युं
तेवारें पथ्थर लावीने आप्यो पछी चेलायें जेवारें कह्यु के नोजीव लाव तेवारें बे त्रण वार
तेहिज पूर्वली चीज लावीने आपे पण नोजीव आपे नही एवामां आकाश वाणी थइ के
जगतमां जीवने अजीव ए बेज राशि छे पण त्रीजी कोइ राशि नथी तेवारें सर्व लोक बोल्या
गुरु साचा छे गुरुयें शिष्यने कह्युं केम हवे समज्यो के नथी समज्यो ? जो समज्यो होय तो

मिछामि डुक्कडं आप ते सांजली शिष्य बोल्यो एम कांइ हुं मानुं नही तेवारें गुरुने रीश चढी
तेथी जस्मनुं कुंभो तेना माथा उपर नाखीने गछथी बाहेर काहाडी मूक्यो तेणे जइ वैशे
षिक मत थापन कर्युं तेमां नव इव्य, सत्तर गुण, पांच कर्म, त्रण सामान्य, एक विशेष, एक
समवाय, ए छ पदार्थ प्ररूप्या एना प्ररूपवाथी चोवशें चुमालीश नेद थया तिहां षट्गोत्रथी
उलूका षट्चालोउलूकम्मषट्लूक ॥ एवा नाम अने गोत्रना मिलापथी नाम स्थापन थयुं,
इहांथी त्रैराशिक शाखा थइ इति रोहगुप्त कथा संपूर्ण ॥ ॥ हवे थविर प्रियग्रंथथी मध्यमशाखा
निकली तेनो अधिकार आ प्रमाणे छे ते कहे छे श्रीहर्षपुरनामा नगर जेने हमणा अजमेर
कहे छे तेमां त्रणशें जैनमंदिर अने बारशें अन्यदर्शनीउना देरा हता तथा आठ हजार घर
ब्राह्मणोना अने छत्रीश हजार घर वाणीयाउना हता वली नवसें बाग, सातसें वावडी, सा
तसें दानशाला हती तिहां सुजटपाल नामे राजा राज्य करतो हतो एक दिवसें ब्राह्मणोये
यज्ञ मांड्यो एवामां तिहां प्रियग्रंथसूरि पधार्या तेणे वासक्षेप मंत्रीने श्रावकोना हाथमां
आप्यो श्रावकोये जइने, यज्ञमां जिहां ब्राह्मणो होम करवाने सारु बकरो लाव्या हता ते
बकरानी उपर वासक्षेप नाख्यो तेना योगें ते बकराना शरीरमां अंबिका देवीयें प्रवेश कर्यो
तेवारें ते बकरो तिहांथी उडी आकाशमां जनो रहीने मनुष्य वाणीयें बोलवा लाग्यो के अरे
निर्दयी ब्राह्मणो तमे सांजलो के तमे जेम निरपराधि जीवोने निर्दयी थइने मारी नाखो छो
तेम जो हुं पण हमणा निर्दय थइ जाउं तो तमो सर्वेने मारी नाखुं, जेवी रीतें हनुमाने रा
क्षसोमां करी देखाड्युं तेम हुं पण तमोने करी देखाडुं परंतु महाराथी दयानो गुण दूर थइ
शकतो नथी माटे हुं तमारी पेठें राक्षसो जेवो निर्दयी थतो नथी तथापि हे पापीयो तमे म

हारी वात सांजलो जे तमे बिचारा आवा कोमला कोमला पशुउने हणो गे, ते पशुउने ह
एवानुं पाप सांजल्युं ठे? जो नही सांजल्युं होय तो हुं तमोने कही सजजावु बु ते सांजलो
जे पशुने मारीयें ते पशुना जेटला रोम होय तेटला हजार वर्ष पर्यंत ते पशुनो मारनारो
प्राणी नरकमां पडी डुःख जोगवे ठे वली जे कोइ सोनानो मेरुपर्वत बनावीने दानमां
आपी दीये अथवा पृथ्वीनुं दान आपे तेटला दानथी पण अधिक फल जे एक प्राणी मरतो
होय तेने बचावे ते जीवने मले ठे माटे मरता प्राणीने बचाववा जेटलुं फल सोनाना दानथी
तथा पृथ्वीना दानथी होय नही केमके बीजा सर्व प्रकारना दान जे ठे तेनुं फल तो कालां
तरमां खूटी जाय ठे, जोगवाइ जाय ठे, परंतु अजयदाननुं फल केवारें पण खूटे नही,
सर्वथी श्रेष्ठ फल ते अजयदाननुंज ठे एवा तेना वचन सांजली यज्ञ करनारा निर्दयी
ब्राह्मण लोको बोल्या तुं कोण गो? बकरो बोल्यो हुं अग्नि देव बु, बकरो महारो वाहन
ठे, तमे पशुउने मारो गो तेना योगे महाडुःख तमने वेठवा पडशे, माटे तमारा उपर मने
दया आवी तेथी उपदेश करवा आव्यो बुं ब्राह्मणो बोल्या अमे धर्म थवाने माटे मारीये
ठैयें, बकरो बोल्यो अरे डुष्टो पशुवध करवाथी वली धर्म ते क्यांथी थवानो ठे? एतो महोटुं
जबरजस्त पापनुं स्थानक ठे जो एनो सुखो तमारे पूठवो होय तो, जैनाचार्य श्रीप्रियग्रंथसू
रिने पूठो, ते महाकृपापात्र ठें माटे तमोने समजावी तमारो निस्तार करशे तेवारें ब्रा
ह्मणो सर्व प्रियग्रंथसूरि पासें पूठवा आव्या, तेमणे दया रूप शुद्ध धर्म बताव्यो ते वखत
ब्राह्मणप्रमुख घणा लोको जैनी थया, एवा श्रीप्रियग्रंथसूरि हता एमनाथी मध्यमशाखा
निकली ॥ तथा शक्ति आर्य समित गोतम गोत्रीयाथी ब्रह्मदीपिका शाखा निकली तेनो

संबध आ प्रमाणे छे ते कहे छे आभीर देशमां, अचलपुर नगरनी नजीक एक कन्ना बीजी बेन्ना ए बे नदीयो हती, तेनी वचमा ब्रह्म नामा द्वीप हतो तिहां पांचशें तापस वसता हता तेमां एक तापस पोताना पगमां लेप लगाडी पावडीयो पहेरी हरहमेस बेन्ना नदीना पाणीमांथी उतरतो हतो पण पाणीमां मूथे नहीं जेवी रीतें थल उपर सुका मार्गमां चाल्या जइयें तेवी रीते पाणीमांथी चालीने गाममां पारणु करवा आवे तेवारें लोक तेनी प्रशंसा करतां थका बोले जे आ तापसनी जूउ केवी अथाग तपनी शक्ति छे, एवा भ्रममां घणा लोको मिथ्यात्वी थइ गया अने तापसनी भक्ति करवा लाग्या वली श्रावकोने कहे के जूउ अमारा गुरुनो केवो प्रभाव छे? एना प्रभावमां कांइ न्यूनता नथी एवा उपदेशथी घणा लोको मिथ्यात्वी थता देखीने श्रावकोये श्रीवज्रस्वामीना मामा श्रीआर्यसमितसूरिने बो लाव्या, सूरि आव्या, तेवारें श्रावकोयें पुछयुं स्वामीजी आ तापसनी केवा प्रकारनी तपशक्ति छे? आचार्ये कह्युं के तपशक्ति कांइ पण नथी परंतु पादलेपशक्ति छे तेवारें श्रावक लोक सर्व समजी गया, पछी तापसनुं छिद्र उघाडुं पाडवा माटे ते तापसने श्रावकोयें पोताने घेर भोजनने अर्थे निमंत्रणा करी तेवारें मिथ्यात्वी लोक घणा खुशी थया अने जाणवा लाग्या जे श्रावको पण हवे आपणा धर्ममां आवी जाशे एवुं जाणीने श्रावकोने घेर योगीने लइ गया तिहां श्रावकोयें भक्तिना मिसे करीने पावडी उपर तापसना पग धोइ नखाव्या तेवारें योगीना मनमांतो महोटु दुःख थयुं पण शरमनो मार्यो शुं करे! नाकारो कहेवाय नहीं पछी कांइ भोजन कर्युं कांइ नहीं कर्युं अने तरत तापस तिहांथी उठयो तेने श्रावको आदर देइने पाछा तेना स्थानक उपर पोहोचाडवाने साथें चाल्या, मनमांतो एवुं समजता हता जे जो

इयें केवी मजा थाय ळे पण वाद्दारथी तेने स्थानकें पोदोचाडवानुं भोजन घालीने तेनी साथे वलावा गया सर्व नदीकिनारे आवी ऊना तेवारें तापसें विचार्यु जे थोडोसो लेप दशे तो पण नदी उतरी जइश एम विचारी नदीमां पग दीधो के तरत डुबवा लाग्यो तेवारें लोकोमां निंदा थइ पढी दया लावीने श्रावकोये नदीमांथी खेंची पाढो बाहेर काढाव्यो, नदीकां तणाइ जतो द्दतो, एटलामां लोकोने प्रतिबोध आपवाने माटे श्रीआर्यसमित सूरि पण तिहां आव्या अने चिपटी वजाडी बोल्या के हे वेन्नाद नदी ! मद्दारें पहेले पार जावु ळे माटे मार्ग आप ए टलुं आचार्यना मुखमांथी वचन निकलतांज नदीना बेहु कांठ नेला मली गया तेवारें लोक विस्मय पाम्या पढी आचार्य तथा बीजा नगरना लोको सर्व मली ब्रह्मद्दीप गया तिहां तापसोने धर्मोपदेश आपी प्रतिबोध पमाड्यो तेवारें पांचसें तापसोये दीक्षा लीधी अने चूर्णना प्रयोगथी तापस नदी उपरथी चालतो द्दतो परंतु तपस्यानो प्रन्नाव न द्दतो एवी वात सर्व लोकोमां प्रसिद्ध थइ, जेनधर्मनो मद्दिमा वृद्धि पाम्यो पढी संघसद्दित गुरु पोताने स्थानकें आव्या, तिहां तापस साधुउथी ब्रह्मद्दीपिका नामे शाखा थइ ॥ ॥ द्दवे थविर आर्यस्थंमिलनी पढी चौद गाथाउनो अर्थ कहीये ढेयें ॥ गोतमगोत्रीया फल्गु मित्रने वांडं ढुं, बीजा वशिष्ठगोत्रीया धनगिरिने वांडं ढुं, कांइक शिवभूति कौशिक गोत्रीया डुर्जंत अने कृष्णने वांड ॥ १ ॥ ॥ एमने मस्तकें करी वांदीने वली नइ, नक्षत्र अने रक्षित ए त्रणे काश्यप गोत्रीयाने वांड॥ २ ॥ ॥ तथा एक आर्य नाग गोतमगोत्रीया, बीजा आर्य जेहिल वासिष्ठगोत्रीया, त्रीजा आर्य विष्णु माढरगोत्रीया अने चोथा आर्य कालक गोतमगोत्रीया ए चारने वांड ॥ ३ ॥ ॥ गोतमगोत्रीया कुमरसपलिअक तथा नइक तथा स्थविर आर्यवृद्धि गोतमगोत्रीयाने हु वांडु ढु ॥ ४ ॥ ॥ ते

मने मस्तकें करी वांदीने वली चारित्र ज्ञान सहित एवा स्थविर संघपालक गौतमगोत्रीयाने वांडुं ॥ ५ ॥ ॥ वली आर्य हस्ति काश्यपगोत्रीया, क्षमावत समुद्र सरखा धैर्यवत, जे उनालाना पहेला महीनामां एटले चैत्रमहिनाना शुक्लपक्षमां कालगत थया तेमने वांडु ॥ ६॥ वली नला व्रत शील लब्धिसहित जेमना दीक्षामहोत्सवमां देवतायें आवीने मस्तक उपर छत्र राख्युं एवा स्थविर आर्यधर्म ते प्रत्यें वांडुं ॥ ७ ॥ ॥ तथा एक हस्ति, बीजा धर्म अने त्रीजा सिंह ए त्रण काश्यपगोत्रीया मोक्षमार्गना साधक तेमने वांडु ॥ ८ ॥ ॥ तेमने मस्तकें करी वांदीने पछी स्थिर छे चारित्र अने ज्ञान जेमना एवा थविर आर्य जंबु गौतमगोत्रीयाने वांडु ॥ ९ ॥ ॥ तथा जे कोमल हृदयवाला अने मानरहित तेमज घणुज थयुं उत्तम छे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र जेमनुं एवा नदिक पिता काश्यपगोत्रीयाने वांडु ॥ १० ॥ तथा स्थिर छे चारित्र जेमनुं वली उत्तम सम्यक्त्व अने सत्व तेणे करी सहित एवा देसि गणि क्षमाश्रमण माढरगोत्रीयाने वांडुं ॥ ११॥ ॥ तेवार पछी वली जे अनुयोगना धारक, सागर जेवा धैर्यवान् गंनीर, महा सत्ववत एवा थविर उत्तम क्षमाश्रमण वछगोत्रीयाने वांडु ॥ १२ ॥ ॥ पछी वली जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप तेमां थिर थयेला, महागुणवान् एवा थविर कुमार धर्मगणी गुणवानने वांडु ॥१३॥ ॥ वली सूत्र अने अर्थ रूप रत्नेकरी नरेला अने क्षमामार्दवादिगुणसंपन्न, जेणे सर्व सूत्र पुस्तकारूढ कर्या एवा देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण काश्यपगोत्रीयाने वांडु ॥ १४ ॥ ॥ इति स्थविरावली सूत्रार्थः ॥ ॥ हवे यद्यपि इहां आ स्थविरावलीमां श्रीआर्यरक्षित प्रमुखना नाम कह्या नथी तथापि ए पण स्थविर सरखाज थया छे तेमनो संबंध लखीयें छेयें ॥ ॥ दशपुर नाम नगरमां, सोमदेव पुरोहित

तेनी रुद्रा नामे जार्या तेमना पुत्र आर्यरक्षितजी परवेश गया, तिहांथी चौदे विद्या जणीने आव्या तेमने राजायें हाथी उपर वेसाडी, महोत्सवसहित नगरमां प्रवेश कराव्यो इहां सर्व सज्जन कुटुंब मित्रादिक आवीने मल्या परंतु एमनी माता मली नही माताने पगें ला ग्या तो पण माता खुसी थइ नही तेवारें आर्यरक्षितजीयें पूछ्युं माताजी तमे आमणा डुमणा देखाउ छो पण कांइ हर्ष आनंद दर्शावता नथी तेनुं कारण महारा उपर कृपा करीने प्रकाश करो' ते सांजली माताजी बोल्या हे पुत्र तु जे विद्या शीखी आव्यो छो ते सर्व नरकपतननी विद्याउ छे कारण के तुं घणा होमादिक लौकिक कृत्य करवानां शास्त्र जणी आव्यो छो ते हुं जैनी छुं माटे ए दुर्गतिना देवावालाने केवी रीते रुडा करी मानुं' हुतो जेथकी ताहारा आत्मानुं कल्याण थाय एवां शास्त्र तुं जण्यो होय तो सुबुद्धिमान् करी मानु ते सांजलीने पुत्र बोल्यो हे माताजी आस्माने तारनार कयां शास्त्र छे? ते मने कहो तो हु तेनो पण अन्यास करुं मातायें कह्युं के दृष्टिवाद जणो तेवारें आर्यरक्षितजीयें जाण्युं जे सर्व मतनां शास्त्र जणवा योग्य छे माटे महारे ए शास्त्र पण जणवुं पछी रात्रीयें माता जीने पूछ्युं हुं दृष्टिवाद क्यां जणवा जाउ मातायें कह्युं तोसली पुत्राचार्यनी पासे जइ ए शास्त्र जणो हवे आर्य रक्षितजीयें महोटे परोढीयें उठीने जणवा माटे प्रयाण कर्युं केट लुंक दूर गयो के पोताना पितानो मित्र एक ब्राह्मण शेलडीना सांठा हाथमां लइने आवतो हतो ते साहामो मल्यो तेणे पूछ्युं तुं कोण छो? एणे कह्युं हु आर्यरक्षित छुं तेवारें तेणे कह्युं के हुंतो तने परदेशथी आव्यो सांजलीने मलवा सारु आव्यो छुं अने आ शेलडीना सांठा पण ताहारे वास्ते लाव्यो छु ते सांजली आर्यरक्षितें सेलडीना सांठा गणी जोया तो

साडा नव संख्यायें थया तेवारें विचार्यु जे हुं दृष्टिवादना साडा नव जाग जणीश एवु चिं तवी ते ब्राह्मणने कह्युं के तमे म्हारी माता पासें जाउ हुं आवुं छु वली तमे माताजीने कहेजो के आर्यरक्षित मने मल्या हता एवुं कहीने आगल चाल्यो अने पहेला ब्राह्मणे पण एमनी माता पासें जइ शेलडी आपीने कह्युं के तमारो पुत्र आर्यरक्षित मने रस्तामां मल्यो ते सांजली मातायें जाण्युं जे म्हारा पुत्रने शुकन तो सारा थया ए साडा नव पूर्व जणशे एवुं मनमां जाणी लीधु हवे आर्यरक्षित जिहां शिष्य पाठ करे छे तिहां गया अने विचारवा लाग्या जे एमने केवी रीते वंदना करु एवु चिंतवीने उपासरानी बाहेर बेठा एटलामां ढढर नामे कोइ श्रावकें, निसिहि कही उपासरामां जइने उंचे स्वरे वांदणा देवानी जे इरियावहि प्रमुख किरिया छे ते करी वंदना करी ते विधि सर्व आर्यरक्षित सीखी गया पछी गुरु पासें आवी तेवाज विधिथी गुरुने वांदीने विनयपूर्वक आगल बेठा गुरुयें जाण्यु जे आ कोइ नवो श्रावक छे पण वांदवानो विधि तो बराबर जाणे छे पछी ढढर श्रावकने गुरुयें पुछ्युं तेवारें ढढरें उ लख्यो जे आ गुरुनो नाणेज छे पछी गुरुने कह्युं आ तो आर्यरक्षित आपनो नाणेज छे तेने गुरुयें धर्मोपदेश आप्यो तेवारें आर्यरक्षितें कह्युं मने दीक्षा आपो म्हारी मातायें तो दृष्टिवाद जणवानी आज्ञा आपी छे तेवारें गुरुयें लोकोना जयथी अन्यस्थानके जइने दीक्षा दीधी पछी पोतानी पासे जेटली विद्याउ हती ते तो सर्वे गुरुयें जणावी वली अ धिक पूर्व जणाववानें माटे श्रीवज्रस्वामीनी पासे मोकल्यो तिहां जातां रस्तामा उज्जयणी नगरी आवी तिहा श्रानद्रगुप्तसूरि मल्या ते खुशी थया अने बोल्या के तें सारु काम कर्युं पण हवे मने हाल अनशन करवु छे माटे तुं अनशनने सहाय आपीने पछी जाजे एवां

गुरुनां वचन सांजली तिहां अनशनमां सहायी थयो, जद्रगुप्त सूरियें कह्युं के तुं वज्रस्वामीनी पासें जणजे पण तेमनी सघाते रात्रें नेलो रहीश नही जुदा उपासरामां रात्रें रहेजे, केमके जे श्रीवज्रस्वामीनी साथे एक रात्रीज रहे ते जो सोपक्रमी आउखावालो होय तो पण वज्रस्वामीनी साथेज मरण पामे ए वात सांजलीने तहत्ति करी संथारो करावीने श्रीवज्रस्वामीना पासे आव्यो रात्रें नगरने बाहेर रह्यो अने तेज रात्रीयें श्रीवज्रस्वामीने सुपनुं आव्युं जे महारी पासें पात्रमां दूध जरेलुं हतुं ते कोइ प्राहुणो आवीने पी गयो स्वल्पमात्र शेष रह्युं एवामां प्रजातना श्रीआर्यरक्षितजी पण तेमनी पासे आव्या तेमने वज्रस्वामीयें पुछ्युं तुं किहांथी आव्यो? तेवारें सर्व हकीगत कहीने कह्युं के हुं बीजा उपासरामां रहीने आपनी पासें जणीश वज्रस्वामीयें पूछ्युं महारी पासे जणवुं ने बीजा उपासरामां रहेवुं एम तने शामाटे करवुं पडे छे? तेवारें जद्रगुप्ताचार्यें कहेलुं वृत्तांत तेमने संजलाव्युं ते सांजली वज्रस्वामीयें उपयोग आपीने जाण्युं जे आ वात सत्य छे, महापुरुषनां वचन प्रमाण छे हवे श्रीआर्यरक्षितजीयें नवपूर्व शास्त्र तो सपूर्ण मुख पाठे करी लीधो अने दशमो पूर्व जणे छे, एटलामां माता पिताउने घणा दिवस पर्यंत श्रीआर्यरक्षितनुं कोइ पण समाचार न मलवाथी मातापितायें आर्यरक्षितनो न्हानो जाइ फल्गुरक्षित छे तेने बोलावीने आर्यरक्षितनी पासें मोकल्यो तेणे आवी कह्युं के तमे माता पितानी पासे चालो आर्यरक्षितें कह्युं के चालीने शुं करु? तेणे कह्युं धर्मोपदेश आपो, केमके तेमने दीक्षा लेवानी इच्छा थइ छे तेने आर्यरक्षितें कह्युं तुंतो दीक्षा लइ ले फल्गुरक्षितें कह्युं हुं दीक्षा लेइ लेउ हुं अने तमे तिहां चालो तेवारें फल्गुने दीक्षा आपीने गुरुने पूछ्युं हवे दशमो पूर्व केटलो शेष महारे जण

वानो रह्यो ठे ' गुरुय कह्यु हजी घणो ठे तुं उद्यम कर तेवारें तिहांज रही नणवानो उद्यम कर्यो वली केटलाएक दिवस पठी मातापितानी पासें जवानुं मनमां घणुं उमग थयो तेवारें फरीथी गुरुने पुठ्युं महाराज दशमो पूर्व हजी केटलो शेष रह्यो ठे? गुरुयें कह्युं दशमा पूर्वनुं बिंदुमात्र तो तुं शीख्यो अने समुद्र जेटलो शेष नणवो रह्यो ठे पण उद्यम कर तेवारें वली पण नणवानो उद्यम करवा मांम्यो पण चित्त बराबर लागे नही, तेवारें कह्यु हवे तो हुं जइश त्यारें वज्रस्वामीयें जाण्युं जे एटलो पूर्वलो पूर्वनो नाग हवे शेष रहेशे, बाकी विछेद थइ जाशे, कारणके हमणा बीजो कोइ एटला पूर्वनो नणनार ठे नही, एवो मनमा विचार करीने श्री आर्यरक्षितने मावित्रो पासें जवानी रजा आपी तेवारें थेट्ठ नाइउ दशपुर नगरें आव्या, तेमने राजायें महोटा महोत्सवसहित गाममां प्रवेश कराव्यो पठी मातापिता प्रमुख सर्व कुटुंबने धर्मोपदेश देइ सर्वेने दीक्षा आपी, एक पितायें दीक्षा लीधी नही ते कुटुंबना मोहने लीधे तेमनी पासेंज रहे पण दीक्षा लीए नही तेवारें आर्यरक्षितजीयें कह्युं तमें दीक्षा शामाटे लेता नथी? पितायें कह्युं के मने एकतो म होटुं धोतीयुं, बीजी जनोइ, त्रीजुं ठत्र, चोथा पगरखा अने पांचमुं कमंमल ए पांच वस्तु विना चाले नही जो ए पांच वाना विना चालुं तो मने लज्जा थाय तेवारें गुरुयें पांच वाना वापरवानी ठूट आपीने पण दीक्षा दीधी पठी गुरुयें जाण्युं जे आ वृद्धने तो जरुर तारवो ज जोइयें एवो निश्चय करी ठोकराउने शीखावी मुक्युं जे, अमे जेवारें चैत्यना दर्शन करवा जइयें तेवारें तमे सर्वे साधुउने वंदना करजो, पण एक ए वृद्ध साधुनें वांदशो नही, जेवारें तमोने कहे के अमने कां वांदता नथी? तेवारें तमे कहेजो के तमे साधु केम कहेवाउ?

तमे तो छत्र राखो छो पछी छोकराउए तेमज कर्युं तेवारे वृद्धे कर्युं के हे वत्सो ! साधु छत्र नही राखे तो महारे पण नही राखवुं एम कही छत्र नाखी दीधु एमज जनोइ, पावडी अने कमंडळ सर्वनो त्याग करी दीधो पण कर्युं के धोतीयु तो महाराथी मूकारो नही तेवारें आर्यरक्षितजी बोल्या एमज रहेवा आपो नहि धोत्युं पहेरेलुं छे एटलामां एकदिवस एक साधुयें अनशन करीने काळ कर्यो तेवारें आर्यरक्षितजीयें बीजा साधुउने शीखावी मुक्यु के तमे मांहोमांहे विवाद करजो पण साधुने परठवा माटे उपाडशो नही एवुं शीखवीने पछी बोल्या के आ साधुना शरीरने जे परठवी आवे तेने महालाभ थाय तेवारें साधुउ मांहोमांहे बोलवा लाग्या तेमा एकें कर्युं हु लइजाउं, बीजाये कर्युं हुं लइजाउ तेमने देखीने सोमदेव वृद्धसाधु बोल्या जे शुं ए कार्य करवामा घणी निर्जरा थाय छे ? गुरु बोल्या हा घणी निर्जरा थाय छे तेवारें वृद्ध साधु बोल्या के ए काम हुंज करीश गुरुयें कर्यु इहां उपसर्ग घणा छे माटे उपसर्ग सहन करवानी शक्ति होय तो ए काम करवु नहींको अरिष्ट थइ जाय तेवारें वृद्ध साधु बोल्या हा, हुं सर्व उपसर्ग सहन करीश, एम कही ते अनशनी साधुना शरीरने उपाडीने लइ चाल्यो, तिहां आचार्यें श्रावकोना छोकराउने शीखवी मुक्युं, तेथी छोकरायें हाको करी पाछळ पडीने वृद्धनुं धोतीयुं खोंसी लीधुं तेवारें वृद्धें जाण्यु जे उपसर्ग तो छे पछी आचार्य सर्व परिवार लइने वृद्धनी पाछळ गया, तेने देखीने वृद्ध लज्जा पाम्यो गुरु बोल्या महोटो उपसर्ग थयो, हवे बीजो चोळपट्टो लावो तिहा साधुउ बोल्या, महोटो चोळपट्ट तो लइने लइ आवो तो थाय, वृद्धें कर्युं चोळपट्टोज आपो लाजतो गइ हवे शुं ने ! ! एम करी चोळपट्टो पहेराव्यो हवे ते वृद्ध गोचरी करवा जाय नही तेवारें गुरुयें साधुउने

कही मुकवुं के तमे गोचरी लावी आपशो नही, ए वृद्ध पोतें जइ लइ आवशे एवु कहीने गुरु अन्य गामे चाल्या गया पाछलथी साधुओए पोतपोतानो आहार लइ आवीने जमी लीधो अने वृद्ध तो नुख्यो बेठो रह्यो बीजे दिवसें गुरु आव्या तेमणे साधुओने कह्युं केम रे वृद्ध साधुने आहार शा वास्ते नही लइ आप्युं ? एवीरीतें कृत्रिम कोप कस्यो तेवारें साधुओ बोल्या ए वृद्ध पोतें गोचरी केम जाता नथी! पछी गुरु पोतें गोचरी जवा लाग्या वृद्धें जाण्युं जे आतो गुरुनो अविनय थाय छे एवुं चिंतवीने वृद्ध पोतेंज गोचरी गयो तिहां एक शेठने घेर खरा दरवाजाने तो जाण्युं नही अने पाछलना बारणाथी तेना घेरमां घुसवा लाग्यो, तेवारें घरना माणसो बोल्यां, साहामा बारणामांथी आवो एवु सांनली वृद्ध साधु बोल्या अरें लक्ष्मी छे ते तो मरजीमां आवे ते तरफथी आवे जे तरफथी आवे ते तरफथी सारी जाणवी, एनो कांइ विचार राखवो नही तेवारें शेठें खुशी थइने बत्रीश लाडु वहोराव्या ते लइने वृद्ध साधुयें आवी गुरुने देखाड्या ते जोइ गुरुयें विचार कस्यो जे बत्रीश शिष्य महारा थाशे, वृद्ध बोल्यो पहेलो लाज थयो ते सर्व साधुओने देवो जोइयें, एम विचारी सर्व मोदक साधुओने आपी दीधा फरी गोचरीयें जइने खीरनुं नोजन लइ आवी पोते पारणुं कस्यु एम ए वृद्धसाधु निक्षामां लब्धिवत थयो, ज्यां जाय त्यां जो ते दातार महालोनी होय तोपण उत्तम नाजन एने वहोरावे एम अनुक्रमे ते वृद्धसाधु गच्छनो आधारनूत थयो ए श्री आर्यरक्षितजीना गच्छमां त्रण साधु लब्धिवत थया तेना नाम कहे छे एक डुर्बलिका पुष्पमित्र, बीजो घृतपुष्प मित्र अने त्रीजो वस्त्रपुष्पमित्र तथा चार साधुओ महार्पंक्ति थया तेना नाम कहे छे एक डुर्बलिका पुष्पमित्र, बीजो वृद्ध, त्रीजो फल्गुरक्षित अने चोथो गोष्ठामाहिल ए चार

जाणवा हवे एक दिवसें इंद्रमहाराजें सीमंधरस्वामीने निगोद विचार पूछयो जगवाने वर्णन करी संजलाव्युं तेवारें इंद्रे पूछ्युं जरतक्षेत्रमां कोइ एवो विचार कहेवावालो हालमां छे? जगवाने कह्युं आर्यरक्षित सूरि छे पछी इंद्रमहाराज वृद्धरूप करी आर्यरक्षितजी पासें आवीने पूछवा लाग्यो के हे महाराज? महारुं आयुष्य हजी केटलुं छे? तेवारें गुरुयें श्रुतछपयोगथी कह्युं के तुं पहेला देवलोकनो इंद्र छो पछी निगोदना सूक्ष्म विचार पूछया गुरुयें ते सर्व खुलासापूर्वक कह्या तेवारें इंद्रमहाराज गुरुनी स्तवना करी उपासरानुं द्वार फेरवीने चाल्या गया, शिष्यने खबर पडी जे इंद्र आव्यो हतो हवे वली आर्यरक्षित सूरियें बुद्धिनी हानी थती देखीनें सूत्रोना जूदा जूदा चार अनुयोगद्वार, कह्या एवा ए आर्यरक्षित स्थविर थया॥ हवे ए प्रमाणे विद्याधरगछीय वृद्धवादीना शिष्य सिद्धसेन दिवाकर थया तेनो संबंध आ प्रमाणे छे के एक साधु वृद्धपणामां महोटा स्वरथी जणतो हतो तेने देखीने राजायें कह्युं के तुं शुं मूसलो फुलावीश? जे एटलो घलावलो गोखे छे! तेवारें तेणे सरस्वतीने चोलावी विद्या पामीने चोवटा मांहे मूसलो उजो करी राजासहित सर्वलोकोने देखतां फुल्लवित काव्य कह्युं तेथी मूसलो फूल्यो ते जोइ सर्व राजा प्रमुख चमत्कार पाम्या एवो वृद्धवादि थयो तेमणे सिद्धसेन ब्राह्मणने प्रतिबोध्यो अने ते सिद्धसेने वली विक्रमादित्यराजाने प्रतिबोध आप्यो, श्रीशत्रुंजयनो संघ चलाव्यो, तेना संघमां एकशोने सीतेर शोनाना देवल चालता वली शत्रुंजानो उद्धार कराव्यो तथा श्रीसिद्धसेन सूरिना सहायथी विक्रमादित्य राजायें संवत् चलाव्यो, आगल श्रीवीरजगवाननो संवत् हतो, ए वृद्धवादी अने सिद्धसेन ए पण बेहु थविर थया॥ ॥तथा वली त्रण कालिकाचार्य थया छे तेमां एकतो श्रीवीरजगवानथी त्रणशेने छहोंतेर वर्षे थया तेमणे श्रीपन्नवणा सूत्र बनाव्युं

जेणे सोधर्मेंइने निगोदनो विचार कह्यो, कोइक आचार्य कहे छे के गाथा देखवाथी ए कालिकाचार्य वीर संवत्थी त्रणशेंने वीश वर्षे थया छे, कोइ कहे छे त्रणशें पचीश वर्षे थया छे, कोइ कहे छे के चोथनी संवत्सरी थापवावाला पण एज कालिकाचार्य छे एमां खरुं खोटुं केवली जगवान् जाणे ग्रंथोमां तो संवत्नो फेर छे, वली बीजा कालिकाचार्य तो पूर्वे कालिकाचार्य कह्या तेमना मांमां थाय अने त्रीजा कालिकाचार्य तो श्रीवीरजगवान् मोक्ष गया पछी ९९३ में वर्षे अने विक्रमादित्यना संवत् ५१३ में वर्षे जेणे चोथनी संवत्सरी करी ते छे तेमां वली कोइकोइ चूर्णिकार; एवीरीतें लखे छे के केटलाएक कालिकाचार्यना शिष्योयें चोथनी सवत्सरी मान्य करी, अने केटलाएक श्रीसुधर्मस्वामीना शिष्योए पांचमनी संवत्सरी मानी तत्त्व केवली जाणे ए विवादमां तंत नथी खबर विना जोर लगाववु मुनासेब नथी इति रहस्यं ॥ ॥ वली हरिजड सूरि पण त्रण थया छे तेमां एकतो हरिजड नामा ब्राह्मण हतो ते व्याकरणादि जण्या पछी प्रतिज्ञा करीके जेनो अर्थ हुं समजी शकुं नही ते पदनो अर्थ जे कही आपे तेनो हुं शिष्य थाउं पछी एक दिवस साध्वीउ गाथा जणे छे ते आवीरीतें ॥ चक्किडुग हरि पणगं, पणग चक्कीण केसवो चक्की ॥ इत्यादि ए गाथानो अर्थ ए ब्राह्मणथी थइ शक्यो नही तेवारें जाण्युं जे हुं हार्यो पछी साध्वीने अर्थ पुछ्यो तेवारें साध्वीयें कह्युं गुरुने पुछो गुरु पासेथी गाथानो अर्थ सांजली प्रतिज्ञा पालवा सारु दीक्षा लीधी, आचार्यपद पाम्यो ते आचार्यें विक्रमसंवत्ना ५८५ में वर्षे आवश्यकनिर्युक्ति प्रमुख ग्रंथोनी टीकाउ करी तथा एमना एक हंस अने बीजा परमहंस एवा नामे बे शिष्य बौधलोकोनुं मत जाणवा माटे बौधोनी पासें जणवा गया हता तिहां बोधोयें जाण्युं के ए बे जैनी जेवा देखाय छे तेवारें परीक्षा करवा माटे दादराना पग

थीयाउ उपर जैनप्रतिमा मूकी दीधी, तेनी उपर पग श्रापीने वौधनां शिष्यो तो सर्व उतरी गया परंतु हंस श्रने परमहंस जैनप्रतिमा देखीने प्रतिमाना हृदयमां खडीनी जनोइ करी उतस्या तेवारें वौधोयें जाएयुं जे श्रा निश्चयें जैनीउ ठे श्रने शिष्योने पण खबर पडी के ए श्रापणने जाणी गया ठे तेवारें मरणना जयथी ते बे जण पोतपोतानी जणवाना पोथीयो हाथमां लइने पोताने देश चालता थया बौधोयें राजाना सीपाइयो ते बे शिष्योने मारवा माटे मो कल्या तेणे जइ प्रथम तो हंसने मारी नाख्यो श्रने परमहंस नागी गयो परंतु चितोड गढना कोट पासें तेने पण मारी नाख्यो पठी राजाना सुजटो राजापासे गया हरिजडसूरि ए वात सांजलीने महा कोपायमान थया थका मत्रना बलेकरी एक तेलनी कढाइ उका लीने पठी मत्र जपता जाय श्रने एकेक कांकरी कढाइमां नाखता जाय जे वखत कांकरी नाखे ते वखत मत्रना प्रजावथी बौधनो एक तपस्वी ते कढाइमां पडी जस्म थइ जाय एम करी १४४४ बौधोने हण्या तेवारें एक श्रावक गाथा बोल्यो ॥ जइजलइजलउलोए ॥ एटलुं सांजलतांज क्रोध उतरी गयो वली केटलाएक ग्रथोमां एम लख्युं ठे के याकनी महत्तरा साध्वीयें एक श्राविकाने लावीने गुरुने कह्युं के एणे पंचेंडी जीवनो वध कस्यो ठे तेनो दंम शुं श्रापो गो? तेवारें गुरु बोल्या पंच कल्याणानो दंम श्रापीयें ठैये ते वखत साध्वी बोली महाराज! एक पंचेंडीना वधनो एटलो महोटो दंम श्रपाय ठे? एवुं श्राप जाणो गो तो श्रा बौधोने केम मारो गो? तेवारें गुरुनो क्रोध उतरी गयो पठी प्रायश्चित्त शोधवाने माटे चौदशें ने चुमालीश पंचाशक प्रमुख प्रकरण बनाव्यां ए प्रथम हरिजड सूरिनी संक्षेप कथा कही ॥ ॥ १ ॥ ॥ वली बीजा हरिजडसूरि विक्रमसंवत्ना ५८५ मां वर्षमां थया तेमना शिष्य

सिद्धर्षिगणी हता ते बौधोनी पासे एकवीश वार गया अने आव्या तेमणे बौधोने प्रतिबोधवा माटे ललितविस्तरा शक्रस्तवनी वृत्ति बनावी ए बीजा हरिजद्र सूरिनी सामान्य कथा कही ॥ हवे त्रीजा हरिजद्रसूरि विक्रम संवत्ना बारसेना सैकामां थया तेमणे बनावेला मुनिप्रति चरित्र आदिक ग्रंथो आजे प्रसिद्ध छे ए त्रीजा हरिजद्रसूरि थया तथा वली श्रीजिनजद्र गणिक्षमाश्रमणप्रमुख घणा आचार्यो स्थविर थइ गया छे, तेमणे विशेषावश्यकनुं जाष्य बनाव्युं छे तेमज बीजा वली श्रीशीलंगाचार्य, अजय देवसूरि अने मलयगिरिप्रमुख टीका ना करवावाला थया छे ए सर्वे स्थविरो जाणवा इति स्थविरावली शेषसंबंध संपूर्ण ॥ हवे अठावीश प्रकारनी साधु समाचारी लखीयें छेयें ॥ ते कालने विषे, ते समयने विषे, श्रमण जगवंत श्रीमहावीर स्वामी आषाढ शुदि पूर्णिमाथी लइने एक महीनो अने वीश दिवस वरसादना गये थके पंजोसण करे एवो नियम छे इहां शिष्य पुछे छे के चोमासाना पचाश दिवस गया पछी पंजोसण केम करे ॥ १ ॥ तेने गुरु कहे छे हे शिष्य! गृहस्थ श्रावको पोताना घरने खडी प्रमुखथी धोइ उपर छाया करी, घछारे, मछारे, धूप आपे, परनाल प्रमुख पाणीना मार्ग काढाडे इत्यादिक सर्व काम गृहस्थें पोताने माटे कर्या होय अने पोते वापरी फासु करी मूक्या होय, ते कारण माटे हे शिष्य! वर्षाहना पचाश दिवस गया थकां पंजोसण करे अने कदाचित् जो साधु पहेलाथीज कहे के हुं चोमासु रहीश, तो ते गृहस्थ साधुनुं निमित्त करीने घर प्रमुखनो आरंज करे ते माटे पचाश दिन गया पछी साधु कहे के अमे चोमासु आंही करीशुं एम कहे ॥ २ ॥ ॥ एवी रीतें जो जगवान् पोते पचाश दिन गये थके पंजोसण करे तो तेमना गणधर पण पचाश दिन गये थके पंजोसण करे ॥

॥ ३ ॥ ॥ अने जो गणधर पण पचाश दिन गया केडे पंजोसण करे तो गणधरोना शिष्यो पण वर्षाविना पचाश दिवस गये थके पंजोसण करे ॥ ४ ॥ ॥ जो गणधरोना शिष्यो पचाश दिन गये पंजोसण करे तो थविर पण वर्षाविना पचाश दिवस गये पंजोसण करे ॥ ॥५॥ ॥ जो थविरो, वर्षाविना पचाश दिवस गये पंजोसण करे तो जे आजना समयमां श्रमण निर्ग्रंथ विचरे ते पण पचाश दिन गये पंजोसण करे ॥ ६ ॥ ॥ जो आज वर्त्तमान श्रमण निर्ग्रंथ वर्षाविना पचाश दिवस गये थके पंजोसण करे तो अमारा आचार्य उपाध्याय पण पचाश दिवस गये पंजोसण करे ॥ ७ ॥ ॥ जो अमारा आचार्य उपाध्याय पचाश दिवस गये पंजोसण करे तो अमे पण वर्षाविना पचाश दिवस गये पंजोसण करीयें छैयें इहां अपवाद कहे छे के नादरवा शुदि पांचमना एक दिवस आगल अर्थात् नादरवा शुदि चोथने दिवसे पंजोसण करवुं कल्पे परंतु नादरवा शुदि पांचमीने उल्लंघवी कल्पे नही एटले एकावन्नमे दिवसे सवछरी करवी कल्पे नही परंतु उगण पचाशमे दिवसे कारणे करवी कल्पे माटे कारणे चोथनी संवत्सरी करवी कल्पे पण छठ्ठनी संवत्सरी तो अपवादे पण करवी न कल्पे ॥ ८ ॥ ए आठ आलावे करी पंजोसण करवा आश्रयी प्रथम समाचारी जाणवी ॥ ॥ १ ॥ ॥ हवे वर्षाकालमा चोमासु रहेला साधु अने साध्वी तेमने पांच कोशनो चोफेरे अवग्रह राखवो पण अवग्रहथी बारणे हाथ मूके तिहां सुधी पण रहवुं रहेवुं नही ॥ ए ॥ साधु साध्वीने वर्षावे चोमासामां गोचरीने माटे पांच कोश जावु आववुं कल्पे ॥ १० ॥ ए जावा आववानी बीजी समाचारी जाणवी ॥२॥ जिहां विषासे नित्य नदी वहेती रहेती होय तिहां नदी उतरीने पाचकोश लगण पण जावुं आववुं कल्पे नही ॥ ११ ॥ अने कुणाला नग

रीनी पासें ऐरावती नदी छे ते नित्य वहेती रहे छे पण तेनो पाट घणो पहोलो छे,पाणी स्वल्प छे, माटे एक पग जलमा अने एक पग उंचो आकासें थलमां राखतो उतरे तो चोफेर पांच कोश जावु आववुं कल्पे ॥ १२ ॥ एवी नदी न होय तो न कल्पे ॥ १३ ॥ ए नदी उतरवानी त्रीजी समाचारी जाणवी ॥३॥ ॥ हवे वर्षादमां रहेला साधु अने साध्वीने गुरुयें कह्युं होय के जो साधुउ तमे गिलाणने आहार आणी आपजो तो तेने माटे आहार लावी देवो कल्पे परतु पोतानी मतियें गिलानने माटे आहार लावी देवुं कल्पे नही ॥ १४ ॥ ॥ अने जो गुरुयें कह्यु होय के तु तहारे माटेज लइ आव, तो पोताने माटेज लइ आववु कल्पे पण बीजाने आपवु न कल्पे ॥ १५ ॥ ॥ वली गुरुयें कह्युं होय के तुं गिलाणनें आहार लावी आपजे अने तु पण खाजे, तो लाववुं अने देवुं बेहु कल्पे ॥ १६ ॥ ॥ ए साधुउने परस्पर देवा लेवानी चोथी समाचारी जाणवी ॥ ४ ॥ ॥ हवे चोमासे पंजोसण करी रहेला साधु साध्वीने नव विगय लेवी कल्पे नही तेना नाम कहे छे १ दूध, २ दहि, ३ माखण, ४ घृत, ५ तेल, ६ गोल, ७ सहत, ८ मदिरा अने ९ मांस ए नव विगय छे तेमा मदिरा, मास, माखण अने सहत ए चार विगय तो सर्व साधुउने प्रथमथीज सर्वप्रकारे वर्जेली होय छे माटे ते मूकीने बाकीनी पांच विगय जे छे ते बलवान् रोगरहित शरीरवालाने, लेवी कल्पे नही अने कारणे लेवी पडे तो लेवाय पण पंजोसणमां लेवी नही ॥ १७ ॥ ए विगय निषेध नामे पांचमी समाचारी जाणवी ॥ ५ ॥ ॥ चोमासु रहेला साधु साध्वी जे होय तेने कोइ गिलाण कहे के माहारा माटे असुक चीज गृहस्थना घरथी लइ आवजो तेवारें ते लाववावालो साधु गुरुने पुछे हे स्वामी गिलाण साधु असुक चीज मगावे छे ते

लइ आवुं ? गुरु कहे केटलीक मगावे छे ? तेवारें गिलाणने पूछे अने गिलाण कहे के आटली चीज
जोइयें छेयें पछी वली गुरुने कहे स्वामी! अमुक चीज आटली गिलान मगावे छे त्यारें
गुरु कहे एटली चीज एटला प्रमाणनी लावजे पछी ते साधु जेवारें गोचरी जाय तेवारें गि
लाणने खपती चीजथी वधारें श्रावक देवा लागे, तेने साधु कहे के एटलीज गिलाणने खपे
छे तेम छता वली श्रावक कहेके वधारे लइ जाउ आपपण खाजो, पीजो, वापरजो, महारा
घरमा घणी छे माटे सुखे ल्यो तो लेवी पण गिलाणना नामथी पोते लइने वापरवी नही ॥
॥ १७ ॥ ॥ ए गिलाणने खपती वस्तु लावी आपवा संबधि छठी समाचारी जाणवी ॥
॥ ६ ॥ ॥ हवे वर्षाकमां रहेला थविर कल्पी साधुउने श्रावकोना घरमां जे नवा श्रावक
थयेला होय तेमने घेर हरकोइ न्हाना अथवा महोटा साधु जाय अने ते जे काइ मागे ते
आपे,पण नाकारो करे नही,न्हाना महोटा साधु सादामुं जुए नही पण चोरासी गछना साधुउने
दान देवानीज इछा राखे ते अने ज्यां साधुउने पण एवो विश्वास होय के जे चीज क्यांय पण नही
मलशे ते एमना घरमां तो जरुर मलशे एवा श्रावको जे होय तेमना घरमां साधुउयें विना
देखती चीज मागवी नही कारण के ते श्रावक तो हरेक चीजनुं दान आपवुं एवी वांछा
वालो छे तेथी ते श्रावक एवुं जाणे जे ए चीज एमने क्यांय पण नही मली हशे माटे मा
गवा आव्या छे तेथी ते बजारमांथी वेचाती लइने अथवा अणसमजु नवो थयेलो श्रावक
होय तो ते बाहेरथी चोरी लावीने पण साधुने आपे ते माटे एवा घरोमां अणदीठी वस्तु
साधुयें मागवी नही ॥ १९ ॥ ॥ ए अदृष्टयाचनावर्जनसंबंधि सातमी समाचारी जा
णवी ॥ ७ ॥ ॥ हवे वर्षाकमां चोमासुं रहेला साधुउयें नित्य एकवार जमवुं अने च

हस्थोने घेर गोचरीयें जावुं ते पण एकवारज कल्पे पण आचार्य,उपाध्याय, तपसी,गिलान, न्हानी वयना शिष्य अने शिष्यणीउ एटले जेने दाढी मूछ आव्या न होय एवा लघु वयना शिष्य तथा जेने स्तन न होय एवी लघुवयनी शिष्यणीउ प्रमुख जे होय तेमनी वैयावृत्त्य कर वाने सारु जो एक दिवसमां वे त्रण वखत गृहस्थने घेर जवुं पडे तो पण तेनी मनाइ नथी परंतु पोताने माटे तो एक वारज जवु कल्पे उपरांत जवु कल्पे नही ॥ २० ॥ ॥ तथा एक उपवास करवावालाने, जो एकवार गोचरी गया थका खाइ पीने तृप्त थइ रह्या, पातरां प्रमुख पुछी राख्या, तो फरी वीजी वखत गोचरी न जावु अने जो नही धाया होय तो वीजी वार गोचरीयें जावुं ॥ २१ ॥ ॥ तथा बेलानी तपस्यावालाने एटले छठ्ठं तप जेणे करेलु होय तेने तो वे वखत गोचरी जावुं कल्पे ॥ २२ ॥ ॥ अने तेलानी तपस्यावालाने एटले अ ठ्ठम तप करनारने त्रण वार गोचरीयें जावुं कल्पे ॥ २३ ॥ ॥ वली त्रण उपवासथी उप रांत तपस्याना करनारा जे होय तेमने तो मरजीमां आवे तेटला वखत गोचरीयें जावु कल्पे ॥ २४ ॥ए गोचरीयें जवानी आगमी समाचारी जाणवी ॥ ७ ॥ ॥ वर्षावमां रहेला साधु साध्वी जे नित्य जमवावाला होय तेमने श्रीआचारांगे कहेला सर्व एकवीशे प्रकारना पाणी लेवा कल्पे ॥ २५ ॥ तथा एक उपवासवाला साधुने एक आटानु धोवण, वीजु पानन्नु धोवण अने त्रीजु चावलनु धोवण ए त्रण प्रकारनुं पाणी लेवुं कल्पे ॥ तथा छठ्ठना तपवाला साधुने तूसनुं कूकसानुं धोवण,जवनुं धोवण,अने तिलनु धोवण,ए त्रण जातनुं पाणी लेवुं कल्पे ॥ तथा अठ्ठम तपवाला साधुने एक उसामण, वीजु कांजी, अने त्रीजु वर्ण पालटेलु उन्हु पाणी ए त्रण प्रकारनां पाणी लेवां कल्पे ॥ तथा त्रण उपवासथी उपरांत प

करेलुं होय तेमने गणेलुं उष्ण पाणी लेवुं कल्पे ॥ तथा अनशनवाला
ज्ञकाण जे साधुयें करेलुं होय तेमने गणेलुं होय ते कल्पे ते पण थोडुं थोडुं पीवुं
साधुने एक उष्ण पाणीज कल्पे तेपण वली गणेलुं होय ते कल्पे ते पण थोडुं थोडुं पीवुं
परतु घणु पीवुं नही, परिमाणसहित पीवु ए पाणी पीवा संबंधि नवमी समाचारी जाणवी
॥ ए ॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु जे होय तेणे मर्याद करी छे के पांच दात पाणीनी अने
पांच दात नोजननी लेवी पण जो पाणीनी चार दात मली अने नोजननी पांच दात
मली पण ते पांच दातमां नोजन स्वल्प आव्युं छे तेनाथी पूरण पेट नराय नही तेवारें
विचार करे जे पाणीनी चार दात मली छे पण पांच मली नथी तो हवे एक दात नो
जनमां मेलवी आपु एम करवुं कल्पे नही जे जेटलुं मल्युं ते तेटलुंज खाइने संतोष करवो
पण दात आगी पाछी अदल बदल करवी नही तेम वली बीजी वखत गोचरीयें पण
जावु नही हवे दात केने कहेछे जे वोहोरती वेलायें पात्रामा जो मात्र एकज चावलनो दा
णो आवी पड्यो तो ते एक दात जाणवी तेमज सर्व अन्न सार्थेज पात्रामां पडी जाय तो
पण ते एकज दात जाणी लेवी एमज पाणीनु पण वहोरती वखतें जो एकज टीपु आवी
पात्रामां पडे तो ते एकज दात जाणवी अने पाणीनी धारा खंभाइ न होय, अस्खलित धा
र वहेतां संपूर्ण पात्र नराइ जाय तोपण एक दात समजवी परंतु धार खंभाया पछी वली
बीजी धारायें जे पाणी पात्रामां पडे ते बीजी दात कहेवाय ॥ २५ ॥ ॥ ए दात आश्रयी
दशमी समाचारी जाणवी ॥ १० ॥ ॥ तथा वर्षाकालें जे उपासरामां साधु चोमासुं रह्या
होय ते जगाथी मांमीने सात घर पर्यंत गोचरीयें जवु नही गाममां जमण होय तो केटला
एक आचार्य कहे छे के उपासरा सहित सात घर अने केटला एक आचार्य कहे छे के उपा

सरा सहित आठ घर जगए वोहोरवुं नही ॥ २७ ॥ ॥ ए सांखडी संबंधि अगीआरमी समाचारी जाणवी ॥ ११ ॥ ॥ वर्षाकालमां जिनकल्पी साधुने तो फुसार एटले छुआरी मात्र पाणी वर्षे तो गोचरीयें जावुं नही ॥ २८ ॥ तथा अढायो घर एटले अणढांकेलु घर होय तिहां वहोरवा जावुं नही केमके जो वहोरतां वहोरतां तत्काल अकस्मात् वर्षाद आवी जाय तो प्रथम लीधेलो आहार जे कांइक खवाणो होय कांइक रहेलो होय ते सर्व हाथमां ढांकीने छाती नीचे लइने जिहां ढांकेली जगा होय तिहां अथवा फाडनी नीचें लइ जावो पडे तिहां जो आहारमा पाणी नही लाग्युं होय तो आरोगी जावुं अने जो पाणी लाग्युं होय तो खावुं नही ॥ ३० ॥ ए जिनकल्पी साधुउनी गोचरी आश्रयी बारमी समाचारी जाणवी ॥ १२ ॥ ॥ वर्षादमां चोमासुं रहेला पात्रानां धारवावाला साधु अर्थात् स्थविरकल्पी साधुउने तो, जेनी धारा रोकाय नही एवो अखंड धारायें मेघ वर्षे तो गोचरीयें जावुं नही ॥ ३१ ॥ जो कदाच कोइक साधु गिलान होय अथवा अशक्त होय एक बे दिवसनो भुख्यो होय अने अधिक भूख खमवानी तेमां शक्ति न होय तो ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ११०० ॥ ॥ एक सूतरनो कपडो तेनी उपर ऊननुं वस्त्र उंढीने थोडा छाटा पडता होय तो गोचरीयें जावुं कल्पे ए अपवाद सूत्र छे तथा गृहस्थने घरें गोचरी गया केडे रहीरहीने थोडो थोडो वर्षाद वरशे तो आराममां, उपासरामां, मंडपनी नीचें तथा रूखनी नीचें आववुं कल्पे ॥ ३२ ॥ तथा गृहस्थने घरें गोचरी गयेला साधुने वर्षाद आव्यो तो तेना घरें जे वखत साधु आव्यो ते वखतथी पहेला जो भात उतर्या होय अने पछी दाल उतरी होय तो साधुयें भात वहोरवा अने दाल वहोरवी नही ॥ ३३ ॥ अने जो दाल पहेली उतरी होय अने चावल पछी उतर्या होय तो दाल वहो

रवी अने चावल वहोरवा नही ॥३४॥ अने जो चावल तथा दाल बेहु पहेला उतरया होय तो बहु लेवा कल्पे अने जो बेहु पछी उतरया तो बेहु चीज लेवी कल्पे नही ॥ ३५ ॥ तथा गोचरी गयेला साधुने आहार मल्यो छे अने वर्षाद रहीरहीने वर्षतो होयतो बागमां, उपासरामां, हा केली जगामां, झाडनी नीचें एटली जगायें आवीने आहार खाइ जवु पण आहारने घणो वख त राखी मूकवो नही तरत आरोगी पातरा धुठी एकठा बांधीने वर्षाद पडतो होय तोपण दिवस छतेंज उपासरामा आववुं पण रात्रियें बाहेर रहेतां घणा दोष उपजे छे माटे रात्रें तो उपास राथी अलगुं रहेवुज नही ॥३६ ॥ एम वर्षादमां रह्या साधु गृहस्थने घेर गोचरी गया थकाने रहीरही वर्षाद वर्षवा लाग्यो तो बागादिकमां अथवा उपासरे आववु कल्पे ॥ ३७ ॥ परंतु बागादिकस्थानके एक साधु अने एक साध्वीने एक स्थानके रहेवुं तथा एक साधु अने बे साध्वी तथा बे साधु अने एक साध्वी तथा बे साध्वी अने बे साधुउ ए चारे जांगायें एकठुं रहेवु नही कल्पे तथा पांचमें जांगे बे साधु अने बे साध्वी होय तेमां एक वृद्ध साधु साध्वी होय तथा एक लघु साधु साध्वी होय अने जगा घणी मोकली होय जिहां सर्वलोक देखता होय एवी जगामां रहेवुं कल्पे एवाज चार जांगा साधुने श्राविकानी सार्थे कहेवा तेमज वली एवाज चार जांगा सा ध्वीने श्रावकनी सार्थे कहेवा ॥ ३८ ॥ अने पूर्वोक्त पांचमें जांगें एकठा रहेवुं कल्पे ॥३९॥ आ थविरकल्पी साधु साध्वीउने गोचरी तथा साधु साध्वीउने एकत्र रहेवा संबधिनी तेरमी समाचारी जाणवी ॥ १३ ॥ वर्षादमां चोमासुं रहेला साधु अथवा साध्वीयें कोइ साधुना कह्या विना तेमना माटे अशनादिक चार आहार लाववा नही ॥ ४० ॥ ते शामाटे के तेनी इछा होय तो ते आहार खाय अने इछा न होय तो न खाय ते माटे कह्या विना

थाहार लाववो नही ॥ ४१ ॥ ए पूछ्या विना बीजा साधुउने माटे श्राहार नही लाववो ते संबंधी चोदमी समाचारी जाणवी ॥१४॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीने ज्यां सुधी श रीर नीजेलु होय तिहां सुधी अशनादिक चार श्राहार करवा नही ॥ ४२ ॥ एम शावास्ते कर्तुं छे, के घणु करी सात ठेकाणा नीजेला रहे छे, तेमां एक हाथ, बीजी हाथनी रेखा, त्रीजा नख, चोथी नखनी अणीउ, पांचमा चुंहारा, छठा नीचला होठ अने नीचली वाढीनी जगा, सातमा उपरला होठ अने उपरनी मूछो, ए सात स्थानक आला रहे छे तिहां सुधी अशनादि चार श्राहार न करवा अने जेवारें जाणवामां आवे के ए साते ठेकाणा आला रह्या नथी तदन सुकी गया छे तेवारें चार श्राहार करवा ॥ ४३ ॥ आ शरीर आलु होय तेवारें श्राहार नही करवा संबंधी पन्नरमी समाचारी जाणवी ॥ १५ ॥ ॥ वर्षाद वरश्या थका, साधु साध्वीयोने सूक्ष्म आठ वस्तुउने वारंवार सूत्र ज्ञानेकरी जाणवी अने चक्षुयें करी देखवी, पडिलेहण करवी जोइयें, तेना नाम कहे छे एक प्राण सूक्ष्म, बीजु पणक सूक्ष्म, त्रीजु बीज सूक्ष्म, चोथु हरितसूक्ष्म, पाचमु फूलसूक्ष्म, छठुं कीडी प्रमुखना अंमसूक्ष्म, सातमु कोली आवडा प्रमुखना घर सूक्ष्म अने आठमुं स्नेह सूक्ष्म, ए आठना नाम कह्या हवे एने उल खवा माटे विशेष खोलासो गुरु शिष्यना प्रश्नोत्तररूपें लखीयें छैयें तिहा प्रथम प्राण एटले सूक्ष्म जीणा जीणा जंतुउ काला, नीला, राता, पीला अने धोला एवा पांच प्रकारना रंग वाला कुंथुआ जीव थाय छे, अणुधरी एवु एनु नाम छे ए जीव एकस्थानके अणचालता रहे, ज्ञानरहित छद्मस्थ साधु साध्वीउने नजरथी देखाय नही माटे ते जीवोने साधु साध्वीयें वारंवार सूत्र सांजलवे करी जाणता रहेवु, चक्षुयें करी देखतां रहेवु ए प्राण सूक्ष्म कह्या

पण एटले फूलण सूक्ष्म ते कोने कहीयें ? गुरु कहे
॥ ४४ ॥ हवे शिष्य पूछे छे, हे नगवन् पणग एटले फूलण सूक्ष्म ते कोने कहीयें ? गुरु कहे छे, ते जीवो जे छे काली, लीली, राती, पीली अने धोली एवा पांच प्रकारनी फूलण थाय छे, ते जीवो जे वस्तुमा पडे ते वस्तुनां रग जेवा दीठामा आवी जाय छद्मस्थने नजरे नही आवे माटे तेने पण वारंवार देखतां तपासता रहेवुं, ए बीजी नील फूल सूक्ष्म कही ॥ २ ॥ हवे त्रीजा बीज सूक्ष्म कोने कहीयें ? गुरु कहे छे ते पण काला, नीला, धोला, पीला अने राता एरीतें पाच प्रकारना छे शाल प्रमुखना जेवा वर्णवाला थाय छे, तेपण छद्मस्थने जाणवामां नही आवे माटे तेनी पण वारंवार पडिलेहणा करवी ए बीज सूक्ष्म कह्या ॥ ३ ॥ हवे चोथा हरित सूक्ष्म कोने कहीयें ? गुरु कहे छे के हरित एटले नीलोत्री सूक्ष्म थाय छे। ते पण पूर्वोक्त पांच रंगवाली थाय छे ते पृथ्वीना रंग सदृश होय अने घणी झीणी वारीक होय, तेने पण साधु साध्वीये घणीज रूडीरीतें दृष्टी वडे जोइने पडिलेहण करवी, ए हरित सूक्ष्म कही ॥ ४ ॥ पांचमां फूल सूक्ष्म कोने कहीयें ? गुरु कहे छे ए पण झीणा फूल ते पूर्वोक्त कालाथी मांडीने यावत् धोला पर्यंत पाच प्रकारना थाय छे ते रूखना जेवा एटले रूखनो जेवो रंग थाय तेवा रंगवाला थाय छे ते पण जाणवामां नही आवे, तेनी पण पडिलेहण करवी ए फूल सूक्ष्म कह्या ॥ ५ ॥ हवे छठा अंड सूक्ष्म ते कोने कहीयें ? गुरु कहे छे तिहां प्रथम मधुमाखीनां इंडां, बीजां कुलातरानां इंडां, त्रीजां कीडीनां इंडां, चोथां गिरोलीनां इंडां अने पांचमां काकिंडानां इंडां ए सर्व जीवोनां इंडां पण सूक्ष्म थाय छे, माटे एने वारं वार जोवा अने पडिलेहण करवी ए अंड सूक्ष्म कह्या ॥ ६ ॥ हवे सातमां घर सूक्ष्म पण पांच प्रकारना छे; ते शिष्यना पूछवाथी गुरु कहे छे के एकतो नूमीमां गडइया स

रखा घर करेला होय ते, वीजा पाणी सुकाइ गया पठी पापडी नूमि उपर पडे ते, त्रीजा विल घर,चोथा ताड प्रमुख वृक्षोना मूलमा न्हाना न्हाना घर थाय ठे ते घर,अने पांचमां जमरानां घर ए पाचें प्रकारनां घरोनी पडिलेहणा करवी ए घर सूक्ष्म कह्या ॥ ७ ॥ ॥ हवे आठमो स्नेहसूक्ष्म ते कोने कहीये ? गुरु कहे ठे ए पाणी सूक्ष्म पण पांच प्रकारनो ठे, एकतो उसनुं पाणी, बीजु हेमारानु पाणी, त्रीजु धुहरि थाय ठे ते, चोथुं करानुं पाणी अने पांचमु म्हान प्रमुखनी अणी उपर जे पाणीनां बिंडु रहे ठे ते, ए पांच प्रकारनु पाणी ठे तेने पण ठद्मस्थे जाणीने पडिलेहवु जोइयें ए स्नेह सूक्ष्म कह्यो ॥ ७ ॥ ॥ ४५ ॥ ए आठ सूक्ष्म चीज आश्री शोलमी समाचारी जाणवी ॥ १६ ॥ ॥ हवे वर्षावमां चोमासु रहेला साधु साध्वीउने जेवारें गृहस्थोने घेर गोचरी करवा आहार प्रमुख लेवाने माटे जावु होय तेवारें आचार्य, उपाध्याय, थविर, प्रवर्त्तक, गणि, गणधर, गणावछेदक, तथा जेनी आज्ञामां चालता होइये तेमने पूठीने पठी जात पाणी प्रमुख लेवाने माटें जावुं तेमने एम कहेवुं के हे नगवन् आपनी आज्ञा होय तो गृहस्थोने घेर जात पाणी लेवाने वास्ते जाउ तेवारें ते पूर्वोक्त आचार्यादिको जो जवानी आज्ञा आपे तो जवुं नहीं्तो जावु कल्पे नही इहां शिष्य पूठे ठे के शा वास्ते ? गुरु कहे ठे के आचार्यादिक जे ठे ते उपद्रव टालवानां उपाय जाणे ठे जे ते साधु अमुक दिशा गया तेने घणो वखत केम लाग्यो ! एटला माटे॥ ४६॥ एवीज रीतें जो श्रीजिनचैत्यें दर्शन करवा जवुं होय तथा वमेल नूमियें जवु होय अथवा वीजा कोइ पण कामने माटे जवु होय,गामोगाम विचरवु होय तोपण पूग्या विना जवुं नही ॥ ४७ ॥ ॥ तथा चोमासु रहेला साधु साध्वीउने जो विगयनो आहार करवानी इग्रा होय

तो आचार्यादिकोने पूछ्या विना विगय लेवी कल्पे नही माटे आचार्यादिकोने पूछवुं के हे महाराज आपनी आज्ञा होय तो दुध प्रमुख विगय गृहस्थना घरेथी लइ आवीने आहार करुं? तेवारें आचार्यादिक कहे के अमुक प्रमाणवाली विगय लावीने आहार करजे इहां शिष्य आशंका करे छे के एमां आज्ञा लेवानुं शुं प्रयोजन छे? तेवारें गुरु उत्तर आपे छे के विगयादिक खावा के नही खावा, तेथी थता गुण तथा अवगुण ए सर्व आचार्यादिक जाणे छे माटे पूछवुं जोइयें ॥ ४८ ॥ ॥ तथा चोमासामां कोइ साधु पोतानी आरोग्यता माटे ओषध करवानी चाहना राखता होय तो पण आचार्यादिकनें पूछीने ओषध करवुं ॥ ४९ ॥ ॥ तथा चोमासामां कोइ साधु; सारु, कल्याणकारि, उपद्रवरहित, धन्यकारि मंगलिकनुं करनार, सोनावत तथा महाप्रभाविक एवुं तप करवानी चाहना राखतो होय, तेणे पण आचार्यादिकनें पूछीने पछी ते तप करवुं ॥ ५० ॥ ॥ तथा कोइ साधु अनशन करवानी चाहना राखतो होय, आत्माने जूपे भात पाणीनो त्याग करी पादोपगमन संथारो प्रमुख करे, कालने वांछे नही,तेणे पण आचार्यादिकने पूछ्या विना करवुं नही एमज आहार करवो, ठल्ले जावुं, मात्री परठववी, सझाय ध्यान करवु, धर्मजागरणा करवी, काउस्सग्ग प्रमुख करवुं ते सर्व आचार्यादिकने पूछीने करवु परंतु आचार्यादिकने पूछ्या विना पूर्वोक्त कोइ पण काम करवु कल्पे नही ॥ ५१ ॥ ॥ ए वोहोरवा प्रमुख जे कार्य करवां ते सर्व आचार्यादिकने पूछीने करवा, ते संबधिनी सत्तरमी समाचारी जाणवी ॥ १७ ॥ ॥ वर्षाकालमां पंजोसण करीने रहेला साधुओने कोइ उपधी तपावची होय तावडामां नाखवी होय तो पोते तिहां खबर राखवी पासे बेसवुं परंतु उपधिने तावडे नाखीने गोचरीयें

जाबु नही, आहार करवो नही, चैत्यें जावुं नही, वळे जावुं नही, सधाय करवी नही, काउस्सग्ग करवो नही, जो एटला काम करवां होय तो बीजा कोइ साधुने कहेवुं के हे आर्य ! मने गोचरीप्रमुख अमुक कार्य करवुं छे, माटे तमे अमारी उपधीनी निगा राखो तो हुं गोचरी प्रमुखनुं काम करुं तेवारें ते साधु कहे के हुं निगा राखीश तो गोचरीप्रमुख कार्य करवु कल्पे पण कदापि ते कहे के महारे बीजां काम छे तेथी बेशी नही शकु तो पूर्वोक्त गोचरीप्रमुख करवी कल्पे नही ॥ ५२ ॥ ए उपधि तावडे तपाववा संबधि अढारमी समाचारी जाणवी ॥ १८ ॥ ॥ वर्षाकमां रहेला साधु साध्वीउने, एक हाथ उंची अने मोळे नही एटले शब्द नकरे एवी वळी मगे नही, फरती काठी बांधेली एवा शय्या विना रहेवु कल्पे नही जो एवा शय्यासन विना रहे तो कर्मबधनुं कारण थाय वळी ते शय्यासनने वारंवार पडिलेहण करवु, तावडे नाखवो, पूजवो प्रमुख जो नकरे तो तेने चारित्र पाळवुं दुर्लभ थाशे ॥ ५३ ॥ अने ते शय्यासनने जे साधु तावडो प्रमुख आपे, पूजे ते साधु चारित्र सुखें पाळशे ॥ ५४ ॥ ए शय्या प्रमुख ग्रहण करवानी उंगणीशमी समाचारी जाणवी ॥ १९ ॥ ॥ चोमासामां रहेला साधु साध्वीउने वडा मात्रानी त्रण जगाउ राखवी अने ते जगाउने पडिलेहवी परंतु सीयाळा अने उनाळानी पेठे चोमासामां न रहेवु जोइयें इहां शिष्य पुछे छे के शीयाळा अने उनाळाना दिवसोनी पेठे चोमासामा शा वास्ते न करवुं ? गुरु उत्तर कहे छे के प्राय चोमासामां नीली वनस्पतिप्रमुख जीवो घणा उत्पन्न थयेला होय ते माटे तेनाथी चोमासानो जुदो प्रकार कह्यो ॥ ५५ ॥ ए वडा अने मात्रानी जगा पडिलेहण करवा संबधि वीसमी समाचारी जाणवी ॥ २० ॥ ॥ चोमासामां साधु साध्वीउने त्रण

मात्रा राखवा कल्पे तेमां एक तो ग्लाननुं, बीजो मात्रानो, त्रीजो खेल प्रमुखनो एव त्रण
जाणवा ॥ ५६ ॥ ए त्रण मात्रा राखवा संबंधि एकवीशमी समाचारी जाणवी ॥ २१ ॥
पंजोसण करीने रहेला एवा साधु साध्वीउने, गायना केस जेवडा सूक्ष्म केस पण
पोताना मस्तकें राखवा नही केमके पाचमिनी रात्रे जो मस्तके केस रही जाय तो दंम
आवे ते माटे जो कोइ अशक्त गिलान टाटियो होय तो तेणे छरीथी मुंमी नाखवा, कतरणीथी
कतरवा अने उत्सर्गमां तो लोच करवो तथा जो कतरवा होय तो पाछा पंदर पंदर दिवसें
कतरवा, गुरु मासी दंम आपवो, महीने महीने खुर मुंम करवो, लघु मासी प्रायश्चित्त देवो, जुवान
साधुने चार मासे लोच करवो, स्थविरने अने जर्जर थयेला साधुने चक्षुनो तेज राखवा
माटे छ महीने लोच करवो, अथवा थविर वर्षे वर्षे लोच अवश्य करे ॥ ५७ ॥ ए लोच करवा
आश्री बावीशमी समाचारी जाणवी ॥ २२ ॥ ॥ वर्षावमां चोमासुं रहेला साधु साध्वीउने
सवत्सरी थया पछी पहेला थयेलो कलह खमाववो पण क्रोध राखवो नही, जे कोइ
निर्ग्रंथ अने निर्ग्रंथणी पंजोसण वीत्या पछी क्रोध करे, क्रोध राखे, ते अनाचारी छे एम
जाणवुं तेमने बीजा साधुउए कहेवुं के हे आर्य? तमे अयोग्य काम करो छो एवुं कहेवाथी
नही समजे अने पंजोसण वीत्या पछी कषाय खमावे नही तो जेम तंबोली सडी गयेला
पानने बाहेर काढाडी फेंकी आपे छे तेनी पेरें ते क्रोधी साधु साध्वीने पण संघमांहेथी
बाहेर काढाडी मूकवो ॥ ५८ ॥ ए अधिकरणने नही कहिरवा संबधि त्रेवीशमी समा
चारी जाणवी ॥ २३ ॥ ॥ वर्षाकालमां रहेला साधु साध्वीउने, जो पंजोसणना दिवसोमां
कलह थयो होय, कटुक बोलवु पडयुं होय, उद्वेग कर्यो होय सेवारें शिष्यें जइ रत्नाधिक

आचार्य प्रमुखने खमाववु अने आचार्य प्रमुखे शिष्यने खमाववु ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ १२०० ॥ ए रीते पोते खमवुं, बीजाने खमाववु, पोते उपशम करवो, बीजाने उपशम कराववो, घणा प्रकारे करी रागद्वेषरहित थावुं, जे क्रोधादिकने उपशमावशे ते ज्ञानादिकनो आराधक थशे अने जे क्रोधादिकने नही उपशमावशे ते ज्ञानादिकनो विराधक थशे, एवुं जाणीने निश्चयें पोते उपशम करवो, नगवान् ए उपशमनेज सार पदार्थ कहे छे माटे हे शिष्य उपशम अवश्य अंगीकार करवो ॥ ५ए ॥ ॥ ए परस्पर खमत खामणा करवा सबधिनी चोवीशमी समाचारी जाणवी ॥ २४ ॥ ॥ इहां पाच समिति, त्रण गुप्ति अने चार कषायोना दृष्टांत कहेवा ॥ साधु साध्वीयें चोमासामां वली विशेषें करीने पांच समिति आदिक पालवी तिहां प्रथम इरिया समिति पालवा आश्री वरदत्त मुनिनो दृष्टांत कहे छे एक दिवस इन्द्र महाराजे पोतानी सनामां कह्युं के आज नरत क्षेत्रमां वरदत्त मुनि समान कोइ इरिया समितिनो पालवावालो नथी एवी इन्द्रना मुखथी वरदत्त मुनिनी प्रशंसा थयेली सांनलीने कोइक देव परीक्षा करवा सारु आव्यो तेणे हाथीनु रूप करी सुंढमां पकडीने मुनिने आकाशमां उगाल्यो अने देवमायाथी जमीन उपर न्हानी न्हानी घणी मेडकीउ विकुर्वी तेवारें मुनि आकाशथी नीचे पडता विचार करवा लाग्या के मने तो मरवानुं नय नथी पण आ जीणी जीणी मेडकीउ मदारा शरीरना पडवाथी मरण पामशे, तेनी विराधना थाशे, एवु जाणीने आकाशथी पडता थकां पण उंचाथी जमीन पूजवा लाग्या ते देखी देवताए जाण्युं के धन्य छे एने जे एवी रीते जीव विराधनाथी बीये छे पछी ते देवता प्रगट थइने साधुनी साथे अपराध खमावी नमस्कार करीने पोताने स्थानके गयो इति इरिया समितौ

रक्तदृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे नाषासमिति उपर संगत साधुनो दृष्टांत कहे छे जे नगरमां
गत साधु हता ते नगरनी बाहेर कोइ वैरीराजायें सेन्या लइ आवीने नगरने वींटी लीधो,
वारें संगत साधु नगरमांथी निकलीने बाहेर आव्या, तेने शत्रुनी फोजवालायें पुछ्युं के
साधु नगरनी मांहेली कोरे केटलिक फोज छे? तेवारें साधु बोल्या के घणो सांनल्यो काने,
णो जोयो आंख्योथी (चक्षुथी), नही देख्यो सर्वे सांनल्यो, नही छुत्यो सर्वे दीठो, एवी रीते
ल्यो वली पण ज्यारें ज्यारें ते पूछे त्यारें वारंवार एमज बोलवा लाग्यो, तेवारें सेन्याना
कें जाण्युं जे आ नणी नणीने घहेलो थइ गयो छे,एम विचारी मूकी दीधो ए बीजी नाषा
मिति उपर दृष्टांत कह्यो ॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजी एषणासमितिमां नंदीषेणनो दृष्टांत कहे
वसुदेवजीनो जीव पूर्वला नवमां नंदीषेण हतो, तेणे ग्लाननी वेयावच्च करवानो अ
ग्रह कर्यो हतो पोते छठ्ठ छठ्ठ पारणुं करे तेनी इंद्रें प्रशंसा करी, तेवारें कोइक देवे आवी
तिसारना रोगवालो साधु बनावीने नंदीषेण पासे मोकल्यो नंदीषेण तेना सारु पाणी
वा गयो ते देवतायें अशुद्ध करी आप्युं, नंदीषेणे लीधुं नही, एवी रीते एषणा सोधी
ग्लानने खांधे बेसाड्युं, ग्लाने तेने अशुचीयें खरड्युं, देवे स्तुति करी ए कथा आ
त श्रीनेमिसर नगवानना चरित्रमां लखाइ गइ छे इति एषणा समिति दृष्टांत ॥ ३ ॥
रे आदानादि पडिलेहण करवानी चोथी समितिमां सोमिल साधुनो दृष्टांत कहेछे एक
वस साधु विहार करीने कोइ गामें आव्या तिहां दिवस केटलो छे एवी खबर

उए पडिलेहण करी, गुरुयें सोमिलसाधुने कह्युं के ! तुं पण पडिलेहण कर सोमिल बोल्यो हजी हमणातो पडिलेहण करी ठे तो हवे एटलामा शुं कोइ सर्प घुंसीगयो ठे ? एवु उलठ वचन बोल्यो पठी जेवारें प्रजातें पडिलेहण करी तेवारें गुरुामांहे पातरा बांधेला हता तेमांथी कोइ देवप्रयोगथी सर्प निकल्यो दीठो तेथी वीक पामीने गुरुपासें आवी कहेवा लाग्यो महाराज सर्प निकल्यो, तेवारें गुरु बोल्या तु उलठ वचन शामाटे बोल्यो ? हे वत्स एवां वचन ताहारे आज पठी बोलवा नही पडिलेहण करवामां तो घणीज निर्जरा ठे पठी ते साधुयें एवो अनिग्रह लीधो जे आजथी सर्व साधुउना वस्त्र हु पडिलेहीश, सर्वने हु हाथ आ पीश, एवो अनिग्रह पालतां ते साधुयें घणा कर्म क्षय कस्या इति आदानजंमनिक्षेपणसमिति दृष्टांत ॥ ४ ॥ ॥ हवे उच्चार प्रश्रवण समितिमां सुमताचार्यनो दृष्टांत कहे ठे सुव्रताचार्यनो एक लघु शिष्य हतो तेने गुरुयें कह्युं, अरे मांत्रुं कर; तोपण तेणे मांत्रुं कीधा नही अने कहेवा लाग्यो शुं वाहारे उठवा वेगठे के ? पठी रात्रियें बाहेर मात्रुं परठववा गयो तेने तिहां कोइक देवे आवी उटलु रूप करीने बीवराव्यो अने बोल्यो, अरे आ गठमां एक साधु पण मत्रुं कस्या विना मात्रा प्रमुख करे नही पठी वली एक दिवस मत्रुं दीठे नही अने रात्रें मात्रानी घणी बाधा थइ पण परठे नही तेवारें देवतायें उद्योत कस्यो पठी ते शिष्यें जगा जोइने मात्रा परठवी तेमाटे जे कोइ मत्रु देखी परठवणा करशे तेने देवता स हाय आपशे एवो निश्चयकरी क्षुल्लक पण पारिठावणिया समितिमां सावधान थयो ए पारिठा वणिया समितिनो दृष्टांत कह्यो ॥ ५ ॥ ए पांच समिति साधुयें चोमासामा विशेष पालवी ॥ हवे मनगुप्ति उपर कोंकुण साधुने काउस्सग्गमां घणी वेर लागी तेने गुरुयें पुठ्युं घणो वखत

केम लाग्यो ? साधु बोल्यो, जीवदया ध्यायी, गुरु बोल्या केवी जीवदया ध्यायी ? साधु बोल्या महारा घरमां ठोकरा आलछुं छे ते सूछ निदानादिक करशे नहीं तो धान थोडो नीपजशे, तेथी दुःखी थशे,गुरुयें कह्युं तमे सावद्य चिंतव्युं माटे मिछामि दुक्कड द्यो साधु पण मिछामि दुक्कड देतो हवो ॥ इति मनगुप्ति दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे वचनगुप्ति उपर गुणदत्त साधुनो दृष्टांत कहे छे गुणदत्त साधु; एक दिवस पोतानी संसारसंबंधि धनवती नामे मातानें वदावा जातो हतो; रस्तामां चोर मल्या, तेणे साधुने पकड्यो अने कहेवा लाग्या अरे साधु ! आ रस्ताथी जान आवशे तेनी आगल तु अमारु नाम लइश नहीं जे आ ठेकाणे चोरो रहे छे साधुयें कह्युं हुंतो बोलीश नहीं तेवारें चोरोये तेने छोडी मूक्यो, ते पोताने स्थानके जइ पोताना कुटुंबने वदावीने फरी तेवोज जाननी साथे तेहज मार्गें आव्यो तेवारें चोरोये जान लूंटी लीधी अने वली बोलवा लाग्या के जूठ आ साधु कहेवो सत्यवादी छे के पोताना घरना माणसो आगल पण चोर रस्तामां बेठा छे एवुं कह्युं नहीं ते वचन साधुनी मातायें सांभल्युं; तेवारें महादुःख करती थकी साधुने कहेवा लागी के अरे दुष्ट ! तें ताहारे हाथे चोरोने माल लुटावी दीधो;तुं केम प्रथमथी बोल्यो नहीं !' पछी साधुने घणो कष्ट थतो देखीने चोरोयें लुटेलुं धन सर्व पाछु आपी दीधु; तेवारें जानवाला सर्व खुसी थया पण साधु बोल्यो नहीं, ए वचन गुप्ति उपर कथा कही ॥२॥ त्रीजी कायगुप्ति उपर अर्हन्नक साधुनी कथा कहे छे अर्हन्नक साधु, विहार करतां कोइ स्थानके पालो वहेतो देखीने विचारवा लाग्यो के जो हु आ खालमा पग देइश तो जीवविराधना थाशे माटे कूदको मारीने आंहीथी निकली जाउं एवु चिंतवी वलाग छेदी नाख्या तेथी ... माटे कोइक देवे ते साधुना पग

दुःखी थयो तेवारें देवतायें आवी कह्युं के आगल हवे तमारे एम कोइवारें पण करवु नही, जो कदापि जीव मरे तो पण ए केवलीनी आज्ञा छे माटे उतरीने जावु पण कूदको मारीने जावुं नही इति कायगुप्तिदृष्टांत ॥ ३ ॥ ॥ हवे वली आ पजोसण आव्या थकां सर्वेनी साथे खमत खामणा करवा, कारणके खमतखामणा करवा विना पडिक्कमणादिक क्रिया करवी सूझे नही माटे जो कोइनी साथें महोटो वेर होय तो पण उदाइराजानी पेरे खमाववुं जेम चपानगरीमां कुमारनदी नामा एक सोनार रहे छे ते जन्मथी स्त्रीनो लोलुपी छे, धन आपीने महा स्वरूपवाली पाचशे स्त्रीउ परण्यो छे एक दिवस ते, हासा अने प्रहासा ए बे देवीयोने देखी तेनुं स्वरूप जोइ मोहित थयो, तेथी देवीयोने कह्युं के तमे महारीसाथें भोग करो देवीयो बोली तुं पंचशेल पर्वत द्वीपे आवजे तो अमारे भोगयोग्य होइश एवुं कहीने देवीयो पोताने स्थानके गइ सोनारे गाममां आवी पडह वजडाव्यो के जे कोइ मुजने पंचशेलद्वीपे लइ जाय तेने हुं क्रोड सोनामोरो आपु ते सांभली एक वृद्ध खलासी (नावनो खेडनार) इव्यनो लोभी छे तेणे जाण्युं घरना माणसो इव्यतो खाशे एवुं विचारी बोल्यो के हुं लइ जइश पछी वेहु जहाजमां बेश जहाज चाल्युं आगल जतां एक वडवृक्ष आव्यो तेवारें नावड्यो बोल्यो आ वडनी उपर तु चडी जाजे अने हुतो आहीआ जहाज पाणीना चक्रमां बूडशे तेनी साथे बूडीने मरीश पण तु वड उपर बेशी रहेजे, रात्रना भारंड पंखी आवशे तेना पगोमां तहारा शरीरने बांधी मूकजे, ते पंचशेल द्वीपमा चूगवा जाशे तिहां तने मूकी देशे पछी तुं तिहा बंधनमुक्त थइ हासा प्रहासा देवीउनी पासे जाजे एवुं कह्युं एटलामा ते वाहण वडनी पासें आव्युं, सोनार वड उपर चड्यो अने जहाज भांगी पड्युं,नावड्यो मरण पाम्यो, सोनार ति

हांथी नारंम पंखीना पगमां वंधाइने हासा प्रहासानी पासें गयो, तेनी आगल नोग नोगववा माटे याचना करी, वेवीउ बोली आ तहारी अशुच् वेह छे ते वेहथी अमे नोग करीयें नही तेवारें ते वेवीयोयें फरी तेने चपानगरीमां मूक्यो अने कह्युं के जे हमणा अमारो वेवपति छे ते चवसे तिहां तुं मरण पामीने ते वेवनी शय्यामां उपजजे तो तहारु काम थशे तेवारें सोनार पण काष्ठ वालीने अज्ञानकष्ट करी मरवा लाग्यो ते अवसरमां ते सोनारनो मित्र नागिलनामा श्रावक हतो ते बोल्यो, अरे तु आवीरीते मरवानु मकर आ प्रकारें वेवीउने माटे मरवु योग्य नथी तो पण तेणे मान्युं नही काष्ठमां बली मरण पामीने हासा प्रहासाना ध्यानथी तेम नो पति वेव थयो अने तेउनी सार्थे नोग नोगवतो रहे छे एकदिवस इन्द्रमहाराज, सर्व वेव वेवी सहित नंदीश्वरद्वीपें वेवयात्रायें जवाने माटे तयार थया, तेवारें हासा प्रहासानो पति जे वेव छे तेनी उपर एवो हुकम आव्यो के तुं सर्व देवोनी आगल मृदग वजावतो चालजे ते वारें, हासा प्रहासायें ते वेवना गलामां मृदग नाख्यो, वेवें ते मृदंग पोताना गलामाथी काहा हीने फेंकी दीधो अने कह्युं के हु मृदग वजावीश नही एटलामां तो फरी ते मृदग तेना ग लामां आवी वाजी गयुं, फरी देवे फेंकी दीधो, एम वे त्रणवार कह्युं त्यारें हासा प्रहासा बोली अमारा नरतारनी एज मर्यादा छे के मृदंग वजाव्या विना ते छूटेज नही "हासा प्रहा सानो मृदग गलामां पड्यो ते वजावे छूटको" एवी लोकमां पण कहेवत छे हवे ए विद्यु न्माली वेव हासाप्रहासासहित मृदंग वजावतो आगल चाले छे तिहां महर्द्धिक देवोने देखीने पोताना नवनी निंदा करे छे एटलामां नागिल श्रावकनो जीव वारमां देवलोकमां उपन्यो छे, ते पण तिहां आव्यो अने विद्युन्मालीने कहेवा लाग्यो के अरे तुं मने उलखे छे के नथी उल

खतो ? तेवारें देवे उपयोग आपीने कह्युं के हा महारा मित्र नागिल तें घणो ए मने वार्यो पण हुं तुच्छ जोगने माटे व्यर्थ मनुष्य जन्म गमावीने आवा पुण्यहीन देवोमां आवी उपन्यो छुं तो हवे महारे शुं करवुं ? तेवारें नागिल बोल्यो तुं गोशीर्षचंदननी श्रीमहावीरस्वामीनी प्रतिमा बनावीने तेनी पूजा कर के जेथकी तने समकेतनी प्राप्ति थाय पछी ते विद्युन्मालीयें पण तेमज श्रीमहावीरजीनी प्रतिमा बनावीने केटलाएक काल पर्यंत पूजी छेवट पोतानुं आयुष्य खुं जाण्युं; तेवारें प्रतिमाने पेटीमा नाखीने जहाजोवाला लोकोनी जहाजो अटकी रही हती ते देवतायें देव प्रयोगथी काढाडी आपी अने तेमने पेटी सोंपीने कह्युं के आ पेटीमां श्रीदेवाधिदेवनी प्रतिमा छे ते तमे वीतभय पाटणमां जइने उदाइ राजाने आपजो तेवारें जहाजना लोकोये ते पेटी लावीने उदाइराजानी सभामा मूकीने कह्युं के आ श्रीदेवाधिदेवनी प्रतिमा छे तमोने कोइ देवतायें मोकली छे ते ल्यो तेवारें राजायें जाण्युं जे देवाधिदेव तो ब्रह्मानुं नाम छे माटे ब्रह्मानुं नाम लइने उघाडवा लाग्या तो पण उघडी नही एमज वली विष्णुना नामथी पण उघडी नही, महेश्वरना नामथी पण उघडी नही, राजाने भोजननी वेला वीती गइ पण पेटी उघडी नही तेवारें राजानी राणी प्रभावती बोली जे " देवाधिदेव श्रीअरिहंत वीतराग देव होय तो पेटी उघडजो " एवुं कहेवाथी पेटी उघडी पडी तेमाथी प्रतिमा निकली ते लइ देरासरमां थापन करी तेने प्रभावती राणी श्राविका छे ते नित्य पूजे छे एक दिवस प्रभावती राणीयें पूजाना श्वेतवस्त्र दासीना हाथे मगाव्या दासी ए लावी आप्या पण राणीयें पोतानी दृष्टीनी भ्रमताथी लाल वस्त्र जाण्या, तेथी दासी साथे लडवा लागी पण थोडी वार पछी वली तेज वस्त्रने श्वेत दीठा तेवारें जाण्युं जे हवे महारु आ

युष्य शेष ठ मदीनानुं रह्युं ठे ते माटे राजाने जइ कह्युं के मने आज्ञा आपो तो हु दीक्षा लेडं राजा बोल्यो तुं देवलोक जाय तेवारें अने मदारे कष्टनी वेला आवे तेवारें आवी सांनि ध्य करवानु कबुल करे तो आज्ञा आपु ते वात प्रजावतीयें मानी पठी राजायें आज्ञा आपी प्रजावतीयें दीक्षा लीधी,सयम पाली आयुष्य पूरण करी देवलोक गइ तिहांथी आवी यो गीनुं रूप करीने राजाने अमृतफल देखाडी जंगलमां लइगइ तिहां घणा योगीयो वेग हता ते रा जाने मारवा ठठ्या राजायें बीक पामीने देवताने याद कर्यो तेवारें देवे आवी राजाने तिहांथी ड पाडी साधुड पासे मूक्यो,राजायें जाण्युं जगतमां खरा आधारजूततो एज ठे पठी तेमनी पासेथी श्रावकना व्रत लइ श्रावक थयो हवे पूर्वली श्रीवर्द्धमान स्वामीनी प्रतिमाने प्रजावती राणी दीक्षा लेती वखते देवदत्ता दासीने पूजवानु कही गइ हती ते प्रमाणे ते दासी नित्य प्रत्यें पूजा करे ठे एक दिवस कोइ गंधार नामे श्रावक सर्व गामोना देरासर वांदवाने निकल्यो ठे ते वीतजय पाटण आव्यो, तेणे ते प्रतिमाने पूजी, तिहां ते गधार श्रावक अजारी थयो तेनी देवदत्ता दासीयें चाकरी करी तेथी श्रावकने रोग मटी गयो अने निरोगी थयो तेणे उपकार कर वावाली देवदत्ता दासीने बे गोलीड आपीने कह्युं के आ बे गोलीमांथी एक गोली खा वाथी मदास्वरूपवाली थइश अने बीजी गोली खावाथी जे मनमा चाहीश ते पुरुष वश थइ जाशे, एवुं कहीने गधार श्रावक जतो रह्यो पठी देवदत्तायें पहेली गोली खाधी तेथी दिव्य रूप थयुं तेणे करी सुवर्णगुलिका एवु नाम दासीनुं पडी गयुं वली बीजी गोली खाधी अने चन्डप्र द्योतन राजा स्त्रीयोनो लोलुपी ठे तेने मनमां चाहीने धार्युं जे मारो चन्डप्रद्योतन राजा ज्नर तार होजो तेवारें गुटिकाना अधिष्ठायिक देवे यक्षायणीमां आवी चन्डप्रद्योतन राजानी आगल

दासीनुं रूप वर्णन करी राजाने दासीउपर रागी करी गयो,पछी राजा अनलगिरि हाथीनी उपर स्वारी करीने तिहां गयो, तिहां दासीने बोलावी, तेवारें दासी बोली, हुतो प्रतिमा विना आवुं नही तेवारें चंमप्रद्योतन राजा फरी पाछो उज्जयणीयें आवीने ते प्रतिमा सरखी बीजी प्रतिमा करावी तेने लइने वली वीतभय पाटण जइने ते नवी प्रतिमा तिहां राखीने देवें दीधेली प्रतिमाने दासीसहित लइने उज्जयणीयें चाल्यो आव्यो हवे प्रभातें उदायी राजायें पोताना हाथीउंना मद उतरी गया देखीने जाण्युं जे अनलगिरि हाथीनी उपर चढीने चंमप्रद्योतन राजा आव्यो हतो, ते वली सुवर्णगुलिका दासी अने प्रतिमा लइने जतो रह्यो एवुं जाणीने क्रोधसहित दश मुकुटबद्ध राजाउंने सार्थे लइने उज्जयणी नगरी सन्मुख चाल्यो मार्गमां जेसलमेर ब्रह्मसर पासें आव्यो, पण मार्गमां पाणी पीवाने मले नही तेथी विलखो थयो थको राजायें चिंतापूर्वक प्रभावती देवीने याद कर्यो तेवारें तेणें आवीने तिहां अखूट पाणी करी दीधुं ते स्थानकें पुष्करज प्रमुख घणा तलावो अखूट पाणी वाला थया एवीरीतें उदायिराजए सेना लइने उज्जयणीनी सीमामां आवीने डेरा दीधा अने चंमप्रद्योतन उपर दूत मोकली कहेराव्युं के दासी पाछी नही आपे तो भले तुं राखजे परंतु अमारी प्रतिमाजी अमोने पाछी आप एवी मागणी करी, पण चंमप्रद्योतन राजायें प्रतिमाजी दीधी नही अने चौद श्रीना मुकुटबद्ध राजा साथे लइने उदायी राजाने सामुं लडवा आव्यो, तेवारें तिहां अनलगिरि हाथी विना लडाइ करवानो ठेराव कर्यो, तोपण चंमप्रद्योतन प्रतिज्ञा तोडीने अनलगिरि हाथी उपर चढीने सग्राममां आव्यो, पछी मांहोमांहे युद्ध करता चंमप्रद्योतन हारी गयो तेने अनलगिरि हाथी उपरथी उतारी नीचे नाखी महारी दासीनो भरतार चंमप्र

द्योतन छे एवीरीतनो फांन तेनी ललाटमां देखने ऊदायीराजा प्रतिमा लेवा लाग्यो तो प्रतिमा तिहांथी ऊठे नही एटलामां आकाशवाणी थइ जे, प्रतिमा लइ जासो नही, कारणके वीत भय नगरमां धूलनो कोट पडवावालो छे तेवारें प्रतिमाने तिहांज राखी पोतें चंडप्रद्योतनने बांधी लइने चालतो थयो मार्गमां पजुसण पर्व आव्या ऊदायीराजायें तिहां पडाव कस्यो, पजुसण कस्या, अठाइ महोत्सव कस्या, पोते उपवास कस्यो रसोइ करनाराउने कह्युं के चंडप्र द्योतनने जे रुचे ते रसोइ करी जमाडजो एवुं कहीने ऊदायिराजा पोतानी जिनपूजादिक करणीमां प्रवर्त्त थइ गयो, रसोइ करनारें चंडप्रद्योतनने पूछ्युं के आपना सारु केवी रसोइ बनावु ? चंडप्रद्योतन बोल्यो जे ऊदायि कहे ते बनावो, रसोइयें कह्युं तेमणे तो आज पजु सण पर्व छे माटे उपवास कस्यो छे ते सांजली चंडप्रद्योतने विचार्युं जे आज एणे मने जहेर आपवानो विचार राख्यो छे तेमाटे जूदी जूदी रसोइ करावे छे एवा जयथी बोल्यो जे हुं पण आज उपवास करीश, ऊदायी राजा अमारो साधर्मी जाइ छे, अमेपण एज धर्म पालीये छेयें एवुं रसोइ करनारे जइ ऊदायी राजाने कह्युं तेवारें ऊदायीयें जाण्युं जे ए धूर्त्तताथी बोल्यो छे खरो तो पण महारोतो साधर्मी थयो माटे एने खमाव्या विना पडिक्कमणुं करवुं सूजे नही एवुं जाणी चंडप्रद्योतनने बंदीखानामांथी कढावी पोतानी पासें बोलावी तेना ललाटे सोनानो पट्ट बंधावी खमतखामणा करी सत्कार आपीने पाछो अयवती नगरीयें मोकली दीधो एवी रीतें बीजा जव्यजीवोयें पण ऊदायी राजानी पेरें खमाववुं; क्रोधनो त्याग करवो के जे थकी आराधकपणुं थाय ॥ वली जो अपराध करीने खमावे नही तो अनर्थनी वृद्धि थाय तेनी उपर दृष्टांत कहे छे एक गाममां कोइक कुंजार जोमानुं गाडुं जरीने वेचवा आव्यो तेवारें तेनो

एक बलद लेवा सारु गामना धूर्त्त लोक बोल्या जुउ आ एक बलदनी गाडी चाले छे एवुं बीजा लोकोये पण सांभल्युं अने गाडावाले जाण्युं जे आ दुष्ट लोको महारो एक बलद खोंसी लेवानो उपाय करे छे माटे ए प्रत्यक्ष चोर छे केमके महारा तो बे बलद छे तेने छुपावीने ए लोको एक बलद कहे छे, माटे कपटी छे एमचिंतवीने कुंभार पोताना गामडा वेचवामां एकचित्ते तत्पर थइ गयो तेवारें बलदीयाने धूर्त्त लइ गया पछी कुंभार जेवारें वासण वेची तयार थयो तेवारें जोवा मांड्युं तो एक बलद दीठो नही पछी घणी हांको मारी के अरे महारो बलद कोण लइ गयो ! ! तेने लोको कहेवा लाग्या के अमेतो एकज बलदनी गाडी सांभली हती ते सांभली कुंभार घणुं दुःख करवा लाग्यो छेवट निराश थइने पोताने स्थानके जतो रह्यो पण क्रोध करीने सात वर्ष लगण खेत्रखलां बाल्यां, एकदा कोइ यक्षनी यात्रामां गामना लोको एकठा थया छे, ते वखत गामना लोकोये पडह वजाव्यो के जे अमारा धानना खेत्र बाले छे ते प्रगट थाउ ते सांभली कुंभार पोतानो वेष बदलावीने बोल्यो के जेनी एक बलदनी गाडी तमे दीठी हती ते तमारो धान बाले छे तेवारें लोकोयें जाण्युं जे एनी गाडीनो बलदीउ आपणा लोकोये लीधेलो छे ते वेष बदलावीने बोले छे, माटे हवे एनो बलदीउ आपी यो नही तो फरी धान बालशे, पछी कुंभारने बलदीयो आपीने सर्व लोकोयें अपराध खमाव्यो तेमाटे प्रथम बनता सुधी अपराधतो करवोज नही एवीज टेव राखवी परंतु कदापि थइ जाय तो तरत खमतखामणा करी अपराधनी क्षमा मागी लेवी, के जेथी कोइ अनर्थ थाय नही ए क्रोध उपर कुंभारनो दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे जे पज्जुसणमां क्रोधनो त्याग नही करे तेने जेम सडेला पानने बाहेर कहाडीने फेंकी आपीयें छैयें तेनी पेठें

मध्यथी बाहेर कहाडी मूकवो, तेना उपर दृष्टांत कहे छे एक खेडा गामनो रहेवासी कोइ ब्राह्मण हतो, ते खेतीनो धंधो करे, तेनो हल खेडवामां बलद हांकतां हांकतां गलीयो थइ बेशी गयो, तेने उठाडवानां घणा प्रयत्न कर्यां पराणानी मार आपी, पाटुयें मार्यो तो पण उठीने चाले नही, तेवारें ब्राह्मण रीसें धमधमतो ते बलदनी उपर खेत्रना ढेफा नाखवा लाग्यो ते ढेफा नाखतां नाखतां बलद आखो ढकाइ गयो, कदर्थनाथी ते बलदनुं श्वास रु धाणु तेथी मरण पाम्यो ब्राह्मणने गोहत्यानुं पाप लाग्युं, ब्राह्मणे महापुरुषोनी पासेथी प्राय श्चित्त लेवा माग्यु कह्यु के गोहत्यानो दंड आपो, महापुरुषोयें कह्युं ताहारो क्रोध उतर्यो के नथी उतर्यो ? ब्राह्मण बोल्यो हमणा बलदने देखु तो मारी नाखु तेवारें महापुरुषोए कह्युं के आ पापीनें शो दंड आपीयें के जेथी ए शुद्ध थाय एतो अशुद्ध छे एवु कही न्यात बाहार कहाडी मूक्यो एवीरीतें साधुपण जे क्रोधने त्यागे नही तो तेनें संघ बाहार करी मूकवो ॥ हवे पोताथी अपराध थयो होय तो मृगावतीनी पेरें खमाववो पोतानुं मन शुद्ध करीने मिछामिडुक्कडं देवो ते कथा कहे छे एक दिवस श्रीमहावीरस्वामी कोसंबी नगरी समो सर्या, तिहां चंद्र ने सूर्य बे मूल विमाने वांदवा आव्या, चंदनबाला, मृगावती प्रमुख तिहां बेठी हती, तेमां चंदनबाला तो सूर्य अस्त थतो जाणी तिहांथी उठी पोताने उपासरे आवी अने मृगावती तो भगवाननी देशनामां मोहित थइ थकी तिहांज बेशी रही, पछी सूर्य ने चंद्र जेवारें पोताने स्थानकें गया तेवारें अंधकार थइ रह्यो तिहां मृगावतीयें चंदनाने दीठी नही तेथी एकलीज भय पामती उपासरे आवी तिहां इरियावहि पडिक्कमि चंदनबा लाने नमती थकी, पगचंपी करती थकी कहेवा लागी के हे स्वामिनी ? हुं रात्रनी एकली

च्छा आवी एथी हुं अपराधणी थइ माटे आप मद्दारो ए आपराध खमजो, तेने चदनायें
कह्युं हे नद्रे ? तूं उत्तम कुलनी उपनी ग्रे माटे तारे एम न करवुं मृगावतीयें कह्युं हवे हुं
एम केवारें पण करुं नहीं एवुं कहेती वारंवार चदनबालाने पगे लागती शुद्ध मनथी खमा
वती थकी तत्पर रहेलीने केवलज्ञान उपजी गयुं अने चदनाने तो चपी करावतां निद्रा आवी
गइ एवामां अंधकारने विषे सर्प आवतो जाणीने मृगावतीयें चदनानो हाथ उपाडीने
संथारा उपर मूक्यो, तेवारें चदना जागृत थइने पूछवा लागी के मद्दारो हाथ कोणे उपाड्यो,
तेने मृगावतीयें कह्युं सर्पनो संघटो थवाने लीधे में तमारो हाथ उंचो राख्यो, चदनायें पूछ्युं
एवा अंधकारमां सर्प आवतो तमारा जाणवामां केवीरीतें आव्यो ? मृगावतीयें कह्युं आपना
प्रतापथी ! चदनायें कह्युं, शुं ! तमोने केवलज्ञान उपन्युं छे ? मृगावती बोली आपनी रूपाथी
तेवारें चदनायें जाण्युं जे, अरे में केवलीनी आशातना करी एवुं चिंतवीने वारंवार खमा
वती खमावती मिच्छामिडुक्कड देती देती, तेपण केवलज्ञान पामी ॥ एवीरीतें नव्यजीवोये
मिच्छामिडुक्कड देवो परंतु कुंभार अने चेलानी पेरे नहीं करवुं ते कथा कहे छे जेम एक
लघु शिष्य हतो ते कुंभारनां नाम्हा तावडे सूके तेने कांकरा मारे, ते जोइ कुंभारें कह्युं हाम्हा
म फोडो, तेवारें शिष्य बोल्यो " मिच्छामिडुक्कड " ते सांजली कुंभारें जाण्युं जे हवे नांम्हा फो
डशे नहीं पण शिष्यतो फरीने तेवीज रीतें कांकराथी कुंभारना नाम्हा फोडवा लाग्यो अने
कुंभार नाकारो करे तेनें शिष्य वारंवार मिच्छामिडुक्कड देवा लाग्यो, ते जोइ कुंभारें पण एक
कांकरो लइ शिष्यना कानमां नाखीने कान मसल्यो, तेवारें शिष्य बोल्यो अरे कान दुखे छे
ते सांजली कुंभार बोल्यो मिच्छामिडुक्कड एवीरीतें वारंवार चेलो कहे, अने कुंभार मिच्छामि

ऊभई आपे माटे ए प्रकारें मिछामिछक्कड देवाथी कार्यसिद्धि न थाय, वारंवार पाप करवा अने वारंवार मिछामिछक्कड देवो ते काममां न आवे तो शुं करवु ? तोके साछु जमाइनी पेरें सर्व अलिया गलिया करवा, ते कथा कहे ठे एक वृद्ध स्त्री हती तेनी पासें घणुं ड्रव्य हतु परंतु पुत्र न हतो अने पोतें विधवा घणी लोभी अने कंजुस हती धननो सम्रह करे पण पेटमा खाय नही तेने एक दीकरी हती ते कोइ कुलवान् ठोकराने परणावी पण पोतें लोभी हती माटे जमाइने दायजो प्रमुख काइ दीधुं नही तेथी जमाइ कचवाणो,नाखुश थयो होली दीवाली प्रमुख कोइ पर्वे जमवा आव्यो नही, तेवारें लोको वृद्ध स्त्रीने कहेवा लाग्यां के अरे पापणी ! आ तहारो एकज जमाइ ठे तेनें पण जमाडती नथी ! ठोकरोतो ताहारे ठे नही तो तहारु आ धन ते कोण खाशे ! अने कोनें काम आवशे ! तेवारें लौकिक रीती साचववा माटे जमाइने घणी मनवार करीने बोलाव्यो, अने कहेवराव्यु के हे जमाईजी आज तमे एकलाज पधारजो ते सांभली जमाइना मित्रो कहेवा लाग्या के आज तुजने सासु वधुं ड्रव्य आपीदेशे पठी जमाइ सासुने घेर एकलो जमवा गयो, तेने सासुयें खीर पीरसी वली वाटकीमां रुनो पुलडो नाखीने घृत पीरसवा आवी, वाटकी मांहेथी घृतनुं टीपु टीपु था लीमां पडे पण वधारे पडे नही तेथी घणी देर लागी सासुयें विचार्यु जे जमाइ हमणा नाकारो करशे, अने जमाइयें जाण्यु जे आ तो मने ठगवा आवी ठे तेथी सासुनो हाथ प कडी वाटकीनुं महोडुं थालीमां उधुं करी लीधु अने सासुने कहेवा लाग्यो के जीजी घणु थयुं हवे म नाखो, सासुयें जाण्युं जे, अरे वाटकीतो खाली थइ गइ, घीतो वधुं जमाइजी खाइ जाशे एतो ठीक थयुं नही माटे कांइ युक्ति करवी एम विचारीने जमाइने कहेवा लागी

के हे जमाइजी आजे तमारे अमारे रुसणु ठे ते सर्व नांगो माटे आपणे वे नेला वेसी जमीयें एम कही जमाइनी नेली सार्थे जमवा बेठी पण जमाइनी तरफ थालीनुं नीचाण वाजु आवेलु हतु तेथी घी सर्वे जमाइ तरफ थइ गयुं हतु एवुं जाणीने सासु वलनानुं मिस करीने आंगुली सुधी पोतानी तरफ खेंचती जाय ने जमाइजीने कहेती जाय के तहारामां एटला वांक ठे के प्रथमतो तुं होली उपर नही आव्यो,बीजो दीवाली उपर नही आव्यो, त्रीजो अक्षयत्रीज उपर नही आव्यो, एवुं बोलती बोलती सर्व घृत पोतानी तरफ खेंची लीधु तेवारें जमाइयें जाण्युं जे सासूतो घणी समजणवाली देखाय ठे घीतो सर्व पोतानी तरफ खेंची लीधु एवु जाणी थालीमां हाथ फेरवीने बोल्यो, सासुजी ! जे थवानुं हतु ते थयुं पण हवे तमारु अने महारु वेहुनुं मन एक करी ल्यो अलिया गलिया आज पठी सर्व अपराध ॥ एवुं कही थाली उपाडीने घी खांड सहित सर्व खीर जमाइ पीगयो अने बोल्यो हवे आपणु सर्व रुसणु मटी गयु माटे तमें खुशीमा रहेजो ॥ ॥ एवी रीतें धर्मार्थि जीवनें पण कोइ राग द्वेष उपज्यो होय ते सर्व खमाववो पण पंजुसणमां राग द्वेष राखवो नही मिछामिडक्कड देवो ॥ १ ॥ ॥ वली आ पंजुसण पर्वमां क्रोध, मान, माया अने लोन्न करवो नही एनी उपर अनेक दृष्टांत ठे पण पंजुसण पर्वने विषे गोचरीमां क्रोध, मान, माया अने लोन्न ए चार वाना सर्वथा न करवा तेनी उपर दृष्टांत कहेतो थको प्रथम क्रोधथी आहारादिक लेवा आश्रयी दृष्टांत कहे ठे हस्तिकल्पनामा नगरमां एक साधु मासितपने पारणे गोचरी करवा माटे ब्राह्मणोमां कोइ मरण पामेलानु जमण थयुं ठे तिहां गयो, तिहां ब्राह्मणो घेवर खाय ठे साधु घणो वखत उन्नो रह्यो पण कोइयें साधुने दीधुं नही तेवारें साधु क्रोध करीने

बोल्यो जे आ आजना जमणमा नही आपो तो फरी जमण थाशे तेवारें आपजो एवुं कही चालतो थयो, साधुनु बोलवु छतु थाय नही एटलामां वीजा महीनाने पारणे फरी पण कोइक ब्राह्मण मरण पाम्यो तेना जमणमां वली साधु पण पारणु करवा माटे गोचरीयें आव्यो परंतु कोइयें वहोराव्यु नही, तेवारें वली क्रोधथी बोल्यो, त्रीजाना जमणमा वहोरावजो, एवुं कही जतो रह्यो एम वली पण त्रीजा महीनामा कोइ मरण पाम्यो तेना जमणमां पण वहोराव्यु नही तेवारें साधु क्रोधथी चोथाना जमणमा वहोरववानु बोल्यो ते शब्द कोइ मोकरो पाल उपर बेठो हतो तेना काने पड्यो तेवारें मोशायें घरना धणीने कह्युं के आ साधुने घेवर आपीने खुसी करो नही तो वली पण कोइ मरशे एवुं समजी साधुने बोलावी घेवर वहोराव्यो जेम ए साधुयें क्रोधथी घेवर वहोर्या तेवीरीतें कोइ पण साधुयें वहोरवुं नही ॥ ए क्रोधपिंड उपर गेवरीया साधुनो दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे मानपिंड उपर सेवेया साधुनो दृष्टात कहे ठे कोशलदेशमां गिरिपुष्पनामा नगरने विषे एक सेवोनु पर्व आव्यु तेवारें युवान साधु एकठा मिल्या तेमा एक साधु बोल्यो आजतो सेवैया पर्व ठे माटे सेवो लावीशु तेमा शुं वधाइ ठे ' परंतु काले प्रनातें खांड घी सहित जे सेवु लावीने सर्वे साधुउने जमाडे ते लब्धिवान् जाणवो तेवारें वली एक शिष्य अनिमान करीने बोल्यो जे हु काले सेवो लइ आवीने सर्वे साधुउने जमाडुं तो महारुं नाम फलाणु ते खरे खरु करी जाणजो एवो अनिमान करी वीजे दिवसें महोटा महोटा पात्रा जोलीमां नाखीने गोचरी गयो तिहां एक शेठने घेर सेवो देखीने मागवा लाग्यो कें शेठाणीजी अमने सेवो वहोराव पण ते शेठाणी लोनणी हती माटे बोली, अरे जा जा,दूर जा,तुने सेवो नही मले, ए प्रमाणे जलकारीने का

दाढी मूक्यो तेवारें चेलो बोल्यो तु जोतो खरी के हुं जरुर ताहारी पासेंथीज सेवो लइ जाउ तो महारुं नाम साधु जाणजे कोइ पण रीतें अवश्य जइ जइश तेवारें शेठाणी बोली, जो तुं सेवो लइ जाय तो महारु नाक गयुं एम जाणजे परंतु महारु नाक होयतो तुने सेवो लइ जवा देइश नही, ते सांभली साधु तिहांथी निकली आगल जइ कोइने पुछ्यु के आ घर कोनुं छे? एना घरनो मालक किहां छे? तेवारें कोइए कह्युं, ए देवदत्तनुं घर छे, ते हमणा पचाय तीमां बेठो छे, तेवारें ते साधु तिहां गयो अने कहेवा लाग्यो अरे पंचातीयो तमारामां देव दत्त कोण छे? ते बोल्या शुं काम छे? साधुयें कह्युं तेनी पासेथी कांइ मागवुं छे, पंचातीयो बोल्या अरे ए रुपए पामेंथी शुं मागवा चाहे छे? ताहारे मागवु होयतो अमारी पासेथी माग के जेथी ताहारुं कार्य सरे तेवारें देवदत्त बोल्यो हे साधुजी जे तमे मागशो ते हुं आपीश तेने चेलायें कह्युं हे देवदत्त जेवीरीतें-छ-जणा स्त्रीयोने वश हता, तेवीरीतें जो तु स्त्रीने वश न होय तो हुं कहु छुं के तहारी पासेथी कांइ मागु ते सांभली पंच बोल्या, ते छ जणा कोण हता? जे स्त्रीयोने वश थया हता तेनी कथा कहो तेवारें चेलो बोल्यो एक कुलपुत्र हतो ते परणीने-पछी स्त्रीने वश थयो, प्रभाते भूख लागी स्त्रीनी पासेथी खावा माग्युं, स्त्री ढोलीया उपर बेठी थकीज कहेवा लागी के जो तुं भुख्यो होय तो चूला माथी राख काहाडी बाहेर नाख, इंधण लाव, चूलामा अग्नी बाल, माथे हांडी चडाव, तेमां पाणी नाख, कोठमांथी चावल लावी तेने सोधी साफ करीने हांडीमां नांखी पचावीने त यार कर, तयार थया पछी मने हांक मारजे तो हुं उठीने पीरसी आपीश ए वात सांभली कुलपुत्र बोल्यो तुं कहे छे ते सत्य छे एम कही तहत्ति करीने पुर्वोक्त सर्व काम करवा ला

बोल्यो जे आ आजना जमणमां नही आपो तो फरी जमण थाशे तेवारें आपजो एवुं
कही चालतो थयो, साधुनुं बोलवु जुठु थाय नही एटलामां बीजा महीनाने पारणे फरी
पण कोइक ब्राह्मण मरण पाम्यो तेना जमणमां वली साध
आव्यो परंतु कोइयें वहोराव्य

एम त्य करतो जाय प्रभातना नित्य चूलानी राख काहाडवी पडे तेने लीधे आंगु
ओली पडी गइ; लोकोये तेनु श्वेतांगुली एवुं नाम आप्युं तेम हे देवदत्त तु पण स्त्रीने
होय तो हुं याचना करुं तेवारें देवदत्त बोल्यो हु स्त्रीने वश नथी ॥ वली बीजा युवान
बंधु आ तो तें एमांथी एक वार्त्ता कही पण बीजी पांच वार्त्ता संन्नलाव साधु बो
एक कुलपुत्र हतो ते स्त्रीने वश थयो तेने स्त्री ढोलीया उपर बेठी बेठी कहेवा लागी के हुं
पाणी नही लावीश माटे तुं जइ तलाव उपरथी पाणी भरी लाव तो रोटला हुं बनावी आ
ीश तेपण स्त्रीने वश थयो थको लोकोनी लाजथी, जेवारें पाछली एक पहोर रात्री रहे तेवारें
नित्य माथे घडो लइ पाणी भरी लइ आववा लाग्यो रात्रीना बगला प्रमुख जनावर बीक
ामीने तलाव उपरथी उडवा लागे तो महारु नाम फलाणुं तेवारें जाणवामां आव्युं जे कुल
पद्रव थाय छे ! बगला हाटा महोटा पात्रा जोलीमां नाखी बगोड्डो एवु नाम पाडी
त्र पाणी भरवा गवा लाग्यो के शेठाणीजी अमने सेवो व हु हुं एवो नथी ॥ ते
ीधुं माटे स बोली, अरे जा जा, दूर जा, तुने सेवो नही मळे, ए प्रमं स्त्री परणीने तेने
काम करु ? स्त्री

घोजी माखीयो उमाड, माखीयो उडामीने वली पूछ्यु हवे शुं करु? स्त्री बोली मलमूत्र परठी
श्राव, ते परठी श्रावीने फरी बोल्यो हवे शु करु? स्त्री बोली हु सुई रहु छु तु मह्यारा पग माव
चपी कर, तेवारें पग मावबा लाग्यो ते जोइ लोक बोल्या, ए स्त्रीकिंकर ठे तेम हे देवदत्त? तु
पण तेना जेवो होय तो हुं याचना करु नही देवदत्तें कह्युं हु एवो नथी ॥ फरी चोथी कथा पू
ठवाथी साधु कहेवा लाग्यो एक कुलपुत्र स्त्रीने वश थइने तेना वस्त्रप्रमुख धोवानु कार्य नित्य
करे तेनु लोकोये तीर्थस्नाता एवु नाम दीधु एमज पांचमानु नाम गन्धापरखी जाणवु ॥ हवे ठ
ठानी कथा कहे ठे एक कुलपुत्र स्त्रीने वश थयो, तेने पुत्र थयो स्त्री कहे ठोकराने हंगावी लाव
ते नित्य ठोकराने हंगावे, स्नान करावे, ते देखी लोकोये हवनीयो एवुं नाम श्राप्युं माटे एनी
पेरें तु जो स्त्रीने वश न होय तो तहारी पासें याचना करु देवदत्त बोल्यो हुं तेवो नथी तमे
सुखे मागो ॥ तेवारें बीजा सर्व पंचायती लोक बोल्या हे चेलाजी, स्त्रीने वश थयेलाना सर्व
दोष एमा ठे एवु हास्यपूर्वक बोल्या तेवारें देवदत्त बोल्यो हे नगवान्! एतो महारी हासी
करे ठे श्रापने जे चाहना होय ते सुखे मागो तेवारें चेलो बोल्यो घृत श्रने खांड सहित
सेवो वहोरावो देवदत्तें कह्युं चालो हु श्रापने वहोरावु एवु कही तिहांथी चाल्यो श्रने सा
धुने सार्थे लइ घेर श्राव्यो तेने रस्तामा साधुयें कह्यु के तहारी स्त्रीतो महारी सार्थे लडी
ठे तेने देवदत्तें कह्युं तमे घरनी बाहेर उना रहेजो हुं बोलावु तेवारें श्रावजो पठी साधु
बाहेर उनो रह्यो, देवदत्त घरमां जइने स्त्रीने कहेवा लाग्यो, श्राज ब्राह्मणोने जमवानु कह्यु
ठे, ते जमवा श्रावशे काइ घरमां राधेलु श्रन्न ठे? ते बोली सेवो तयार ठे देवदत्तें जाण्यु ए
स्त्री ठता तो देवाय नही एवु चितवीने स्त्रीने कह्युं के नीसरणी चढीने ठपरथी घृत गोल लइ

आवो ते स्त्री घृत गोल लेवा सारु नीसरणी उपर चडी ते वेलायें साधुने वोलाव्यो साधु घोल्यो देवदत्त आ नीसरणी जरा अलगी लइ ल्यो तो सारीरीतें वहोरीश, देवदत्ते नीसरणी दूर करी साधुयें रुडी रीतथी सेवों अने घृत गोलना पात्रा नरी लीधां, स्त्री उपर रुनी रुनी हांको करवा लागी, के अरे एने कां वहोरावे छे; आ मुमो छे एवीरीतें बकवाद करवा लागी पण जोर चाल्युं नही साधु पण पात्रा नरीने निकलतो थको नाक उपर आगुली फेरवीने स्त्रीने जणाव्युं के तहारु नाक कपाइ गयुं एवी संज्ञा करी उपासरे आवीने सर्व साधुयोने जमा ड्या एम जे रीतें ए साधुयें अभिमान करीने आहार लीधो ते रीतें वीजा साधुयें आहार लेवो नही ए कथाउ जो विस्तारें जोवी होयतो पिंमनिर्युक्तिनी टीकाथी जोइ लेवी आहीं संक्षेप मात्र लखेली छे' ए मानपिंम उपर दृष्टांत कह्यो ॥ हवे मायापिंम उपर आषाढनूतिनो दृष्टांत कहे छे, जेणे राजगृही नगरीमां नटवाना घेरथी रूपपरावर्त्तन करीने पांच लाडु वहोर्या छे ए कथा प्रसिद्ध छे माटे लखी नथी तेवीरीतें पण साधुयें नही वोहोरवुं ए मायापिंम उपर दृष्टांत कह्यो ॥ ३ ॥ ॥ हवे लोनपिंम उपर सिंहकेसरीया साधुनो दृष्टांत कहे छे चपानगरीमां उत्सवना दिवसें एक साधुयें मासखमणने 'पारणे अभिग्रह लीधो के महारे आज सिंहकेसरीया मोदक वहोरवा पछी घरघर नम्यो पण लाडवा कोइ आपे नही अने वीजु अन्न तो साधु पण ले नही पछी लाडु नही मलवाथी मुनिनुं मन संक्लिष्ट थइ गयुं ते अर्द्धरात्री लगण घरघर धर्मलान देतो फर्यो लोनना वशथी रात्रनी खवर पण रही नही रात्रीयें कोइएक श्रावकने घेर जइ धर्मलान दीधो ते श्रावक महागनीर छे मातापितासमान छे तेणे रात्रनो धर्मलान सांनलीने विचार्युं जे कोइ कर्मना वशथी साधुनुं मन मगमग थइ गयुं छे

एवुं जाणीने तिहांथी ठठयो जइने मुनिने वदना करी जोयुं तो साधु महातपस्वी देखाय छे तेने श्रावकें पूछ्युं महाराज आपने शुं जोइयें छैयें ? मुनियें कह्युं सिंहकेसरीया मोदक खपे छे। श्रावकें कह्युं सुखे ल्यो, अमारे घेर घणा छे निर्दोप छे एवु कहीने सिंहकेसरीया मोदकनो थाल नरी लाव्यो अने मुनिने वहोराव्या तेवार मुनिनुं मन ठेकाणे आव्युं श्रावक बोल्यो स्वामी पुरिमार्द्धना पच्चस्काणनो वखत आव्यो के नही ? मुनियें उपदेश आपी आकाशमा जोयुं तो निर्मल तारा, नक्षत्रनी श्रेणिसहित चन्द्रमाने जोइ चित्त ठेकाणे आवी गयुं तेवारें विचार्युं जे धिक्कार छे। में आ शुं कह्युं। जे हुं रात्रीनो गोचरी करवा निकल्यो। महारो साधुनो आचार किहा गयो। एम पश्चात्ताप करतो थको नगरनी बाहेर आवीने सूत्रोक्तविधिसहित मोदक परठवतो थको विचारे छे के अरे कर्मने जीतवुं घणु मुसकील छे। अरे में आ खोटुं काम कर्युं धर्मनी निंदा करावी, एवीरीतें पश्चात्ताप करतो करतो शुक्लध्यान ध्यावतो थको क्षपकश्रेणी चढीने केवलज्ञान पाम्यो इहां परमार्थ ए छे के जेम एणे लोलना वशथी सिंहकेसरीया मोदक वहोर्या तेम बीजा साधुयें लेवा नही एवां इहां घणा दृष्टांतो छे पण अमे केटला ल खीयें ए लोलपिंड उपर दृष्टांत कह्यो ॥ ४ ॥ ए पर्वमा सर्व प्रकारें क्रोधादिक नही करवा ॥ हवे वर्षादमां पंजुसण करीने रहेला साधु साध्वीउयें जीवादिकनी उत्पत्तिने लीधे त्रण उपा सरा राखवा तेमा जे उपासरामां पोतें रहे ते उपासरानें तो प्रतिदिवस त्रणवार पडिलेहण क रवुं पूजवो अने बीजा बे उपासराने एकवार पूजवा पडिलेहण करवां ए पूजवा पडिलेहवानी पच्चीसमी समाचारी जाणवी ॥२५॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीउने पोतानी मरजीमां आवे तिहां जवुं होयतो गुरुने पूछीने जावुं दिशि बतावीने जावु शिष्य पूछे छे के शा वास्ते

पूछवानुं प्रयोजन कयुं छे? गुरु कहे छे, साधु जे छे ते चोमासा विना शेषकालमां तो सा मान्य प्रकारना तप करे छे परंतु चोमासाना कालमां घणा प्रकारना विशेष तप करे छे माटे कोइ तपस्वी दुर्बल होय अने किहां मुर्छा खाइ पडीजाय तो, जे दिशायें गयो होय ते दिशायें आचार्य याद राखीने निगाह करावे, खबर कढावे, शोध करावे जे एटलो वखत केम ला ग्यो तेमाटे खबर करावे ते सारु आचार्यने पूछीने बाहार जवुं जोइयें ॥ ६१ ॥ ए प्रतिजाग रण करवानी छवीसमी समाचारी जाणवी ॥ २६ ॥ ॥ वर्षाकालमां चोमासु रहेला साधु साध्वीउने औषध प्रमुख कामने लीधे वैद्यनी पासें जवुं पडे तो चार योजन तथा पांच योजनपर्यंत पोताना गामथी जे गाम दूर होय ते गामे जवुं एटले सोल तथा वीस कोश दूर जइने ते गाममांथी औषध लइ पाछो फरी आवीने जो पोते रहेला गामनी मांहे उपासरामां दिवस छतां आवी न शकाय तो तेज गामनी बाहेर आवी रहेवुं पण जे गाममां औषधादिक लेवा गया ते गाममां रात्रे रहेवुं नही अथवा दिवस छतां गामनी बाहेर न पोहोची शकाय तो मार्गमां रहेवु ॥ ६२ ॥ ए औषधादिक लेवा माटे चारथी पांच योजन लगें जवानी सत्तावीसमी समाचारी जाणवी ॥ २७ ॥ ॥ इत्यादिक संवत्सरीनो थविरकल्प जेवीरीतें कल्पसूत्रमां कह्यो छे तेवी विधिथी करे, ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो मार्ग जेरीतें भगवाने कह्यो छे तेम करे, भला प्रकारथी मन, वचन अने कायायें करी फरशे, अतिचाररहित पाले, विधिसहित शोभा करी दीपावे, जाव जीव सुधी आराधे, कांठे पहोचाडे, लोकोमा कीर्त्ति करे, आराधीने आज्ञासहित पालीने केटलाएक निर्ग्रंथ तो तिहिज भवमा सीजे, तत्त्वने जाणी, कर्मोथी रहित थइ, सर्वसतापरहित थइने सर्व दुःखथी छूटे, मोक्ष जाय, केटलाएक त्रीजे

नवें नीजे, यावत् मोक्ष जाय परंतु सात आठ नवतो उलघे नहीं तेमज केटलाएक सातमे तथा आठमे नवें तो अवश्य मोक्ष जाय ॥ ६३ ॥ ए चोमासानी मर्यादा पाळे ते साधुने जे फल थाय तेनी अठावीसमी समाचारी जाणवी ॥ २८ ॥ ॥ तें कालने विषे, ते समयने विषे श्रमणभगवत श्रीमहावीर स्वामी राजगृही नगरीयें गुणशील नामे चैत्यने विषे इहां जे यागमां यक्षनुं देहरु होय ते थागने चैत्य कहीयें ते चैत्यने विषे घणा साधुउमा,घणी साध्वी उमा, घणा श्रावकोमां, घणी श्राविकाउमा, घणा देवोमां, घणी देवीउमा बेठा थका अर्थात् भगवान् बार परषदामा बेठा थका एवां वचने करीने कहे ए कल्पने पालवानुं फल बतावे एवो प्ररूपे, ए पंजुसणकल्पनामा अध्ययन दशाश्रुतस्कंधनो आठमो अध्ययन, ते अर्थसहित, हेतुसहित, कारणसहित, सूत्रसहित, अर्थसहित, सूत्रार्थसहित, दृष्टांतसहित, वारवार उपदेश करीने देखाडे एवो छे जंबू (मे के०) हुं था सूत्र भद्रबाहु स्वामीयें रच्युं छे दशाश्रुतस्कधमां आठमो अध्ययन करीने रच्यो छे पण वाचना सर्व सुधर्मस्वामी अने जबुस्वामीनी जाणवी ॥ ६४ ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ १२१६॥ इति नवम व्याख्यानम् ॥९॥ ॥ इति श्रीकल्पसूत्रस्य बालावबोधिनी भाषा समाप्ता ॥ ए कल्पसूत्र दशाश्रुतस्कधसूत्रनो आठमो अध्ययन छे,तिहां पण एनुं सहिनाण छे ॥ सर्वेषु सूत्रेषु वरप्रशस्ति,र्यस्यास्ति सर्वेष्वतिमुख्यता च ॥ तत्कल्पसूत्रं मम कल्पतुल्य, चारित्रकार्ये शुभवृक्षसदास्तु ॥१ ॥ सौधर्मपट्टे सुपरंपरायां, सूरीश्वरा ये च वरा बभूवु ॥ वदे सदा,तान् वरसूत्रदान्वा, श्रीरत्नसूरीन्सुमुनींस्तथापि ॥ २ ॥ श्रीमत्क्षमादिगुणवान् यशवाञ्श्रमीशो, जात क्षमागणधर प्रवराब्जकर्त्ता ॥ चित्रा लता चरणसेवनतत्पराभूत् तस्यापि तां हृदि गुरु स च नो दधार ॥३॥ देवेंद्रविजयो वद्य,तच्छिष्यो बहुकीर्त्तिभाक् ॥ कल्याणवि

जयस्तस्य, प्रमोदश्च प्रमोदसुक् ॥ ४ ॥ सौधर्मस्वामिनो गछे, संति राजेंद्रसूरय ॥ तेनेयं कल्प सूत्रस्य, वार्त्ता बालावबोधिनी ॥ ५ ॥ कृता सूत्रपर्वैर्युक्ता, सर्वसारांशसंयुता ॥ सायोगोद्घट्टन येन, न कृतं तस्य हेतवे ॥६॥ अब्दे खवेदनवेके, (१९४०) माधवे च सितेतरे ॥ पक्षे दिने द्वितीयायां, मगले लिखिता त्वियम् ॥७॥ इति श्रीराजेंद्रसूरिविरचितायां प्राकृतभाषायां बालाव बोधिनी टीका कल्पसूत्रस्य समाप्ता ॥ श्रीरस्तु, कल्याणमस्तु ॥ संवत् १९४० ना वैशाखवदि बीजना दिवसें बालावबोधिनी टीका संपूर्ण थई ॥ जांबुवा नगरे ॥

॥ भट्टारक श्रीराजेंद्रसूरिकृता श्रीकल्पसूत्रस्य बालावबोधिनी वार्त्ता समाप्ता ॥

श्रागलथी श्राश्रय श्रापनार सादेश्रोना स्मरण करवा योग्य नामो नीचे लखीयें ठेयें

गामश्री वागरानां श्रावकोनां नाम

छेनारनुं नाम प्रत सख्या

शा मोतीजी गजाजी श्रोसवाल एमनी डुकान कोंकणदेसना गामश्री पेनमा शा गजाजी केसवजीना नामथी चाले ठे १२१

शा नूताजी, केशाजी, कुशनाजी, पेराजजी, धूमाजी, ए पांचे नाइ शेठ खुसालजीना सुपुत्र ठे एमनी डुकान करणाटक देसमां गामश्री निडगुंदीमां ठे १११

शा वन्नाजी कस्तूरचंद ते शेठ चिमनाजी हुकुमाजीना सुपुत्र ठे एमनी कोलापुरमा डुकान ठे १००

शा खुमाजी, देवराजजी, कुशनाजी, नथाजी, नरसिंघजी, ए पांचे नाइ शेठ मनरूपजीना सुपुत्र ठे एमनी गामश्री विक्षादीमां डुकान ठे १००

शा वानाजी, खुमाजी, हकमाजी, वन्नाजी, ए चारे नाइ शेठ सवाजीना सुपुत्र ठे एमनी डुकान गामश्री बालाजीना देवल गाममा ठे १००

शा मनाजी, जेठाजी, सवाजी, ए त्रणे नाइ शेठ मोटाजीना सुपुत्र ठे एमनी डुकान तालिकोटमा ठे ७५

शा राजाजी, मोतीजी, कुशनाजी, धन्नाजी, लखमाजी, ए पांचे नाइ शेठ दरगाजीना सुपुत्र एमनी डुकान तालिकोटमां ठे ५१

शा नरसिंहजी ते शेठ मोटाजीनासुपुत्रठे ४१

शा चुनीलालजी ते शेठ देवराजजीना सुपुत्र ठे जे गामश्री सीरोइवालाने नामे उलखाय ठे एमनी डुकान पेनबंदरमा ठे ४१

कस्तुरजी, गेनाजी, चिमनाजी, लखमाजी ए चारे नाइ ते शेठ चेलाजीना सुपुत्र ठे एमनी डुकान गामश्री तालिकोटमां ठे ३५

शा राजाजी, प्रतापजी, सरूपजी, ए त्र

णे जाइ ते शेठ सवाजीना सुपुत्र छे एम
नी दुकान विल्लाडीमां छे २५
शा मनाजी, छुगाजी, नरसिंघजी, ए त्रणे
जाइ ते शेठ जगवानजीना सुपुत्र छे तथा
शा धूलाजी ते शेठ पन्नाजीना सुपुत्र छे
ए वे काकाइ जाइ छे एमनी दुकान गा
मश्री तालिकोटमां छे ५०
शा रतनाजी, मयुराजी, चेनाजी, हंसा
जी ए चार जाइ ते शेठ अमरंगजीना सु
पुत्र छे एमनी दुकान गामश्री विल्लाडीमां छे १५
शा जिवाजी ते शेठ धूलाजीना सुपुत्र छे
एमनी दुकान चितोरदुर्गमा छे २५
शा खुशालजी, जेसाजी, ए वे जाइ ते
शेठ पेथाजीना सुपुत्र थाय एमनी दुकान
दक्षणदेशनां गामश्री विजयपुरमा छे ७
शा खुमाजी, नरसिंघजी, लालाजी मेना
जी, मोतीजी ए पांच जाइ ते शेठ पन्नाजी
ना सुपुत्र छे एमनी दुकान धारवाडमां छे ५

शा मयुराजी, प्रेमाजी ए वे जाइ ते शेठ
गुलावजीना सुपुत्र थाय एमनी दुकान
चितोरदुर्गमां छे ५
शा मगाजी ते शेठ चेलाजीना सुपुत्र ५
खुमाजी ते शेठ जूताजीना सुपुत्र थाय २
शा हसाजी ते शेठ लुंबाजीना सुपुत्र २
शा मोतीजी ते शेठ दलाजीना सुपुत्र १
शा कुशाजी ते शेठ धूमाजीना सुपुत्र २
वाइ नाछु शा मोतीजीनी घरवाली १
शा गोमाजी ते शेठ जिवाजीना सुपुत्र १

गामश्री सीयाणाना श्रावकोनी तरफथी

शा केशरीमल्ल, हेमराज, ए वे जाइ ते
शेठ कस्तूरजीना सुपुत्र थाय, एमनी
दुकान वेवल गाममां छे ५०
शा लुवाजी ते शेठ प्रेमाजीना सुपुत्र १०
शा कस्तुरजी, कुशनाजी ५
शा सेराजी, वेवाजी, लखमाजी ५
शा जेसाजी, खुशालजी ५

शा खुमाजी, जेताजी ४
शा दीपाजी, खुमाजी ३
सघवी नरसिंघजी, लालाजी २
शा मोतीजी, नूताजी २
शा छुवाजी, परागजी १
शा रासा, मन्नाजी १
शा ताराजी, वालाजी १
शा पन्नाजी, केशाजी १
शा कुशनाजी, सदाजी १
शा मोतीजी, गनाजी १
शा गुलवा, सूराजी १
सघवी सूरतिंगजी दोलाजी १
शा मोती, नगाजी १
शा फुशा, डुगाजी १
शा खुमा, सदाजी १
शा वीवाजी, मनाजी, ए वे नाइ शेठ वे
वाजीना सुपुत्र छे जे गाम श्रीकानवर
वालाने नामे उलखाय छे ते १५

शा लखमाजी, सवाजी १०
शा पन्नाजी, सूरतिंगजी ७
शा फताजी, लखमाजी ५
शा नथाजीनी, घरवाली ३
शा वगताजी, सदाजी ३
शा नथाजी, खुशालजी २
शा राजाजी, मनाजी २
शा पदमाजी, माद्याजी १
शा कपूरजी, अद्याजी १
शा मनाजी, वक्ताजी १
सुतां फुशा, नथाजी १
शा दीपाजी, छुगाजी १
शा हुकमा, खुशालजी १
शा अधा, गोमाजी १
शा अमरिंग, डुगाजी १
सुता वरदा, गोमाजी १
शा नूता, पदमाजी १
शा फोजु, लखमाजी १

गामश्री आहोरना श्रावको तरफथी
शा वनेचद, केशरमल, ए बे जाइ ते शेठ
जूताजीना सुपुत्र हकान श्री सुवस्मां छे २५
मुता कस्तूरचद, वाजाजी, ए बे जाइ ते
शेठ ठमाजीना सुपुत्र छे, एमनी हकान
गामश्री कल्याणीमां छे १५
सधवी लखमाजी, थानाजी, ते शेठ
रूपाजीना सुपुत्र छे ५
शेठ गोडीदाशजी, वागमलजी ५
शा पन्नाजी, जुवारमलजी, ते शेठ
फुसाजीना सुपुत्र ५
भंमारी जूताजी, देमाजी, जीमाजी, ए
त्रणे जाइ ते शेठ अचलाजीना सुपुत्र छे ५
शा हंसराज ते शेठ नाथाजीना सुपुत्र
एमनी हकान गवूलमां छे ५
मुता जवानजी, केशरमल, ए बे जाइ
ते शेठ अचलाजीना सुपुत्र ५
मुंता सूरजमलजी, चंदनमलजी, ए बे

ते शेठ हुकमचदजीना सुपुत्र ५
शा प्रेमचदजी, मनजी मोतीजी, ए
त्रणे जाइ शेठ मकनाजीना सुपुत्र एम
नी हकान गामश्री पिंजरतमां छे ५
शेठ प्रतापजी, लालचंदजी, पुनमच
दजी, ते शेठ जेठमलजीना सुपुत्र ५
शा राइचद, शोभाजी १
शा गुलावचद ते गेनाजीना बेटा २
शा धन्ना, पनाजी १
शा सेरा, रूपाजी १
गामश्री जालोरना श्रावको तरफथी
मुता धनराजजी, जसवतराजजी, मुनि
लालजी, ए त्रणे जाइ ते मुता लालच
दजी भाफा वालाना छोकरा २५
मुता सुलतानमलजी, ते मुता उत्तमच
दजीना सुपुत्र ५
भट्टारक भेरचदजी दयालचदजीना चेला ५
नार सीतारामजी जवानमलजी एम

नी ढुकान श्रावुरोड खराडीमां ५
गामश्री निम्नमालना श्रावको तरफथी
शा हीराजी, लखमाजी, नावाजी,
माफावाला ५
शा केराजी, कानाजी ५
शा ज्ञुवारमल्ल, शिरदारमल्लजी २
शा गुलाबचंद, खूपचंद २
शा लखमाजी, कस्तूरचंद २
मुंता केवलचंदजी, नगवानचंद ए बे
नाइ ते मुंता तोलाजीना सुपुत्र २
गामश्री थरावना श्रावको तरफथी
वोरा जीवा, बालु ५
वोसी लध्धा, जालजी २
वोरा मोतीचंद, चंदाणा ५
वोसी हीरा, वीसदा २
गामश्री धानेराना श्रावकोनी मदत
मेता तलकचंद, नोजराज ५
शा मूलजी, दानसिंघ १

गामश्री शिवगजनी तरफथी
शा मोतीजी, तुलसाजी, वन्नाजी, पो
माजी, हीराचंदजी श्रने रामाजी ए छ
नाइर्ज शेठ मेगाजीना सुपुत्र ढुकान मु
खश्मां मेगा मोतीजीना नामनी छे २५
शा लुबाजी, जेगाजी २
शा रतनाजी, दृष्टाजी १
शा पन्नाजी, कलाजी गामकोसीलाव २
गाम नेंसावडाना श्रावकोना तरफथी
शा नथाजी, मनरूपजी पोरवाड १००
शा जीफाजी, जोधाजी २
शा महोनदासजी १
शा सूराजी, वदाजी २
शा वन्ना, कछाजी २
गामश्री दूरजीना श्रावको तरफथी
शा सूरतिंगजी, मनाजी ५
शा नबला, 'उंमाजी २
शा चेला, गजाजी २

० शा वन्ना, खुसालजी
गामश्री खीमेलना पंचोनी तरफथी
१ ॥ गामश्री कोसीलावनां पंच समस्त
गामश्री गुन्दो मालोतरानो तेना पंच
समस्तनी तरफथी
शा जीवाजी, कुशनाजी पाढीवना
दोसी कृष्णाजी, वनेचंदजी गामश्री
कछ मुदरांबंदरना रेवासी
शा गोकलनाइ, लहेरा गोघावी
शा जेठाजी, जवेरचंदजी अलीराजपुर
शा हीराचंद, कुंवरजी अलीराजपुर
शा जीवानाइ, रतनजी घोगा
शा केशवजी, लेहेरा नाइ गाम श्रीक
राधीमदर वाला
शा मोटाजी, वन्नाजी कालीआवाडी
शा नगाजी, कुशनाजी रेवतरा वाला
शा लखाजी, कुपाजी धानपुर वाला
शा रूपाजी, प्रेमाजी

२ शा लढा, हीरजी अमदानगर वाला
५ गामश्री अमदावादमां अमदावादनी
५ पांजरापोल वाली जैनसत्नानी तरफथी
शा पुनमचंद, ताराचंद
५ शा पन्नाजी, धनाजी
५ शा वालानाइ, कक्कल
शा लखमीचंद, जेठा
५ शा मयारामजी ते शेठजी धूमाजीना
१ सुपुत्र गामश्री मांम्दवडा
४ मुता उमेद मलजी, चंदरनाणजी गा
१ मश्री एनेरानें गुडे
२ शा रिखनाजी ते शेठ खुमाजी लखा
जीना बेटा गामश्री नूतिना
१ शा मोतीजी, नगाजी गामश्री कवला
२ शा जगवान, लवजी कोलीआकवाला
५ गामश्री मुधइना श्रावको तरफथी
२ बाइ प्रेमाबाइ ते शा नागसी शिवजी
२ नेणसीनी घरवाली

शेठ घेलाभाइ, पदमसी	५
शा कस्तूरचंद, नानचंद त्रांबा कांटे	१
शा ओधवजी देवजी जामनगर वाला	१०
शेठ गणेसमल, सोनागमल	१
जैनविद्याशाला तरफथी हा शा वृद्धि	
चंद पुनमचंद	५
शा कशतुर, वालाजी	२
शा कसतुरचंद, तलकचंद वशनाजी पेठ	१
शा जीवाजी, खीमाजी	१
शा गुलाबचंद, केशवजी	१
शा फुसाजी, नगाजी	१
मुता नथा, रुपाजी	१
गाम जीमडीना पंचो तरफथी	२
शा हिंडु, जेवाजी	१
शा केशा, जोदाजी बूडतराना	१
मुता शवाजी, लखमाजी बूडतराना	१
शा नूताजी, फताजी	१
शा वमाजी, खाशाजी, राजाजीना पुत्र	१

शा नथाजी, नोपाजी	१
शा जीमा, मोताजी	१
शा जेशाजी, गोमाजी	१
शा पन्नाजी, जावाजी	१
शा वन्नाजी, शेनाजी	१
शा केवदाजी, खुशालजी	१
शा मोतीजी, गुलाबचंदजी	१
शा खुमाजी, हंसराजजी	१
शा लक्ष्माजी, साकलचंद	१
शा दसाजी, जेराजी	१
शा गुलाबचंद, खुमाजी	१
शा पानाचंद, जगन्नाथजी	१
शा जेताजी, कस्तुरचंदजी	१
शा मटाजी, विजिगजी	१
शा लालचंद, गुमनाजी	१
शा जवानमल, नथाजी	१
शा माणकजी, खुमाजी	१
शा सूराजी, जेताजी	१

शा दोलाजी, चेराजी	१
शा मनधाजी, श्रनेचंद	१
शा मनधाजी, वनेचंद	१
शा लालचंद, कपूरचंद दालाखमी	१
शा न्यालचंद, श्रालमचंदजी गाम सादरी	१
शा दीपाजी, केशाजी	१
शा गेना, श्रोखाजी	१
शा गेनाजी, तेजाजी	१
शा जेताजी, लखाजी	२
शा छुताजी, तेजीजी	१
शा वरसिंघ, वेवसी	१
शा खुमाजी, दिंकजी	१
शा दिंकजी, श्रमरिंगजी	१
शा नाना, श्रोखाजी	१
शा मोती, पुरुपाजी	१
शा रुदाजी, सुजाजी	१
शा जेठा, गरनारजी	१
शा खुशालजी, खुमाजी	१

शा मनाजी, मासिंघजी	१
शा चेनाजी, गजाजी	१
शा धुरा, मासाजी	१
शा खुबारमल्ल, चेनाजी	१
शा मोटाजी, वीराजी	१
शा जेरूप, सक्काजी	१
शा जिवाजी, श्राणदाजी	५
शा जमनादास, लालजी	५
शा रुगरसी, धरमसी	५
शा उंपाजी, कपुरचंद कुक्षी	१५
शा श्राशाजी, राइचंद कुक्षी	५
शा गोमाजी, जवेरचंद कुक्षी	५
शा दोलतराम, चुनीलाल राजगढ	५
शा जसुजी, चतुरभुज राजगढ	१०
श्री जावदाना संघ समस्त	१०
श्री जांबुश्राना संघ समस्त	१०
श्री वडनगरना संघ समस्त	५
शा दोलतराम, हरखचंद राजगढ	५

॥ भट्टारकश्रीराजेंद्रसूरिविरचितः ॥

॥कल्पसूत्रस्य बालावबोधः समाप्तः॥